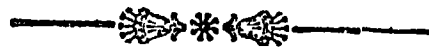


॥ श्रीजिनाय नमः ॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः

॥ रत्नसमुच्चय ॥



॥ मंगलाचरण ॥



ॐकारं बिंदुसंयुक्तं । नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ॥
कामदं मोक्षदं चैव । ॐकाराय नमोनमः ॥ १ ॥

॥ कवित ॥

र उदार अगम्भ अपार । संसारमें सार पदार्थनांमी ॥
समृद्धि सरूप अनूप । भयो सबही सिर झूप सुधामी ॥
यंत्रमें ग्रंथके पंथमें । जाकुं कियो धुर अंतरजांमी ॥
इष्ट वसे परमेष्ट । सदा भ्रमसी करै ताहि सलामी ॥ १ ॥
निसदिस नमायके सोस । जपो जगदीश सही सुखदाता ॥
जगतमें कीरति जागत । भागतहे सब ईत असाता ॥
रिंद दिणिंद फुणिंद । नमाएहें वृंद आनंद विधाता ॥
धरम्भको धीर धराधर । ध्यान धरे भ्रमसी गुण ध्याता ॥ २ ॥

॥ अथ गुरुमहिमा नमस्कार ॥

॥ जिणकी महिमें १ । जिनदीनो महा इक ग्यान नगीनो ॥
ग्यो भ्रम सो तम देखत । पूर जग्यो परकास नगीनो ॥
देतहि दूनो वधै । अरु खायोहि खूटत नांहि खजीनो ॥
साय कियो गुरुराय । तिणें भ्रमसो पदपंकज लीनो ॥ १ ॥
अज्ञानतिमिरान्धानां । ज्ञानाजनशलाकया ॥ २ ॥
नेत्रमुन्मीलितं येन । तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥ ३ ॥

कोऽर्थःपुत्रेण जातेन । यो न विद्वान् न ज्ञेयमान् ॥ १०

उपदेशो हि मर्वाणां । प्रकोपाय न ज्ञातये ॥

पयःपानञ्जुंगानां । केवलं विपवर्द्धनं ॥ ११ ॥

मातृवत्परदाराश्च । परद्रव्याणि लोष्टवत् ॥

आत्मवत्सर्वज्ञतानि । विहंते धर्मबुद्धयः ॥ १२ ॥

॥ अथ सन्धिसूत्र ॥

॥ सिद्धोवर्णः समाम्नायः तत्र चतुर्दशादौस्वराः दशसमा-
तेषांद्वाद्वान्योऽन्यस्यसवर्णो पूर्वोद्गस्वः परोदीर्घः स्वरोवर्णः वज्र-
नामी एकारादीनिसंध्यक्षराणि कादीनिव्यंजनानि तेवर्गापंचप-
वर्गाणांप्रथमद्वितियौ शपसश्चघोषाः घोषवंतोऽन्ये अनुनासिकाः ड-
त्रणनमाः अनतस्थाः यरलवाः उष्माणः शपसहाः अःइतिविसर्ज-
नीयः कःइतिजिह्वामूलीयः पःइत्युपमानीयः अं इत्यनुस्वारः पूर्व-
परयोरर्थोपलब्धौपदम् अस्वरं व्यंजनं परं वर्णं नयेत् अनतिक्रमयन्-
विश्लेषयेत् लोकोपचारात्ग्रहणसिद्धिः इतिसंधौसूत्रतः प्रथमश्चरण-
समाप्तः ॥

॥ हितोपदेशः ॥

अहतोभगवंतं इन्द्रमहिताः । सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता ॥

आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः । पूज्या उपाध्यायकाः ॥

श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा । स्तनत्रयाराधकाः ॥

पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं । कुर्वंतु वो मंगलं ॥ १ ॥

अर्थः—(एते पंचपरमेष्ठिनः प्रतिदिनं वः युष्माकं मंगलं कुर्वंतु)

यह जो पंचपरमेष्ठिपद है सो हमेसां तुम जन्मजीवोंकूं मंगल करो, के-
लेकेहै पंचपरमेष्ठि (अहंतोभगवंतं इन्द्रमहिता) प्रथम परमेष्ठि श्री
अरिहंतदेव आठकर्मरूप अंतरंगवैरियोकों हारे सो अरिहंत कहौं
हैं श्रीजिहंत केमेहै केननान केनदर्शन संयुक्तहै फेर

अर्थदे ॥ सूर्य १ ज्ञान २ महात्म ३ यश ४ वैराग्य ५ मुक्ति ६ रूप ७ वीर्य ८ प्रयत्न ९ इच्छा १० श्री लक्ष्मी ११ धर्म १२ ऐश्वर्य १३ योनि १४ इन चवदे अर्थमेंसें दो अर्थकूं वर्जकर बाकी १२ अर्थ अरिहंत जगवंतमेंदे एकतों सूर्य १ दुसरी योनि २ यह दो टालकै फेर श्री अरिहंत जगवंत कैलैकहें (इन्द्रमहिता) चोसठ इंद्रोंसें पूजनीक बारेगुणोंसें विराजमानहै सो बारे गुण ऐसेहैं प्रथमतो अरिहंतमें अद्भुत रूप होताहे रोग नर पत्नीना नर मैदारहित वना खसवोदार सरीर होताहे १ सासोश्वासमें कमलवे फूल जेसी खसवो होतीहे २ लोही नर मांस गन्धके दुध जेसा स्वेत होताहे ३ आहार नीहारकी विधि अदृश्य होतीहे अर्थात् चर्म चट्टुवालेकों दिखाई नहीं देता ४ यह चार अतिशयगुण जन्मसेंही होताहे नर बाकीके आठगुण केवलज्ञान उत्पन्न जये बाद होताहे अशोकवृक्ष १ जगवानके सरीरसें बारेगुणा ऊंचा होताहे जिसकी गाय वेठनेसें रोगसोकादिक दूर होताहे १ सुरपुष्पवृष्टिः देवतोके समूह गोमे पर्यंत पंचरंगफूलोंकी वरसात करे आकाससे गिरते सीधे गिरे । वीट नीचा रहे पांखरी ऊपर रहे २ । (दिव्यध्वनि) एक योजन तक देवता मनुष्य तिर्यच सब जीव अपनी २ जाषामें स्थावस्थित समजै एसा उनोंको मालम देवेके जगवान हमारी गेलीमेंही उपदेश दे रहेहें सोही बात सिद्धांतोंमें कहाजीहे ॥ तथा ॥ एगाङ्गिराणेगे । संदेहदेहिणंसमंविता ॥ तिहुअणमणुं नासंता । अरिहंताहुंतिमेसरणं १ । ३ ॥ आमर ४ जगवानने दोनों तरफ इंद्र चम्बर ढोलता रहै ४ ॥ आसनअ ५ जगवंतके जी १ कूं इंद्रादिक देव रचित फटिकरत्नका सिंहासन रहै ५ ॥ जा २ जगवानके पिठामी भामंमल रहे जिसें जव्यजीव जगत्तरफ देखसके जगवंतके चारमुख चारुंदिसामें दीखानेजगत्तरफान पूर्वदिशामें मुख करके बैठे नर तीन दिशांमें जगत्तरफ

तिमा व्यंतर देवता स्थापन करै लेकिन् भगवानके अतिशयसे
 च्यारोंहीदिसामें दारेपरखदाकूं अपने सामने उपदेश देतेजये दि-
 खादेवे ६ ॥ डुंडुजी उ आकाशमें देव ते देवडुंडुजीवाजिन्न वजावे
 उ ॥ रातपत्रं उ जगवंतके विहारकी वखत मस्तकपर तीन ठत्र
 रहै उ ॥ यह आठगुण देवतोंके किये होतेहे ऐसे अरिहंत देवाधिदेव
 चोतीस अतिशय विराजमान पैंतीस वचनगुण सोजित एकहजार
 आठ लक्षालंकृत अठारै दूषणरहित शांत दांत कृपासागर त्रैलो-
 ३ ननाथ तीन जगत्के गुरु वर्तमान कालमें महाविदेह क्षेत्रमें के-
 वलज्ञान केवलदर्शनसे लोकालोकका ज्ञाव देखतेजये पृथ्वीमंजुल-
 पर ज्यजीवोंके मनोरथ पूरणथके विचरतेहैं ऐसे अनंत गुणसे
 विराजमान अरिहंत देवाधिदेव श्री संघमें सदा मंगल करो ? ॥
 (सिद्धाश्रसिद्धिस्थिता) दूसरे पदमें श्री सिद्धमहाराजकूं नमस्कार
 दुठ कैसेकहें श्री सिद्धमहाराज अष्ट कर्मरूपकाष्टकों शुक्लध्यानरूप
 अग्निसें जस्मकर सिद्धगतिकों प्राप्तजये अनंतज्ञान अनंतदर्शन अ-
 नंतचारित्र अनंततप अनंतवीर्य संयुक्त जन्म जरा मरणरोग सोक
 जयादिकसें रहित चवदै राजलोकमें सब जीवोंके मनोगतभाव एकस-
 मयमें जाणते जर देखतेथके लेकिन् आत्मगुणोंमे मग्न रहेजये ऐसे
 श्रीसिद्धमहाराज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ १ ॥ (आचार्या-
 जिनशासनोन्नतिकरा) तीसरे पदमें श्रीआचार्यमहाराजकूं नम-
 स्कार दुठ कैसेकहे श्रीआचार्यमहाराज उत्तीसगुणोंसें विराजमान
 पुक्तिमार्गके साथक कर्मशत्रूकेविराधक पंचाचारपालक अवुधजीव-
 सेकहे रोथक कामागुणजंमार समदृष्टी तरण तारण धर्मकेधोरी जिन-
 अरिहंत के उन्नतिके करणेवाले ऐसे परमउपगारी श्रीआचार्यमहा-
 ३ श्रीसंघमें सदा मंगल करो ३ ॥ (पूज्यानुपाध्यायका श्रीसि-
 द्धमहाराज) चौथे परमेष्ठिपदमें श्रीउपाध्यायमहाराजकूं नम-
 स्कार दुठ कैसेकहे श्रीउपाध्यायमहाराज

एकार नयनिक्षेपागमापर्यायसंयुक्त सिद्धांतकेषढाणेवाले २५ गु-
णोंसे विराजमान ऐसे श्रीछपाध्याय महाराज श्रीसंधमें सदा मं-
गल करो ॥ (सुनिवराःस्त्वनत्रयाराधकाः) पंचम परमेष्ठिपदमें
सब साधूमुनिराजजी ऐसेकहें श्रीसाधूमुनिराज ज्ञान १ दर्शन २
चारित्र ३ इन तीन स्तोत्रोंके आराधक पांचे सुमतेसमता तीने गुप्ते-
युक्ता वक्तायके पीहर कुरकीसंबल चारित्रपात्र मोक्षमार्गके साधक
ऐसे सब साधूमुनिराज सत्ताईस गुणोंसे सोजित श्रीसंधमें सदा
मंगल करो ॥ इति हितोपदेश दोनोके कल्याणार्थ ॥

॥ अथविंशतिजिननाम ॥

॥ अतीतचोवीसी ॥

- | | |
|--------------------|------------------------|
| १ श्रीकेवलज्ञानीजी | २ श्रीनिर्व्वाणीजी ॥ |
| ३ श्रीसागरजी | ४ श्रीमहायसजी |
| ५ श्रीविमलदेवजी | ६ श्रीसर्वानुभूतिजी |
| ७ श्रीश्रीधरजी | ८ श्रीदत्तस्वामीजी |
| ९ श्रीदामोदरजी | १० श्रीसुतेजनाथजी |
| ११ श्रीस्वामीजी | १२ श्रीमुनिसुव्रतजी |
| १३ श्रीसुमतिनाथजी | १४ श्रीशिवगतिजी |
| १५ श्रीअस्तागजी | १६ श्रीनमिश्वरजी |
| १७ श्रीअनिलनाथजी | १८ श्रीयशोधरजी |
| १९ श्रीकृतार्थजी | २० श्रीजिनेश्वरजी |
| २१ श्रीगुह्यमतजी | २२ श्रीशिवकरजी |
| २३ श्रीस्यन्दनजी | २४ श्रीसंप्रतिस्वामीजी |

॥ वर्त्तमानचोवीसी ॥

- | | |
|-------------------|-------------------------------|
| १ श्रीऋषभदेवजी | २ श्रीअजितनाथ |
| ३ श्रीसंज्ञवनाथजी | ४ श्रीअजिनंदनजी ^{५०} |
| ५ श्रीसुमतिनाथजी | ६ श्रीपद्मजुजी ^{५१} |

७ श्रीसुपार्श्वनाथजी	८ श्रीचंद्राप्रभूजी
९ श्रीसुविघनाथजी	१० श्रीशीतलनाथजी
११ श्रीश्रेयांसजी	११ श्रीवासुपूज्यजी
१२ श्रीविमलनाथजी	१२ श्रीअनंतनाथजी
१३ श्रीधर्मनाथजी	१३ श्रीशांतिनाथजी
१४ श्रीकुंभुनाथजी	१४ श्रीअरनाथजी
१५ श्रीमल्लिनाथजी	१५ श्रीसुनिसुव्रतस्वामीजी
१६ श्रीनमिनाथजी	१६ श्रीनेमनाथजी
१७ श्रीपार्श्वनाथजी	१७ श्रीमहावीरस्वामीजी

अनागतचोवीसी ॥

१ श्रीपद्मनाभजी	१८ श्रीसूरदेवजी
२ श्रीसुपार्श्वजी	१९ श्रीश्वयंप्रभूजी
३ श्रीसर्वानुभूतिजी	२० श्रीदेवश्रुतजी
४ श्रीउदयप्रभूजी	२१ श्रीपेढालजी
५ श्रीपोट्टिलप्रभूजी	२२ श्रीशतकीर्तिदेवजी
६ श्रीसूत्रतनाथजी	२३ श्रीअममनाथजी
७ श्रीनिष्कषायदेवजी	२४ श्रीनिष्पुलाकदेवजी
८ श्रीनिर्ममनाथजी	२५ श्रीचित्रगुप्तनाथजी
९ श्रीसमाधिनाथजी	२६ श्रीसंवरनाथजी
१० श्रीयसोधरजी	२७ श्रीविजयनाथजी
११ श्रीमल्लिप्रभूजी	२८ श्रीदेवप्रभूजी
१२ श्रीअनन्तप्रभूजी	२९ श्रीभद्रंकरजी

॥ वीसविहरमाननामानि ॥

१ श्रीसिमंधरजी	१० श्रीयुगमंधरजी
२ श्रीवाहूजी	११ श्रीसुवाहूजी
३ श्रीसुजातजी	१२ श्रीस्वयंप्रभूजी

७ श्रीऋषभाननजी	८ श्रीअनन्तवीर्यजी
९ श्रीसूरप्रभूजी	१० श्रीविमलजी
११ श्रीवज्रधरजी	१२ श्रीचंद्राननजी
१३ श्रीचंद्रबाहजी	१४ श्रीभुजंगजी
१५ श्रीनेमप्रभूजी	१६ श्रीईश्वरजी
१७ श्रीवयरसेनजी	१८ श्रीमहाभद्रजी
१९ श्रीदेवशर्माजी	२० श्रीअजितवीर्यजी

॥ चारसाश्वतातीर्थकरनाम ॥

१ श्रीऋषभाननजी	२ श्रीचंद्राननजी
३ श्रीवारिषेणजी	४ श्रीवर्धमानजी

एते चत्वारनाम्ना जिना साश्वतैव ज्वन्ति ॥

॥ अथ सोले सतीनाम ॥

१ श्रीब्राह्मीजी	२ चंदनबाबाजी
३ श्रीराजीमतीजी	४ श्रीद्रोपदीजी
५ श्रीकौशल्याजी	६ श्रीमृगावतीजी
७ श्रीसुलसाजी	८ श्रीशीताजी
९ श्रीसुभद्राजी	१० श्रीशिवाजी
११ श्रीकुंतीजी	१२ श्रीशीलवतीजी
१३ श्रीद्वंद्वतीजी	१४ श्रीपुष्पचूलाजी
१५ श्रीप्रज्ञावतीजी	१६ श्रीपद्मावतीजी

इत्यादि बड़ी २ सतियोंको त्रिकाल २ वंदना ॥

॥ ॐ परमोष्ठिने नमः ॥

॥ अथवा ॥

॥ श्रीश्रावकस्य विधिसंयुक्त देवसिराइ ॥

॥ प्रतिक्रमणादि सूत्रम् ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ प्राभातिक सामायिक विधिप्रारंभः ॥



॥ अथ नवकारमंत्रः ॥

॥ एमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ एमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ एमो
आयरियाणं ॥ ३ ॥ एमो उवद्यायाणं ॥ ४ ॥ एमो लोए सव्वसा
हूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच एमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणाससो ॥
॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥
इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन बेर गुण कें थापनाजीकी थापना
करे, तब तेरे बोल चिंतवे, सो कहते हैं ॥

॥ अथ थापनाचार्यजीकी तेरे पडिलेहणा ॥

॥ शुद्ध स्वरूप धारुं ॥ १ ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥
चारित्र ॥ ३ ॥ सहित सद्वहणा शुद्धि ॥ १ ॥ प्ररूपणा शुद्धि ॥
॥ २ ॥ दर्शन शुद्धि ॥ ३ ॥ सहित पांच आचार पाखुं ॥ १ ॥ प
लावुं ॥ २ ॥ अनुमोडुं ॥ ३ ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचन गुप्ति ॥
॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ आदरुं ॥ ३ ॥ एवं तेरे बोल श्रीधर्मरत्नप्रकर-
णसूत्रवृत्तिमें कहे हैं ॥ इति ॥ २ ॥

॥ पीठें गुरुजीके सामने अथवा थापनाचार्यजीके सामने
ब्रह्मा हो कें तीन खमासमण देवे, सो लिखते हैं ॥

अ. ॥ अथ खमासमण ॥

इवामि खमासमणो वंदितुं जावणिजाए निसीहिआए म
इदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ सुगुरुने शीर्षी सुखपृष्ठा ॥

॥ इच्छाकर जगवन् सुहराश, सुहदेवसी, सुख तपशरीर निरा
बाध सुखसंयम यात्रा निर्वहोभोजी? स्वामी शाता ठेजी? इति ॥

॥ ४ ॥ एम गुरुने कही नमस्कार करे, तेवारें गुरु कहे दे-
वगुरु प्रसाद ॥

॥ पीठें नीचें बैठकें जिमणा हाथ नीचा करकें अष्टुष्टि
जमि कहे पीठें खमासमण देकें इच्छाकोरेण संदिस्तह जगवन्
सामायिक लेवा मुहपत्ती पमिलेहुं? गुरु कहे, पमिलेह. पीठें इच्छ
कही दूजी खमासमण देई मुहपत्ती पमिलेहे ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहणके पच्चीस बोल लिखते हैं ॥

सूत्र, अर्थ साचो सर्दहुं ॥ १ ॥ सम्यक्त्व मोहनी ॥ २ ॥
मिथ्यात्व मोहनी ॥ ३ ॥ मिश्र मोहनी ॥ ४ ॥ परिहरुं. यह चार बोल
मुहपत्ती खोलती विरीयां कहणां ॥

॥ कामराग ॥ १ ॥ स्नेहराग ॥ २ ॥ दृष्टिराग ॥ ३ ॥ परि
हरुं ॥ यह सात बोल प्रथम कहीजें ॥

॥ सुगुरु ॥ १ ॥ सुदेव ॥ २ ॥ सुधर्म ॥ ३ ॥ आदरुं ॥
॥ कुगुरु ॥ १ ॥ कुदेव ॥ २ ॥ कुधर्म ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ ज्ञान
॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ यह नव पमिले-
हण नावे हाथे करीयें ॥

॥ ज्ञानविराधना ॥ १ ॥ दर्शनविराधना ॥ २ ॥ चारित्र-
विराधना ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥
कायगुप्ति ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ मनोदंरुं ॥ १ ॥ वचनदंरुं ॥ २ ॥ काय-
दंरुं ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह नव पमिलेहण जिमणे हाथसैं करणी
॥ यह पच्चीस बोल मुहपत्तीके जानने ॥

॥ अब अंगकी पच्चीस पडिलेहण लिखते हैं ॥

॥ कृष्णलेश्या ॥ १ ॥ नीललेश्या ॥ २ ॥ क पोतलेश्या
॥ ए तीनुं नीलामे मस्तकें परिहरुं ॥ ॥ क विराग

॥ रुद्धिगारव ॥ १ ॥ रसगारव ॥ २ ॥ शाता गारव ॥ ३ ॥
ए तीनुं मुखें परिहरुं ॥

॥ मायाशब्द ॥ १ ॥ नियाणाशब्द ॥ २ ॥ मिच्छादंसणं-
शब्द ॥ ३ ॥ ए तीन हीये परिहरुं ॥

॥ क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ ए दोय जिमणे खंजे परिहरुं ॥

॥ माया ॥ १ ॥ लोभ ॥ २ ॥ ए दोय रुवे खंजे परिहरुं ॥

॥ हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ ए तीन रुवे
हाथे परिहरुं ॥

॥ जय ॥ १ ॥ शोक ॥ २ ॥ दुगंछा ॥ ३ ॥ ए तीन
जिमणे हाथे परिहरुं ॥

पृथ्वीकाय ॥ १ ॥ अप्पकाय ॥ २ ॥ तेजकाय ॥ ३ ॥ ए
तीन रुवे पगे परिहरुं ॥

॥ वाजकाय ॥ १ ॥ वनस्पतिकाय ॥ २ ॥ त्रसकाय ॥ ३ ॥
ए तीन जिमणे पगे परिहरुं ॥ इति मुद्दपत्ति पम्पिहणा संपूर्णा ॥ ५ ॥

॥ पीठें खमा होय कें इच्छामि खमासमणका पाठ कहे कें
इच्छाकरेण संदिस्सह जगवन् ॥ सामायिक संदिस्सावुं ? गुरु कहे
संदिस्सावेह ॥ पीठें इच्छं कहे कें फेर खमासमण दे कें इच्छा ॥
जण ॥ सामायिक ठाजं ? गुरु कहे ठाण्ह ॥

॥ पीठें इच्छं कही खमासमण देश थोमो जुकी तीन नव-
कार गणी इच्छाकरेण संदिस्सह जगवन् पसाज करी सामायिक
दंभक उच्चरावोजी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीठें करेमि जंतें
सामादयं इत्यादि सामायिक सूत्र तीन वार उच्चरे ॥

॥ अथ सामायिकनुं पच्चख्खाण ॥

॥ जेमि जंतें सामादयं, सावळं जोगं पच्चख्खामि ॥ जाव
इदंमि ॥ मामि ॥ दुविहं ति विहेणं मणेणं वायाए काएणं,

न करेमि, न कारवेमि, तस्स जंते पन्निक्कमामि निंदामि गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पीठेँ खमासमण दे केँ इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन्
इरियावहियं पन्निक्कमामि ॥ गुरु कहे पन्निक्कमह. पीठेँ इच्छं कही ॥
इच्छामि पन्निक्कमिञ्चं इरियावहियाएइत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ इरियावहियं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् ॥ इरियावहियं पन्निक्कमा
मि ॥ इच्छं इच्छामि पन्निक्कमिञ्चं ॥ १ ॥ इरियावहियाए विराहणाए
॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे
॥ उंसा उत्तिंग पणग दग मट्ठी मक्करु संताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे
मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदि
या पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अज्झिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टि
या परियाविया ॥ किलामिया उद्विया ठाणान् ठाणं संकामिया
जीवियान् ववरोविया ॥ तस्समिच्छामि उक्कमं ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥ पायञ्चित्त करणेणं ॥ विसोहीकरणेणं
॥ विसट्ठीकरणेणं ॥ पावाणं कम्माणं ॥ सिग्घायणठाए ॥ ठामि
कानस्सग्गं ॥ ८ ॥

॥ अथ अन्नत्थ उससिएणं ॥

॥ अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं ठीएणं जंजाइएणं
उकुएणं वायनिसग्गेणं जमलिए पित्तमुञ्जाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचा
ळेहिं ॥ सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं णिठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एव
माइएहिं आगारेहिं ॥ अज्जग्गो अविराहिञ्च ॥ हुज्ज मे कानस्सग्गो
॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं जगवताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥
तावकायं ठाणेणं मोणेणं जाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ इ
ति ॥ ए॥ इहां चार नवकार अथवा एक लोहस्सको कविहरि,

करे, पीठें एमो अरिहंताणं कहे केँ कानुस्सग्ग पारकेँ मुखसेँ प्रगट
लोगस्स कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ लोगस्स ॥

॥ लोगस्स उज्जोअगरे ॥ धम्म तिब्बयेरे जिणे ॥ अरिहंते
कित्तइस्सं ॥ चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसज्ज मज्झिअं च वेदे ॥
संजव मज्झिणं दणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च
चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥ सीअल सिज्जांस वासु
पुज्जं च ॥ विमल मणंतं च जिणं ॥ धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥
कुंथुं अरं च मल्लिं ॥ वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च ॥ वंदामि रिठ
नेमिं ॥ पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एव मए अज्झिअुआ ॥ वि
हुय रय मला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा ॥ तिब्बय
रामे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिथ वंदिय महिया ॥ जे ए लोगस्स उ
त्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग वोहिलात्तं ॥ समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
चंदेसु निम्मलयरा ॥ आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥ सागरवग्गंजीरा
॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ सबलोए० ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पीठें खमासमण देइ इच्छा० ॥ जगवन् बैसणो संदि
स्तावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीठें इच्छं कहे केँ वली खमा-
समण दे कर ॥ इच्छा० ॥ जगवन् वेसणो ठाजं ? गुरु कहे
ठाएह ॥ फेर इच्छं कहे केँ खमासमण दे कर इच्छा० ॥
ज० ॥ मिज्जाय संदिस्तावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीठें
इच्छं कहे के वली खमासमण दे कर इच्छा० ॥ जग० ॥ सिज्जाय
करुं ? गुरु कहे करेह ॥ फेर खमासमण दे केँ इच्छा खमे हो कर
आव नवकार कह कर सज्जाय करे, तथा जो शीतकालादि होवे
तो खमासमण दे केँ इच्छा० ॥ ज० ॥ पागरणो संदिस्तावुं ? गुरु
कहे संदिस्सावेह ॥ पीठें इच्छं कह कर खमासमण दे कर इच्छा० ॥
पागरणो पाग्ग्याजं ? गुरु कहे पग्ग्याएह ॥ पीठें इच्छं क

३। वस्त्र ग्रहण करे तथा सामायिकवंत अथवा पोसासहित श्रावक
 यदि तो “वंदामो” ऐसो कहे. और जो कोई दूसरो वांटे तो, सि
 द्धाय करेह, ऐसै कहे ॥ इति प्राज्ञातिक सामायिक ॥

॥ अथ राइ प्रतिक्रमणविधि प्रारंभः ॥

॥ प्रथम एक खभासमण दे के इच्छा ० ॥ ज्ञ ० ॥ चैत्यवंदन
 करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पीठें इच्छं कही जयन सामि जियेन सामि
 इत्यादि कहे, सोही लिखते हैं ॥

॥ अथ सकलतीर्थकरनमस्कारो लिख्यते ॥

॥ जयन सामिय जयन सामिय, रिसह सेतुंजि उज्जंति ॥
 ॥ पढु नेमिजिण, जयन वीर सच्चनरिमंण ॥ १ ॥ जरुअवेह
 मुणिसुवय, महुरिपास डुह डुरिय खंण ॥ अवरविदेहिज तिठ-
 यर, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि ॥ तीआणागय संपयं, वंडु जिण
 सवेवि ॥ २ ॥

॥ कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं पढम संघयणि ॥ उक्कोसन सत्त-
 रिसन, जिणवराण विहरंत लग्गई ॥ नवकोमीहिं केवल्लिण, कोमि
 सहस्स नव साहु संपइ ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, विहुं कोमीहिं
 चरणाण ॥ समणह कोमी सहस्स डुई, शुणिज्जइ निच्च विहाण
 ॥ १ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लख्खा उप्पन्न अठ कोमीनु ॥ चउ-
 सय ठायासीया, तिळ्ळुक्के चेइए वंडे ॥ २ ॥ वंडे नव कोमि सयं,
 पणवीसं कोमि लख तेवन्ना ॥ अठावीस सहस्सा, चउसय अठ-
 सिया पन्निमा ॥ ३ ॥ ११ ॥

॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ जं किंचि नाम तिठं ॥ सग्गे पायाले भाणुसे दोए
 जइ विणविंवाइ ॥ ताइं सवाइं वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥ नमुत्थुणं अरिहंताणं, जगवंताणं ॥ १ ॥

उग्राणां, सैव संवुक्षाणां ॥ ३ ॥ पुरिसुत्तमाणां, पुरिससीहाणां, पुरि-
 तवरपुंरुरीआणां, पुरितवरगंधहवीणां ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणां, लोग-
 नाहाणां, लोगहिआणां, लोगपईवाणां, लोगपजोअगराणां ॥ ४ ॥ अज-
 यदयाणां, चरखुदयाणां ॥ मग्गदयाणां, सरणदयाणां, बोहिदयाणां
 ॥ ५ ॥ धम्मदयाणां, धम्मदेसियाणां ॥ धम्मनायगाणां, धम्मसा-
 रहीणां, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणां ॥ ६ ॥ अप्पमिहय वरनाणां
 दंसण धराणां, विअट्ट ठउमाणां ॥ ७ ॥ जिणाणां जावयाणां, तिन्नाणां
 तारयाणां, दुळाणां वोहयाणां, मुत्ताणां नोअगाणां ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणां
 सव्वदरिसिणां, सिव मयल मरुअ मणांत मरुखय मद्वावाह मपुसरा-
 वित्ति ॥ सिद्धि गइ नामधेयं ॥ ठाणां संपत्ताणां, नमो जिणाणां,
 जिअ जयाणां ॥ ए ॥ जेअ अईआ सिद्धा ॥ जेअ जविस्संति
 णागए काले ॥ संपइअवट्टमाणा ॥ सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १३ ॥

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उट्ठेअ अहेअ तिरिअ लोएअ ॥ सव्वाइं
 ताइं वंदे ॥ इहसंतो तव संताइं ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ जगवन् जावंत केवि साहू ॥ जरहेरवय महाविदेहे अ ॥
 सव्वेसिं तेसिं पणउ ॥ तिविहेण तिदंरु विरयाणां ॥ १ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ परमेष्ठिनअस्कारः ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सवं साधुज्यः ॥

॥ अथ उपसर्गहरस्तवनं ॥

॥ उवस्तर्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥ विसह-

तो विमनिन्नासं ॥ मंगलकट्ठाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुग्गिअमं

॥ चेतोऽरे धारेइ जो सया मणुउ ॥ तस्स महरोगमारी ॥

॥ गंगरणां ॥ २ ॥ चिउउ दूरे भंतो ॥ तुअ पणामो

॥ परिणसुवि जीवा ॥ पावंति न उरुख

॥३॥ तुह सम्मत्ते लदे ॥ चिंतामणि कप्पयायवप्रहिए ॥ पावंति
अविग्घेणं ॥ जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संशुणं महायस
॥ जत्तिअरनिअरेण हिअएण ॥ ता देव दिअ वोहिं ॥ जवे जवे
पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ हाउ ममं तुह पज्जावउ जयवं ॥
जवनिवेउ मग्गा, एउसारिआ इउ फलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धचा
उ ॥ गुरुजणपूआ परउकरणं च ॥ सुहगुरुजोगोतवय, ए सेवणा
आजव सखंसा ॥ २ ॥ १७ ॥

॥ इत्यादि जयवीअराय पर्यंत चैत्यवंदन करे ॥ पीठें
खमासमण दे केँ इच्छा ॥ ज ॥ कुसुमिण दुसुमिण राई पाय
छिच विसोहणठं काउस्सग्ग करुं ? गुरु कहे करेह पीठें इठं कह
कर कुसुमिण दुसुमिण राई पायछित विसोहणठं करेमि काउ
स्सग्गं ॥ अन्नठ उलसिएणं ॥ इत्यादि पाठ कहे केँ सोले नव
कार अथवा चार लोगस्सका चंदेसु निम्मलयरा पर्यंत चिंतन
कर केँ काउस्सग्ग करे ॥ पीठें एमो अरिहंताणं कह कर काउ
स्सग्ग पारीकेँ सुखसेँ एक लोगस्सका पाठ प्रगट कहे, जो रात्रिमें
गुण संबंधि मोटको दूषण लागो होवे तो काउस्सग्गमांहे ॥ सागर
वरगंजीरा ॥ पर्यंत चिंतवे ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ पन्निक्कमणां ठायवेका अवसर हुवा ॥ जब खमासम
ण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र कहि केँ वांदिथे ॥ १ ॥ खमासमण
देइ श्रीउपाध्यायजी मिश्र कहिके वांदिथे ॥ २ ॥ खमासमण देइ
जंशम युगप्रधान वर्तमान जट्टारक श्रीपूज्यजीका नाम ले केँ वां
॥ ३ ॥ खमासमण देइ केँ सर्व साधुजीकुं वांदिथे ॥ ४ ॥ इस
चार खमासमणसेँ पन्निक्कमणां ठावी गोमालीये बैठ केँ मस्त
माय कर दोनु हाथे सुहपत्ती सुहमे दे कर ॥ सबस्सविराहरे,

॥ इत्यादि पाठ कहे, परंतु इच्छाकारेणसंदिस्सहं इच्छं इस्स माफकं न कहे ॥

॥ अथ सवस्सवि ॥

॥ सवस्सवि देवसिअ डुच्चिंतिअ डुप्पासिय दुच्चिठिअ इच्छा कारेण संदिस्सह जगवन् इच्छं ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कमं ॥ इति ॥ १८ ॥ संवेरका देवसिके ठिकाने राश्यं ऐसा पाठ कहे ॥

॥ पीठें नमुत्तुणं कह कें खमा होय कें ॥ करेमि जंते सा माश्यं सावच्चं जोगं पच्चक्कामि ॥ इत्यादिक पाठ कहे ॥ पीठें इच्छामि कानस्सग्गं जो मे राइनुं ॥ यह पाठ कहे ॥ सो लिखते हैं ॥

॥ अथ इच्छामिठामि ॥

॥ इच्छामि ठामि कानस्सग्गं ॥ जो मे देवसिअ अइआरो कं ॥ काइअ वाइअ माणसिअ ॥ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो ॥ अकरणिज्जो ॥ डुच्चान ॥ दुविच्चिंतिअ अणायारो ॥ अणिच्चिअवो ॥ असावगपाजग्गो ॥ नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए सामाइए ॥ तिन्हं गुत्तीणं ॥ चउन्हं कसायाणं ॥ पंचन्हमणुवयाणं ॥ तिन्हं गुणवयाणं ॥ चउन्हं सिक्कावयाणं ॥ बारसवियस्स सावगधम्मस्स ॥ जं खंमिअं जं विराहिअं ॥ तस्स मिच्छा मि दुक्कमं ॥ इति ॥ इहां देवसियंके ठिकानें राश्यं कहेनां ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ पीठें तस्सउत्तरी ० ॥ अन्नअ उअसिएणं कह कर चारित्रिअ गुदि निमित्त चार नवकार अथवा एक लोगस्सका कानस्सग्ग करी पारि कें दर्शन गुदि निमित्ते प्रगट लोगस्स कही सबलोए अरिहंत चेइआणं ॥ करेमि कानस्सग्गं वंदण वत्तिआए ॥ इत्यादि कहना सो लिखते हैं ॥

॥ अथ वंदणवत्तिआए ॥

॥ वंदणवत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए, सग वत्तिआए ॥ बोहिलान्न वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए

॥ १ ॥ सद्धाए मेहाए धीईए ॥ धारणाए अणुप्पेहाए ॥ वद्धमाणी
ए ठामि कान्हस्सगं ॥ २ ॥ इति ॥ ३० ॥

पीठें अन्नवृ० कही चार नवकार अथवा एक लोगस्सका
कान्हस्सग करके पारके ज्ञानाचार शुद्धि निमित्त पुस्करवरदी० ॥
सुवस्स जगवन् करेमि कान्हस्सगं ॥ इत्यादि पाठ कहे, सो
लिखते हैं ॥

॥ अथ पुस्करवरदी ॥

॥ पुस्करवरदीवहे, धायइसंभे अ जंबुदीवेअ ॥ जरहे स्वय
विदेहे, धम्माइगरे नमंतामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपरुलविद्धं, सणस्स
सुरगणनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधरस्स वंदे, पप्फोमिअ मोहजाल
स्स ॥ २ ॥ जाई जरामरण सोगपणासणस्स, कद्धाण पुख्खलवि
सालसुद्धावहस्स ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सार
मुवल्लभ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धेणो पयन्णमो जिणमए, नंदी
सया संजमे ॥ देयं नाग सुवन्न किन्नर गण, स्सप्पूअ जावच्चिए ॥
लोगो जन्त पइठिन् जगमिणं, तेलुक्कमच्चा सुरं ॥ धम्मो वद्धन् स
सन् विजयन्, धम्मुत्तरं वद्धन् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३१ ॥ सुअस्स ज
गवन् करेमि कान्हस्सगं वंदणवत्तिआए० ॥ ए पाठ पूर्ण कह कर
अन्नवूससिएणं कह के आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका कान्ह
स्सग करे, कान्हस्सगके मांहे आजुणा चार ग्रहर चिंतवे, सो आ
गे लिखेंगे, पीठें सिद्धाणं बुद्धाणंका पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग्ग मु-
वगयाणं, नमो सया सब्बसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं
देवा पंजली नमं संति ॥ तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावी
रं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ॥ तं
आज्जागगान्न तारेड नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जिन सेल सिंहरे,

दिक्का नाणं निसीहिआ जस्त ॥ तं धम्मचक्रवट्ठिं, अरिठनेमिं न
मंसांमि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दो, यवंदिया जिणवरा चउघीसं
॥ परमठ निव्विअठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ वेयावच्चगराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्मद्विठि समादिगराणं ॥
इति ॥ करेमि कानुस्सगं ॥ अन्नवण ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ पीठें संभासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें तीसरे आवस्सग सूत्र
वाढणां निमित्तें मुहपत्ती पम्हिलेहुं ? गुरु कहे पम्हिलेह ॥ मुहपत्ती
पम्हिलेहे, पीठें वाढणां दे, तिनका विधि कहते हैं ॥

॥ अवग्रहके बाहिर उजा हुआ आधा नीचा नम कर
इचामि खमासमणो वंदिउं जावणिजाए निसीहिआए अणुजा-
णह मे मिउगगहं, इतना पाठ कह कर जूमि प्रमार्जन करता
हुआ निसीहि कह कें कठुक अवग्रहमें प्रवेश कर कें संभासा
प्रमार्जन कर कें उक्कर बैठ के नावे हाथमें मुहपत्ती ले कें नावे
कानलें ले कें जिमणा कान पर्यंत निह्माम पूंजी, मुहपत्ती आर्ये
रख कें तिसके मध्य जागमें गुरुचरणकी कल्पना कर कें ॥ अहो
कायं इत्यादि आवर्त कर कें कठुक नीचा नम कर मस्तकें अंजलि
कर कें गुरु सन्मुख दृष्टि स्थापन कर कें ॥ खमणिजो जे किलामों
॥ इत्यादि पाठ कहे, पीठें फेर ॥ जता जे ॥ इत्यादि आवर्तन कर
कें खडा होकें पीठें पगसैं जूमि पूजता हुआ अवग्रहलें बाहिर
निजजकें स्वस्थान पर आवे, जहां आवस्सियाए ॥ इत्यादि पाठ
सर्व कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सुगुस्वांदाणां ॥

॥ इचामि खमासमणो वंदिउं, जावणिजाए निसीहिआए
अणुजाणह मे मिउगगहं निसीहि ॥ अहो कायं काय संफासं,
खमणिजो जे किलामो ॥ अप्पकिलंताणं बहु सुत्तेण जे, दिवसो

वश्कंतो जत्ता जे जवणिऊं च जे, खामेमि खमासमणो ॥ देव-
 सिअं वश्कम्मं आवसिआए, पम्किमामि खमासमणाणं ॥ देव-
 सिआए, आसायणाए ॥ तिचीसन्नयराए जं किंचि मिआए, मण-
 डुक्कमाए, वयडुक्कमाए कायडुक्कमाए कोहाए, माणाए, मायाए, लो-
 ज्ञाए, सबकालिआए, सब मिओवयाराए, सबधम्माश्कमणाए ॥
 आसायणाए जो मे अइआरो कउं, तस्स खमासमणो पम्किमामि ॥
 निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ दूजी वारके वांदणें
 आवसिआए ए पद न कहेना, अने राइयें राइउं वश्कंतो, तथा
 चउमासीयें चउमासीउ वश्कंतो, पस्कीयें पस्को वश्कंतो, संवत्त-
 रीयेसंवत्तरीउ वश्कंतो ॥ एसीतरेंपाठकहेनां ॥ इति ॥ २४ ॥

॥ अथ देवसियं आलोउं ॥

॥ इच्छाकरेण संदिस्सह जगवन् देवसियं आलोउं इच्छं ॥ आ-
 लोएमि, जो मे ॥ इति ॥ २५ ॥ देवसियंके ठिकाने राइयं कहेनां ॥

॥ पीठें रात्रि संबंधि अतिचार गुरु समक्ष आलोवे, सो क-
 हेते हैं ॥

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥ आजुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय
 ॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख
 तेजकाय ॥ सात लाख वाजकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पति-
 काय ॥ चउदे लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ दोय लाख बेइं-
 द्रिय ॥ दोय लाख तेंद्रिय ॥ दोय लाख चौरिंद्रिय ॥ चार लाख
 देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्थेच पंचैंद्रिय ॥ चउदे
 लाख मनुष्य ॥ एवं चार गतिके चौराशी लाख जीवायोनिमें,
 माहारे जीवें जे कोइ जीव हएयो होय, हणाव्यो होय, हणतां
 प्रत्ये जलो जाण्यो होय, ते सबेहुं मन वचन कायार्थे करी मिआ
 मि डुक्कमं ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ अथ अंदारे पापस्थानक आलोउं ॥

॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥ ३ ॥
मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥ ५ ॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया
॥ ८ ॥ लोभ ॥ ९ ॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२
॥ अन्धकारान्ध्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य ॥ १४ ॥ रति ॥ अरति ॥ १५ ॥
परपरिवाद ॥ १६ ॥ मायामृषावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वशब्द
॥ १८ ॥ ए अंदारे पापस्थानक सेव्यां होय, सेवराव्यां होय,
सेवना प्रत्ये ज्ञानां जाण्यां होय, ते सबे हुं मनें, वचनें, काथार्ये
की तस्स मिच्छा मि डुक्कमं ॥

॥ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नव
करवाली, देव गुरु धर्मकी आशातना करी होय ॥ पन्नरे कर्मादा
नोकी आसेवना करी होय ॥ राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, ज्ञात
कथा करी होय, और जो कोई पाप पर निंदा कीयुं होय, कराव्युं
होय, करतां अनुमोद्युं होय सो सर्व मन वचन, काथार्ये करके, दि
वस अतिचार आलोयणे कर के पम्किमणामे आलोउं ॥ तस्स
मिच्छा मि डुक्कमं ॥ इति आलोयणं ॥ इहां प्रजातके पम्किमणामे
दिवसके ठिकाने रात्रिका पाठ केहेनां ॥ इति ॥ १८ ॥

॥ पीठें सबस्सवि राइयं ॥ इत्यादि पाठ केहे, तिहां
इच्छाका ॥ जण ए पद कहनेसें आलोया हुआ अतिचारका प्रा-
यचित्त मागे ॥ गुरु कहे पम्किमह ॥ पीठें इच्छं तस्स मिच्छामि
डुक्कमं कह के संमासा प्रमार्जन कर के आसन पर बैठे के जि-
मणा गोमा उंचा रख के मावा गोमा नीचे कर के ऐसें कहे कि
जगवन्! सूत्र जणुं? तव गुरु कहे जणेह ॥ पीठें इच्छं कहि के तीन
नवकार अरु तीन बार करेमि जंते ॥ जण के इच्छामि पम्कि
मिच्छं जो मे राइ इत्यादि कह कर ॥ तं निंदे तंच गरिहामि

पर्यंत वंदिता सूत्र कहे, सो लिखते हैं ॥ पीठें खम्हा हो कें अष्टुठि
जमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रावक वंदितासूत्र ॥

॥ वंदितु सब सिद्धे, धम्मायरिए अ सबसाहू अ ॥ इच्छामि
पम्भिमिजं, सावगधम्माइआरस्त ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो,
नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ॥ सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे
तं च गरिहामि ॥ २ ॥ डुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे
अ आरंजे ॥ कारावणे अ करणे, पम्भिमि देवसियं सबं ॥ ३ ॥
जं वरुमिदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्तेहिं ॥ रागेण व दोसेण
व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चं-
कमणे अणाज्जेणे ॥ अज्जिज्जे अ निज्जे, पम्भिमि ॥ ५ ॥ संका
कंख विगिंठा, पसंस तह संथवोकुलिंगीसु ॥ सम्मत्तस्त इआरे,
पम्भिमि ॥ ६ ॥ ठक्काय समारंजे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसां
॥ अत्तघाय परछा, उज्जयछा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचएहमणुव-
याणं, गुणवयाणं च तिसह मइयारे ॥ सिक्काणं च चउसहं, पम्भि-
क्कमे ॥ ८ ॥ पढमे अणुवयंमि, थूलग पाणाइवाय विरईउ ॥
आयरिअ मप्पसत्ते, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह बंध ठविच्छेए,
अइ ज्ञारे जत्त पाण वुच्छेए ॥ पढमं वयस्त इआरे, पम्भिमि ॥
१० ॥ बीए अणुवयंमि, परिथुलगअलिअ वयण विरईउ ॥ आया-
रिअमप्पसत्ते, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा रहस्त दारे,
नेसुवएसे अ कूमलेहे अ ॥ बीयं वयस्त इआरे, पम्भिमि ॥
१२ ॥ तइए अणुवयंमि, थूलग परदव्वहरण विरईउ ॥ आयरिअ
मप्पसत्ते, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहरप्पज्जे, तप्पमिरूवे
वरुह गमणे अ ॥ कूरुतुल कूरुमाणे, पम्भिमि ॥ १४ ॥ चउछे
अणुवयंमि, निच्चं परदारगमण विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसत्ते, इत्थ
पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग वीवाह तिब्ब

अगुरागे ॥ चउठ वयस्स इआरे, पम्किम्मे० ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए
 पं, चमंमि आयरिअ मप्पसत्तंमि ॥ परिमाण परिच्छेए, इत्त पमायप्पसं
 गेणं ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्तू, रूप्प सुवत्ते अ कुंविअ परि-
 माणे ॥ डुपए चउप्पयंमि, पम्किम्मे० ॥ १८ ॥ गमणस्स य परि-
 माणे, दित्तासु उट्टं अहेअ तिरिअं च ॥ वुम्भिसइअंतरद्दा, पढमंमि
 गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्झंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ
 गंधमत्ते अ ॥ उवज्जोग परिज्जोगे, बीयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते
 पम्बिदे ॥ अपोल डुप्पोलिअं च आहारे ॥ तुत्थोसहि ज्ञस्सकणथा,
 पम्किम्मे० ॥ २१ ॥ इंगाली वणसामी, ज्ञामी फोमी सुवज्जाए
 कम्मं ॥ वाणिज्जं चेव दं, त लख रस केस विसविसयं ॥ २२ ॥
 एवं खु जंतपिच्चणं, कम्मं निच्चंणं च दवदाणं ॥ सरदद तलाव
 सोसं, असई पोसंच वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्तग्गि मसल जंतग, तण
 क्के मंत मूल जेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविएवा, पम्किम्मे० ॥ २४ ॥
 न्हाणू वट्ठण वन्नग, विलेवणे सदल्लव रसगंधे ॥ वत्तासण आजरणे,
 पम्किम्मे० ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुकुइए, मोहरि अहिगरण जोग अइ-
 रित्ते ॥ दंमंमि अणठाए, तइयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे
 डुप्पणिहाणे, अणवठाणे तहा सइ विहुणे, ॥ सामाइअ वितहकए,
 पढमे सिस्कावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सदे रूवे अ
 पुग्गलखेवे ॥ देसावगा सिवंमि, बीए सिस्कावए निंदे ॥ २८ ॥
 संथा रुच्चारविही, पमाय तह चेव ज्ञोयणाज्जोए ॥ पोसह विदि
 विवरीए, तइए सिस्कावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निस्सिवणे, पि-
 हिणे ववएस मत्तरे चेव ॥ कालाइक्कम दाणे, चउठे सिस्कावए
 निंदे ॥ ३० ॥ सुहिए सअ उहिए सुअ, जामे असंजएस अणुकंपा
 ॥ रागेणव दोसणव, तंनिंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु
 संविज्जागो, न कउ तव चरण करण जुत्तेसु ॥ संते फासु अ दाणे

तं निंदे तं च गरिहामि ॥३१॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ
 आसंस पन्ने ॥ पंचविहो अइआरो, मा मद्य हुज्ज मरणंते ॥३३॥
 काएण काइअस्स, पम्भिकमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसि-
 अस्स, सबस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिक्कागा,
 रवेसु सन्ना कसाय दंमेसु ॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो
 अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मदिठि जीवो, जइ विहुपावं समायरे
 किंचि ॥ अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥
 तं पिहुसपम्भिकमणं, सप्परिआवं सज्जत्तरगुणं च ॥ खिप्पं जवसामेइ,
 चाहिब सुसिख्खिज्ज विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुठ्ठयं, मंत मल
 विसारया ॥ विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निविसं ॥ ३८ ॥
 एवं अठविहं कम्मं, राग दोस समज्झिअं ॥ आलोयंतो अ निंदंतो,
 खिप्पं हणइ सुत्तावज्ज ॥ ३९ ॥ कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ
 निंदिय गुरुसगासे ॥ होइ अइरेग लहुज्ज, उहरिअ जरुव जारवहो
 ॥ ४० ॥ आवस्स एण एएण, सावज्ज जइवि बहुरज्ज होइ ॥
 उरकाण मंत किरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलो-
 अणा बहुविहा, नयसंजरिआ पम्भिकमणकाले ॥ मूल गुण उत्तर-
 गुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलि
 पन्नत्तस्स ॥ अप्पुठ्ठिमि आरा, हणाए विरज्जमि विराहणाए ॥
 तिविहेण पम्भिकंतो, बंदामि जिणे चजवीसं ॥ ४३ ॥ जावंति
 चेइआइं० ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहू० ॥ ४५ ॥ चिर संचिय
 पाव पणासणीइ, जवसयसहस्स महणाए ॥ चजवीस जिण वि-
 णिग्गय कहाइं, वोळंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता,
 सिद्धा साहु सुअं च धम्मो अ ॥ सम्मदिठो देवा, दितु समहिं च
 बोहिं च ॥ ४७ ॥ पम्भिसिद्धाणं करणे, किच्चाण मकरणे पम्भिक-
 मणे ॥ असदहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खा-
 मेमि सब जीवे, सबे जीवा खमंतु मे ॥ मित्तीमे सब नूएसु, वेरं

मङ्गलं न केणइ ॥ ४९ ॥ एव महं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ डुगं-
ठिअं सम्मं ॥ तिविहेण पम्किंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ५०
॥ इति ॥ ५१ ॥ इहां प्रजातके पम्किमणमे देवसिके ठीकाने राइयं
कहना ॥

॥ पीठें दो बाइणां देकर अवग्रहमांदिथकोज कहे ॥ इच्छा-
का० ॥ सं० ॥ ज० ॥ अमुष्णिमि अग्निंतर ॥ राइयं खामेमि ?
गुरु कहे खामेइ ॥ संतासा प्रमार्जन पूर्वक गोमाली बैठ के, वे
बांइ पडिलेहि ॥ मुहपत्ती वामहाथसूं मुखें देई, दक्षिण हाथ
गुरु सामो करी ॥ नीचो नम्यो अको जंकिंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि
संपूर्ण कहे ॥

॥ अथ अमुष्णि ॥

॥ इच्छाकरेण संदिस्सइ जगवन् अमुष्णिमि अग्निंतर देव-
सिद्ध खामेजं ॥ इच्छं खामेमि देवसियं जंकिंचि अप्पत्तियं जत्ते
पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे ॥ समासणे अंतर-
जासाए उवरिजासाए ॥ जं किंचि ॥ मङ्गविणय परिहीणं सुहु-
मंवा वायरं वा ॥ तुझे जाणह अहं न जाणामि ॥ तस्स सिद्धामि
डुक्कमं ॥ इति ॥

॥ इहां गुरु पण सिद्धामि डुक्कमं कहे. पीठें वे बाइणां देई
जूमि प्रमार्जन करता हुआ पगसैं अवग्रह बाहिर आय के आयं-
रिय उवजाए इत्यादि तीन गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ आयरिय उवजाए ॥

॥ आयरिअ उवजाए, सीते साहमीए कुलगणे अ ॥ जे
मे कया कसाया, सबे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सबस्स समणं
संवस्स, जगवन् अंजलिं करिअ सीते ॥ सबं खमावइत्ता, खमामि
सबस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सबस्स जीवरासिस्स, जावन् धम्मो निदिअ
निअ चित्तो ॥ सबं खमावइत्ता, खमामि सबस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

पीठें करेमि जंते इछामि ठामि कानुस्सगं तस्सुत्तरी० ॥
 श्रीमहावीर स्वामी ठमासि तप चिंतवणा निमित्तं करेमि कानु-
 स्सगं अन्नवू० ॥ कहि कें कानुस्सग करे, कानुस्सगमें श्रीवीर-
 क्त ठम्मासी तप चिंतवन करे ॥ चोवीश नवकार अथवा ठ
 छोगस्सका कानुस्सग करे, कानुस्सग पारिकें प्रगटलोगस्स कहे ॥
 ॥ ठठे आवश्यककी मुहपत्ती पम्हिलेहुं ? गुरु कहे पम्हिलेह
 ॥ मुहपत्ती पम्हिलेही वे वांदणां देई सकल तीर्थनाम लइ नम-
 स्कार करे, सो लिखे हैं.

॥ अथ सकल तीर्थ नमस्कार ॥

॥ स्रग्धरा वृत्तम् ॥

॥ सङ्गत्तया देवलोके रविशशिजवने, व्यंतराणां निकाये,
 नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने ॥ पाताले पन्न-
 गेंद्रे स्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थकराणां प्रतिदि-
 वसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे
 कुंभले हस्तिदंते, वरुकारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवंते ॥
 शैले चैत्रे विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ २ ॥
 श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्वुदे पावके वा, सम्मेते तारके
 वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ॥ सह्याद्रौ वैजयंते विमल-
 गिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षि-
 तितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे वधाटे विटपिधनतटे हेमकूटे
 विराटे ॥ कर्णाटे हेमकूटे विकटतरंकटे चक्रकूटे च जौटे ॥ श्री०
 ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निपधे मेखले पिष्ठले वा,
 नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले केरले वा ॥ माहाले
 कोशले वा विगलितसलिले, जंगले वा ठमाले ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥
 अंगे वंगे कर्लिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे, गौमे चौमे मुरंमे
 वरतरद्रविमे उद्रियाणे च पौंमे ॥ आर्द्रे माद्रे पुलिंद्रे द्रविमुकवलये,

कान्यकुब्जेसुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चंदायां चंद्रमुख्या गजपुरमधु-
 रापत्तने चोङ्गायिन्यां, कौशल्यां कौशलाया कनकपुरवरे देवगिर्यां
 च काश्यां ॥ रासक्ये राजगेहे दशपुरनगरे नदिले ताम्रलिप्त्यां ॥
 श्री० ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येऽतरिक्षे गिरिशिखरहृदे स्वर्णदीनीरतीरे,
 शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने भूरुहाणां निकुंजे ॥ ग्रामेऽरण्ये
 वने वा स्थलजलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ “श्री-
 मन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाढमलौ जंबुवृक्षे, चौङ्गान्ये चैत्यनंदे
 रतिकररुचके कौमले मानुषांके ॥ इक्षुकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ
 व्यंतरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके नवन्ति त्रिभुवनवलये यानि चैत्या-
 लयानि” ॥ ९ ॥ इत्थं श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठन्ति प्रवीणाः,
 प्रोद्यत्कल्याणहेतुं कलिमलहरणं नक्तिज्ञाजस्त्रिसंध्यम् ॥ तेषां श्री-
 तीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां, कार्याणां सिद्धिरुच्चैः
 प्रमुदितमनसां चित्तमानंदकारि ॥ १० ॥ इति चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥
 इति ॥ ३१ ॥

पीठे गुरुमुखे यज्ञस्काण करि कै ॥ इच्छामोनि सद्धियं कहि
 कै गुरु एक गाथाकी स्तुति कहे.

॥ पीठेशमो खमासमणार्ण णमोऽर्हत्तिष्ठा ॥ कह कर.
 परसमय तिमिरतरणिं ए लीन गाथा कहीजें सो लिखते हैं ॥

॥ अथ परसमय तिमिरतरणिं ॥

॥ परसमय तिमिरतरणिं, नवसागर वारि तरण वरतरणिं
 ॥ नागपराग समीरं, वंदे देवं आहावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्ध संसार
 विहारकरि, दुरन्तजावारिणा नेकामं ॥ निरन्तरं केवलिसत्तमा
 न्यो, नवावहं मोहजरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेहकारिकुनयागमरूढगूढ,
 संमोहपंकहरणामलवारिपूरम् ॥ संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वी-
 नागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥ परिमलजरलोत्तालीढलोला-
 लिमात्रा, वरकमलनिवासे हारनीहारहाणे ॥ अविरलचविकारागार

विञ्चितिकारं, कुरु कमलकरं मे मङ्गलं देविसारम् ॥ ४ ॥ इति ॥
३३ ॥ अथवा संसारदावानी तीन गाथा कहेवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ संसारदावा स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरम् ॥
माया रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ ज्ञा-
वावनाम सुरदानवमानवेन, चूलाविलोककमलावलिमालितानि ॥
संपूरिताजिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि
तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपद पदवी नीरपूराजिरामं, जीवाहिंसा-
विरललहरीसंगमागाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरु गममणी संकुलं दूरपारं,
सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमूला लोलधूली बहुल
परिमला लीढलोलालिमाला, जंकारा रावसारा मलदलकमलागार-
जूमिनिवासे ॥ गयासंज्ञारसारे वरकमलकरे तारहाराजिरामे, वा-
णीसंदोहदेहे जवविरहवरं देहि मे देवि सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥ इत्यादि तीन गाथा ज्ञानी, शक्रस्तव कहे. पीठें स्वर्ग हो
कर अरिहंत चेइयाणं करेमि कानुस्सग्गं ॥ वंदणवत्तिआएण अन्नबूण
॥ इत्यादि पाठ कहि कें ॥

॥ कानुस्सग्गमाहे एक नवकार चिंतवी ॥ एक श्रावक
प्रथम कानुस्सग्ग पारी नमोऽर्हस्सिद्धाएण कही ॥ एक गाथा स्तुति
कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नंद ॥ नव कर तनु निरुपम,
नील वरण सुखकंद ॥ अहि लंठण सेवित, पञ्चमावड धरणिंद ॥
प्रह ऊठी प्रणमूं, नित प्रति पास जिणंद ॥ १ ॥ ए गाथा एक
जण कहे ॥ दूसरे सब कानुस्सग्गमाहे रह्या हुआ सुणे ॥ पीठें
शमो अरिहंताणं कहि कें कानुस्सग्ग पारे ॥ इस तरे आगे पण
जाणणां ॥ पीठें लोगस्स कहि ॥ सबलोए अरिहंत चेइयाणं वंदण

वत्ति० ॥ अन्नबू० ॥ इत्यादि कहि कैं ॥ एक नवकारका काउस्तग
करी पारि कैं दूजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ कुल गिरिवेयद्वड, कणयाचल अन्निराम ॥ मानुषोत्तर
नंदी, रुचक कुंरुल सुखगम ॥ नुवणेसुर व्यंतर, जोइस विमाणी
नाम ॥ वर्ते ते जिणवर, पुरो मुज मन काम ॥ २ ॥

॥ पीठें पुस्करवदीवद्धे कहि कैं सुयस्त जगवन्त० वंदण०
अन्नबू० कही ॥ एक नवकारका काउस्तग पारि कैं ॥ त्रीजी
स्तुति कहे, सो लिखते,

॥ जिहां अंग इग्यारे, वार उपंग ठ ठेद ॥ दस पयन्ना
दाख्या, मूल सूत्र चउजेद ॥ जिन आगम पद्मव्य, सप्त पदारथ
जुत्त ॥ साजलि सईदतां, त्रूटे करम तुरत्त ॥ ३ ॥

॥ पीठें सिद्धाणं बुद्धाणं ॥ कहि कैं वेयावच्चगराणं ॥
अन्नबू० कही ॥ एक नवकारका काउस्तग करी पारि कैं एमो-
इहस्तिद्धा० कहि कैं चौथी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ पउमावई देवी, पार्श्व यद्ध परतद्ध ॥ सहु संघनां संकट,
दूर करेवा दद्ध ॥ समरो जिनज्जकि, सूरि कहे इक चित्त ॥ सुख
सुजस समापो, पुत्त कलत्र बहु वित्त ॥ ४ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ पीठें नीचा वैठ कैं एमोबूए० कहि कैं ॥ तीन खमा-
समणें पूर्वोक्त रीतें ॥ आचार्य, उपाध्यय, सर्वसाधु वांदे ॥

॥ अथवा केई ठिकाने जिमणो हाथ नीचो करि, मुखें
मुहपत्ती देई अट्ठाइजेमु कहे हैं, सो लखते हैं ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ अट्ठाइजेसु ॥

॥ अट्ठाइजेसु ॥ दीव समुद्धेसु ॥ पन्नरससु कम्मजूमसीसु ॥
जादंत केवि साहू ॥ रयहरण गुत्तपणिग्दधारा पंचमहद्वयधारा ॥
जडारसहस्त सीलंगधारा ॥ अस्कयायारारिचा ॥ ते सबे सिरसा
ह्मसा मन्त्रएण वंदामि ॥ इति ॥

॥ इतना विधि किया पीठें स्थिरता हुवे तो खमासमें
तीन बखत देई ॥ इच्छाकारेण संदिस्तह जगवन् ॥ चैत्यवंदन करुं
जी. यह पाठ कह कर चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय त्रिजुवन आदिनाथ, पंचमगति गामी ॥ जय
जय करुणा शान्त दांत, जवि जनहितकामी ॥ जय जय इंद नरिंद
वृंद, सेवित सिरनामी ॥ जय जय अतिशयानंतवंत, अंतर्गत-
जामी ॥ १ ॥ पूरव विदेह विराजता ए, श्री सीमंधर स्वाम ॥
त्रिकरणशुद्ध त्रिहुं कालमें, नितप्रति करूं प्रणाम ॥ २ ॥ जं किं-
चिनाम तिष्ठं ॥ नमोऽब्रूणं जावंति चेऽब्रूण जावंत केवि साहू ॥
॥ नर एमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुज्यः ॥ तक कहि के
सीमंधरजीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३७ ॥

॥ अथ सीमंधरजिनस्तवनम् ॥

॥ जगजीवन जग बालहो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसीमंधर साहिबा, वीनतमी अवधार लाल रे ॥
परम पुरुष परमेस्वर, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥
केवल ज्ञान दिवाकर, जांगे सादि अनंत लाल रे ॥ जासक लो-
कालोक के, ज्ञायक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ इंद्र चंद्र
चक्रीसरू, सुर नर रहे कर जोरु लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा,
अणहूँता इक कोरु लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ चरण कमलपिंजर
वसे, मुज मन हंस नित मेव लाल रे ॥ चरण शरण मोहि आ-
शरो, जव जव देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अधम उधारण
गो तुम्हें, दूर हरो जव डुःख लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष मया करी,
देजो अविचल सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ इति ॥ ३८ ॥

॥ पीठें लयवीरराय० वंदणवत्तिथाए० ॥ अन्नब्रू० क.

कैं ॥ एक नवकारका काजस्तग करे ॥ पारि कैं नमोऽईत्तिद्धा०
कही ॥ एक शुईनी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ महीमंनसं पुससोवन्न देदं, जणाणंदणं केवलन्नाणगेदं ॥
महाणंदलब्धी बहुबुद्धिरायं, सुसेवाम सीमंधरं तिष्ठरायं ॥ १ ॥ इम
होज धिरता हुवे तो, श्रीसिद्धाचलजीका चैत्यवंदन करे, सो
लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय नाजि नरिंद, नंद सिद्धाचल मंरुण ॥ जय जय
प्रथम जिणंद चंद, जव डुख विहरुण ॥ जय जय साध सुरिंद विंद,
वंदिय परमेसर ॥ जय जय जगदानंद कंद, श्रीरिषज जिणोसर ॥
अमृतसम जिन धर्मनो ए, दायक जगमें जाण ॥ तुज पद पंकज
प्रीति धर, निशिदिन नमत कट्याण ॥ १ ॥ जं किंचि नामतिष्ठं०
॥ एमोत्तुणं ॥ जावंति चेइआइं० ॥ जावंत केवि साहू० ॥ एमो-
ऽईत्तिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुज्यः तक कहि कैं श्री सिद्धाचल-
जीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३ए ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ सिद्धाचल गिरि जेठ्यां रे ॥ धन्य ज्ञाम्य हमारां ॥ विम-
लाचलगिरि० ॥ एह गिरिवरनो महिमा महोठो, कहेतां न आवे
पारा ॥ रायण रूख समोसर्या स्वामी, पूर्व नवाणूं वारा रे ॥ ध०
॥ १ ॥ मूलनायक श्रीआदिजिनेश्वर, चोमुख प्रतिमा चार ॥ अष्ट
द्रव्यसें पूजो जावें, समकित मूल आधारारे ॥ ध० ॥ २ ॥ दूर
देगथी हुं इहां आयो, श्रवण सुनी गुण तोरा ॥ पतित उद्धरण
विरुद्ध तुमारा, एह तीरथ जग सारा रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ जाव
जक्तिसें प्रभू गुण गावे, अपना जन्म सधारा ॥ जात्रा करि
जिविन गुप्त जावें, नरक तिर्यंच गति वारा रे ॥ ध० ॥ ४ ॥
व्रत अठारे ज्ञासी मास आपाढे, वदि आवम जे ॥ ५ ॥

प्रभुके चरण परतापसिंहमें, कमारतन प्रभु प्यारा रे ॥ ध० ॥ ५॥

॥ पीठें जयवीयराय० ॥ वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नबू० ॥ कहिकें
एक नवकारकाकानुस्सग करी ॥ पारिकें नमोऽर्हत्तिदा० ॥ कहिकें ॥

॥ शत्रुंजगिरि नमियें, रुषनदेव पुंरुंरीक ॥ शुभ तपनो
महिमा, सुणि गुरु मुख निरुंरीक ॥ शुद्ध मन उपवासैं, विधिगुं
चैत्यवंदनाक ॥ करियें जिन आगल, टाली वचन अलीक ॥ १ ॥
इति ॥ ४१ ॥ पीठें फुरसद होवे तो पंमिलेहण करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ पडिलेहण ॥

॥ खमासमण देई इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् ॥ पंमि-
लेहण संदिस्सानं ? गुरु कहे, संदिस्साएह ॥ बीजे खमासमणें ॥
॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पंमिलेहण करुं ? गुरु कहे, करेह ॥
पीठें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पंमिलेहे ॥ इमहीज दोइ खमासमणें
अंग पंमिलेहण संदिस्सानं ॥ अंगपंमिलेहण करुं, कहीके धोतियुं
कणदोरो पंमिलेहि कें ॥ खमासमण देई इच्छाकार जगवन् पंसाज
करी पंमिलेहण पंमिलेहावो जी. एम कही ॥ आपनाचार्य
पंमिलेह रक्के, अने जो गुर्वादिक आपनाचार्य पंमिलेहे, तो
पण खमासमण देई आग्या मागे, पीठें खमासमण देई
॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ती पंमिलेहुं ? गुरु कहे पंमिलेहेह
॥ पीठें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पंमिलेहि ॥ दोय खमासमणें ॥ इ-
च्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उहि पंमिलेहण संदिस्सानं ॥ उही पंमि-
लेहण करुं ॥ एम कही कंबल वस्त्रादि पंमिलेहे ॥ पीठें पोषध-
शाला प्रमार्जी काजो, विधिगुं परठवी खमासमण देई इरियावही
पंमिकमे ॥ ए मूलविधि जाणवो ॥ इतनी स्थिरता न होवे, तो ज्ञी
दृष्टिपंमिलेहण तो अवश्य करणी ॥ अबज्जी प्राये एही करते दि-
खते हैं ॥

॥ अथ सामायिक पारणेका विधि कहे हैं ॥

॥ पीठें सामायिक पारे ॥ एक खमासमण देई ॥ मुहपत्ती
पन्निहे ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ सामायिक
पारुं ॥ गुरु कहे पुणोवि कायबो, पीठें यथाशक्ति कही वली खमा-
समण देई कहे, इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ सामायिक पारेमि ॥
गुरु कहे आचारो न मोत्तबो ॥ पीठें तहत्ति कही, अर्द्ध नमि ऊजो
थको, तीन नवकार गुणी नीचो गोमालीयें वेसी मस्तक नमावी
॥ जयवं दसस्रजदो ॥ इत्यादिगाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ भयवं दसस्रजदो ॥

॥ जयवं दसस्र जदो, सुदंसणो थूलिजद वयरोय ॥ सफली
कयगिहचाया, साहू एहं विहा हुंती ॥ १ ॥ साहूण वंदणेणं, ना-
सइ पावं असंकिया ज्ञावा ॥ फासु अदाणे निज्जर, अज्जिग्गहो
नाण माईणं ॥ २ ॥ ठुमठो मूढमणो, कित्ति य मित्तं पि संज्जरइ
जीवो ॥ जं च न संज्जरामि अहं, मिच्चामि डुक्कमं तस्स ॥ ३ ॥
जं जं मणेण चित्ति य, मसुहं वायाइ ज्ञासियं किंचि ॥ असुहं काएण
कयं, मिच्चामि डुक्कमं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहसं, ठियस्स
जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो सफलो बोधवो, सेसो संसार फलहेज्ज
॥ ५ ॥ सामायिक विधें लीधुं विधें कीधुं, विधि करतां अविधि आशा-
तना लगी होय, दश मनका, दश वचनका, वारह कायाका, वत्तीस
दूपणमांहि जो कोइ दूपणलगा होय, सो सहु मन कर, वचन
कर, कायायें करी मिच्चामि डुक्कमं ॥ इति सामायिक पोसह
पारवानी गाथा ॥

॥ अथवा पहिलां सामायिक पारी कें, पीठें पन्निहेण करे,
जहां यथायोग्य अवसरें गुरुकूं सुहराइ पूठै ॥

दूसरा खमासमण देवे, श्रीजिनपति सूरिजीकी सामाचारीमें
सैं कह्यो हे ॥ इति सामायिक पारणविधि ॥

॥ अथ संध्याकाल सामायिक विधिर्लिख्यते ॥

॥ पिठले पहोरे धर्मशाला प्रमार्जी वस्त्रादिक पमिलेहे, जो अवेरो आयो हुवे, तो दृष्टिपमिलेहण करे ॥ पीठें गुरु आगें अथवा थापनाचार्यजी आगें आवी जूमि प्रमार्जी आसण वाम पास मूकी खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेहेह, इच्छं कही ॥ फिर खमासमण देई मुहपत्ती पमिलेहे ॥ पीठें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक संदिस्ताजं ? गुरु कहे संदिस्तावेह ॥ फिर खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक ठाजं ? गुरु कहे, ठाएह ॥ इच्छं कही फिर खमासमण देई ॥ अर्द्धावनत थई तीन नवकार गुणी कहे, इच्छकार जगवन् ! पसानु करी सामायिक दंरुक उच्चरावो जी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीठें करेमि जंतें सामाश्यं ॥ इत्यादि सामायिक सूत्र गुरु वचन अनुज्ञापण करतो थको तीन वार उच्चरी खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ इरियावहियं पम्किमामि ? गुरु कहे पम्किमेह ॥ पीठें इच्छं कही ॥ इच्छामि पम्किमिजं ॥ इरियावहियाए इत्यादि पाठसैं इरियावहियं पम्किमी ॥ एक लोगस्सका कानुस्सगग करी, एमो अरिहंताणं कही, कानुस्सगग पारी मुखें प्रगट लोगस्स कही, नीचें बैठ कें मुहपत्ती पमिलेहि वांदणां देई कहे, इच्छाकार जगवन् ! पसानु करी पञ्चस्काण करावोजी, पीठें गुरु, दिवस चरिम पञ्चस्काण करावे ॥ गुरु अज्ञावें थापनास समकें अथवा स्वमुखें, अथवा वनेरा साधमीं मुखें पञ्चस्के ॥ तय, जो तिबिहार उपवास कीधो हुवे, तो मुहपत्ती पमिलेहि पुसअ करे ॥ वांदणां न देवे, अने जो चउबिहार उपवास हुवे, ॥ ११ ॥ स्काण करवुं वे नही ॥ ते माटें मुहपत्ती नहिं पमिलेहे ॥ अवरगं-विस्तार विधि है ॥ पीठें एक खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥

॥ सिद्धाय संदिस्तानं ? गुरु कहे, संदिस्तावेह, पीठें इच्छं कही
 वली खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ॥ ॥ ॥ सिद्धाय करुं ?
 गुरु कहे करेह ॥ पीठें इच्छं कही ॥ खमासमण देई ॥ जजो थको
 मधुर स्वरें आठ नवकारनी सिद्धाय करे ॥ पीठें खमासमण देई
 ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ॥ ॥ वेसणुं संदिस्तानं ? गुरु० संदिस्तावेह
 ॥ फिर खमासमण देई इच्छा० ॥ सं० ॥ ॥ ॥ वेसणुं ठानं ?
 गुरु कहे, ठाएह ॥ पीठें इच्छं कही जो शीत कालादि हुवे तो
 खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ॥ ॥ पांगरणुं संदिस्तानं ?
 गुरु कहे, संदिस्तावेह ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ॥
 ॥ पांगरणुं पन्निग्धानं ? गुरु कहे पन्निग्धाएह ॥ पीठें इच्छं
 कही शुभ ध्यान करे ॥ इति संध्यासामायिक विधिः ॥

॥ अथ देवसि पन्निक्कमण विधिर्लिख्यते ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ॥ ॥ ॥
 चैत्यवन्दन करुं ? गुरु कहे करेह, पीठें इच्छं कही ॥ जय तिहुयण कहे
 ॥ जिसमें परकी तथा चउमासी तथा संवत्तरीके रोज तीस गाथा
 कहेनी ॥ और दिनोमें तो पांच गाथा पड़ेलेकी, और दोय गाथा
 पिठामीकी, एवं सात गाथा कहेनेकी प्रवृत्ति देखणेमें आवे हैं.
 अथ जयतिहुअण लिखते हैं ॥

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्क जय जिण धन्नं तरि, जय
 तिहुअण कल्लाणकोस डरिअक्करि केसरि ॥ तिहुअण जण अविलं-
 पाण भुवणत्तय सामिअ, कुणमुसुदाइ जिणेस पास अन्नणय
 ॥ १ ॥ तइं समरंत लइंति जत्तिवर पुत्त कलत्तहिं, धस सुवन्न
 पुण्ण जणजुंजहि रज्जहि ॥ पिरकहि सुक्क असंखसुक्क तुह
 यसाइण, जय तिहुअण वरकप्परुक्क सुक्कहि कुण महजिण ॥
 ॥ २ ॥ जरजजोर परिजुस वसणहुठ सुकुठिण, चक्कुरकीणखणखुस

निरसस्त्रिअसूत्रिण ॥ तह जिण सरणरसायणेण दहु हुंति पुणससव,
 जय धसंतरि पास महवि तुहुं रोगहरो जव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइस
 मंततंतसिद्धिअपयत्तिण, जुवणपुअ अठविह सिद्धि सिज्जाइ तुह
 नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तनवि जण होइ पवित्तन, तं ति-
 हुअण कल्लाणकोस तुह पास निरुत्तन ॥ ४ ॥ खुद पवत्तइ मंत
 तंत जंताइं विसुत्तइ, चरथिरगरलगहुग्गखग्गरिजवग्गविगंजइ ॥
 उठियसत्त अणत्त घत्त निम्मारइ दय करि, डुरिअई हरन सुपासदेव
 डुरिअकरिकेसरि ॥ ५ ॥ तुह आणाथंजेइ नीमदप्पुद्धर सुरवर,
 ररकस जरक फणिंद विंद चोरानलजलहर ॥ जलथलचारिरनदखुद
 पसुजोइणि जोइअ, इयतिहुअणअदिलंधिआण जय पास सुसामिअ
 ॥ ६ ॥ पठिअ अत्त अणत्तहिठजत्तिप्रर निप्रर, रोमंचं चिअचारु-
 काय किस्सरनरसुरवर ॥ जसुसेवहिं कमकमलजुअल परकातिअ
 कलिमलु, सो जुवणत्तयसामि पास महमद्वज रिजबलु ॥ ७ ॥ जय
 पणकमलजसलजय पंजरकुंजर, तिहुअणजण आणंदचंद
 देणयर ॥ जय मइमेइणि वारिवाह जयजंतुपिआमह,
 ॥ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥ ८ ॥ बहु विहवणुअवणु
 धिठपसहि, मुक्कधम्मुकामत्तकाम नर नियनियसत्तहि ॥
 पुरदि दरिसणत्त बहु नाम पसिद्धन, सो जोइ अमण
 हिरसण पास पवद्ध ॥ ९ ॥ जयविअल रणज्जिरदसण
 पासरय, तरलिअ नयणविसणुसुणुगगिरगिरकरुणय ॥
 १० ॥ सरंति हुंति नरनासिअ गुरुदर, महविज्जविसज्जसइ पास
 कुंजर ॥ १० ॥ पइंपासविविअसंतनित्तपत्तंतपवित्तिय,
 वाहपवाहपवूढरूढ डुहदाहसुपुलइय ॥ मणूहिंमणसजण पुसअ-
 णंसुरनर, इय तिहुअण आणंदचद जय पास जिणेसर ॥ ११ ॥
 कल्लाणमहेसुघंटंकारवपिद्धिअ, वल्लरमल्लमहल्लजत्तिसुरवरगं-
 अ ॥ हल्लुप्फलिअ पवत्तयंति जवणेहिमहूसव, इय तिहुअ

आणंदचंद जय पाससुहुअव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनियं-
 रविदुरिअ तमपहयर, दंसिअ सबलपयवविठरिअ पहाजर ॥ क-
 लिकलुसिअ जण धूअलोयलोयणहअगोयर, तिमिरइं निरुहर
 पासनाइ जुवणत्तय दिणयर ॥ १३ ॥ तुह समरणजलवरिससित
 माणव मइ मेइणि, अवरारसरुहुमवबोद कंदलदलशरेणि ॥ जायइ-
 फलजरजरिय हरिय उहदाइ अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाइ
 दिसिपास मइं मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कल्लाणवच्चिउल्लुरि-
 यउहवणुं, दाविअसग्गपवग्गमग्ग डुग्गइग्ग वारणुं ॥ जय जंतुद-
 जणएणतुल्लजंजणियहियावहु, रम्म धम्म सो जयउ पास जय
 जंतु पिआमइ ॥ १५ ॥ जुवणारसनिवास दरिअपरदरिसणदेवय,
 जोइणिपूअणखित्तवाल खुदासुर पसुवय ॥ तुह उत्तठ सुनठ सुठ
 अविंसंतुलचिठहिं, इय तिहुअण वणसिंह पास पावाइ पणासहिं
 ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरयण कर, रंजिअ नइयल, फलिणी
 कंदलदलतमाल निळुप्पलसामल ॥ कमठासुर उवसग्गवग्ग संसं-
 ग्गअगंजिअ, जय पच्चक्कजिणेस पास थंजणय पुरठिअ ॥ १७ ॥
 मइमणतरलपमाणेय वायाविविसंतुलु, नियतणुरवि अविणयसहाव
 आलसविहिलंधलु ॥ तुहमाइप्पपमाणदेव कारुसपवत्तनं, इयम-
 इमाअवहीरपासपालहिविलवंतउ ॥ १८ ॥ किंकिंकप्पिउण्येयकलु-
 णकिंकिंवनजंपिउ, किं वनचिठ्ठिउकिठ्ठेवदीणयमविलंविउ ॥ का-
 सुनकियनिप्पल्ललल्लुअल्लेहिंउहत्तइं, तहविन पत्तउताण किंपि पइं
 पहु परिचत्तइं ॥ १९ ॥ तुहुं सामिइ तुहुं माय वप्प तुहुं
 मित्तपियंकरु, तुहुं गइ तुहुं मइ तुंहिज ताण तुहुं गुरु खेमंकरु
 ॥ इउं उइज्जरज्जारिअवरान रानलनिप्पग्गन, लीणउ तुह कमक-
 मल सरणजिणपालहि चंगउ ॥ २० ॥ पइंकिविकयनीरोय-
 लोयकिविपावियसुइसय, किविमइंमंतमहंतकेवि किविसाहियसि-
 पय ॥ किवि गंजिअरिउवग्गकेविजसघवल्लिअ जुअल, मइं अवही-

रहिकेणपास सरणागयवञ्चल ॥ ११ ॥ पञ्चुवयारनिरीहनाहनिप्पस
 पयोअण, तुहुं जिण पासपरोवयार करुणिकपरायण ॥ सत्तुमित्त संम-
 चित्तवित्तिनयनिंदअसममण, मा अवहीरिअजुगगन्नविमइं पासनिरं-
 जण ॥ १२ ॥ हनं बहुविहउहत्तगत्तुहुं उहनासणपरु, हनं
 सुयणहकरुणिकगण तुहुं निरुकरुणाकरु ॥ हनंजिण पासअसामि-
 सालु तुहुं तिहुअणसामिअ, जं अवहीरहि मइं ऊखंतइय पासन
 सोदिअ ॥ १३ ॥ जुग्गाजुग्ग विजागनाहनहुजोअणतुहसम, जव-
 णुवयारसु दावजाव करुणारससत्तम ॥ समविसमह किंघण नएइं
 नुविदाहुसमंतन, इय उहबंधव पासनाह मइं पाळ शुणंतन ॥
 १४ ॥ नयदीणहदीणयमुएवि अस्सविकिविजुग्गय, जं जोइयनवं-
 यारुकरइनवयारसमुक्काय ॥ दीणह दीणनिहीणजेणतुहनाहिण-
 चत्तन, तो जुग्गनअहमेव पासपालहिमइं चंगन ॥ १५ ॥ अहअ-
 स्सविजुग्गयविसेसकिविमस्सहि दीणह, जं पासविनवयारुकरइ
 तुहनाह समग्गह ॥ सुच्चिअकिल कट्ठाणुजेण जिण तुम्ह पसीयह,
 किं अस्सुण तंचेव देव मामइंअवहीरह ॥ १६ ॥ तुह पढण नहुं
 होइ विहल जिणजाणन किं पुण, हनं उरिक्कन निरुसत्तचत्तउक्कहु
 नस्सुयमण ॥ तं मस्सुन निमिसेण एण एनविक्कइ लप्पइ, सच्चं जं
 उरिक्कियवसेण किं नंवरु पच्चइ ॥ १७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह
 मइं अप्पपयासिन, किक्कन जं नियरूवसरिसुनमुणुंवहुं जंपिन ॥
 अणु ए जिणजगत्तुहसंमोविदस्सिणादयासन, जइअवगिणासि
 णुंहिजअहहकिंहोइसहयासन ॥ १८ ॥ जइ तुहरूविणकिंणविपेअ
 ॥ इणवेलंविन, तनजाणुंजिणपास तुम्ह हनंअंगीकरिअन ॥ इयम-
 णिअ जं न होइ सातुहउहावण, रक्कंतह नियकित्तिणे य जु-
 णिअअवहीरण ॥ १९ ॥ एवमहारिहजत्तदेवइयन्हवणमहूसन, जं
 णेलिय गुणगहण तुम्ह मुणिजणअणिसिद्धन ॥ इय मइं पसि-
 सुंपासनाहअंजणयंपुरिअ, इय मुणिवरंसिंरि अजयदेव विस्सवइ

आणिदिअ ॥ ३० ॥ इति श्रीस्तंजनकतीर्थराजश्रीपार्श्वनाथस्त-
वनम् ॥

पीठे जय महायस कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ जय महायस प्रारंभः ॥

॥ जय महायस जय महायस जय महाजाग जय चिंतिय
मुह फलय ॥ जय समठ परमठजाणय, जय जय गुरु गिरिम
गुरु ॥ जय उहत्त सत्ताण ताणय, अंजणयठिय पासजिण ॥ ज-
वियह ज्ञीम जवत्तु, जव अवणं ताणं तं गुण ॥ तुज्जत्ति संज
नमोहु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीठे शक्रस्तव कह केँ खरुा हो कर अरिहंत चेइयाणं०
॥ करेमि कान्त्सगं वंदणवत्तिआए० ॥ अन्नवू० ॥ इत्यादि पाठ
कहे केँ कान्त्सगमांहे एक नवकार चिंतवी एक आवक कान्-
स्सग पारी नमोऽईत्तसिद्धाण ॥ कही एक गाथा स्तुति कहे, सो
लिखते हैं

॥ अथ महावीरजिनस्तुति प्रारंभः ॥

॥ मूर्ति मन मोहन, कंचन कोमल काय ॥ सिद्धारथ
नंदन, त्रिशलादेवी समाय ॥ मृगनायक लंठन, सात हाथ तनु
मान ॥ दिनदिन सुख दायक, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥

॥ ए स्तुति एक आवक कहे. अरु दूसरे आवक सब कान्-
स्सगमें रहे थके मुने. पीठे एमो अरिहंताणं कह केँ कान्त्सग
पारे. इत्तीतरे आगे पण स्तुतिकी चारों गाथामें जान लेनां.

॥ पीठे लोगस्त कह कर सबलोए अरिहंत चेइयाणं वंद-
णवत्ति० ॥ अन्नवू० ॥ कहि केँ एक नवकारका कान्त्सग करे.
पारि केँ उक्त स्तुतिकी दूसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सुर नर किन्नर, वंदित पद अरविंद ॥ कामित नर
पूरण, अज्जिनव सुरत्तरु कंद ॥ जवियणनें तारे, प्रवहण सम नि-

शिदीस ॥ चौबीशे जिनवर, प्रणमं विशवा वीस ॥ यह दूसरी
गाथा कहि कैं कानुस्सग्ग पारे. पीठें पुस्करवरदी० वंदणवत्तिआए०
अन्नहू० कहि कैं, एक नवकारका कानुस्सग्ग कर कैं, पारि कैं उक्त
स्तुतिकी तीसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अरथें करि आगम, ज्ञाख्या श्रीजगवंत ॥ गणधरने
गूण्य, गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पण महिमा, कहि न
शके एकंत ॥ समरुं सुखसायर, मन शुद्ध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥
यह गाथा कहि कैं सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ वेयावच्चगराणं अन्नहू० ॥
कही कानुस्सग्ग पारी उक्त स्तुतिकी चौथी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सिद्धाधिकादेवी, वारे विघन विशेष ॥ सहु संकट चूरे,
पूरे आश अशेष ॥ अहोनिश कर जोमो, सेवे सुर नर इंद ॥ जंपे
गुण गण इम, श्रीजिनलान्न सूरिंद ॥ ४ ॥ इति महावीरजिन
स्तुतिः ॥ यह चौथी स्तुति कहिकैं बैठ कैं नमोन्नयन कहे, पीठें एक
खमासमण देई कैं श्रीआचार्य मिश्र दूसरा खमासमण दीये. प ठें
श्रीउपाध्यायजी मिश्र तीसरा खमासमणदे कर श्रीवर्त्तमान आ-
चार्यजीका नाम ले कैं मिश्र चौथे खमासमणमें सर्व साधुजीमिश्र
इसी तरे कह कर गोमालीयें बैठ कैं मस्तक नमावी सबस्सवि
देवसियण इत्यादि कह कर तस्स मिच्चामि पुक्कमं कहे, परंतु 'इ-
च्चाकारेण संदिस्सह इच्चं' ए पद न कहे ॥

॥ पीठें खमे हो कर करेमि जंतु सामाइयं० ॥ इच्चामि ठामि
कानुस्सग्गं जो मे देवसिज्जं० ॥ तस्सुत्तरिणं ॥ अन्नहू० ॥ इत्यादि
कहि कैं, आठ नवकारका कानुस्सग्ग करे. कानुस्सग्गमांहे आजूरा
चउ प्रहरमें ॥ इत्यादि पाठ मनमें चिंतवी, एमो अरिहंताणं कही
कानुस्सग्ग पारि कैं प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ पीठें संभासा प्रमार्जित पूर्वक बैठ कें तीसरे आवश्यक सूत्र वांदणां मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेदेह. पीठें मुहपत्ती पमिलेहि कें वांदणां देवे. पीठें अवग्रहमांदिज उज्जो थको इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ देवसियं आलोनं, एसा कहे. तब गुरु कहे आलोएह. पीठें इच्छं आलोएमि० ॥ यह पाठ कह कें अतिचार आलोवे. पीठें सबस्सवि देवसियं इत्यादिथी मांमाने इच्छाकारेण संदिस्सह पर्यंत कहे, तब गुरु पमिक्कमह. यह पाठ कहे ॥

॥ पीठें इच्छं तस्स मिच्छामि उक्कमं कहि कें संभासा प्रमार्जित प्रमार्जित जूमियें आसन पर बैठ कें जगवन् ! सूत्र जणुं एसा कहे. तब गुरु कहे जणेह. पीठें इच्छं कही तीन नवकार गणी, तीन करेमि जंते जणीने इच्छामि पमिक्कमिजं जो मे देवसिज्ज इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे. दूसरा सब सुने. पीठें खमा हो कर अप्पुब्बिमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वांदणां देवे, अरु अवग्रहमांदिज खमा हुवा इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ अप्पुब्बिमि अप्रितर देवसियं खामेजं ? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीठें इच्छं खामेमि देवसियं कहि कें गोमालीयें बैठ कें वाम हाथे मुहपत्ती मुखें धर कें दक्षिण हाथ गुरु सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे. पीठें विधिसेंती दो वांदणां दे कर आयरिय उव-
व्याय इत्यादि त्रण गाथा कहिकें करेमि जंते सामाज्यं इच्छामि ठामि कान्धस्सगं इत्यादि कही चारित्र शुद्धि निमित्तें करेमि कान्ध-
स्सगं अन्नवू० ॥ कहि कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका कान्धस्सग करी पारि कें पीठें दर्शनशुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही सबलोए अरिहंत चेइयाणं० ॥ वंदणवत्ति० अन्नवू० ॥ कहि कें एक लोगस्सका कान्धस्सग करी पारि कें ज्ञान शुद्धि निमित्तें पुस्कारवरदीवळे कहि कें सुयस्स जगवन्० ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नवू० ॥

॥ कहि कैं एक लो०स्सका कानस्सग करे. पीवैं पारि कैं सिद्धाणं बुद्धाणं० कहि कैं वेयावच्चगराणं न कहे. पीवैं सुयदेवयाए करेमि कानस्सगं अन्नवू० ॥ कही एक नवकारनो कानस्सगं करे. पीवैं गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक कानस्सग पारिकैं एमो अर्हत्सिद्धा० कहि कैं श्रुत देवताकी स्तुति कहे. गुरु हुवे तो गुरु कहे. और दूजा सर्व स्तुति सुण कैं कानस्सग पारे. अब श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाद्, द्वादशांगी जिनोद्भवा ॥ श्रुतदेवी सदा मह्य, मशेषश्रुतसंपदम् ॥ १ ॥ पीवैं खित्तदेवयाए, करेमि कानस्सगं० ॥अन्नवू० ॥ कहि कैं, एक नवकार चिंतवी पूर्वली परे क्षेत्रदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते है.

॥ अथ क्षेत्रदेवताको स्तुति ॥

॥ यासां क्षेत्रगताः संति, साधवः श्रावकादयः ॥ जिनाज्ञां साधयंतस्ता, रक्षंतु क्षेत्रदेवताः ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पीवैं खमा हुवा एक नवकार कही, संमासा प्रमार्जि नकमूवैठ कैं ठठे आवश्यककी मुहपत्ती पमिलेहुं? गुरु कहे पमिलेदेह.

॥ पीवैं मुहपत्ती पमिलेही विधिगुं दो वांङ्गां देइ नैं वरकनक कहे, सो लिखते है.

॥ अथ वरकनक प्रारंभः ॥

॥ नैं वरकणय संख विद्रुम, मरगय घण सन्निहं विगय मोहं ॥ सित्तरि सयं जिणाणं, सवामर पूइयं वंदे ॥ स्वाहा ॥ १ ॥ नैं नवणवय वाण मंतर, जोइसबासविमाण वासीय ॥ जे केवि डुढदेवा, ते सबे नवसमंतु मे स्वाहा ॥ १ ॥ पच्चस्काण नहिं लिया होय तो करे ॥ सामाधिक चोइसठो पम्किमणां, वांङ्गां, कान्

सुसंग, पञ्चस्काण, ठ आवश्यक सांधतां कानो, मात्रा, उंगो अः
 धिको अकर उंचो नीचो कह्यो होय, ते सर्वे मन, वचन, कायार्थे
 करी मिच्छामि दुक्कमं ॥ इच्छामो अणुसदिं० ॥ कही बैठे. प ठें गुरु
 एक स्तुति कह्या पीठें श्रावक समस्त, मस्तकें अंजलि करिकें एमो
 खमासमणाणं ॥ एमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कही ॥ एमोऽस्तु वर्द्धमानाय०
 इत्यादि तीन स्तुति कहे. श्राविका एमो खमासमणाणं, कही सं-
 सारदावाकी स्तुति कहे.

॥ अथ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ॥ तज्जयावा-
 समोक्ताय, परोक्ताय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विक्रचारविंदराज्या,
 ज्यायः कमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं
 संतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्द्धितजंतुनिर्वृतिं, क-
 रोतिप्रो जैनमुखांबुदोक्तः ॥ स शुक्रमासोन्नववृष्टि सांज्ञो, ददातु
 तुष्टिं मयि विस्तरोगिराम् ॥ ३ ॥ श्वसितसुरभिगंधा लोढनृङ्गकुरङ्गं,
 मुखशशिनमजस्रं विव्रती या विव्रति ॥ विकच कमलमूञ्चैः साऽ-
 स्त्वर्चित्यप्रज्ञावा, सकलमुखविधात्री प्राणज्ञाजां श्रुताङ्गी ॥ ४ ॥ ॥ ति ॥

॥ यह तीन गाथा कहि कें पीठें एमोबूलां० कह कें एक
 श्रावक खमासमण दर्ई कहे:-इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ स्तवन,
 जणुं ? दूसरा खमासमण देई कहे ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ स्त-
 वनजणुं स्तवन सांजलुं ? गुरु कहे, जणेह सांजलेह. पीठें आसन
 पर बैठ कें नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहि कें वमो स्तवन कहे, सो लि-
 खते हैं ॥

॥ अथ श्री चितामणि पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ जविका श्रीजिनविंव जुहारो, आतम परम आधारो रे
 ॥-ज० ॥ श्री० ॥ जिनप्रतिमा जिन सारखी जाणो, न करो शंका

काई ॥ आगम वाणीने अनुसरें, राखो प्रीति सवाई रे ॥ ज०
 श्री० ॥ १ ॥ जे जिनविंब स्वरूप न जाणे, ते कहिये किम जाणें
 ॥ जूला तेह अज्ञानें जरिया, नहिं तिहां तत्त्व पिठाणें रे ॥ ज०
 ॥ श्री० ॥ २ ॥ अंबर आवक श्रेणिक राजा, रावणप्रमुख अनेकें
 ॥ विविधपरें जिन जगति करंता, पाम्या धर्म विवेक रे ॥ ज० ॥
 श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु जगतें जोतां, होय निश्चय उप-
 गार ॥ परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जो जो आर्द्र कुमार रे ॥ ज०
 ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आकारें जलचर, ठे बहु जलधि
 मजार ॥ ते देखी बहुला मत्स्यादिक, पाम्या विरतिप्रकार रे ॥
 ज० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ पांचमा अंगें जिनप्रतिमानो, प्रगटपणें
 अधिकार ॥ सूरियाज सुर जिनवर पूज्या, राय पसेणी मजार
 रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ दशमें अंगें अहिंसा दाखी, जिन पूज्या
 जिनराज ॥ एहवा आगम अरथ मरोमी, करिये केम अकाज रे
 ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ समकितधारी सतीय द्रौपदी, जिन
 पूज्या मन रंगें ॥ जो जो एहनो अरथ विचारी, ठे ज्ञाता अंगें रे
 ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ विजयसुरें जिम जिनवर पूजा, कीधी
 चित्त शिर राखी ॥ द्रव्य ज्ञाव बिहुं जेदे कोनी, जीवाजिगम ते
 साखी रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु आगम साखें,
 कोइ शंका मति करजो ॥ जिनप्रतिमा देखी नित नवली, प्रेम
 पयो चित्त धरजो रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ १० ॥ चिंतामणि प्रभु
 पास पसायें, सरधा होजो सवाई ॥ श्रीजिनलानें सुगुरु उपदेशें,
 श्रीजिनचंद्र सवाई रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति श्रीचिंता-
 मणि पार्श्वजिन स्तवनम् ॥
 ॥ पीठें तीन खमासमणें आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु वांदी,
 ढाड़जेसु कहनां, फेर खमासमणें ॥ इच्छाका ॥ सं ॥ ज० ॥

देवसि पाथ छेत्त विशुद्धि निमित्तं कान्तस्तग करुं? गुरु कहे, करेह. पीठें इच्छं कहि कें देवसि पाथ छेत्त विशुद्धि निमित्तं करेमि कान्त-स्तगं अन्नबू ॥ कहि शोले नवकार अथवा चार लोगस्तका कान्त-स्तग करे, पारी कें लोगस्त कहे.

॥ पीठें खमासमण दे कर इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ खु-
दोवदव नुमावणठं करेमि कान्तस्तगं ॥ अन्नबू० ॥ इत्यादि कहि.
शोल नवकार अथवा चार लोगस्तका कान्तस्तग करे, पारि कें
प्रगट लोगस्त कहे. पीठें खमासमण देई ॥ सज्जाय संदिस्ताजं फेर
खमासमण देई सज्जाय करुं? तीन नवकार गुणीजें. पीठें खमा-
समण देई कें ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ जगवन् चैत्यवंदन करुं जी ॥
ऐसा कह कर थंजणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हे ॥

॥ अथ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तंजने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्या-
जयदेवसूरिविबुधाधीशैः समारोपितः ॥ संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिव
फलं स्फूर्जत्फलापह्नवः, पार्श्वः कटपतरुः समे प्रथयतां नित्यं मनो-
वांछितम् ॥ १ ॥ आधि व्याधिहरो देवो, जीरावच्छीशिरोमणिः ॥
पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणां श्रिये ॥ इति ॥

॥ पीठें नमोवृणंसैं लेकें जयवीरराय सुधी कहे ॥ पीठें
खमासमणपूर्वक मस्तक नमावी 'सिरि थंजणयडिय पास सामिणो०'
इत्यादि दोय गाथा कहे, सो लिखते हे.

॥ अथ श्रीथंभणयडियपाससामिणो ॥

॥ श्री थंजणयडियपाससामिणो सेस तिष्ठसामीणं ॥ तिष्ठ
समुन्नय कारणं, सुरासुराणं च सबेसिं ॥ १ ॥ एस महं सरणठं,
कान्तस्तगं करेमि सत्तीए ॥ जतीए गुण सुद्धिस्त, संघस्त समुन्नय
निमित्तं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ श्रीशंभुनाथ पार्श्वनाथजी आराधना निमित्तं करेमि काउं-
स्सगं ॥ पीठें खेदे हो के वंदणव० ॥ अन्न० ॥ कही चार लोग-
स्सका काउस्सग करि कें पीठें पारी प्रगट लोगस्स कही कें ॥
श्रीखरतरगञ्ज सिणगारहारजंगम युगप्रधान जट्टारक दादाजी श्री
जिनदत्त सूरिजी चारित्र चूमामणीजी आराधना निमित्तं करेमि
काउस्सगं ॥ अन्नबू० कहि कें, एक लोगस्सका काउस्सग करे,
पीठें प्रगट लोगस्स कहि कें

॥ श्रीखरतरगञ्ज सिणगारहारजंगमयुग प्रधान जट्टारक दा-
दाजी श्रीजिन कुशल सूरिजी चारित्र चूमामणिजी आराधना निमित्तं
करेमि काउस्सगं ॥ अन्नबू० कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग
करे, पीठें प्रगट लोगस्स कहि बैठ कें मावो गोमो नंचो करि कें
खमासमण देई कें, इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ चैत्यवंदन करुं जी,
ऐसें कहि कें चैत्यवंदन करे.

॥ अथ चउकसाय ॥

॥ चउकसाय पमिछूछूण, उज्जय मयण बाण मुसुमूरण
॥ सरस पिंयंगु वन्धु गय गामिण, जयन पास जुवणत्तय सामिण
॥ १ ॥ जसु तणु कंति करुणसिणिद्धन, सोहइ फणमणि किरणा
लिद्धन ॥ ननव जलहर तमिछय लंठिय, सो जिणु पासु पयण्य
वंठिय ॥ २ ॥

॥ अर्हन्तो जगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आ-
चार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायकाः ॥ श्रीसिद्धांतसु-
पाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं
कुर्वंतु वो मंगलम् ॥ १ ॥

॥ पीठें नमुबूणसैं ले कें जयवीरराय पर्यंत कहि के परकी,
चउम्मासी अरु संवत्तरीके रोज तो बनी शांति सुणे, परंतु और

दिनोमें ठोटी शांति नुणे, ओ लिखते हैं.

॥ अथ लघुशांतिस्नवः ॥

॥ शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांताशिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः
शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ उमिति निश्चितव-
चसे, नमो नमो जगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांति जिनाय जयवते,
यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा, संपत्ति-
समन्विताय शस्याय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमोनमः शांतिदेवाय
॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वामिकसंपूजिताय निजिताय ॥ ज्ञुवन-
जनपालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघना-
शन, कराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ दुष्ट ग्रह जूतपिशाच, शाकि-
नीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र, प्रधानवाक्योपयोग-
कृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत तं शांतिम्
॥ ६ ॥ जवतु नमस्ते जगवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥
अपराजिते जगत्यां, जयतीति जयावहे जवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि
च संघस्य, जद्र कळ्याण मंगलप्रददे ॥ साधूनां च सदा शिव, सुतु-
ष्टिपुष्टिप्रदे जीयां ॥ ८ ॥ जव्यानां कृतसिद्धे, निर्वृति निर्वाणजननि !
सत्त्वानाम् ॥ अजय प्रदाननिरते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुज्यम् ॥
९ ॥ जक्तानां जन्तूनां, शुजावहे नित्यमुद्यते देवि ! ॥ सम्यग्दृ-
ष्टीनां धृति, रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां,
शांतिनतानां च जगति जनतानाम् ॥ श्रीसंपत्कीर्त्ति यशो, वर्द्धिनि !
जय देवि दिजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानल विप्रविपधर, दुष्ट ग्रह राज
रोगरणजयतः ॥ राक्षस रिपुगण मारी, चौरेतिश्वापदादिज्यः ॥ १२
॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, करु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टिं
कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥ जग-
वति गुणवति शिवशांति, तुष्टि पुष्टिस्वस्तिह कुरुकुरु जनानाम् ॥

उ नमिति नमो नमो ह्रीं, ह्रीं ह्रूं ह्रः यः कः ह्रीं फट् फट् स्वाहा ॥ १४ ॥

एवं यन्नामाक्षर, पुरस्सरं संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शांतिं नमतां,
नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि दर्शित, मंत्रपद-
विदर्शितः स्तवः शांतेः ॥ सलिलादिजय विनाशी, शांत्यादिकरश्च
नक्तिनताम् ॥ १६ ॥ यथैनं पठति सदा, शृणोति ज्ञावयति वा
यथायोग्यम् ॥ स हि शांतिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥
उपसर्गाः द्वायं यांति, विद्यंते विघ्नवह्नयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति,
पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगल मांगढ्यं, सर्व कष्टघाण
कारणम् ॥ प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ १९ ॥ इति ॥

॥ पीठें चीराकका अथवा बीजलीका चांदणा परा होय तो
इरियावहि० तस्मुत्तरी० अन्नलू० कहि कै, एक लोगस्तका कान-
स्तग करे, प ठैं प्रगट लोगस्त कहि पूर्वलो परें सामायिक पारे,
पीठें एक स्तवन दादाजोको कहे ॥ इति देवसी पम्किमण
विधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्जसमगौरी ॥
कमले स्थिता जगदल, ददातु श्रुतदेवता सौख्यम् ॥ १ ॥ ज्ञाना-
दिगुणयुतानां, स्वाध्यायध्यानसंयमरतानाम् ॥ विदधातु ज्ञानदेवी,
शिवं सदा सर्वलाभनाम् ॥ २ ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः
साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, ज्ञूयान्नः सुखदायिनी ॥
३ ॥ इति क्षेत्रदेवता स्तुतिः ॥

॥ कट्याणकमला गेह, नीलदेहं महासहं ॥ नवखं मान्निधं
पार्थ्व, सदा ध्यायामि मानसे ॥

॥ अथ छुटक चैत्यवन्दनस्तुतिलिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्रीपार्श्वजिन स्तुतिः ॥

॥ सकलकुशलवह्नी, पुष्करावर्त्तमेधो, दुरिततिमिरजानुः,
कल्पमृक्षोपमानः ॥ ज्वजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः, स ज्वतु
सततं वः, श्रेयसे श्रीपार्श्वदेवः ॥ १ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन ॥

॥ अथ जिनस्तुतिः ॥

॥ दर्शनादुरितध्वंसी, वंदनादिष्ठितप्रदः ॥ पूजानात्पूरकः
श्रीणां, जिन साक्षात्सुरद्रुमः ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुतिः ॥

॥ सुवर्णवर्णं गजराजगामिनं, प्रलंबबाहुं सुविशाललोचनम्
॥ नरामरेन्द्रैः स्तुतपादपंकजं, नमामि ज्ञत्तया रूपज्ञं जिनोत्तमम् ॥
३ ॥ इति आदिजिनस्तुतिः

॥ अथ शांतिजिन स्तुतिः ॥

॥ सोलम जिनवर शांतिनाथ, सेवो शिर नामी ॥ कंचन
वरण शरीर कांपि, अतिशय अन्निरामी ॥ अचिरा अंगज विश्व-
सेन, नरपति कुलचंद ॥ मृगलंठन धर पद कमल, सेवे सुरनरवृंद
॥ जुगमां अमृत जेहवी ए, जास अखंरित आण ॥ एक मर्ने
आराधतां, लहिये कोमि कळ्याण ॥ ४ ॥ श्रीशांतिनाथस्तुतिः ॥

॥ अथ नेमिनाथस्तुतिः ॥

॥ प्रह सम प्रणमुं नेमिनाथ, जिनवर जयवंत ॥ यादव-
कुल अवतंस हंस, उत्तम गुणवंत ॥ समुद्रविजय शिवा देवी
जास, मति सहित उदार ॥ सुंदर श्याम शरीर ज्योति, सोहे
सुखकार ॥ गढ गिरनारें जिण लह्युं ए, अमृत पद अन्निराम ॥
तास कमा कळ्याण मुनि, निशिदिन नमत कळ्याण ॥ ५ ॥ इति
श्रीनेमिनाथ ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ पुरसादाणी पास नाह, नमिये मन रंग ॥ नील वरण
अश्वसेन नंद, निरमल निःशंक ॥ कामित पूरण कलप साख, वामा-
सुत सार ॥ श्रीगोमी पुर स्वामि नाम, जपिये निरधार ॥ त्रिजु-
वनपति त्रेवीशमो ए, अमृत सम जन्मु वाण ॥ ध्यान धरंतां
एहनं, प्रगटे परम कढ्याण ॥ ६ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

॥ वंदू जगदधीर सार, शिव संपत्ति कारण ॥ जन्म जरा
मरणादि रूप, ज्ञव ताप निवारण ॥ श्रीसिद्धारथ तात मात,
त्रिशला तनुजात ॥ सोवन वरण शरीर वीर, त्रिजुवन विख्यात
॥ अमृतरूपे राजतो ए, चोवीशमो जिनराय ॥ कृमाप्रमुख कढ्याण
मुणि, आपो करि सुयसाय ॥ ७ ॥ इति श्री महावीर ॥

॥ अथ पाक्षिकादि पडिकमणविधिर्लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम वंदितु सूत्र पर्यंत दैवसिक पम्किमी ॥ १ ॥
खमासमण देई देवसी आलोइयं पम्किंता ॥ इच्छा ० ॥ सं० ॥
ज० ॥ पक्षिय मुहपत्ती पम्किहेहुं ? चउमासीएं चउमासियं मुह-
पत्ती, संवच्चरीये संवच्चरी मुहपत्ती पम्किहेहुं ? एम कहे. पीठें गुरु
कहे, पम्किहेह ॥ पीठें इच्छं कहे, दूजी खमासमण देई, मुहपत्ती
पम्किहेही, वांइणां देई, तिहं ज्ञापि पम्को वंइकंतो ॥ चउमासी
पम्कि ॥ चउमासीन वंइकंतो संवच्चरीमें संवच्चरो वंइकंतो. एम
य ॥ पीठें गुरु कहे. पुण्यवंतो देवसीने स्थानकें पा-
प्रतिचमासिक सांवच्चरिक जणजो. ठीक जयणां करजो.
शासपम्किमजो, खासे सो विवरा शुद्ध खासजो. मांरुलमें
राज श्रो, पीठें सघलाही तहत्ति कहे ॥ पीठें ऊठी ॥
इच्छाकांनसुप ॥ ज० ॥ संवुद्धा खामणेणं ॥ अष्टुठिनि अष्टि-

तर पस्त्रियं ॥ ३ ॥ खामेऊं ? गुरु कहे, खामेह ॥ पीठें मस्तके
 अंजलि करतो थको, इहं खामेम पस्त्रियं ॥ ३ ॥ कहा, गोमंतीये
 बेसी मस्तक नमावी दक्षिण हाथ गुरु साहामो करा, मुहपत्ती
 मुखें देई ॥ पस्त्रियें पनरसहुं दिवसाणं पनरसहुं राईणं जं किंचि-
 अप्पत्तियं ॥ इत्यादि सर्व पाठ कहे, चनुमासें चनुहुं मासाणं अ-
 ष्णुं परकाणं वीसोत्तरसो राईदियाणं जं किंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि
 कहे. संवठरीयें डुवालसहुं मासाणं चनुवीसहुं परकाणं तिन्निस्सय-
 सविराईदियाणं ॥ जं किंचि अप्पत्तियं इत्यादि कहे ॥ तेवरें गुरु
 पण मिठामि डुक्कमं कहे ॥ तिहां दोय साधु उचरता हुवे तो पा-
 खियें तीन, चनुमासीयें पांच, संवठरीयें सात साधुने खन्नावे ॥
 ॥ पीठें उठी अवग्रहमांहि रह्यो कहे ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥
 पस्त्रियं आलोवुं ? गुरु कहे आलोएह ॥ पीठें इहं आलोएम, जो
 मे पस्त्रियं ॥ ३ ॥ अड्यारोकठ, इत्यादि मूत्र ज्ञसी ॥ संक्षेपे
 अथवा विस्तारें पाखी चनुमासी संवठरी, अतिचार आलोवे, सो
 लिखते ह ॥

॥ अथ बृहदतिचारा लिख्यंते ॥

॥ नाणंमि दंसणंमिय, चरणंमि तवेय तहय विरियंमि ॥
 आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहक्कणिओ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार १,
 दर्शनाचार २, चारित्रार ३, तपाचार ४, वीर्याचार ५. एवं पांच
 विधि आचारमांहि जिको अतिचार पञ्च दिवसमांहि सूक्ष्म, वादर,
 जाणतां अणजाणतां हुओ होई, ते सहू मन, वचन, कायाइं करी
 मिच्छामि डुक्कडं ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतिचार ॥

॥ काले विणप् बहुमाणे, उवहाणे तहय निह्वणे ॥ वंजणं

अत्थ तदुभए, अष्टविहो नाण मायारो ॥ १ ॥ ज्ञानः—कालवेला-
मांहि पढिउं गुणिउं नहो, अकालें पढिउं, विनय हीन बहुमान
हीन उपधान होन श्री उपाध्यायकर्ने नही पढिउं, अथवा अनेरा-
कने पढिउं अनेरो गुरु कह्यो व्यंजन अर्थ तदुभय कूडो पढ्यो, देव
वांदणे पढिक्कमणे सिद्धाय करतां, पढतां, गुणतां, कूडो अक्षर काने
मात्रें अधिको ओछो आगल पाछल भण्यो, सूत्र अर्थ कूडा भण्या,
भणोनें बोत्ताये, तपोधन तणे धर्म काजो अण ऊधरे दांडो अण-
पडिलेही, वसती अणसोधी, असिद्धाई अणोज्ञा कालवेलामाहि
दर्शनैकालिक प्रमुख सिद्धांत भण्यो गुण्यो, योग वह्यां पखें भण्यो
ज्ञानोपगरण पाटो, पोथी, ठवणो, कवली, नवकरवाली, सांपडा
सांपडो वही दस्तरी ओलीया कागल प्रमुखप्रतें आशातना दुई,
पग लागो थूंक लागो ओसासे मूक्यो कर्ने छतां आहार नोहार
कीयो, ज्ञानद्रव्य भक्षण भक्षण उपेक्षण कीयो, प्रज्ञापरार्थे विचार्यो
विणसतो उवेख्यो, छती शर्के सार संभाल न कीवी, ज्ञानचंत प्रतें
मछर वह्यो, अयज्ञा आशातना कीवी, कोई प्रतें भणतां गुणतां
प्रद्वेष मत्सर अंतराय अपवात कीयो. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधि-
ज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान. ए पांच ज्ञानतणी असहहगा
कीवी, कोई तोतडो बोबडो हस्यो, वितवर्यो आपणा जाणपणा
तणो गर्व चिंतव्यो, अष्टविध ज्ञानाचार विषड्ड जिको अतिचार
पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणता, अजाणतां, हुवा होय, ते
सहु मन वचन कायाई करी मि० ॥

॥ दर्शनाचारना आट अतिचार ॥

॥ निस्संक्रिय निक्कंखिअ, निधितिगिष्ठा असूढदिठो अ ॥

उववूह थिरोकरणे, वच्छल पभावणे अठ ॥ १ ॥ देव गुरु धर्म तणे
विषे निःशंकपणो न कीयो, तथा प्रकांत निश्चय धर्यो नही,

सबलाई मत भला छे, पहूँ श्रद्धा कोधी, धर्मसंवंधिया फलतणे
 विषे निःसंदेह बुद्धि धरो नही. चारित्रिया साधु साधवो तणां मल-
 मलीन गात्र देखी दुगंछा उपजावो, मिथ्यात्वीतणो पूजा प्रभावना
 देखो, मूढदृष्टिपणो कीधो, संघमांह गुणवंततणो अनुपबृंहणा अ-
 स्थिरी करण अवात्सल्य अप्रीति अभक्ति चितवी. संघमांहे थिरीक-
 रण वात्सल्य शक्ति छते प्रभावना न कीधो, देवद्रव्य विनाशितं,
 विणसंतुं उवेखीतं, छतो शक्ते सार संभाल न कीधो, साधर्मिकशुं
 कलह कर्म कीधुं, जिन भवन तणी चोराशी आशातना कीधी,
 गुरुप्रते तेत्रीश आशातना कीधी, अधौतवस्त्रे देवपूजा कीधी, तिहुं
 ठाम पाखें देवपूजा, वासकूपी कलश तणो ठवको लागो, सुखतणी
 बाफ लागी, ठवणारिच हाथथको पडीओ, पडिलेहवो वीसारयो,
 नवकरवालोनें पग लागो, दर्शनाचार विषईओ जिको अतिचार० ३

॥ चारित्राचारना आठ अतिचार ॥

॥ पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहि समिईहिं तिहि गु. ^{सम्यं । ति.}
 चरित्तायारो, अष्टविहो होइ नायवो ॥ १ ॥ इरियासमिती ^{इति श्रीस}
 सासमिती २, एषणासमिती ३, आयाणभंडमत्तनिस्केवण ^{नव}
 ४, उच्चारणासवणखेलजलसंधाणपारिछावणोयासमिती ५. म. ^७
 १. वचनछुप्ति २, कायगुप्ति ३, ए पंच समिती तीन गुप्ति. ^७ ॥ पा.
 पें पाली नहीं ॥ साधु तणें सदैव आवक तणे पोसह ^७ पडि ^७
 लीये अष्टविध चारित्राचार विषईओ जिको अतिचार० ॥ ४ ॥

॥ विशेषतः आवकतणें धर्म श्रीसम्यक्त्वमूल वारह व्रत श्री
 सम्यक्त्वतणा पांच अतिचारः—संका कंख विगिछा, पसंस तह
 संयदो कुलिंगीनु ॥ संकाः—श्रीअरिहंत तणी बल अतिशय ज्ञान
 लक्ष्मी गांधीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा चारित्रियानां चारित्र
 गिनदंचन तणो संदेह कीधो. आकांक्षाः—ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्र-

पाल गोगो गोत्रदेवता ग्रह पूज्या विणाइग हनुमंत इत्येवमादिक
 ग्राम गोत्र देश नगर जूजूआ देव देहराना प्रभाव देखी रोगें आ-
 तंके इहलोक परलोकार्थे पूज्या मान्या, बौद्ध सांख्यादिक संन्यासी
 भरडा भगत लिंगिया योगी दस्वेश अनेराई दर्शनियानो कष्ट मंत्र
 चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्या विण भूल्या, अनुमोद्या, कुशास्त्र
 शोख्यां, सांभल्यां, शराध संवत्सरी होली बलेव माहीपूनिम अजा-
 पडिओ प्रेतबीज गोरत्रीज विणायगचोथ नागपांचम झूलणाछ्छ
 शीलंसातम ध्रो आठम नउली नवम अहवदसम व्रत इग्यारस व-
 त्सवारस धनतेरस अनंतचौदश आदित्यवार उत्तरायण नवोदक,
 जाग भोग उतारणा कीधा, पिंपल पाणी घाल्यां घलाव्यां घर
 चाहिर कूई तलाव नदी समुद्र कुंडमें पुण्य हेतु स्नान कीधां, दान
 दीधां, ग्रहण शनिश्चर माहमास नवरात्रि नाहिया, अजाणनां
 थाप्यां, अनेराई व्रत व्रतोलां कीधां, कराव्यां. विचिकिष्ठाः-धर्म-
 संबंधिया फल तणो संदेह कीधो. जिण अरिहंत धर्मना आगर
 विश्वोपकार सागर मोक्षमार्ग दातार देवाधिदेव बुद्धें शुद्ध भावें
 न पूज्या, न मान्या, महात्माना भात पाणी तणी दुगंछा कीधी,
 कुच्चारित्रिया देखी चारित्रिया ऊपरें अभाव हुआ मिथ्यात्वी तणी
 प्रभावना देखी प्रशंसा कीधो, प्रीति माडी, दाक्षिणलगे तेहनो धर्म
 मान्यो ॥ श्रोसमकितविषे अनेरो जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि
 सूक्ष्म, बादर, जाणतां अजाणतां हुआ होय, ते सह मन, वचन,
 कायाई करी मिष्ठामि० ॥ १ ॥

॥ पहिले प्राणातिपात विरमणव्रतें पांच अतिचार. वह
 बंध छविछेए, अइभारे भक्तप्राण बुछेए ॥ द्विपद चउपद प्रतें
 रीशवशें गाढो धाउ प्रहार घाल्यो, गाढे बंधन बांध्यां, घणे भारे
 पोड्या, निर्लीछन कर्म कीधां. चारा पाणी तणी वेला सार सं-

आल न कीधी, लहिणे देणे किणहीप्रतें लंघाव्युं, तेणें भूखे आपण जिम्या. अणगल पाणी वावरयुं, रुडे गल्युं नहो, गलाव्युं नही, अणगल पाणी झीलयां लूगडां धोयां, इंवण अणमोव्युं जाल्युं. साय कानखजूरा सुलहला माकड जूआ गोगिंडा साहनां मृआं, दू-खव्यां, रुडे थानक न मूक्या, कोडी मकोडो उदेहा घीवेली कातरा झूडेली पतंगिया डेडकां अलसिया ईली कूति डांस मसा वगतरा माखी प्रमुख जे कोई जीव विगठा चांपिया दूहव्या झाला हलावनां पंखी काग चिडकलानां इंडां फुटां, अनेरा एकें-द्रियादिक जिके जीव विणठा चाप्या, दूहव्या, हालतां चालतां अनंरुं कांड काम काज करतां विव्वंसपणुं कीधुं. जीव रक्षा रुडे न कीधी, संखागे सूकव्यो, सुल्या धान तावडे दीयां, दलाव्यां, भरडाव्यां, खाटला तावडे झाडक्या, सूक्या, सूकाव्या, जीवाकुल भूमि लीपावी, वाशी गार राखी रखावी, दलणे खांडणे लीपणे रुडी जयणा न कीधी. आठम चउदशना नियम भांग्या, धूणी करावी ॥ पहिला प्राणातिपात व्रत विषइओ अनेरो० ॥ १ ॥

॥ वीजुं स्थूल मृदावाद विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥

॥ सहसा रहस्सदारे, सोसुवएसे य कूड लेहे य ॥ सहसा-त्कारः—किणहिक प्रतें अयुक्तो आल दीधो, किणहिक प्रतें एकांतें वान करतां देखी तुम्हें तो राजविरुद्ध चितवो छो. इत्यादिक कळुं. स्वदार मंत्र भेद कीधो, अनेराई किणहीनो मंत्र आलोच मर्म प्रकार्यो, किणहीनें कूडी बुद्धि दीधी, कूडो लेख लिख्यो, कूडी माख भरी, थापण सोसो कीधो, कन्या दोर गाय भूमि संवांधिया लेह्यें देणें व्यवसाय वाद वदावदि करता मोटकुं झूठ वोल्यां, हाथ पग धर्गी गाल दीधी, करडका मोज्या, अधर्म वचन वोल्यां ॥ वीजें मृदावाद व्रत विषइ० ॥

॥ त्रीजे अदत्तादानविरमण व्रतना पाच अतिचार ॥ तेना-
हडप्पन्नगे. घर बाहिर क्षेत्र खले पराई वस्तु अणमोकलावी लीधी,
दीधी, वावरी, चोरीनी वस्तु मोल लीधी, चोर धाडीत प्रतें संबल
दीधुं, संकेत कहुं विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधो, नत्रा पुराणां सरस
विरस सजीव निजीव वस्तु तणा भेल संभेल कोधा, खोटे तोल
मानें साप वहोस्यां, दाणचोरी कोधो, साटे लांच लीधी, माता
पिता पुत्र कलत्र परिवार वंची जूदो गांठ कीधी, किण्होनें लेखे
पलेखे झुलव्युं, पढी वस्तु ओलवी लीधी, त्रीजे अदत्तादान व्रत
विषइओ० ॥

॥ चोथे स्वदार संतोष मैथुनव्रतें पांच अतिचार ॥ अपरि-
गृहीत्या इत्तर, अणंग वीवाह तिबअणुरागे ॥ अपरिगृहीतागमन,
इत्तरपरिगृहीतागमन. विधवा वेश्या स्त्री कुलाङ्गना स्वदार शोक-
तणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधो, सराग वचन बोल्यां, आठम
चउदस अनेराई पर्व तिथि तणा नियम भांग्या, घरघरणां कोधां,
कराव्यां, अनुमोदोयां, कुविकल्प चितव्या, अनङ्गक्रीडा कोधो,
पराया विवाह जोड्या काम भोगतणेविषे तीव्राभिलाष कीधो,
कुस्वप्न लाधां, नट विट पुरुषशुं हांसुं कीधुं, चोथे मैथुन व्रत वि०

॥ पांचमे परिग्रहपरिमाणव्रतें पांच अतिचार ॥ धण धन्न खित्त
वडू ॥ धन धान्य क्षेत्र वस्तु रूप सुवर्ण कुप्प द्विपद चतुष्पद नव
परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्छा लगे संक्षेप न कीधो,
प्राता पिता पुत्र कलत्रादि तणे लेखें कीधो, परिग्रह परिमाण
लेई पळ्यो नहीं. पढी वीसारिओ, नियम वीसारिओ ॥ पांचमे
परिमाण व्रतविषइओ० ॥

॥ छठे दिग्विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ गमणस्सय परि-
माणे ॥ ऊर्द्धदिसि अधोदिसि तिर्यग्दिसि जायवा आयवा तणो

नियम जे कोई अजाणे भागो, एक गमा संकोठी बीजी गमा
वधारी, विस्मृति लगें अधिक भूभि गया, पाठवणी आधी
मोकली ॥ छठे दिग्ब्रत वि० ॥ ६ ॥

॥ सांतमे भोगोपभोग परिमाण ब्रत ॥ जेहना भोजन
आश्री पांच अतिचार अने करमहूती पन्नरे, एवं वीश अतिचार॥
सञ्चिते पडिबद्धे, अपोल दुप्पोलयं च आहारे० सञ्चित तणे नियम
लीधे अधिक सञ्चित लीधुं, तथा सञ्चित मली वस्तु अपक्काहार
दुपक्काहार तुद्यौषधि तणुं भक्षण कीधुं. होला उंबी पहुंक काकडी
भंड्यां कीधां, सुल्यां धान प्रसुख भक्षण कीधां ॥ सञ्चित दव्व
विगई, पाणह तंबोलवन्न कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण,
बंम दिसि ण्हाण भत्तेसु ॥ १ ॥ ए चवदे नियम दिन प्रते संभार्या
संक्षेप्या नहिं, लेई नियम भांग्या. बावीस अभक्ष, बत्तीस
अनंतकायमांहि आहुं मूला गाजर पींडालू सूरण सेलरां काची
आंबली गोल्हां खाधां, चोमासा प्रसुखमांहे वासी कठोलनी
रोटी खाधी. त्रिहुं दिवरातुं दही लीधुं, मधु महुडां माखण
माटी वैगण पीलू पीचू पंपोटा पीपी विष हीम करहा घोल
वडां अणजाण्यां फल टींबरुं अथाणुं आमणबोर काचुं मीठुं, निल
खसखस काचां कोठिबडां खाधां, रात्रिभोजन कीधुं, लगबगती
वैलायें व्यालू कीधुं, दिवस उग्या विण शिराव्या तथा पन्नरे कर्मा-
दान इंगालिकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे दंत
वाणिज्ये, लख्ख वाणिज्ये, रस वाणिज्ये, केश वाणिज्ये, विष वाणिज्ये,
जंत पीलणकम्मे, निलंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सर दह तलाव
सोसणया, असई पोसणया, ए पांच वाणिज्य पांच कर्म, पांच
सामान्य, महारंभ लीहाला कराव्या. इंटवाह नीवाह पचाव्या,
धाणी चणा पक्कान्न करी वेच्या. वासी माखण तपाव्यां, अंगीठा

कीधा कराव्या, तिलादिक संचीया, फागुण मास उपरांत राख्यां, कूकडा सूडा प्रमुख पोण्या, अनेकं जे कांई बहु सावद्य कठोर कर्मादिक समाचर्युं ॥ सातमा भोगोपभोग व्रत विषईओ० ॥

॥ आठमा अनर्थ दंड विरमणव्रतना पांच अतिचार ॥ कंदुपे कुकुइए० ॥ कदर्य लगे विटनी परे हास्य कुतूहल मुखादि अंग कीधी, मूरखपणा लगे कुणहोने असंबद्ध वाक्य बोल्या. कटारो कुसि कुहाडा रथ ऊखल मूसल अगन घरटी आदिक मरी मेल्या, माग्यां आप्यां, कणक वस्तु ढोर लेवराव्यां, अंग पापोपदेश दीधो, अंधोल नाहण, दांतण, पगधोअण तेल अधिक आण्यां, हींडोले हींच्या, राजकथा देशकथा त्या स्त्रीकथा पराई वात कीधी, आर्त रौद्र ध्यान ध्यायां, रा वचन बोल्या, करडका मोड्या, संभेडा लाया, भेंसा सांड डा, भिंढा श्वानादि जूझतां कलह करतां जोयां, खाधी लगे खाई चिंतवी माटो मीढुं कण कपासिया काजविण चांप्या, उपर बयठा, आले वनस्पति खुंदी, छास पाणी विरस तेल आम्लवेतरस बेरजादिक तणां भाजन उघाडां मूक्यां. ते कीडो कंथुआ माखी उंदर गिरोलो प्रमुख जीव विणठा, सूडा जीव क्रीडा हेतें बांधी राख्या, घणी निद्रा कीधी, राग द्वेष ने रुद्धि परिवार वांछी एकनें मृत्युहाणि विमासी आठमा व्रतवि० ॥

नवमा सामायिकव्रतें पांच अतिचार ॥ तिविहे दुष्पणि-हाणे सामायिक लीधे मन आहट दोहट चिंतव्युं, वचन सावद्य बोल्युं, काय अण पडिलेहुं हलाव्युं, छती वेलाई सामायिक न लीधुं, सामायिक लई उघाडे मुख बोल्या, उंघ आवी कोधी, बीज दीवा तणी उजाही लागी. कण कपासोया माटो मीढुं नील फूल

हरिकायना संघट्ट हुआ, पुरुष तिर्यचना संघट्ट हुआ. तथा स्त्री तिर्यची आभडी, मुहपत्तोयो संघट्टी, सामायिक अण पूरुं पारिउं पारुं वीसारिउं, नवमे सामायिक व्रतविषय्यो ॥

॥ दशमे देशावकाशिक व्रतें पांच अतिचार ॥ आणवणे पेसवणे ॥ आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे सहाणुवाइ खुवाणुवाइ वहिया पुग्गल खेवे ॥ नियमित भूमिकामांदिवाहिर थको कांड अणाव्युं, आप कन्हाथी वाहिर मोकल्या, साद करी रूप देखाडी कांकरी नाखी आपणपणुंछतुं जणाव्युं ॥ दशमे देशावकासिग व्रतविषय्यो ॥ १० ॥

॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतें पांच अतिचार ॥ संथारुद्धार विहो, पमाय तह चेव भोजणा भोजे ॥ पोसह लीये संथारा तणी भूमि वाहिरला थंडिलां दिवसें शोध्यां पडिलेह्यां नहीं, मातरुं अण पडिलेहुं वावरिउं, अणपुंजी भूमिकांड परठविउं, परठवतां चिन्तवणा न कीधी, अणजाणहजस्सुग्गहो न कह्यो. परठव्यां पुठें वार त्रण वोसिरामि वोसिरामि न कव्युं. पोसहशालामांहि पडसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहेवी वोसारी, पृथ्वीकाय, अप्पकाय तेउकाय चालकाय वनस्पतिकाय व्रतकाय तणा संघट्ट परिताप उपद्व हुआ संथारा पोरसि तणो विवि भगवो वीसारिओ. पोरसिमांहि उंव्या अविधि संथारुं पायथुं, काल वेलायें पडिक्कमणुं न कीधुं, पारणा दिक्क तणी चिंता निपजावी, कालवेला देव वांदवा वीसारिया पोसह असूरो लीयो, सवारो पारंथो, पर्व तिथि आवी पोस लोधो नहीं ॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतविषय्यो ॥

॥ वारमे अतिथि संविभागव्रतें पांच अतिचार ॥ सच्चि निरुक्कवणे ॥ सच्चित्तवस्तु हेठे उपरि थके महातमा व्रतें असूज्ज दान दीधुं, अदेवा तणी दुवें सूज्जतुं फेडी असूज्जतुं कीधुं, दे

तणी वुद्धें असूझतुं फेडी सूझतुं कीधुं, आपणुं फेडी परायुं कीधुं, विहरवा वेला टलि गया असुर करी महातमा तेज्या, मन्त्ररत्ने दान दीधुं, गुणवंत आवे भगति न साचपी, छती शक्ति साध-
र्मिक वात्सल्य न कीधुं, अनेराइ धर्म क्षेत्र सीदाता छती शक्ते उद्धर्या नही ॥ वारमे अतिथि संविभाग व्रतविषइयो० ॥

॥ संलेहणा तणा पांच अतिचार. इहलोए परलोए० ॥
इहलोका संसप्पज्जे परलोगासंसप्पज्जे जीविआसंसप्पज्जे मरणां
संसप्पज्जे कामभोगासंसप्पज्जे इहलोक मनुष्यभव मान महत्व
लोक तणी सेवा ठकुराई बलदेव वासुदेव चक्रवर्ति पद वांछ्यां.
परलोक इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी वांछी, सुख आव्ये जीव
वा तणी वांछा कीधी, दुःख आव्ये मरवातणी वांछा कीधी,
कामभोग तणी इच्छा कीधी ॥ संलेहणाव्रतवि० ॥

॥ तपाचार वारभेदे ॥ छ अभ्यंतर, छ बाहिर, अणसणमू
णोयरिया, अणसण कहीये उपवास, ते पर्वतिथि छती शक्त कीधुं
नही. ऊणोदरी ते पांच सात कवल ऊणा रह्या नही, द्रव्य संक्षेप
विगय प्रमुख परमाण कीधुं नहीं. आसनादिक काय किलेश न
कीधो, संलीणता अंगोपांग संकोच्यां नहीं, नवकारसी पोरसी
गंठसी मूठसी साढपोरसि पुरिमद्ध एकासणो बेआसणो नीवी
आंबिल प्रमुख पच्चस्काण पारवां वीसार्या. वेसतां नवकार भण्यो
नही, ऊठतां दिवसचरिमं न कीधुं, नीवी आंबिल उपवासादिक
तप करी काचुंपाणी पीधुं, वसन थयुं ॥ बाह्य तपव्रत विषइयो० ॥

॥ अभ्यंतर तप॥ पायडितं विणओ० गुरुकने मन सुद्धें
आलोयणा लीधी नही, गुरुदत्त प्रायडित तप लेखा शुद्ध पुह-
चाडयुं नहीं, देव गुरु संघ साहम्मा प्रते विनय साचव्यो नहो; वा-
चना पृथना परावर्त्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथा लक्षण पंचविध सिजाय

कीधी नहीं, धर्मध्यान शुद्धध्यान ध्यायुं नही, कर्म क्षय निमित्त
लोगस्स दस बीसनोकाउस्सग्ग न कीधो ॥ अभ्यंतरतप विषइयो ० ॥

॥ वीर्यचारना तीन अतिचार ॥ अणगूहिय बलविरीओ,
परिक्कमइ जो जहुंत ठाणेसु ॥ जुंजइअ जहा थामं, नायवो वीरि-
यायारो ॥ १ ॥ पढवे गुणवे विनय वेयावच्च देवपूजां सामायिकं
दानं शीलं तप भावना प्रमुखं धर्मं कृत्यतणे विषे मन वचनं
कायतणुं छतुं बल वीर्यं गोपव्युं, रूढां पंचाङ्ग खमासमण न दीधां,
वैठां पडिक्कमणुं कोधुं ॥ वीर्याचारव्रत विषइयो ० ॥

॥ नाणाइ अठ्ठ अइ वय, समसंलेहेण पण पनर कम्मेसु ॥
वारस तवविरिअ तिगं, चउवीसं सय अईयारा ॥ १ ॥ पडिसिद्धाणं
करणे ० ॥

॥ जिनप्रतिषिद्धबावीस अभक्ष्य बत्तीस अनंत काय बहुबीज
भक्षण महाआरंभ महापरिग्रहादिक कोधां, नित्यकृत्य देवपूजा
सामायिकादिक तथा तीर्थ यात्रादिक न कोधां, जीवाजीवादि वि-
चार सद्वहिया नहीं, आपणी कुमति लगेँ उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी;
प्राणातिपात १, मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह
५, क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ९, राग १०, द्वेष ११,
कलह १२, अभ्याख्यान १३, परपरिवाद १४, पैशून्य १५, अर-
तिरति १६, मायामृषावाद १७, मिथ्यात्वशल्य १८, ए अहंकार
पापस्थानकमांहि जे कांइ कीधो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एवं प्रको-
थावक धर्मे श्रो सम्यक्तत्व मूल वारह व्रत चोवीसां सो अतिचा-
मांहि जिको कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणता
अजाणतां हुवो होय ते सह नन वचन कायार्थे करो मिच्छामि-हु
कइं ॥ इति श्रीश्रावकोंके वारह व्रतका अतिचार संपूर्ण ॥

॥ पीठें सबस्सवि पस्सिय ॥ इत्यादि इच्छाकारेण संदिस्सह
पर्यंत कहे. तेवारें गुरु कहे. चउड्डेण पस्सिमह, चउमासे ठडेण
पस्सिमह, संवउरारिये अठमेण पस्सिमह. इहं तस्स मिहामि डुक्कमं
कही. चादशावर्त्त वांदणां देवे. पीठें इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन्,
देवसियं आलोश्यं पस्सिक्कंता ॥ १ ॥ पत्तेयस्वामणेणं, अप्पुट्ठिमि
अप्पित्तरपस्सियं ॥ २ ॥ स्वामेज्जं? गुरु कहे स्वा० ॥ पीठें इहं स्वामेमि
पस्सियं ॥ ३ ॥ इत्यादि पाठ सर्व पूर्वे कह्यो, तिम कही मिहामि
डुक्कमं देई खमावे, पीठें वे वांदणां देई. जगवन्! देवसियं आलोश्यं
पस्सिक्कंता पस्सियं ॥ ३ ॥ पस्सिमवह? गुरु कहे सस्सं पस्सिमह. पीठें
इहं कही करेमि जंते सामाश्यं ॥ इहामि ठामि कान्दस्सग्गं जो मे पस्सिज्ज
॥ ३ ॥ इत्यादि कही, तस्सुत्तरी० अन्नबूणं ॥ कही ॥ कान्दस्सग्गं करे, गुरु,
पाखीसूत्र कहे, ते सांजले, अने गुरुयको जूदा पस्सिमता हुवे, तो
एक श्रावकं खमासमण देई कहे. जगवन्! सूत्र जणुं? गुरु कहे,
जणेह. एसो वचनं मनमें धारी ॥ इहं कही, उज्जो थको, हाथ जोमो
मुहपत्ती मुखें देई, तीन नवकार कही, मधुर स्वरें सूत्रार्थ. मनमें
चित्तवंतो वंदित्तु सूत्र गुणे. बीजा श्रावक करेमि जं ते० इहामि
ठामि कान्दस्सग्गं तस्सुत्तरी० अन्नबूणं कही कान्दस्सग्गमें रह्यां
सुणे. सूत्रप्रातेणंमो अरिहंताणं कही. कान्दस्सग्गं पारी, उज्जा
थका तीन नवकार गुणी बेसे. पीठें ॥ ३ ॥ नवकार ॥ ३ ॥ करेमि
जं ते कही, इहामि पस्सिमिज्जं जो मे पस्सिज्ज ॥ ३ ॥ इत्यादि
कही, वंदित्तु सूत्र गुणे, पस्सिममे देवसियं सव्वं ॥ एहने ठिकारें
पस्सिममे पस्सियं, चउम्मासियं संवउरारियं सव्वं कहे. पीठें ऊठो, अप्पु-
ट्ठिमि आराहणाए इत्यादि पूर्ण जणी, खमासमण देई इच्छा०
॥ सं० ॥ ज० ॥ मूलगुण उत्तरगुण अतिचार विंशुद्धि निमित्तं,
कान्दस्सग्गं करूं? गुरु कहे करेह. पीठें इहं कही, करेमि जंते

सामा० 'इष्टामि ठामि कान्तस्सग्गं तस्सु० अन्नबू० इत्यादि कही,
 पाखीयें वार लोगस्स चन्नासियें वीस लोगस्स संवत्तरीयें चालोस
 लोगस्सतो कान्तस्सग्ग करे, एक नवकार ऊपर, कान्तस्सग्ग करी.
 पारी लोगस्स कहे. बेसी मुहपत्ती पमिलेही, बे वांदणां देई इष्टा०
 ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ समाप्ति खामणेणं ॥ अप्पुठ्ठिओमि अप्पितर प-
 स्सियं ॥ ३ ॥ खामेज्जं ? गुरु कहे खामेह. पीठें इष्टं खामेमि पं-
 स्सियं ॥ इत्यादि पाठ पूर्व कहे. तिम कहे, पीठें इष्टाका० ॥
 सं०॥ज्ञ०॥पाखी॥३॥ खामणां खामू ? गुरु कहे, पुण्यवंतो चार बेर
 खमासमण देई. तीन तीन नवकार कही, पाखी ॥ ३ ॥ समाप्त
 खामणां खामेह. पीठें श्रावक एक खमासमण देई. मस्तक नीचुं
 नमावी, तीन नवकार गुले, इम चार वार कहे, पीठें गुरु कहे
 निष्ठारग पारगाहोह. पीठें श्रावक कहे. इष्टं इष्टामि अणुत्तठिं कही,
 गुरु कहे, पुण्यवंतो पाखीने लेखे, एक उपवास अथवा दोय आ-
 विल अथवा तीन नीवी, अथवा चार एकासणां, अथवा बे
 हजार सज्जाय करी, एक उपवासनी पेंठें पूरज्यो, पाखीनें स्थानकें
 देवसिक जणजो. एम चन्नासो ए सर्व डुगुसो कहणो, संवत्तरीयें
 त्रिगुणो कहणो. पीठें जिणें तप कीथो हुवे ते पइठियं कहे, न
 कीथो हुवे ते तद्धत्ति कहे ॥ पीठें बे वांदणां देई, अप्पुठ्ठिओमि अ-
 प्पितर देवसियं खामेमि इत्यादि कहे. पीठें बे वांदणां देई. आय
 रिय नवप्राण० तीन गाथा कहे, इम आगे सर्व विधि देवसिक
 पडिक्कमलानी करे, पण इतरो विशेष है. श्रुतदेवतानो कान्तस्सग्ग
 करी स्तुति कहे. पीठें जवण देवयाए कहेमि कान्तस्सग्गं. इत्यादि
 विधे जवनदेवताको कान्तस्सग्ग करी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ भुवनदेवता स्तुति ॥

॥ चतुर्वर्णाय संघाय, देवी भुवनवासिनी ॥ निहत्य डुरि-
 नान्पेषा, करोतु सुखमहयम् ॥ १ ॥

देवतानो काजस्तग करे, तथा तीने पवे वडा स्तवनः
अजितशांति कहणी, लघु स्तवन उपसर्गहर स्तोत्र कहणो, तथा
पम्कमणो पूरो हुवा पीठें एक श्रावक शुर्वाक्षायें, नमोऽर्हत्सि-
द्धा० कही, वडी शांतिका स्तोत्र कहे, बीजा सर्व सुणे, जिणने
रात्रि पोसह न हुवे, ते पोसह सामायिक पारी सांजले ॥ इति
पाक्षिकादि तीन पडिक्रमणविधि ॥

॥ अथ दस पञ्चख्वाणविचार लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम चउदे नियम संजारे, सो इस तरे पञ्चख्वाण
करे ॥ उग्गए सूरें नमुकार सहियं मुंठसहियं पञ्चख्वाइ चउविहंपि
आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं असठणान्जोगेणं सहसागारेणं
महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं विगइउ पञ्चस्काइ. असठणा-
न्जोगेणं सहसागारेणं लेवालेवणं गिहिउसंसिठेणं उखिखत्तविवेगेणं
पुमुच्चमस्किणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्ति-
यागारेणं देसावगासियं जोगपरिजोगं पञ्चस्काइ. असठणान्जोगेणं
सहसागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥
इति नवकारसी पञ्चस्काण ॥ १ ॥

॥ तथा जो श्रावक नियम संजारे नहिं, सो विगइका उर
देसावगासिकका आगार न पञ्चस्के. निक्केवल नवकारसी आदिक
पञ्चस्काण करे. सो लिखते हैं ॥

॥ उग्गए सूरें नमुकार सहियं पञ्चस्काइ ॥ चउविहंपि आहारं
असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० ॥ सह० वोसिरामि ॥ इति नव-
कारसी पञ्चस्काण ॥ आगार ॥ २ ॥

॥ पौरसी मुंठसी पञ्चस्कामि, उग्गए सूरें चउविहंपि आहारं
गणं खाइमं साइमं असठ० ॥ सहसा० ॥ पञ्चस्कावेणं दिसा
साहुवयणेणं सब० विगइउ पञ्चस्कामि. इत्यादि पूर्वकी

पेरें कहणां ॥ इति पोरिसी पञ्चस्काण ॥ २ ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ इस माफक साठ पोरसीका पञ्चस्काण जाणना. इतना विशेष है, पोरसिं पञ्चस्काइके ठिकाने इहां साठपोरसिं पञ्चस्काइ कहणां ॥ इति साठ पोरसिपञ्चस्काण ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ सूरें उगए पुरिमठं अयठं वा पञ्चस्काइ, चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० ॥ सह० ॥ पठ० ॥ दिसामो० ॥ साहु ॥ मह० ॥ सब० ॥ विगइउ पञ्चस्काइ इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति पुरिमठपञ्चस्काण ॥ ३ ॥ आ० ॥ ४ ॥

॥ पोरसिं साठ पोरसिं वा पञ्चस्काइ, उगए सूरें चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० पठ० दिसामो० साहु० सब० एकासणं विआसणं वा पञ्चस्काइ, उविहं ति विहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्स० सह० सागारिआगारेणं आउट्ठणपसारेणं गुरुअप्पुवाणेणं पारि० मह० सब० देसावगासियं० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ४ ॥ इति एकासण विआसण पञ्चस्काण ॥ आ० ॥ ५ ॥

॥ पोरसिं साठ पोरसिं वा पञ्चस्काइ, उगए सूरें चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० पठ० दिसामो० साहु० सब० एकासणं एगवाणं पञ्चस्काइ, उविहं ति विहं चउविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्स० सह० सागारिआगारेणं गुरुअप्पुवाणेणं पारिवाव० मह० सब० देसाव० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकलवाणा पञ्चस्काण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साठ पोरसिं वा पञ्चस्काइ, उगए सूरें चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं सा० अस्स० सह० पठ० दिसामो० साहु० सब० आयंविहं पञ्चस्काइ, अस्सठ० सह० लेवालेवेणं गिहत्तसंतिठेणं अक्खित्तविवेगं पारिवा० मह० सब० एकासणं पञ्चस्काइ, ति विहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्स० सह०

सागारिआगारेणं आनट्टणपसारेणं गुरुअप्पुढाणेणं पारिठां० मह०
सव० वोसिरइ ॥ ६ ॥ इति आंबिल पच्चरूकाण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साह पोरसिं वा पच्चरूखाइ. उग्गए सूरे चउव्विहंपि
आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० पच्च० दिसा०
साहु० सव्व० ॥ निव्विगइयं पच्चरूखामि. अस्स० सह० लेवालेवेणं
गिहउसंसिठेणं उखिखत्तविवेगेणं पमुच्चमखिएणं पारि० मह० सव्व०
एकासणं पच्चरूखाइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्स०
सह० सागा० आनट्ट० गुरु० पा० मह० सव्व० देसावगासियं
जोगपरिजोगं पच्चरूखामि. अस्स० सह० मह० सव्व० वोसिरामि
॥ इति नीवी पच्चरूखाण ॥ आगार ॥ ८ ॥

॥ सूरे उग्गए अम्वत्तठं पच्चरूखामि. चउव्विहंपि आहारं असणं
पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० मह० सव्व० देसावगासियं
जोगपरिजोगं पच्चरूखामि. अस्स० सह० म० सव्व० वोसिरामि ॥
इति चउव्विहार उपवास पच्चरूखाण ॥ ९ ॥

॥ सूरे उग्गए अम्वत्तठं पच्चरूखामि. तिविहंपि आहारं असणं
खाइमं साइमं अ० सह० पाणंहार पोरसिं साह पोरसिं पुरिमह
अवट्ठं वा पच्चरूखाइ अस्स० सह० पच्च० दिसा० साहु० सव्व०
देसावगासियं जोगपरिजोगं पच्चरूखामि. अ० स० म० सव्व० वो-
सरामि ॥ इति तिविहार उपवास पच्चरूखाण ॥

॥ पोरसिं साहु पोरसिं पुरिमहं अवट्ठं वा पच्चरूखामि. उग्गए
सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अ० सह०
पच्च० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं एगघाणं दत्तियं पच्चरूखामि.
तिविहं चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह०
सागा० गुरु० मह० सव्व० विगइउ पच्चरूखामि. इत्यादि पूर्ववत्.
देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति दत्तिपच्चरूखाण ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिमं पञ्चख्वाइ, चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं
खाइमं साइमं अण्णं सहं महं सब्बं वोसिरइ ॥ इति दिव-
सचरिम पञ्चख्वाण ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिमं पञ्चख्वामि डुविहंपि आहारं असणं खाइमं
अण्णं सहं महं सब्बं वोसिरामि, देसावगासियं पूर्ववत् ॥ इति
दिवसचरिम डुविहार पञ्चख्वाण ॥ ए ॥

॥ पाणहार दिवसचरिमं पञ्चख्वामि अन्नं सहं महं
सब्बं वोसिरामि ॥ इति पाणहार उपवासरो पञ्चख्वाण ॥ ए ॥

॥ जवचरिमं पञ्चख्वाइ तिविहंपि चउव्विहंपि आहारं असणं
पाणं खाइमं साइमं अन्नं सहं सहं सब्बं वोसिरइ ॥ आगार
॥ ४ ॥ जवचरिम, दो आगारकाजी होय ॥ इति जवचरिम पञ्चखाण ॥

॥ तथा इमहिज गंठिसहि सुठिसहि अंगुठसहि प्रमुख अ-
ज्जियह पञ्चख्वाणकेजी ए चार आगार, अन्नं सहं महं सब्बं
वोसिरइ ॥ पांचमो चोलपट्टागारेणं सो साधुको होय ॥ इति अ-
ज्जियह पञ्चख्वाण ॥

॥ अहणं जंते तुह्माणं समीवे देसावगासियं पञ्चख्वामि
इव्वं खित्तलं काललं जावलं दव्वलणं देसावगासियं खित्तलणं उव्व
वा असाववा काललणं मुहुत्तधारणाप्रमाणं जावनियमं पञ्चख्वामि
जावलणं जावगहेणं न गहिज्जामि ठलेणं न ठलिज्जामि अस्सेण-
केवि रायंकेण वा एसो परिणानो न पन्निवज्जइ ता अज्जिग्गह
असत्तणात्तोणेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सब्बसमाहिवत्तिया-
गारेणं वोसिरइ ॥ इति देसावगासी पञ्चख्वाण ॥

॥ तथा साधु पञ्चस्काण करे, तव देसावगासी नही पञ्चस्के.
अरु तिविहार उपवासमें आबिलमें नीवीमें एकासण प्रमुखमें
पाणस्सकाठ आगार पञ्चस्के सो दिखावे हैं, पाणस्स लेवानेण वा

अलेवामेण वा अन्नेण वा बहुलेण वा ससिन्हेण वा असिन्हेण वा
वोसिरइ ॥

॥ अथ पञ्चखाण आगार संख्या ॥

॥ दोचेव नमुक्कारो आगार उच्च हुंति पोरसिए ॥ सत्तेवत्त
पुरमिद्धे, एगासणंमि अठेव ॥ १ ॥ सत्ते गढाणस्सज्ज, अठेवय आ-
यंविळंमि आगारा ॥ पंच वयज्जाठे, उप्पाणे चरिमचत्तारि ॥ २ ॥
पंच चउरो अज्जिगहे, निवीए अठनवय आगारा ॥ अप्पावण्णे पं-
चज्ज, हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार संख्या ॥

॥ अथ पञ्चखाणके आगारोका अर्थ लिख्यते ॥

॥ उग्गएसूरे नमुक्कार सहियं पञ्चखाण चउविहंपि आहारं ॥
अर्थः—इहां गुरु कहे पञ्चखाण. शिष्य कहे पञ्चखामि. पञ्चखाणका
अर्थ सब जगे अंगीकार वांची जाणना. जेसैं सूरज उदय हुआ
पीठे नवकारसी व्रत अंगीकार करूं. यह पञ्चखाण मुहुर्त्त कहते
दो घन्टी काल उपरांत जहां तक नवकार गुणकर पाकूं नहीं तहां
तक चउवि० च्यारोंही आहारका त्यागरूप व्रत अंगीकार करूं. सो
च्यार प्रकारका आहार इस मुजब है. असन कहते अन्न, चावल,
गहूं, मूंग, चणा, ज्वार, वगेरे सब अनाज सात गहूं जबकूं आदि
लेकर सब तरेका आटा सब तरेका साग तरकारी लहू वगेरे सब
तरेका पकवांन सूरणादिक सब तरेका कंद दूध दही रोटी राब
घाट सब पतली उर नरम वस्तु हींग वेसण सूंफ लूण सेंधवादिक
इत्यादिक सब असणमांहि जाणना ॥१॥ पाणं इसका अर्थ आञ्जन
जबोदक तुषोदक तंडुलोदक गरमपाणी शुद्धोदक कहते सब अप्प-
काय ॥२॥ खाइमं कहते खादिम सूखमी नालेर खजूर द्राख सेक्या
अनाज आंबा केला काकमी अखरोट खारक विदाम वगेरह सब
जातका मेवा सब जातका फल खाइमं जाणना ॥३॥ साइमं कहते

स्वादिम तंबोल सूंठि मिरच पींवर हरमे बहेना आंवला तुलसी कसेला
 काथा मोलेठी तज तमालपत्र इलायची लोंग वायविमंग अजमा
 अजमोद कुलिंजन कवावचीणी कचूर नागरमोथा कांटासेलिया
 कुंजटिआ पांसुपारी पोहकरमूल जवालाकीजर वावची वांवल-
 वाल धवंठालि खेजमेकीठालि खबरसार यह सब स्वादिम वस्तु
 जाणाना ॥ ४ ॥ अब अनाहार चीजे कहतेहैं नींवकीठालि जर
 पांन सिली गोमूत्र गिलोय चिरायता अतीस कूमेकीठालि चंदन-
 कीराख रोहिणीकीठालि पींपलामूल वच धमासा रींगणी एलिया
 चिरमी कयर वोरकीजर इत्यादिक अनाहार चीज इच्छा मुजब ठो-
 रुणा यह जो इच्छाविना अनिष्टपणे लेवे तब ता अनाहारहे अगर जो
 इच्छा संयुक्त लेवे तो आहारका दूषण लगे, पञ्चख्वाणका अर्थ जाणे
 विगर जो पञ्चख्वाण करे सो अंधा पञ्चख्वाणहे इस वास्ते संक्षेप
 मात्र आगारोंका अर्थ लिखतेहे, जिस पञ्चख्वाणमें जितना आगार
 होय सो रखकर हमारे पञ्चख्वाणहे, अन्नघणाजोगेण कहिये अना-
 जोग टालके किया जो पञ्चख्वाण, अत्यंत झूल जाणेंसें कोइनी
 चीज झूलके मुंमे मालली होय लेकिन जाणे बाद तत्काल उसी
 वखत पीठा नाख देवें तो पञ्चख्वाणमें जंग नही, डुर जाणे बाद
 जकण करे तो पञ्चख्वाण निश्चे जंग होय ॥ १ ॥ पञ्चकालेण कहते
 कालकी प्रवृत्तता, आकाशमें गर्द ऊरती होय आकाशमें बहल
 वाये होय तेसेइ पहामकीउठ आजोवे सूरज नही दीखे तब ज
 रमसुं पञ्चख्वाणका वखत पूरा हुवा जाणकर जोजन करे तो ज
 जंग नही ॥ २ ॥ दिसामोहेण कहतां दिसा झूलकर पूरवकूं पछि
 जाणकर पञ्चख्वाणका काल पूरा हुये विगर जोजन कर लेवे त
 व्रत जंग नही ॥ ३ ॥ सदस्सागारेण कहतां सदसात्कार दहोत उता
 लके योगसें अथवा अकस्मात् विलोवते तोलते धी वगेरेका ठी

मूंमें गिर जाय तो व्रत जंग नही ॥४॥ साहूवयणेणं कहतां साधूके
 वचनसें उग्यामा पोरसीआदिक जरम संयुक्त सुणकर पञ्चस्काणका
 काल पूरा हुवा जाणकर जोजन करे तो व्रत जंग नही ॥५॥ सब
 समादिवत्तियागारेणं कहतां पञ्चस्काणका काल पूरा होणेसें पदली
 अकस्मात् शूलादिक रोग उपजे उसकरके परणामोंकी धिरता रहे
 नही आर्त्तरौद्र ध्यान होय तब उसका रोग मिटाणे वास्ते ओषधादिक
 पशुय देवे वा आप लेवे तो पञ्चस्काण जंग नही ६ महत्तरागारेणं
 कहतां पञ्चस्काणसें जितनी निर्जरा होय उस निर्जरासें ज्यादा
 निर्जराका कारण अथवा हरकिसीसें वण नही आवे ऐसा जो चैत्य
 संघादिकका प्रयोजन होणेसें पञ्चस्काणका काल पूरण जये विगर
 ही जोजन कर लेवे तो व्रत जंग नही ७ सागारीआगारेणं कहतां
 गृहस्थ देखतां साधू जोजन करे नही एसी जिनराजकी आज्ञा
 दे इस वास्ते कोइ साधूने एकासणादिक पञ्चस्काण कर जोजन
 करणे वेठादे उस बखत कोइ गृहस्थ साधू पास चला आवे तब
 साधू उस ठिकाणेसें ऊठकर नर ठिकाणे जाकर जोजन करे तो
 व्रत जंग नही नर गृहस्थकूं इसमें ऐसा आगार हे जिस पुरुषकी
 निजर लगती होय तो उस पुरुषके आणेसें एकासणेवाला उठकर नर
 ठिकाणे जाकर जोजन करेतो व्रत जंग नही ॥ ८ ॥ आनटणपसारेणं
 कहतां पग प्रमुख एकठा करणसें अथवा पसारणेसें थोमासा आसन
 चल जाय तो व्रत जंग नही ॥९॥ गुरु अशुवाणेणं कहतां आपका गुरु
 आणेसें तथा आपसें कोइ वमा पुरुष आणेसें विनयके वास्ते जोजन
 करतां एकाशनादिकमें आसन ठोम खमा हो जावे तोजी व्रत जंग
 नही ॥१०॥ पारिवाणियागारेणं कहतां सब पञ्चस्काणमें यह आगार
 साधुकादे जिस आहारके परठणेसें बहुत जीवकी विराधना होती
 जाणकर गुरु कहे यह आहार परठो मत सरस आहार हे तब

एकाशनादि व्रतधारी साधू गुरुके आह्रासें दुसरी वखतजी आ-
हार करे तो व्रत जंग नही ॥ १ १ ॥ लेवालेवेणं कहतां जोजन कर-
णका आल प्रमुख ज्ञाजन उसके अंदर घृतादिक विगय द्रव्यका
अंसलगाजयाहे उसकूं हाथ वगेरेमें पूब माला उस परजी किंचित्वे
मालम सालगारहे उसमें आयंबिलादि व्रतवाला जोजन कर लेवे
तो व्रत जंग नही ॥ १ २ ॥ उस्किन्नविवेगेणं कहतां आयंबिलादि पञ्च-
खाणमें नही खाणे योग्यजो विगय द्रव्य प्रमुख उसका फरस खाणे
योग्य द्रव्यसें हो गया होय वो चीज खाणेमें आवे तो व्रत जंग
नही लेकीन् जो विगय आदि देकर पतला द्रव्य सो हाथसें उठाय
सके नही ऐसे द्रव्यसें फरस हुआ होय तो उसके खाणेसें व्रत जंग
नही ॥ १ ३ ॥ गिहत्थसंसिठेणं कहतां जोजन पुरबे जिससेती एसी कु-
रुठी आदि देकर ज्ञाजन विगय प्रमुख द्रव्यसें वेमालम खरमी होय
प्रत्यह निजरसें कदाचित्मालम न होय तब जो उसही वासणसें
जोजन पुरसे तोजी व्रत जंग नही १ ४ पडुच्चमुखिणं कहतां सर्व
आ लूखी रोटी खाखरा प्रमुख द्रव्य किंचित्मात्र घृतादिकसें वेमा-
लम चोपमणेमें आयाहे लेकिन घृतादिकका स्वाद नही मालम देता
हे तो नोवी पञ्चखाणमें उस द्रव्यकूं खाणेमें आवे तो व्रत जंग
नही उर जो धारविगय लेवे तो व्रत जंग होय ॥ १ ५ ॥ इति पनरे
पञ्चखाणका आगारार्थ संपूर्ण ॥

॥ अथ साधू प्रतिक्रमणसूत्र लिख्यते ॥

॥ चत्तारिमंगलं अरिहंतामंगलं सिद्धामंगलं साहूमंगलं केव-
लिपसात्तो धम्मोमंगलं १ चत्तारिलोगुत्तमा अरिहंतालोगुत्तमा सिद्धालो-
गुत्तमा साहूलोगुत्तमा केवलिपसात्तो धम्मोलोगुत्तमो २ चत्तारिसरणं
पवज्जामि अरिहंतेसरणं पवज्जामि सिद्धेसरणं पवज्जामि साहूसरणं पव-
ज्जामि केवलिपसात्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ३ इत्थामि पन्निकमिजं

पगामसिद्धाए निगामसिद्धाए संभारानवट्टणाए परियट्टणाए भ्रान्त-
 णाए पसारणाए उप्पइयासंघट्टणाए कइए कक्कराईए ठोए जंजाइए
 आमोसेससर स्कामोसे भ्रान्तलमानत्ताए सोअणवत्तियाए इत्थोविप्प-
 रियासिद्धाए दिक्खीविप्परियासिद्धाए मणविप्परिआसियाए पाण-
 न्जोयणविप्परिआसिद्धाए जोमेदेवसिद्ध अइयारोकत्तं तस्समिद्धामि-
 ड्ढकम् पम्भिकमामि गोयरचरिआए त्तिखायरिआए उग्घारुकवारु उ-
 ग्घारुणाए साणावत्तादारा संघट्टणाए मंनोपाहुमिआए वत्तिपाहु-
 मिआए ठवणापाहुमिआए संकिएसइस्सागारे आणेतणाए पाणेत-
 णाए आणन्जोयणाए पाणन्जोयणाए वीअन्जोयणाए हरियन्जोयणाए
 पञ्चकम्मियाए पुराकम्मियाए अदिठ्ठहन्नाए दगसंसठ्ठहन्नाए रबसंसठ-
 हन्नाए पारिसारुनिआए पारिठावणिआए उहासणत्तिस्काए जंज-
 ग्गमेणं उप्पायणेतणाए अपरिश्रुद्धं पम्भिगहिअं परिज्जुत्तंवा जंनप-
 रिठवणिअं तस्समिद्धामिड्ढकम् पम्भिकमामि चानक्कालं सिद्धायस्स
 अकरणायाए उज्जत्तकालं जंनोवगरणास्स अप्पमिलेहणाए अप्पमज्झ-
 णाए उप्पमज्झणाए अइक्कमे वइक्कमे अइयोरे अणायोरे जोमेदेव-
 सिद्ध अइयारो कत्तं तस्स मिद्धामि ड्ढकम् पम्भिकमामि एगविहे
 असंजमे पम्भिकमामि दोहिं बंधणेहिं रागबंधणेणं दोसबंधणेणं
 पम्भिकमामि तिहिं दंमेहिं मणदंमेणं वयदंमेणं कायदंमेणं
 पम्भिकमामि तिहिं गुत्तोहिं मणगुत्तोए वयगुत्तोए कायगुत्तोए
 पम्भिकमामि तिहिं सल्लेहिं मायासल्लेणं नीयाणासल्लेणं मिद्धादं
 सणसल्लेणं पम्भिकमामि तिहिं गारवेहिं इत्थीगारवेणं रसगारवेणं
 सायागारवेणं पम्भिकमामि तिहिं विराहणाहिं नाणविराहणाए
 दंसणविराहणाए चारित्तविराहणाय पम्भिकमामि चउहिं क-
 साएहिं कोइकसाएणं माणकसाएणं मायाकसाएणं लोहकसाएणं
 पम्भिकमामि चउहिं सप्पाहिं आहारसप्पाए जवसप्पाए मेहुणसप्पा

ए परिगहससाए पन्निक्कमामि चउहिं विगहाहिं इञ्चिकहाए जत्त-
 कहाए देसकहाए रायकहाए पन्निक्कमामि चउहिं जाणेहिं अट्ठेणं
 जाणेणं रुद्धेणंजाणेणं धम्मेषंजाणेणं सुक्केणंजाणेणं पन्निक्कमामि
 पंचहिं किरियाहिं काइयाए अहिगरणियाए पाउमियाए पारताव-
 णीआए पाणायवायकिरियाए पन्निक्कमामि पंचहिं कामगुणेहिं
 सहेणं रुवेणं रसेणं गंधेणं फासेणं पन्निक्कमामि पंचहिं महद्वाएणि
 पाणाइवायानुविरमणं मुसावायानुवेरमणं अविन्नादाणानु^{सम}
 मेहुणानुवेरमणं परिगहानुवेरमणं पन्निक्कमामि पंचहिं
 इरिआसमिईए ज्ञासासमिईए एसणासमिईए आयाण^{१७५}
 खेवणासमिईए उच्चारपासवण खेवजल्लसंघाणपारिठावहिं^{इत्ति१७५}
 ईए पन्निक्कमामि ठहिं जीविकाएहिं पुढविकाएणं अ^{इत्ति१७५}
 तेजकाएणं वाउकाएणं वणस्सईकाएणं तस्सकाएणं पन्निक्कमामि
 ठहिं लेसाहिं किन्हेलेसाए नीललेसाए कानुलेसाए तेजलेसाए प-
 न्मलेसाए सुकलेसाए पन्निक्कमामि सत्तहिं जयठाणेहिं अठहिं म-
 यठाणेहिं नवहिं बंज्जचेरगुत्तीहिं दसविहे समणधम्मे एगारसहिं
 उवासगपन्निमाहिं बारसहिं जिस्कुपन्निमाहिं तेरसहिं किरियाठा-
 णेहिं चउदासहिं जूयगामेहिं पसरसहिं परमाइम्मिएहिं सोलसएहिं
 गाहाहिं सतरसविहे असंजमे अठारसविहे अवंजे इगुणवीसाए ना-
 यच्चयणेहिं वीसाए असमाहिठाणेहिं इकवीसाए सववेहिं बावीसाए
 परीसहेहिं तेवीसाए सुयगरुज्जयणेहिं चउवीसाए अरिहंतेहिं पचवी
 साए जावणाहिं ठवीसाए दसाकप्पववहाराणं उद्देसणकावेणं सत्ता
 वीसाए अणगारगुणेहिं अठावीसाए आयारपकप्पेहिं एगुणतीसाए
 पावसुअप्पसंगेहिं तीसाए मोहणीअठाणेहिं इगतीसाए सिद्धाइगुणेहिं
 वत्तीसाए जोगसंगहेहिं तिच्चीसाए आसायणाए अरिहंताणं आसाय
 णाए सिद्धाणंआसायणाए आयरिआणंआसायणाए उवच्चायाणंआ-

सायणाए साहूणंआ० साहूणीणंआ० सावयाणंआ० सावियाणंआ० दे
 वाणंआ साय० देवीणंआ० इहलोगस्सआ० परलोगस्सआ० केवलपन्नः
 तस्स धम्मस्सआ० सदेवमणुआसुरस्सलोगस्सआ० सव्वपाणञ्जुअजी-
 वसत्ताणंआ० कालस्सआ० सुअस्सआ० सुयदेवयाएआसा० वायणा
 रिअस्सआ० जंवाइहं वच्चामेलिअं हीनस्करिअं अच्चस्करिअं पयहीणं
 विणयहीणं जोगहीणं घोसहीणं सुठुदिन्नं, डुठुपमिच्चियं अकालेक-
 न्तमज्झानं कालेनकन्तमज्झानं असज्जाइए सज्जाइयं सज्जाइए नसज्जा-
 इयं तस्स मिच्चामि डुक्कमं एमो चउवीसाए तित्थयराणं उसज्जाइ-
 माहावीरपक्कवसाणाणं इणमेव निगंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं के-
 वलियं पमिपुसं नेआजयं संसुद्धं सल्लगत्तणं सिद्धिमगं मुत्तिमगं
 निज्जाणमगं निव्वाणमगं अवितहमविसंधि सव्वडुरक्कपहीणमगं
 इत्थद्वियाजीवा सिच्चंति बुच्चंति मुच्चंति परिनिघायंति सव्वडुरखाणं-
 मंतंकरंति तंधम्मं सदहामि पत्तियामि रोएमि फालेमि पालेमि अ-
 णुपालेमि तंधम्मं सदहंतो पत्तिअंतो रोअंतो फासंतो पालितो अणु-
 पालितो तस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अप्पुठ्ठमि आराहणाए
 विरत्तमि विराइणाए असंजमं परिआणामि संजमं उवसंपज्जामि
 अबंजं परिआणामि बंजंउवसंपज्जामि अकप्पं परिआणामि कप्पं
 उवसंपज्जामि अन्नाणं परिआणामि नाणं उवसंपज्जामि अकिरिअं
 परिआणामि किरिअं उवसंपज्जामि मिच्चत्तं परिआणामि सम्मत्तं
 उवसंपज्जामि अबोहिं परिआणामि बोहिं उवसंपज्जामि अमगं प-
 रिआणामि मगं उवसंपज्जामि जं संजरामि जं च न संजरामि जं
 पमिक्कमामि जं च न पमिक्कमामि तस्स सव्वस्स देवसिअस्स
 अइयारस्स पमिक्कमामि समणोहं संजय विरय पमिदय पच्चरत्ताय
 पावकम्मे अनियाणो दिविसंपन्नो मायामोसविवज्जित्तं अट्ठाइजोसु
 दीवंसमुदेसु पन्नरसकम्मज्जमीसु ॥ जावंतिकेविसाहू, रयहरणगुष्ठ

परिगृह्यथारा ॥ पंचमहव्यथारा, अथार सहस्त सीलंगवारा ॥
 अथव्यथारा चरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि ॥
 खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतुमे ॥ मित्ति मे सव्व जूएसु,
 वेरं मच्चं नेकेणई ॥ १ ॥ एवमहं आलोडय, नंदिअ गरहिय डुगंठियं
 सम्मं ॥ तिविहेण परिकंतो, वंदामि जिणेचउवीसं ॥ २ ॥ इतिश्री
 साहू प्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥

॥ अथ परस्त्री सूत्र लिख्यते ॥

॥ तिठंकरे अतिठे, अतिठसिद्धेय तिठसिद्धेअ ॥ सिद्धेयजि-
 णेयरिसी, महरिसि नाणं च वंदामि ॥ १ ॥ जेयइमंगुणरणसायर,
 मविरातिऊणं तिन्निसंसारा ॥ ते मंगलं करित्ता, अहमविआराहणा-
 भियुहो ॥ २ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुयं च धम्मोय ॥
 खंती गुत्ती मुत्ती, अजवया मद्धं चेव ॥ ३ ॥ लोगंमि संजया जं
 करंति, परम रिसि देसियमुपारं ॥ अहमवि उवडिउतं, महव्वय उ-
 चारणं कालं ॥ ४ ॥ सेकिंतं महव्वय उचारणा महव्वय उचारणा
 पंचविहा पन्नत्ता राई भोयण वेरमणछुछा तंजहा सव्वाउ पाणाइ-
 वायाओ वेरमणं सव्वाउ मूसावायाउ वेरमणं सव्वाउ अदिन्नादाणाउ
 वेरमणं सव्वाउमेहुणाउवेरमणं सव्वाउपरिगहाउवेरमणं सव्वाउ-
 राइभोयणाउवेरमणं तत्थ खलु पढमे भंते महव्वप् पाणाइवायाउ-
 वेग्मणं सव्वं भंते पाणाइवायं पच्चस्कामि से सुहुमं वा वायरं वा तसं
 वा थावरं वा नेवसयं पाणे अइवाएजा नेवन्नेहि पाणे अइवायाविज्जा
 पाणे अइवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावलीवाए तिविहं तिविहेणं
 मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतपि अन्नंनसमणु
 जाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि
 से पाणाइवायाए चउव्वहे पन्नते तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ
 भावउ दव्वउणं पाणाइवाए छसुजीवनिकाएसु खित्तउणं पाणा

इवाए सयल्लोए कालन्नं पाणाइवाए दियावा राज्जवा भावन्नं
 पाणाइवाए रागेण वा दोसेण वा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवल्लि
 पन्नत्तस्स अहिंसा लख्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंती-
 पहाणस्स अहिरत्तसोवसियस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स
 अप्पयमाणस्स भिखावित्तियस्स कुल्लवीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स
 संपल्लालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वि-
 त्तीलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविंसंवाइयस्स
 संसारपारगामियस्स निव्वान गमण पज्जवसाणफलस्स पुव्वि अन्नाण
 याए असवणयाए अवोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रा-
 गदोस पडिवद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारब-
 गरुयाए चउक्कसान्नवगएणं पंचेदियवसट्ठेणं पडिपुन्नभारियाए साया-
 सोल्ल मणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु पाणाइ-
 वान्न कन्नवा कारिन्नवा कीरंतोवा पेरेहिं समणुन्नान्न तं निंदामि ग-
 रिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि प-
 ड्डपन्नं संबरेमि सव्वं पाणाइवायं जावजीवाए अणिस्सिन्नहिं नेव
 सयंपाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं प्राणे अइवायाविज्जा पाणे अइवा-
 यंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसख्खियं सिद्धसख्खियं
 साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवं हवइ भिक्खूवा भिक्खू-
 णीवा संजयविरय पडिहय पच्चस्काय पावकम्मे दियावा राज्जवा एगोवा
 परिसागन्नवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खल्लु पाणाइवायस्सवेरमणे
 हिएसुहे स्वमेनिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सब्बेसिं पाणाणं
 सव्वेसिं भूयाणं सब्बेसिं जीवाणं सब्बेसिं सत्ताणं अदुक्कणयाए अ-
 सोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-
 णियाए अणुद्वणयाए महत्ते महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणु-
 चिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्ते तं दुक्कययाए कम्मस्कयाए मोहस्क

याए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए तिक्कट्टु उवसंपज्जिताणं विहरामि
 पदमे भंते महव्वए उवड्डिज्जमि सव्वाञ्च पाणाइवायाञ्चवेरमणं ॥ १ ॥
 अहावरेदोच्चेभंते महव्वए मुसावायाञ्चवेरमणं सव्वं भंते मुसावायं
 पच्चस्सामि से कोहावा लोहावा भयावा हासावा नेवसयं मुसंवाइच्चा
 नेवन्नेहिं मुसंवायाविच्चा मुसंवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणमि
 जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न क-
 रेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडि-
 क्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से मुसावाए चउ-
 व्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वञ्च खित्तञ्च कालञ्च भावञ्च दव्वञ्चणं मुसा-
 वाए सव्वदव्वेसु खित्तञ्चणं मुसावाए लोएवा अलोएवा कालञ्चणं
 मुसावाए दियावा राञ्चवा भावओणं मुसावाए रागेणवा
 दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अहिंसात्तस्स
 णस्स सच्चाहिंठियस्स विणय मूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नि-
 यस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभवेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिस्का-
 वित्तियस्स कुस्कीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपस्कालियस्स चत्तदो-
 सस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तोलस्कणस्स पंचमहव्व-
 यजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स
 निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अ-
 वोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए
 बालवाए मोहयाए मंदयाए किम्भयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसान्चवग-
 एणं पंचेदियवसट्ठेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोख्खमणुपालयंतेणं इह
 वामवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मुसावाओ भासिओवा भासाविओवा
 भासिज्जंतो वा पेरेहिं समणुच्चाओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिवि-
 हेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडिपन्नं संवेरमि अणागर
 पच्चस्सामि सव्वं मुसावायं जावज्जीवाए अणिस्सिद्धिं नेवसयंमुसंवा

चा नेवन्नेहिं सुसंवायाविद्या सुसंवायंतंवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा
 अरिहंतसखिखयं सिद्धसखिखयं साहससखियं देवसखियं अप्पसखियं
 एवं इवह भिरुवुवा भिरुवुगोवा संजयविरयपडिहय पच्चख्खाय पा-
 वकम्भे दियावा राउवा एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा
 एस खलु सुसावायस्सवेरमणे हिएसुहे खभे निस्सेसिए आणुगामिए
 पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं स-
 व्वेसिं सत्ताणं अदुख्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पण-
 याए अपोडणयाए अपरियावणयाए अणुद्वणयाए महत्ते महाणुणे
 महाणुभावे महापुरिमाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्ते तं दुग्गख्खयाए
 कम्मख्खयाए मोहख्खयाए वोहिलाभाए संसारुत्तारणाए तिकट्टु उद-
 संपज्जत्ताणं विहरामि दोच्चे भंते महव्वए उवट्ठिमि सव्वाउ सुसा-
 वायाओवेरमणं ९ अहावरे तच्चे भंते महव्वए अदिन्नादाणान्वेरमणं
 सव्वं भंते अदिन्नादाणं पच्चख्खामि से गामेवा नगरेवा रत्तेवा अप्पंवा
 वहुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं अदिन्नं
 गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा अदिन्नं गिण्हंतेवि अन्नंन-
 समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं
 न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि जावज्जीवाए
 तस्स भंते पडिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ये
 अदिन्नादाणे चउट्ठिवहे पन्नते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भा-
 वओ दव्वओणं अदिन्नादाणे गहणद्वारणिच्चेसु दव्वेसु खित्तओणं
 अदिन्नादाणे गामेवा नगरेवा रत्तेवा कालओणं अदिन्नादाणे दियावा
 राओवा भावओणं अदिन्नादाणे रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इ-
 म्मस्स वम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अहिंसालख्खणस्स सच्चाहिठियस्स वि-
 णयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसुवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स
 नववंभत्तेरयुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिरुवावित्तियस्स कुम्भीसंवत्तस्स

निरर्गिसरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स नि-
 व्वियारस्स निव्वित्तोलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंवि-
 यस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाण
 फलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं
 अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिव्वयाए बालयाए मोहयाए
 मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरूयाए चउक्कसान्वगएणं पंचेदियवसट्टेणं
 पडिपुन्नभारियाए साचासुक्कमणुपालयंतेणं इहंवाभवेअन्नेसुवा भवग्ग
 हणेसु अदिन्नादाणं गहियंवा गाहावियंवा विप्पंतंवा परेहिंसमणुन्ना
 ओ तं निदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अं
 इयं निदामि पडुप्पन्नंसंबरेमि अणागयं पच्चस्कामि सबं अदिन्नादा
 णं जावज्जोवाए अणिसिओहं नेवसयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं
 अदिन्नं गिन्नाविद्या अदिन्नंगिन्नंतेवि अन्नंसमणुजाणामि तंजहा
 अरिहंतसखिखयं सिद्धसखियं साहूसखियं देवसखियं अप्पसखियं
 एवं हवइ भिखूवा भिखुणीवा संजयविरय पडिहयपच्चस्काय पाव
 कम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमा
 णेवा एस खलु अदिन्नादाणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आ
 णुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं
 जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुखणयाए असोयणयाय अजूरणवाय
 अतिप्पणयाय अपोडणाय अपरियावणियाय अणुहवणयाय महत्ते
 महाणुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिय पसत्ते तं
 दुस्सकयाय कम्मस्सकयाय भोहस्सकयाय बोहिलाभाय संसारुत्तारणाय
 त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि तच्चे भंते महव्वए अणुद्धिओमि स-
 व्वाओ अदिन्नादाणाओवेरमणं ॥ ३ ॥ अहावरे चउत्थे भंते मह-
 व्वए मेहुणाओवेरमणं सबं भंते मेहुणं पच्चख्खामि से दिव्वंवा मा-
 णुसंवा तिरिख्खजोणियंवा नेवसयं मेहुणंसेविद्या नेवन्नेहिं मेहुणं-

सेवाविद्या मेहुणंसेवंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावजीवाए तिविहं
 तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अ-
 न्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि ।
 अप्पाणं वोसिरामि से मेहुणे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ
 कालओ भावओ दव्वओणं मेहुणे रूवेसुवा रूवसहगएसुवा खित्त-
 ओणं मेहुणे उट्ठलोएवा अहोलोएवा तिरियलोएवा कालओणं मे-
 हुणे दियावा राओवा भावओणं मेहुणे रागेणवा दोसेणवा जंपि-
 यमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालखणस्स सच्चा-
 हिठ्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरत्नसोवन्नियस्स उव-
 समप्पभवस्स नववंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिरुखावित्तियस्स
 कुख्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुण-
 गाहियस्स निव्वत्तीलखणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचिय-
 स्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामिस्स निव्वाणगमणपद्धात्रसाण-
 फलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अ-
 भिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए वालयाए मोहयाए मंद-
 याए किम्भयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेदियवसट्टेणं
 पडिपुन्नभारियाए सायासोख्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा
 भवग्गहणेसु मेहुणंसेवियंवा सेवावियंवा सेविच्चंतोवा परेहिं समणु-
 न्नाओ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए का-
 एणं अइयं निंदामि पडुप्पन्नंसंबरेमि अणागयं पच्चख्खामि सव्वंमेहुणं
 जावजीवाए अणिसिओहं नेवसयंमेहुणंसेविद्या नेवन्नेहिंमेहुणंसे-
 वाविज्जा मेहुणंसेवंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहां अरिहंतसख्खि-
 यं सिद्धसख्खियं साहुसख्खियं देवसख्खियं ५/५पसख्खियं एवं हव-
 इभिख्खूवा भिख्खुणीवा संजयविरयपडिहयपच्चस्कायपावकम्मे दि-
 यावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा

एतत्तु मेढुणस्सवेरमणे हि एसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पार-
 गामिए सव्वेसिपाणाणं सव्वेसिभूयाणं सव्वेसिजीवाणं सव्वेसि-
 सत्ताणं अदुख्खण्याए असोयण्याए अजूरण्याए अतिप्पण्याए
 अपीडण्याए अपरियावणियाए अणुद्वण्याए महत्ते महागुणे
 महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदैसिएपसत्ते तंदुख्खसयाए
 कम्मख्खयाए मोहत्तयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए तिकट्टु उव-
 संपज्जित्ताणं विहरामि चउत्थे भंते महव्वए उवडिओमि सव्वाओ-
 मेढुणाओवेरमणं ४ अहावरेपंचमे भंते महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं
 सव्वं भंते परिग्गहं पच्चख्खामि से अप्पंवा वडंवा अणुंवा थूलंवा चित्त-
 मंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिं परिग्गहं
 परिगिण्हविद्या परिग्गहंपरिगिन्नंतेवि अन्नेन समणुजाणामि जा-
 वज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकार-
 वेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि
 निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से परिग्गहे चउव्विहेपस्सत्ते
 तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वणं परिग्गहे सच्चि-
 ताचित्तमीसेसु दव्वेसु खित्तओणं परिग्गहे गामेसुवा नगरेसुवा रन्ने-
 सुवा कालओणं परिग्गहे दियावा राओवा भावओणं परिग्गहे
 अपग्घेवा मंहग्घेवा रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स
 केवल्लिपन्नत्तस्स अहिंसालख्खणस्स सच्चाहिडियस्स विणयमूलस्स
 खंतिपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नवदंभचेरु
 त्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खाविज्जियस्स कुख्खीसंवत्तस्स निरग्गि-
 सरणस्स संपत्तवालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स-
 निव्वित्तीलख्खणस्स पंचमहव्वयलुत्तस्स अविसंवाइयस्स संसारपा-
 र्गामियस्स निव्वाण गमण पच्चवसाणफलस्स पुर्व्विअन्नाण्याए अस-
 वण्याए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं राग-

दोस पडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किंरुयाए तिगारव-
 गरुयाए चउकसानवगएणं पंचेदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-
 सोरकमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु परिग्गहो ग-
 हिउवा गाहाविउवा घिप्पंतोवा परेहिंसमणुज्जाउ तंनिदामि गरि-
 हामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयंनिदामि पडुप्प-
 न्नंसंवरमि अणागयंपच्चस्कामि सबंपरिग्गहं जावज्जीवाए अणिसि-
 उहिं नेवसयंपरिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंपरिग्गहंपरिगिण्हंविद्या परिग्गहं-
 परिगिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसखियं सिद्ध-
 सखियं साहुसखियं देवसखियं अप्पसखियं एवंहवइभिख्खूवा भि-
 ख्खुणीवा संजयविरयपडिहय पच्चस्काय पावकम्मे दियावा राउवा
 एगंउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुपरिग्गहस्स-
 वेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सबेसिं
 पाणाणं सबेसिंभूयाणं सबेसिंजीवाणं सबेसिंसत्ताणं अदुरुखणयाए
 असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-
 णियाए अणुहवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने
 परमरिसिदेसियपसब्बे तंदुस्करकयाए कम्मरकयाए बोहिलाभाए सं-
 सारुत्तारणाए त्तिक्कट्टु उवसंपज्जिताणं विहरामि पंचमे भंते महवए
 उवट्ठिउमि सबाउपरिग्गहाउवेरमणं ५ अहावरेछट्ठे भंते महव्वए रा-
 इभोयणानवेरमणं सबं भंते राईभोयणं पच्चस्कामि सेअसणंवा पाणंवा
 खाइमंवा साइमंवा नेवसयंराइभुंजिज्जा नेवन्नेहिराइभुंजाविद्या राइभुं-
 जंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं
 वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंसमणुजाणामि
 तंस्सं भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसिरामि से राई-
 भोयणे चउघिहेपस्सत्ते तंजहा दधउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं
 राईभोयणे असणेवा पाणेवा खाइमेवा साइमेवा खित्तउणं राईभोयणे

समयखित्ते कालओणं राईभोयणे दियावा रत्तिंवा भावओणं राईभो-
 यणे तिच्चेवा कड्डुएवा कसाएवा अंबिलेवा महुरेवा लवणेवा रागेणवा
 दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवल्लिपन्नत्तस्स अहिंसालक्क-
 णस्स सञ्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसोवन्नि-
 यस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभवेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिस्कावि-
 त्तियस्स कुस्कीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्कालियस्स चत्तदोसस्स
 गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तोलक्कणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स
 असंनिहिसंचिअस्स अविंसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाण-
 गमणपच्चवसाणफलस्स पुब्बिअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिणं अ-
 णभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए
 मोहयाए मंदयाए किम्भयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं
 पंचेदियवसट्ठेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोखमणुपालयंतेणं इहंवा
 भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसुं राईभोयणं भुत्तंवा भुंजावियंवा भुज्जंतंवा
 परेहिंसमणुज्जाओ तंनिदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वा-
 याए काएणं अइयंनिदामि पडुपन्नसंबरेमि अणागयं पच्चरक्कामि
 सव्वंराइ भोयणं जावज्जोवाए अणित्तिओहं नेवसयं राईभु-
 जिज्जा नेवन्नेहिंराईभुंजाविज्जा राईभुज्जंतेवि अन्नंसमणुजाणाभि
 तंजहा अरिहंतसरिक्कयं सिद्धसरिक्कयं साहुसरिक्कयं देवसरिक्कयं
 अप्पसरिक्कयं एवंहवइभिस्खूवा मिस्खुणीवा संजयविरय पडिहय
 पच्चरक्कायपावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा
 सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुराईभोयणस्सवेरमणे हिएसुहेखमे-
 निस्सेसिए आणुगाभिए पारगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिं-
 भूयाणं सव्वेसिजीवाणं सव्वेसिसत्ताणं अदुक्कणयाए असोयणयाए
 अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणु-
 हवणयाए महव्वेमहागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसि;

देसिप्पसत्थे तंदुख्खख्खयाए कम्मख्खयाए मोहख्खयाए बोहिलाभाए
 संसारुत्तारणाए तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि छट्ठे भंते महव्वए
 उवट्ठिओमिसव्वाओ राईभोयणाओ वेरमणं ॥ ६ ॥ इच्चैइयाइं पंच-
 महव्वयाइं राईभोयणवेरमणछट्ठाइं अत्तहियट्ठाइं उवसंपज्जित्ताणंविह-
 रामि अप्पसत्थायजेयोगा परिणामायदारुणा पाणाइवायस्सवेरमणे
 एसबुत्ते अइक्कमे ॥ १ ॥ तिक्करागायजाभासा तिक्कदोसातहेवय
 सुसावायस्सवेरमणे एसबुत्तेअइक्कमे ॥ २ ॥ उग्गाहंअजाइत्ता अव-
 दिन्नेवउग्गहे अदिन्नादाणस्सवेरमणे एसबुत्ते अइक्कमे ॥ ३ ॥ सहा-
 रूवारसागंधा फासाणंचविआरणा मेहुणस्सवेरमणे एसबुत्ते अइ-
 क्कमे ॥ ४ ॥ इट्ठापुट्ठायगेहीय कंखालोभेअदारुणे परिग्गहस्सवेरमणे
 एसबुत्तेअइक्कमे ॥ ५ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-
 धम्मे पढमंवयमणुरख्खे विरियामोपाणाइवायाओ ॥ ६ ॥ दंसणना-
 णचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे वीयंवयमणुरख्खे विरियामो-
 अलियवयणाओ ॥ ७ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-
 धम्मे तइयंवयमणुरख्खे विरियामोअदिन्नादाणाओ ॥ ८ ॥ दंसण-
 नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे चउत्थंवयमणुरख्खे विर-
 यामोमेहुणाओ ॥ ९ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसम-
 णधम्मे पंचमंवयमणुरख्खे विरियामोपरिग्गहाओ ॥ १० ॥ दंसण-
 नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे छट्ठंवयमणुरख्खे विरियामो-
 राईभोयणाओ ॥ ११ ॥ आलियविहारसमिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमण-
 धम्मे पढमंवयमणुरख्खे विरियामोपाणाइयाओ ॥ १२ ॥ आलियवि-
 हारसमिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमणधम्मे वीयंवयमणुरख्खे विरियामो-
 अलियवयणञ्च ॥ १३ ॥ आलियविहारसमिञ्च जुत्तोगुत्तोठिञ्चसमणधम्मे
 तइयंवयमणुरख्खे विरियामो अदिन्नादाणाञ्च ॥ १४ ॥ आलियविहार-
 समिञ्च जुत्तोगुत्तोठिञ्चसमणधम्मे चउत्थंवयमणुरख्खे विरियामोमेहु-

णाञ्च ॥ १५ ॥ आलियविहारसमिञ् जुत्तो गुत्तो ठिञ्च समणधम्ममे पंच-
 मवयमणुरस्के विरयामो परिग्गहान्च ॥ १६ ॥ आलियविहारस-
 मिञ् जुत्तो गुत्तो ठिञ्च समणधम्ममे छव्वयमणुरस्के विरयामो राईभोयणा-
 ञ्च ॥ १७ ॥ आलियविहारसमिञ् जुत्तो गुत्तो ठिञ्च समणधम्ममे तिविहे-
 ण पडिक्कंतो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १८ ॥ सावज्जजोगमेगं मिञ्चत्तं
 एगमेव अज्ञाणं परिवज्जंतो गुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १९ ॥ अण-
 वच्चजोगमेगं सम्मत्तं एगमेव नाणंतु उवसंपन्नो जुत्तो रक्खामिमहव्वए-
 पंच ॥ २० ॥ दोचेवरागदोसे दोन्नियझाणां इअट्ठरूढां परिवच्चंतो-
 गुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २१ ॥ दुविहंचरित्तं धम्मं दोन्नियझाणां इ-
 धम्मसुक्कां उवसंपन्नो जुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २२ ॥ किण्हा-
 नीलाकाऊ तिन्नियलेसाऊ अप्पसत्ताञ्च परिवच्चंतो गुत्तो रक्खामि-
 महव्वएपंच ॥ २३ ॥ तेउपम्हासुक्का तिन्नियलेसाउ सुप्पसत्ताञ्च उव-
 संपन्नो जुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २४ ॥ मणसामणसच्चविज्ज-
 वायासच्चैरणकरणसच्चैणं तिविहेण विसच्चविञ्च रक्खामिमहव्वएपंच
 ॥ २५ ॥ चत्तारियदुहसिज्जा चउरोसन्नातहाकसायाय परिवच्चंतो-
 गुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २६ ॥ चत्तारियसुहसिज्जा चउव्विहं-
 संवरंसमाहिंच उवसंपन्नो जुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २७ ॥
 पंचेवयकामगुणे पंचेवयअण्हवेमहादोसे परिवच्चंतो गुत्तो रक्खामि-
 महव्वएपंच ॥ २८ ॥ पंचेदियसंवरणं तहेव पंचविहमेव सव्वायं उवसंप-
 न्नो जुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २९ ॥ छज्जीवनिकायबहि छप्पिय-
 भासान्च अप्पसत्थानं परिवज्जंतो गुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३० ॥
 छविहमभित्तरियं वज्जंपिय छविहंतवोकम्मं उवसंपन्नो जुत्तो रक्खामि-
 महव्वएपंच ॥ ३१ ॥ सत्तभयघाणां इ सत्तविहंचेव नाणविभ्रंगा परिव-
 चंतो गुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३२ ॥ पिण्डेसणपाणेसण उग्गहं-
 सत्तिकयामहच्चयणा उवसंपन्नो जुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३३ ॥

अष्टमयष्टाणां अष्टयकम्माइतेसिबंघिच परिवर्धंतोगुत्तो रक्खामि
 महव्वएपंच ॥ ३४ ॥ अष्टयपवयणमाया द्विष्ठाअष्टविहनिट्ठिअठेहिं उवसं
 पन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३५ ॥ नवपावनियाणां संसारं
 णायनवविहाजीवा परिवर्धंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३६ ॥ न
 वबंभचेरगुत्तो दुनवविहंभंभचेरपडिसुद्धं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिम
 हव्वएपंच ॥ ३७ ॥ उवघायंचदसविहं असंवरंतहयसंकिलेसंच परि
 वज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३८ ॥ चित्तसमाहिष्ठाणां दस
 चेवदसाउसमणधम्मंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३९ ॥
 आसायणंचसव्वं तिगुणं एकारसंविवज्जंतो परिवर्जंतोगुत्तो रक्खामि
 महव्वएपंच ॥ ४० ॥ एवंपतिदंडविरत्तं तिगरणसुद्धोतिसल्लनिसल्लोति
 विहेण पडिक्कंतो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ४१ ॥ इच्चेयंमहव्वयउच्चारणं
 थिरत्तं सद्भुद्धरणं धिइवलंबसाउ साहणघोपावनिवारणं निकायणा
 भावविसोही पडागाहरणं निजूहणा राहणा गुणाणं संवरजोघोपः
 सब्बाणां वउत्तया जुत्तया नाणे परमघो उत्तमघो एसखलुतित्थं
 केरहिं रइरागदोस महणेहिं देसिउ पवयणस्ससारो छज्जीवनिकाय
 संजमं उवइसिउं तिल्लुक्क सक्कयंठाणं अणुवगया नमोत्तुते सिद्धबुद्ध
 मुत्तनीरय निस्संग माणमूरण गुणरयण सायर मणंत मप्पमेय न
 मोत्तुते महय महावीरवद्धमाणस्स नमोत्थुतेअरहउ नमोत्थुते भग
 वउ चिक्कट्टु इच्चेसा खलुमहव्वयउच्चारणाक्रया इच्चामोसुत्तकित्तणं
 काउं नमोतेसिखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं छव्विहमावस्सयं भग
 वंतं तंजहा सामाइयं चउवोसउव वंदणयं पडिक्कमणं काउसगो पंच
 रक्खाणं सव्वेहिं विण्यंमि छव्विहे आवस्सए भगवंते ससुत्ते सअत्ते
 सगगंथे सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरहंतेहिं भ
 गवंतेहिं पन्नत्तावा परुवियावा तेभावे सइहामो पत्तियामो रोएमो
 फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सइहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं

फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपखस्स अंतोचउमासीए अंतो
 संवच्चरस्स जंवाइयं पढियं परियट्ठियं पुच्चियं अणुपेहियं अणुपालियं
 तंदुख्खस्सयाए कम्मस्सयाए मोहस्सयाए बोहिलाभाए संसारुत्ता
 रणाए त्तिक्कट्ठुउवसंपज्जिन्नाणं विहरामि अंतोपखस्स जंनवाइयं नप
 ढियं नपरियट्ठियं नपुच्चियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेवले संतेवी
 रिए संतेपु रिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरि
 हामो विउट्ठेमो विसोहेमो अकरणयाए अप्पुठेमो अहारिहं तवोकम्मं
 पायच्चित्तं पडिवच्चाओ तस्स मिच्चा मिदुक्कडं नमो ते सिंखमासमणाणं जे
 हिंइमंवाइयं अंगवाहिरियं उक्कालियं भगवंतं तंजहा दसवेयालियं
 कप्पियाकप्पियं चुलकप्पसुयं महाकप्पसुयं उववाइयं रायप्पसेणीयं
 जीवाभिगमो पन्नवणा महापन्नवणा नंदीअणुयोगदाराइं देविंद
 थुत्तं तंदुलवेयालियं चंदा विच्चयं पमायप्पमायं वीयरागसुयं विहार
 कप्पो चरणविसोही आउरपच्चस्खाणं महापच्चस्खाणं सव्वेहिं पिए
 यंमि अंगवाहिरिए उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्ते सगंग्थे सन्नि
 जुत्तीए ससंगहणीए जेयुणावा भावावा अरिहंतोहिं भगवंतेहिं प
 न्नत्तावा परूवियावा तेभावे सहहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो
 पालेमो अणुपालेमो तेभावे सहहंतोहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं
 अणुपालंतेणं अंतोपखस्स जंवाइयं पढियं परिअट्ठियं पुच्चियं अणु
 पेहियं अणुपालियं तंदुख्खस्सयाए कम्मस्सयाए मोहस्सयाए बोहि
 लाभाए संसारुत्तारणाए त्तिक्कट्ठु उवसंपज्जिन्नाणं विहरामि अंतोप
 खस्स जंनवाइयं नपढियं नपरियट्ठियं नपुच्चियं नाणुपेहियं नाणुपा
 लियं संतेवले संतेवोरिए संतेपु रिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो प
 डिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्ठेमो विसोहेमो अकरणयाए अप्पुठे
 मो अहारिहं तवोकम्मं पायच्चित्तं पडिवच्चाओ तस्स मिच्चा मिदुक्कडं न
 मो ते सिंखमासमणाणं जे हिंइमंवाइयं अंगवाहिरियं उक्कालियं भगवंतं

तंजहा उत्तरअयणाइं दसानंकप्पोववहारो इसिभासियाइं महानिसीहं
 जंबुद्वीपपन्नत्तो सूरपन्नत्तो चंदपन्नत्तो दीवसागरपन्नत्तो खुड्डियाविमा
 णपविभत्तो महलियाविमाणपविभत्तो अंगचूलिया वंगचूलिया वि
 वाहचूलिया अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए वेसमणोववाए
 वेलंघरोववाए देविंदोववाए उट्टाणसुए समुट्टाणसुए नागपरियाव
 लियानं निरयावलियानं कप्पियानं कप्पवडिंसयानं पुप्फियानं पुप्फचु
 लियानं वह्नीदसानं आसीविसभावणानं दिट्ठीविसभावणानं चारणसु
 मिणभावणानं महासुमिणभावणानं तेअग्गिनिसग्गाणं सव्वेहंपिएयं
 मि अंगवाहिए उकालिए भगवंते ससुत्ते सअत्ते सग्गंथे सन्निजुत्तीए
 ससंगहणीए जे गुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवि
 यावा तेभावेसद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो
 ते भावे सद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं
 अंतोपरूखस्स जंवाइयं पढियं परियट्ठियं पुब्बियं अणुपेहियं अणुपा
 लियं तंदुरुखस्सयाए कम्मखस्सयाए मोहखस्सयाए बोहिलाभाए स
 सारुत्तारणाए तिकट्ट उवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपरूखस्स जंन
 वाइयं नपढियं नपरियट्ठियं नपुब्बियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संते
 बले संतेवीरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो
 तिंदामो गरिहामो विउट्ठेमो विसोहंमो अकरणयाए अणुट्ठेमो अहारिहं
 तवोकम्मं पायच्चित्तंपडिवज्जामो तस्स मिट्ठामिदुक्कडं नमोतेसिंखमास
 मणाणं जेहिंइमंवाइयं दुवालसंगंगणिपिडंगं भगवंतं तंजहा आयारो
 सूयगडो ठाणो समवानं विवाहपन्नत्तो नायाधम्मकहानं उवासगद
 सानं अंतगडदसानं अणुत्तरोववाइअदसानं पणहावागरणं विवाग
 सुयं दिट्ठिवानं सुदिट्ठिसुहानं सव्वेहिं पिएयंमि दुवालसंगे गणिपिडगे
 भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जेगुणा
 वा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावे स

इहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सह
हंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतो
पखस्स जंवाइयं पढियं परियट्ठियं पुब्बियं अणुपेहियं अणुपालियं तं
दुखस्सकयाएकम्मख्खयाए मोहस्सकयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए
त्तिकट्ठ उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अंतोपखस्स जंनवाइयं नपढियं नप
रियट्ठियं नपुब्बियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवीरिए संतेपुरिस
क्कारपरिक्कमे तस्सआलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो
विसोहेमो अकरणयाए अणुट्टेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्चित्तं पडिव
जामो तस्समिच्चामि दुक्कडं नमो ते सिंखमासमणाणं जेहिं इमं वाइयं दुवाल
संगं गणिपिडगं भगवंतं सम्मंकाएण फासंति पालंति पूरंति तीरंति किट्ठं
ति सम्मंआणाए आराहंति अहंचनाराहेमि तस्समिच्चामि दुक्कडं ॥ सुय
देवया भगवई, नाणावरणीयकम्मसंघायं ॥ ते सिंखवेउसययं, जेसिं
सुयसागरेभत्ती ? इति पाक्षिकसूत्रं समाप्तं ॥

— ॐ४३०३०३० —

॥ अथ अणुपुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥

॥ रात्रिनी पाठली घमियें निद्रा दूर करिने, पंचपरमैष्ठि स्म-
रण करी, गृहचिंता परिहरी, पर्व दिवसथकी प्रथम दिवसें पन्नि-
लेही राख्यां, जे पोसहनां उपगण, ते लेई, पोसहशाखायें थाप-
नाचार्य समीपें, अथवा गुरुनो संयोग हुवे तो गुरुनी पासें आवीं,
जूमि प्रमार्जी एक खमासमण देई, इरियावहि पडिक्कमि पीठें ख-
मासमण देई, ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह मुहपत्ती पन्नि-
लेहुं ? गुरु कहे, पन्निखेहेह. इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती
पन्निखेहे. पीठें उज्जो थई, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०
॥ पोसह संदिस्तानं ? गुरु कहे, संदिस्तावेह, पीठें इच्छं कही, ख-
मासमण देई. इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह गानं ? गुरु कहे

ठाएह, पीठें इहं कही खमासमण देई ज्ञो अई, आधो शरीर नमावी मुखें मुहपत्ती देई, मधुरस्वरें तीन नवकार गुणी कहे. इ-
च्छकार जगवन् पसान करी, पोसह दंरुक उच्चरावो ? गुरु कहे उ-
च्चरावेमो ॥ पीठें करेमि जंते पोसहं ॥ इहांसैं ले के अप्पाणं वो-
सिरामि ॥ तक कहे. अब पोसहका पञ्चखाण लीये, सो लिखते हैं.

॥ अथ पोसहका पञ्चखाण प्रारंभः ॥

॥ करेमि जं ते पोसहं, आहार पोसहं, देसनं सबन वा,
सरीरसकार पोसहं, सबन वंजचेर पोसहं, सबन अवावार पोसहं,
सबन चनविहे पोसहे, सावज्जं जोगं पञ्चखामि, जावदिवसं अहो-
रत्तिं वा पज्जुवासामि, डुविहं ति विहेणं मणेणं वायाए काएणं, न
करेमि न कारवेमि, तस्स जं ते पक्कमामि निंदामि, गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि.

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुज्ञाषण करतो उच्चरे ॥
पीठें एक खमासमणें ॥ इच्छाका ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक
मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे, पमिलेहेह. बीजी खमासमण देई
मुहपत्ती पमिलेहे. पीठें दोय खमासमणें सामायिक संदिस्सानं ?
सामायिक ठानं ? कही, खमासमण देई. अर्धावनतगात्र ज्ञो अको
तीन नवकार, गुनी तीन करेमि जंते उच्चरी दोय खमासमणें वे-
सणो संदिस्सानं ? वेसणो ठानं ? कही, पीठें दोय खमासमणें सि-
धाय संदिस्सानं ? सिधाय करुं ? कही खमासमण देई ज्ञो अको,
आठ नवकारनो सिधाय करे. शीतादि परिसहे दोय खमासमणें,
पांगरणं संदिस्सानं ? पांगरणं पमिग्घानं ? कहे. ए सर्व सामायिक-
विधि पूर्वं कह्यो ठे. तिमहीज करवो, पण इतनो विशेष ठे. पहिलां
इरियावही पक्कमी ठे, तेमाटे इहां सामायिक दंरुक उच्चरयां
पीठें इरियावही नही पक्कमीजें ॥ पीठें चैत्यवंदन, जयवीरशाय,

सूधी करी कुसुमिण दुस्समिण कानुस्सग्ग करे, पीठें पम्भिकमण-
 वेलासीम सिञ्चाय ध्यान करे. पीठें पूर्वोक्त रीतें पम्भिकमण करे,
 पण इतरे विशेष के चारे शुईयें देव वाद्या पीठें खमासमण देई
 कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बहुवेलं संदिस्सानं ? गुरु कहे,
 संदिस्सावेह. पीठें इच्छं कही खमासमण देई कहे. इच्छाका० ॥
 सं० ॥ ज० ॥ बहुवेलं करुं ? गुरु कहे, करेह ॥ पीठें इच्छं कही,
 तीन खमासमणें श्री आचार्यजी मिश्र १, श्रीनपाध्यायजी मिश्र
 २, त्रीजे सर्वसाधु वांदी, कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं इत्यादि नम-
 स्कार जणें, जो पम्भिलेहणवेला नाहिं हुवे, तो सीमंधरस्वामीनुं
 चैत्यवंदनादि करी, सिञ्चाय करे. हवे पम्भिलेहण वेला पम्भिलेहण
 करे. ते विधिपूर्वें आ ग्रंथना ३३ पृष्ठमां लिख्यो ठे तो पण संक्षे-
 पे फेर लखीयें तैयें. दोय खमासमणें, इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०
 ॥ पम्भिलेहण करुं ? कही मुहपत्ती पम्भिलेहें. पीठें दोय खमा-
 समणें अंग पम्भिलेहण संदिस्सानं ? अंग पम्भिलेहण करुं ?
 कहे. पीठें गुरुवचनें इच्छं कही. धोतियो कणदोरो पम्भिलेही
 वस्त्र पहेरी, खमासमण देई, इच्छकार जगवत् ! पसान करी, प-
 म्भिलेहण करावो जी ॥ एम कही, स्थापनाचार्य पम्भिलेही स्थापे,
 अने जो गुर्वादिक स्थापनाचार्य पम्भिलेहे, तो पण खमासमण देई
 उक्त रीतें आग्या मागे. पीठें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं०
 ॥ ज० ॥ उपधि मुहपत्ती पम्भिलेहुं ? गुरु कहे, पम्भिलेहेह.
 पीठें इच्छं कही, मुहपत्ती पम्भिलेही दोय खमासमणे ॥ इच्छाका०
 ॥ सं० ॥ ज० ॥ नही पम्भिलेहण संदिस्सानं ? गुरु कहे, संदिस्सा
 वेह. नही पम्भिलेहण करुं ? गुरु कहे, करेह.

॥ अथ २४ थंडिलां पडिलेहणपाठ लिख्यते ॥

॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १ ॥ आ-

गाढे मध्ये उच्चारें पासवणें अणहियासे ॥ ९ ॥ आगाढे दूरे उच्चारें
 पासवणें अणहियासे ॥ ३ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणें अणहियासे
 ॥ ४ ॥ आगाढे मध्ये पासवणें अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाढे दूरे पा-
 सवणें अणहियासे ॥ ६ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारें पासवणें अहि-
 यासे ॥ ७ ॥ आगाढे मध्ये उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ ८ ॥ आ-
 गाढे दूरे उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ ९ ॥ आगाढे आसन्ने पास-
 वणें अहियासे ॥ १० ॥ आगाढे मध्ये पासवणें अहियासे ॥ ११ ॥
 आगाढे दूरे पासवणें अहियासे ॥ १२ ॥ अणागाढे आसन्ने उ-
 च्चारें पासवणें अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मध्ये उच्चारें पास-
 वणें अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारें पासवणें अणहि-
 यासे ॥ १५ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणें अणहियासे ॥ १६ ॥
 अणागाढे मध्ये पासवणें अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दूरे पास-
 वणें अणहियासे ॥ १८ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारें पासवणें अ-
 हियासे ॥ १९ ॥ अणागाढे मध्ये उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ २०
 ॥ अणागाढे दूरे उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाढे
 आसन्ने पासवणें अहियासे ॥ २२ ॥ अणागाढे मध्ये पासवणें अ-
 हियासे ॥ २३ ॥ अणागाढे दूरे पासवणें अहियासे ॥ २४ ॥ ए
 अंमिलपमिलेहण पाठ कइया ॥

॥ यह चोवीस थंडिलां कहां कहां करनां ? सो लिखते हैं-

॥ ६ अंमिला शय्याके दोनुं तरफ दहिणें पासे ३, वाम
 पासे ३, पमिलेहे ॥ ६ अंमिलां दरवज्जेके ज़ीतर पासे दहिणें ३,
 वामें ३ पमिलेहे ॥ ६ अंमिलां दरवज्जेके बाहर दोनुं पासे पमिलेहे
 ॥ ६ अंमिलां जिहां उच्चार प्रस्त्रवणकी जगा होवे, ते दोनुं तरफ
 पमिलेहे ॥ इति २४ अंमिलां पमिलेहणविधिः संपूर्णः ॥

पीठें इच्छं कही, कंवल वस्त्रादि पमिलेही पोसइ शाला प्र

मार्जी काजो विधिगुं परठवो, एक खमासमण देई इरियावही पम्किमे, इहां आचार दिनकरमें कह्यो ठे. दोय खमासमणें इच्छा का० ॥ सं० ॥ ज० ॥ वसती संदिस्सानं ? वसती पम्किहेहुं ? कही वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जे, इत्यादि पण विधिप्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥

॥ हवे एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिद्धाय संदिस्सानं ? गुरु कहे, संदिस्तावेह. बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिद्धाय करुं ? गुरु कहे करेह. पीठें इच्छं कही नवकार एक कथन पूर्वक उपदेशमाला प्रमुख सिद्धाय करी, नवकार एक कही धर्मध्यान करे, जणें, गुणें, वखाण सुणें, इम करतां पूर्ण पदुर दिन चढ्यां, उग्घाडा पोरिसी अथवा, बहुपम्पिपुन्ना पोरिसी कही, खमासमण देई, इरियावही पम्किमी दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पम्किहेहण करुं ? गुरु वचनें इच्छं कही, मुहपत्ती पम्किहेही पान जोजन पात्र पम्किहेही राखे, पीठें सिद्धाय ध्यान करे ॥

॥ हवे कालवेलायें आवस्सही पूर्वक देहरे जई पांचे शक्र स्तवें देववांदण विधि दो प्रकारसें लिखते हैं ॥

॥ तीन प्रदक्षिणा देई. तीन वार नमस्कार करी, जूमि प्रमार्जी, पुरुष हुवे तो प्रज्जुजीके दक्षिण पार्सें वेसे, स्त्री हुवे तो वाम पार्सें वेसे, पीठें ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ चैत्यवंदन करुं ? इच्छं कही, चैत्यवंदन कहे. पीठें नमोबुणं कहे. खमासमण देई इरियावही पम्किमे. एक लोगस्सनो काउस्सग करे. मुखें लोगस्स कहे. संरासा प्रमार्जी वेसे. तीन तथा चार तथा पांच आदि देई नमस्कार कहे. “जं किंचि नाम तिठं” इत्यादि कही पीठें नमोबुणं कहे. उज्जो अई अरिहंत चेईयाणं करेमि काउस्सगं वंदणवत्ती ॥

अन्नबू० कही, एक नवकारनो कानुस्सग करे. पारी एक थुईकी गाथा कहे ॥ पीठें लोगस्तण सव्वलोए अरि० वंदणव० अन्नबू० कही एक नव० पारी दूरी थुईकी गाथा कहे. पीठें पुस्करवरदी० सुअस्स जगण वंदण० अन्नबू० कही एक नवकार० पारी तीसरो थुईकी गाण पीठें सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अन्नबू० इत्यादि कथन पूर्वक चौथी थुईकी गाथा कह कर, बैठकें नमोबूणं कहे. फेर अरिहंतचेई० कहे. इसी तरे चार थुईये देव वांढी बेसे

नमोबूणं कहे. नमोऽर्हत्तिस्सिद्धाचार्योपाध्याय इत्यादि कही पीठें स्तवन कहे, पीठें जयवीयराय कही. नमोबूणं सव्वे तिविहेण वंदामि पर्यंत कहे ॥ एम पाचे शक्रस्तव देववंदन विधि जाणवों ॥

॥ ए दिधि प्रवचनसारोद्धार प्रमुख ग्रंथमें कह्यो ठे. तथा चैत्यवंदन वृहज्जाप्यमें एम कह्यो ठे ॥ नमस्कार कथने पूर्वक शक्रस्तव कही, इरियावही प्रतिक्रमणादि करें; वली नमस्कार कथनपूर्वक शक्रस्तव कही दोय वार चार थुईसे देव वांढे. फेर शक्रस्तव कही “ जावंति चेइयाइ ” गाथा जणी खमासमण पूर्वक जावंति के० बीजी गाथा कही, स्तवन कहे. वली नमोबूणं कही जयवीयराय कहे ॥ इति देववंदन विधिः ॥

॥ पीठें निस्सही पूर्वक पोसहशाला मांहे आवी, इरियावही पम्पिक्रमे. पीठें सिद्धाय ध्यान करे, जो तिविहार उपवास कियो हुवे, तो पच्चख्खाण वेला पूर्ण हुवां जल पीणेकू पच्चस्काण पारे ॥

॥ हवे पच्चख्खाण पारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पम्पिक्रमे. फिर एक खमासमण ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पच्चख्खाण पारवा मुहपत्ती पम्पिलेहुं ? गुरु कहे, पम्पिलेहेह ॥ पीठें इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पम्पिलेहे. फेर एक खमासमण देई, इच्छाका० ॥ सं० ॥

ज्ञ० ॥ पाणहार अमुक पञ्चख्वाण पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि क
 यवो. पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥
 ज्ञ० पाणहार पारुं ? गुरु कहे, आयारो न मोत्तवो. पीठें तद्वत्ति
 कही, अमुक पञ्चख्वाण चञ्चविहार कर्यो, एम एक नवकार गुणी
 पञ्चख्वाण फासियं, पालियं, सोहियं, तीरियं, किट्टियं, आराहियं,
 जं च न आराहियं, तस्स मिच्चामि उक्कमं, कही ॥ चैत्यवंदन करे.
 क्लृप्तमात्र सिज्जाय करी यथासंज्ञवें अतिशिसंविज्ञाग करी पाणीपीये ॥

॥ तथा उपधानवाही हुवे, तो पोरिसी प्रमुख पञ्चख्वाण
 पारी आहार करे. पीठे आसण बैठो अकोहीज दिवस चरिम्
 पञ्चख्वाणे, पीठें इरियावही पम्किम्मी चैत्यवंदन करे, ए चैत्यवंदन
 आहार संवरण निमित्तें ठे ॥ इति पञ्चख्वाण पारणेका विधि ॥

॥ पीठें जो बहिर्भूमि जावणो हुवे, तो आवस्तही कही
 उपयोणी अको, निर्जीव अंमिले जई; अणुजाणह जस्सुग्गहो कही
 पूर्व, उत्तर, सूर्य, ग्रामादिकने पूंठि अण देई, मलमूत्र परिठवे,
 प्राशुकजलें शुद्ध थई तीन वार वोसिरामि, एहवुं कंहिवे करी मल
 मूत्र वोसिरावी, पोसहशालायें निस्सही पूर्वक पेसी इरियावही प
 म्किम्मे. खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ गमणा
 गमणं आलोयहं ? गुरु कहे, आलोएह. पीठें इठं कही गमणाग
 मण आलोवे ॥ ते इम आवस्तही करी, प्राशुक देशें जई, संका
 सा पूंजी, अंमिलो पम्किलेही, उच्चार प्रश्रवण वोसिरावी, निस्सही
 करी, पोसहशालायें आव्यो ॥ आवंति जंतैहिं जं खंमियं, जं विरा
 हियं, तस्स मिच्चामि उक्कमं, एम कही वेसे. पीठें पम्किलेहण वेला
 सीम सिज्जाय ध्यान करे ॥

॥ हवे पाठवे पहुरे इरियावही पम्किम्मी खमासमण देई
 कहे, इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ पम्किलेहण करुं ? गुरु कहे करेह.

इहं कही दूजे खमासमणे इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसहशाखा
 प्रमार्जु ? गुरु कहे, प्रमार्जह. पीठे इहं कही, मुहपत्ती पमिलेही
 दोय खमासमणे अंग पमिलेहण संदिस्तानं ? अंग पमिलेहण करुं ?
 कहे. पीठे गुरु वचने इहं कही मुहपत्ती पमिलेही दंमासणो पूजणी
 प्रमुखसे प्रमार्जी पोसहशाखा प्रमार्जे, पीठे काजो शुद्ध करी, उद्धरी
 एकांते विखरतो परठवी इरियावही पमिकमी, खमासमण पूर्वक
 कहे ॥ इच्छाकार जगवन् पत्तान करी पमिलेहणी पमिलेहावोजी ॥
 पीठे स्थापनाचार्य पमिलेही स्थापे. गुरुसमीपे अथवा थापनाचार्य
 समीपे एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ती
 पमिलेहुं ? गुरु कहे, पमिलेहेह. पीठे इहं कही खमासमण देई,
 मुहपत्ती पमिलेहे. पीठे दोय खमासमणे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥
 ज० ॥ सिधाय संदिस्तानं ? सिधाय करुं ? उक्त रीते कणमात्र सि
 धाय करी तिथिहार उपवास कीधो हुवे तो गुरु साखें पाणिहार
 पचस्के ॥ उपधानवाही प्रमुख आहार कीधो हुवे, तो वांदणी
 दोय देई, पचस्काण करे. पीठे एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥
 सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंमिलां पमिलेहण संदिस्तानं ? बीजे ख
 मासमणे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंमिलां पमिलेहुं ?
 गुरु वचने इहं कही, दोय खमासमणे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०
 ॥ बेसणो संदिस्तानं बेसणो ठाउं ? कही बेसे. वस्त्र कंबलादि प
 मिलेहे. पूजणी हुवे, तो ते पण मुहपत्तीशुं पमिलेहे. उपवासी तो
 ते तेमाटे सर्व पागे कम्पिटो धोतीयो कणदोरो पमिलेहे, उपधा
 नवाही प्रमुख भोजन कीधो हुवे तो कम्पिट्टादि पमिलेह्यां. पीठे
 वस्त्र कंबलादि पमिलेहे. ए विशेष ठे ॥ पीठे कालवेला सीम
 सिधाय ध्यान करे. पीठे उच्चार प्रश्रवण १४ अंमला पमिलेहे,
 जो चन्द्रदाश हुवे, तो पाखी चनुमामो पमिकमणो करे, संवत्सरीये

संवहरी पन्तिकमणो करे. तिहां देवसी पन्तिकमणो पूर्वे लिख्यो
 ठे, तिमहज करे, पण इतरो विशेष ठे ॥ इच्छा० ॥ देवसियं आलो
 एमि इत्यादि देवसी आलोयां पीठे " ठाणे कमणे चंकमणे " इ
 त्यादि पाठ कहे. खुद्दोवदव काजस्संग कियां पीठे दोय खमासम
 णे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० सिद्धाय संदिस्सांज ? सिद्धाय करुं ?
 कही बैठो थको तीन नवकार प्रमुख सिद्धाय करे ॥ इति ॥

॥ पाक्षिकादि तीन पन्तिकमणविधि आगे एही पुस्तकमें
 लिख गये हैं. वहांसिं जान लेना.

॥ हवे पन्तिकमणो हुवा पीठे साधुको वेयावश्च करी पोरसी
 सीम सिद्धाय ध्यान करे. जो लघुनीति प्रमुख करवी हुवे, आसज्ज
 केहतो थको, जूमि प्रमाजें थमिल स्थानकें जई, देहशंका निचारे
 प्रश्रवण वोंसिरावी, स्वस्थानकें आवे. जगवन् ! बहु पन्निपुत्रा पो
 रसी एम कही खमासमण देई इरियावही पन्तिकमे, पीठे राई
 संथारा विधि करे ॥

॥ हवे राई संथारा विधि कहे छे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ राई संथारा
 मुहपत्ती पन्तिकेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहह. पीठे इच्छा कही, खमास
 मण देई मुहपत्ती पन्तिकेहे. एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥
 ज० ॥ राई संथारो संदिस्सांज ? बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० सं०
 ॥ ज० राई संथारो ठावुं ? पीठे गुरु वचनें इच्छा कही, चउकसाय
 पन्तिकेजुल्लूरण इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक जयवीयराय सूधी
 चैत्यवर्दन करे. जूमि प्रमाजी, संथारो उत्तर पट्टो पाथरे. पीठे
 शरीर प्रमाजी निस्तही निस्तही एम कही संथारे बेसी, तीन
 नवकार तीन करेमि जंते ऊवरी ॥ एमो खमासमणाय, गोंयमा
 ईणं भंहामुणीणं. अणजाणह जिठिज्जा अणजाणह परम गुरु

इत्यादि राइ संथारा गाथा जणी, वाम हाथ सिराणें देई सोवे. निद्रा नावे जां सीम मुनिवर चरित्र चिंतवे, पसवामो फेर तो शरीर संथारो प्रमार्जी फेर, जो देह शंकायें ऊठे, तो पूर्वोक्त विधें देहशंका निवारी, इरियावही पम्किमे ॥ पीठें जघन्यें पण तीन गाथानी सिधाय करी सोवे ॥ इति राइ संथारा विधि कह्यो ॥

॥ हवे रात्रिने पाठिले पदोर ऊगी, नवकारादि गुणी, इरियावही पम्किमे. खमासमण देई कुसुमिण डुस्सुमिण काउस्सग करी, पूर्वोक्त विधें सामायिक लेवे, इहां इरियावही न पम्किमे. पीठें दोयखमासमणें सिधाय संदिस्तावी आठ नवकार गुणी, पम्किमण वेला सीम सिधाय करे. पम्किमण वेला हुवां पम्किमणो पूर्वली परें करे, पण इतरो विशेष ठे, कें राइ आलोयां पीठें संथारा उवळणकी इत्यादि पाठ कहे. एम संपूर्ण पम्किमणो करी पम्किमण वेलायें पूर्वोक्त विधें पम्किमण करी, धर्मशाला पूंजी काजो ऊहरी इरियावही पम्किमे. दोय खमासमणें सिधाय संदिस्तावी, उपदेशमाला प्रमुख सिधाय करे. पीठें पोसह पारे ॥

॥ अथ पोसहपारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई मुहपत्ती पम्किमे. फेर खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि कायबो. पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ जसंवंधी सह पारयुं ? गुरु कहे, आयारो न मो-
हु ॥ पीठें नहकिया, पीठें दोसमण देई अर्धावनत गात्रें उजो
अंवाः तीनके पम्किमण देई, मुहपत्ती पम्किमे, पीठें
समण देई पम्किमे. यदा० ॥ सं० ॥ ज० सामायिक पारुं ?
ये ॥ कहे पुणो यथाशक्ति कही, खमासमण देई
इच्छाका० ॥ सामायिक पारयुं ? गुरु कहे आ-

घारो न मोत्तव्वो. पीठें तहत्ति कही खमासमण देई अर्धावनत्त
 गात्रें उन्नो थको दाध जोड्या- मुद्दपत्ती मुखें दियां थकां तीन न
 वकार गुणी संभासा पमिलेदे. गोमालीयें बेसी मस्तक नमावी,
 “ जयवं दसन्नजहो ” इत्यादि ज्ञावनारूप गाथा कहे. पीठें पोस-
 हना उपगरण संवरी, देहरे जई देव जुहारे. घरे आवी आहार
 निष्पन्न हुवो देखी साधु समीपें आवे, अतिथि संविज्ञागत्रत सा-
 चवण निमित्तें साधु जणी निमंत्रणा करी, घरे ले जावे, साधु प
 ण शुद्ध आहार लेई, स्वस्थानकें आवे, तिवार पीठें साधुनें जे आ-
 हार दीधो, तेहनोहीज शेष आहार आप करे ॥ इति आठ पुहरी
 पोसह ग्रहण पारण विधिः ॥

॥ हवे दिन ऊग्या पीठें पोसह ले, तेहनो विधि कहे छे ॥

॥ घरथकी निश्चित अई धर्मस्थानकें आवी, सर्व उपगरण
 पमिलेही, कचरो विधिगुं परठवी इरियावही पम्किमे. खमास-
 मण पूर्वक आग्या मागी, पोसह मुद्दपत्ती पमिलेदे, आगे पोसह
 ग्रहणका विधि पूर्वे लिखा है. तिमहिज जाणवो. पण दिवस पो-
 सहहीज करणो हुवे, तो पोसह दंमक उच्चस्तां जावदिवसं पञ्जु-
 वासामि, एहवो पाठ कहे. अने जो अठपुहरी करवो हुवे, तो जाव
 अहोरत्ति पञ्जुवासामि एहवो पाठ कहे. पीठें आमाधिक विधि सर्व
 करी चैत्यवंदन कुसुमिण्डुस्तमिण कासिमणे करी पम्किमणे
 करी दोय खमासमणें बहुवेळें संदिस्सावे ३, ३ रने जो पञ्चगुण
 मिकमणो गुरु साथें करयो हुवे, तो अन पूर्वक जे खायर पमिलेही
 राख्यां जे वस्त्र, ते पहेरी पोसह सारो उत्तर पट्टो पमिलेही
 खमासमणें बहुवेळें संदिस्सावे ३, ३ कही संथारे विधि करी दोय
 मणो करयो हुवे, तो गुरुपासें आवेणमो खमासमणा जूदो पम्कि-
 करी, आलोण खामणादि निमित्तें ज्ञा अणुजाणइयेक सर्व विधि
 पमिलेही वे वांछणां

देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ राइयं आलोर्ज ? गुरु कहे, आ-
 लोएह. पीठें राई आलोवे, फेर एक खमासमण देई ॥ इच्छाका०
 ॥ सं० ज० ॥ अष्टुब्जिनि अग्रिंतर, राइयं खामेमि ? गुरु कहे
 खामेह. पीठें सब पाठ कहे, राई खामे, पहिलां पम्किमणामें न-
 वकारसी पञ्चख्यो ओ तेमाटे पीठें गुरु साखें पञ्चस्काण उपवासनो
 करे. पीठें दोय खमासमणें बहुवेळें संदिस्तावे ॥ ए तीन प्रका-
 रका विकल्प जाणनां. हवे पम्किलेहण तो पूर्वे करी ठे, तो पण
 आदेश मागवो, ते एम खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०
 ॥ पम्किलेहण संदिस्ताजं ? बीजे खमासमणें पम्किलेहण करूं ?
 कही मुहपत्ती पम्किलेहे. पीठें इमहीज दोय खमासमणें अंग पम्कि-
 लेहण संदिस्तावी मुहपत्ती पम्किलेहे. पीठें वली खमासमण देई
 इच्छाकार जगवन् ! पसान करी पम्किलेहण पम्किलेहावो जी. एम
 कहे, पीठें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उ
 पधि मुहपत्ति पम्किलेहुं ? कही कोई वस्त्र अणपम्किलेह्यो राख्यो
 हुंवे, तो पम्किलेहे. नही तो वली आसण पम्किलेहे. दोय खमास
 मणें सिध्दाय संदिस्तावी उपदेशमाला प्रमुख सिध्दाय करे. आगें
 सर्व क्रिया पूर्वे अठ पुहरी पोसहमें लिखी है. तिमहीज जाणवी,
 पण इरां अठ पुहरी पोसह तो पाठली रातें वली सामायिक न
 लेवे. जिणें, अस संबंधी चउ पुहरी पोसह लोधो हुवे, ते पाठले
 पुहर पञ्चस्काण क्रिया, पीठें दोय खमासमणें उही पम्किलेहण सं-
 दिस्ताजं ? उह पम्किलेहण करूं ? कहे, पण अंमिला पद न कहे.
 कणने अंमिला नही पम्किलेहे. यह निःकेवल दिन संबंधी पोसह अ-
 ण करणेमें दिग्गुण विधिही, सो बताई ॥ इति दिनसंबंधी पोसह
 संदिहणविधिः ॥

॥ अथ रात्रि संबंधि चउपुहरी पोसहनो विधि कहे हैं ॥

॥ तिहां जिले प्रथम चउ पुहरी दिवस पोसो ऊच्चरघो है.
 पीठें संध्यानी पन्निहण करतां रात्रि पोसहनो जाव थयो, तो
 पञ्चस्काण कियां पीठें दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पन्निहणी
 तीन नवकार गुणी तीन वार पोसह दंरुक ऊच्चरे. तिहां जाव
 रत्ति पञ्जुवासामि एम पाठ ऊच्चरे, पीठें सामायिक विधि पूर्व
 लिख्यो तिम करे पण सामायिक ऊच्चरयां पीठें दोय खमासमणें
 सिधाय संदिस्तावी आठ नवकार कही बेसणो संदिस्तावी, पांग
 रणो संदिस्तावी, पीठें दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥
 ज० ॥ उही थंमिलां पन्निहण संदिस्ताउं उही थंमिलां पन्निह
 ण कहुं? गुरु कहे, करेह. इच्छं कही उपधि पन्निहहे. आगें सर्व
 क्रिया पूर्व लिखी तिम जाणवी. तथा जे आवक उपवासी तो
 व्यग्रपणें दिवसें पोसह न करी शक्यो, ते रात्रि पोसहनो जाव
 थये, पाठले पहर धर्मस्थानकें आवे. जो वसती प्रमार्जी हुवे, तो
 सरथो, नही तो वसती प्रमार्जी, काजो परिठवी सर्व उपगरण
 पन्निहणी इरियावही पन्निहमे. पीठें चउविहार पञ्चस्काण करी
 दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पन्निहणी दोय खमासमण देई
 पोसह संदिस्तावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, ती
 वार पोसह दंरुक ऊच्चरे. तिहां दिवसेसरत्ति पञ्जुवासामि कहे.
 थ्या हुवे, तो रत्ति पञ्जुवासामि कहे. पीठें बिहुं खमासमणें
 यिक मुहपत्ती पन्निहहे. दोय खमासमण देई, पांगरणो संदिस्तावे.
 फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, ती वार पोसह दंरुक
 ऊच्चरे. दोय खमासमण देई सिधाय संदिस्तावी विधि करी दोय
 कहे. फेर दो खमासमण देई, बेसणो संदिस्तावी जूदो पन्निह
 खमासमण देई, पांगरणो संदिस्तावे. पीठें बे खमासमणें सर्व विधि

पमिलेइए संदिस्तावी, मुहपत्ती पमिलेहे. फेर धे खमासमण वेई, सेंही थंमिलां पमिलेइए संदिस्तावी जो अणपडिलेहो उपगरण हुवे तो पमिलेहे. जो सर्व उपगरण पमिलेह्यां हुवे, तो एण आ नक शून्यता टालवा जणी वली आसण पडिलेही, पडिकमण वे ला सांम सिधाय ध्यान करे. पीठें उच्चार प्रश्रवणना २४ थंडिला पडिलेही पडिकमणो करे. तथा पाळलो रातें वली सामायिक न लेवे. इतना निकेवल रात्रिसंबंधि पोसह लेवाना विकल्प जाणवा ॥ इति रात्रि पोसहविधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ ठाणेक्रमणे चंकमणे लिख्यते ॥

॥ ठाणेक्रमणे चंकमणे आउत्ते अणाउत्ते ॥ हरिअकायसंधेटे बीयकायसंधेटे आवरकायसंधेटे वप्पइयासंधेटे सबस्सवि देवसिअ, डुच्चितिय डुप्पासिय डुच्चिठिय ॥ इच्छाकारेण संदिस्सह, इच्चं तस्स मिच्छा मि डुक्कमं ॥ १ ॥ संथाराउवटणकी, आउटणकी, परिअट्टण की, पसारणकी, वप्पइयासंधट्टणकी, अच्चसुकुविसयकायकी, सबस्स विराइअ, डुच्चितिय, डुप्पासिय, डुच्चिठिय, इच्छाकारेण संदिस्सह, इच्चं तस्स मिच्छा मि डुक्कमं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ देववांदणमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥
 लवे. जिणे ॥ तत्र प्रथम बीजकी स्तुति ॥
 पुहर पच्चस्काए पुत्तसोवन्नदेहं, जणाणांदणं केवलज्जाणगेहं ॥
 दिस्साणं ? उदरं बुद्धिरायं, सुसेवामि सीमंभरं तिज्जरायं ॥ १ ॥
 जाने थंमिला नदुत्ताण जाया, जवस्संति ते सब ज्ञवाण ताया
 य, एण करणेमें दिनेर निज्जा वट्टमाणा, सुहं दितु ते मे तिलोयप्पहा-
 तिइएविधिः ॥ ॥ तार कुवार पोयं, कलंका वली पंकपरका

तोयं ॥ मणोवन्धियठे सुमंदारकप्पं, जिणंदागमं वंदिमो सुमहप्पं
॥ ३ ॥ विकोसे जिणंदाणणंजो जलीणा, कलारूव लावस सोदग्ग
पीणा ॥ वहं तस्स चित्तंमि णिच्चं पि जाणं, सिरी जारई देहि मे
सुद्धाणं ॥ ४ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति ॥ १ ॥

॥ अथ पंचमी स्तुतिः ॥

॥ पंचानंतकसुप्रपंचपरमानंदप्रदानकर्म, पंचानुत्तरसीमदिव्य
पदबीवश्याय मन्त्रोत्तमम् ॥ येन प्रोज्ज्वलपंचमीवरतपो व्याहारि
तत्कारिणां, श्रीपंचाननलांबनः स तनुतां श्रीवर्द्धमानः श्रियम्
॥ १ ॥ ये पंचाश्वरोधसाधनपराः पंचप्रमादीहराः, पंचाणुव्रतपंच
सुव्रतविधिप्रज्ञापनासादराः ॥ कृत्वा पंचरुषीकनिर्जयमथो प्राप्ता
गतिं पंचमीं, तेऽमी संतु सुपंचमीव्रतजृतां तीर्थकराः शंकराः ॥ २ ॥
पंचाचारधुरीणपंचमगणाधेशेन संसूत्रितं, पंचज्ञानविचारसारकलितं
पंचेषुपंचत्वदम् ॥ दीपाजं गुरुपंचमारतिमिरेष्वेकादशी रोहिणी,
पंचम्यादिफलप्रकाशनपटुं ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥ पंचानां
परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरुश्रियां, जक्तानां जविनां गृहेषु ब-
हुशो या पंचदिव्यं व्यधात् ॥ प्रहो पंचजने मनोमतकृतौ स्वारत्न
पञ्चालिका, पंचम्यादितपोवतां जवतु सा सिद्धायिका त्रायिक
॥ ४ ॥ इति श्रीज्ञानपंचमीस्तुतिः ॥

॥ अथ अष्टमीस्तुतिः ॥

॥ चणवीसे जिनवर, प्रणमं हुं नितमेव ॥ आलो पण्डितं गुरु
चंद्रप्रज्जुनी सेव ॥ मूरति मन मोहे, जाणे पूनि ॥ पण्डितं पण्डितं
डःख जाये, पामे परमानंद ॥ १ ॥ मिलि चोस, पण्डितं पण्डितं
जीना पाय ॥ इंद्राणी अपहर, कर जोडी साव ॥ पण्डितं पण्डितं
दीपे मिलि सुरवरनी कोड ॥ अठाइ मन्त्रेस्साव ॥ पण्डितं पण्डितं
॥ २ ॥ शेत्रंजा शिखरे जाणी जाय अ बे ख ॥ पण्डितं पण्डितं
पण्डितं पण्डितं

गणधर मुनि परिवार ॥ नविषणने तारे, देई धरम उपदेश ॥ दूध
साकरथी पण, वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसो पडिकमणुं, क
रिये व्रत पञ्चस्काण ॥ आठम तप करतां, आठ करमनी हाण ॥
आठ मंगल थाये, दिन दिन कोडि कड्याण ॥ जिनसूखसूरि कहे,
इम जीवत जनम प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति ॥

॥ अथ मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं, तथा मल्लैर्जन्म
व्रतमपमलं केवलमलं ॥ बलकैकादश्यां सहसि लसद्ब्रह्ममहसि,
क्षितौ कड्याणानां हपति विषदः पंचकमदः ॥ १ ॥ सुपर्वेद्रथेणया
गमनगमनैर्नूनिवलयं, सदा स्वर्गत्येवाहमहमिकया यत्र सलयं ॥
जिनानामप्यापुः क्षणमतिमुखं नारकसदः, क्षितौ ॥ २ ॥ जिना
एवं यानि प्रणिजगदुरात्मीयसमये, फलं यत्कर्तुणामिति च विदि
तं शुद्धसमये ॥ अनिष्टारिष्टानां क्षितिरनुजवेयुर्बहुमुदः, क्षि ॥ ३ ॥
सुराः सेंद्राः सर्वे सकलजिनचंद्रप्रमुदिता, स्तथा च ज्योतिष्कास्त्रि
लज्जवननाथाः समुदिताः ॥ तपो यत्कर्तुणां विदधति सुखं विस्मि
तहृदः, क्षितौ ॥ ४ ॥ इति मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तुति ॥ हरिगीत च्छंद ॥

॥ डेंडेंकि धपमप, धुधुमि धौधौ, धसकिधर, धपधोरवं ॥
॥ दों द्वागिदि द्वागिदिकि, द्रमकि द्रण रण, द्रेणवं ॥
॥ निजकि निजजन, रंजनं ॥ सुर
॥ पुढर पचस्काण, एतु सुखदं, पार्श्वजिनपतिमज्जनं ॥ १ ॥ कटरेगिदि
॥ दिस्साजं ? उह ॥ गेगुरुदां धुधुकि धुटनट, पाटवं ॥ गुणगुणण गुणगू,
॥ पुणने थंमिजा नदं ॥ गुणगुणगण, गौरवं ॥ ऊजि ऊंकि ऊंऊं, ऊणगुण
॥ ल, ए करणेमे दिजे ॥ निजजन, सज्जना ॥ कलयंति कमला, क करो
॥ महेजिनाः ॥ २ ॥ ठकि ठेंकि ठेंठें, ठं
॥ विदणविधिः ॥

ह्रिक, ठह्रिपट्टा, ताड्यते ॥ तललौकि लौलौ, त्रैषि त्रैषिनि, मैषिमैषि
नि, वाद्यते ॥ ॐ ॐ कि ॐ ॐ, भुंगि भुंगिनि, धोंगिधोंगिनि, कल
रवे ॥ जिनमतमनंतं, महिम तनुतां, नमति सुरनर, मुञ्चवे ॥ ३॥
धुंदांकि धुंदां, पुषुद्दि धुंदां पुषुद्दि दोंदों, अंधरे ॥ चाचपट चचपट,
रणकि ऐंऐं रुणण मँमँ, मँवरे ॥ तिहां सरगमपधुनि, निधपमगरस,
सस ससस सुर, सेवता ॥ जिननाट्यरंगे, कुशलमुनि शं, दिशतु
शासन, देवता ॥ ४ ॥ इति श्रीजिनकुशलसूरिजीकृत पार्श्वजिन० ॥

॥ अथ आंबिलकी स्तुति ॥

॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी
जी, करुणासागर निजगुण आगर शुभ्र समता रस धामी जी ॥
श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रंगें जी, ते मानव
श्रीपालतणी परें पामे सुख सुर संगेंजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज
पाठक, साधु महा गुणवंता जी ॥ दरिसण नाण चरण तप उत्तम,
नवपद जग जयवंता जी ॥ एहनं ध्यान धरंतां लहिषें, अविचल
पद अविनाशी जी, ते सघला जिननायक नमियें, जिएँ ए नीति
प्रकाशी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनोहर तिम बलि, चैत्रक माग
जगीशें जी ॥ भजवाली सातमथी करियें, नव आंबिल नव दिवस
जी ॥ तेर सहस बलि गुणियें गुणणुं, नवपद केरो स जी ॥
इण परि निर्मल तप आदरियें, आगम साख न पावे पन्तिकमैल
विमल कमलदललोयण सुंदर, श्रीचक्रसरि देखें, जो पण्डित
द्वक भविजन केरां, विघ्न हरो सुर सेवी ज, जेव जाइ पण्डित
हुक सदगुरु, श्रीजिनभक्ति मुनिंदा जी ॥ इति पन्तिकेही
जीनणे, श्रीजिनलाज सूरिंदा जी ॥ ४ ॥ इति विधि करी दोय

दीपे ॥ अथ पजूसणकी स्तुति ॥ जूदो पन्तिक-
॥ २ ॥ ॥ बलि बलि हुं ध्यावुं गाउं जिनवर नायेक सर्व विधि
मलेही वै वांछणां

सण, दारुण्यां धरमनी शीर ॥ आषाढ चौमासैं हूँती दिन पंचास,
 षट्कमण संवहरी करियें त्रण उपवास ॥ १ ॥ चन्नवीशे जिनवर
 पूजा सत्तर प्रकार, करियें जलें जावें जरियें पुण्य जंमार ॥ बलि
 चैत्य प्रवार्ते किरतां लाज अनंत, इम परव पजूसण सहुमें महि
 मावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वांचनायें वंचाय, श्रीकल्प
 सूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय ॥ प्रतिदिन परजावना धूप अगर
 उस्केव, इम जवियण प्राणी परव पजूसण सेव ॥ ३ ॥ बलि सा
 हम्मीवञ्चल करियें वारंवार, केइ जावना जावे केइ तपसी शी-
 लधार ॥ अरुदीह पजूसण एम सेवत आणंद, सुयदेवी सांनिध
 कहे जिनलाज सूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीपर्यूषणप० ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी स्तुति ॥

॥ सुर असुर वंदिय पाय पंकज मयणमल्लअक्षोजितं, घन
 सघनश्याम शरीर सुंदर शंख लंघन शोजितं ॥ शिवादेवि नंदन
 त्रिजग वंदन जविक कमल दिनेश्वरं, गिरनार गिरिवर शिखर
 वंदूं नेमिनाथ जिने ॥ सुहम ॥ १ ॥ अष्टापदै श्रीआदिजिनवर
 वीर जिन पावापुरि, चिरइंदसमुज्ज्वल ॥ पुरिय सीधा नेम रेवय
 गिरिवरे ॥ समेत शिखरें वंछणया ॥ सुगति पहुता मुनिवरू,
 ॥ ४ ॥ जावर तेह वंदूं सधजतिपद सुखकरू ॥ १ ॥ इग्यार
 दश पयन्ना जाणियें, ठ छेद ग्रंथ प्रसन्न अन्ना
 लवे, जिणे जाणियें ॥ अनुयोग चार उदार नंदीसूत्र जिन
 पुहर पञ्चस्काण्ड एह वृत्ति चूर्णी जाण्य पैतालीश आगम ध्याइयें
 दिस्तानं ? उद्दीप्ति सैं बालक दोय जेहने सदा जवियण सुखकरू,
 अने थंमिला जेहने सुंदर डुरिय दोहग अपहरू ॥ गिरनार मंरुण
 हण करसेमें दिजे ॥ रणपंकज सेवियें, श्रीसंघ सहुनें सदा मंगल करो
 ॥ इति गिरनारमंरुण श्रीनेमि० ॥
 अदणविधिः ॥

॥ अथ दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ पाषायां पुरि चारुपष्ठतपसा पर्थकपर्यासनः, द्दमापालप्र
 जुहस्तपालविपुलश्रीगुह्मशालामनु ॥ गोसे कार्तिकदर्शनामकरणे
 तूर्यारकांते शुभे, स्वातौ यः शिवमाप पापरहितं संस्तौमि वीरप्र
 जुम् ॥ १ ॥ यज्ञर्जागमनोब्रव व्रतवरज्ञानाकरासिद्धिणे, संज्यूयाशु
 सुपर्वसंततिरहो चक्रे महस्तत् कणात् ॥ श्रीमल्लाजिज्जवादिवीरच
 रमास्ते श्रीजिनाधीश्वराः, संघायानघचेतसे विदधतां श्रेयांत्यने
 नांसि च ॥ २ ॥ अर्थात्पर्वमिदं जगाद जिनपः श्रीवर्द्धमानाजिव,
 द्दतत्पश्चाज्जणनायका विरचसांचक्रुस्तरां सृजतः ॥ श्रीमत्तीर्थसमर्थनै
 कसमये सम्यग्दृशां जूरुष्टां, ज्यूयाज्जावुककारकप्रवचनं चेतश्चम
 त्कारि यत् ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थज्ञावनपरा सिद्धायिका देव
 ता, चंचच्चक्रधरा सुरासुरनता पायादपायादसौ ॥ अर्हन् श्रीजिन
 चण्डीस्सुमतिनो ज्ञव्यात्मनः प्राणिनो, या चक्रेऽवमकष्टहस्तिनिधने
 शार्दूलविक्रीरितम् ॥ ४ ॥ इति दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ अथ शुद्धमनोहर निम्न ॥

॥ अथ वीसतिमयी कलिं स्तुति ॥

पंचविदेहविषे विहरंतां गुणसं जिनेसर जगज्जय स जी ॥
 कमल तसु नामूं सीस । अहनि स समरूं ते जगदी ॥
 च मेरुपाले ऊलकंता । सोहे वीस महा गजदंता ॥
 जिनहर वीस । ते जिनवर प्रणमूं निसदीस ॥ १ ॥
 कुबालस अंग । ध्यानक वीस ज्ञेया तिहां चंग ॥
 शोणे रंग । ते नर पामे सुख अजंग ॥ २ ॥
 वदीस । पूरे मुज मनतणी जगीस ॥ संघतणा ॥
 ॥ अथ ॥ जग नंति य मने ॥ ५ ॥

॥ पार्श्वजिन स्तुतिः ॥

समदमोत्तमवस्तुमहापणं । सकलकेवलनिर्मलसद्गुणं ॥ न
 गरजेसलमेरविभ्रूषणं । नजति पार्श्वजिनं गतदूषणं ॥ १ ॥ सुरनरे
 श्वरनम्रपदांबुजाः । स्मरमहीरुहजंगमतंगजाः ॥ सकलतीर्थिकराः सुख
 कारका । इह जयंतु जगज्जानतारकाः ॥ २ ॥ श्रयतिथः सुकृती जि
 नशासनं । विपुलमंगलकेलिविज्ञासनं ॥ प्रबलपुन्यरमोदयधारिका ।
 फलति तस्य मनोरघमालिका ॥ ३ ॥ विकटसंकटकोटिविनाशिनी ।
 जिनमताश्रितसौख्यविकाशिनी ॥ नरनरेश्वरकिन्नरसेविता । जयतु
 सा जिनसासणदेवता ॥ ४ ॥

॥ अथ ऋषभदेवस्तुति प्रतिपदाकी ॥

॥ वरमुत्तियहारसुतारगणं । वरचित्तकलत्तसुपत्तधणं ॥ पंकय
 ठप्पयदेवगणं । सिरिअवुय वंदूं आदिजिणं ॥ १ ॥ तियलोयनमंसि
 यपायजुआ घणमोहमहीरुहमत्तगया ॥ परिपालिअनिच्चलजीवदया ।
 मम हुंति जिनागमसुक्कसया ॥ २ ॥ पणयंगिमहातमरोरहरं । क
 ज्जाणपयोरुहवुद्धिकरं ॥ सुहमग्गकुमग्गपयासकरं । पणमामि जि
 नागममन्धिकरं ॥ ३ ॥ सिरिइंदसमुज्जलगायलया । सुहजाणविणम्मि
 यएगलया ॥ असुरिंदसुरेंदसुरप्पणया । मम आणि सुहाणि कुणेसुस
 णा ॥ ४ ॥ ॥ ति ऋषभदेवस्तुतिप्रतिपदाकी ॥

प्रथ आदिजिन प्रतिपदा स्तुति ॥

॥ प्रथम पुरुषपरमेश्वर, परमात्मपद धारीजी । प्रथम
 जिनेसर प्रथमेश्वर, प्रथम परम उपगारी जी ॥ योगीसर जिन
 राज जगतगुरु, सहजानंद स्वरूपोजी । ऋषभजिनेसर लोकदिने
 सर, आत्मसंपद नूपोजी ॥ १ ॥ पांच जगत वलि पांचे एरवत,
 मंच विदेह भूजरोजी । काल अतीत अनंता जिनवर, पाम्या सिव
 रद सारोजी ॥ वलिय अनागत काल अनंता, आस्थे इणही प्रका

रौजी । संप्रति काले वीस विदेहे, वंडु बहु सुखकारोजी ॥ १ ॥
 अरथे श्रीजिनराज वखाएया, गूण्यां श्रोगणधारोजी । अंग डुवालस
 अतिसे उत्तम, अरथ विविध विस्तारोजी ॥ गुण परजय नय जंग
 प्रमाणे, जिहां षट्पद्य विचारोजी । ते आगम मन श्रुद्ध आराध्यां
 तूटे कर्मविकारोजी ॥ ३ ॥ सुंदर रूप अनूपम सोहे, श्री चक्केसरि
 वीजी । श्रीजिनसासन सानिध करणी द्यो, वंढित नित सेवीज
 ॥ कल्याण कारण जेहनी सेवा, संघ सकल सुख कंदाजी । श्रीजि
 नचंद मुणेंद पसाये, कहे जिनहर्ष सुरिंदाजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितनाथ स्तुति ॥

विश्वनायक लायक जितशत्रु विजया नंद । पयजुग नित प्र
 णमे देव अने देविंद ॥ जवलहरी गहरी सब मन धरी अमंद ।
 श्रीमूरतसहिरे वंदो अजितजिनंद ॥ १ ॥ आठ प्रातीहारज अति
 शय बलि चोतीस । दिलरंजन देसन तेहना गुणपेंतोस ॥ अगणि
 त रुद्धिधारी आचारीमां ईस । एह गुणना धारक बंडु जिन चोवी
 स ॥ २ ॥ सुद्ध अरथ अनोपम जिन ज्ञापित सिद्धांत । स्पाद्वादन
 यादिक हेतुगुक्ति नवि ज्ञांत ॥ पापकरदमपाणी सदगतिनी सह
 नाणी । सुणिये, नित, त्रिविका आगमकेरी वाणी ॥ ३ ॥ सासणनी
 साची देवी सानिधकारी । डुःखकष्टनिवारण सेवीजे सुखकारी ॥
 साचे मन समरे ते सुख लाज अपारी । जिनलाज पयंपे होज्यो
 जयशकारी ॥ ४ ॥ इति अजितनाथस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुति अणोज्ञारी ॥

॥ यदंद्दिनमतादेव । देहिनः संति सुस्थिताः ॥ तस्मै नमोस्तु
 वीराय ॥ सर्वविघ्नविधातिने ॥ १ ॥ सुरपतिनतचरणयुगान् । नान्ने
 यजिनादिजिनपति ॥ नौमि यच्चनपालनपरा । जलांजलिंददतु डुःखें
 ॥ २ ॥ वदंति वृंदाकृष्णायतो जिनाः । सदर्थं । यच्चयंति

सूत्रतः ॥ गणाधिपास्तीर्थसमर्थनक्षणे । तदंगिनामस्तुमतंनुमुक्तये ॥
३ ॥ शक्रः सुरासुरवरैस्सहदेवताभिः । सर्वज्ञशासनसुखायसमुद्यता
भिः ॥ श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान् । ज्ञय्यान् जनान्नयसु नित्य
ममङ्गलेज्यः ॥ ४ ॥ इति महावीरस्तुति अणोजारी ॥

॥ अथ लघ्वी स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ वीरं देवं नित्यं वंदे ? जैनाः पादा युष्मान् पांतु १ जैनं
वाक्यं नूयाद्भूत्यै ३ सिद्धा देवी दद्यात्सौख्यं ॥ ४ ॥ इति लघ्वी
स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ अथ श्री वीरजिन स्तुतिः ॥

॥ मूर्ति मनमोहन कंचन कोमल काय, सिद्धारथ नंदन
त्रिसलादेवी सुमाय ॥ मृगनायक लंठन सात हाथ तनु मान, दि
न १ सुखदायक स्वामि श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वं
दित पद अरविंद, कामित जरपूरण अजिनव सुरतरुकंद ॥ जवि
यणने तारे प्रवहणसम निसदीस, चोवीसे जिनवर प्रणमं विसवा
वीस ॥ २ ॥ अरण्ये करि आगम ज्ञाख्या श्रीजगवंत, गणधर ते
गूंख्या गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पिण महिमा कह न सके
एकांत, समरुं सुखदायक मन सुध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ सिद्धायि
का देवी वारे विघन विशेष, सहू संकट चूरे पूरे आस अशेष ॥
अहनिस्सि कर जोम्नी सेवे सुरनर इंद, जंपे गुणगण इम श्रीजिन
लाज सूरिंद ॥ ४ ॥ इति वीरजिन स्तुति ॥

॥ अथ श्रीचतुर्विंशति जिनानां पंचकल्याणक स्तुतिः ॥

॥ नात्रेयं संज्ञवं तं, अजितसुविदयं, नंदणं सुवयवा ॥ सु
प्पासं पञ्चमनाहं, सुविघशसिपहुं, सीयलं वासुपूज्यं ॥ श्रेयांसं ध
र्मशक्तिं, विमलअरिजिनं, मल्लिकुंथुं अणंतं, नेमिं पासं च वीरं,
नमिं विनमिसौ, पंच कल्याण एसु ॥ १ ॥ गच्छेद्द्वारेषु जन्मे,

धय गहणखणे, केवले लोयकाले, पन्नाशिवाणठाणे, पगवण समए,
 संशुआ जावसारं ॥ देवेहिं दाणवेहिं, जवणवणसए, वितरे किंन
 रेहिं, । तं मझं दिंतु मोरुं, सयलजिनवरा, पंच कट्ठाण एसु ॥२॥ हेजं
 तित्थंकराणं, जमिहअणुवमं, जावतित्थंकरंतं । सवन्नूणं च पासा,
 अहमविनियमा, जायए सवकालं ॥ अन्नपत्तिएहिं, नियगममहणं,
 वीयअंकूरूवं । अवावाहं जिणाणं, जयउ पवयणं, पंच कट्ठाण एसु
 ॥३॥ गोरीगंधारकाली, नरवरमहिषी, हंससंगोरिहवा । सवठामाणमं
 वा, वरकमलकरा, रोहिणीउत्तअंवा ॥ पन्नत्ती उत्तपन्नमा, धणइसर
 णई, खित्तेगेहाइवासा । संतिं संघे कुणंतु, गहगणसईया, पंच क
 ट्ठाण एसु ॥४॥ इतिश्रीचतुर्विंशतिजिनानांपंचकट्याणकस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुतिः ॥

॥ श्रीसेत्रुंजमंरुण आदिदेव । हूं अहनिस समरुं तास सेव
 ॥ रायणतल पगलां प्रज्जुतणा । पूजि सफल फल सोहामणा ॥१॥
 तेवीस तीर्थंकर समवसरया । विमलाचल ऊपर गुण जस्या ॥ गिरि
 कमणे आया नेमनाथ । ते जिनवर मेळो सुगतिसाथ ॥२॥ सोहम
 सांमी उपदिस्या । जंबुगणधरने मन वस्या ॥ पुंरुरगिरि महिमा
 जे मांहा । ते आगम समरुं मनउवाह ॥ ३ ॥ चक्केसरि गोमुख क
 वरुयद्ध । मन वंठित पूरण कट्ठपट्ठ ॥ सिद्धक्षेत्रसिहरे सहदेव
 ता । जणे नंदिसूरि तुम पाय सेवता ॥३॥ इतिश्रीशत्रुंजयस्तुति ॥

॥ अथ नेमजिन स्तुतिः ॥

॥ गिरनार सिखरपर नेमनाथ सुपहाण । दीक्षा वर केवल
 ज्ञान अने निरवाण ॥ जसु तीन कट्याणक सुखकर सुरतरुकंद । तसु
 जवियण प्रणामो पाययुगलअरविंद ॥ १ ॥ अठावय चंपा पावापुर
 शुभ ठाण । आसन वारम जिण चउवीसम जिणजाण ॥ अजिता
 दिनु वीत्ते पद्मस, सिवपुर वास । समेतशिखरपर प्रणमं अवि

उच्छ्वास ॥ १ ॥ जिणवर मुख हूँती सुणि त्रिपदी ततकाल । ग
णधारक गूण्या द्वादश अंग विशाल ॥ नयजंग पदारथ सत्तश
नव तत्त । जवियणने तारे सायर जिम बोहित्थ ॥ ३ ॥ चक्केस
रि अंवा पनुमादेवि प्रत्यक् । श्रीसंघ मनोरथ पूरे वासुरवृक् ॥ ध्या
वे सुख पावे श्रीजिनलान्न सूरिस । जिनवर सुप्रसादे आस फले
सुजगीस ॥ ४ ॥ इति नेमजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीशीतलजिन स्तुतिः ॥

॥ सुख समकितदायक कामित सुरतरुकंद । दृढरथ नृप रां
णी नंदाकेरो नंद ॥ जद्विजपुर स्वामी फेरे जवना फंद । चित चो
खे नमिये श्रीशीतलजिनचंद ॥ १ ॥ अतीत अनागत हुआ होस्ये अ
नंत । संप्रति काले जे क्षेत्र विदेह विचरंत ॥ त्रिहुं जवणे ठवणा
सासय असासय हुंत । ते सगला त्रिकरण प्रणमुं श्रीअरिहंत ॥ २
॥ कालिक उत्कालिक अंग अनंग पविठ । नयजंग निरक्केपा स्या
द्वाद मितसिद्ध ॥ जविजन उपगारी जारी जिन उपदेश । श्रुत
अवणे सुणतां नासे कौमि कलेश ॥ ३ ॥ ब्रह्मजक् असोका सा
सन सुरि सुविचार । संघ सानिधकारी निरमल समकित धार ॥
चिंता डख चूरे पूरे मनह जगीस । ध्यान तेहनो धरिये कहे जिन
लान्नसूरिस ॥ ४ ॥ इति श्रीशीतलजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ समवसरणविचारगर्भित स्तुतिः ॥

॥ मिल चोविह सुरवर विरचे त्रिगुणो सार । अढी गान्
जुंचो पिहुलो जोगण पार ॥ विच कनकसिंहासन पदमासन सुख
कार । श्रीतीरथनायक बैसै चोमुखधार ॥ १ ॥ तीन वत्र निहू
वर चामर ठोले इंद । देवडुडुजि वाजे जांजे कुमति फंद गोयम
मंरुल पूंठे ऊलेके जांण दिनंद । तिहुअण जन जवि मन् ॥ ज
सयल जिनंद ॥ २ ॥ इत्य ज्ञाव सुठवणा नाम निवेद्य जिन

जिण गणहर ज्ञाख्या सूत्र सिद्धांत मज्जार ॥ जिनवरनी पद्मिमा
जिन सरखी सुखकार । शुभ ज्ञावे वंदो पूजो जग जयकार ॥३॥
उख हरणी मंगल करणी जिनवर वाणी । जवछेद कृपाणी मीठी
अमिय समाणी ॥ मन शुद्धे आणी प्रतिवूजो ज्ञवि प्राणी । सुय
देवि पसार्ये पामे जयति सुनाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीचैत्री पुनम स्तुति ॥

॥ सेतुंजगिरि नमिये रूपजदेव पुंमरीक । शुभ तपनी म
द्दिमा सुण गुरुमुख निरञ्जीक ॥ शुद्ध मन उपवासे विधिसुं चैत्य
वंदनीक । करिये जिन आगल टालो वचन अलीक ॥ १ ॥ शक्र
स्तवनादिक प्रथम तिलक दस वीस । अकृत गिणतीसे चढता तिम
चालीस ॥ पंचासनी पूजा ज्ञापड इम जगदीस । तेहिज नित प्र
णमूं स्वामी जिन चौवीस ॥ २ ॥ सुदि पढनी पूनम चेत्र मास
शुभ वार । विधिसेती लहिये आगम साख विचार ॥ इन सोखे
वरसखग धरिये ज्ञान उदार । करतां नर नारी पामे जवनो पार
॥ ३ ॥ सोवन तन चरणे नयने तिम अरविंद । चक्केसरीदेवी से
विय नर सुरवंद ॥ कामित सुखदायक पूरय मन आणंद । जंवे
गणनायक श्रीजिनलाजसूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीचैत्रीपूनमस्तुतिः ॥

॥ अथ नवपदस्तुति ॥

॥ समरुं सुखदायक मन सुध वीर जिनंद । जिण नवपद
मद्दिमा ज्ञापी ज्ञान दिणंद ॥ आसु मधु उज्जल सातमथी नव
रीन । नव आंखिल करिये मन धरि अधिक जगीस ॥ १ ॥ अरि
ज्ञान बलि सिद्ध आचारज उवजाय । मुनि दरमण तिम बलि नाण
तव आय ॥ प्रतिपदनो गुणनो गुणिये दोय हज्जार । सहु
गुण वीर पुजा कीजे अष्ट प्रकार ॥ २ ॥ वारस अमवत्तीस पेश वी
दिन बीने न ॥ समस्त उक्तावन सितर पञ्चास प्रकार ॥ इति

સંખ્યા કાન્તસગ પરદક્ષા પરિણામ । આગમ પ્રાપ્તિ વિધિ હમ
કીજે અગ્નિરામ ॥ ૩ ॥ ચક્રેસરિદેવી તિમ વિમલેસર જરુક । શ્રી
પાલતણીપર પૂરે વંઠિત સુલક ॥ ૬ ॥ વિધિ આરાધો સિદ્ધચક્ર પ્રવિ
પ્રાણી । જિનહર્ષ વદે નિત શ્રીજિનચંદની વાણી ॥ ૪ ॥ ૬તિ ॥

॥ અથ વીસ સ્થાનક સ્તુતિઃ ॥

॥ શિવસુલ દાતા જગત વિલ્લ્યાતા પૂરણ અગ્નિનવ કામી
જી । જ્ઞાનાદિક ગુણ ચેતનરૂપી ચિદાનંદધન ધામીજી ॥ ધ્યાનક
વીસે આગમ પ્રાણિયા વીતરાગ ગુણ પ્રુક્તાજી । જે નર અંતર આ
તમ ધ્યાવે સિવરમણી વર પ્રુક્તાજી ॥ ૧ ॥ અરિહંત સિદ્ધ પ્રવચન
સૂરી પ્રિવર પાઠક મુનિ સારોજી । જ્ઞાની દરસન વિનય ચારિત્ર
બ્રહ્મચારજ ક્રિયધારોજો ॥ તપસી ગણધર જિણ ચારિત્રી નાણ શ્રુત
તિષ્ઠ પ્રૂપોજી । એ પદ નિજ પ્રવિ પ્રાવે સેવે તેહિજ બ્રહ્મ સરૂપો
જી ॥ ૨ ॥ દોષ સહસ ગુણનો પ્રત્યેકેં ચ્યાર સયા ઉપવાસોજી
। ઇચ્છાવસેં વિધિ પરકાસે તોર્થકર પદ સ્વાસોજી ॥ તીજે પ્રવ
વર વીસ આનકની સેવ કરે પ્રવ્ય પ્રાણીજી । સમકિત વીજે જે
નિજ આતમ આરોપે ચિત્ત પ્રાણીજી ॥ ૩ ॥ સુરતરુસમ તપ ફલ
દે મોટો શ્રીસુરદેવિ સદાઈજી । સ્વરતર ગઢ જિન આજ્ઞાધારી પા
ટોધર વરદાઈજી ॥ જિન સૌજ્ઞાગ્યસૂરિંદ પસાથેં હંસ સૂરિંદ ગુણ
ગાવેજી । સંઘ સકલકું સાનિધકારી મન વંઠિત ફલ પાવેજી ॥
૪ ॥ ૬તિશ્રીવીસસ્થાનક સ્તુતિ ॥

॥ અથ વીસ સ્થાનક સ્તુતિ ॥

॥ અરિહંત સિદ્ધ પ્રવચણ આચારજ પ્રિવરાણ । ઉવજાય સાહુ
દંસણ વિનય પદાણ ॥ ચારિત્ર બ્રહ્મ કિરિયા તપિ ગોયમ
નનપ્રાણ । સંયમ નાણી શ્રુત સંઘ સેવો વીસે ઠાણ ॥ ૧ ॥ ઉ
ત્ક્રષ્ટે જિનવર એકસો સિત્તર ધીર । બલિ કાલ જઘન્યે વિન

वीम मंजीर ॥ जिन आय अनंत अतीत अनागत काल । ए वीसे
थानक आराधी गुणमाल ॥ ५ ॥ आवश्यक वे वेला जिनवंदन
त्रिण काल । थानकपद गिणवो सहस दोय सुकमाल ॥ कान्तग
गुण स्तवना पूजा प्रज्ञावना सार । इम शासन वञ्चल करतां ज
वनो पार ॥ ३ ॥ समरीजे अहनिशि गुणरागी सुर साथ । जस्क
जस्कणी सुरपती वेयावच कर नाथ ॥ थानकतप विधसुं जे सेवे
मन रंग । देवचंड आणाये सानिध करे तसु चंग ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तुति ॥

॥ अनुपम गुण आगर सुख सागर वंदित सुरनर वृंदाजी ॥
नवपदमांहे मुख्य वखाण्या रुपजादिक जिनचंदाजी ॥ ज्ञाव धरी
ने जे ज्ञवि वंदे ठेदे कर्म निकंदाजी । नृप श्रीपालतणीपर ध्यावो
पावो सुख अमंदाजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध सूरि उवद्याया सकल
मुनि सुखकारीजी । दंसण नाण चरण तप नवपद धारे चित सं
भारीजी ॥ नवमें ज्ञव ज्ञवि सिवपद पावे प्रवचन वाणी साखीजी ।
वीरजिनंदे ज्ञानानंदे गौतम आगे ज्ञाखीजी ॥ २ ॥ छ्वादस आठ ठत्तीसे
गुण वलि पणवीस सगवीस सारोजी । समसठ इक्कावन वलि जैती
सितर पञ्चास प्रकारोजी ॥ आसू चैत्रक मास धवल पख सातम
थी नव दिहसैंजी । तेरसहस नव पदनो गुणनो नव आंवल नव
विहसैंजी ॥ ३ ॥ विमलयह चक्रेसरीदेवी रिध सिध वंछित दाता
जी । जुली नव विधि युक्ते सेवे ते पामे सुखशाताजी । खरतर
गठ जिन आज्ञाकारी पाठोथरपद उक्ताजी । जिन सौजाग्यमूरिंद
पसाये दंसमूरिंद गुण उक्ताजी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपदस्तुति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥ विमलाचल मंमन जिनवर आदिजिणंद । निरमम निरमोही
दिणंद ॥ जे पूर्व निवाणूं वार धरी आनंद । सेत्रंजय-

रिसिखरे समवसरथा सुखकंद ॥ १ ॥ इण चउवीसीमां ऋषज्जादिक
 जिनराय । वलि काल अतांते अनंत चोवीसी थाय ॥ ते सवि इण
 गिरवर आवी फरसी जाय । इम ज्ञावी काले आवस्ये सवि मुनि-
 राय ॥ २ ॥ श्रीऋषज्जना गणधर पूरुरीक गुणवंत । द्वादस अंग
 रचना कीथी जेण महंत ॥ सब आगममाहे सेत्रुंज महिम महंत
 । ज्ञाखी जिन गणधर सेवो करि धिर चित्त ॥ ३ ॥ चक्रेसरि गोमुह
 कवरु पमुह सुर सार । जसु सेवा कारण थापे इंद नदार ॥ देवचंड-
 गणि ज्ञाखे जविजनने आधार । सब तीरथमाहे सिद्धाचल सिरदार
 ॥ ४ ॥ इतिसेत्रुंजयस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशांतिनाथ स्तुति ॥

... एक

॥ शांति जितेश्वर जगत्पति जगत्पति आचरा नदर अवतार दुगुणा
 । विश्वसेन नृप नंदन जगगुरु हज्जेलापुर सुख करियाजी जाय ॥
 उपडव मारि विकारी शांते करी संचरियाजी । जे ज्ञाणी गुणिये
 कारण ध्यावे ते दुय गुणगण दरियाजी ॥ १ ॥ वर्तमान ज्ञिधान ।
 सुखकारण अतीत अनागत वंदोजी । वारे चक्री नव नारायण वंदण
 प्रतिचक्री आनंदोजी ॥ रामादिक जे पुरष सलाका वंदत पाप निक-
 दोजी । इव्य निक्षेपे जिनसम जाणो काटे जवजय वंदोजी ॥ २
 ॥ अंग उपांगे जिनवर प्रतिमा श्रीजिन सरखी ज्ञाखीजी । इव्य
 ज्ञाव विहुं जेदे पूजा महानिसीधे साखीजी ॥ विषय निवृत्ती सत्
 आरंजे विनय तपी ते जाणोजी । शुभयोगे नहि आरंजकारी जग
 वंद अंग प्रमाणोजी ॥ ३ ॥ आपना सत्ये देवी निर्वाणी श्रीसंघने
 सुखकारीजी । कारणथी सब कारज सीजे जिनवर आज्ञा धारीजी
 ॥ श्रीजिनकीर्ति सूरेश्वर गच्छपति पाठक श्रीऋद्धिसारीजी । सम-
 कितधारी देव सहाई सुखसंपत्त दातारीजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीशांति-
 नाथजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीसीमंथरजिन दूज स्तुति ॥

॥ मन सुख वंदो जावे जवियण श्रीसीमंथर रायाजी । पांचसें धनुष प्रमाण विराजित कंचनवरणी कायाजी ॥ श्रेयांस नरपति संत्यकि नंदन वृषजखंडन सुखदायाजी । विजय जखी पुखलावइ विचरे सेवे सुरनर पायाजी ॥ १ ॥ काल अतीत जे जिनवर हूआ होस्ये वलिय अनंताजी । संप्रति काले पंच विदेहे वरते वीस विख्याताजी ॥ अतिशयवंत अनंत जिनेसर जगबंधव जगत्राताजी । ध्यायक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे पावे शिवसुख साताजी ॥ २ ॥ अरथे श्रीअरिहंत प्रकाशी सूत्रे गणधर आणीजी । मोह मिश्र्यात नवपद्मजर नासन अजिनव सूर समाणीजी ॥ जवोदधि तरणी ने जे जसराणी नय निक्षेप पहाणीजी । जे जिनवाणी अमिय पावो सुखसुखे जविप्राणीजी ॥ ३ ॥ शासनदेवी सुरनर सेवी मुनि सुपुली माईजी । विघन विचारण संपत्तिकारण सेवकजन भारीजईजी ॥ त्रिजुवनमोहनी अंतरजामनी जग जस ज्योति सवीईजी । सांनिधकारी संघने होयज्यो श्रीजिनदर्ष सहाईजी ॥ ४ ॥ इति श्रीसीमंथरजिनदूजस्तुति ॥

॥ अथ श्रीज्ञानपंचमी स्तुति ॥

॥ पंच अनंत महंत गुणाकर पंचम गति दातार । उत्तम पंचम तपविधि वायक ज्ञायक जाव अपार ॥ श्रीपंचानन लांठन लांठित वंठित दान सुदक्ष । श्रीवर्द्धमान जिनंदसु वंदो ध्यावो जविजन पक्ष ॥ १ ॥ पूरण पंच महाश्रव रोधक बोधक जव्य उदार । पंच अनुव्रत पंच महाव्रत विधि विस्तारक सार ॥ जे पंचेंडिय दम सिव पैहुता ते सगला जिनराय । पांचम तप धर जवियण उपर नुग्रि करी सुप्रसाय ॥ २ ॥ पंचाचार धुरंधर जुगवर पंचम गणधर जाण । पंच ज्ञान विचार विराजित जाजत मद पंच वाण ॥

॥ पंचम काल तिमरन्नरमांहे दीपकसम सोजंत । पांचम तपफल
मूल प्रकासक ध्यावो जिनसिद्धंत ॥ ३ ॥ पंच परम पुरुषोत्तम से-
वाकारक जे नरनार । निरमल पांचम तपना धारक तेह, ज्ञानी
सुविचार ॥ श्रीसिद्धायिकादेवी अहनिशि आपो सुख अमंद । श्री
जिनलान्न सुरिंद पसाये कहे जिनचंद मुणिंद ॥ ४ ॥ इतिज्ञान-
पंचमीस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमौन एकादशी स्तुति ॥

॥ अरनाथ जिनेश्वर दीक्षा नमिजिन ज्ञान । श्रीमस्त्रि जनम
व्रत केवलज्ञान प्रधान ॥ इग्यारस मिगसर सुदि उत्तम अवधार ।
ए पंच कळयाणक समरीजे जयकार ॥ १ ॥ इग्यारे अनुपम एक
अधिक गुण धार । इग्यारे बारे प्रतिमा देसक धार ॥ इग्यारे डुगुणा
दोय अधिक जिनराय । मन सूधे सेव्यां सब संकट मिट जाय ॥
२ ॥ जिहां वरस इग्यारे कीजे व्रत उपवास । बलि गुणनो गुणिये
विधिसेती सुविलास ॥ जिन आगमवाणी जाणी जगत प्रधान ।
इक चित्त आराधो साधो सिद्ध विधान ॥ ३ ॥ सुर असुर जुवण
वण सम्यग् दरसनवंत । जिनचंद सुसेवक बेयावच्च करंत ॥ श्रीसंघ
सकलमें आराधक बहु जाण । जिनशासन देवी देव करो कळयाण
॥ ४ ॥ इतिश्रीमौनएकादशीस्तुति ॥

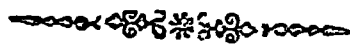
॥ अथ रोहणी स्तुति ॥

॥ जयकारी जिनवर वासुपूज्य अरिहंत । रोहिण तपनो फल
आख्यो श्रीजगवंत ॥ नरनारी जावे आराधो तप एह । सुख संपत् ली-
ला लक्ष्मी पामे तेह ॥ १ ॥ रुषजादिक जिनवर रोहणी तप सुविचार ।
जिनमुख परकासे बेठी परखदा वार ॥ रोहिण दिन कीजे रोहिणनो
उपवास । मन वंछित लीला सुंदर जोगविलास ॥ २ ॥ आगममें एहनो
बोळ्यो लान्न अनंत । विधसुं परमारथ साधे सुधो संत । इत्ये

इग तेहनो नासि जाय सब दूर । बलि दिन१ अंगे बाधे अधिको
नूर ॥ ३ ॥ महिमा जग मोटो रोहिण तप फल जाण । सौजाग्य
सदा जे पामे चतुर सुजाण ॥ नित घर१ महोच्चव नित नवला
सिणगार । जिनशासनदेवी लब्धिरुची जयकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ परखी चौदश स्तुति ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेश्वर जाकी कीजे सेव, गच्छ
चोरासी जेहने आप्या जाकी करणी एह ॥ तेहने पाखी चोदस,
कीजे बीजे अंग कहाय, पाखी सूत्र प्रथम तुम देखो जिम१ संशय
जाय ॥ १ ॥ चउबीसे जिनपूजा कीजे मानो जिनकी आण, क
टपसूत्रनी पाखी चोदस जोवो चतुर सुजाण ॥ इण पर ठाम१
तुम देखो चउदस परकी होय, नूला कांड जमो तुम प्राणी ताचो
जिनधर्म जोय ॥ २ ॥ चवदसरे दिन पाखी कीजे सूत्रांकेरी साख,
नविक जीव इम मन आराधो टीका चूरणी जाख ॥ आवश्यक
सूत्र इण पर बोले चउदसरे दिन पाखी, चउद पुरवधर इणपर
बोले ते निश्चल मन दाखी ॥ ३ ॥ श्रुतदेवी इक मन आराधो
मन वंछित फल होय, जे जे आज्ञा सूधी पाले ज्यांनो विघन ह
रेय ॥ सेवक इणपर करे बीनती सूयो समकित पाय, खरतरगच्छ
मंमण कुमति विहंमण माणिक्य सूरि गुरुराय ॥ ४ ॥ इति परकी
चोदस युद्ध संपूर्ण ॥



॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारभ्यते ॥

॥ तत्र प्रथमं ॥

॥ श्री बृहदजितशांतिस्मरणं लिख्यते ॥

॥ अजिअं जिअसवन्नयं, संतिं च पसंतसवगयपावं ॥ जय
गुरु संति गुणकरे, दोहि जिणवरे पणिवयासि ॥ १ ॥ गाहा ॥

ववगय मंगुल जावे, तेहं विजलतवनिम्मल सहावे ॥ निरुवम मंहप्पं
 जावे, ओसामि सुदिठ सप्पावे ॥ १ ॥ गाहा ॥ सब डुक्कप्पसंतीणं,
 सब पावप्पसंतीणं ॥ सया अजिय संतीणं, नमो अजिअ संतीणं ॥ ३ ॥
 सिलोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं
 ॥ तेह य धिइ मइ प्पवत्तणं, तवय जिणुत्तम संतिकित्तणं ॥ ४ ॥
 मागहिआ ॥ किरिआविहि संचिअ कम्म किलेसविमुक्कयरं, अ
 जिअं निचिअं च गुणेहिं महासुणि सिद्धियं ॥ अजिअस्स य संति
 महा सुणिणोवि अ संतिकरं, सययं मम निवुइ कारणयं च नमं
 सणयं ॥ ५ ॥ आलिंणयं ॥ पुरिसा जइ डुक्कवारणं, जइअ विम
 ग्गह सुक्ककारणं ॥ अजिअं संतिं च ज्ञावत्तं, अज्जयकरे सरणं पव
 ज्जाहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइ रइ तिमिर विरहिअ, मुवरय ज
 रमरणं, सुर असुर गरुल जुयगवई, पयय पणिवइअं ॥ अजिअ म
 ह्मविअ, सुनय नय निज्जणमज्जयकरं, सरणमुवसरिअ जुवि दिवि
 ज, महिअं सयय मुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम
 नित्तम सत्तधरं, अज्जाव मत्तव खंतिविमुत्ति समाहि निहिं ॥ संति
 अरं पणमामि दमुत्तम तिज्जयरं, संति मुणी मम संति समाहिवरं
 हिसत्त ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थि मज्जय प
 सत्त विज्जिन्न संचिअं अर सरिअ वत्तं मयगल लीलायमाण वर गंध
 हत्थि पत्ताण पत्थियं संय्येइ रिहं हत्थिइत्तं बाहुं धंतकणग रुअग नि
 रुवहय पिंजरं पवर लक्खणो वचिअ सोम्म चारु रुवं सुइ सुहम
 णाजिराम परम रमणिज्जा वरदेव उंउहि निनाय महुरयर सुहगिरं
 ॥ ९ ॥ वेट्ठत्तं ॥ अजिअं जिआरिणं, जिअ सबजयं जवो हरिजं ॥
 पणमामि अहं पयत्तं, पावं पसमेव मे ज्ञायवं ॥ १० ॥ रासालुद्ध
 त्तं ॥ कुरु जणवय हत्थिणाजर नरी रो पढमंतत्तं महाचक्कव
 ट्ठिज्जोए महप्पजावो जो बाहत्तरि पुरवरं सहस्सवर नगर णिगम

जणवय वई बत्तीसारायवर सहस्साणु आयमगो चनदस वररयण
 नव महानिहि चनसठि सहस्त पवर जुवईण सुंदर वइ
 चुलसी हय गय रह सय सहस्त सामी ठणवइगाम कोमि
 सामी आसिज्जो जारहंमि जयवं ॥ ११ ॥ वेढुन ॥ तं
 संतिं संतियरं, संतिन्नं सब जया ॥ संतिं शुणामि जिणं, संतिं वि
 हेन मे ॥ १२ ॥ रासाणंदिअयं ॥ इस्कागु विदेह नरीसर, नरव
 सहा मुणिवसहा ॥ नव सारयससि सकलाणण, विगय तमा विहु
 अग्या ॥ अजिउत्तम तेअ गुणेहिं महामुणि, अमिय बलाविज्जल
 कुला ॥ पणमामि ते जवजय मूरण, जग सरणा मम सरणं ॥
 १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव दाणविंद चंद सूरवंद हठ तुठ जिठ परम,
 लठ रूव धंत रुप पट्ट सेअ सुद्ध निद्ध धवल ॥ दंतपंति संति स
 ति किति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर, दित्त तेअवंदधेअ सबलोअ जावि
 अ पपजावणे अ पइसमे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायण ॥ विमल स
 सिकलाइरेअसोम्मं, वितिमिरसूर कलाइरेअ तेअं ॥ तियसवइगणा
 इरेअ रूवं, धरणिधर पपवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्ते
 अ सया अजिअं, सारीरे अंबले अजिअं ॥ तव संजेमअ अजिअं,
 एस अइं शुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ जूअंगपरिरिंणिअं
 ॥ सोम्मगुणेहिं पावइ न तं नवसरय ससी, तेअ गुणेहिं पावइ
 न तं नवसरय रवी ॥ रुद्धगुणेहिं पावइ न तं तिअस गणव
 इ, सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥
 तिठवर पवत्तयं तमरयरहिअं, धीरजणशुअच्चिअं चुअ कलिकलुसं
 ॥ संतिसुहपपवत्तयं तिगरण पयण, संतिमहं महा मुणिं सरण मु
 वणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणनणय सिरिरइ अंजलि, रिसि
 गण संशुअं शिमिअं ॥ १९ ॥ न्हाहि वधणवइ नरवइ, शुअ महिअच्चिअं
 बहुसो ॥ अइ रुग्गय सरय दिवायर, समहिअ सप्पजं तवसा ॥

गयणंगण वियरण समुद्रं, चारण वंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ किसलय
 माळा ॥ असुर गरुड परिवंदिअं, किन्नरोरग एमंसिअं ॥ देव कोम्नि
 सयसंधुयं, समणसंध परिवंदिअं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अजयं अणहं अरयं
 अरुयं ॥ अजिअं अजिअं पयणं पणमे ॥ २१ ॥ विज्जुविलसिअं ॥ आग
 यावर विमाण, दिवकणग रह तुरय पहकर सएहिं हुलिअं ॥ स
 संजमो अरण खुन्निअ लुलिअ चल कुंमलंगय तिरीम सोहंत मऊ
 लिमाळा ॥ २२ ॥ वेढुं ॥ जं सुरसंधा सासुर संधा, वेर विज्जता
 न्नि सुजुत्ता, आयर नूसिअ संजमपिंनिअ, सुहु सुविज्जिअ सबब
 लोधा ॥ उत्तम कंचण रयण परूविअ न्नासुर नूसण न्नासुरिअंगा,
 गाय समोणय न्निवसागय पंजलिपेसियसीस पणामा ॥ २३ ॥
 रयणमाळा ॥ वंदिऊण थोऊणतो जिणं, तिगुणमेवय पुणोपया
 हिणं ॥ पणमिऊणय जिणं सुरासुरा, पमुद्रा सज्जवणाइतो गया
 ॥ २४ ॥ स्वित्तयं ॥ तं महामुणिमहं पि पंजलि, राग दोस जय
 मोह वज्जिअं ॥ देवदाणव नरिंद वंदिअं, संति मुत्तम महात्तवं नमे
 ॥ २५ ॥ स्वित्तयं ॥ अंबरंतरविआरणिआहिं, ललिअहंस बहुगामि
 णिआहिं ॥ पीण सोणिअण सालणिआहिं, सकल कमल दललो
 अणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीण निरंतर अणन्नरविणमिय गायल
 याहिं, मणिकंचण पसिढिलभेहल सोहिअ सोणितमाहिं ॥ वरखिं
 खिणि नेजर सतिलय वलय विज्जूसणियाहिं, रइकर चजर मणो
 हर सुंदर दंसणियाहिं ॥ २७ ॥ चित्तकरा ॥ देवसुंदरीहिं पाय
 वंदिआहिं वंदिआय जस्त ते सुविक्रमाकमा अप्पणो निमालएहिं
 मंण्योमुग्गप्पगारएहिं केहिं केहिं वीअवंग तिलय पत्तलेह नामएहिं
 चिह्णएहिं संगयं गयाहिं न्नि सन्निविठ वंदणागयाहिं हुंति ते वंदि
 आ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायण ॥ तमहं जिणचंदं, अजिअं
 जिअमोहं ॥ धुअसवकिलेस् पयणं पणमामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥

धुअवंदिअस्सारिसिगण देवगणोहिं, तो देव वहुहिं पयल पणमिअ
 स्ता ॥ जस्स जगुत्तमसासणयस्ता, जत्तिवसागयपिंमिअआहिं ॥
 देव वरहरसा बहुआहिं, सुरवर रइगुण पंमिअआहिं ॥ ३० ॥
 ज्ञासुरयं ॥ वंस सह तंति ताल मेलिए तिउरकराजिराम सह मी
 सएकए अ, सुइसमाणोअ सुइ सज्ज गीअ पाय जालघंटीअहिं ॥
 वलय मेहला कलावनेउराजिराम सह मीसएकए अ देवनट्टिआहिं
 ॥ हाव ज्ञाव विअमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंग हारएहिं वंदिआय
 जस्सते सुविक्कमाकमा ॥ तयं तिलोअ सब सत्त संतिकारयं पसंत
 सब पाव दोस मेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायण ॥
 वच्च चामर पमागजूअ जव मंमिआ, ऊयवर मगर तुरय सिरिवच्च
 सुलंठणा ॥ दीव समुइ मंदरदिसागयसोहिआ, सच्चिअ वसह सी
 हसिरिवच्चसुलंठणा ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहावलठा समप्पइठा,
 अदोस-डुवागुणोहिं जिठा ॥ पसायसिठा तवेण पुठा, सिरीहीं इठा
 रिसीहीं जुठा ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअसवपावया,
 सवलोअहिअ मूल पावया ॥ संघुआ अजिअ संति पायया, हुंतु
 मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिया ॥ एवं तव बल वि
 जलं, शुअं मए अजिअ संति जिणजुयलं ॥ ववगय कम्म रयमलं,
 गइं गयं सासयां विमलां ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, सु
 रक्क सुहेण परमेण अविसायं ॥ नासेलं मे विसायं, कुणअ परि
 साविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएअ अनंदिं, पावेअ नं
 विसेशमज्जनंदिं ॥ परिताइवि सुहनंदिं, मम य-दिसअ संजमे
 नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअ चान्ममासिय, संवहरिए अवस्स
 जणिअवो ॥ सोअवो संबोहिं, उवसग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥
 जो पढइ जोअनिसुणइ, उज्जअ कालंपि अजिअ संतिअयं ॥ न हु
 हुंति तस्स रोगा, पुवुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इअह परम

पयं, अहवा कितिं सुविचरं चुवणे ॥ ता तेलुकुद्धरणे, जिणव
यणे आधरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति श्रीवृहदजितशांतिस्त
वनं प्रथमस्मरणम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय लघुअजितशांतिस्मरणम् ॥

॥ उल्लासिक मनस्क निगयपहा दंमच्छेपांगिणं, वंदारूण
दिसंत इव पयं निवाणमगावलं ॥ कुंदिंडुज्जल दंतकंति मिसन
नीदंत नाणंकुरु, केरे दोविडु इज्ज सोलस जिणे ओसामि खेमंकरे
॥ १ ॥ चरम जलहिनीरं जोमिणिज्जं जलोहिं, खय समय समीरं जो
जणिज्जा गर्हए ॥ सहल नहय लंवा लंघए जो पएहिं, अजिअ म
हव संतिं सो समठो ठणेनं ॥ २ ॥ तहविहु बहुमाणु ल्लासज्जति
अरेण, गुणकणमिवकित्ती हामि चिंतामणि व ॥ अलमहव अचिंता
एंतसामठुनसिं, फलहइ लहु सवं वंठिअं णि छिअं मे ॥ ३ ॥ सय
खजयहिआणं नाममित्तेण जाणं, विहरइ लहु डुवा निठदोषट्ठणं
॥ नमिरसुर किरीडू गिठ पायारविंदे, समय मजिअ संती ते जि
णिंदे जिंवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वट्ठए देहदित्ती, विलसइ
जुविं मित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥ फुरइ परमतित्ती होइ संसारठित्ती,
जिणजुअ पयज्जत्ती हीअ चिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं नू
रिदिवंगहारं, फुरुगणरसज्जावो दारसिंगारसारं ॥ अणमिसरमणीज
दंसणठे अज्जीया, इव पुणमणि वंधा कास नट्टोवयारं ॥ ६ ॥
थुणह अजिअसंती ते कया सेस संती, कणयरयपसंगा ठज्जए जा
णिमुत्ती ॥ सरज्जस परिरंज्जं रंज्जनिवाणलब्धी, घणअणधुसि णिकु
प्पंकपिंणीकयव ॥ ७ ॥ बहुविहनयज्जंगं वठ्ठणिज्जं अणिज्जं, संसद
णज्जिलप्पा लप्पमेगं अणेणं ॥ इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्धं तु जेसिं,
वयण मवय णिज्जं ते जिणे संजरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिअ लोए
ताव मोहंययारं, जमइज्जय मससं तावमिठत्तणं ॥ फुरइ फुरुप

लंता एतणाणं सुपूरो, पयस मज्झिमसंती जाण सूरौ न जाव ॥ एण
 अरि करि हरि तिण्हु एहंनु चोरा द्विवाही, समर रुमर मारी रुद्ध
 खुद्धो वसग्गा ॥ पलय मज्झिमसंती कित्तेणो ऊत्तिजंती, निविमतरत
 मोद्धा न्नुत्तरालुंखिअ व ॥ १० ॥ निचिअडुरेअदारु दिक्खजाणग्गि
 जाला, परिगय मिव गोरं, चिंतिअं जाण रूवं ॥ कणय निहसरेद्धा
 कंतिचोरं करिज्जा, चिरथिर मिह लब्धिं गाढसंयंनिअव ॥ ११ ॥
 अरुविनिवमिआणं पठ्ठिवुत्तासिआणं, जलहि लहरि हीरं ताण
 गुत्ति धियाणं ॥ जलिय जलय जाला लिंगिआणं च जाणं, जणयइ
 लहु संतिं संतिनाहा जिआणं ॥ १२ ॥ हरि करि परिकिस्सं पक्क
 पाडक्कपुस्सं, सयलपुहवि रज्जं ठक्खिअं आण सज्जं ॥ तण मिव पन्नि
 लग्गं जेज्जिणामुत्तिमग्गं, चरण मणुपवस्सा हुंतु ते मे पसस्सा ॥ १३ ॥
 वणससिबयणाहिं फुल्लनित्तुप्पलाहिं, अणन्नरनमिरीहिं मुठ्ठिगिज्जोद
 रीहिं ॥ ललिय न्नुअलयाहिं पीण सोणिठणीहिं, सयसुर रमणीहिं
 वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिसि किमि न्नुकुठ गंठि कासाइसार,
 खय जर वण लूआ सारसोसोदराणि ॥ नहमुह दसणत्थी कुञ्चिक
 साइरोगे, मह जिणजुअ पाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इय गुरु
 उइतासे परिके चानमासे, जिणवर दुग्गथुत्तं वठ्ठरे वा पवित्तं ॥
 पढड सुणइ सिअ एह जाएड चित्ते, कुणह मुणह विग्गं जेण धा
 एह सिग्गं ॥ १६ ॥ इय विजयाजियसत्तुपुत्त सिरिअजिअ जिणे
 तर, तह अइराविससेण तणइ पंचम चक्कोसर ॥ तिठंकर सोल
 सम संति जिणवल्लइ संशुअ, कुरु मंगअ मम हर सुडुरिअमखिलं
 पि शुणंतइ ॥ १७ ॥ इति श्रीलवुअजितशांतिस्तवनं द्वितीयं ॥

॥ अय नमिऊणनामकं तृतीयं स्मरणम् ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, चूमामणि किरणरंजिअं मुणि
 णो ॥ अयणजुअलं मद्धानय, पणासणं नयवं बुद्धं ॥ १ ॥ समिय

कर चरण नह मुह, निबुद्ध नासा विवन्न लावन्ना ॥ कुठ महारो
 गानल, फुलिंग निदृष्ट सवंगा ॥ १ ॥ ते तुह चलणा राहण, स
 लिलंजलिसेय बुद्धिय छाया ॥ वण दवदह्या गिरिपा यव व पत्ता
 पुणो लळि ॥ ३ ॥ उवाय खुप्रिय जलनिहि, उग्ररु कल्लोल जी-
 सणारावे ॥ संजंत जय विसंवुल, निश्यामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥
 अविदलिअ जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं ॥ पास जिण
 चलण जुअलं, निचंचिअ जे नमंतिनरा ॥ ५ ॥ खर पवणुअ
 वणदव, जालावलि मिलिय सयल डुम गहणे ॥ मज्झंत मुद्धमिय
 बहु, जीसरणरव जीसणंमि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं,
 निवाविअ सयल तिहुअणाजोअं ॥ जे संजरंति मणुआ, न कुणइ
 जलणो जयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत जोग जीसण, फुरिआरुण न
 यण तरल जीहालं ॥ जगजुअं नवजल य, सत्तहं जीसणाचारं
 ॥ ८ ॥ मज्झंत कीरु सरिसं, दूर परिबुद्ध विसम विस वेगा ॥ तुह
 नामस्कर फुमसि द्व, मंत गुरुआ नरा लोए ॥ ९ ॥ अरुवीसु जि
 ल्ल तक्कर, पुलिंद सदल सदजीमासु ॥ जयविहुर बुन्नकायर, उल्लु
 रिअ पहिअ सत्तासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविह वसारा, तुह नाह प
 णाम मत्तवावारा ॥ ववगय विग्घा सिग्घं, पत्ता हिय इच्छियं छाणं
 ॥ ११ ॥ पल्ललिआनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ॥ नह
 कुलिसघायविअलिअ, गइंदकुंजठलान्जोअं ॥ १२ ॥ पणय ससंज
 म पडिव, नहमणिमाणिक्क पमिअ पमिमस्स ॥ तुह वयण पहरणं
 धरा, सीहं कुंइपि नहाणंति ॥ १३ ॥ लसिधवल दंतमुसलं, दीह
 करुल्लाल वट्ठि उन्नंतं, महुपिंग नयणजुअलं, ससलिल नवजलं
 हरारावं ॥ १४ ॥ महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गिणंति
 ॥ जे तुम्ह तासणं जो, मुणिवइ तुंगं समल्लोणा ॥ १५ ॥ स
 मरम्मितिक्कहणं ॥ य पविद्ध उरुय कवंधे ॥ १६ ॥ अविणिज्जि

न करि कल, ह मुक्क सिकार पजरंमि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुद्धर
 रिज, नरिंद निवहा जमा जसं धवलं ॥ पावंति पाव पसमिण,
 पासजिण तुह प्पजावेण ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहर,
 चोरारि मइंद गय रण जयाइं ॥ पास जिणनाम संकिं, त्तोण
 पसमंति सवाइं ॥ १८ ॥ एवं महा जयहरं, पास जिणिंदस्स संथ
 वमुत्थारं ॥ जविय जणाणंदयरं, कल्लाण परंपरनिहाणं ॥ १९ ॥
 राय जय जस्क रक्कस, कुसुमिण डुस्सज्जण रिक्क पीमासु ॥ सं
 जासु दोसु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो
 अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणातुंगस्स ॥ पासा पावं पसमिज,
 सयल जुवणच्चिय चलो ॥ २१ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं तृ
 तीयस्मरणं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

॥ अथ गणधर देवस्तुति चतुर्थ स्मरण प्रारंभः ॥

॥ तं जयज जय तिष्ठं, जमिष्ठ तिष्ठाहि वेण वीरेण ॥
 सन्मं पवत्तिअंन, व सत्त संताणसुह जणायं ॥ १ ॥ नासिअ सय
 लकिलेसा, निहय कुलेसा पसत्त सुहलेसा ॥ सिरिवद्धमाण तिष्ठ,
 स्स मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निदद्धकम्म वीआ, वीआपरिमि
 णिणो गुणलमिद्धा ॥ सिद्धा तिजय पसिद्धा, हणंतु छुवाणि तिष्ठ
 स्स ॥ ३ ॥ आचार मायरंता, पंचपयारं सया पयासंता ॥ आय
 रिया तह तिष्ठं, निहय कुतिष्ठं पयासंतु ॥ ४ ॥ सन्मसुअ वाय
 गावा, यगाय सिअवाय वायगा वाए ॥ पवयण पणिणीय कए,
 वणित्तु लवस्स संयस्स ॥ ५ ॥ निवाणसाहुणिमज्जअ, सादूणं जणिअ
 सव सादुजा ॥ तिष्ठप्पजायगाते, हवंतु पयातिस्तो जइणो ॥ ६ ॥
 जेणाणुगयं नाणं, निवाणकलं च चरणम् ॥ स्मरणम् तिष्ठस्स दंसणं
 नं, मंगलनुयणेन सिद्धियरं ॥ ७ ॥ तिष्ठमणि किरणरत्तो, समग्ग
 च्चरिअ सुय नम्मो ॥ गुणसुद्धिअसंयवं बुद्धं ॥ लं सन्ममि

36

बंहा दिसंतु तिष्ठस्स ॥ सव्व जिण्णाणं गणिहा, रिणो एहं वंठेअं
 सव्वं ॥ १३ ॥ सिरि वद्धमाण तिष्ठा, हिवेण तिष्ठं समप्पिअं जस्स
 ॥ सम्मं सुद्धम्म सामी, दिसउ सुहं सयल संघस्स ॥ १४ ॥ पय
 इएज्जदिआ जे, जहाण दिसंतु सयल संघस्स ॥ इयरसुगु, जृकु म्मं,
 जिणगणहर कहिय कारिस्स ॥ १५ ॥ इय जो ११, विदिता
 उस्सव्वं तस्स नत्ति किंपि जए ॥ जिणदत्ताणाएभिना १२, धारि
 मुही होई ॥ १६ ॥ इति श्री गणधरदेवस्तुतिना ६, बला १७, धारि

॥ अथ गुरुपारतंत्यनामक पंचमं सधारी ११, अंजिका :

॥ मयरहिअं गुणगण रयण, सायरं सार्यत्तमानचतुर्विंशतितीक्ष्णं
 सुगुरुजण पारतंतं. उवहिअ शुणामि तं चेव ॥ १ ॥ धृति, कीर्त्ति, कां
 मोह जोहा, निहय विरोहा पणठ संदेहा ॥ पणधनवेशनेषु, सुगृहीत
 सुह संदोहा सुगुण गेहा ॥ २ ॥ पत्तसु जइत्त सोहसि २, वज्रशूल
 तिष्ठ जणिय संखोहा ॥ पम्भिज्जग्ग मोह जोहा, दंस्स ३, मह
 सजोहा ॥ ३ ॥ परिहरिअ सज्जवाहा, हय उह दाहा सिवंब तरु
 साहा ॥ संपाविअ सुहलाहा, सुखिणुव अग्गाहा ॥ ४ ॥ सु
 गुणजण जणिअ पुज्जा, सज्जो ॥ निहं गहिअ पवज्जा ॥ सिवसुह
 साहण सज्जा, जयगिरि गुरु चय पसिस्स ॥ अज्जसुद्धम्म पयसुत्त,
 गुणगण निवहा सुरिंद विहिय पंचपयारं ॥ तिसंजं नामं, नामं
 न पशासइ जिण्णाणं ॥ ६ ॥ तव पयासंतु ॥ देवो, देवायरिउ डुरंत
 जवहारी ॥ सिरि नेम वायगा वाए ॥ पवरिणो सुगुरु ॥ ७ ॥
 सिरि वद्धमाण सूरिस्स ॥ ५ ॥ निव्वाणसाहुणिप्पो ॥ पम्भिहय कसाय
 पसरो, सज्जो मरत्तवप्पजायगाते, हवंतु प्राप्तिनील चोर चप्पर, ए
 पच्चलो यिं नाणं, निव्वाणफलं च चरणम्भ स्मनं, तज्जाणं पणय
 सुगुणजणुवणेज सिद्धियरं ॥ ८ ॥ निव्वमणि स्स अणहिद्ध वामए
 ॥ १० ॥ ११, सुय सम्मो ॥ गुणसुद्धिअर संघवं गया ॥ १० ॥ ६

[illegible]

वच काया करि त्रिगुणाकरि त्रिशंक ॥ तेतीस सहस सत सात-
 असी निःसंक ॥ ७ ॥ वलि करण करावण अनुमति त्रिगुण कि० ॥
 इकलकख सहसङ्ग तिसय चालीस प्रसिद्ध ॥ अतीत अनागत
 वर्तमान वलिकाल जे अइयविराधना तिणि त्रिगुण संजाल ॥ ८ ॥
 तीन लाख सहस च्यार वेसै अधिक तेथाय ॥ अरिहंत प्रमुख वह
 लाखे ठगुण जाय ॥ इम लाख अठारह वलि सहस चउवीस ॥
 इकसो बीसोत्तर हुइ संख्या निसदीस ॥ ९ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ चोपडनी ॥ ए देशी ॥

॥ इण परि मिष्ठामि डुकमंदेई जविक तरया जवजल नि
 धिकेई ॥ तरे अठै वलि आगलि तरिती ॥ निरमल केवल लखमी
 वरिती ॥ १० ॥ इरियावही धरम गंगाजल ॥ न्हाण करै आत्म
 करि निरमल ॥ सें मुखजाधै वीर जिणोसर ॥ सूत्रकरि गूणै ते श्रु
 तधर ॥ ११ ॥ इम पम्किमी मुनिवर अइमत्तो ॥ वीरसीस केव
 ल पदपत्तो ॥ त्रिकरण सुध तसु पय प्रणमी जै ॥ मानव जनम
 सफल इम कीजै ॥ १२ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम वीरजिणवर ग्यान दिणयर सयललोय सुईकरो ॥
 तियलोय सामि सिद्धिगामी सुद्ध धरम धुरंधरो ॥ उवजाय लक्ष्मी
 किर्ति सीसै जैनवाणी मन धरी ॥ गणि लखिवल्लज तवन करि
 इम संश्रुणयो आवै करी ॥ १३ ॥ इति इरियावही मिष्ठामि डुकमं
 संख्या स्तवनं ॥

॥ अंथ पंच समवाय स्तवन ॥

॥ दोहा ॥ सिद्धारथ सुत वंदीए, जगदीपे तेरी मीराज ॥ वस्तु-
 सचि जाणीए, जस आगमथी आज ॥ उहो स्यादादधी
 संपजे, विख्यात ॥ सत जग रचना ॥

वेसे वात ॥ ५ ॥ वाद वदे नय जूजूआ, आप आपणे ठाम ॥
 पूरण वस्तु विचारतां, कोइ न आवे काम ॥ ३ ॥ अंध पुरुषे एह
 गज, अही अवयव अकेक ॥ दृष्टिवंत लहे पूर्ण गज, अवयव मिला
 अनेक ॥ ४ ॥ संगति सकल नये करी, जुगति योग शुद्ध बाध ॥
 धन्य जिनशासन जग जयो, जिहां नहीं किशो विरोध ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ राग आशावरी ॥

श्रीजिनशासन जग जयकारी स्यादाद शुद्ध रूप रे ॥
 नय एकांत मिथ्यात्व निवारण, अकल अजंग अनूपरे ॥ ६ ॥
 ॥ श्री० ॥ कोइ कहे ए कालतणे वस, सकल जगत गत होय रे ॥
 कालै ऊपजै विणसे कालै, अवर न कारण कोइ रे ॥ ७ ॥ श्री० ॥
 कालै गर्ज भरै जग वनिता ॥ कालै जनमे पुत रे ॥ कालै बोलै
 कालै चालै, कालै जालै घरसूत रे ॥ ८ ॥ कालै दूधयक्ती दही घायै,
 कालै फल परपाक रे ॥ विविध पदार्थ काल उपावै, अंत करे बे
 वाक रे ॥ ९ ॥ श्री० ॥ जिनचमवीसै बार चक्रवै, वासुदेव बलवंत
 रे ॥ कालै कविलत कोइ न दीसै, जसु करता सुर सेव रे ॥ १० ॥
 ॥ श्री० ॥ उत्सर्पिणी अवसर्पणी आरा, ठै ठै जूजूये जांते रे,
 षट् ऋतु काल विशेष विचारो ॥ जिनन २ दिन रात रे ॥ ११ ॥ श्री० ॥
 कालै बाल विलास मनोहर, यौवन काला केश रे ॥ बुढपणे दुय
 बलि-९ दुर्बल, सकल तही लवलेस रे ॥ १२ ॥ श्री० ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ गिरुवा गुण श्रीवीरजी ॥ ए देशी ॥

तव ज्ञानावदादी वदै जी, काल किसुं करै रंक ॥ वस्तु स्वप्नावे
 नीपजे जी, करंतिमज निस्संक ॥ १३ ॥ सुविवेक विचारो जुओ
 वस्तु स्वप्नावले आंकणी ॥ ठते योग यौवनवतीजी, वांजणि
 जणै बाल ॥ पण ही महिला सुखै जी, करतल ऊगै न बाल
 ॥ सु० ॥ गृह ज्ञान न वि संपजै जी, किमह पदार्थ कोय ॥

अंग न लागै नीबमै जी, वाग वसंते जोय ॥ १५ ॥ सु० ॥ मोरपीठ
 कुण चोतरे जी, कुण करै संध्यारंग ॥ अंग विविध सब जीवना जी,
 सुंदर नयण कुरंग ॥ १६ ॥ सु० ॥ काटा बोर वंबूलना जी, कुणें अणि-
 याला कीध ॥ रूप रंग गुण जूजूआ जी ॥ तस फल फल प्रसिद्ध ॥
 ॥ १७ ॥ सु० ॥ विसहर मस्तकै नित वसै जी, मणि हरै विस
 ततकाल, परवत धिर चल बायरो जी, ऊरध अगननी जाल ॥ १८ ॥
 ॥ सु० ॥ मद्य तुंग जलमां तिरै जी, वूमै काग पाहाण ॥ पंख जाति
 गयणे फिरै जी ॥ इण परै सहिज विनाण ॥ १९ ॥ सु० ॥ वाय
 सुंठयी उपशमै जी, हरमे करै विरेच ॥ सीऊ नही कण कांगरो जी ॥
 सकल स्वप्नाव अगेक ॥ २० ॥ सु० ॥ देस विशेषै काठनो जी,
 भुंयमां आयै पाखाण ॥ संख अस्थिनो नीपजे जी, क्षेत्र स्वप्नाव
 प्रमाण ॥ २१ ॥ सु० ॥ रवि तातो सशि सीयलो जी, जव्यादिक
 बहु ज्ञाव ॥ उए डव्य आपायणा जी, न तजै कोइ सुप्नाव ॥
 ॥ २२ ॥ सु० ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ कपूर हुयै अति ऊजलो रे ॥ ए देसी ॥

काल किसुं करै वापरो रे, वस्तु स्वप्नाव अकज ॥ जो न
 होय जवतव्यता जी, तो किम सीजै कज्जा रे ॥ २३ ॥ प्रांणी म
 करो मन जंजाल, ए तो ज्ञावी ज्ञाव निहाल रे ॥ प्रा० ॥ ए
 आकणी ॥ जलधि तरै जंगल फिरै जी, कोहि यतन करै कोय ॥
 अणज्जावी होवे नही जी, ज्ञावी होय ते होयरे ॥ प्र० ॥ प्रा० ॥
 आवै मोर वसंतमां जी, मालै केइ लाख ॥ २४ ॥ केइ खांसटी
 जी, केइ आंवा केइ साख रे ॥ प्रा० ॥ २५ ॥ केइ जिम जव
 तव्यता जी, जिण जिण दिते उजाय ॥ परत एहि मानसतणो जी,
 तृण जिम पूठे धाय रे ॥ प्रा० ॥ २६ ॥ केइ हो वै पिण चितव्य
 जी, आवै मिगे नतकाल ॥ वरमां सोन ॥ २७ ॥ केइ जी नियत कर

विसराल रे ॥ प्रा० ॥ २७ ॥ आठमो चक्री सुजूमिते जी, समुद्र
पमयो विकराल ॥ ब्रह्मदत्त चक्री तणांजी, नयण हरै गोवांल रे ॥
प्रा० ॥ २८ ॥ कोकूहा कोयल करै जी, किम राखीस रे प्राण ॥
आहेमी सर ताकियो जी, ऊपर जमें सीचाण रे ॥ प्रा० ॥ २९ ॥
आहेमी नागे मस्यो जी, बाण लग्यो सींचाण ॥ कोकूहो ऊमी
गयो जी, कोउ नियत परमाण रे ॥ प्रा० ॥ ३० ॥ सख हणया
संग्राममां जी, रात पमया जीवंत ॥ मंदिरमांहे मानवी जो,
राख्याही न रहंत रे ॥ प्रा० ॥ ३१ ॥

॥ दाल ४ थी ॥ मारुणी मनोहरणी ॥ ए देखी ॥

काल स्वप्नाव नियत मति रूमी, करम करे ते थाय ॥
करमें नरय तिरिय नर सुर गति, जीव जवंतरै जाय ॥ ३२ ॥
चेतन चेतज्यो रे करम न ठूटै कोय ॥ ए आंकणी ॥ करमें
राम वस्या वनवासै, सीता पामी आल ॥ कर्म लंकापति रावणनुं,
राज्य अयो विसराल ॥ ३३ ॥ चे० ॥ कर्म कीमी कर्म कुंजर ॥
कर्म नर गुणवंत ॥ कर्म रोग सोग डख पीमित, जनम जायै
विलसंत ॥ ३४ ॥ चे० ॥ कर्म वरस लगे रिसहेतर, उदक न पामे
अन्न ॥ कर्म जिननें जोउ निमा रे, खीला रोप्या कन्न ॥ ३५ ॥
॥ चे० ॥ कर्म एक सुखपाले बैसै, सेवक सैवै पाय ॥ एक दय
गय चढया चतुरनर, एक आगल ऊजाय ॥ ३६ ॥ चे० ॥ उद्यम
मांणी अंधतणी पर, जग हीमै हाहतो ॥ कर्म वली ते लहै
सकल फल, सुखजर सेजै सूनो ॥ ३७ ॥ चे० ॥ ऊंदर एके
कीधो उद्यम ॥ करंमीयो करकोले ॥ मांहे घणा दिवसनो नूखो,
नाग रह्यो रुमसोलै ॥ चे० ॥ ३८ ॥ द्विवर करी मूषक तसु
मुखमां, दीयै आपणूं देह ॥ मार्ग लही वन नाग पथारधा,
कर्म मर्म जोवो एह ॥ चे० ॥ ३९ ॥

॥ ढाल ५ मी ॥ तो चढियो घन मान गजै ॥ ए देसी ॥

हिव उद्यमवादी जणे ए, ए च्यारै असमठ तो ॥ सकल
पदारथ साधवा ए, उद्यम एक समरठ तो ॥ ४० ॥ उद्यम
करतां मानवी ए, स्युं नवि सीजै काज तो ॥ रामें रयणायर तणी
ए, लीधो लंकाराज तो ॥ ४१ ॥ करम नियत ते अणुसरै ए, जेहमां
सत्त्व न होय तो ॥ देवल बाधमुख पंखिया ए, पित्र पैसंता जोय
तो ॥ ४२ ॥ विन उद्यम कीम नीकले ए, तिल मांहेथी तेल तो ॥
उद्यमथी जंची चढै ए, जोवो एकेंडिय वेल तो ॥ ४३ ॥ उद्यम
करतां इक समें ए, जेह न सीजै काज तो ॥ ते फिर उद्यमथी
हुवे ए, जो नवि आवे वाज तो ॥ ४४ ॥ उद्यमकरि ऊरयां विना
ए, नवि रंधायै अन्न तो ॥ आवी न पमै कोलियो ए, मुखमां हेपे
जतन्न तो ॥ ४५ ॥ कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यम कीधा कर्म
तो ॥ उद्यमथी दूरे टलै ए, जोउ कर्मनो मर्म तो ॥ ४६ ॥ दृढप्र
हार हत्या करी ए, कीधा पाप आरंज तो ॥ उद्यमथी खट मासमां
ए, आप अया अरिहंत तो ॥ ४७ ॥ टीपैश् सरवर जरै ए, कां
करे ३ पाल तो ॥ गिर जेहवा गढ नीपजे ए, उद्यम सकत निहाल
तो ॥ ४८ ॥ उद्यमथी जलबिंडुन ए, करे पाहाणमां ठाम तो ॥
उद्यमथी विद्या जणै ए, उद्यम जोमै दाम तो ॥ ४९ ॥

॥ ढाल ६ ॥ ए छिडी किहां राखी ॥ ए देसी ॥

ए पांचेही वाद करंतां, श्रीजिन चरणे आवै ॥ अमिय
रसै जिन वयण सुणीनै, आणंद अंग न मावै रे ॥ ५० ॥ प्राणी
समकित मति मन आणो ॥ नय एकांत म ताणो रे ॥
॥ प्रा० ॥ ते मिछ्या मति जाणो रे ॥ प्रा० ॥ ए आंकणी ॥ ए
पाचे समवाय मिछ्यां विन, कोइ काज न सीदै ॥ अंगुल जोगै

कवल तणी पर, जे बूजै ते रंजै रे ॥ प्रा० ॥ ५१ ॥ आग्रह आणी
 कोइ एकनें, एहमां दिवै वमाई ॥ पिण सेना मिल सकल रंगंगण,
 जीते सुजट लमाई रे ॥ प्रा० ॥ ५२ ॥ तंतु स्वजावे पट उपजावै,
 काल क्रमें वणाई ॥ जवितव्यता होय ते नीपजे, नही तो विधन
 घणाई रे ॥ प्रा० ॥ ५३ ॥ तंतुवाय उद्यम जेतादिक, जाग्य सबले
 सहकारी ॥ ए पांचे मिल सकल पदारथ, उत्तमत जोवो विचारो
 रे ॥ प्रा० ॥ ५४ ॥ नियत वसे इलु कर्म अर्शनें, निगोदथकी नीक-
 लियो ॥ पुण्ये मनुज जवादिक पांमी, सद्गुरुनें जइ मिलियो रे
 प्रा० ॥ ५५ ॥ जवधितनो परपांक अयो तब, पंक्ति वीर्य उद्ध-
 सिक्कव ॥ जव्य स्वजावै शिवगति गांमी, शिवपुर जइनें वसियो रे
 ॥ ५६ ॥ वर्द्धमान जिन इण पर वीनवै, सासन नायक गा
 वोर ॥ मधवा सनतकुमार, पोहता सरग ॥ धरी घणो ॥ श्रीविजय
 ॥ ब्रह्मदत्त नाम ॥ ६ ॥ एह ॥ क, वीर जिनवर संयुण्यो
 ॥ ब्रह्मदत्त, सत्तम नयर निरत्त ॥ आव थय, कीर्तिविजय वाचक
 ॥ बाल ३ जी ॥ मुनिवर आर्य सुहस्ति ॥ ए देशी ॥ इति श्री पञ्च स
 पहिलो त्रिपृष्टि जाण, द्विपृष्ट दूसरो, तीजो स्वयंप्रभु जा-
 पुरुषोत्तम ए चोथो, पंचम परगमो, पुरुषसिंह परमाणिये वारंवार,
 ॥ नवमो कृष्ण नरेस, ए इमति दाता ॥ इमण नारे कहिस्थुं सूत्र
 ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव गुण ॥ इति ॥ उग्री ॥ इम मिथ्यात कह्यो
 ॥ ११ ॥ सातमो पंचमी नैजम जव ॥ इति ॥ उग्री ॥ इम मिश्र वखाणूं ॥ चो
 ॥ १२ ॥ अचल विष्वादन ॥ इति ॥ उग्री ॥ इम पंचम परमाणो, उघो प्रमत्त
 ॥ १३ ॥ रा ॥ कदाणो, के ॥ इति ॥ उग्री ॥ इम पंचम परमाणो, उघो प्रमत्त

पिठाणू ॥ १ ॥ अप्रमत्त सत्तम सलहीजै, अधम अपुरव करण
कहीजै, अनिवृत्ति नांम नवम् ॥ सुखम लोभ दसम सुविचार,
उपज्ञांत मोह नांम इग्यार, स्त्रीणमोह बारम् ॥ ३ ॥ तेरम
सयोगी गुणधाम, चवदम थयो अजोगी नाम, वरणू प्रथम
विचार ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म वखाणै, ए लक्षण मिथ्या गुणवाणै,
तेहना पंच प्रकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

॥ जेह एकांतनय पढ़ थापी रहै, प्रथम एकांत मिथ्यामती
ते कहै ॥ जैन शिव देव गुरु सहु नमै सारखा, तृतीय ते विनय
मिथ्यामती पारिखा ॥ सूत्र नवि सरदहै रहै विकल्प धणै, संस
यी नाम मिथ्यात चोशो जणै ॥ ६ ॥ समझ नही काय निज
धंद रातो रहै, एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहै ॥ एह अनादि अ
नंत अज्ञव्यनै, करिय अनादि थिति अंतसुज्ञव्यनै ॥ ७ ॥ जेम
नर खीर घृत खंरु जिमनै वमै, सरस रस पाय बलि स्वाद केहवो
गमै ॥ चौथ पंचम, बढै ठाण चढने पमै, किणहि कषाय वस आग्र
पहलै अमै ॥ ८ ॥ रहै विच एक समयादि षट आवली, सहोय
सासादनै थित इसी सांजली ॥ दिव इहां मिश्र गुणवाण तीजो
कहै, जेह उत्कृष्ट अंतरमदुरत लहै ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ वे कर जोडी तांम ॥ ए देशी ॥

॥ पहिला ज्यार कषाय, सम कर समकितो, कैतो सादि
मिथ्यामती ए ॥ ए बेहिज लहे मिश्र, सत्य असत्य जिहां, सर
दहणा बेजं बती ए ॥ १० ॥ मिश्र गुणालय मांहि, मरण लहै
नही, आन बंधनपमै नवो ए ॥ कैतो लहै मिथ्यातकै समकि
त लहै, मति सरखी गति परजवै ॥ ११ ॥ ज्यार ॥ ११ ॥ ज्यार
बदप करी लहै, मति विन किहां, समकितपणो ॥ १२ ॥ शूर्यान्,
च अविज्ञ

गुणगण, तेत्रीस सागर, साधिक धिति एहनी जणी ए ॥ १२ ॥
 दया उपशम संवेग, निरवेद आसता, समकित गुण पांचै धरै ए ॥
 सहु जिन वचन प्रमाण, जिन शासन तणी, अधिक १ उन्नत करै
 ए ॥ १३ ॥ कोइक समकित पाय, पुदगल अरधतां, उत्कृष्टा जव
 में रहै ए ॥ केइएक जेदी गंठि, अंतरमहुरते, चढते गुण शिवपद
 लहै ए ॥ १४ ॥ ज्यार कषाय प्रथम्म, त्रिण वलि मोहनी, मिथ्या
 मिश्र सम्यक्तनी ए ॥ साते प्रकृति जास, परही उपशमें, ते उप
 शम समकित धणी ए ॥ १५ ॥ जिण साते कय कीध, ते नर
 क्हायकी, तिणहिज जव शिव अनुसरै ए ॥ आगलि बांध्यो आऊ,
 तातें तिहां थकी, तीजै चोथे जव तिरै ए ॥ १५ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ इण पुर कंबल कोइ न लेसी ॥ ए देसी ॥

पंचमदेसविरति गुणगण, प्रगटै चोकमी प्रत्याख्यान ॥ जेण
 तजैवा बीस अजक, पांम्यो आवकपणो प्रत्यक्ष ॥ १७ ॥ गुण
 इकवीस तिके पिण धारै, साचा बारै व्रत संजारै ॥ पूजादिक षट्
 कारज साधै, इग्यारै प्रतिमा आराधै ॥ १८ ॥ आर्च रौड
 मंद, आयो मध्य धरम ॥ सूरती महीन मागध, ऊणी
 गुणगणो धित जोम ॥ १९ ॥ तिमिणो बासाते गु
 अंतरमहुरत मान ॥ पंच प्रमाद ॥ २० ॥ जिण गाम, तेण
 गुणधांम ॥ २० ॥ शिवरकलप जिण कलप आचार, साधै
 स्वक सार ॥ उद्यत चोथा ज्यार कषाय, तेण
 कहाय ॥ २१ ॥ रुधो राखै चित्त समाधै, धरम
 आराधै ॥ जिहां प्रमाद क्रिया विध नासै,
 गुण नासै ॥ २२ ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ नदी यमुनाके तीर उडै दोय पंखिया

पहिले अंसे अहम गुणगणातणें, आरंजे

ते गयें ॥ उपशम श्रेणि चढै जे नर हुवै उपशमी, कपकश्रेणि
 कायक प्रकृति दस कय गमी ॥ २३ ॥ तिहां चढता परिणाम
 अपूरव गुण लहै, अठम नाम अपूरव करण तिणें कहै ॥ सुकल
 ध्याननो पहिलो पायो आदरै, निरमल मन परिणाम अमिग ध्याने
 थरै ॥ २४ ॥ हिव अनिवृत्त करण नवमो गुण जाणियै, जिहां जाव
 थिररूप निवृत्ति न जाणियै ॥ क्रोध मान ने माया संजलणा हणें,
 उदै नही जिहां वेद अवेदपणो तिणें ॥ २५ ॥ जिहां रहै सुखम
 लोभ कांइक शिव अजिलखै, ते सुखम संपराय दसम पंक्ति अखै ॥
 संत मोह इण नाम इग्यारम गुण कहै, मोह प्रकृति जिण ठाम
 सहू उपशम लहै ॥ २६ ॥ श्रेणि चढयो जो काल करै कियही
 परै, तो आयै अहमिइ अवर गति नादरै ॥ च्यार वार समश्रेणि
 करै संसारमें, एक जेवे दोय श्रेण अधिक न हुवे किमें ॥ २७ ॥
 चढि इग्यारम सीम समीप पहिले पमै, मोह उदय उत्कृष्ट अरथ
 पुदगल रमै ॥ कपकश्रेणि इग्यारम गुणवाणो नही, दशमअकी
 बारम्भ चढै ध्याने रही ॥ २८ ॥

॥ दाल ॥ ६ ॥ एक दिन को हिव इहं सुंदर पास ॥ ए देसी ॥
 खीणमोह नामे गुणवा ॥ २९ ॥ तम जाण, मोह खपायो नेमो
 आयो केवलज्ञान ॥ प्रगटपणे जिहां चरित अमल यथा आख्यात,
 हिव आगे तेरम गुणथान तणी कहै वात ॥ २९ ॥ घातीय चोकमी
 कय गई रही य अघातीय एम, प्रकृति पिज्यासी जेहने जूना कपक
 जेम ॥ दरसन ज्ञान वीरज सुख चारित पंच अनंत, केवलज्ञान
 प्रगट थयो विचरै श्रीजगवंत ॥ ३० ॥ देखे लोक अलोकनी बानी
 परगट वात, महिमावंत अठारै दोषण रहित विख्यात ॥ आठे वरसे
 उणी कही इक पूरवकोमि, उत्कृष्ट तेरम गुणवाणें ए थिति जोमि
 ॥ ३१ ॥ कर सेवेसी करण निरुध्या मन वच कय, तेण अयोगी

अंत समय सहु प्रकृति स्वपाय ॥ पांचे लघु अक्षर ऊंचरता जेहनों
मांन, पंचम गति पांमें सिवपद चन्द्रम गुणग्रान ॥ ३२ ॥ त्रोजे
चारमें तेरमें मांहे न मरै कोय, पहिलो बीजो चौथो परजव साथे
होय ॥ नारक देवनी गति मांहे लाजै पहिला च्यार, धुरला पांच
तिरी मांहे मणु ए सर्व विचार ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम नगर चाहम मेरु मंरुण, सुमति जिण सुपसानलै ॥
गुणदाण चवद विचार वरण्यो, जेद आगमनें जलै ॥ संवत सतरैसै
ठत्तीसै, श्रावण वदि एकादसी ॥ वाचक विजय श्री हरष सानिध,
कहै मुनि इम धर्मसी ॥ ३४ ॥ इति श्री चवदै गुणगणा स्तवनं ॥

॥ अथ नव तत्व भाषा गर्भित स्तवनं ॥

॥ दूहा ॥ नमस्कार अरिहंतनें, सिद्ध सुरि नवज्ञाय ॥ साधु
सकल प्रणमी करी, प्रणमी श्रीगुरु पाय ॥ १ ॥ करस्युं हूं नव
तत्त्वनी, गाथा ज्ञासा रूप ॥ मंद बुद्धि गुरु सानिधै, कहिस्युं
सुगम सरूप ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ सूरती महीनानी ॥ ए देसी ॥

जीव अजीवें पुण्य पाप तिम आश्रव सोय, संवर निज्जर
बंध मोक्ष ए नव तत होय ॥ चवद २ बायाल वयासी बलि बायाल,
सत्तावन बारै चौ नव क्रम जेदनी माल ॥ १ ॥ इग डु ति चौविह
पणविह बधिह जीव कहाय, चेतन त्रस थावर वेदै गई करणे
काय ॥ एगेंदी सुखम बादर ए दोय जिय ठाण, सन्नि असन्नि
पणिंदी वि ति चौरिंद्री आण ॥ २ ॥ ए सग पङ्कता अपङ्कता चवदै
होय, अनुक्रम जीव ठाण ए सूत्र प्ररूप्या सोय ॥ नाण दंसण
गरित वीरज तप तिम उपयोग, ए धरु लक्षण लक्षत जीव इय
इ लोग ॥ ३ ॥ इग आहार सरीर इंदिय पङ्कती तीन, सासोसास

प्राणा मन धर्म ए अनुक्रम लीन ॥ चार एगेंदी पंच पञ्जती
 विगलें जोय ॥ पंच असन्नि सन्नि तें धर्म पञ्जती होय ॥ ४ ॥ इंद्रिय
 पांच उतास आळ बल ए दस प्राण, चार व सात आव एगिंदी
 विगलें जाण ॥ असन्नि सन्नि पंचेंदी नें नव दस क्रम आय, प्राणाधी
 जेवि प्रयोग जिय मरण कहाय ॥ ५ ॥ धर्माधर्म आगास तोनूना
 त्रिण्ण जेद, काल दसम इग आगास पुगल चार विवेद ॥ खंधा देस
 पणस परमाणू चवद अजीव, धर्माधर्म पुगल नन काल ए पांच
 न जीव ॥ ६ ॥ चवण सहाई धर्मे शिर संठाण अधर्म, अवगाई पूरण
 गल्लें नन पुगल धर्म ॥ समयावलय महुत्त दोह पख मास नें
 साल पढ्योपम सागर उत्पपणी तप्पणी काल ॥ ७ ॥ धर्म इग दो संग
 संग संग धर्म इग अंक गिणाय, एग मुहुत्त आवलि संख्या सूत्र
 कहाय ॥ तीन सात वलि सात तोन ऊनासें माण, केवलनाणी
 जणियो एह महुत्त प्रमाण ॥ ८ ॥ साता उच्च गोय मणु सुर हुग
 पंचिंदी जाय, पांच शरीर आदि प्रति शरीर उवंग कहाय ॥ आदि
 संघेण संठाण चौवर्ण अगुरु लहु होय, परध उतास तेम वलि अ
 तप ने उजोय ॥ ९ ॥ सुजखगइ निम्नाणत सादि दगु नीमाल,
 सुर नर तिरि आळ तिळंकर पुण्य वयाळ ॥ तस वाइर पञ्जत प
 तेय थिरं सुज सोय ॥ सुजग सुसर आडळ जलें तस दसको होय
 ॥ १० ॥ नाणंनराय धर्म कनव वोजा नोचअसाय, मित्य आवर
 दशनादग त्रिक पचवीस कसाय ॥ तिरियं च डग एगेंदी वि ति
 चौरिंदी तेय, कूखगडे उपधा अपसत्थ वस चौ जेय ॥ ११ ॥ पद
 म मंघयण विना संघेण तेम संठाण, एम वयासी प्रकृति पाप त
 तनी ए जाण ॥ आवर सुहम अपळ सादारण अशिरै गेय, असुज
 उजग दू सरणा डळ अजस दस लेय ॥ १२ ॥ पण चौ पण तिय
 इंदी कसाय अवय तिम जोग वायालीस सेय पचोत्त क्रिया संजो

॥ कांडव अहिगरणीया पावसिया परितोप, प्राणातिपात और
 जकी परिगहियानो ताप ॥ १३ ॥ माया प्रत्यय मित्रादंसण वत्ती
 तेम,, अपञ्चत्वाणकी दिठ पुठ पाडुच्चिय जेम ॥ सामंतो पनवणि
 य ने सत्थि सहत्थे जेह, आझापनकी वेयारण अणजोगा तेह ॥
 १४ ॥ अणव कंख पच्चयना उवलंगी समुदाय, प्रेम द्वेष इरियाव
 ही किरिया ए कहिवाय ॥ सुमति गुपति परिसहज इ धम्म जाव
 ण चारित्त, पणतिग बावीस दस बारै पण संबर तत्ते ॥ १५ ॥ इ
 रिषा ज्ञावा एषण सुमतीना जेद होय, आदान जंरु उच्चार नि
 स्केवण पांचे जोय ॥ मनगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती त्रिण जाण, हि
 व आगे बावीस परिसह कहूं हित आण ॥ १६ ॥ जूख पिपासा
 सीत ज्ञेसने मांसा निरवत्थ, अरति जोषा चरित्रा नैषिद्या सिज्जा
 सत्त ॥ अक्कोसवहजायण अलाज रोग त्रिण फास, मल सक्कार य
 ज्ञा अज्जाण समत्त समास ॥ १७ ॥ खंति मद्दव अज्जाव मुत्ती तव
 संजंम सम्म, सत्थं सौच अकिंचन बंनचेरज इ धम्म ॥ पढम अ
 नित्य असरण संसार एण अनत्त, असुचि आश्रव संबर निज्जर ज
 नि ज्ञावो नित्त ॥ १८ ॥ लोक सुजाव बोध डुरलज इग्यारम गाम,
 धरम साधक अरिहंत ए बारै ज्ञावना ज्ञाव ॥ सापायक जेदोप
 स्थापन बीजो सोय, परिहार विश्रुद्ध सूखम संपराय चउत्थो जोय
 ॥ १९ ॥ तिम अहस्काय चरित्त सरव जिय लोग प्रसिद्ध, जेह सु
 विधि आचरणे के जिय पांम्या सिद्ध ॥ बारै बिध निज्जरतत्त्व बंध
 ना च्यार प्रकार, प्रकृति ठिई अनुजाग प्रदेस जेदे निरधार ॥ २० ॥
 अणसण जणोदर वृत्ति संखेप रसनो त्याग, काय कलेस सद्धीनता
 बाहिर तप परु ज्ञाग ॥ पायचित्त विनय वेवावज्ज तेम सिज्जाय,
 ध्यान कान्तसग अरुणंतर तप परु विध आय ॥ २१ ॥ प्रकृतिसु
 ज्ञाव काल अवधारण अित निरवंच, अनुजागै रस तेम प्रसेदे दल

नौ संच ॥ पट प्रतिहार धार तरवार मद्य वलि तेम, निगम चित्र
 कर कुंजकार जंमारी जेम ॥ २२ ॥ अनुक्रम आठ नामना ज्ञाप्या
 जे जे ज्ञाव, तिम ज्ञानावरणादिक अमना एह सज्ञाव ॥ इम संसेपे
 विवरण कीना आठे तत्त, प्रस्तावै पांम्यो वरण वस्युं हिव मोख
 तत्त ॥ २३ ॥ संत पदै परूपण इव्य नें खेत्र प्रमाण, फरसन काल
 पांचमो ठेठो अंतर जाण ॥ जाग सातमो ज्ञाव आठ तिम अलप
 बहुत्त ॥ ए नव जेदें ज्ञावन कस्युं नवमो तत्त ॥ २४ ॥ मोक्ष एक
 पदवी वै जे पदेअविनाज्ञाव, व्योम कुसुम तिम ससिक मृंग ॥ जिम
 नहीय अज्ञाव ॥ एहवो जे पद मोक्ष तेहनो मगण छार, विवरण
 कर वरणवस्युं सुषाल्यो सुहुम विचार ॥ २५ ॥ संमत्तै द्वायक सन्नी
 अतन्नी येसन्नि, अणहारी आहारी अणहारी ऊपन्न ध्व्य प्रमाणे सिद्ध
 जीव ॥ इव्य होय अनंत, लोग असंखम जाग एग सिद्ध होय अणंत ॥
 २६ ॥ फरसन क्षेत्रथी अधिक काल इग सिद्ध प्रतीत, सादि अनंती
 थित जिन आगमथी सुविदीत ॥ प्रतिपातां ज्ञावै नहि सिद्धां अं
 तर जोय, सरव जीवथी जाग अनंतम सद्धू सिद्ध होय ॥ २७ ॥
 दंशण नाण जेइने बे ते द्वायक ज्ञाव, जीवत जेइने वलि परणाम
 क ज्ञाव समाव ॥ सद्धूथी थोमा वेद नपुंसकथी जे सिद्ध, तेहथी
 थीनर अनुक्रम संख गुणा सुप्रसिद्ध ॥ २८ ॥ जे जाणे जीवादिक
 नव तत्त तस सम्मत्त, अणजाणंताने हुय जे सरथा नेरत्त ॥ सरव
 जिनेसर मुखथी ज्ञाप्या वयण जइत्य, ए दुद्धी जेइने मन संमंत
 निबल तत्य ॥ २९ ॥ अंतरमहुरत एग मात्र फरस्यो सम्मत्त, उ
 र्द्ध पुगल परियट्ट नियम संसार निमित्त ॥ उंसप्यणिय अणंते इ
 पुगल परियट्ट, अनंत अतीत अनागत तदगुण वयण प्रगट्ट ॥ ३०
 ॥ इम नव तत्त जेद पन्निजेदै विवरण कीध, आवक आयह कीन
 सहाय पूरण रंस पीध ॥ कोटिक गण सुज सदन प्रकास नदी उपमान,

श्रीजिनलान्जचंद कुल-पूनमचंद समान ॥ ३१ ॥ अग्र्यानादिक
करिवर सिंहे वयरी साख, रत्नराजमुनि ते वरसाखानी पमिसाख ॥
ग्यानसार ते पमिसाखानी सूखम माल, ए नव पद नव रयणे
विनाणें गूंथी माल ॥ ३२ ॥ संवहर निश्चय नय विगई प्रवचन
माय, परम सिद्धि पद वाम गतें ए अंक गिणाय ॥ माघ किसन
ससि वार मेरु तिथ परन कीध, व्यास कथा तजि तत्वकथा ज्ञान
नर फल लीध ॥ ३३ ॥ इति नवतत्व भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ अथ दंडक भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ दूहा ॥ रुषजादिक चोवीस नमि, तेहनो सूत्र विचार ॥
दंरुक रचनायें तबुं, संखेपे निरधार ॥ १ ॥ नरक सात दंरुक
प्रथम, असुरा नाग सुवन्न ॥ विजु अगन दीवो दही, दिसि प्रवणें
अणियन्न ॥ २ ॥ पुढवी आज तेज बलि, वाज वणस्सइ काय ॥ बि
ति चौरिंदी गजधर, तिरि नर तिहां मिलाय ॥ ३ ॥ व्यंतर जोइस
वेमाणिया, ए दंरुक चोवीस ॥ एहना द्वार कहूं द्विवै, गणनाये
ते वीस ॥ ४ ॥

॥ दाल ॥ १ ॥ वीर जिणेसरनी ॥ ए देशी ॥

सररीर जगाहण संघयणेंसणा संठाण, कोदाई लेसिंदिय दो
समुग्घाय प्रमाण ॥ दिठी दंसण नाण जोग तिम बलि उवयोग,
उपपात बलि चवण ठिई पज्जति प्रयोग ॥ १ ॥ केदिसिनोआहार
सन्नि गई आगयवेय, दार गाहा दुगनो ए अरथ कह्यो संकेव ॥
द्विव तेवीस दारनो रहिस समय अनुसार, अल्प रुची हुं तेहयो
कहिसुं अल्प विचार ॥ २ ॥

॥ दाल ॥ २ जी ॥ देसी सूरती महीनानी ॥

चौ गजधर तिरि वाज कायें व्यास सररीर, मनुष्य सें पांच
दंरुक इगवीस रुखा ति सररीर ॥ आवर व्यासनें जघन्य उकोसे देइ

प्रमाण, जाग असंख्यातम इग अंगुलनो परिमाण ॥ १ ॥ सरवनो
 जघन्य स्वजावकं अंगुल जाग संख्यात, उक्कोसे पणसै धनु सागरने
 विक्कात ॥ सुरनो सात हाथ गण्णय तिरि वणस्सय काय, जोयण
 सहस साधक इक सहस अनुक्रम आय ॥ २ ॥ नर तेइंदि तिगान्
 वेइंदी जोयण बार, एग जोयण चउरेंडी देह उंचै आकार ॥ आरंज
 काले वैक्रिय देहनो ए परिमाण, जाग एक इग अंगुलनो संख्या-
 तम जाण ॥ ३ ॥ सुर नरनें साधिक इक लाख जोयण इक लाख,
 नवसै जोयण तिरयंचने ए सूत्रे साख ॥ साजावकणी डुगणो नारक
 वैक्रिय काय, एक महूरत नारय नर तिरि च्यार कहाय ॥ ४ ॥
 सुरनें पक एक उक्कोसविज्जवण काल, विगल संघयणी आवर सुर
 नारकनी माल ॥ गण्णय नर तिरनें पर विगलनें ठेवठ एक, सरव
 जीवनें च्यार दसेससाये लेष ॥ ५ ॥ नर तिरनें पर सुरनें सम-
 चौरंस संठाण, हुंरग इग नारग विगलेंडी सूत्र प्रमाण, नाणाविह
 भयसूईमरुरनी चंड आकार, वणसइ वाऊ तेऊ जू बुदबुद अप्पा-
 कार ॥ ६ ॥ सहनें च्यार कसाय गण्णय पर नर तिरि दोय, वेमां-
 णिय नारग तेऊ वाऊ विगल त्रिक होय ॥ जोयसि तेऊ लेसा सेस
 रह्या ने च्यार, दार इंडियनो सुगम तेहनो स्युं विसतार ॥ ७ ॥
 समुद्धात सग नरनें पण गण्णय तिरि देव, नरग वाचुनें च्यार
 नेसनें तीनं जेव ॥ दिढी दोय विगलमें आवरने मिछ्यात, सेसने
 तीन दिढि जिम प्रवचनमें विक्कात ॥ ८ ॥ आवर बि ति नें एक अच-
 स्कू दंसण होय, चौरिंडी ते चस्कू अचस्कू दंसण होय ॥ मनुजने
 चचार सेस दंरुगमें दंसण तीन, नाण अनाण तीन सुर तिर
 नारगनें छीन ॥ ९ ॥ आवर दोय अनाण विगल दो नाण अनाण,
 गण्णय अणुनें तीन अनाणनें पांचू नाण ॥ सुर नारग एकादस तिरनें
 तेरै जोग, मनुजने परै च्यार विगलनें जोग प्रयोग ॥ १० ॥

वाङ्मकायनें पाच तीन आवर संयोग, मनुजने बार नरग तिर देवनें
 नव उपयोग ॥ विगल डुगै पण प्रम चौरिंड़ी आवर तीन, नववाय
 इग चवण दार दोनुं समकीन ॥ ११ ॥ एगसमै संख्यात असंख्या
 चवण पपात, गणय तिरि विकलेंड़ी नारय सुरनी ख्यात ॥ मणुआ
 अथावर वणस्सई संख संख अणंत, मणुज असन्नी असंख चवंत
 तेम उपजंत ॥ १२ ॥ बावीस सात तीन दस वरस सदस उक्किठ,
 वणस्सई च्यारनें तीन दिवस तेऊने जिठ ॥ नर तिर तीन पढ्य
 सुर नारग अयर तेतीस, व्यंतर पढ्य अधिक लाख वरस पढ्य
 जोइस ॥ १३ ॥ असुरादिक दसनें इक सागर अधिको आय, देसें
 ऊणा दोय पढ्यनो नवेय निकाय ॥ विगलनें बार वरस गुणचांस
 दिवस ठम्मास ॥ अंतमुहुत्तजइनें पुढवाई दस रास ॥ १४ ॥
 जूवनपती नारग व्यंतर दस वरस हजार, पढ्य तेना अमंस वेमा-
 णिय जोइस धार, सुर नर तिरि नारगनें षट आवरनें च्यार ॥ विग-
 लनें पंच पङ्कती ए अठारम दार ॥ १५ ॥ सरब जीवनें होय बए
 दिवसनो आहार ॥ होय न होय पंचादिक दिस ए सब मजार,
 दीह कालकी चौविह सुर नारग तिरयंच ॥ विगलनें हेन पणसा
 सन्नि रहित थिर पंच ॥ १६ ॥ गणय मणुजनें दीह कालकी सन्ना
 होय, केइक आचारज कहे दिठिवायथी दोय ॥ निच्चय पङ्कता पं-
 चिंदि तिरि नर जेह, चौविह देवां माहे आवी ऊपजै तेह ॥ १७ ॥
 संखाउपङ्कत पंचेदी तिरि नर तेम, पङ्कता जू दग पत्तेय वणस्सई
 जेम ॥ ए सरबेमें निश्चै सुरनी आगति हुंति, पङ्कत संख गणय
 तिरि नर सग नरके जंत ॥ १८ ॥ नरक उद वस्त्या नर तिर
 उपजै न हुवे सेस, जू अप्प वणस्सईमें नरग विण उपजै असेस ॥
 पुढवाई दस पयमें जू आऊ वणजंति, पुढवाई दस पयमें तेन वाऊ
 उवजंत ॥ १९ ॥ तेन वाऊनो गमण पुढवी पद नवमें हुंत, पुढ-

वाई दस पदमें विगल जावंत आवंत ॥ सद्गुमें तिर गति आगति
 मणुआ सद्गुमें जाय, तेउ वाऊथी मरीने जीव मनुज नवि थाय
 ॥ २० ॥ श्रीपुरसै चोविह सुर तिरि नर तीनूं वेद, आवर विगल
 नारकनें एक नपुंसक जेद ॥ पऊता मणु वादर अगन वेमाणिक
 तेम जवण नरग व्यंतर जोइस चौपण तिरि, एम ॥ २१ ॥ त्रैइंड़ी तेइंड़ी
 पृथ्वी ने अपकाय, वायु वणस्सइ अधिक अनुक्रम करि कहिवाय ॥
 हे जिन ए सद्गु जावमें पांम्या वार अनंत, तेहनो अनुक्रम गिखतां
 किमही न आवै अंत ॥ २२ ॥ नर सुर विन सद्गु दंरुगमें ते गति
 संयोग, लाधो नही तुह दंसण कीनो कम्म प्रयोग ॥ सुरमें पिण
 दंसण लहि विरत न पांमी मूल, ते सुर जात सहावे देसविरत
 प्रतिकूल ॥ २३ ॥ आरजदेस आरजकुल शुद्ध सुगुरु उपदेस, तेहथी
 तुह दरसणनो किंचित पांम्यो लेस ॥ धारक तारक कारक वारक
 दंशण देव, आतम गुण संसार समत कम्म सयमेव ॥ २४ ॥
 खरतर गच्छ जट्टारक श्रीजिनलाज सुरिंद, रत्नराजमुनि सीस तेहना
 पद अरविंद ॥ रज मकरंदे लीनो ग्यानसार तनु सीस, तेण तव्या
 तेवीस दार दंरुग चौवीस ॥ २५ ॥ संवत ससि रस वारण तेम
 चंद निरधार, पोस मास पख उज्जल सातमनें सोमवार ॥ आवक
 आग्रहथी ए कीनो अलप विचार, अछम चौमासो कर जैपुर नगर
 मजार ॥ २६ ॥ इति श्री चोवीस दंरुग स्तवनं ॥

॥ अथ जीवविचार भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ डुहा ॥ जुवन प्रदीपक वीर नमि, किंचित् जीव सरूप ॥
 कहस्युं पूर्वाचार्य जिम, बालबोध गुरुरूप ॥ १ ॥

॥ डाल १ ॥ देसी सुरती महीनानी ॥ ए देशी ॥

एक मुगति बीजा संसारी जीव डु जेद, सत्ता जिनै सिद्ध अनं
 तै रूप अजेद ॥ संसारी आवर इग तिम त्रस दोय प्रकार, जु अप-वाइ

सैन वण स्सई थावर धार ॥ १ ॥ फिटकरयण मणि विइम हिंगुल वलि
 हरियाल, मनसिल पारो सुवरण आदि धातुनी माल ॥ सेढी वल्ली
 अरणेटो पालेवो पाषाण ॥ जोरुल तूरी नुस नूमि पाइण जे खाण
 ॥ २ ॥ सुरमो लूण जात ए पुढवी काय विवेद ॥ नूमि आकास,
 नुस हिम करग आऊना जेद, हरित घास ऊपर जे जलकण धूं
 अर तेम ॥ होय घणो दधि अप्पकाय पिण पाइण जेम ॥ ३ ॥
 अंगारा जाला जोजर तिम नुलकापात, असणि कणग विद्युतादिक
 अगनि जीव विहात ॥ उअमगजकलिका मंरुल वलि मुख वात,
 सुद्ध गुंज तिम घण तणु धाऊ जेदेँ हात ॥ ४ ॥ साधारण पत्तेय
 वणस्सई जीव ड जेय, एग सररी अनंत जीव साधारणनेय ॥ कं
 दा अंकुर कूपल फूलण बलि जंबाल, जूंफोला अदत्तिथ सरवे जे फ
 ल वाल ॥ ५ ॥ गाजर मोथ वायलो थेग पालंको साग, गुपत
 सिरा सांधा गांठा जांजे सम जाग ॥ काटी माल जूंमिमें रोप्यां पछ
 व थाय, जाल पान इत्यादिक साधारण वणकाय ॥ ६ ॥ एग सररी रे
 एक जीव जे ते प्रत्येक, फूल गाल फल मूल काठ बीजै जिय एक ॥
 वण पत्तेय विना जे पांचे पुढवीकाय, सयल लोगमें व्यापक अंतमु
 हुचैँ आय ॥ ७ ॥ सूखमथी ते नियमा दिछी निजर न होय, लोका
 लोक प्रकास थकी वलि अलप न कोय ॥ कवमी संख गंमोला लहिगा
 लटनी जात, चंदन काअलसीमेहरजोका विहात ॥ ८ ॥ माय बा
 हाक्रम पौरादिक बेइंडी होय, गोमी माकण जूआ कीमा कीमी दोय
 ॥ दीपक ईली धीवेली गोगीमा जात, चरम जू कागादहिया गोवर
 कम नुतपात ॥ ९ ॥ घनकीमा जिम चोरकीमा गोवालो तेह, ईली
 कंधुक इइगोप तेइंडी एह ॥ वीठू ठंकण जमरा जमरी इंडी च्यार,
 तीमा माखी मांस मछर कंसारी धार ॥ १० ॥ कवमोला मांक
 मिय पतंग इत्यादिक जेद, नारक तिरि मणु देव पंचेइ च्यार बिबेद ॥

धर्मा वेसा सेला अंजन रिवा क्तात, मघा माधवई नारंग ए नौमै
 सात ॥११॥ जलचारी अलचारी नन्नचारी तिरयंच, मछ कछ सुस-
 न्धार मगर गाहा जल अंव ॥ चौपय नुरपरि नुनपरि साप नुचारी
 तेय, तिविहा गाय साप तिम नकुल अनुक्रम लेय ॥१२॥ खेचर चरम्
 रोम पंखी चमचेरु कपोत, मनुजलोकथी बाहिर समुग विगय पंख
 होत ॥ सरवे जल थल खचर समुष्ठम गप्पय दोय, कम्म अकम्म जूमि
 अंतर दोवा मणु जोय ॥१३॥ असुरादिक दस होय वाण व्यंतरिया अठ,
 जोइस पंच वेमाणिय डुविहासु तें दिठ ॥ पनरे जेदे सिद्ध कह्या ए
 जीव प्रकार, तनु मानादिक हिव एहनो कडिसुं अधिकार ॥१४॥ देह
 आनखो एक सरीरे अितनो मान, प्रांश जेहने जेता तिम वलि योन
 प्रमाण ॥ अंगुल जाग असंखसदू एगिंदी काय, जोयण सहस साधिक
 पत्तेय वणस्सई काय ॥१५॥ वि तिचउरेंडी अनुक्रम उक्किदेह ऊंचास,
 वारै जोयण तीन गाड इग जोयण जास ॥ सत्तमना नेरइया धणु
 सय पंच प्रमाण, तेहथी अरथ २ ऊशा अनुक्रम रयणाण ॥१६॥ जो
 यण सहस गप्पधर मछ नुरगनो देह, गाड धणुअ पुहत्त नूचारी पं
 खी जेह खेचर नव धणु नुरग नुयंग जोयण नव होय, नव गाळ
 परिमाण समुष्ठम चौपय सोय ॥ १७ ॥ खरु गाड उंचास चउप्प
 य गप्पय मांण, तीन कोस उकोस मनुजनो काय प्रमाण ॥ नुवन
 व्यंतर जोइस वेमाणिय ईसायंत, सात हाथ उकोसैं ऊंचपणै तणु
 हुंत ॥ १८ ॥ सनतकुमार माहेंडै पर बल लांत ४ पांच, शुक्र स
 हत्तारे उकोस च्यार कर वांच ॥ आणत प्राणत आरत अच्युत हाथें
 तीन, नवथैवेयक दोय पंचाशुतर इग लीन ॥१९॥ बावीस सात तीन
 दस वरस सहस्सैं आय नू आज्जवाळ वणती दिन तेऊकाय ॥ बार
 वरस गुणचास दिवस तिम वलि ठम्मास, अनुक्रम बेइंडी तेइंडी
 चौरिंडी रास ॥ २० ॥ सुर नारंग तेतोस अयर उकोसैं आय, चौपय

तिरिय मनुजनौ तीन पढ्योपम थाय ॥ जलचर उरपर जुजपर
 उक्तासे पुवकोमि, पंखीने इग जग असंख्य पढ्यनो जोम ॥ २१ ॥
 सरब सूखम साधारण समूहम मणुं जेह, जहन्न उक्तासें अंतमुहुत्त
 नियम थिति तेह, इम उगाहण आख्यो संखेपे अधिकार, जे वलि
 इत्थ विसेस विसेस सूत्रसुं धार ॥ २२ ॥ असंख्य उसपिणी सहु
 एगिंडी आपणी काय, उपजै चवै अनंत साधारण वणस्सई काथ ॥
 संख्याता संवत्तर विगल आपणी देह, सात आठ जव पंचेडो तिरि
 भणुआं जेह ॥ २३ ॥ नारकथी उदवरती जीव नरक नवि जाय,
 देव चवीने ते वलि देवपणे नवि थाय ॥ इंडिय सासोसास आठ
 बल ए दस प्राण, च्यार ठ सात आठ इग डु ति चौरिंडीय जाण
 ॥ २४ ॥ सन्नि असन्नि पंचेई दस नव अनुक्रम जोय, प्राणश्रक।
 जेवि प्रयोग जिय मरणें होय ॥ ज्ञोम सायर संसार अपार अनंती
 वार, जमियो जीव धरम विन जोण असीनें च्यार ॥ २५ ॥ सग सग
 सग सग दस चवदे दो दो दो लाख, च्यार च्यार तिम च्यार चवद
 लख सूत्रें साख ॥ जू अप तेज वाऊ वणयत्तेय साधार, बि ति चौ
 पण तिरि नारग सुर नर अनुक्रम धार ॥ २६ ॥ काय न आथ न
 पाण न जोणी कुल नही जात, सादि अनंत जंग जिन आगम थित
 विहात ॥ रोग न सोग न जोग जोग नहो नारी लिंग, नहीय नपु-
 सक पुरसतणा नही अंग उपंग ॥ २७ ॥ नाण दरस चारित वीरज
 ए च्यार अनंत, सिद्ध थया तेहथी सिद्धतै सिद्ध कहंत ॥ इम ए
 जीवविचार गाथाथो ज्ञाषारूप श्रावक, आग्रहथी में कीनो सुगम
 सुगम संरूप ॥ २८ ॥ खरतर गहं जट्टारक श्री जिनलाज सूरीस,
 रत्नराज गणि ग्यानसार मुनि सीस जगीस ॥ संवत ससि रस
 वारण ससिहर धर निरधार, माघ चोथ दिन कीनो जैपुर नगर
 मजार ॥ २९ ॥ इति श्री जीवविचार स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ समवसरण विचारगर्षित भाषा स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्री जिनसासन सेहरो, जगगुरु पास जिणंद ॥
प्रणमी जेहना पाय कमल, आवी चोसठ इंद ॥ १ ॥ तीर्थकर आवे
तिहां, त्रिगमो करै तइयार ॥ समकित करणी साचवै, एह कहूं
अधिकार ॥ २ ॥ करै प्रदांसा समकिती, मिथ्यात्वी होवै मूक ॥
सूर्य देख हरखे सहू, जिम अंधारे धूक ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर बखानी राणी चेलणा ॥ ए देसी ॥

आप अरिहंत जलै आविया जी, गावै अपठरह गंधर्व ॥
समवसरण रचै सुरवराजी, संखेपे ते कहूं सर्व ॥ ४ ॥ आ० ॥
भुवनपति वीस इंदै मिथ्या जी, सोलह व्यंतर सार ॥ जोइस ड
दस वेमाणिय जुमचा जी, चौसठ इंद सुविचार ॥ ५ ॥ आ० ॥
पवन सुर पूंज परमारजै जी, जूमि योजन-सम जान ॥ मेघकुमर
रचै मेघने जी, करिय सुगंध छिम्काव ॥ ६ ॥ आ० ॥ अगर कपूर
सुंज धूपणां जी, करय श्री अगनकुमार ॥ वाणव्यंतर दिव वेगसूं
जी, रचय मणि पीठका सार ॥ ७ ॥ आ० ॥ पुहप पंच वरण
उरंध मुखै जी, वरषए जाणु प्रमाण ॥ जवणवइ देव त्रिगमो जलो
जी, करय तें सुणउ सुजाण ॥ आ० ॥ ८ ॥ रचय गढ प्रथम रूपा-
तणो जी, सोवन कांगरै सार ॥ रवि ससि रयण कोसीसको जी,
कनकनो बीच प्राकार ॥ आ० ॥ ९ ॥ रतनगढ रतनने कांगरे जी,
रचय वेमाणि सुरराज ॥ जलो त्रीजो गढ जीतरे जी, जिहां विराजै
जिनराज ॥ आ० ॥ १० ॥ जीत उंची धणुं पांचसै जी, सवा-
तेतीस विसतार ॥ ॥ धनुष से तेर गढ आंतरो जी, प्रौल पचास
धणु ड्यार ॥ आ० ॥ ११ ॥ दस पंच २ त्रिहुं गढ तणो जी, पावनी
वीस हजार ॥ थाक अम नहिय चढतां अकां जी, एक कर उच्च
विस्तार ॥ आ० ॥ १२ ॥ पंच धणु सहस पृथ्वीअकी जी, उच्च

रहे त्रिगढ़ आकास ॥ तेह तल सहू यथास्थित वसै जी, नगर
 आराम आवास ॥ आ० ॥ १३ ॥ तोरण चिहुं ९ दिस तिहां जी,
 नीलमणि मोर निरमाण ॥ इसय धणु मध्य मणि पीठका जी,
 उच्च जिण देह परिमाण ॥ आ० ॥ १४ ॥ च्यार आसण तिहां
 चिहुं दिते जी, मोतीयें जाकजमाल ॥ सम विच कूण ईसाणमें
 जी, देवबंदो सुविसाल ॥ आ० ॥ १५ ॥ देवकुंडुजि नाद उपदिसे
 जी, जिन गुण गावसी तेह ॥ अह्न जिम आइ सिर ऊपरे जी,
 गाजसी तेह गुण गेह ॥ १६ ॥ आ० ॥

॥ ढाल २ ॥ सफल संसारनी ॥

पुढ दिसि आसणे आय वेसे पहु, सुर रुत चौमुख रूप देखै सहू
 ॥ दीपै असोक तस बारगुण देहथी, देखि हरखै सहू मोर जिम
 मेहथी ॥ १७ ॥ मोतियां जालि त्रिण ठत्र सुविसाल ए, रूप चि
 हुं ९ दिसैं चामर ढाल ए ॥ योजनगामनी वांण श्री जिनतणी,
 जगवंत उपदिसै बार परषद जणी ॥ १८ ॥ प्रदक्षिणारूपथी अग
 निकूलैं करी, गणधर साधची तिम वेमाणिय सुरी ॥ ज्योतषी जु
 वणनी वितरी स्त्रीपणें, नैरुतकूण जिनवांण ऊनी सुणे ॥ त्रिहंत
 णा पति वायवकूणमें जाण ए, सुर वैमाणिय नर तारि ईसाण ए
 ॥ बारह परखदा मद मन्वर गोम ए, नूख त्रिस विसरै सुणै कर जोम
 ए ॥ १९ ॥ पूछ जामंमल तेज प्रकास ए जोयण सहस ध्वज उं
 च आकास ए, ऊलहलै तेज ध्रुव चक्र गगने सही, महक सहू
 बारणे धूपधाणा सही ॥ २० ॥ बाहण वहिल सहू धरिय पहिले
 गढै, होय पगचार नर नार उंचा चढै ॥ जिनतणी वाणि सुणि
 जीव तिरयंच ए, वैर तजि बीय गढ रहे सुख संच ए ॥ २१ ॥
 पुन्यवंत पुरुष ते परषद बारमें, सुणें जिनवाणि धन गणिय अंव
 तारमें ॥ चौविह देव जिनदेव सेवा रचै, मणिमयी मांहिलो प्रौल

माहे वसैं ॥ २२ ॥ चिहुं दिसि वाटली वावि चौ जाणिये, विदिसि
चौ कूण दोय २ वखाणिये ॥ आठ जिहां वावि जल अमृत जेम ए,
स्नान पाने वपु निरमल हेम ए ॥ २३ ॥ जय विजय जयंत अप
राजिया, मध्ये कंचण गढै प्रोल वसंतिया ॥ तुंवरो पुरुष खट्वांग अ
र्चि माल ए, रजतगढ प्रौखना एह रखवाल ए ॥ २४ ॥ पहिलो
त्रिगमो नहुयपुर जिण ग्राम ए, देव महर्दिक रचै तिण ठाम ए ॥
करण वारवार नही कारण कोय ए, आठ प्रातीहारज ते सही
दोय ए ॥ २५ ॥ जिण समवसरणनी रुद्धि दीठी जियै, तेद ध
धन धन अवतार पायो तियै ॥ पास अरदास सुणी वंठित पूरज्यो,
हिव मुऊ ताहरो शुद्ध दरसन हुज्यो ॥ २६ ॥

॥ कलश ॥

इम समवसरणै रुद्धि वरणै सहू जिनवर सारखी ॥ सर-
दहे ते लहे शुद्ध समकित परम जिनधर्म पारखी ॥ प्रकरण सिद्धांत
गुरु परंपर सुणी सहू अधिकार ए, संस्तव्यो पासजिनंद पाठक धर्म
वर्द्धन धार ए, ॥ २७ ॥ इति समवसरण विचार स्तवनं ॥

॥ अथ श्री रुषभदेवजी सुण २ सैत्रुंज स्तवन लि० ॥

॥ ढाल ॥ पाटोभरजी पाठियै पवारो ॥ ए देवी ॥

॥ सुण २ सैत्रुंजगिर स्वामी, जम जीवण अंतरजांमी, हुं
सो अरज करूं सिरनांमी ॥ कृपानिध विनती अवधारो, जवसायर
पार उतारो, निज सेवक वांन वधारो ॥ क० ॥ १ ॥ प्रभू मूरति
मोहनगारी, निरख्यां हरखै नर नारी, जानं वारी हुं वार हजार
क० ॥ २ ॥ हिव किसिय विमासण कीजै, मुऊ ऊपर महिर घरीजै
दिल रंजन दरसन दीजै ॥ क० ॥ ३ ॥ आज सयल मनोरथ फलिया
जवरना पातिक टलिया, प्रभु जो मुऊसै मुख मिलिया ॥ क० ॥
॥ ४ ॥ समरथा संकट टलि जावै, नव नव नित मंगल आवै, मुऊ

आतम पुन्य जरावै ॥ क० ॥ ५ ॥ करजोमी वीनंती कीजै, केसर
चंदन चरचीजै, दिन धन २ तेह गिणीजै ॥ क० ॥ ६ ॥ प्रभु दरस
सरस लहि तोरो, अति हरषित हुवो चित मोरो, जिम दीछा चंद
चकोरो ॥ क० ॥ ७ ॥ परतिख प्रभु पंचम आरै, वीस माहा जय
संकट वारै, सहु सेवक काज सुधारै ॥ क० ॥ ८ ॥ सेवो स्वांमि
सदा सुखदाई, कमणा न रहै घर काई, बाधै संपत शोचन सवाई ॥
॥ क० ॥ ९ ॥ नाजिराय कुलंबर चंदा, जव जन मन नयण आनंदा,
जलगै सुर असुर सुरिंदां ॥ क० ॥ १० ॥ जयकारी रिषज जिनंदा,
प्रह सम घर परम आणंदा, वंदे श्रीजिन जक्ति सूरिंदा ॥ क० ॥ ११ ॥
इति शत्रुंजय स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ दसमीका वडा स्तवन पार्श्वनाथजीका लि० ॥

॥ ढाल १ ॥

पास जिनेसर जग तिलो ए, गवमीपुर मंमण गुण निलो
ए, तवन करिस प्रभु ताहरो ए, मन वंछित पूरो माहरो ए ॥ १ ॥
नयरी नांम वणारसी ए, सुरनयरी जिण रुद्धे हसी ए ॥ तेण पूरी
ठै दीपतो ए, अश्वसेन राजा रिपु जीपतो ए ॥ २ ॥ वामा तसु
घर नार ए तसु गुणहि न लपै पार ए ॥ तास जयर अवतार ए,
तसु अतिशय रूप उदार ए ॥ ३ ॥ चवद सुपन तिण निसि लह्या ए,
अनुक्रम करि ते सहु मन ग्रह्या ए ॥ पूठै जूपतिनें कह्या ए,
करजोमि कह्या ते जिम लह्या ए ॥ ४ ॥

॥ ढाल २ ॥

प्रथम सुपन गज निरख्यो, मायतणो मन हरख्यो ॥ बीजै
वृषज उदार, घरणी जिण धरयो नार ॥ ५ ॥ तीजै सिंह प्रधान,
जसु बल कोय न मान ॥ चउथै देखी श्रीदेवी, कमल वसै सुरसेवी
॥ ६ ॥ पांचमै पुष्पनी माला, पंच वरण सुविशाला ॥ ठै दीवो

ए चंद, ग्रहगण केरो ए इंद ॥ ७ ॥ सातमें सूरज सार, दूर कियो
 अंधकार ॥ आठमें धज लहकंती, वरण विचित्र सोहंती ॥ ८ ॥
 नवमें पूरण कूँज, जरियो निरमल अंज ॥ देखि सरोवर दसमें,
 मनह अयो अति विसमें ॥ ९ ॥ समुद्र इग्यारमें ठामें, खीरजलधि
 इण नामें ॥ बारम देव विमान, वाजित्र धुन गीत गान ॥ १० ॥
 तेरम रत्ननी रासि, दह दिसि ज्योति प्रकासी ॥ सुपन चवदमें
 ए दीछो, पातिक धूमथी नीछो ॥ ११ ॥ सुपन कह्या सुविचार, हरख्यो
 झूप ऊदार ॥ पुत्ररतन होस्यै ताहरै, आस्यै उदय हमारै ॥ १२ ॥

॥ दुहा ॥

चवद सुपन श्रवणे सुणी, हरख कियो सुविचार ॥ सुंदर सुत
 तुमें जनमस्यो, कुलदीपक आधार ॥ १३ ॥ वामा प्रीतम वचन सुण,
 आवी मंदिर ऊत्ति ॥ देव सुगुरु कीरति करै, जनम कियो सुकयत्य
 ॥ १४ ॥ इण अनुक्रम ऊगो दिवस, कीधा सुपन विचार ॥ ते घर
 पहुता आपणै, दीधां दान अपार ॥ १५ ॥

॥ ढाल ३ ॥

हिव जनम्या जगगुरुजगत्र अयो जयकार, खिण इक नारकिर्ये
 पायो सुख अपार ॥ दिसिकुमरी मिलकर सूत्रकरम निसि कीध,
 कर आनक पोहती वंछित तेहनो सिद्ध ॥ १६ ॥ तिणहीज निसि चोसठ
 इंड मिली तिहां आवै, लेइ निज जत्तै सुरगिरि स्नात्र करावै ॥ क
 री जनम महोन्नव जननी पासै ठावै, तिहांथी सुर सब मिल छी
 प नंदीश्वर जावै ॥ १७ ॥ इस रथण विहाणी ऊगो दिवस ऊदार,
 घर १ गाईजै क्रीजै मंगलाचार ॥ इग्यारमें दिवसे मिली सहू परिवार,
 तसु नाम दियो श्री उत्तम प्रासकुमार ॥ १८ ॥ प्रभु वाधै दिन २ कला
 करी जिम चंद, त्रिहुं ज्ञान विराजितरूप जिसो देविंद ॥ गुणकला
 विव्रक्षण विद्यातणो निधान, जोवनवय आयो परणायो राजान ॥ १९ ॥

॥ बाल ४ ॥

कुमरपदै प्रभु रहतां काल सुखै गमै ए, आयो मन वैराग
 संजम लेवा समै ए ॥ तब लोकांतिक देव जणवै अवसरू ए, देस
 संवहरी दांन याचक जन सुखकरू ए ॥ १० ॥ स्वामी संजम लेय
 इंद्रादिक सब मिढ्या ए, देस विदेस विहार करी कर्म निरदढ्या
 ए, पांमीय केवलज्ञान सुरै महिमा करी ए, थापीय चौविह संघ
 सुगति रमणी वरी ए ॥ २१ ॥

॥ बाल ५ ॥

इम श्री गौमीपास्ततणा गुण जे नर गावै, ते नर नारी इह
 परलोग सुबंधित पावै ॥ संघ करी संघपति जिके गवमीपुर जावै,
 चोर धाम संकट टलै विघन बुराइ न आवै ॥ ३२ ॥ धरणांय
 पञ्चमावइ जास वहे सिर आंण, सांमल वरण सुसोजित नव कर
 काय प्रमाण ॥ कढपवृद्ध चिंतामणि कामगवी सम तोलै, श्री गुण-
 शेखर सीस समयरंग इण पर बोलै ॥ ३३ ॥ इति श्री गोमी पार्श्व-
 जिन स्तवनं ॥

॥ अथ अजित शांति जिन स्तवनं लि० ॥

मंगल कमला कंद ए, सुख सागर पूनम चंद ए ॥ जगगुरु
 अजिय जिएंद ए, शांतीसर नयणानंद ए ॥ १ ॥ बिहुं जिनवर
 प्रणमेव ए, बिहुं गुण गाइस संखेव ए ॥ पुण्यजंमार जरेसु ए,
 मानव जव सफल करेसु ए ॥ २ ॥ कोरुहि लाख पचास ए, सागर
 जिनसासन ज्ञास ए, रिसह जिनेसर वंस ए, उवझाय सरोवर
 हंस ए ॥ ३ ॥ इण अवसर तिहां रा, ए, राजा जितशत्रु तिहां
 गाजियो ए ॥ विजया तसु घरना बिहुं रमयति पासा सार ए
 ॥ ४ ॥ कूखहि जिन अवतार ए, नणी ए, न हार ए ॥ नयर
 बस्यो दस मास ए, प्रभू पूरी ज ॥ ५ ॥ बिहुं जण

धन आशंदिओ ए, सुत नांम अजिय जिण तो दियो ए ॥ तिहुअण
 सयल उवाह ए, क्रम २ बाधे जगनाह ए ॥ ६ ॥ हंस धवल सारिस
 तणी ए, गति सुललित निज गति निरजणी ए ॥ मलपति चलै
 गैल ए, जाणो नयण अमीरस रेल ए ॥ ७ ॥ अवर न समो सं
 सार ए, वलि न्यान विवेक विचार ए ॥ गुण देखो गज गहगह्यो ए,
 लंठन मिलि पग लागी रह्यो ए ॥ ८ ॥ जोवन वय जब आवियो
 ए, तब वर रमणी परणावियो ए ॥ पीय साथै सब काज ए, प्रभु
 पावै पुहवी राज ए ॥ ९ ॥ द्विद्वयणापुर गाम ए, विश्व
 सेन नरेश्वर नांम ए राणी अचिरा देव ए, मनहर सुख माणे बेव
 ए ॥ १० ॥ चवदह सुपने परवरयो ए, अचिरा उयरें सुत अवत
 र्यो ए ॥ मानव देव वखाणियो ए, चक्रीसर जिणवर जाणियो
 ए ॥ ११ ॥ देस नयर हुय संत ए, तिग नांम दियो श्रीशान्त ए
 ॥ जिन गुण कुण जाणै कही ए, त्रिहुं नुवणे तसु उपम नही ए
 ॥ १२ ॥ नयण सलूणो हिरण्यो ए, वन सिंहे बीहै एकलो ए ॥
 नयण समाधि निरोध ए, इण नयणे नारि विरोध ए ॥ १३ ॥ गी
 तहि राग सु रंग ए, पिण पन्नै लोक कुरंग ए ॥ तो लंग्यो स
 सि संक ए ॥ तिण पांम्यो नाम कलंक ए ॥ १४ ॥ इण पर मृग
 अति खलजड्यो ए, जय जंजण सांमि सांजड्यो ए ॥ आणंदियो
 मन आपणो ए, पाच सेवे मिल लंठन तणो ए ॥ १५ ॥ लीला पति
 परणे घणी ए, नव नविय कुमर रायां तणी ए ॥ बल गल अ
 यण जोगवे ए, पीय राज जल पर जोगवे ए ॥ १६ ॥ कुमर त
 णें मंमल तमें ए, पंचास ॥ स वरसां गमे ए ॥ तो तेजै दिणय
 र जिसो ए, ऊपन्नो च प्राप्तकुमनसो ए ॥ १७ ॥ साथी जरह ठ
 खंर ए, वरतावी अणान विराजि ॥ चवद रयण नव निहि सही
 ए, त्रमु मोल सह निधान, जोव ए ॥ १८ ॥ सहस बहुतर पुर

वरा ए, वत्तीस मौखवद्ध नरवरा ए ॥ पायक गांमै कोरु ए, विन्न
 वे नमै वे कर जोरु ए ॥ १९ ॥ हय गय रहवर जुजुवा ए, लख
 चौरासी मंदिर हुआ ए ॥ लाख त्रि वाजित्र धमधमै ए, वत्तीस
 सहस नाटिक रमै ए ॥ २० ॥ रूप जिसी सुरसुंदरी ए, लक्षण ला
 चण्य लोला जरी ए ॥ जंगम सोहग देहरी ए, एसी चौसठ सह
 स अंतेजरी ए ॥ २१ ॥ अवरज रुद्धि प्रकार ए, मणि कंचण र
 यण जंकार ए ॥ ते कहिवा कुण जाण ए, वपुचपु रे पुण्य प्रमाण
 ए ॥ २२ ॥ इम चक्कीसर पंचमो ए, चौथो दूसम सूसम समो ए ॥ वरस
 सहस पचवीस ए, सब पूरी मनह जगीस ए ॥ २३ ॥ इण पर बिहुं
 तीर्थकरा ए, चिर पालिय राज विविह परा ॥ जाणी अवसर ए
 सार ए, बिहुं लीधो संजम जार ए ॥ २४ ॥ बिहुं खम दम धीर
 ज धरी ए, बिहुं मोह मयण मद परिहरी ए ॥ बिहुं जिन ज्ञाण
 समाण ए, बिहुं पांभ्या केवलनाण ए ॥ २५ ॥ बिहुं देवहि कोरु-
 हिमहि ए, बिहुं चौतीसै अतिसय सहि ए ॥ समवसरण बिहुं ठाण
 ए, बिहुं योजनवाण वखाण ए ॥ २६ ॥ नाचे रणकत नेजरी ए,
 बिहुं आगलि इंड अंतेजरी ए ॥ टिगमिग जोवे जग सहू ए, रंगहि
 गुण गावै सुरबहू ए ॥ २७ ॥ बिहुं सिर ठत्र चमर विमल, बिहुं
 पंग तल नव सोवन कमल ॥ बिहुं जिनतणें विहार ए, नवि रोग
 न सोग न मारि ए ॥ २८ ॥ बिहुं उवयार जुवन जरी ए, बिहुं
 सिद्ध रमणसुं परवरी ए, बिहुं जंजी जव फंद ए, बिहुं उदयो
 यरमाणंद ए ॥ २९ ॥ इम धीजो ने सोलमो ए, जांणे चिंतामण सुर
 तरु समो ए ॥ शुणि अति संज विहाण ए, तिहां इह परजव नवि
 हांण ए ॥ ३० ॥ बिहुं उठव मंगल करण, बिहुं संघ सयल डरिय
 हरण ॥ बिहुं वर कमल नयण वयण, बिहुं श्रीजिनराज जुवण
 रयण ॥ ३१ ॥ इम जगते जोलिमतणी ए, श्रीअजिय शांति

जिण धुय ज्ञाणि ए ॥ सरण विहुं जिण पाय ए ॥ श्रीमैरुनंदन
उवझाय ए ॥ ३३ ॥ इति अजित शांति वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहण स्तवनं ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ कपूर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥

वरधमान जिनवरतणा जी, चरण नमूं चित लाय ॥ ज्ञान
क्रिया जिण उपदिस्ती जी, सब सुख तणो उपाय ॥ जविक जन
धर श्रीजिनउपदेस, वूटे कर्मकलेस ॥ ज० ॥ आंकणी ॥ पमिलेहण
मुहपत्ती तणी जी, ज्ञाखी वै पचवीस ॥ तिहां ए ज्ञाव विचारिये
जी, इम ज्ञाखै जगदीस ॥ ज० ॥ २ ॥ प्रथम वे पास विलोकिये
जी, सूत्र अरथनी दृष्टि ॥ ए पमिलेहण दृष्टिनी जी, करै धर्मनी
पुष्टि ॥ ज० ॥ ३ ॥ समकित मिथ्या मिथ्रनी जी, मोहनी तीननो
त्याग ॥ कामराग स्नेहरागनें जी, तज वलि तिम दृष्टिराग ॥ ४ ॥
ज० ॥ सीप वधू टक गुरुथकी जी, वाम हाथ करनाउ ॥ नव
अखोमा आदरो जी, नव पखोमा गमान ॥ ५ ॥ ज० ॥ देवतत्व
गुरुतत्वसूं जी, धर्मतत्व ग्रह सार ॥ कुशुरु कुदेव कुधर्मनो जी,
तीनतणो परिहार ॥ ६ ॥ ज० ॥ ग्यान दरसण चारित्रना जी,
संग्रह तीन आचार ॥ तजो विराधन तीन ए जी, एह अरथ अव-
धार ॥ ज० ॥ ७ ॥ मन वच कायानी सदा जी, गुपति गृहीजे
शुद्ध ॥ परिहरिये वलि जाणनें जी, नीने दंरु विशुद्ध ॥ ज० ॥ ८ ॥
पमिलेहण पचवीस ए जी, मुहपत्तीनी सार ॥ हिव पमिलेहण
अंगनी जी, ते पिण चतुर विचार ॥ ज० ॥ ९ ॥ हास्य अरति
रति धोयनें जी, सुद्ध करो वंभ वाह ॥ तज जय शोक डुगंठना
जी, दक्षिण पिण करै साह ॥ १० ॥ ज० ॥ धुरली लेस्या तीन
ए जी, ते सिरथी करि दूर ॥ रिद्धि रस साता गारवोजी, करि
मुखथी चक्रचूर ॥ ११ ॥ ज० ॥ काढ सड्य तीन नरथकी जी, मा

या नियाण मिथ्यात ॥ च्यार कषाय वेव गलथी जी, क्रोधादिक करा
 घात ॥ १२ ॥ ज० ॥ तज खटकाय विराधना जी, चरण विन्हे सुद्ध
 होय ॥ ए पम्हिलेहण अंगनी जी, पचवीसे तूं जोय ॥ १३ ॥ ज० ॥
 इम पम्हिलेहण जे करै जी, धर मन ज्ञान विवेक ॥ सकल करम दूरै
 करै जी, पांमैं सुख अनेक ॥ १४ ॥ ज० ॥ कलस ॥ इम वीर जिन-
 वरतणा मुखथी, अरथ गणधर सांजली ॥ कहै सूत्रवांणी मन सुहा-
 णी, सुणो जवियण मन रली ॥ उवज्जाय वर श्रीलङ्घिकीरत, मुख-
 थकी ए संग्रही ॥ मुंहपती पम्हिलेहण तणी विध, लङ्घिकीरत गणि
 कही ॥ इति श्रीमुहपती पम्हिलेहण स्तवनं ॥

॥ अथ आलोयण स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

ए धन सासन वीर जिनवरतणौ, जास परसाद उपगार
 आयै घणौ ॥ सूत्र सिद्धात गुरुमुखथकी सांजली, लहिय समकित
 अनें विरति लहिये वली ॥ १ ॥ धर्मनो ध्यान धर तप जप खप
 करै, जिणथकी जीव संसारसागर तिरै ॥ दोष लागे जिके गुरुमुख
 आलोइयै, जीव निमल हुवै वख जिम धोइयै ॥ २ ॥ दोष लागे
 तिके चार प्रकारना, धुरथकी नांम नैं अरथ ते धारणा ॥ किणही
 कारण वसै पाप जे कीजियै, प्रथम ते नांम संकप्प कहीजियै ॥ ३ ॥
 कीजीये जेह कंदर्प प्रमुखै करी, दोष तेवीय परमाद संज्ञा धरी ॥
 कूदतां गर्वतां होय हिंसा जिहां, दर्प इण नांम करि दोष तीजो
 तिहां ॥ ४ ॥ विषलतां जीव जीवनेगिनर करे जिको, चोथौ आकु-
 द्विया दोष ऊपजै तिको ॥ अनुक्रमें च्यार ए अधिक एक एकथी,
 दोष धर प्रायश्चित्त लेह विवेकथी ॥ ५ ॥

॥ ढाल २ ॥ अन्य दिवस कोइ मागध आयो पुरंदर पास ॥ ए.देशी ॥

पाटी पोथी कवली नवकरवाली जोय, ग्यानना उपगण-
तणी आसातन कीधी होय ॥ जघन्यथी पुरमद्व एकासणो आंबिल
उपवास, अनुक्रम एह आलोयण सुगुरु वताई तास ॥ ६ ॥ ए
जो खंमिit थायै अथवा किहांई गमाय ॥ तो वलि नवा करायां
दोष सहू मिट जाय ॥ आपना अणपन्निखेह्यां पुरिमढनो तप धार,
गिरतां एकासणनें गमता चोथ विचार ॥ ७ ॥ दर्शनना अतिचार
तिहां पुरमद्व जघन्य, एकासण आंबिल अठम चिहुं जेदं मन्न ॥
आशातन गुरु देवनी साहमीसुं अप्रीति ॥ जघन्य एकासणानी
आलोयण चढती रीत ॥ ८ ॥ अनंतकाय आरंज विणास्यां चोथ
प्रसिद्ध, वि ति चउरेंडी त्रसायां एकासणथी वृद्ध ॥ बहु बि ति चौरें-
डिय हएयां वि ति चउ उपवास, संकटपादि चिहुं विधि डुगुणा
डुगुण प्रकास ॥ ९ ॥ उदेही कुलियावमा कीमो नगरा जंग, बहुत
जलोयां मूक्या दस उपवास प्रसंग ॥ वमन विरेचन कमि पातन
आंबिल इक एक, जीवांणी ढोलंता दोय उपवास विवेक ॥ १० ॥
संकप्पादिक एक पंचेंडी उपड्व होय, दोइ त्रिण आठ दसै उपवासै
आलोयण जोइ, बहु पंचेंडी उपड्व ठठ अठमें दस वीस ॥ चिहुं
प्रकारै चढती आलोयण सुण ले सीस ॥ ११ ॥ पंचेंडीनें लकमी
प्रमुखै कीध प्रहार, एकासण आंबिल उपवास नें ठठ विचार ॥ साथ
ममकें लोक समकें राज समक, कुमा आल दियां डुइ चौथरु ठठ
प्रत्यक ॥ १२ ॥ उपवास दस दंभायां तेम मरायां वीस, इक लख
असी सहस नवकार गुणो तजि रीस ॥ षष्ठ चौमास वरस लग
इक त्रिण दस उपवास, अधिको क्रोध करे तो आलोयण नहि तास
॥ १३ ॥ सूआवमना दोष कियां गुरु ऊपर रोस, जीव विराधन
कीधां बहु असतने पोस ॥ करीय डवालस बार हजार गुणो नव-

कार, मिच्छाडुकम देइ आलोवो वारोवार ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ बे कर जोडी तांम ॥ ए चाल ॥

॥ विण कीधा पञ्चखाण, विण दीधां वांदणा, पक्किमणा
विध पांतरे ए ॥ अणोझा नें असिझाय, तिहा अविधै ज्ञाया, इ
कश् आंबिल आचरै ए ॥ १५ ॥ गंठसीनें एकत्र, निबी आंबिल, ज्ञां
गै आलोयण इमें ए ॥ एक पांच षट आठ, नवकरवालीय ॥ गुण
नवकार अनुक्रमे ए ॥ १६ ॥ उपवास जंग उपवास, आंबिल ऊप
रां, अधिको दंम वखाणिये ए ॥ पाचम आठम आदि, जंग कियां
वलो, फिर ग्रही पातिक हाणीयै ए ॥ १७ ॥ ऊखल मूसल आग,
चूले घरटियै, दीधै अठम तप करै ए ॥ मांगी सूई दीध, कातरणी
ठुरी, आंबिल चढता आदरै ए ॥ १८ ॥ जीव करावै युद्ध, रात्री
जोजन, जल तिरणो खेलण जूओ ए ॥ पापतणा उपदेश, परझोह
चींतव्या, उपवास एक२ जूजूआ ए ॥ १९ ॥ पनरे करमांदान,
नियम करी जंग, मद्य मांस माखण जरूया ए ॥ आलोयण उ
पवास, संकप्पादिक, चिहुं जेदे चढतां लिख्या ए ॥ २० ॥ बोड्या
मिरखावाद, अदत्तां दांन त्युं, जघन्य एकासण जाणायै ए ॥ अति
उत्कृष्टी एण, जाण आलोयण, उपवास दस२ आंणियै ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ सुगण सनेही मेरे लाल ॥ ए चाल ॥

॥ चौथे व्रत ज्ञागे अतीचार, जघन्य ठठ आलोयण धार ॥
मध्ये दस उपवास विचार, उत्कृष्टा गुण लख नवकार ॥ २२ ॥
परिग्रह विरमण-दोष प्रसंग, तीन गुणव्रतमांहे जंग ॥ च्यार सिद्धा
व्रतने अतिचारे, आंबिल त्रिण प्रत्येके धारे ॥ २३ ॥ शीलतणी
नववामि कहाय, तिहां जो लागो दोष जणाय ॥ त्रियनें फरस
हुआं अविवेके, एक आंबिल कीजे प्रत्येके ॥ २४ ॥ साधुअने आवक
पोसाध, एकैडी सच्चित्त संघट्टे कीध ॥ बीसर जोजे सच्चित्त जल पी

ध, दंन एकासण आंवल दीध ॥ १५ ॥ विण धोयां विण जूह्यां
 पात्रै, एकासण तिम पुरिमद मात्रै ॥ गइ सुहपत्तो आंवल सारो,
 तिम नुवै अदम अवधारो ॥ २६ ॥ ब्यार आगार वींनो राखै, व्रत
 पञ्चखाण करै पट् साखै ॥ दोषे मिठामिडुकरु दाखै, आलोयण
 लेतां अज्जिदाखै ॥ २७ ॥ आलोयणनो अति विस्तार, पूरो कहिता
 नावै पार ॥ तोपिण संकेपै तंत सार ॥ निरमल मन करतां वि
 स्तार ॥ २८ ॥ इम श्रीवीर जिनेसर स्वांमी, जसु आगम वचने
 विधि पांमी ॥ जीतकळपठाणांगे आदि, वली परंपर गुरु सुप्रसाद २९

॥ कलश ॥

॥ इम जेह धरमी चित्त विरमी, पाप सर्व आलोयनें ॥ ए
 कांत पूवै गुरु वतवै, शक्ति वय तसु जोयनें ॥ विध एह करसी
 तेह तिरसी, धरमवंततणै धुरै ॥ ए तवन श्रीधरमसिंह कीधो, चौ
 पने फल वशी पुरै ॥ ३० ॥ इति श्री आलोयण स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नंदीश्वर द्वीप स्तवनं ॥

नंदीसर वावन जिनालय, साध्वता चोमुख सोहे रे ॥ रुष
 ज्ञानन चंझानन वारिपेण, वर्द्धमांन मनमोहे रे ॥ नं० ॥ १ ॥
 आठमो द्वीप नंदीसर अदञ्जुन, बलयाकार विराजै रे ॥ तेहने मध्य
 बिहुं दिस सोजित, अंजन गिरिवर ठाजै रे ॥ नं० ॥ २ ॥ जोयण
 सहस चोरासी ऊंचा, ऊंचपणे अजिरामा रे ॥ मूलै प्रभुल सहस
 दस जोयण, उवरि सहस कर ॥ ३ ॥ नं० ॥ ते ऊपर प्रासाद
 प्रभूना, अति उत्तंग नदारा रे ॥ साधू जंया विद्याचारण, वांदे वि
 विध प्रकारा रे ॥ नं० ॥ ४ ॥ चैत्यै ५ इकसो चौवीस, विंव संख्या
 सब दाखी रे ॥ ध्यावो सेवो जिविजन जगते, सुध आगम कर सा
 खी रे ॥ नं० ॥ ५ ॥ ऊंचपणे सहु जोयण बहुत्तर, सो जोयण
 आयामा रे ॥ पिहुलपणे पचास जोयणना, प्रभूप्रासाद सुठामा रे

॥ नं० ॥ ६ ॥ धनुष पांचसै आयत प्रभुनी, विविध रतनमई काया
 रे ॥ जिन कल्याणक उज्जव करवा, सुरपति जेके आया रे ॥ नं०
 ॥ ७ ॥ अंजन अंजनगिरि चहुं उवरै, चोमुख च्यार विसाला रे ॥
 वाव१ विच इकर पर्वत, राजत रंग रसाला रे ॥ नं० ॥ ८ ॥ चो
 सठ सहस जोयण उत्तंगै, दस सहस सत पिहुला रे ॥ चिहुं दि
 सि सोल सहस दधिमुखगिरि, तिहां प्रासाद सुविमला रे ॥ नं० ॥
 ए॥ वाव५ नैं अंतर विदसैं, रतिकर परवत रूमारे ॥ दोय२ संख्या
 जगदीसै, कहा नही ए कूमा रे ॥ नं० ॥ १० ॥ जोयण सहस मान दस
 जंघा, दस२ सहस विस्तारारे ॥ ऊद्धरिसम संठाण जगत गुरु, नि
 श्वय ए निरधारघा रे ॥ नं० ॥ ११ ॥ तेह ऊपर प्रासाद सतोरण,
 अंजनगिरि परमाणै रे ॥ जिनपनिमानी संख्या तेहिज, श्रीजिन
 राज वखाणै रे ॥ नं० ॥ १२ ॥ इम प्रासाद प्रभूना बावन, नंदीसर
 चर दीपे रे ॥ इय जाव विधि पूजा करतां, मोह महा जम जापै
 रे ॥ नं० ॥ १३ ॥ प्रवचन सार उद्धार प्रकरणे, जोवाजिगमें जा
 णो रे ॥ इम अधिकार ठै ग्रंथ अनेकै, इहां संका मत आयो रे ॥
 नं० ॥ १४ ॥ जिम सुरपति विरचै तिहां पूजा, ते अनुभव इहा
 ल्यावो रे ॥ ध्यावो जिम पावो परमात्म, जैनचंड गुण गावो
 रे ॥ नं० ॥ १५ ॥ इति नंदीश्वर स्तवनं ॥

॥ अथ अढाई द्वीपै वीस विहरमाण स्तवनं ॥

॥ वंडु मनसुध विहरमाण जिणसर वीस, द्वीप अढीमें विचरै
 जयवंता जगदीस ॥ केवलग्यानने धारै तारै कर उपगार, किण २ ठामे
 कुण२ जिन कहस्युं सुविचार ॥ १ ॥ पैतालीस लक्ष योजन मानुषक्षेत्र
 प्रमाण, बलयाकारे आधे पुष्कर सीमा जाण ॥ दोय समुद्रै सोहं
 द्वीप अढाई सार, तिणमें पनरै करमाजूमिनो कहूं अधिकार ॥ २ ॥
 पहिलो जंबूद्वीप समै विच आल आकार, लांबो पिहुलो इक लख

जोयणने विसतार ॥ मोटो तेहने मध्य सुंदरसन नामें मेर, तिणथी
 दिसि विदसानी गिणती च्यारे फेर ॥ ३ ॥ मेरुथकी दक्षिण दिसि
 एह ज़रत सुन्न क्षेत्र, पांचसे बबीस जोयणठ कला तेहनो क्षेत्र ॥
 उत्तरखंभमें एहवो एरवत क्षेत्र कहाय ॥ इण चिहु करमांजूमी गए
 अरा फिरता जाय ॥ ४ ॥ तेत्रीस सहस बसे चोरासी जोयण जाणें,
 च्यार कला ए महाविदेह विखंज वखाण ॥ बावीससै तेरे जोयण
 एक विजय पडुलाण, एहवी वत्तीस विजय विराजै जेहने ठाण ॥
 ॥ ५ ॥ मेरु विचै कर पूरव पश्चिम दोय विजाग, सोलै ९ विजय
 तिहां विचरै श्रीवीतराग ॥ सासते चोथे आरे तारै श्रीअरिहंत,
 एहवे महाविदेह करमजूमि त्रीजी तंत ॥ ६ ॥ पूरव विदेह विजय
 पुष्कलावतो आठमी ठांम, पुंरुरीकणी नगरी तिहां श्रीलीमंधर-
 स्वांमि ॥ वप्रविजय पचवीसमी विजयापुरनो नांम, पश्चिम विदेह
 बीजो युगमंधिर कीजै प्रणाम ॥ ७ ॥ तिमहिज नवमी बह्विजय
 वलि पूरव विदेह, नयर सुसीमा त्रीजो बाहु नमूं धरि नेह ॥
 नलिनावर्त चोवीसमी पश्चिम विदेह वखाण, बीतसोका नगरी
 तिहां चोथो सुबाहु सुजांण ॥ ८ ॥ ए च्यारेइ जिणवर जंबूद्वीप
 मजार, महाविदेह सुंदरसन मेरुतणें परकार ॥ एहवो जंबूद्वीप महा
 गढ जेम गिरिंद, खाई रूपै दोय लख जोयण लवण समंद ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ दिवाली दिन आवियो ॥ ए चाल ॥

दीपै बीजो द्वीप ए, धन९ धातकी खंभ ॥ पिंडुलो चिहुं
 लख जोयणें, मंरुल रूपे मंभ ॥ १० ॥ दी० ॥ दोय ज़रत दोय
 एरवत, दोय वलि महाविदेह ॥ करमजूमि खटं ठै जिहां, उण-
 हिज नामें एह ॥ ११ ॥ दी० ॥ पूरव पश्चिम धातकी, खंभ गिणीजै
 दोय, विजयमेरु पूरव दिसै, पश्चिम अचलमेरु जोय ॥ १२ ॥ दी० ॥
 इक २ मेरुने अंतरे, करमजूमि तीन २ ॥ निज २ मेरुथी मांभिने,

लेखो चिहुं दिसि लीन ॥ १३ ॥ दी० ॥ श्रीसुजात जिन पांचमो,
 उधो स्वयंप्रभु ईस ॥ रुषजानन जिन सातमो, समरीजै निस दीस
 ॥ १४ ॥ दी० ॥ अनंतवीरज जिन आठमो, ए च्यारे जिनराय ॥
 पूरव धातकी खंममें, महाविदेह रहाय ॥ दी० ॥ १५ ॥ पहिली
 विहुं जिननी परे, विजयनगर दिसि ठाण, ॥ तिणहिज नांमे अनुक्रमें,
 विजयमेरु अहिनांण ॥ दी० ॥ १६ ॥ नवमो सूर प्रभु नमूं, दसमो
 देव विस्तार ॥ इम वज्रधर इग्यामो, त्रिकरण नमूं त्रिहुं काल ॥
 दी० ॥ १७ ॥ बारमो चंडानन जिन, पञ्चमी धातकी मांहि ॥ विचैरे
 च्यारुं जिणवरा, अचलमेरु उछाहि ॥ दी० ॥ १८ ॥ एहवो धातकी
 खंम ए, परदक्षणा परकार ॥ अठ लख जोयण वींटीयो, समुद्र कालो-
 दधि सार ॥ १९ ॥ दी० ॥

॥ ढाल ॥ ३ जी ॥ पहिली प्रतिमा एकण मासनी ॥ ए चाल ॥

कालोदधिने पैलै पार ए, वींठ्यो चूनी जेम विचार ए ॥
 सोलह लख जोयण विस्तार ए, दीप पूखरवर अति सुखकार ए ॥
 उलालो० सुखकार पुष्करद्वीप त्रीजो, तेहनें आधै पगै ॥ विच पञ्चो
 परवत मानुष्योत्तर, मनुष्यक्षेत्र तिहा लगै ॥ तिण आधिकर अठ लाख
 योजन, अरध पुष्कर एम ए ॥ तिहां करमजूमी ठ ए कहीजै, धात-
 की खंम जेम ए ॥ २० ॥ ढाल ॥ आधै पुष्करनें पूरव दिसै, मंदिर
 नांमे मेरु तिहां वसै ॥ पछिम विजुमाली मेर ए, इहां किण इतरो
 नांमे फेर ए ॥ २० ॥ फेर ए इतरो इहां नांमे, अवर ठामे को नही ॥
 एक २ मेरे तीन तीने, करमजूमि तिहां कही ॥ इम जरत एरवत
 माहाविदेहे, नांम सरखो हेत ए ॥ तिणहीज नांमे विजय सगली,
 सासता धर्म खेत ए ॥ २१ ॥ ढाल ॥ धातकी खंमै तिम पुष्कर
 सही, इहां क्षेत्रानी रचना विधकही ॥ बार २ कहनां ए विसतार ए,
 पहिला पर लेज्यो सुविचार ए ॥ २० ॥ सुविचार वाकी तेह सगलो,

नगर तिमहिज मन गर्में ॥ पूरवे पछिम जेहनी ते, तेह तिमहीज
 अनुक्रमें ॥ श्रीचंडबाहु जुजंग ईसर नेम व्यार तीर्थकरा, पूरवे पुष्कर
 अरध माहे, सरवर्जीव सुखंकरा ॥ २२ ॥ ढाल ॥ वैरसेन वंदू जिन
 सैतरेमो, श्रीमहाज्जड अठारम नित नमो ॥ देवजता उगणीसम
 देव ए, जसो रिद्ध वीसम जिण देव ए ॥ ३० ॥ जिण व्यार पुष्कर
 अरध माहे, कहा पछिम जाग ए ॥ तिहां मेरु विद्युनमालि पिहुं
 दिसि, विचरता वीतराग ए ॥ चौरासी पूरव लाख वरसा, आठ इक
 २ जिण तणो ॥ पांचसै धनुष सरिर तोहे ॥ सोवन वरणा सुहामणो
 ॥ ३३ ॥ ढाल ॥ काल जघन्ये ए जिण वीस ह ॥ दिव उत्कृष्ट
 जेद कहीस ए ॥ ॥ एकसो सत्तर तिहां जिनवर कहै, पांचे
 जरते जिम पांचे लहै ॥ ३० ॥ जिण लहै पांचे तेम पांचे,
 एरवत मिल दस हुवा ॥ इक २ विदेहे वत्तीस विजया,
 तिहा पिण ठै जूजूआ ॥ एकसो सत्तर एम जिनवर, कोमि
 नवसय केवली, नव सहस कोमी अवश मुनिवर, वंदिबै नित ते
 वली ॥ २४ ॥ ढाल ॥ इहां जरते एरवतें आज ए, पंचम आरै
 नही जिनराज ए ॥ धन २ पांचे महाविदेह ए, विचरे वीसै जिन
 गुणगेह ए ॥ ३० ॥ गुणगेह दोष अठार वरजित, अतिसयां चोतीस
 ए ॥ चौसठि इंद नरिंद सेवित, नमुं ते निसदीस ए ॥ तिहां आज
 तारण तरण विचरै, केवली दोय कोम ए ॥ दोय सहस कोमी सुसाधु
 बीजा, नमुं वेकर जोरु ए ॥ २५ ॥ कलश ॥ इम अढी द्वीपे पनर करमा
 भूमी क्षेत्र प्रमाण ए, सिद्धांत प्रकरण तेह जाख्या वीस विहरमाण
 ए ॥ श्रीनगर जेसलमेर संवत सत्तर गुणतीसै समै, सुखविजय हरख
 जिनंद सानिध नेह धरि भ्रमसी नमें ॥ २६ ॥ इति अढी द्वीप
 स्तवन संपूर्ण ॥ १ जंबूद्वीप २ धातकी खंरु ३ आधोपुष्करद्वीप ए
 ४ द्वीपमें ५ जरत ५ एरवत ५ महाविदेह १५ कर्मभूमामें विच

रता साश्वता २० बिहरमानको मेरा नमस्कार हुवो ॥

॥ अथ आबूजी तीर्थ स्तवनं ॥

॥ जात्रीमाज्जाई आबूजीनी जात्र करेज्यो, जात्र जणी ऊ
महेज्यो, तुम्हे नरजव लाहो लीज्यो रे ॥ जात्री० ॥ पंच तीरथो
मांहे गजै, आवू मारूमै देस विराजे रे ॥ जा० स्वरगधी वादे ला
गो, नुंचो अंबरियै जइ लागो रे ॥ जा० ॥ १ ॥ एतो देवानो वास
कहावै, निरखंता त्रिपति न आवे रे ॥ जा० ॥ एतो मुंगरियानो राजा,
एदनी ठै बारह पाजा रे ॥ जा० ॥ २ ॥ ठह रुतु वास वणायो,
एतो चंपला अंबला गयो रे ॥ जा० ॥ सरवर ऊरणा जांजा, जिहां
तिहां वनवेढ्या आजा रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ जार अढोरे वणराई,
एतो इहांहिज निजरे आइ रे ॥ जा० ॥ दहदिसि परिमल आवै, फू
लमानो रंग सुहावै रे ॥ जा० ॥ ४ ॥ ऊपर जूमि विसाला, देवल
दीगा रलिवाला रे ॥ जा० ॥ विमलमंत्री वरबाई, चक्रेसरि देवी सहा
ई रे ॥ जा० ॥ ५ ॥ पोरवारु वंस वदीतो, जिणइलपति साहि जो
तो रे ॥ जा० ॥ देवल तेण करायो, पाइण आरास मंमायो रे ॥ जा०
॥ ६ ॥ जीणी२ कोरणी ऊरयो, दल माखणजेम उकेरयो रे जा०
॥ नवी२ ज्ञांति वणराई, जिहां तिहां कोरणिया जिणराई रे ॥ जा०
॥ ७ ॥ उत्तरे पाइण जेतो, जोखीजे पाइण तेतो रे ॥ जा० ॥
आदि जिनेसर सांमी, प्रतिमा थापी हितकामी रे ॥ जा० ॥ ८ ॥
जगणिस कोम सोनइया, इव्य लागत करि जस लीया रे ॥ जा०
॥ करजोमीने आगै, मंत्री जिनवर पाय लागै, रे ॥ जा० ॥ ९ ॥
पुठै चढिया हाथी, मंमाणा पति साह साथीरे ॥ जा० ॥ इण देवल
समवरु कोई, जूमंमल मांहि न होई रे जा० ॥ १० ॥ बलि ति
स विगताला, वस्तुपाल अनै तेजपाला रे ॥ जा० ॥ देव नमी
राई, इहां तियां पिण सफल कराई रे ॥ जा० ॥ ११ ॥ ते

हवो जिणहर पासै, वार कोमनी लागति ज्ञासै रे ॥ जा० ॥ देस
 णी जेठाणी, आलानी अजब कहाणी रे ॥ जा० ॥ १२ ॥ इहां देव
 ल सोह वधारी, नेमनाथजी बाल ब्रह्मचारी रे ॥ जा० ॥ कस
 वट पाहण केरी, मूरत सुरमा रंग हेरी रे ॥ जा० ॥ १३ ॥ देवल
 वामो दीगो, ते तो लागै नयणै मीठोरे ॥ जा० ॥ तिहां केइ देवल
 पासै, लोक जेवे घणो तमासै रे ॥ जा० ॥ १४ ॥ त्रिण गात्र आ
 गल जाइयै, देवल देखी सुख लहिये रे ॥ जा० ॥ चोमुख प्रतिमा
 ज्यारो, आदिनाथ देव जुहारो रे ॥ जा० ॥ १५ ॥ सोवनमें साते
 घातो, जिंगमिग रही दिनने रातो रे ॥ जा० ॥ मण चवदेसै चम्मा
 लौ, जिण बिंबनो ज्ञाव निहालो रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ श्रीमाली
 ज्ञोम सोजागी, जिणवरथी जसु लय लागी रे ॥ जा० ॥ १६
 ॥ एहनी करणी वाहवाहो, इहां लीधो लखमी लाहो रे ॥ जा०
 ॥ १७ ॥ इण हुंगरियै आवी, जिण जात्र करै मन ज्ञावी रे ॥
 जा० ॥ जिहां तिहां पूज रचावै, नाटकिया नाच करावै रे ॥ जा० ॥
 ॥ १८ ॥ रातीजोगो दियरावो, जिनवरना जस गुण गावो रे ॥
 जा० ॥ साहमी वढल कीज्यो, जातरुलीनो जसलीजो रे ॥ जा०
 ॥ १९ ॥ आगेथी आवी चाली, वातां केइ अचरज वाली रे ॥
 जा० ॥ सुणिये ठै जे कोई, अदिनाणे जोज्यो तेई रे ॥ जा० ॥
 ॥ २० ॥ ए तीरथना गुण गावै, जात्रानो फल ते पावे रे ॥
 जा० ॥ ए तीरथ समतोळै, कुण आवै रूपचंद बोले रे ॥ जा० ॥
 २१ ॥ इति आबूजी स्तवनं ॥

॥ अथ सकल सास्वता चैत्य नमस्कार स्तवनं ॥

॥ रिपज्ञानन ब्रधमान, चंडानन जिन, वारिषेण नामे जि
 णा ए॥ १ ॥ तेह तणा प्रासाद, त्रिजुवन सासता, प्रणमुं बिंब सोहा
 मणा ए ॥ २ ॥ चेइहर सग कोमि, लाख बहुत्तर, चेइय प्रतिमा

सो असी ए ॥ ३ ॥ तेरेसे निव्यासी कोमि, साठ लाख सुंदर,
 जुवनपती मांहि मन वसी ए ॥ ४ ॥ बगरे देवलोक प्रासाद,
 चौरासी लाख, सहस ठिन्नू ने सातसे ए ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए चाल ॥

हिवै नवग्रीवेकै पंचानुत्तर सार, चेईहर त्रणसय त्रेवीसा
 सुविचार ॥ प्रत्येके प्रतिमा वीसासो तिहां जाण, अमत्रीस सह
 स सत साठ अठै गुण षाण ॥ ६ ॥ नंदीसर बावन कुंमल रुचक
 वखाण, चउ१ चेईहर साठ सबे त्रिहुं ठाण ॥ इकसो चोवीसै गुण
 प्रतिमा चिहुं नाम, च्यारसै चालिसा सात सहस प्रणमाम ॥ ७ ॥
 नंदीसर विदिसै सोलस कुल गिरि तीस, मेरू वन अस्सी दस कु
 रु गजदंते वीस ॥ मानुषोत्तर परवत च्यार२ इखुकार, त्रेसो अति
 सुंदर वहा सकार मजार ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥

॥ दिग्गजगिरि चालीस, असी इह सुजगीस ॥ कंचन गिर
 वरु ए, एक सहस धरु ए ॥ ९ ॥ वृत दीर्घ वैताढ्य, वीस सत
 रसो आढ्य ॥ सतर मदानदी ए, पंच चूला सदी ए ॥ १० ॥
 जंबू प्रमुख दस रुस्क, इग्यारसै सतर सुस्क ॥ कुंम त्रणसय असी
 ए, वीसजमगवसी ए ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥

त्रिण सहस सो एक निवाणूं रे, जिनवर प्रासाद वखाणूं,
 वीस सो ए अंक गुणियै रे, तीर्थंकर प्रतिमा युणियै ॥ १२ ॥ त्रिण लाख
 सहस बलि ज्यासी रे, प्रतिमा आठसो ने असी ॥ सरबावै सब
 मेलीजै रे, जिनवर प्रासाद नमीजै ॥ १३ ॥ आठ कोमि सत्तावन
 खरका रे, दोयसै निव्यासी कयरुका ॥ दिव प्रतिमा ग्यान कहीजै

रे, जिनवरनी आण वहीजै ॥ १४ ॥ पनरेसै बेतालीस कोमी रे,
अमवन लख अधिके जोमी ॥ बत्तीस सदस अधिक कदीयै रे,
प्रतिमा सगली सरदहियै ॥ १५ ॥

॥ बाळ ॥ ६ मी ॥

जोइस बिंतर प्रतिमा सासती, असंख्यात वलि जेहो जी ॥
पायकमल तेइमा नित प्रणमिबै, सोवन वरणा सुदेहो जी ॥ १ ॥
विनय करी जिन प्रतिमा वंदिबै, सुंदर सकल सरूपो जी, पूजै प्र-
तिमा चोविद देवता, वलिय विद्याधर जपो जी ॥ २ ॥ वि० ॥
जिनप्रतिमा बोली जिन सारणी, दित सुख मोक्ष निदानो जी ॥
जवियणने जवसायर तारवा, प्रवहण जेम प्रधानो जी ॥ ३ ॥ वि० ॥
जीवाजिगम प्रमुख मांदि जाखीयो, ए सहू अरथ विचारो जी ॥ ४ ॥
सांजलतां जणतां सुख संपदा, हियमै हरख अपारो जी ॥ ४ ॥ वि० ॥

॥ कलश ॥

इम शासता प्रासाद प्रतिमा संधुण्या जिनवर तणा, चिहुं
नाम जिनचंद तणा त्रिजुवन सकलचंद सुदावणा ॥ वाचनाचारिज
समयसुंदर गुण जणें अजिराम ए, त्रिहुं काल त्रिकरण सुद्ध होयज्यो
सदा मुज परणाम ए ॥ ५ ॥ इति साश्वता जिन चैत्य जिनबिंब
संख्या स्तवनं ॥

॥ अथ सूरत सहर सीतल जिन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवनं ॥

जविजन पूजो रे शीतल जिनपती रे, नयनानंदन चंद ॥
प्रज्जूजी विराजै रे सूरत बिंदै रे, नंदादेवीना नंद ॥ १ ॥ ज० ॥
जगदितकारी रे जिनजी अवतरया रे, श्रीहृदरथ नृप गेह ॥ श्रीवज्र
सोदे रे लांगन सुंदरू रे ॥ कनक वर्ष प्रज्जु देह ॥ २ ॥ ज० ॥
विषय निवारी रे संजम संग्रहो रे, लाधूं केवलनाण ॥ सघन घना-
घन जिम धम वरसता रे, विचरया त्रिजुवन जाण ॥ ज० ॥ ३ ॥

चदनी प्रमुख जे शेष रह्या हुता रे, ज्यार अघाती कर्म ॥ दूर
 निवारया रे अनुक्रम तेहने रे, पाम्युं शिवपद शर्म ॥ ४ ॥ ज० ॥
 संप्रति कालै रे श्रीजिनराजनो रे, पूजीजे प्रतिबिंब ॥ प्रतिदिन
 लहियै रे प्रभु सुप्रसादधी रे, मन वांछित अविलंब ॥ ५ ॥ ज० ॥
 श्रीजिनवरनो बिंब बिलोकतां रे, झुकत दूर पुलाय ॥ इंडिय निग्रह
 सुग्रह संपजै रे, समकित पिण्ड दृढ आय ॥ ६ ॥ ज० ॥ श्रीसङ्ग-
 रुना मुखधी सांजिहवा रे, एहवा वचन विलास ॥ ते बहुमाने रे
 निज चित्तमें थरवा रे, नेमी सुत जाईवास ॥ ७ ॥ ज० ॥ चैत्य
 कराव्युं रे सुंदर सोजतो रे, मनधर अधिक मलास ॥ शीतल प्रभुनो
 रे बिंब अनारविबो रे, सहस्रफणा बलि पास ॥ ८ ॥ ज० ॥ वरस
 अठारह सत्तावीसमे रे, माधव मास मजार ॥ उज्जल द्वादशी दि-
 वसे जाधियो रे, बिंब अनेक उदार ॥ ९ ॥ ज० ॥ एकसो इक्यासी
 सहु मेले अया रे, बिंबादिक सुविचार ॥ कीध प्रतिष्ठा ते दिन ते-
 दनी रे, विधि पूर्वक मन धार ॥ १० ॥ ज० ॥ श्रीजिनलाज सूरि-
 श्वर बीषता रे, श्रीखरतर गङ्ग ज्ञाण ॥ तास पसाय में शीतल जिन
 धुएवा रे, विबुध क्लमा कढ्याण ॥ ११ ॥ ज० ॥ इति शीतल
 जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीधरमनाथ स्तवनं ॥

॥ हारे हूं तो भरवा गइयी तट जमुना के तीर जो ॥ ए चाल ॥

हारे मारे धरम जिनंदसुं लागी पूरण प्रीत जो, जीवरुलो
 चलचाणो जिनजीनी उलगे रे लो ॥ हारे मुंने आस्यै कोइयक
 समें प्रभु सुप्रसन्न जो, वातरुली तव आस्यै महारी सबि वगे रे
 लो ॥ १ ॥ हारे कोइ दुर्जननो जंजेरयो माहरो नाथ जो, उल-
 वस्यै नही क्यारे कीधी चाकरी रे लो ॥ हारे मारे स्वामी सरि-
 खो कुण ठै डुनियां मांह जो, जइये रे जिम तेहने घर आस्या

करी रे लो ॥ २ ॥ हारे मारे जस सेव्यांथी स्वारथनी नही सिद्ध
 जो, गली रे सी करवी तेहथी गोठमी रे लो ॥ हारे कांड जूवूं खाई
 ते मिठाईने माटे जो, क्यांही रे परमारथनी नही प्रीतमी रे लो
 ॥ ३ ॥ हारे प्रभु अंतरजांमी जीवत प्राणाधार जो, वायो रे नवि
 जाण्यो कवियुग वायरो रे लो ॥ हारे मोरा लायक नायक जगत
 बल्लभ जगवंत जो, बारू रे गुण केरा साहिब सायरू रे लो ॥ ४ ॥
 हारे प्रभु लागी मुऊने ताहरी माया जोर जो, अलगा रे रह्यांथी
 दोइ उजोगलो रे लो ॥ हारे कुण जाणें अंतर गतिनी विण माहा-
 राज जो, देजे रे हसी बोलो ठंमी आमलो रे लो ॥ ५ ॥ हारे तारे
 मुखने मटके अटक्यूं खाहरो मन्न जो, आंसरुली अणियाली का-
 मणगारीयूं रे लो ॥ हारे अरे नयणा लंपट जोवे खिण २ तुऊ जो,
 राती रे प्रभु राणे न रहे वारीयां रे लो ॥ ६ ॥ हारे प्रभु अलगा
 ते पिण जाणज्यो करीनें हजूर जो, ताहरी रे बलिहारी हुं जाउं
 बारणे रे लो ॥ हारे कवि रूप विबुधनो मोहन करै अरदास जो,
 गिरुआ अइ मन आंणो ऊलट अति घणो रे लो ॥ इति स्त० ॥

॥ अथ राणपुरा स्तवनं ॥

राणपुरै रवियामणो रे लाल, श्रीआदीसर देव, मन मोहुं
 रे ॥ उत्तंग तोरण देहरूं रे लाल, निरखीजै नित्य मेव ॥ म० ॥
 रा० ॥ १ ॥ चौबीस मंरुप चिहुं विसे रे लाल, चौमुख प्रतिमा
 च्यार ॥ म० ॥ त्रिभुवन दीपक देहरो रे ला०, समवरु नही
 संसार ॥ म० ॥ २ ॥ रा० ॥ देहरी चोरासी दीपती रे लाल,
 मांरुयो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ जलें जुहारया जोंयरा रे लाल, सूतां
 ऊठ सवेर ॥ म० ॥ ३ ॥ रा० ॥ देस जाणीतूं देहरूं रे लाल, मोटो
 देस मेवारु ॥ म० ॥ लख नवाणुं लगाविया रे लाल, धन धनो
 पोरवारु ॥ म० ॥ ४ ॥ रा० ॥ खरतर वसई खंतसूं रे लाल, निर

खंतां सुखं आय ॥ म० ॥ पांच प्रासाद बीजा वली रे लाल,
 जोतां पातिक जाय ॥ म० ॥ ५ ॥ रा० ॥ आज कृतार्थ हुं थयो
 रे लाल, आज थयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवरंतणी रे
 लाल, दूर गयूं डख दंद ॥ म० ॥ ६ ॥ रा० ॥ संवत सोल ठियं-
 तरे रे लाल, मिगसिर मास मजार ॥ म० ॥ राणपुरै यात्रा करी रे
 लाल, समयसुंदर सुखकार ॥ म० ॥ ७ ॥ रा० ॥ इति श्री
 राणपूरा स्तवनं ॥

॥ अथ दर्शनद्वार श्रीआदिजिन स्तवनं ॥

समकित द्वार गुंजारै पैसतां जी, पाप पमल गयां दूर रे ॥
 मोहन मारूदेवीनो लामलो जी, देगे मीगे आनंद पूर रे ॥ स० ॥
 ॥ १ ॥ आयू वरजित साते कर्मनी जी, सागर कोमाकोमी हीण
 रे ॥ स्थिती पढम करणें करी जीवनें जी, बीरज अपूरवनो घर
 लीध रे ॥ २ ॥ स० ॥ जुंगल ज़ांगी आदि कषायनी जी, मिथ्यात
 मोहनी सांकल साथ रे ॥ द्वार ऊघामा सम संवेगना जी, अनुजव
 जवनें बेढो नाथ रे ॥ ३ ॥ स० ॥ तोरण बांधू जीवदया तणूं
 जी, साधियो पूरो सरधा रूप रे ॥ धुपघटी प्रभुगुण अनुमोदना
 जी, दिगुण मंगल आव अनूप रे ॥ ४ ॥ स० ॥ संवर पाणी अंल
 पखालनें जी, केशर चंदन उत्तम ध्यान रे ॥ आतम गुण एह
 मृगमद महमहे जी, पंचाचार कुशम परधान रे ॥ ५ ॥ दो गुरु
 ज्ञावपूजाने पावत आतमां जी, पूजो परमेसर पून्य पणि ॥ ६ ॥
 कारण जोगे कारज नीपजै जी, कमा विजय जिन आदि ॥ माय
 ॥ ६ ॥ स० ॥ इति श्री आदीसर जिन स्तवनं ॥ ॥ ७ ॥ जि

॥ अथ श्रीआदीसर जिन स्तवनं ॥ ॥ सामाचारो

आदि जिनेसर अरज सुणोजै, मोहन कृ० ॥ ८ ॥ जाण
 दिखरंजन प्रभु दरसण दीजै, न्हारो मनमो खोल ॥ रतने काग

प्रभु दरसन लहिवो जग डुरलज, विन दरसन नहीं किरिया रे ॥
जे दरसन विन किरिया पावै, ते नवि कहियै तरिया रे ॥ आ० ॥ २ ॥
नय एकांते दरसन आपै, पिंन जरे ते पापे रे ॥ आप आपणा मति
आलापै, ते जूला जव आपे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ शुद्ध दरसन स्था-
दादने संगे, जे ग्रहे आत्म जमंगे रे ॥ आनंदघन उपजै तसु अंगै,
सिद्धमणने रंगे रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ जव कोराकोरीमें जमतां, तुज
दरसन नहीं पायो रे ॥ सुकृत संयोगे ताहरे सनमुख, आज जले
हुं आयो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ ताहरी महिर लहिरनो लटकौ, जो
जगगुरु हुं पाउं रे ॥ सहजे एक पलकमें अदभुत, आतम गुण
उपजाउं रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ मरुदेवानंदन जग वंदन, स्वामी दर-
सन दीजै रे ॥ लाजउदय जिनचंद लहीने, सगला कारज सीजै
रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति श्री आदिजिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीअजितनाथ स्तवनं॥

॥ अनंत जिन आपज्योरे ॥ ए चाल ॥

ज्ञानादिक गुण संपदा रे, तुज अनंत अपार ॥ ते सांजलतां
ऊपनी रे, रुचि तिण पार उतार ॥ अजित जिन तारज्यो रे ॥
भरज्यो दीनदयाल, अ०॥ता॥०१॥ एआंकणी ॥ जे जे कारण जे-
रे ॥ पे रे, सामग्री संयोग ॥ मिळतां कार्य नीपजे रे, कर्ता तनय
रा० ॥ ॥ अ० ॥ ता० ॥ २ ॥ कार्य सिद्धि कर्ता वसु रे, लहि का-
च्यार ॥ रेग ॥ निज पदकारक प्रभु मिळ्या रे, होय निमित्तम जोग
संसार ॥ मा० ३॥ अज कुलगत केसरी लहे रे, निज पद सिद्ध नि-
मांमयो अष्टापद प्रभु जेकें जिवि लहे रे, आतम शक्ति संजाल ॥
ऊठ सवेर ॥ म० ॥ कारण पद कर्तापणें रे, करि आरोप अज्ञेद ॥ निज
देस मेवास ॥ म० ॥ ॥ ॥ रे, करै अनेक उमेद ॥ अ० ॥ ता० ॥ ५ ॥
पारवस ॥ म० ॥ ॥ ॥ रे, परमानंद सरूप ॥ ॥ स्याद्वाद सात्तारसी रे,

अमल अखंड अनूप ॥ अ० ॥ ता० ॥ ६ ॥ आरोपित सुख ब्रम
 टट्यो रे, ज्ञास्यो अव्याबाध ॥ समरथो अजिलाखीपणो रे, कर्त्ता
 साधन साध्य ॥ अ० ॥ ता० ॥ ७ ॥ ग्राहकता स्वामित्वता रे,
 व्यापक ज्ञोक्ता ज्ञाव ॥ कारणता कारज दसारे, सकल ग्रह्यं निज
 ज्ञाव ॥ अ० ॥ ता० ॥ ८ ॥ श्रद्धा ज्ञासन रमणता रे, दानादिक परिणा
 म ॥ सकल थया सत्तारसी रे, जिनवर दरसन पामि ॥ अ० ॥ ता०
 ॥ ९ ॥ तिणें निर्यामक माहणो रे, वैद्य गोप आधार ॥ देवचंद्र
 सुख सागरू रे, ज्ञावधरम दातार ॥ अ० ॥ ता० ॥ १० ॥ इति श्री
 अजित जिन स्तवनं ॥

॥ अथ आलोचन वृद्ध स्तवनं ॥

॥ बे कर जोम्ही वीनवूं जी, सुणि स्वांमी सुविदीत ॥ कूरु
 कपट मूंकी करी जी, वात कहुं आप वीत ॥ १ ॥ कृपानाथ सु
 ऊ विनती अवधार ॥ आंकणी ॥ तू समरथ त्रिजुवन धणी जी,
 मुऊने उत्तर तार ॥ क० ॥ २ ॥ जवसायर जमतां थकां जी,
 दीठां दुख अनंत ॥ ज्ञागसंयोगे जेटियो जी, जयजंजण जगवंत
 ॥ क० ॥ ३ ॥ जे दुःख ज्ञांजे आपणा जी, तेहनें कहिये दुःख ॥
 परदुख जंजण तूं सुण्यो जी, सेवगने थो सुख ॥ क० ॥ ४ ॥ आलोचन
 लीथां पखै जी, जीव रुखे संसार ॥ रूपी लक्ष्मणा महासती जी, एह
 सुण्यो अधिकार ॥ क० ॥ ५ ॥ दूषमकालै दोहिलो जी, सूथो गुरु
 संयोग ॥ परमारथ पीठै नही जी, गरुरप्रवाही लोक ॥ क० ॥ ६ ॥
 तिण तुऊ आगल आपणा जी, पाप आलोचं आज ॥ माय
 बाप आगल बोलतां जी, बालक केही लाज ॥ क० ॥ ७ ॥ जि
 न धमर सहू कहै जी, आपै अपणी जी वात ॥ सामाचारो
 जुइ जुइ जी, शंसय पर्यां मिथ्यात ॥ क० ॥ ८ ॥ जाण
 अजाणपणे करी जी, बोड्या उत्सूत्र बोल ॥ रतने काग

जन्मावता जी, हारयो जनम निटोल ॥ क० ॥ ए ॥ जग-
 वंत ज्ञाण्यो ते किहा जी, किहां मुऊ करणी एह ॥ गज पाखर
 खर किम सहे जी, सबल विमासण तेह ॥ क० ॥ १० ॥ आप
 परंपुं आकरो जी, जांणे लोक महंत ॥ पिण न करूं परमादियो
 जी, मासाहस दृष्टांत ॥ क० ॥ ११ ॥ काल अनंत में लह्या जी,
 तीन रतन श्रीकार ॥ पिण परमादे पानिया जी, किहां जइ करूं
 पुकार ॥ क० ॥ १२ ॥ जाणूं उत्कृष्टी करूं जी, उद्यत करूं अ-
 विहार ॥ धीरज जीव धरै नहीं जी, पोते बहु संसार ॥ क० ॥ १३ ॥
 सहज पड्यो मुऊ आकरो जी, न गमें जूंकी वात ॥ परनिंद्या क-
 रंता थकांजो, जायै दिन न रात ॥ क० ॥ १४ ॥ किरिया करतां
 दोहिली जी, आलस आणे जीव ॥ धरम परवै धंदे पड्यो जी,
 नरकै करसी रीव ॥ क० ॥ १५ ॥ अणहूंत गुण को कहे जी, तो
 हरखूं निसदीस ॥ को हितसीख जली दिवै जी, तो मन आणूं
 रीस ॥ क० ॥ १६ ॥ वादजणी विद्या जणी जी, पररंजण उपदेश
 ॥ मन संवेग धरयो नही जी, किम संसार तरेस ॥ क० ॥ १७ ॥
 सूत्र सिद्धांत बखाणतां जी, सुणतां करम विपाक ॥ खिण इक
 मनमांहे ऊपजै जी, मुऊ मरकट वैराग ॥ क० ॥ १८ ॥ त्रिविध
 २ कर उच्चरूं जी, जगवंत तुम्ह हजर ॥ वार २ ज्ञाजू वली जी,
 वूटकवारो दूर ॥ क० ॥ १९ ॥ आप काज सुख राचतां जी, कीधो
 आरंज कोमि ॥ जयणा न करी जीवनी जो, देवदया पर लोम
 ॥ क० ॥ २० ॥ वचन दोषव्यापक कहा जी, दाख्या अनरथ दंम ॥
 कूरु कपट बहु केलवी जी, व्रत कोधा सत खंम ॥ क० ॥ २१ ॥
 अणदीधो लीजे तृणो जी, तोही अदत्तादांन ॥ ते दूषण लाग घणा
 जी, गिणतां नावे ज्ञान ॥ क० ॥ २२ ॥ चंचल जीव रहे नहीं
 जी, राचै रमणी रूप ॥ काम विटंवन सी कहूं जी, ते तूं जांणे

सरूप ॥ क० ॥ २३ ॥ माया ममतामें पड्यो जी, कीधो अधिको
 लोभ ॥ परिग्रह मेढ्यो कारमो जो, न चढी संजम सोभ ॥ क० ॥
 ॥ २४ ॥ लाग्या मुऊनें लालचें जी, रात्रीनोजन दोष ॥ में मन
 मूक्यो माहरो जी, न धरयो धरम संतोष ॥ क० ॥ २५ ॥ इण जव
 परजव दूहव्या जी, जीव चोरासी लाख ॥ ते मुऊ मित्रामिड्कमं
 जी, जगवंत तोरी साख ॥ क० ॥ २६ ॥ करमादान पनरे कहा
 जी, प्रगट अठारे जी पाप ॥ जे में कीधा ते सहूजी, वगस २ माइ
 वाप ॥ क० ॥ २७ ॥ मुऊ आधार वै एतलो जी, सरदहणा वै शुद्ध ॥
 जिनधर्म मीठो जगतमें जी, जिम साकर ने दूध ॥ क० ॥ २८ ॥
 रिषजदेव तूं राजियो जी, सैत्रुंजगिर सिणगार ॥ पाप आलोया
 आपणा जी, कर प्रभु मोरी सार ॥ क० ॥ २९ ॥ मर्म एह जिन-
 धर्मनो जी, पाप आलोयां जाय ॥ मनसुं मित्रामिड्कमं जी, देतां
 दूर पुलाय ॥ क० ॥ ३० ॥ तूं गति तूं मति तूं धणी जी, तूं साहिव
 तूं देव ॥ आण धरुं सिर ताहरीजी, जव २ ताहरी सेव ॥ क० ॥ ३१ ॥
 ॥ कलश ॥ इम चढिय सेत्रुंज चरण जेव्या नाजिनंदन जिन तणा,
 करजोनि आदिजिनंद आगे पाप आलोयां आपणां ॥ श्रीपूज्य
 जिनचंद सूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजस घणें, गणि सकलचंद
 सुसीस वाचक समयसुंदर गणि जणें ॥ ३१ ॥ इति आलोयण वृद्ध स्त०

॥ अथ आनंदधनजी कृत स्तवन लिख्यते ॥

॥ अथ श्री रूपज देव, जिन स्तवनं ॥

॥ करम परीक्षा करण कुमर चलयो रे ॥ ए चाल ॥

रूपज जिनेसर प्रीतम, माहरो रे, नर न चाहूं रे कंत ॥

रीज्यो साहिव संग न परिहरेण, जांगे सादि अनंत ॥ क० ॥ १ ॥

प्रीत सगाई रे जगमां सहु कंठे रे, प्रीत सगाई न कोय ॥ प्रीत

सगाई रे निरुपाधिक कही रे, सोपाधिक धन खोय ॥ ३० ॥ १ ॥
 कोइ कंत कारण काष्ट नृक्षण करे रे, मिलसुं कंतने धाय ॥ ए
 मेलो नवि कहियै संजवे रे, मेलो ठाम न ढाय ॥ ३० ॥ ३ ॥ कोइ
 पति रंजन अति धणो तप तपै रे, पति रंजन तन ताप ॥ ए पति
 रंजन में नवि चित धर्युं रे, रंजन धातु मिलाप ॥ ३० ॥ ४ ॥
 कोइ कहे लीला रे अलख अलख तणी रे, लख पूरै मन आस ॥
 दोष रहितने लीला नवि घटे रे, लीला दोष विलास ॥ ३० ॥ ५ ॥
 चित प्रसन्ने रे पूजन फल कह्यो रे, पूज अखंभित एह ॥ कपट रहित
 अई आतम अरपणा रे, आनंदधन पद रेह ॥ ३० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ श्री अथ अजित जिन स्तवनं ॥

॥ मारुं मन मोह्युं रे श्री विमलाचले रे ॥ ए चाल ॥

पंथमो निहालूं रे बीजा जिनतणो रे, अजित २ गुण धाम ॥
 जे तैं जीत्या रे तेणो हुं जीतियो रे, पुरुष किस्सुं मुऊ नांम ॥ पं० ॥
 ॥ १ ॥ चरम नयण करी मारग जोवतो रे, जूलो सयल संसार ॥ जेणें
 नयणो करी मारग जोइये रे, नयण ते दिव्य विचार ॥ पं० ॥ २ ॥
 पुरुष परंपर अनुभव जोवतां रे, अंधोअंध पुलाय ॥ वस्तु विचारें
 रे जो आगमे करी रे, तो चरण धरण नही गाय ॥ पं० ॥ ३ ॥ तर्क
 विचारे रे वाद परंपरा रे, पार न पहुंचे कोय ॥ अजिमते वस्तु वस्तुगते
 कहे रे, ते विरला जग जोय ॥ पं० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारे रे दिव्य
 नयणतणो रे, विरह पड्यो निरधार ॥ तरतम जोगे रे तरतम वासना रे,
 वासित बोध आधार ॥ पं० ॥ ५ ॥ अल लबधि लही पंथ निहालसुं
 रे, ए आस्या अविखंड ॥ ए जग जीवे रे जिनजी जाणज्यो रे,
 आनंदधन मत अंध ॥ पं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संभव जिन स्तवनं ॥

॥ रातडी रमिनें किहांथी आविया रे ॥ ए चाल ॥

॥ संजव देव ते धुर सेवो सबे रे, लहि प्रभू जेद ॥ सेवन
सेवन कारण पहली भूमिका रे, अजय अक्षेप अखेद ॥ सं० ॥ १ ॥
जय चंच लता हो जे परिणामनी रे, द्वेष अरोचक जाव ॥ खेद
प्रवृत्ति हो करतां आकिये रे, दोष अबोधि लखाव ॥ सं० ॥ २ ॥
चरमावर्त्त हो चरम करण तथा रे, जव परणति परिपाक ॥ दोष टले
चली दृष्टी खुले जली रे, प्रापति प्रवचन वाक ॥ सं० ॥ ३ ॥ परिचय
प्राप्तिक घातक साधसूं रे, अकुशल अपचय चेत ॥ ग्रंथ अध्यात्म श्र
वण मनन करी रे, परिशीलन नय हेत ॥ सं० ॥ ४ ॥ कारण
जोगे हो कारज नीपजे रे, एमां कोइ न वाद ॥ पण कारण विण
कारज साधिये रे, ए जिनमत जनमाद ॥ सं० ॥ ५ ॥ सुगंध सु
गम करी सेवन आदरे रे, सेवन अगम अनूप ॥ देजो कदाचित से
वक याचना रे, आनंदघन स्वरूप ॥ सं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अभिनंदन जिन स्तवनं ॥

॥ आज निहेज्यो रे दीसे नाहलो ॥ ए चाल ॥

॥ अभिनंदन जिन दरशन तरसिये, दरसणं दुर्लभ देव ॥
॥ मतर जेदे रे जो जइ पृथिये ॥ सहु थापै अहमेव ॥ अ०
॥ १ ॥ सामान्ये करी दरिस्सण दोहलूं, निरणय संकल विशेष ॥
मदमें घेरयो रे अंधो किम करे, रवि शशि रूप विलेख ॥ अ० ॥
॥ हेतु विवादे हो जूझ धरि जोइये, अति दुरगम नय वाद ॥
प्रागम वादे हो गुरुगद्गदने ठूंही, ए सबलो विषवाद ॥ अ० ॥
॥ घाती डूंगर आमा अ० ॥ २ ॥ तुज दरिस्सण जगनाथ ॥ घी
ठाइ करी मारग संचरूं, सेंगुषण अ० साथ ॥ अ० ॥ ४ ॥ दरिस्
ण रटतो जो फिरूं, तो रण ॥ जो पोता ॥ जेहनेहु प्राप्ता हो अ

सृत पाननी, किम ज्ञाजै विष पान ॥ अ० ॥ ५ ॥ तरस न आवे
हो मरण जीवन तणो, सीजे जों दरसन आज ॥ दरसन डर्व
न सुखन कृपाथकी, आनंदघन माहाराज ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुमती जिन स्तवनं ॥

॥ राग वसंत तथा केदारो ॥

॥ सुमति चरण कज आतम अरपणा, दरपण जिम अवि
कार सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जाणिये, परि सरपण सु
विचार ॥ सुग्यानी सु० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आत
मा, वहिरातम धुरि जेद ॥ सु० ॥ बीजो अंतर आतम तीसरो, पर
मातम अविच्छेद ॥ सु० सु० ॥ २ ॥ आतम बुद्धे हो कायादिक अ
हो, वहिरातम अघ रूप ॥ सुग्यानी ॥ कायादिकनो हो साखीधर
हो, अंतर आतम रूप ॥ सुग्यानी ॥ सु० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदे हो पूरण
पावनो, वरजित सकल उपाधि सुग्यानी ॥ अतिंदिय गुण गण मणि
आगरू, इय परमातम साध सुग्यानी ॥ सुम० ४ ॥ वहिरा
तमतज अंतरआतमा, रूप सुग्यानी अइ थिर जाव ॥ परमातमनू हो
आतम जाववूं, आतम अरपण दाव सुग्यानी ॥ सुम० ॥ ५ ॥ आ
तम अरपण वस्तु विचारतां, जरम टलै मतिदोष ॥ सु० ॥ परम
पदारथ संपति संपजै, आनंदघन रस पोष ॥ सु० सुम० ॥ ६ ॥ इति

॥ अथ श्रीशीतल जिन स्तवनं ॥

॥ गुणह विसाला मंगलीक माला ॥ ए चाल ॥

॥ शीतल जिनपति ललित त्रिजंगी. विविध जंगी मन भो
दे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्ष्णताम जोगेनता सोहे रे ॥ शी०
॥ १ ॥ सर्व जंतु हितकरणी कष्ट लवर्म्म विदारण तीक्ष्ण रे
दानादाना रहित परणामी, नीवे तां विक्षणा रे ॥ शी० ॥ २
॥ परदुःख वेदन श्वा क ६ ॥ इति श परदुःख रीजे रे ॥

नता उज्जय विलक्षण, एक ठामे केम सीजे रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अ
 जयदान ते मल कय करुणा, तीक्ष्णता गुण जावे रे ॥ प्रेरणा
 विगु कृत उदासीनता, इम विरोध मति नावे रे ॥ शी० ॥ ४ ॥
 शक्ति व्यक्ति त्रिजुवन प्रभुता, निग्रंथता संयोगे रे ॥ योगी जोगी वक्ता
 मौनी, अनुपयोगि उपयोगे रे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु जं
 ग त्रिजंगी, चमत्कार चित्त देती रे ॥ अचरजकारी चित्र विचित्रा,
 आनंदधन पद लेती रे ॥ शी० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्री कुंथुजिन स्तवनं ॥

॥ राग गुर्जरी ॥

॥ मनमो किमही न बाजे हो, कुंथु जिन म० ॥ जिमर ज
 सन करीनें राखूं, तिमर अलगो जाजे हो ॥ कुंथुजिन म० ॥ १ ॥ रज
 नी वासर वसती ऊजम, गयण पायाले जाय ॥ सांप खावने सुखहुं
 थांथुं, ए उखाणो न्याय हो ॥ कुंथु जिन म० ॥ २ ॥ मुगति तणा
 अनिलापी तपिया, ज्ञान ने ध्यान अज्यासे ॥ वयरीहुं कांइ एहवुं
 चितै, नाखे अवले पासे हो ॥ कुं० म० ॥ ३ ॥ आगम आगम
 धरने हाथे, नावै किण विध आंरू ॥ किहां कणे जो इठ करी इठकूं,
 तो व्यालतणी पर वांकू हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ४ ॥ जो ठग कहूं तो
 ठग तो न देखूं, साहकार पिण नांही ॥ सर्वमांही ने सहुशी अ
 लगूं, ए अचरिज र मांही हो ॥ कुं० म० ॥ ५ ॥ जे जे कहूं ते
 कान न धारे, आप पते रहे कालो ॥ सुरनर पंक्ति जन समजावै,
 समजै न माहारो ॥ ओ हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ६ ॥ मे जाण्युं ए
 लिंग नपुंसक, सकल पांतिरदने ठेले ॥ बीजी वार्ते समरथ ठै नर,
 एहने कोई न जेले ॥ ७ ॥ म० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तिण स
 गलूं सध्युं, एह वा ॥ तोपिण अ ॥ साध्युं ते नवि मानूं,
 ए कहि वात ठे मोटा ॥ ३ ॥ जो पोतानो ॥ मनहुं ॥

चस आणुं, ते आगमधी मति आणुं ॥ आनंदघन प्रज्जु माहरो आए
तो साचूं कर जाणुं हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पडिकमणेमें बोलणेमें आवे ॥

॥ पार्श्वनाथजीके छोटे स्तवन लिख्यते ॥

॥ पद ॥ १ कुं ॥

॥ श्रीसंखेसर पास जिनेसर जेटियै, जवना संधित पाप परा १
मेटियै ॥ मन घर जाव अनंत चरण युग सेवतां, अणहुंते
कोमि चतुर विध देवता ॥ १ ॥ ध्यान धरूं प्रज्जु दूरथकी में ताह
जल जिम लीनो मीन सदा मन माहरो ॥ जव २ तुमहीज
चरण हूं सिर धरूं, जवसायरथी तार अरज आहीज करूं ॥ ३
जुख त्रिपा तप सीत आतप ए ना सहै, तप जप संजम जार
णी नवी निरवहै ॥ पिण जिनवरजीना नामतणी आसत धा
एहिज वै आधार जगतगुरु अम्ह जणी ॥ ३ ॥ तुम्ह दरिसण विण स
जवोदधि हूं फिरयो, सहोया डुक्क अनेक न कारज को सरथे
मिलिया हिव प्रज्जु मुऊ सदा सुख दीजियै, चौ गइ संकट चूर ज
जल लीजियै ॥ ४ ॥ यादवपति श्रीकृष्णतणी आरति हरी, सै
कीध सचेत जरा दूरै करी ॥ परचा पूरण पास रखण जिम दीप
जयघंतो जिणचंद सयल रिपु जीपतो ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद १ कुं ॥

मनमोहन माहाराज, तीन जुवन चार ताज ॥ आठे
नगर ब्रह्मानपुर राजीया जी ॥ १ ॥ पास जिवि प्रधान, निर
सुगुण निधान ॥ आठेलाज, वामासुत वरुण ॥ याजी ॥ २ ॥
कनी संजाज, करिय खरी ततकाज ॥ वि
पण्डिरया जी ॥ ३ ॥ गीवेता विद्वा
॥ परउ-चाट विद्वा, का ६ ॥ इति परउ
॥ प्रज्जुजीने पर

वीता सहु विखवाद ॥ आठेलाळ, मन वंछित मुऊ सहु फड्या जी
॥ ५ ॥ ध्यान समाधिनी आप, मिलिया ठो प्रजु आप ॥ आठेलाळ,
देज्यो दरिसण वलि सदा जी ॥ ६ ॥ अमृतधर्म सुजाण, सीस कमा-
कळयाण ॥ आठेलाळ, वाचक इम वीनती करै जी ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ३ जुं ॥

जयकारी जिनराज, पुरिसावाणी रे ॥ तामासुत वरदाय,
निरमल नांणी रे ॥ १ ॥ पांच कमल प्रजु अंग, निरुपम निरख्या रे ॥
तीन कमल मुऊ संग, आतम हरख्या रे ॥ २ ॥ वदन महोदय देख,
चंद लजाणूं रे ॥ गगन जमे निसदीस, इम मन आंणूं रे ॥ ३ ॥
सुरमणि ज्युं सुखकार, नयण विराजै रे ॥ हृदयकमल सुविलास,
आल ज्युं ठाजै रे ॥ ४ ॥ प्रजु कर चरण विलोक, पंकज हारयो रे ॥
ततखिण निज संवास, जलमें धारयो रे ॥ ५ ॥ इम सरवंग उदार,
श्रीजिन राया रे ॥ साचै पुण्य संयोग, साहिब पाया रे ॥ ६ ॥ प्रजु-
गुण अनुभव नीर, सांग सुरंगे रे ॥ टाळ्यो पातिक पंक, आतम संगे रे
॥ ७ ॥ वरस अठार चोतीस, वदि वैसाखै रे ॥ मनुहर पांचम दीस,
सहु संघ साखै रे ॥ नगर महेवा मांदि, पास जुहारया रे ॥ श्री-
जिनचंद मुखिंद, वांछित सारया रे ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ पद ४ थुं ॥

वालेसर मुऊ वीनती गोमीचा, अलवेसर अवधार हो गोमी
चाराय ॥ प्रगट थई पातालची गोमीचा, सेवक जिन साधार हो
गो० ॥ वा० ॥ १ ॥ आंख थई ऊतावली, गो० ॥ दरसन देखण
काज हो ॥ गो० ॥ पांणीनखमे पातली, गो० ॥ दो दरसन महा-
राज हो ॥ गो० ॥ २ ॥ तूं साहिब सुपनंतरे, गो० ॥ मिलियो
वै नित मेव हो ॥ गो० ॥ तोषिण आयो ऊमही, गो० ॥ संप्रति क-
रवा सेव हो, गो० ॥ ३ ॥ जो पोतानो त्रेवमो, गो० ॥ सगली

प्राति सदीव हो, गो० ॥ उंची नीची वातमें, गो० ॥ थे मति घालो
जीव हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ४ ॥ देव घणांही देवलै, गो० ॥ दीठां ते
न सुहाय हो ॥ गो० ॥ इक दीठां मन ऊलसे, गो० ॥ इक दीठां
उलहाय हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ५ ॥ कालै वाढ्यै माहरे, गो० ॥
कीधी खरी सजीम हो ॥ गो० ॥ दरसण देवानी नकी, गो० ॥
पाणीवलि पिण दीव हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ६ ॥ तें कीधी तिम तूं
करै, गो० ॥ राखी चिहुं मांहे लाज हो ॥ गो० ॥ वलि अवसर
संझारज्यो, गो० ॥ इम जंयै जिनराज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ५ मुं ॥

अरज सुणीजै अंतरजामी, पास जिनेसर स्वांमी रे ॥ अश्व-
मेन वामाजीके नंदन, त्रिजुवनजन विसरामी रे ॥ अ० ॥ १ ॥ गुण
गिरवा गोमीचा स्वांमी, नाथ निरंजन नामी रे ॥ अ० ॥ जव अ-
टवी वन घन विच जमतां, पुण्ये सेवा पामी रे ॥ अ० ॥ २ ॥
दीनदयाल दया कर दीजै, अनुजव गुण अजिरांमी रे ॥ चरणकमल
सेवा चित चाहत, सुगण सदा हितकामी रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ६ हुं ॥

प्यारी पासकी, देखी मूरत मो मन जाय ॥ प्या० ॥ अश्वशेन
वामाजीके नंदन, देख्यां दिल हरखाय ॥ प्या० ॥ १ ॥ तीन लोकमें
अहिमा जाकी, सुर नर मुनि गुण गाय ॥ प्या० ॥ नील वरण मन-
मोहन निरख्यो, नाथ गोमीचा राय ॥ प्या० ॥ २ ॥ सुगण सेव-
गकी येही अरज हे, जवडुख ताप मिटाय ॥ प्या० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ७ मुं ॥

॥ श्रीचिंतामण पासजी, अंजव सुरंग ३ तूय ॥ सवाइ अजु-
जी, घांरी सावली सूरत म्हांनु प्यारी लागे रुज ॥ वामाजी नंदन
बांदवा, चितनामें लागी ठे चूंय ॥ सवाइप्रजुजी ॥ १ ॥ अशिया-

ली प्रज्ञू आंखमी, वदन सरोज विकास ॥ स० ॥ आं० ॥
 ॥ नयण सलूणे जी निरखतां, ऊपजै अधिक जडहास ॥
 स० ॥ आं० ॥ २ ॥ अंगज नृप अश्वशेननो, करुणा
 नेधि करतार ॥ स० ॥ आं० ॥ पुण्य संयोगे जी पांमीयो, द्विज
 श्रीदार ॥ स० आं० ॥ ३ ॥ सो दिन सफलो जांणियै, सो
 प्रमाण ॥ स० ॥ जगतवच्चल जल जेटियै, जिनवर चतुरसु-
 ॥ स० ॥ आं० ॥ ४ ॥ जालम जेसलगत जयो, श्रीचिं
 तामणि पास ॥ स० ॥ जगपति श्रीजिनचंडनी, अविचल पुरो जी
 आस ॥ स० ॥ आं० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ८ मुं ॥

॥ जीवन मारा तेवीसमा जिनराय रे, जिनवरजी ॥ तुम
 विन देख्यां एक घरी न रहाय, म्हारा जिनवरजी ॥ १ ॥ तुमे
 अमारा हीयरुलाना हार रे, जि० ॥ अमे तुमारा दास ठियै निर
 धार ॥ म्हारा जि० ॥ लागी तुमसुं लगन हमारी जोर रे, जि०
 ॥ चंद चकोरा जलधर नें जिम मोर ॥ म्हारा जि० ॥ २ ॥ नयण
 तुमारा कामणगारा जोर रे, जि० ॥ चितमो लीधोजिम तिम करि
 नें चोर ॥ म्हारा जि० ॥ अरज हमारीमानो मोटा देव रे, जि० ॥
 आपो जव२ चरणकमलनी सेव ॥ म्हारा जि० ॥ ३ ॥ आस धरी-
 नें आवे जे तुह्य पास रे, जि० ॥ नवि मूंकीजे स्वामी तेह निरास
 म्हाराजि० ॥ मोटानी तो मोटी आयै बुद्धि रे, जि० ॥ इम जांणि-
 ने करज्यो मादरी शुद्ध ॥ म्हारा जि० ॥ ४ ॥ राखेज्यो सु
 पर निवर सनेह रे, जि० ॥ अवगुण जांणी छिट ॥ म्हारा जि० ॥
 म्हारा जि० ॥ खर गजपति श्रीजिनलाज स
 पसार्ये पनलें ३ मने पमचंद ॥ म्हारा जि० ॥
 लमें, ध्यान धरु पल प्रमें ॥

॥ पद ९ मुं ॥

॥ सुगण सनेही प्रभुजी अरज सुणीज्यो, अरज सुणीने
 मोसुं महिर धरीज्यो राज ॥ सु० ॥ तुं बै प्रभूजी म्हारो अंतर
 जामी, पूरव पून्यै आरी सेवा में पांमी राज ॥ साहिव में तो तु-
 ज्जने जाण्यो वै साचो, कदिय न दिलमांहे आणुं हुं काचो राज
 ॥ सु० ॥ १ ॥ साचे तो दिलसुं राज करीय सगाई, सुगण प्रभु
 जीस्युं वधज्यो प्रीन सवाई राज ॥ सु० ॥ दरसण प्रभुजी ताह-
 रो दिलमांहे वसियो, रात दिवस आरा गुणनो वूं रसियो राज ॥
 सु० ॥ २ ॥ खिजमतगारो प्रभुजी चाकर वूं खासो, कदिय न मेलूं
 प्रभुजी पलजर पासो राज ॥ सु० ॥ मोटानी महेरे राज मोटा क-
 हीजै, लाहो लाखीणो प्रभुजी संगे लहोजै राज ॥ सु० ॥ ३ ॥
 पिंजर तो फिरसी राज केइ परदेसे, राज सदाइ मारा दिलमांहे
 रहसी राज ॥ सु० ॥ रंगै हूं चोल मजीठ रंगाणो, नहिय विसरस्युं
 प्रभुजी दरसण टाणो राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ लुलि२ हूं तुम पाये
 जी लागूं, मोज महिर तुम पासे हूं मांगू राज ॥ सु० ॥ श्रीजि-
 नचंडू सदा साधारो, तारक प्रभुजी थे जवजल तारो राज ॥ सु०
 ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद १० मुं ॥

॥ मोरा पास जिनराज, सूरत आरी लागे प्यारी ॥ दीम
 आवे दाय, मो० ॥ जिम२ सूरत देखियै प्रभु, तिम२ बाधे प्रीतं ॥
 तनमन मारा नलसै कांइ, रूमी प्रीतनी रीत ॥ मो० ॥ १ ॥ नयण
 ल पांखमी प्रभु, मुखमो पूनमचंद ॥ दीपशीखासी नासिका
 ॥ श्रीध्यानंद ॥ मो० ॥ २ ॥ काने कुंमल जिगमिगे प्रभु,
 जी, आरी सावर्ल। संपकली सोहे नली कांइ, जिवमै ज्योत अपार
 वांदवां, चितनामें लागी थे वालहो प्रभु, आभूजी वग कोम ॥ म्हारो

तूहिज साहिबो कांइ, वंदू बे कर जोर, ॥ मो० ॥ ४ ॥ आज
मनोरथ सब फट्या, में दीठा श्रीजिनराज ॥ सदानंद पाठक तणा
कांइ, सीधां सगलां काज ॥ मो० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ११ मुं ॥

जिनजी महिर करीने राज, दरसन वहिलो दीजै ॥ दीजै
२ जी मोहाराज, कारज सगला सीजै ॥ ए आंरणी ॥ मुज मन
जमरतणी पर मोह्यो, बोलायो नचि बूटै ॥ प्रेम राग बंधाणो पूरण,
ते तो कदेय न खूटै ॥ जि० ॥ १ ॥ अलगथकां पिण हूं प्रभु तुमने,
नहिय विसारुं दिलसुं ॥ रात दिवस एहवी मन वरतै, जाणूं जइ
मिलुं तुमसुं ॥ जि० ॥ २ ॥ पूरब पुन्यशकी में पायो, ए अवसर
आजूणो ॥ मिलियो तूं प्रभु पास चिंतामण, साहिब सहज सलूणो
॥ जि० ॥ ३ ॥ थारे तो सेवग बै बहुला, मो सरिषा लख ग्याने,
माहरे तो इण जगमे जोतां, थारे नही कोइ टाणे ॥ जि० ॥ ४ ॥
आस हिचे इक ताहरी राखूं, बीजो मुख नही ज्ञाखूं ॥ अमृत जेम
लही तुज गुणरस, खारो जल किम चाखूं ॥ जि० ॥ ५ ॥ मोहन
ए मुझानी महिमा, कहतां पार न आवे ॥ सायर लहर मालाने
गिणतां, कहो कुण मति उपजावै ॥ जि० ॥ ६ ॥ जगतपणै किंचित
गुण ज्ञाखूं, हूं म्हाारी मति सारू ॥ निरुपमा अनुपम तुज गुण
लायक, त्रिजुवन जीवन सारू ॥ जि० ॥ ७ ॥ वरस अठार वली
इकताले, मिगसर पख उजवाले ॥ इग्यारस दिन अधिक सनेहे,
चात्र करी सुविशाले ॥ जि० ॥ ८ ॥ जेसलगिरि श्रीसंघ जुगतसुं,
मेलों तिहां मंमाये, सखाज उदय जिनचंदने प्रभुजी, वांध्यो प्रेम
सवायो ॥ जि० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ पद १२ मुं ॥

॥ तूं मेरे मनमें प्रभु तूं मेरे दिलमें, ध्यान धरूं पल १२में ॥

धास जिनेसर अंतरंजामी, सेवा कहुं ठिनंशमें ॥ तूं० ॥ १ ॥ की
हूको मन तरुणीसैं राख्यो, काहूको चित्त धनमें ॥ मेरो मन प्रभु
तुमहीसे राख्यो, ज्युं चात्रक चित्त धनमें ॥ तूं० ॥ २ ॥ जोगीसर
तेरो गति जांशै, अखख निरंजन ठिनमें ॥ कनककीरत सुखसागर
तूही, साहिव तीन जुवनमें ॥ तूं० ॥ ३ ॥ इति पद ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोक्षनो रे, केवल ज्ञान निधान ॥ ज्ञाव
दयासागर प्रभु रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रभु सिद्ध
अया, संघ सकल आधारो रे, हिवइण जरतमां ॥ कुण करशे उप-
गारो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ विहूणूं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे
संघ ॥ साधे कुण आधारथी रे, परमानंद अजंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥
मात विहूणां बाल ज्युं रे, अरहां परहा अश्रमाय ॥ वीर विहूणा
जीवमा रे, आकुल व्याकुल आयो रे ॥ ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय
वेदक वीरनो रे, विरह ते केस खमाय ॥ जे दीठे सुख ऊपजे रे,
ते विण किम रहिवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक जवसमुझनो रे,
जव अटवो सबवाह ॥ ते परमे उरविश भिड्यां रे, किम बाधे नत्साहो
रे वीर० ॥ ६ ॥ वीर अकां पण श्रुन तलो रे, हुंतो परम आधार ॥
हमणां श्रुत आधार ठे रे, एं जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥
इण कालें सवि जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो जवि-
जना रे, जिनपदिमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचं
रिज मुमि रे, सहुनें इण परसिद्ध ॥ जव जव आगम संगथी रे, देव
चंड पद लीधो रे ॥ वीर० ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमाला स्तवन ॥

॥ शत्रुंजय रुषज सशोसरथा, जला गुण जरया रे ॥ सिद्ध
साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे ॥ तीन कल्याणक तिहां अयां, मुगं

गयी रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो,
 गिरिसेहरो रे ॥ जरते जराव्यां बिंब ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अति
 जलो, त्रिजुवन तिलो रे ॥ विमल वसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥
 समेतशिखर सोहामणो, रलियामणो रे ॥ सिद्धा तीर्थकर वीश
 ॥ ती० ॥ नयरी चंपा निरखीयें, हैये हरखीयें रे ॥ सिद्धा श्रीवा-
 सुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरो, रुद्धे जरी रे ॥ मुक्ति
 गया महावोर ॥ तो० ॥ जेसलमेर जुहारीयें, डुख वारीयें रे ॥
 अरिहंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ बिकानेरज वंदीयें, चिर नंदीयें
 रे ॥ अरिहंत देहरां आव ॥ तो० ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो
 रे ॥ फलोधी घंजण पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अंजावरो, अ-
 मीऊरो रे ॥ जीरावलो जंगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो,
 जात्रा करो रे ॥ राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनामुलाई जादवो,
 गोमी स्तवो रे ॥ आवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरां,
 बावन जलां रे ॥ रुचक कुंमल चारू चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती
 अशाश्वती, प्रतिमा बती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ
 जात्रा फल तिहां, दोजो मुज इहां रे ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ८

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ आज आपें चालो सदीयो, सिद्धाचल गिरि जायें ॥ सिद्धा-
 चलगिरि जईए बहेनी, विमलाचलगिरि जईहं रे ॥ आ० ॥ सुण
 बहेनी ए गिरिनी महिमा, आदिजिनं इम जांखी ॥ जरतादिक
 नरपतिने आगल, इंडादिक सहु साखी रे ॥ आ० ॥ १ ॥ इणा गिरि
 रिवरिये काल अनंते, साधु अनन्ता सीया ॥ जन्म मरणनां डुख
 गोमीने, अमल अखय गुण लीधा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ इण गिरि स-
 न्मुख पगलां जरतां, आतम शुद्ध सुजावें ॥ कोमि जबांरां पातक
 लीधां, एक पलकमें जावे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ सासतो तीरथ ए जेठ

जो, जोतां लागे मीठो ॥ तीन जुवनमें इण गिरि तोले, बीजो कौड़
 जे दीठो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ जीरंजनगुं नेह धरीने, आगें जुलम क-
 रस्यां ॥ अद्भुत आदि जिनैसर निरखी, प्रेम सुधारस पीस्यां रे ॥
 ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुहप सुगंधा लेइ पंचरंगा, हार सुगंधा गूंथी ॥ प
 हिरावी प्रभु कंठे लहिस्यां, शिव मारगनी सूथी रे ॥ आ० ॥ ६ ॥
 गहिर स्वरें जिनवर गुण गातां, जात्र नवाणूं करिये ॥ मन गमती
 जमती विच जमतां, जवलायर निसतरिये रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ पूरव
 नवाणूं वार प्रथम जिन, रायण रुंले आया ॥ ए तीरथ शुभ जावें
 फरसी, करिये निरमल काया रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ लाज नदे ए गिरि
 वर लहिये, कहे इम केवल नाणी ॥ श्रीजिनचंद सदा हित वत्सल,
 प्रेम घणो चित्त आणी रे ॥ आ० ॥ ९ ॥ इति सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ अथ पारणा महावीर स्वामीका लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्री हरिहंत अनंत गुण, अतिशय पूरण गात्र ॥
 मुनि जे ज्ञानी संजमी, कहिये उत्तम पात्र ॥ १ ॥ पात्रतणी अनु
 मोदना, करतो जीरणसेठ ॥ आवक अच्युय गति लहे, नवयैवेका
 देठ ॥ १ ॥ दस चनुमासा वीरजी, विचरत संजम वास ॥ वेशा
 लापुर आविया, इग्यारमी चनुमास ॥ ३ ॥ ढाल ॥ चोमासी इ
 ग्यारमी जी, विचरत साहसधीर ॥ वेसालापुर बाहिरे जी, आव्या
 श्रीमहावीर ॥ १ ॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जी, जले में जेव्या श्री
 जिनराय ॥ सखीरी चोक पूरावो आय, मेरे जाग्य अनोपम माय
 ॥ ज० ॥ २ ॥ बलदेवनो ठे देहरो जी, तिहां प्रभु कानसग्न ली
 थ ॥ पञ्चस्काण चोमासनो जी, स्वामीए तप कीथ ॥ ज० ॥ ३ ॥
 जीरणसेठ तिहां वसे जी, पाले आवकधर्म ॥ आकारे तिण नल
 ख्या जी ॥ जाणे श्रीजिन मर्म ॥ ज० ॥ ४ ॥ आज अठे उपवा
 सीया जी, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ काले संधे प्रभु जीमस्ये जी,

सै हथ देख्युं दान ॥ ज० ॥ ५ ॥ सदा सेठ इम चिंतवे जी, हो
 सी सकल मुज आस ॥ पक्ष मास गिणतां अकां जी, पूरी थइ चो
 मास ॥ ज० ॥ ६ ॥ सामग्री आहारनी जी, जीरण कीधी तइ
 थार ॥ प्रभुनो मारग देखतो जी, बेगो घरने वार ॥ ज० ॥ ७ ॥
 घर आवे ठे पाहुणो जी, निहुत्यो एकण वार ॥ प्रभुजी कां न
 पधारसी जी, में निहुत्या वारंवार ॥ ज० ॥ ८ ॥ पीठे करस्युं
 पारणो जी, हूं प्रभूने पमिलान्न ॥ होथ मनोरथ एहवो जी, तोथ
 विन वरसे आन्न ॥ ज० ॥ ९ ॥ अवतर ऊज्या गोचरी जी, श्री
 सिद्धारथपुत ॥ वेसालापुर आवतां जी, पूरणघरे पहुत ॥ ज० ॥
 १० ॥ मिश्यात्वी जाणे नही जी, जंगम तीरथ एह ॥ चेनी प्रते
 इम कहे जी, कांइक निका देह ॥ ज० ॥ ११ ॥ चाटू नरने वा
 कला जी, प्रभूने आंगी दीथ ॥ नीरामी तेही लिया जी, तिहां प्र
 भू पारणो कीथ ॥ ज० ॥ १२ ॥ देव वजावे डुंडुनि जी, जै बो
 ले कर जोमि ॥ हेम लुष्टि हुइ तिहां जी, साढोवारे कोमि ॥
 ज० ॥ १३ ॥ कहो सेठ तुमे स्युं दियो जी, कियो पारणो वीर ॥
 लोकां प्रते इम कहे जी, में वडिगइ कीर ॥ ज० ॥ १४ ॥ राजा
 दिक् सहूए कहे जी, धन९ पूरणसेठ ॥ उंची करणी तेंकरी जी,
 अवर सहू तुज देठ ॥ ज० ॥ १५ ॥ ज्जीरणसेठ सुणे तवे जी, वा
 जित डुंडुनिनाद ॥ अन्यत्र कियो प्रभु नरेका मनुमें थयो
 विपत्ताद ॥ ज० ॥ १६ ॥ हूं जगमें अज्ञागियो ज, न आया
 साम ॥ कल्पवृक्ष किम पांसीये जी, मारुमंरुल ठाम ॥ ज० ॥
 १७ ॥ जेता मनोरथ में किया जी, तेता रह्या मनमांहि ॥ निर
 थन जिम२ चिंतवे जी, तिम२ निरफल थाथ ॥ ज० ॥ १८ ॥ स्वा
 मी तिहां कियो पारणो जी, कियो अन्यत्र विहार ॥ आया पास
 संतानिया जी, तिहां न केवलधार ॥ ज० ॥ १९ ॥ वेशालापर

राजियो जी, लोकास्थुं आणंद ॥ राय प्रभू पूछे इस्यो जी, सुगुरु
 चरण अरविंद ॥ ज० ॥ २० ॥ मेरे नगरमें को अठें जी, जीव पु
 न्य जसवंत ॥ कहे केवली आज तो जी, जीरणसेठ मइंत ॥ ज० ॥
 २१ ॥ राय कहे किए कारणो जी, जीरणसेठ मइंत ॥ दांन दियो
 जिन वीरने जी, पूरणसेठ मइंत ॥ ज० ॥ २२ ॥ राय प्रते कहे
 केवली जी, पूरण दीनो दांन ॥ हेमवृष्टि फल तेहने जी, अवर न
 कोइ प्रमाण ॥ ज० ॥ २३ ॥ देवलोक तिण वारमें जी, जीरण
 घाढ्यो बंध ॥ विना दांन दियां लह्यो जी, उत्तम फल संबंध ॥ ज०
 ॥ २४ ॥ घनी एक सुर डंडुजि जी, जो न सुणंतो कान ॥ लहि-
 नो जीरण तो सही जी, केवल अविचल ठाम ॥ ज० ॥ २५ ॥
 राजा जीरणने दियो जी, अधिक मांन सनमांन ॥ मुकनगरमें था
 पियो जी, जोवो पुण्य प्रमाण ॥ ज० ॥ ॥ २६ ॥ दांन दियो सु-
 पात्रने जी, तें निष्फल नवि जाय ॥ पात्रदांन अनुमोदना जी,
 जीरण जिम फल आय ॥ ज० ॥ २७ ॥ इम जांणी अनुमोदना
 जी, दांन सुपात्र रसाल ॥ दांन देवे सुपात्रने जी, नेहने नमे सु
 नि माल ॥ ज० ॥ २८ ॥ इति श्रीवीर प्रभु पारणा संगूर्ण ॥

॥ अथ आलोचन जीवरासि खभावण पद्मावती लिख्यते ॥

॥ दिव राणी पद्मावती, जीवरास खमावे ॥ जांणपणो ज
 ग दोहिलो, इण जगतअवि ॥ ते मुऊ मिच्छामिडुक्कं ॥ १ ॥ अ-
 रिइंतनीसाख ॥ जे में जीव विराधिया, चोरासी लाख ॥ ते मु०
 ॥ २ ॥ सात लाख पृथ्वीतणा, साते अप्पकाय ॥ सात लाख ते
 क्कायना, साते वलि वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दस प्रत्येकवनस्पती, चव
 दे लाख साधार ॥ वि ति चउरेंडी जीवना, वे वे लाख विचार
 ते० ॥ ४ ॥ देवता तीर्थच नारकी, ज्या/१ प्रकाशी ॥ चवदे लाख
 मनुष्यना, प-लाख चोरासी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इणजव परजव

विया, जे पाप अढार ॥ त्रिविध करवोसकं, डुरगति दातार ॥ ते०
 ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोड्या मृषावाद ॥ दोष अदत्तादां
 नना, मैथुन उनमाद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेढ्यो कारमो, की
 धो क्रोध विशेष ॥ मांन माया लोभ में कीया, बलि राग ने द्वेष
 ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दूहव्या, दीधा कूमा कलंक ॥ निं
 द्या कीधो पारकी, रति अरति निस्संक ॥ ते० ॥ ए ॥ चामी की
 धी चोतरे, कीधो आंपणमोसो ॥ कुयुरु कुदेव कुधर्मनो, जलो आं
 एयो जरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकोने जव जे किया, जीवना
 वध घात ॥ चिमीमार जव चिन्कला, मारघा दिन ने रात ॥ ते०
 ॥ ११ ॥ माढीगर जव माढला, जाड्या जलवासा ॥ धीवर जील कोली
 जवे, मृग मारघा पास ॥ ते० ॥ १२ ॥ काजी मुछाने जवे, पढी
 मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक जवे किया, कीधा पाप अघोर ॥ ते० ॥
 १३ ॥ कोटवालजवमें किया, आकाराकर दंरु ॥ वंदीवान मराविया,
 कोरमा ठनी दंरु ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने जवे, दीधा नार
 की डुरक ॥ वेदन जेदन वेदना, तारुना, अति तिखें ॥ ते० ॥ १५
 ॥ कुंजारने जव में किया, निवाह पचाया ॥ तेलीजव तिल पि
 लिया, पापे पेट जराया ॥ ते० ॥ १६ ॥ हालीने जव हल ख
 रुया, फाड्या पृथ्वी पेट ॥ सूराने दान किया घणा, दीधा बलध
 चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥ मालीने जव रोपिया, नानाविध वृक्ष, मूल
 पत्र फूल फूलना, लागी पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ आधोवाही
 धका जार ॥ पोठी जंड कीमा पड्या, दया ना
 १९ ॥ बीवाने जव बेतरयो, कीधा रांगणपास
 या घणा, धातुरवाद अच्युत ॥ ते० ॥ २० ॥ सूर
 माणस वृक्ष ॥ मदिरा मांन माखण जरघ्या,
 २१ ॥ खाण खिणार् धातुनी, पाणो

आपणे आनक पढुतो जी ॥ पाटणमांहे सारथवाहू, हींमे तुरकने
जोतो जो ॥ ए० ॥ १६ ॥ तुरके जानो दीठो गोठी, चोखा तिल
क निलामे जी ॥ संकेत पढुतो साचो जाणी, बोलावे बहु लामे
जी ॥ ए० ॥ १७ ॥ मुऊ घर प्रतिमा तुंजने आपूं, श्रीपास जिने
सर केरी जी ॥ पांचसे टक्का जो मुऊ आपे, तो मोले न मांगू फेरी
जी ॥ ए० ॥ १८ ॥ नाणो देइ प्रतिमा लेइ, आनक पढुतो रंगे जी,
केशर चंदन मृगमद घोली, विधसुं पूजा रंगे जी ॥ ए० ॥ १९ ॥ गादी
रूमी रूनी कीर्धी, ते मांहि प्रतिमा राखे जी ॥ अनुक्रम आव्या
पारकरमांहे, श्रीसंधने सुर साखे जी ॥ ए० ॥ २० ॥ उच्चव दिन
धिका आये, सत्तर जेद सनात्रो जी ॥ ठांमरना दरसण करवा,
लोक प्रजातो जी ॥ ए० ॥ २१ ॥

॥ बुहा ॥

दिन देखे अवधिसुं, पारकरपुरनो जंग ॥ जतन करूं
तीरथ अठे अजंग ॥ २२ ॥ सुहणो आपे सैठने, थल,
॥ महिमा आस्ये अतिघणी, प्रतिमा तिहां पढुचामा ॥
कैम तिहां अठे, तुंजने मुंजने जांण, संका ठोमी
रीस कांण ॥ २४ ॥

॥ बाल ॥

वाहण एक वृषेज जोतरे ॥ पार
बीजे ऊतरे ॥ २५ ॥ बांरे कोश
जी मनहनि सणो अइ,
किम करूं प्रगाण, कुट
तणो, मंमानं कि
किहा, सिलावटो
पकराज आवी इम

कहे ॥ २८ ॥ गूंदली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाणीज तिहा ॥
 स्वस्तिक सोपारी सहिनांण, पाहणतणी जलटस्ये खांण ॥ २९ ॥
 श्रीकल सजल तिहां किण जुन, अमृत जल निसरिस्ये कूड ॥ खा
 राकूआनो इह सहनांण, जूमि पड्यो ठे नीलो ठाण ॥ ३० ॥ सि
 लावटो सीरोही वसे, कोढ पराजिवियो किसमिसे ॥ तिहांथकी तूं
 इहा आणजे, सत्य वचन माहरो मानजे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मन
 थिर थापियो, शिलाचटाने सुहणो दियो ॥ रोग गमानुं ने पूरुं आस,
 पासतणो मंमे आवास ॥ ३२ ॥ सुपनमांदि मांन्यो ते वेण, हेम
 वरण देखाज्यो नेण ॥ गोठी मनह मनोरथ हुआ, सिलावटेने गया
 तेरुवा ॥ ३३ ॥ सिलावटो आवे सूरमो, जीमे खीरखांर घृत चूरमो ॥
 धमे घाट करे कोरणी, लगन जले पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंज २
 कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली ॥ रंगमंरुप रलियामणो
 रसे, जोतां मानवनो मन वसे ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरो प्राशाद, स्वर्ग
 समो मंमे आवास ॥ दिवस विचारी इमो घड्यो, ततखिण देवल
 ऊपर चढ्यो ॥ ३६ ॥ शुज लगन शुज वेला वास, पवासण वेग
 श्रीपाल ॥ महिमा मूढीजेरु समान, एकलमय वामे रहे वान ॥
 ॥ ३७ ॥ वात पुरी मंगलं स्थली, तवन नोधमे सांकली ॥
 गोठीतणा गोतरिया आत्मरक्षा स्तोत्रे लिख्यते ॥

मेष्टि जमस्कारं, सारं न जपो निश दीश

जस्मराप्यहं ॥ १ ॥ शो नवे निधान ॥ २ ॥

विघन विरु, जुं न

श्रीसंघने, देखामे

अरथ जंमार ॥ २ ॥ न गो

नील पलाणे नील ॥

चाट दिखावणदा

प्रति अपार, बोधा

लीला संपजे ॥ गौतम नामे

२ ॥ जे वैरी विरुआ वंक

नवि मंमे प्राण, ते गौत

निरमल काय, गौतम नामे

गौतम नामे जय २ का

॥ ઢાલ ૪ ॥

ઘરણા અઢારતણો લહે જોગ, વિઘન નિવારે ટાલે રોગ ॥ ૪૧ ॥
 વિત્ર અઢ સમરે જે જાપ, ટાલે સગલા પાપ સંતાપ ॥ ૪૨ ॥ નિર
 ધનને ઘર ધનનો સૂત, આપે અપુત્રિયાને પૂત ॥ કાયરને સૂરાપણો
 ધરે, પાર જતારે લઢી વરે ॥ ૪૩ ॥ દોઝાગીને દે સોઝાગ ॥ પગ
 વિઠ્ઠાણને આપે પાગ ॥ ઠાંમ નહી તેદને થે ઠાંમ ॥ મન વંઠિત પૂરે
 અઝિરાંમ ॥ ૪૪ ॥ નિરધારાને થે આધાર, જવસાયર જતારે પાર ॥
 આરતિયાની આરત જંગ, ધરે ધ્યાન તે લહે સુરંગ ॥ ૪૫ ॥ સમરયાં
 સાદ દિયે જક્કરાજ, જેદના મોટા અઢે દિવાજ ॥ બુદ્ધિહીનને બુદ્ધિ
 પ્રકાશ ॥ ગૂંગાને થે વચન વિલાસ ॥ ૪૬ ॥ હુલિયાને સુલનો દા-
 તાર, જયજંજણ રંજણ અવતાર ॥ બંધન તૂટે બેઘીતણા, શ્રીપાર્શ્વ
 નામ અકર સમરણા ॥ ૪૭ ॥

॥ દૂહા ॥

શ્રીપાર્શ્વ નામ અકર જપે, વિશ્વાનર વિકરાલ ॥ હસ્તિયુદ્ધ
 ટલે, હુલ્હર સીંદ સિયાલ ॥ ૪૮ ॥ ચૌરતણા જય ચૂકવે, વિષ
 ત જમકાર ॥ વિષધરના વિષ જતારે સુંગ્રામે જય જ્ઞપકાર ॥ ૪૯ ॥
 રાગ શોગ કરી દોહગ દૂર ૨૪ ॥ મસર શ્રીપાસનો, મ-
 હિમા ॥ ઢાલ ॥

વાહણા એક વૃ

વીજે જતારે ॥ શ્રીપાર્શ્વ અકર જ

ની મનાર ફકવીસ ગુણતે

તાવ એકંતરા હુ

વાલ મેવાજવંતે

, ફોટકા મોટકા

વિશ્વાન સિયાલ વિ-

कराल दंते ॥ ५३ ॥ ॐ ॥ धरलेंड पद्मावती संमर सोजावती, वाट
आघाट अटवी अटंते ॥ लखमी लोंदो मिले सुजस वेला वले ॥
संयल आस्या फले मन हसंते ॥ ५४ ॥ ॐ ॥ अष्ट महाजय हरे
कानपीमा टले ॥ ऊतरे शूल शीसग जणंते ॥ वडत वर प्रीतसुं
प्रीतविमल प्रभु, श्रीपास जिण नांम अजिराम मंते ॥ ५५ ॥ इति
श्रीगोमीपार्श्व जिन स्तवनं ॥

॥ अथ मंगलीक लिख्यते ॥

धम्मो मंगल मुक्किठं अहिंसा संजमो तवो ॥ देवा वितं नमं
संति, जस्त धम्मो सयामणो ॥ १ ॥ जहा डम्मस्स पुप्फेसु, जम
आवि अइरसं ॥ नय पुप्फं किलामेइ, सोइ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥ वती
मस्स। वुत्ता, जे लोए संति साहुणो ॥ विहंगमाइ पुं सदा

॥ ३ ॥ वयं च वि तिं लभामो ॥ नहि मानुषोने
हागमे सुरीयंते, पुप्फेसु जमरो जहा ॥ ४ ॥ नहि मुक्ति
जवंति अणिस्सिया ॥ नाणापिं रंथोदितं ॥ ५ ॥ उदय

॥ ६ ॥ इति ॥ सर्व मंगल मांगळ्यं, दास जांणी
सर्वधर्माणां जैनं, जयति साशनं ॥ १ ॥ मं सरो आप तूवा
प्रभु ॥ मंगलं स्थलज्जाद्या, जैनोधर्मं

॥ अथ आत्मरक्षा स्तोत्र लिख्यते ॥
ॐ नमो परमेष्ठि जमस्कारं, सारं नमो जपो निश दीश
वज्र, पंजरा जमरोप्यहं ॥ १ ॥ शो नवे निधान ॥ २ ॥

॥ ३ ॥ शीला संपजे ॥ गौतम नामे
॥ ४ ॥ जे वैरी विरुआ वंक
नवि मंरे प्राण, ते गौतम
निरमल काय, गौतम नामे

॥ ५ ॥ सव पावप्पणास
प्रति अपार, बोध, ॥ १ ॥ गौतम नामे जय ॥ २ ॥

ब्रह्मसिं, खादिरंगार स्वातिका ॥ ५ ॥ स्वादांतंच पदं ज्ञेयं, पढमं
 हवइ मंगलं ॥ वप्रो परिवज्जमयं, विधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥ महा
 प्रजावात् रक्षेयं, कुडोपड्व नाशनी ॥ परमेष्टि पदोद्भूता, कथिता
 पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्टी पदे सदा ॥ तस्य
 नस्याज्ञयं व्याधि, राधि आपि कदाचनः ॥ ८ ॥ इति आत्मरक्षा
 स्तोत्रं संपूर्णं ॥

॥ अथ नवकार स्तवनं ॥ (छंद)

आर- ॥ सुखकारण ज्ञवियण समरो नित नवकार, जिनशाशन
 साद गम चवदे पूरव सार ॥ इण मंत्रनी महिमा कहितां न लहुं
 प्रकाश सुरतरु जिम चितित वंठितफल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव
 तार, ज्ञ- सेव करे कर जोम, ज्ञयमंमल विचरे तारे ज्ञवियण कोमि
 नाम अक्षर- विलसे अतिशय जास अनंत, पहिले पद नमिये अरिगं
 इंत ॥ २ ॥ जे पनरे जेदे सिद्ध थया जगवंत, पंचमि
 श्रीपाश- अष्ट कर्म करि अंत ॥ कल अकल सरूपी पंचानंतके
 टले, डहर- ना पाय प्रणमुं बीजे पद वलि एह ॥ ३ ॥ गच्छज्जार
 त उरुकार- दशशिहर शोम, कर शारणवारण गुण वत्तीसे थोम
 शोग- तिरोमण सागर जेम गंजरी, तीजे पद नमिये आ
 हिमा- ॥ श्रुतधर गुण आगम सूत्र जणावे सार,
 ॥ अरथ विचार ॥ मुनिवर गुणयुता ते क
 ॥ नमिये अ- निश तेहना पाय ॥ ५ ॥ प्रं
 आरी वारी विषय विकार
 त्रिविधे ते प्रणमुं परमा
 २ माइख जूत वेताल,
 ३ समरयां संकट दूर ट
 तीस रसाल ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री संखेश्वरा पार्श्वनाथ स्तवनं ॥ (छंद)

॥ शैवो पास संखेसरो मन सुखे, नमूं नाथ निश्चे करी एक
 बुधे ॥ देवी देवता अन्यने शुं नमो गो, अहो जव्य लोको जुला
 कां जमो गो ॥ १ ॥ त्रैलोक्यना नाथने सुं तजो गो, पञ्चा पाश
 मे जूतमाने जजो गो ॥ सुराधेनु ठंकी अजाने अजो गो, महापंथ
 मूंकी कुपंथे ब्रजो गो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी काच माटे,
 अहे कोण राशजने हस्ति साटे ॥ सुरडुम ऊपामने आक वावे,
 महामूढ ते आकुला अंत पावे ॥ ३ ॥ किहां काकरोने जे किहां मेरु
 श्रृंग, किहां केशरीने किहां ते कुरंग ॥ किहां विश्वनाथं किहां अन्य
 देवा, करो एक चित्ते प्रभु पार्श्व सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्रजावती
 प्राणनाथं, सहू जीवने करे सह सनाथं ॥ महातत्व जाणी सदा
 जेह ध्यावे, तेहना डस्क दाखिइ दूरे गमावे ॥ ५ ॥ पांमी मानुषोने
 वृथा क्यु गमो गो, कुशीले करी देहने कां दमो गो, नहि मुक्ति
 वासं विना वितरागं ॥ ६ ॥ नदय
 रत्न ज्ञाखे सहा ॥ ७ ॥ मोरे आज मोल नालां ॥ ८ ॥ ६
 ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

॥ मि रास लिख्यते ॥

श्री गौतम नाम जपो निश दीश

वलशे नवे निधान ॥ १ ॥

दीक्षा संपजे ॥ गौतम नामे

२ ॥ जे वैरी विरुआ वंक

नवि मंरे प्राण, ते गौतम

निरमल काय, गौतम नामे

वाधे आय ॥ जे कृत अति अपार, बोध, ॥ १० ॥ गौतम नामे जयशकार

॥ ४ ॥ शाल दाल सदा घृत घोल, मनवंठित कप्पन तंबोल ॥
 घरे सुघरणी निरमल चित्त, गौतम नामे पूत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौ
 तम उदयो अविचल ज्ञाण, गौतम नाम जपो जगजाण ॥ मोटा
 मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल
 घोरानी जोरु, बारू बिलसे वंठित कोमि ॥ महियल मनि मोटा
 राय जो तूवे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले, उत्तम
 सरसी संगत मिले ॥ गौतम नामे निर्मल ज्ञान, गौतम नामे बाधे वान
 ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहू, गुरु गौतमना गुण ठे बहू ॥ कहे ला
 वण्य समय कर जोमि, गौतम तूवा संपत कोमि ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ शोल शती ठंद ॥

आदिनाथ आदि देइ जिनवर वांदी, सफल मनोरथ कीजिये
 ए ॥ प्रजात ऊठी मंगलीक काजे शोले शती नाम लीजिये ए ॥ १ ॥
 बालकुमारी जगदितकारी, ब्रह्मी जगतनी बहिननी ए ॥ घट २
 व्यापक अकररूपे शोल शती मांदि जे बनी ए ॥ २ ॥ बाहुवल
 जगनी सतिय शिरोमणि, सुंदरी नामे रुपज्ज सुता ए ॥ अंग स्व
 रूपी त्रिभुवनमांदि, जेइ अनोपम गुणयुता ए ॥ ३ ॥ चंदनवाला
 बालपणेशी शीलवती शुद्ध आविका ए, उरुदना वस्त्र प्रति
 लाज्या, केवल लहि व्रत जाविका ए ॥ ४ ॥ सूत्र ज धारणी
 नंदन राजेमती नेम वस्त्र ए ओवन मुनिवर गुण ॥ ५ ॥ शंजम
 लेइ देव डुल्लजा ए ॥ ५ ॥ अइ निश तेइना पाय नदा नाम
 वखाणिये ए, एकशो आठे न्धारो वारी जिस जाणि
 ये ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी त्रिविधे ते त्रिदिका ए;
 मल सलूणी राम जनीता २० माइ ॥ ७ ॥ कौशं
 क ठान शतानिक नामे, १ तमरा ए, तस घर घ
 ती मगाननी ११ ॥ ८ ॥ सुलश

साची शील न काची राची नही विषयारसें ए, सुखमौ जोतां पाप
 पुलाये नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ए ॥ राम रघुवंशी जेहनी का
 मण जनकसुता शीता शर्ती ए, जग सहू जांणे धीज करंता अनल
 शीतल अयो शीलश्री ए ॥ १० ॥ काचे तांतण चालणो बांधो कूं
 वायकी जल काढियो ए, कलंक ऊतारवा शतिय सुज्जझ चंपा बार
 उधारियो ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शील अकंपित शिवा शिवपद
 गांमनी ए ॥ जेहने नामे निरमल अइये बलिहारी तसु नांमनी ए
 ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुर पांमवरायनी कूंता नांमे कामनी ए, पांमव
 माता दशे दशारनी, बहिन पतिव्रता पदमनी ए ॥ १३ ॥ शील
 वती नामें शीलव्रत धारणी, त्रिविधे तेहने वंदीये ए ॥ नांम जप
 ता पातिक जाए, दरसन डुरित निकंदि ए ॥ १४ ॥ निषधानगरी
 नल नरपतनी, दवदंती तसु गेहनी, ए संकट पमियां शीलज राख्यो,
 त्रिजुवन कीर्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीता जगजन जीता,
 पुष्पचूला ने प्रज्ञावती ए ॥ विश्व विदाता कामित दाता, शोलमी
 शर्ती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरे दाखी शास्त्र ठे साखी, उदयरत्न
 ज्ञापे मुदा ए ॥ प्रह ऊठीने जे नर जणसे, ते लहिस्थे सुख संपदा ए ॥ १७

॥ अथ गौतम मंगल लिख्यते ॥

जय २ मंगलनिधान गौतम जयकारी ॥ ज० ॥ दृष्टवीकूख
 रत्नहीर, विश्वभूति पितु सधीर ॥ व्यास वेद चतुरवीर मन्मथ अ
 चतारी ॥ ज० ॥ १ ॥ ॥ रंग विप्र संग, नृप्रा सुरलोक गंग ॥
 करत धरत ठात्र पात्र, विरुद विजुधचारी ॥ ज० ॥ २ ॥ विचरत
 प्रभु आये चंग, वाणी गुण सप्त जंग ॥ वल्ले नीर, अणगले शाय
 तम हारी ॥ ज० ॥ ३ ॥ देवागम त्रि, अतिचार सधला ॥
 वीतराग वचन पेख, मिथ्यामत टारी ॥ परहरजे स्वा ॥ इम को
 अंग बार, स्वना कृत अति अपार, बोधा, सेण्डि ॥ किम उपम दी

गणधारी ॥ ज० ॥ ५ ॥ केवल चिद सरस पीन, मुक्ति लक्ष्मी धरम
लीन ॥ सु.ने.मन जल चरण मीन, कुंदन द्युति सारी ॥ ज० ॥ ६ ॥
सिद्धियोग नंद चंद, कार्तिक शित संघ वृंद ॥ फूलत घर कल्प
कंद, दूज कुमति हारी ॥ ज० ॥ ७ ॥ गुणशीलपुर देवमणो इंदुजुति
जगधणो ॥ कुशल निधान सुख जणी, पाठक रुद्विसारी ज० ॥ ८ ॥

॥ अथ मुनिवेष संबंधे पद लिख्यते ॥

॥ म्हांने प्यारो लागे ठे जी मुनिवर जेस ॥ म्हांने० हाथ
लकन्या कांधे कंवलिया, शिर शोजित तनु केश म्हा० ॥ १ ॥
चोलपट्ट चादर पांगरणी, उज्ज्वल रहत हमेश ॥ म्हा० ॥ २ ॥ ज
यणा कर मुखपत्ती धारक, रजोहरण सविसेस, म्हां० ॥ ३ ॥ थि
वरकलप जिनमुझधारी ॥ काटत कर्म कलेश ॥ म्हां० ॥ ४ ॥
दे उपदेश जिविक जनतारक, तमहर प्रगट दिनेश ॥ म्हां० ॥ ५ ॥
करतरामरुद्धिसार वंदना, निरखत एसो जेस ॥ म्हां० ॥ ६ ॥ इति पदं॥

॥ अथ अरिहंत स्तवनं पद ॥

॥ राग नाटक ॥

॥ जवसे सरधा शुद्ध जई, मन अरिहंत २ ध्याते हे ॥ अरि
हंत ध्यावत गुणगण पावत कर्म रहित हो जाते हे ॥ १ ॥ जय
२ जय २ श्रीजगदीश्वर, शंकर ब्रह्म कहाते हे ३ सहजानंदी जगत
उधारण, सुरनर चरण लुभाते हे ॥ सब देव मिल त्रिगढ़ स्वाते,
अपवर मंगल धुनि गाते हे ॥ देवडंड ~~मंत्र~~ नाद वजाते हे, धर्म के
ते हे सुख, हेते, हे ॥ अधिक जीव तिर जाते हे, जो नेश्वय मनमें
लाते हे ॥ दशरथ नृपते रुद्रसार, तूं आधार प्रभु मोहे तार ॥ ज०

सलूणी रामं जनीतां विष्णुं करणोनी सङ्गाय ॥

तुं ऊठे परजात, चार घन्टी ले पावेली
कार, जेस पामे जव साथर पाव ॥२॥

कवण देव कवण गुरुधर्म, कवण अमारुं ठे कुलकर्म, कवण अ
 मारो ठे व्यवसाय, एवुं चिंतवजे मन माय ॥ २ ॥ सामायिक ले
 जे मन शुद्ध, धर्मनी हेम धरजे बुध ॥ पन्तिकमणुं करे रयणी तणु,
 पातक आलोई आपणुं ॥ ३ ॥ कायाशक्ते करे पञ्चक्राण सूधि पाले
 जिनंनी आण ॥ जणजे गणजे स्तवन सज्ञाय, जिणहुंती निस्तारो
 आय ॥ ४ ॥ चितारे नित्य चउदे नीम, पाले दया जीवतां सीम
 ॥ देहरे जाइ जुहारे देव, इव्यजावणी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोषालें
 गुरु वंदन जाय, सुणो वखाण सदा चित्त लाय ॥ निर्दूषण सूजंतो
 आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ६ ॥ साहम्मीवत्सल करजे घणां,
 संगपण महोटा साहम्मीतणां ॥ दुःखीया हीणा दीना देखि, क
 रजे तास दया सुविशेष ॥ ७ ॥ घर अनुसारें देजे दान, महोटाशुं
 मं करे अन्निमान ॥ गुरुने मुखे लेजे आखमी, धर्म न मूकीश ए
 के धमी ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, उगा अधिकानो परिहार ॥
 म ज़रिशकेनी कूनी साख, कूना जनशुं कथन म ज्ञांख ॥ ९ ॥
 अनंतकाय कहिये वत्रीश, अन्नद्वय बाविशे विश्वावीश ॥ ते ज़कण
 नवि कीजें किमे, काचां कवला फल मत जिमे ॥ १० ॥ रात्रिजो
 जनना बहु दोष, जाणीने करजे संतोष ॥ साजी साबू लोह ने शु
 ली, मधु धावमी मत वेचो वली ॥ ११ ॥ वली म करावे रंगण
 पोस, दूषण घणां कह्यां ठे तास ॥ पाणी गलजे वेबे वार, अणगल
 पीतां दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीनां करजे यत्न, पातक ठंमी
 करजे पुण्य ॥ गाणा इंधण चूले जोथ, वावरजे जिम पाप
 न होय ॥ १३ ॥ घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीर
 म थोइश चीर ॥ ब्रह्मव्रत सूधुं पालजे, अतिचार सघला तणु
 ॥ १४ ॥ कह्यां पत्तरे कर्मादान, पापतण्णे, परहरजे खाण इम कांइ
 म लेजे अनरथ दंन, मिश्रया मेल म ज्ञां, मैणिंइ ५१ किम उपम दी

ज्ञ-शुद्ध हैने राखजे, बोल विचारीने जांखजे ॥ पांच तिथि म करौ-
 आरंज, पालो शीयल तजो मन दंज ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूध
 ने दहिं, ऊघामां मत मल स ॥ उत्तम ठामें खरचा वित्त, पर
 उपगार करो शुज्जवित्त ॥ १७ ॥ दिवस चरिम करजे चोविहार;
 चार आधार तणो परिहार । दिवस तणां आलोए पाप, जिम जां
 जे सघला-संताप ॥ १८ ॥ संध्यायें आवश्यक साचवे, जिनवर च
 रण शरण जत्र जवें ॥ चरे शरण करी दृढ होय, सागारी अण
 सण ले सोय ॥ १९ ॥ करे मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुजे जा
 यवा-॥ समेतशिवर आहू गिरनार, जैटीश हुं धन धन अवतार ॥
 ॥ २० ॥ श्रावकनी करणी ठे एह, इथी अयि जवनो ठेह ॥ आठे
 कर्म पने पातलां, पा १ तणा तु आ-ला ॥ २१ ॥ वारु लहियें
 अमर विमान, अनुक्रमे धामे शिवरधार ॥ कहे जिनद्वर्ष घणंसस-
 नेह, करणी दुःखहरणी ठे एह ॥ २२ ॥ इति श्रावकनी करणीनी स० ॥

॥ अथ गौतम स्वामीनो रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिणोसर चरण कमल कमलाकय वासो, पणभवि प
 जणिसुं सामी साल गायम गुरुरासो ॥ मणतण वयणे एकंद कर
 वि निसुणहु जो जविया, जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गह
 गहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव तिरिजरहखित्त खोणी तल मंमण, मगहदे
 स सेणियनरेस रिजदल बलखंमण ॥ धणवर गुवर गाम नाम जि-
 हां गुणगणसज्जा, विष्ण वसे वसुज्जुइ तज्ज तसु पुहवी जज्जा ॥ २ ॥
 ताणपुत्त तिरिइंद नूय जूवलपपसिद्धो, चवदह विज्जा विवहरूव ना
 ॥ रस लुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार गुण गणह मनोहर, सा
 ॥ सुप्रमाणदेह रूवहिरंजावर ॥ ३ ॥ नयणवयण कर चरण
 ॥ ठामें दातज्जपामिय, ॥ तारा चंद सूरि आकास जमामिय
 ॥ मगतनी ॥ अनंग ॥ मेढ्यो निरधामिय, धीरम मेरु गंजी

र सिंधु चंगम चयचामिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास जण
 जंपे किंचिय, एकाकी किल ज्ञीत इत्त गुण मेळया संचिय ॥ अह
 वा निच्चयपुत्र जम्म जिणवर इण अंचिय, रंजा पनमा गवरि गंग
 रतिहां विधि वं चय ॥ ५ ॥ नय बुध नय रर कविण कोय जसु
 आगल रहियो, पंचसयां गुण पात्र ठात्र हींमे परवरिया ॥ करय
 निरंतर यज्ञ करम मिळयामति मोहिय, अणचल हासे चरमनाण,
 वंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव जरह वासंमि
 खोणीतल मंरुण, मगह देस सेणिय नरेसर, वरगुवरगाम तिहां,
 विष्ण वसे वमजूइ, सुंदर तसु पुहवि ज्ञा, सयलगुणगणरूवनिहा
 ण, ताणपुत्त विज्ञानिलां, गोयम अतिही सुजाण ॥ ७ ॥ जास ॥ चर
 म जिनसर केवलनाणी, चोविहसंघ पइठ जाणी ॥ पाथा पुर सामी
 संपत्तो, चनविह देव निकायाहें जुतां ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण
 तिहां किजें, जिण दोठे मिळयामत बीजे ॥ त्रिजुवनगुरु सिंहास
 सन वेठा, ततखिण माह दिगंत पइठ ॥ ९ ॥ क्रोध मानमाया म
 दंपूरा, जाये नाठा जिम दिनचोरा ॥ देव डंडुजि आगासैं वाजी,
 धरम नरेसर आब्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि अरचे तिहां देवां,
 चनसठ इंडज मागे सेवा ॥ चामर ठत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जि
 नवर जग सह मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसजर वरवरसंता, जोज
 नंवाणि ब्रवाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर
 किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कंत समोहियजलहलकंता, गंयण
 विमाणहि रणरणकंता ॥ पेखवि इंडजूइ मन चिंते, सुर आवे अंम
 यज्ञ हुवंते ॥ १३ ॥ तीरतरंकु जिम ते वहिता, समवसरण पुहता
 गहगहित ॥ तो अजिमानें गोयम जंपे, इण अवसर कोपें तणु
 कंपे ॥ १४ ॥ मूढा कोक अजाण्युं बोले, सुर जाणंता इम कांइ
 कोले ॥ सो आगल कोइ जाण ज्ञणीजें, मेरुं अवर किम उपम दी

जे ॥१५॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर विर जिणवर नाण संपन्न पावापुरसुर
 महिय, पत्तनाह संसारतारण ॥ तिहिं देवइ निम्नहिय, समवसरण
 बहु सुस्कर कारण ॥ जिणवर जग उज्जाय करे, तेजहि कर दिन
 कार सिंहासण सामी ठव्यो, हुन तो जयजयकार ॥ १६ ॥ ज्ञास
 ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इंद्रभूय भूयदेव तो ॥ हुंकारो कर सं
 चरिय, कवणसु जिणवर देव तो ॥ जोजन भूमि नमोत्तरण, पे
 खवि प्रथमारंज ॥ तो दहदिस देखे विबुधवधू, आवंती सुररंज तो ॥
 १७ ॥ मणिमय तोरणदंरु ध्वज, कोलीसे नवघाट तो ॥ वयरवि
 वर्जितजंगुण, प्रातीहारिज आव तो ॥ सुर नर किन्नर अनुरवर,
 इंद्र, इंद्राणी राय तो ॥ चित्त चमकिय चिंतव ए, सेवंतां प्रभु पाय
 तो ॥ १८ ॥ सहस्र किरण सामो वीरजिण, पेखिग्र रूप विसाल
 तो ॥ एह असंजव संजव ए, साचो ए इंद्र जाल तो ॥ तो बोला
 वह त्रिजग गुरु, इंद्रभूइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संसा सामि सवे,
 फेरु वेदपण तो ॥ १९ ॥ मान मेळ मद ठेल करे, जगतहिं ना
 म्यो सीस तो ॥ पंच सयांसूं व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो
 ॥ वंधव संजम सुणवि करे, अगनिभूइ आवेय तो ॥ नाम लेइ आज्ञास
 करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहरयण, आप्या वीर
 इग्यार तो ॥ तो उपदेसे जुवन गुरु, संयमजुं व्रत वार तो ॥ विहुं उपवा
 सें पारणो ए, आपणपें विरहंत तो गोयम संयम जग सयल, जय जय
 कार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ॥ इंद्रभूइ इंद्रभूइ चढियो बहुमान
 हुंकारो करि कंपतो, समवसरण पहुतो तुरंतो ॥ जे संसा सामि स
 वे, चरमनाह फेरु फुरंततो ॥ बोधबीज सज्जायमनें, गोयम नवहि
 विरत्त ॥ दिख लेई सिखा सही, गणहरयसंपत्त ॥ २२ ॥ ज्ञास
 ॥ आज हुन सुविहाण, आज पंचेलिमां पुण्य जरो ॥ दीठा गोमय
 सामि, जो नियनयणें अमिय जगे ॥ समवसरण मज्जार, जे जे

संसा ज्ञयजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूठे मुनि पवरो ॥ २३ ॥
 जीहां दीजें दीख, तिहां केवल उपजे ए ॥ आप कर्ने अणहुंत, गो-
 यम दीजें दान इम ॥ गुरु उपर गुरु जक्ति, सामी गोयम उपनिय
 ॥ अणचल केवल नाण, रागज राखें रंग जरे ॥ २४ ॥ जो अष्टा
 पद सेल, वंदे चढ चउवील जिण ॥ आत्म लब्धि वसेण, चरम
 सरीरी सोज मुनि ॥ इय देसणा निसुणेह, गोयम गणहर
 संचरिय ॥ तापस पररसएण, जो मुनि दीगो आवतो ए ॥ २५ ॥ त
 प्रसोसि यनिय अंग, अह्मां सगति न ज्ञयजे ए ॥ किम चढसे दृढ
 काय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुज ए अजिमान, तापस
 जो मन चिंतये ए ॥ तो मुनि चढियो वेग, आलंबवि दिनकर कि-
 रण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निष्पन्न, दंरु कलस ध्वज वरु सहिय ॥
 पेखवि परमाणंद, जिणहर जरतेसर महिय ॥ निय निय काय प्र-
 माण, चिहुं दिसि संठिय जिणह विंब ॥ पणमवि मन उद्धास, गो-
 यम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यकजुं
 जकदेव तिहां ॥ प्रति बोध्या पुंमरीक, कंमरीक अध्ययन जणी ॥
 बलता गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे ॥ लेई आपण साथ,
 चाले जिम जूयाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांर घृत आण, अमीय
 वृठ अंगूठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे ॥ पंचस-
 यां शुद्ध ज्ञाव, उज्जाज जरियो खीर मिसे ॥ साचा गुरुसंयोग, क-
 वल ते केवल रूप हुआ ॥ २९ ॥ पंचसयां जिणनाह, समवसरण
 प्राकारत्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उपपन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे ज-
 णवि पीयूष, गाजंती घन मेघ जिम ॥ जिनवाणी, निसुणेवि, नाणी
 हुया पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण
 पन्नरेसें, उपन्न परवरिय, हरिधुरिय जिणनाह वंदइ, जाणेवी जग
 गुरु वयण, तिहिं नाण अण्णाण मिइइ, चरमजिनेसर इम जणे;

गोयम म करिस खेव, ठेह जाय आपण सही, होस्यां तुल्ला वेव
 ॥ ३१ ॥ जास ॥ सामियो ए वीर जिणंद, पूनमचंद जिम उल्ल
 सिय ॥ विहरियो ए जरहवासंमि, वरस बहुतर संवसिय ॥ ठव
 तो ए कणय पनमेण, पायकमल संधें सहिय ॥ आवियो ए नय
 णाणंद, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखयो ए गोयमसामि,
 देवसमा प्रतिबोध करे ॥ आपणो ए तिसलादेवि, नंदन पुहतो पर
 मपए ॥ वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाण्यो जिण समे ए ॥
 तो मुनि ए मनविखवाद, नादजेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण
 समे ए सामिय देखि, आपकनासूं टालियो ए ॥ जाण तो ए तिहु
 अण नाह, लोक विवहार न पालियो ए ॥ अतिजलो ए कीधलो
 सामि, जाण्यो केवल मागसे ए ॥ चिंतव्यो ए बालक जेम, अहवा
 केमें लागसे ए ॥ ३४ ॥ हूं किम ए वीर जिणंद, जगतहिं जोलें
 जोलव्यो ए ॥ आपणो ए उंचलो नेह, नाह न संपे साचव्यो ए ॥
 साचो ए ए वीतराग, नेह न हेजे टालियो ए ॥ तिणसमे ए गो
 यम चित्त, राग वैरागें वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उल्लट,
 रहितो रागें साहियो ए ॥ केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज
 उमाहियो ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे
 ए ॥ गणवरु ए करय वखाण, जविया जव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥
 ॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पच्चास, गिहवासें सं
 वसिय तीसवरससंजम विजूलिय, सिरि केवलनाणपुण, वार वरस
 तिहुअण नमंनिय, राजगृही नयरी ठव्यो, बाणवड वरसान, सामी
 गोयम गुणनिलो, होसे सिवपुर ठाठ ॥ ३७ ॥ जास ॥ जिम सह
 कोरें को दल ठहुके, जिम कुसुनावन परिमल महके, जिमचंदन सो
 गंधनिधि ॥ जिमगंगाजल लहिरयां लहके, जिम कणयाचल ते जें ऊ
 लके, तिम गोयम सोजागनिधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे

हेसा, जिम सुरतरुवर कणयय तंसा, जिम मंहुयर राजीववने ॥ जिम
 रयणायर रयणें विलसे, जिम अंबर सारागण विकसे, तिम गोयम गु
 रु केल घने ॥ ३९ ॥ पूनमनिसि जिम ससियर सोहे, सुरतरु महि
 मा जिम जगमांहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गि
 रिवर राजे, नर चड धर जिम मेगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि प
 वरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम
 उत्तम मुख मधुरी जाषा, जिम वन केतकि महमहे ए ॥ जिम जू
 मीपती ज्ञुयवल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, गोयमलबधे
 गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ पितामणि कर चढीयो आज, सुरतरु सारे
 वंढिय काज, कामकुंज सहु वशि दुआ ए ॥ कामगवी पूरे मन
 कामी, अष्टमहासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरी ए ॥
 ४२ ॥ पणवस्कर पहिलो पजणी जें, माया बीजो श्रवण सुणीजें ॥
 श्रीमिति सोजा संजवो ए ॥ देवां धुर अरिहंत नमीजें, विनय पहु
 जवजाय अणीजें, इण मंत्रें गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसता
 काय करीजें, देस देसांतर काय जमी जें, कवण काज आयास क
 रो ॥ प्रह ऊठी गोयन समरीजें, काज समगल ततखिण सीजे,
 नवनिधि विलसे तिहां घरे ए ॥ ४४ ॥ चवदयसय बारोत्तर वरसें,
 गोयम गणहर केवल दिवसें, कीयो कवित उपगारपरो ॥ आदहिं
 भंगल ए पजणीजें, परव महोन्नव पहिलो दीजें, रिद्धि वृद्धि क
 ढयाण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण नयरें धरियो, धन्य
 पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीस्कियो ए ॥
 विनयवंत विद्या जंरार, तसु गुण पुहवी न लभ्रइ पार, बरु जिम
 साखा विस्तरो ए ॥ गोयमस्वामीनो रास जणीजें, चउविह संघ
 रलियायत कीजें, रिद्धिवृद्धि कढयाण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन
 वनो दिवरावो, माणक मोतीना चोक पूरावो, रयण सिंहासन बेस

णो एं ॥ तिहां ठेठी गुरु देशना देशी, ज्विक जीवना काजें सरसी;
नित नित मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥ इति श्रीगोतम स्वामीनो
रास संपूर्ण ॥

॥ राग प्रज्ञाती जे करे, प्रह ऊगमते सूर ॥ चूख्यां जोजन
संपजे, कुरखा करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा जं
कार ॥ जे गुरु गोतम समरियें, मनवंठिन दातार ॥ २ ॥ पुं
मरीक गोयम पमुहा, गणवर गुण नंपन्न ॥ प्रह ऊग्रीनें प्रणमतां,
चवदंसे वावन्न ॥ ३ ॥ खंतिखमंगुलकलियं, सुविशियं सबलदि स
पसं ॥ वीरस्स पढम सीसं, गोयम सामी नन्नंतानि ॥ ४ ॥ सर्वा
रिष्टप्रणाशाय, सर्वाजिघार्थदायिने ॥ सर्वलब्धनिधानाय, गोतमस्वा
मिने नमः ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सेत्रुंज रास लिख्यते ॥

॥ दृष्ट ॥

॥ श्रीरिसहेसर पाय नमी, आंणी मन आनंद ॥ रास जं
णूं रलियामणो, सेत्रुंजनो सुखकंद ॥ १ ॥ संवन उयार सनोनेरे, हुं
आ धनेश्वर सूर ॥ तिण सेत्रुंज मानावत जियो, शिवाइत्य हंजूर
॥ २ ॥ वीर जिगंद समवसरंथा, सेत्रुंज ऊगर जेम ॥ इंदादिक आ
गल कह्यो, सेत्रुंज महातम एव ॥ ३ ॥ सेत्रुज तीरथ सारिखो,
नदी ठे तीरथ कोय ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालमें, तैरय सगला जोय
॥ ४ ॥ नांमे नव निध संपजे, दीठा डुरित पुलाय ॥ जेटंता जव
जय टले, सेवंता सुख आय ॥ ५ ॥ जंजू रामे दीप ए, दक्षिण
जरत मजार ॥ सोरठ देस मुहामणो, तिहां ठे तीरथ सार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहिली ॥ राग रामलिरि ॥

॥ सेत्रुंजो ने श्रीपुंमरीक, सिद्धहेत्र कहुं तहतीक ॥ विम
लाचलने करुं प्रणाम, ए सेत्रुंजैना इकरास नांम ॥ १ ॥ सुरगिदि

ने महागिरि पुन्यरास, श्रीपदपर्वत इन्द्रप्रकाश ॥ महातीर्थ पूरवे
 सुखकाम ॥ ए० ॥ २ ॥ सासतो पर्वत ने दृढशक्ति, मुक्तिनिर्लो-
 तिण कीजे नक्ति ॥ पुष्पदंत महापद्म सुगम ॥ ए० ॥ ३ ॥ पृ-
 थ्वीपीठ सुजड़ केलास, पातालमूल अकर्मक तास ॥ सर्व काम
 कीजे गुणग्राम ॥ ए० ॥ ४ ॥ श्रीसेत्रुंजना इकवीस नाम, जपेज बे-
 वा अपने ग्राम ॥ सेत्रुंज जात्रातो फल ते लहे, महावीर जगवंत
 हम कहे ॥ ए० ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ सेत्रुंजो पहिले अरे, असी जोगण परिमाण ॥ पिहुलो
 सूल उंचपण, ठबीस जोगण जाण ॥ १ ॥ सत्तर जोगण जाणवो, बीजे
 अरे विसाव ॥ बीस जोगण उंचो कह्यो, मुज वंदना त्रिकाल ॥
 २ ॥ साठ जोगण तीजे अरे, पिहुलो तीरथराय ॥ सोळ जोगण
 उंचो सही, ध्यान धरु चित लाय ॥ ३ ॥ पचास जोगण पिहुलपण,
 सोथे अरे मजार, उंचो दस जोगण अचल, नित प्रणामे नर नार ॥
 ४ ॥ बार जोगण पंचस अरे, मूलतणै विसतार ॥ दो जोगण उंचो
 अवे, सेत्रुंजो तीरथ सार ॥ ५ ॥ सात हाथ ठेठे अरे, पिहुलो पर-
 बत एह ॥ उंचो दोस्ये सो धनुष, सासतो तीरथ एह ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ केवलनांणी प्रमुख तीर्थकर, अनंत सीधा इण ग्राम रे ॥
 अनंत वली सिऊस्ये इण ठामे, तिण करु नित परणाम रे ॥ १ ॥ सेत्रुं-
 जसाधू अनंता सीधा, सीऊसी वलिय अनंत रे ॥ जिण सेत्रुंज ती-
 रथ नही जेव्यो, तेगरजावास कहंत रे ॥ से० ॥ २ ॥ फागुण सुदि
 आठमने दिवसे, रुषजदेव सुखकार रे ॥ रायणरुख समीसरया
 स्वांमी, पूर्व निनाणूं वार रे ॥ से० ॥ ३ ॥ जरतपुत्र वैत्री पुनम
 दिन, इण सेत्रुंजगिरि आय रे ॥ पांच कोमीसुं पुंमरीक सीधा, ति

सा पुंनरीक कहाय रे ॥ से० ॥ ४ ॥ नमि विनमिराजा विद्याधर,
 बे बे कोमी संघात रे ॥ फागुण सुद दशमी दिन सीधा, तिण
 प्रणमुं परजात रे ॥ से० ॥ ५ ॥ चेत्रमास वदि चौदसने दिन, न
 मीपुत्री चउसठि रे ॥ अणसण कर सैत्रुंजगिर ऊपर, ए सहु सी
 धा एकठि रे ॥ ६ ॥ से० ॥ पोतरा प्रथम तीर्थकर केरा, झावरु ने
 वारिखिछ रे ॥ काती सुदि पूनम दिन सीधा, दश कोमी
 मुनिसुं निसछ रे ॥ से० ॥ ७ ॥ पांचे पांनव इण गिर सी
 धा, नव नारद रुपिराय रे ॥ संव प्रज्जुन्न गया इहां मुगते, आठू क
 र्म खपाय रे ॥ से० ॥ ८ ॥ नेम दिना तेविस तीर्थकर, समवस
 रया गिरिशृंगरे ॥ अजित शांति तीर्थकर बेहू, रह्या चोमासे सुरंग
 रे ॥ से० ॥ ९ ॥ सहस साधु परिवार संघाते, थावच्चासुत साध
 रे ॥ पांचसें साधुसुं सेलग मुनिवर, सैत्रुंज शिवसुख लाधरे ॥ से०
 ॥ १० ॥ असंख्यात्ता मुनिसैत्रुंज सीधा, जरतेसरने पाट रे ॥ रा
 म अने जरतादिक सीधा, मुक्तितणी ए वाट रे ॥ से० ॥ ११ ॥
 जालि मयाली ने उवयाली, प्रमुख साधुनी कोमि रे ॥ साधु अन
 ता सैत्रुंज सीधा, प्रणमुं बे कर जोमि रे ॥ से० ॥ १२ ॥

॥ ढाल वीजी ॥ चोपाइकी ॥

॥ सैत्रुंजना कहुं सोल उखार, ते सुणज्यो सहुको सुविचार
 ॥ सुणतां आणंद अंग न माय, जनमश्ना पातिक जाय ॥ १ ॥ रु
 पजदेव अयोध्यापुरी, समवसरया स्वामी हित करी ॥ जरत गयो
 वंदएने काज, ये उपदेश दियो जिनराज ॥ २ ॥ जगमांहे मोटा
 अरिहंत देव, चोसठ इंड करे जसु सेव ॥ तेइसी मोटो संघ कहाय,
 जेइने प्रणमें जिनवरराय ॥ ३ ॥ तेइसी मोटो संघवी कह्यो, जर
 त सुणीने मन गहगह्यो ॥ जरत कहे ते किम पांमिये, प्रजु कहे सै
 त्रुंज जात्रा किये ॥ ४ ॥ जरत कहे संघवीपद मूज, थे आपो

हूं अंगज तुझ ॥ इंदे आया अकृतवास, प्रभु आपे संघवीपद ता
 स ॥ ५ ॥ इंदे तिण बेला ततकाल, जरत सुजडा बिहुने माल ॥
 पहिरावी घर संप्रेमीया, सखर सोनाना रथ आपिया ॥ ६ ॥ रिष
 जदेवनी प्रतिमा वली, रत्नतली दीधी मन रली ॥ जरते गणवर
 घर तेमिया, शांतिरु पौष्टिक सहु तिहां किया ॥ ७ ॥ कंकोत्री मू
 की सहु देस, जरत तेमियो संघ असेस ॥ आयो संघ अयोध्यापुरी,
 प्रथमथकी रथजात्रा करी ॥ ८ ॥ संघ जगत कीधी अतिघणो, सं
 घ चलायो सेत्रुंज जशी ॥ गणवर बाहूबल केवली, मुनिवर कोम
 साथे लिया वली ॥ ९ ॥ चक्रवर्त्तनी सघली रुद्धि, जरते साथे ली
 धीतिद्ध ॥ हय गय रथ पायक परिवार, ते तो कहतां नाथे पार
 ॥ १० ॥ जरतेसर संघवी कहवाय, मारग चैत्य ऊधरतो जाय ॥
 संघ आथे सेत्रुंजा पात, सहुनी घुगी मननी आस ॥ ११ ॥ नयणे
 निरुद्धे सेत्रुंजराय, अशि लक्षिक मोत्यासुं वधाय ॥ तिण वामे
 रही महोदध क्रिये, जरते आशंद पुर वासिनो ॥ १२ ॥ संघ
 सेत्रुंजा ऊपर चढयो, फरसंता पातिक ऊरु पड्यो ॥ केवलग्यानी
 पगला तिहा, प्रणम्यां रायणरुख वे जिहां ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी
 स्नात्र निमित्त, ईशनिंद आसी सुप्रवित्त ॥ नदी सेत्रुंजे सोहामणी,
 जरते दीगो कौतुक जणी ॥ १४ ॥ गणवरदेव तणे उपदेश, इंदे
 बलि दीधो आदेश ॥ श्रीआदिनाथतणे देहरो, जरत करायो गुरि
 सेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रासाद उत्तंग, रतनतली प्रतिमा मन
 रंग ॥ जरते श्रीआदीसरतली ॥ प्रतिमा थापी सोहामणी ॥ १६ ॥
 सरुदेवानी प्रतिमा वली, माही पूनम थापी रली ॥ ब्राह्मी सुंदरि
 प्रमुख प्राशाद, जरते थाप्या नवला नाद ॥ १७ ॥ इम अनेक
 प्रतिमा प्राशाद, जरते कराया गुरु सुप्रशाद ॥ जरततणो पहिलो
 उद्धार, संगलोही जाणे संसार ॥ १८ ॥

हाल बोधी ॥ राग सिंधुडो आसाउरी ॥

॥ नरततणें पाट आठमे, दंरवीरज थयो रायो जी ॥ नर-
ततणी पर संघ कियो, सेत्रुंज संघवी कहायो जी ॥ १ ॥ सेत्रुंज
उद्धार सांजलो, सोल मोटा श्रीकारो जी ॥ असंख्यात बीजा
बली, तेन कहुं अधिकारो जी ॥ से० ॥ २ ॥ चैत्य करायो रूपांत-
णो, सोनानो विंव सारो जी ॥ मूलगो विंव नमारीयो, पञ्चमदि-
सि तिण वारो जी ॥ से० ॥ ३ ॥ सेत्रुंजैनी जत्रा करी, सफल
कियो अवंतारो जी ॥ दंरवीरज राजातणो, ए बीजो उद्धारो जी ॥
से० ॥ ४ ॥ सो सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंरवीरजथी जिवारो जी,
इशानेइ करावियो ॥ ए तीजो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ५ ॥ चौथा
देवलोकनो धणी, माहेइ नाम उद्धारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो करा
वियो, ए चौथो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ६ ॥ पांचमा देवलोकनो धणी,
ब्रह्मेइ समकितधारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो करावियो, ए पांचमो
उद्धारो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ जुवनपंती इइनो कियो, ए षष्ठो उद्धारो
जी ॥ चक्रवर्ति संगरतणो कियो, ए सातमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ८ ॥
अग्निनंदन पासे सुण्यो, सेत्रुंजनो अधिकारो जी ॥ व्यंतरइइ करा
वियो, ए आठमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥ चंडप्रभु स्वामीनो
पोतरो, चंडशेखर नाम मळहारो जी ॥ चंडयशराय करावियो, ए
नवमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी सुणी देशना,
शांतिनाथसुत सुविचारो जी ॥ चक्रधरराय करावियो, ए दशमो
उद्धारो जी ॥ से० ॥ ११ ॥ दसरथसुत जंगदीपतो, मुनिसुव्रतस्वां
मी वारो जी ॥ श्रीरामचंड करावियो, ए इग्यारमो उद्धारो जी ॥
से० ॥ १२ ॥ पांरुव कहे अमे पापिया, किम वूटां मोरी मायो
जी ॥ कहे कुंती सेत्रुंजतणी, जात्र कियां पाप जायो जी ॥ से०
॥ १३ ॥ पांचे पांरुव संघ करी, सेत्रुंज जेव्यो अपारो जी, काष्ट जे

स्य विंव लेपना, ए वारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणी
 पाखाणनी, प्रतिमा सुंदर सरूपो जी ॥ श्रीसेत्रुंजनो संघ करी,
 यापी सकल सरूपो जी ॥ से० ॥ १५ ॥ अठोतर सो वरसां गया,
 विक्रम नृपथी जिवारो जी ॥ पोरवाम जावम करावियो, ए तेरमो
 उद्धारो जी ॥ १६ ॥ से० ॥ संवत वार तिमोतरे, श्रीमाली सुविचा
 रो जी, वाइमदे मुंहते करावियो, ए चवदमो उद्धारो जी ॥ १७ ॥
 से० ॥ संवत तेरे इकोतरे, देसलहर अधिकारो जी ॥ समरेसाह
 करावियो, ए पनरमो उद्धारो जी ॥ १८ ॥ से० ॥ संवत पनर स
 त्यासिये, वेसाख वदि शुभ वारो जी ॥ करमे मोसी करावियो,
 ए सोलमो उद्धारो जी ॥ १९ ॥ से० ॥ संप्रति काले सोलमो, ए
 वरतेवे उद्धारो जी ॥ नित२कीजे वंदना, पांमीजे जवपारो जी ॥ २० ॥ से०

॥ दूहा ॥

॥ बलि सेत्रुंज महातम कहूं, सांजलो जिमे ठे तेम ॥ सूरि
 धनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दर्श-
 नी, सेत्रुंजे पूजनीक ॥ जगवंतनो जेष मानता, लाज हुवे तह-
 ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजा ऊपरे, चैत्य करावे जेह ॥ दल परमाण
 ॥ ३ ॥ सेत्रुंज ऊपर देहरो, नवो
 निपावे कोय ॥ जीर्णोद्धार करावतां, आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥
 स्तिन ऊपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार ॥ चक्रवर्तनी स्त्री यई,
 दिनसुख पांमे सार ॥ ५ ॥ कांती पूनम सेत्रुंजे, चढने करे उप
 ॥ ६ ॥ कांती
 वरवोटो कह्यो, जिहां सीधा दश कोमि ॥ ब्रह्म स्त्री बालक द
 ॥ ७ ॥ ५पथी नाखे ठोर ॥ ८ ॥ सहस लाख आवक जणी, जो
 पुन पुन विशेष ॥ सेत्रुंज साधु पमिलाजतां, अधिको तेहथी देख ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ सेतुंज गया पाप बूटिये, लीजे आलोयण एमो जी, तप
 जप कीजे तिहां रही, तीर्थकर कह्यो तेमो जी ॥ से० ॥ १ ॥ जि
 ण सोनानी चोरी करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सेतुं
 ज चढी, एक करे उपवासो जी ॥ से० ॥ २ ॥ वस्तुतणी चोरी
 करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सेतुंज चढी, एक करे
 उपवासो जी ॥ ३ ॥ से० ॥ कांसी पीतल तांवा रजतनी ॥ चोरी
 कीधी जेणो जी ॥ सात दिवस पुरिमह करे, तो बूटे गिरि एणो
 जी ॥ ४ ॥ से० ॥ मोती प्रवाला मूंगिया, जिण चोरया नर नारो
 जी ॥ आंखिल कर पूजा करे, त्रिण टंक शुद्ध आचारो जी ॥ ५ ॥
 से० ॥ धान पाणी रस चोरिया, ते जेठे सिद्धदेवो जी ॥ सेतुंज
 तलहटी साधुने, पमिलाजे सुध चित्तो जी ॥ से० ॥ ६ ॥ वस्त्राञ्जरण
 जिणे हरया, ते बूटे इण मेलो जी ॥ आदिनाथनी पूजा करे, प्रह
 ऊगी बहू वेलो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ देव गुरुनो धन जे हरे, ते शुद्ध
 आये एमो जी ॥ अधिको इव्य खरचे तिहां, पात्र पोषे बहू प्रेमो
 जी ॥ से० ॥ ८ ॥ गाय जैस घोना मही, गज ग्रह चोरणहारो
 जी ॥ ये ते वस्तु तीरथे, अरिहंत ध्यान प्रकारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥
 पुस्तक देहरा पारका, तिहां लिखे अपणो नामो जी ॥ बूटे उम्मासी
 तप कियां, सामायक तिण ठामो जी ॥ से० ॥ १० ॥ कुंवारी परि
 आजका, सधव अथव गुरुनासो जी ॥ व्रत जांजे तेहने कह्यो उ
 म्मासी तप सारो जी ॥ ११ ॥ से० ॥ गो विप्र स्त्री बालको वि
 एहनो घातक जेहो जी ॥ प्रतिमा आगे आलोवतां, बूटे १ कर
 तेहो जी ॥ १२ ॥ से० ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ संप्रति कासे सोलमो ए, ए वरते ठे उद्धार ॥ सेतुंज

करुं ए, सफल करुं अवतार ॥ १ ॥ से० ॥ ठहरी पालती चाखिये
 ए, सेत्रुंज केरी वांट ॥ से० ॥ पालीताणे पोहचिये ए, संघ मि
 ल्या बंधु आट ॥ से० ॥ २ ॥ ललित सरोवर पेखिये ए, वलि सत्ता
 नी वावि ॥ तिहां विसरांमो लीजिये ए, वरुने चौतरे आवि ॥ ३ ॥
 से० ॥ पालीताणे पाजनी ए, चढिये ऊठ परजात ॥ सेत्रुंजनदिय
 सोहामणी ए, दूरथकी देखंत ॥ से० ॥ ४ ॥ चढिये हिंगलाजने हमे
 ए, कलिकुंरु नमिये पास ॥ बारीमांहे पैसीये ए, आंणी अंग
 उल्लास ॥ से० ॥ ५ ॥ मरुदेवीटूंक मनोदरु ए, गज चढी मरुदेवी
 माय ॥ शांतिनाथ जिण सोलमो ए, प्रणमीजे तसु पांय ॥ से० ॥
 ॥ ६ ॥ वंस पोरवामे परगमो ए, सोमजी साह मलार ॥ रूपजी संघ
 वी करावियो ए, चौमुख मूल उद्धार ॥ से० ॥ ७ ॥ चौमुख प्रतिमा
 चरचिये ए, जमतीमांहे जला बिंब ॥ पांचे पांरुव पूजिये ए, अदन्तुत
 आदि प्रलंब ॥ ८ ॥ से० ॥ खरतरवसही खंतसूं ए, बिंब जुहारुं
 अनेक ॥ नेमनाथ चवरी नमूं ए, टालूं अलग उदेग ॥ से० ॥ ९ ॥
 धरमडुवारमांहि नीसरुं ए, कुगति करुं अतिदूर ॥ आठं आदिनाथ
 देहरे ए, करम करुं चकचूर ॥ से० ॥ १० ॥ मूलनायक प्रणमूं मुदा
 ए, आदिनाथ जगवंत ॥ देव जुहारुं देहरे ए, जमतीमांहे जमंत
 ॥ ११ ॥ से० ॥ सेत्रुंज ऊपर कीजिये ए, पांचे ठाम स्नात्र ॥ कल
 श अठोतर सो करिये, निरमल नीरसु गात्र ॥ से० ॥ १२ ॥
 प्रथम आदीसर आगले ए, पुंरुरीक गणधार ॥ रायण तल पंग
 ला नमूं ए, चौमुख प्रतिमा ब्यार ॥ १३ ॥ से० ॥ रायण तल प
 गला नमूं ए, चौमुख प्रतिमा ब्यार ॥ बीजी चूमि बिं
 बावली ए, पुंरुरीक गणधार ॥ १४ ॥ से० ॥ सूरजकुंरु नि
 हाखिये ए, अति जली उलकाजोल ॥ चेलणतलाइ सिद्ध
 शिवा ए, अंग फरसुं उल्लोल ॥ १५ ॥ से० ॥ आदिपुर पा

ज्ञ उतरुं ए, सिद्धवरुं विसराम ॥ चैत्यप्रवाम-इण पर करी ए, ती
 था वंछित काम ॥ से० ॥ १६ ॥ जात्रा करी सेत्रुंजतणी ए, सफल
 कियो अवतार ॥ कुसल केमसुं आवियो ए, संघ सहू परिवार ॥ से०
 ॥ १७ ॥ सेत्रुंज रास सोहामणो ए, सांजलज्यो सहू कोय ॥ घर
 वेगं जणे जावसुं ए, तसु यात्रा फल होय ॥ से० ॥ १८ ॥ सर्व
 त सोल वयासिये ए, आवण वदि सुखकार ॥ रास रच्यो सेत्रुंजत
 णो ए, नगर नागोर मजार ॥ से० ॥ १९ ॥ गिरुवो गढ खरतर
 तणो ए, श्रीजिनचंद सूरिस, प्रथम शिष्य श्रीपूजना ए, सकल
 चंद सुजगीत ॥ से० ॥ २० ॥ ताससीत जग जांणिये ए, सम
 यसुंदर भवझाय ॥ रास रच्यो तिण रूवमो ए, सुणतां आणंद ध्या
 य ॥ से० ॥ २१ ॥ इति श्रीसेत्रुंजराम संपूर्ण ॥

॥ अथ शिखरगिरि रास लिख्यते ॥

॥ दृष्टा ॥

॥ वादी वीत जिनेसरू, रचस्युं रास रसाव ॥ तीरथ शि
 खरसमेतनी, महिमा वनी विशाल ॥ १ ॥ मोटो तीरथ महियले,
 प्रगट्यो शिखरसमेत ॥ कोनाकोमी मुनिवरू, सिद्ध गए इह खेत ॥
 २ ॥ तीरथ शिखरसमेत ए, फरस्यां पाप पुत्राय ॥ नविजन ने
 टो जावसुं, ज्युं सुख संपद धाय ॥ ३ ॥ महिमा शिखरसमेतनी,
 कहि न सके कवि कोय ॥ गुण अनंत जगवंतना, तिम ए ती
 रथ होय ॥ ४ ॥

॥ दाल १ ॥ चोपईनी ॥

॥ गिरवर शिखर समो नहि कोय, एहनी महिमा सब
 लग होय ॥ वीत जिनेसर मुगते गया, मुनिजन ध्यान धरी
 ने रह्या ॥ १ ॥ प्रथम अयोध्यानगरी जली, तिहां जितवात्रु

नरैसरं बली ॥ विजयाराणीने सुत जाण, अजितकुमर सहु गुण
नी खाण ॥२॥ जसु इंदादिक सेवा करे, इंदाणी अति उच्चव धरे ॥
तीर्थकरनी पदवी लही, अंतर अरि जिण साध्या सही ॥३॥ अनु-
क्रम इम जोगवतां जोग, पुन्य प्रसाद मिढ्यो सहु जोग ॥ अवस-
र दे संवत्सर दान, संजम लीनो आप सुजाण ॥४॥ कर्म खपाव।
पांम्यो ज्ञान, केवलदर्शन लह्यो प्रधान ॥ विचरे पुहवीमंमलमांहि,
ज्यजीव प्रतिबोधन ताहि ॥५॥ सिंहासेनादिक गणधर जया, पं-
चाणवे संख्या सहु थया, एक लाख मुनिवर परिवरथा, श्रावक
श्रावकणी सहु करथा ॥६॥ तीन लाख बलि तीस हजार, साधव
थां जाणो सुविचार ॥ श्रावक सहस्र अठाणुं सही, दोय लाख
संख्या गहगही ॥७॥ पांच लाख पेंतालीस हजार, श्रावकणी सं-
ख्या सुविचार ॥ बहुतर लाख पूरवनो आय, कंचनवरण सरीर
सुहाय ॥८॥ साढीव्यारसे धनुष सरीर, मान लह्यो प्रभु गुण गं-
जोर ॥ गज लांठन प्रभुजीने जाण, अमृत सम जसु मीठी वाण
॥९॥ अनुक्रम प्रभुजी शिखरसमेत, गिरवर पर आख्या निज हेत
सहस्र मुनिवरने परिवार, आसखमण अणसण कर सार ॥ १० ॥
चैत्री सुदि पूनमने दिने, मुक्ति गये प्रभु तीरथ इणे ॥ जूचर खेच-
र किन्नर सुरी, इंदादिक सहु उच्चव करी ॥ ११ ॥ आप्पो तीरथ मोटो
मही, अठाइ महोच्चव कियो सही ॥ ए तीरथनी जात्रा करे, ते
जवियण अक्षयसुख वरे ॥ १२ ॥

॥ दूहा ॥

॥ श्रीसंजव जिनराज जी, गए इहां निर्वाण ॥ शिखरसमे-
त सुहामणो, प्रगट्यो तीरथ जाण ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ सुगण सनेही साजन श्रीसीमंथर स्वाम ॥ ए देशी ॥

॥ सावजीनगरी नरी . धन संपद बहु ओक, जैतारि नृप

राज करै सुखिया सब लोक ॥ सेनाराणी मीठी वाणी गुणनी खा
 णा, जेहने सुत श्रीसंजव जनम्या सकल सुजाण ॥१॥ कंचनवरण
 शरीर मनोहर प्रज्जुनो जाण, लंठन अभवतणो सोहे प्रज्जुनो परधा
 न ॥ साठ लाख पूरबनो प्रज्जुनो आयु प्रमाण, धनुष च्यारसै उच्च
 पणै प्रज्जु देह बखाण ॥ २ ॥ एकसो दोय संख्याये प्रज्जुने गणधर
 होय, दोय लाख मुनि जेहनै गुणवरता जग जोय ॥ तीन लाख
 श्रमणी बली ऊपर सहस उतीस, जूमंरुल विचरे प्रज्जु श्रीसंजव
 जगदीस ॥३॥ तीन लाख बलि सहस त्रयाणुं श्रावकलोक, षट्
 लाख सहस उतीस श्रावकणी संख्या शोक ॥ त्रिमुखयह अरु उ
 रितादेवी सानिधकार, विचरंता प्रज्जु सकल संघमें जयश्रकार ॥४॥
 सहस श्रमण परिवारे प्रज्जुजी शिखरसमेत, एक मास संलेखण
 कीनी निजपद हेत ॥ इण गिरि ऊपर पायो प्रज्जुजी पद निरवाण,
 तीरथ महिमा महियल मोटी अइय सुजाण ॥५॥

॥ दुहा ॥

॥ अजिनंदन जिन वंदिथे, पायो पद निरवाण ॥ शिखरसं
 मेत सोहामणो, जैटो तीर्थ सुजाण ॥१॥

॥ ढाल वीजी ॥ सहस श्रमणसुं सुक संजमधरो ॥ ए-देशी ॥

॥ नगरी अयोध्या सुरपुरि सम जली, संवर राजा सोहे
 मन रखी ॥ सिद्धार्थ राणी प्रज्जु तसु नंद ए, अजिनंदन जिन प्रग
 ट्या चंद ए ॥ उल्लाखो ॥ चंद ए सोवन वरण सोहे, धनुष साही
 तीनसे ॥ सुंदर शरीर प्रमाण युतिकरा, कपि लंठन ते नित वसे ॥
 पूर्व लाख पचास आयु, गणधर एकसो सोल ए ॥ तीन लाख मुनि
 उलाख आर्या, सहस त्रिसत् सोल ए, ॥१॥ चाल ॥ सहस अक्यासी
 दो लाख श्राद्धनी, संख्या चौ लाख सत्तावीसनी ॥ श्रावकस्यारी संख्या
 जाण ए, त्रायकयह कालिका वाण ए ॥ उल्लाखो ॥ ढाण ए शिखरसं

मत ऊपर मास एक संलेखणा, इकं सदस साधू परवरया प्रजु
मुक्ति पहुंचे पेषणा ॥ इमही अयोध्या मेघ नरवर देवी मात सुमं
गला, श्रीसुमति जिनवर ज्ञानंदनसदा होत सुमंगला ॥ ३ ॥ चाली ॥
सावन वर्ष धनुष तसु तीनसे, लंठन क्रोंच सोहै सुजगे इसै ॥
पूरव लाख पञ्चासी आन ए, इकसौ गणधर गुणगण जान ए ॥
जुझालो ॥ जान ए मुनि त्रिण लाख सोहै सदस वीस प्रमणां
ए, पण लक्ष तीस हजार साध्वी आवक दोय लक्ष जाण ए ॥
संख्या इक्यासी सदस ऊपर आवका इम आणिये, पण लाख
सोले सदस तुंवरु महाकाली मानिये ॥ श्रीशिखर ऊपर सात
संख्या सदस साधु सुरंग ए, कर मासकी संलेखणा प्रजु मुक्ति
पुहता चंग ए ॥ ३ ॥ चाल ॥ इमकोसंबीनगरीतात ए, धरनृप तात
सुसीमा मात ए, पदम प्रजु तसु अंगज नाथ ए, लंठन कमलतं
णो सुज हाथ ए ॥ जुझालो ॥ हाथ ए धनुष प्रमाण पूरा अर्ढाई
सै त, कहौ, तीन लाख पूरव शित कहावै एकसौ गणधर लहो ॥
लख तीन तीस हजार साधू वीस सदस लख चार ए, साधवी
दोय खल सदस बिहतर आवक संख्या सार ए ॥ ४ ॥ चाल ॥ पांच
लाख बलि पांच हजार ए, आवकण्यारी संख्या सार ए ॥ कुसम
देव श्यामादेवी कही, लालवरण तन प्रजु सोहै सद्दी ॥ जुझालो
॥ सोहए शिखरसमेत ऊपर, आवसे त्रिण मुनिवरा ॥ कर मास सं
लेखन प्रजुनी, सेव करहै सुरवरा ॥ श्रीपदम प्रजुजी मुक्ति पहुता,
गिर शिखर महिमा जई ॥ तसु चरण पंकज बालवंदे हृदय आनं
द गदजही ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ श्रीसुपास जिनंदना, पद पंकज आराम ॥ जविजन अम
रसु सेवतां, पांमे वंभित काम ॥ १ ॥

॥ दाल चोयी ॥ श्रीसीमंवर साहिब ॥ ७ ॥ चाल ॥

॥ नगर बनारसी सोजता, राजा तात प्रतिष्ठ लालरे ॥ दे
वी-पृथ्वी मात जी, स्वस्तिक लंठन सिष्ट लालरे ॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्व
जिनंद जी, वीस पूरव लख आयु लालरे ॥ धनुष दोयसे देहनो, कं
चनवरण सुहाय लालरे ॥ २ ॥ श्री० ॥ पचाणवे गणधर कल्या, सा
धू त्रिण लाख होय लालरे ॥ च्यार लाख तीस ऊपर, सहस सा
धवियां जोय लालरे ॥ ३ ॥ श्री० ॥ सहस सतावन लक्षनी, आवक
सेख्या आय लालरे ॥ च्यार लाख वली त्रेणवै, सहस आवकणी
जाय लालरे ॥ ४ ॥ श्री० ॥ मातंगयक शांतासुरी, पांचसे मुनि पर
वर लालरे ॥ करि अणसण मुगते गया, नाम लियां निस्तार ला
लरे ॥ ५ ॥ श्री० ॥ नगर चंडपुर ङण परे, राजा तात महेस लालरे ॥
देवी माता लक्ष्मणा, सुत चंडाप्रभु वेस लालरे ॥ ६ ॥ श्रीचंडाप्रभु
बंदिये, चंडवरण तनु जेह लालरे ॥ लंठन चंडतणो जलो, धनुष
दोढसे देह लालरे ॥ ७ ॥ श्रीचं० ॥ जविककमल प्रतिबोधता, सेवे
सुर नर यक लालरे ॥ दस लाख पूरव आनुवो, तेणवे गणधर
दक लालरे ॥ श्रीचं० ॥ ८ ॥ दोय लाख सहस पचाणवे, मुनि अ
मणी तीन लक लालरे ॥ असी सहस संका कही, आवक वलि
होय लक लालरे ॥ ९ ॥ श्री० ॥ लाख पचास ऊपर वली, आ
विका चउ लक धार लालरे ॥ सहस ङकाणवै ऊपरै, प्रभुजी
नो परिवार लालरे ॥ १० ॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव नृकुटीसुरी, स
हस साधु परिवार लालरे ॥ संखेखन इक मासनी, पुहता
मुक्ति मजार लालरे ॥ ११ ॥ श्री० ॥

॥ बुद्ध ॥

॥ जय श्रीसुबिद्ध जिनेसरु, जगपति देनदयाल ॥ समे
तशिखर मुगते गया, जविजनके प्रतिपाल ॥ १२ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ श्रीविमलाचल सिरतिलो ॥ ए देशी ॥

॥ नयर काकंदी नरपति, एम पिता सुग्रीव ॥ देवी रामा
माता सुत, जए सुविध सुज जीव ॥ १ ॥ रजतवरण सम तनु
सत, धनुष एक परिमाण ॥ दोय लाख पूरव कह्यो, प्रभुनो आयु
सुजांण ॥ २ ॥ अठ्यासी संख्या जए, गणधर परम प्रधान ॥ ल
ख दो मुनि विंशति सहस, इक लाख श्रमणी जांण ॥ ३ ॥ दोय
लक्ष श्रावक कह्या, अरु गुणतीस हजार ॥ एकत्तर चौ लाख सहस,
श्रावकणी सुविचार ॥ ४ ॥ सुरी सुतारा सुर अजित, श्रीसंघ सा
निधकार ॥ सहस साधु परिवारसुं, आए सिखर सुचार ॥ ५ ॥
मास संलेखण कर प्रभु, मुक्ति गए इह गोर ॥ तीरथ महिमा म
हियलै, प्रगटी च्यासुं नर ॥ ६ ॥ इमहिज शीतलनाथनो, हिव सु
णज्यो अधिकार ॥ जदिलपुर दठरथ पिता, मात नंदा सुखकार ॥
७ ॥ लंठन सुज श्रीवृद्धनो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ कंचनवरण नेन
धनुष, मान सरीर अमंद ॥ ८ ॥ एक लाख पूरव कह्यो, प्रभुनो आयु
प्रमाण ॥ इक्यासी गणधर कह्या, मुनि इक लाख सुजांण ॥ ९ ॥
एक लाख चालीस सहस, श्रमणी संख्या नर ॥ सहस तयासी
दोय लाख, श्रावक संख्या जोर ॥ १० ॥ सहस अठावन लक्ष चौ,
श्रावकणी सुविचार ॥ देवो असोका ब्रह्म यक्ष, सहु संघ सानि
धकार ॥ ११ ॥ सिखरसमेत सहस्र एक, साधूने परिवार ॥ मुक्ति
गए प्रभु मासकी, संलेखन कर सार ॥ १२ ॥

॥ ढाल छठी ॥ धनर संप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

॥ सिंहपुरी नगरी तिहां राजा, विष्णु नरेशर तात जी, कं
अनवरण श्रेयांस प्रभूजी, नपज्या विष्णु सुमात जी ॥ १ ॥ नमो
रे नमो श्रीत्रिभुवन राजा, स्वर्ग लंठन प्रभु पायजी ॥ धनुष असो

देहमांन चौरासी, लाख वरसनो आयु जी ॥ २ ॥ न० ॥ गणधर
 बहुतर सहस चौरासी, मुनि श्रमणी तीन लक्ष जी ॥ तीन सह
 स वलि सहस गुण्यासी, आवक पुण दो लक्ष जी ॥ ३ ॥ न० ॥
 अमतालीस सहस वलि चौ लाख, आविका जाणो सार जी ॥ ज
 क अमर सुरी मांनवी जाणो, श्रीसंघ सानिषकार जी ॥ ४ ॥
 न० ॥ सहस मुनीसरनै परिवारै, प्रभुजी सिखरसमेत जी ॥ मा
 स संलेखण कर प्रभु पोहता, मुक्तिमदल सुख हेत जी ॥ न० ॥
 ५ ॥ दिव कंषिलपुर तात चूपति, श्रीकृतवर्म सुमात जी ॥ स्या
 मादेवी अंगज ऊपना, विमलनाथ जगतात जी ॥ न० ॥ ६ ॥ सु
 कर लंठन सोवनकाया, साठ धनुष देहीमांन जी ॥ साठ लाख व
 डरनो आयु, शिष्य सत्तावन जान जी ॥ न० ॥ ७ ॥ साठ सहस
 मुनि अरु तय इक लाख, श्रमणी आवक जाण जी ॥ आठ सहस
 दोय लक्ष आविका, चौ लक्ष संख्या आण जी ॥ न० ॥ ८ ॥ प
 णमुख सुरवर विदिता देवी, प्रभुजी सिखरसमेत जी ॥ षट हजार
 साथू परिवारै, मुक्ति गए सुख हेत जी ॥ न० ॥ ९ ॥ नगरी नाम
 अयोध्या नरवर, सिंहसेन जग सार जी ॥ मुजसा मात तिणे सुत
 जायो, प्रभुजी अनंतकुमार जी ॥ न० ॥ १० ॥ लंठन इयेन सो
 वन सम काया, धनुष पचास प्रमाण जी ॥ तीस लाख वडरनो
 आयु, गणधर पचवीस आण जी ॥ न० ॥ ११ ॥ वास्तव सहस
 मुनीसर सोहे, वासठ श्रमणी हजार जी ॥ ठ हजार लाख दोय
 आवक, आवकणी इम धार जी ॥ न० ॥ १२ ॥ च्यार लाख व
 लि चवद हजार ए, अंकुसा देवी होय जी ॥ पाताळ यक्ष श्रीसंघके
 सानिष, कारी नित प्रति जोय जी ॥ न० ॥ १३ ॥ आठसै मुनि
 वरनै परिवारै, सिखरसमेत प्रधान जी ॥ मास संलेखन कर गिदि
 ऊपर, पुहता पद निरवाण जी ॥ न० ॥ १४ ॥

॥ दृष्टा ॥

॥ अैसे धर्म जिनेसरू, पुइता पद निर्वाण ॥ सिसरसमेत
गिरिंद पर, नमोश् जमजाण ॥१॥

॥ दाल सातमी ॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जी ॥ ए देवी ॥

॥ रत्नपुरी नगरी धणी जी, जानुराय सुजाण ॥ राणी
सुव्रत मातने जी, धर्मनाथ गुणखाण ॥१॥ जगतपति धर्म जिने
सर सार ॥ धनुष पैतालीस तनु कह्यो जी, वज्र लंबन सुखकार
॥२॥ ज० ॥ चौतीस गणधर मुनि कह्या जी, चौसठ सदस प्रमां
ण ॥ श्रमणी वासठ सदसस्थूं जी, आवक दोय लक्ष मांन ॥ ३ ॥
ज० ॥ च्यार सदस वलि ऊपरां जी, चौ लख एक हजार ॥
आवकणी संख्यां कही जी, दस लक्ष आयु विचार ॥४॥ ज० ॥
किन्नर सुर यत्ना सुरी जी, एक सदस परिवार ॥ समेतसिखर मुं
गते गया जी, वांदू वार हजार ॥५॥ ज० ॥ हयणापुर विश्वसेननां
जी, अचिरा मात उदार ॥ शांति जिनेसर जनमिया जी, त्रिभुवनं
जषरकारा ॥ जगतपति शांति जिनेसर सार ॥६॥ मृग लांबन सोवन
समो जी, देही धनुष चालीस ॥ आयु वरष इक लाखनो जी, ठ
त्रीस गणधर सीस ॥ ज० ॥७॥ वासठ सदस मूनि ठसै जी, इगसठ
श्रमणी हजार ॥ दोय लाख आवक कह्या जी, ऊपर नेऊ हजार
॥ ८ ॥ ज० ॥ सदस त्रयाणूं आविका जी, तीन लाख परिवार ॥
गरुडयक देवीसुरी जी, श्रीसंघ सानिधकार ॥ ज० ॥९॥ नवसै मु
नि परिवार स्थूं जी, आया सिखरसमेत ॥ मासखमणकर मुगतिमें
जी, पुइता निजपद देत ॥ ज० ॥ १० ॥ अैसे हयणापुर जलो
जी, राजा सूर सुतात ॥ कुंशुनाथ जिन जनमियां जी, कंचन त
नु श्रीमात ॥ जगतपति कुंशु जिनेसर सार ॥ ११ ॥ ठाम
लंबन पैतीसनो जी, धनुष देहनो मांन ॥ सदस पंचाणव वरस

नो जी, आयु प्रभुनो जान ॥ १२ ॥ ज० ॥ पैंतीस गणधर दीपता
 जी, साठ सहस मुनि जान ॥ ठहै साठ सहस वली जी, भ्रमणी
 संख्या मान ॥ ज० ॥ १३ ॥ सहस गुणियासी लक्षनो जी, आव
 क संख्या होय ॥ सहस इक्यासी तीन लाखनी जी, आविका सं
 ख्या जोय ॥ ज० ॥ १४ ॥ सातसे साधू परवरया जी, देवी व
 ला गंधर्व ॥ कुंभुनाथ मुगते गया जी, माख संलेखण सर्व ॥ ज० ॥ १५
 ॥ दुहा ॥

॥ श्रीअरिनाथ जिनंदनो, कहिखुं अब अधिकार ॥ श्री
 ता सुणज्यो प्रेम धर, आस्यै लाज अपार ॥ १ ॥

॥ दाढ आढमी ॥ देसी विछियानी ॥ हारे लाला श्रीजिनकुशल सूरिसरू ॥ ए देवी ॥

॥ हारे लाला श्रीअरिनाथ जिनेसरू, तिहां नगरो अयोध्या
 चंदरे लाला ॥ तात सुदर्शन मातजी, नंदादेवीना नंद रे लाला
 ॥ १ ॥ श्रीअ० ॥ लंठन नंदावर्त्तनो, तीस धनुषदेहीनो मान रे
 लाला ॥ कंचनवरण सुहामणो, आयु सहस चौरासी प्रमाण रे लाला ॥
 ॥ २ ॥ श्रीअ० ॥ इक लाख आवक ऊपर, वलि संख्या अधकी जाण रे
 लाला ॥ सहस बहुत्तर ताननी लक्ष आविका संख्या आंश रे लाला ॥
 श्रीअ० ॥ ३ ॥ देव देवी सानिध करे, इक सहस मुनि परवार
 रे लाला ॥ मुक्ति गए इश गिर प्रभु, कर मास संलेखण सा
 ररे ॥ श्रीअ० ॥ ४ ॥ मिथिलानगर प्रजावती, मात पिता श्री
 कुंज राय रे लाला ॥ लंठन कलस पतीसनो, वपु धनुष सोवन
 सम काये रे लाला ॥ श्रीमछिनाथ जिनेसरू ॥ ५ ॥ सहस पचा
 वन वर्षनी, शित गणधर अठावीस रे लाला ॥ जविक कमल प्रति
 बोधता, जगनायक श्रीजगदीस रे लाला ॥ ७ ॥ श्री म० ॥ चा
 खीस सहस मून सरू, भ्रमणी पचावन सहस रे लाला ॥ सहस
 त्रयासी लक्षनी, आवकनी संख्या तार रे लाला ॥ ८ ॥ श्री म० ॥

आर्विका सित्तर सहसनी, लक्ष तीन संख्या सुविचार रे लाला ॥ सहस
 मुनि परवारखुं, गये मुक्ति संलेखण धार रे लाला ॥ श्रीम० ॥ १० ॥
 राजग्रही राजा पिता, सुग्रीव पद्मावती मात रे लाला ॥ श्यामव
 रण तनु शोभता, जे कपिल लंछन विख्यात रे, लाला ॥ श्रीमुनिसुव्रत
 स्वामिजी ॥ १० ॥ धनुष वीस देहीतणो, आयु वढर तीस हजार
 लाला ॥ अष्टादश गणधर थया, तीस सहस मुनिसर सार रे
 लाला ॥ श्रीमु० ॥ ११ ॥ श्रमणी सहस पचवीसनी, संख्या ब
 हुतर हजार रे लाला ॥ इक लक्ष ऊपरि आर्विका, तीन लक्ष प
 चोस हजार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १२ ॥ वरुणयक्ष देवी जली,
 नरदत्ता सानिधकार रे लाला ॥ सहस मुनि परवारसे, गए मुक्ति
 महल सुख सार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १३ ॥ विजय पिता विप्रा
 मातजी, सोवन सम श्रीनमिनाथ रे लाला ॥ नीलकमल लंछन
 कह्यो, वपु धनुष पनर आयु साध रे लाला ॥ श्रीनमिनाथ जिने
 सरू ॥ १४ ॥ दस हजार वरसतणो, गणधर सित्तर परिमाण रे
 लाला ॥ वीस इकतालीस सहस क्रम, साधु साधवी संख्या जाण
 रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १५ ॥ इक लख सित्तर सहसनी, तीन ल
 क्ष सहस बलि होय रे लाला ॥ आर्विक संख्या आर्विका, अनुक्रम
 करि संख्या जोय रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १६ ॥ विचरंता जूमरुले,
 श्याम सिखर समेत मजार रे लाला ॥ जूकुटी यक्ष गंधारी सुरी,
 इक सहस मुनि परवार रे लाला ॥ १७ ॥ श्रीन० ॥

॥ दूहा ॥

परमेसर श्रीपासनी, महिमा जगत विख्यात ॥ शिखर सि
 रोमणि सहसफण, जगजीवन जगतात ॥ १ ॥

॥ ढोल नवमी ॥ आदर जीव क्षमागुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ जय१ परम पुरुष पुरुषोत्तम, पारस, पारसनाथ जी ॥

सांवरियां साहिब जगनायक, नाम अनेक विख्यात जी ॥ १ ॥
 जय१ सिखर समेत सिरोमणि, श्रीसांवरिया पास जी ॥ ध्यावै
 सेवे जे नर तेहनी, पूरै वंछित आस जी ॥ २ ॥ ज० ॥ कासी दे
 स वणारसी नगरी, श्रीअश्वसेन नरिंद जी, वामामाता जगविख्या
 ता, तेदनां सुत सुखकंद जी ॥ ३ ॥ जय० ॥ पन्नग लंठन नील
 वरण ठवि, देहि शुभ्र नव हाथ जी ॥ आयू इकसो वरस प्रमाणे,
 गणधर दस प्रभु साथ जी ॥ ४ ॥ ज० ॥ सोल सहस मुनिवर
 अरु अमणी, कही अरुतीस हजार जी ॥ भूमंतल विचरे जवि
 जनक, बोधबीज दातार जी ॥ ५ ॥ ज० ॥ चौसठ सहस लाख इ
 क आवक, गुणचालीस हजार जी ॥ तीन लाख आवकणी सं
 ख्या, पार्श्वयक्ष सुर सार जी ॥ ६ ॥ ज० ॥ बीस जिनेसर मुगते
 पुहता, महिमा अइय अपार जी ॥ तिण ए तीरथ प्रगट्यो जग
 में, मुक्तिलो दातार जी ॥ ७ ॥ ज० ॥ बहरी पाले जे नर
 जावै, जेठे सिखर गिरिंद जी ॥ ते नर मनवंछित फल पावे, ए सु
 रतरुनो कंद जी ॥ ८ ॥ ज० ॥ बहुविध संपतणी करै जक्ति, सं
 घपति नाम धराय जी ॥ सफल करे संपद निज पांमी, जेहनो
 सुजस सवाय जी ॥ ९ ॥ ज० ॥ परजव सुरनर संपद पामे, जा
 त्रा करे गढ़गाट जी ॥ साधर्मी बल्ल मुनिजक्ति, पूजा उछव आ
 ट जी ॥ १० ॥ ज० ॥ टूंक२ पर चरण प्रभूना, पूजो जविज
 न जाव जी ॥ ध्यान धरो जिनवरनो मनमें, आनंद अधिक उ
 छाव जी ॥ ११ ॥ ज० ॥ रास रक्यो श्रीसिखरगिरीनो, सुणतां
 नवनिध थाय जी ॥ तिण ए जविजन जाव धरीने, सुणज्यो म
 न थिर लाय जी ॥ १२ ॥ ज० ॥ खरतर गछपति महिमाधारी,
 कीरत जग विख्यात जी ॥ जय श्रीजिनसौजाग्य सूरेश्वर, अमृत
 नयन मुगात जी ॥ १३ ॥ ज० ॥ तासु पसार्यो रास रक्यो ए, अ

बृहत्समुद्रने सीस जी ॥ बावचंड निज मति अनुसारे, सोधो विबु
ध जगीस जी ॥ १४ ॥ ज० ॥ संवत उगणीसै सितमोत्तर, सुदि
वैशाख सुढाल जी ॥ रास अजीमगंजमांहे कीनो, जणतां मंगल
माल जी ॥ १५ ॥ ज० ॥ इति श्रीसिखर गिरी रास संपूर्ण ॥

॥ अथ मुनि मालका लिख्यते ॥ दाल १ ॥

रुषज प्रमुख जिन पाययुग प्रणमूं, सिवसुख दायक मनह
जल्लास ॥ पुंरुरीक श्रीगौतम आदिक, गणधर गुरु मन कमल वि
कास ॥ १ ॥ प्र० ॥ प्रइ सम सूधा साधु नमुं नित, जावै श्रमण सुगुरु
जगवंत ॥ नाम ग्रहण कर पाप पखालूं, परमानंद सुमति विकसं
त ॥ २ ॥ प्र० ॥ जगत महामुनि प्रथम चक्रीसर, बाहुबल उप
शम जंमार ॥ सूर्यसादिक आठ मुनिसर, पांम्यो विमलाचल ज
वपार ॥ ३ ॥ प्र० ॥ रुषजवंस जे अनुक्रम हुवा, मुनिवर कोमो
लाख असंख, श्रीसेत्रुंजे शिवपुर सीधा, कलमल कालक मूकी कं
ख ॥ ४ ॥ प्र० ॥ सगर प्रमुख निरुपम नव चक्रवर्त्ति, साधु महा
बल संजम सिद्धि ॥ अचलादिक बलदेव अष्टमुनि, राम रुषीसर न
वम अवीह ॥ ५ ॥ प्र० ॥ श्रीप्रतिबुद्ध प्रमुख ब वसुंदर, श्रीमल्लि
नाथ पूरबज्जव मित्र ॥ पहुंता परम रुषीसर शिवपुर, पाली श्रीजि
न आंण पवित्र ॥ ६ ॥ प्र० ॥ बंडु विष्णुकुमार लबधि निधि, खं
दक सूरिना सीस लय पंच ॥ कार्तिकसेठ सुसाधु कीर्तिधर, श्रम
ण सुकोसल व्रत निरवंच ॥ ७ ॥ प्र० ॥ श्रीयडवंस अक्षोभसु सा
गर, प्रमुख आव अशगर प्रधान ॥ श्रीरुहनेम नेमजिन बंधव,
निस्मल गुणगण रयण निधान ॥ ८ ॥ श्री० ॥ जालि मयालि ने
व्रवयालो, पुरतसेण वारिसेन प्रजुन ॥ सब अने अनिरुद्ध रुषीसर,
सत्यनेमि दृढनेमि सुधन्य ॥ ९ ॥ प्र० ॥ कुमार अनीकजसादिक
पुट मुनि, गुणगिरुवो श्रीगजसुकमाल ॥ दंडण रुषि श्रीथावडा

सुत, सहस्र साधु संजतसु कृपाव ॥ १० ॥ प्र० ॥

॥ दाल बीजी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ सहस्र श्रमणसुं मुक संजमधरो, पंचसयांसु सेलग मुनि
वरो ॥ सिद्ध थया श्रीपुंनरगिरिवरो, करुणाकर प्रणम्यां संपदकरो ॥
उल्लाखो ॥ संपद करो समदम रिपीसर साधु सारण सोह ए, अं
तर प्रकासे तिमर नासे, जविकजन मन मोह ए ॥ प्रत्येकबुद्ध प्रबुद्ध
नारद मुनि प्रमुख पैताल ए, दमदंत महाशपि कुंजवारे साधु नमुं
त्रिहुं काल ए ॥ ११ ॥ चाल ॥ रंग रिपजदत्त रतनत्रय मुणी, स,
महं देवानंदा साहुणी ॥ पांचे पांनव प्रणमुं मुनिपती, केलपएसी
बोधक जिनमती ॥ उल्लाखो ॥ जिनमती दालक पूत्र मेहल थिवर
आणंद रस्कियो, अणगार कासव धर्म ज्ञाख्यो सोधि सिवपुर स
स्कियो ॥ कालासदेसी पूत्र आतम अरथ लायक उपसमइ, श्रीपुं
ररीक महामुनीसर प्रणामिये शुज संवमी ॥ १२ ॥ चाल ॥ वंड
वंडकलची रांकेवली, श्री अयमचो मुनिवर मन रली ॥ श्रीकरकंडू
इमह नमि निगया, निज२ देसे नरवर श्रीजुआ ॥ उल्लाखो ॥ श्री
जुवा ए वृषजादि देखी थया वन वडरागिया, संजमतिरि जज मो
दनिडा तजिय जोगे जागिया ॥ प्रत्येकबुद्धा च्यार सिद्धा सिद्ध थया
एकण समें, सुप्रसन्नचंद मुनिंद निरमम प्रेम प्रणमुं प्रह समे ॥ १३
॥ चाल ॥ खंतै कुल्लकुमारसु ध्याइये, लोइया मुनि चरणे लय ला
इये ॥ काल उदाई प्रमुख महामुणी, संजन नुइ जयंती साहुणी
॥ उल्लाखो ॥ साहुणी जाणी जगवखाणी, परमपद सुख पांमिया
॥ श्रीश्रमणजइ सुजइ सुंदर अचल आतमरामिया ॥ श्रीसुप्रतिष्ठय
तीस सुव्रत, साधुसुव्रत सेहरो ॥ चारित्र रिप गुणवंत गोजइ गरुड गरि
मा सागरो ॥ १४ ॥ चाल ॥ सिरि सिवराय रुपीसर बंदिचे, दसारण
जइ नमुं इख बंदिचे ॥ अर्जुनमाती सुख संजमधरो, सुदढप्रह

१० सिवरमणी वरो ॥ उद्धालो ॥ सिवरमणी वरो श्री कूरगमू कर्मावर्त
 प्रसिद्धज, कोमिन्न विन्न अनै सेवाली पनर सतक तिमोत्तरा ॥ गो
 तम प्रबोधत सिद्ध पुहता नमुं चरण करणाथर ॥ १५ ॥ चाल ॥
 गरुड्या श्रीगुणसागर गार्हारे, प्रब्रवीचंड प्रलभ्यां सुख पाइयै ॥ खं
 दकुमार सदा अज्जिनंदिये, नमिह जरह मित्र मन आणंदिये ॥
 उद्धालो ॥ आणंदिये मेतार्य सुनिवर जगतसुं समरी करी, रुप इ
 लापुत्र चिलापुत्र मृगापुत्र हीयै धरी ॥ श्री इंद नाम निर्ग्रथ निर्मम
 धर्मरुचि धर्मागिरो ॥ तेतलीपुत्र सुबुद्धि बोध तलु जितशत्रु मुनी
 सरो ॥ १६ ॥ चाल ॥ उदय २ कर जगि १ जसतणो, श्रमण सु
 दंसण सील सुहामणो ॥ श्रीअन्नयसुत आइकुमार ए, चित्त चतुर
 नर चित चमकार ए ॥ उद्धालो ॥ चमकार सार सुजात रुपिवर
 देवसांनिध जस धणी, गंगेय गिरुवो गुणे गाजै सुजिन पालत हि
 त धणी ॥ श्रीधर्मघोष सुसीस धर्मरुचि, साधु श्रीजिनदेव ए ॥
 श्रीकपिल रुपि हरिकेशव बल मुनि, नित नमुं निरलेव ए ॥ १७ ॥
 ॥ चाल ॥ जति जयघोष विजयघोषै जुन, सेवुं श्रुतधर श्रीदेवलसुन ॥ श्री
 इखुकार नृपति कमलावती, रांणी जूगुसुं प्रेहित सुजमती ॥ उद्धा-
 लो ॥ सुजमती जेहनी जसाज्जार्था पुत्र दोय वखाणिये, ए वहुं
 लेइ चारु चारित्र मुगति पढुता जाणिये ॥ कृत्रिय मुनिसर साधु
 संजम धर्मरुचि महाव्रती, नियंथनाथ अनाथ वंदू समुद्रपाल सुसं
 यती ॥ १८ ॥ चाल ॥ कुम्मापुत्र नमुं केवल कळपो, विधसुं शीतल
 सिवकमला मिळ्यौ ॥ धन धन धन्यो सुरगिरी धीर ए, वीरप्रशं
 स्यो तप गुण वीर ए ॥ १९ ॥ श्रीवीर दीक्षित श्रीसुबाहुजइ नं
 दकुमार ए, आदिक दसे रिप चरिय जेहना सुख विपाक उदार ए ॥
 श्रीचंरुद्र सुसीस खंदग कमानिधि कदिये इण कलै, कुरुदत्त सुत
 तीसग सरोरुद रिप नम्यां आस्या फले ॥ १९ ॥ चाल ॥ अंग प्र

मुख रिप्र च्यारे आदरी, विधिसुं संजम सिद्धिवधू वरी ॥ अज्ञेकुमार,
मुनि अन्नयंकरो, हृदय विदहसु आतम हितकरो ॥ उद्धाखो ॥
हितकरो दयाधर मेघ मुनिवर नंदिषेण आराधियै, सुनहत्र
नै सर्वानुज्जति समर सिवसुख साधिये ॥ श्रीसिंह साधू अने
उदायन चरम राजरुषीसरो, श्रीसाखजइ सुधन्न मुनिवर समरंता
मंगलकरो ॥ १० ॥

॥ बाल ३ ॥ राग धन्यासिरी ॥

वमवेरागी वर नमूं, युगवर जंबूसांमि ॥ प्रजव सिध्यंजव
परगमो, सुजस जसोज्जद्र स्वांमि ॥ महामुनिसर नित नमूं जी,
नांमे घर नवनिध्व वाधै रिद्ध समुद्ध ॥ महा० ॥ ११ ॥ जग संज्ज
तिविजय जयो, जद्रवाहु कृतजद्र, जग जोगीसर जागतो, मुनिवर
श्रीधूलजद्र ॥ २३ ॥ म० ॥ जद्रवाहु स्वामीतणा, च्यार शिष्य
मुनीराय ॥ सीत परीषद जिणसह्या, सारथा २ आतम काज ॥ म० ॥
॥ १४ ॥ अज्जमहागिरि जांणिये, अज्जसुहद्वि विसाख ॥ संप्रति नृप
पनिबोहियो, श्रीअयवंतीसुकमाल ॥ म० ॥ १५ ॥ आरिजलांमि
यसंसियो, अज्जसुजद्र मुनींस ॥ अज्जनंगु महिमा निखो, सींहगि
रो समुनींस ॥ म० ॥ २६ ॥ धनगिरि धिवर महामनी, श्रीवयर
स्वामी मुनिराय ॥ अरहदिएस मुनि अपहरयो, जद्रगुपति निरमाय
॥ म० ॥ २७ ॥ वयरसेन विद्यावरु, श्रीरक्त गुरु दक्ष ॥ पुस
मित्र गुण गहगह्यो, प्रजु डुरवलका पक्ष ॥ म० ॥ २८ ॥ विंज सा
धु सुविषइ जरघो, श्रीवमिल सुविहद्व ॥ सूत्रअरथ रतने जरघो,
कमाअमण देवद्वै ॥ म० ॥ २९ ॥ पंचम काल महामुनी, श्री
उपसै सूर दयाल ॥ सुद्ध क्रिया खरतर सही, जिन आज्ञा प्रतिपाल
॥ म० ॥ ३० ॥ इम पनर कर्मज्जमी जिके, दुआ होस्यै अणंत
॥ वर्त्तमान श्रीसाधुजी ॥ रज्जजइ गुणवंत ॥ म० ॥ ३१ ॥ ब्राह्मी

सुंदरि रायने, साहुणी चंदनबाल ॥ आदिक सीलवती सती, त्रिक
रण सुद्ध त्रिकाल ॥ म० ॥ ३२ ॥ संवत् सोल षष्ठीस ए, श्री
विमलनाथ सुरसाव ॥ दिक्षा कल्याणक दिने, गूणी श्रीमुनिमाल
॥ म० ॥ ३३ ॥ रिणी पुरै रलिश्रामणो, श्रीशीतल जिनचंद ॥
सूरि विजय राजे सदा, संघ सकल आणंद ॥ म० ॥ ३४ ॥ श्री
मतिजइ सुगुरुतणै, सुपसाये सुखकार ॥ चारित्र सिंध वखाणीये,
सदा२ जयकार ॥ म० ॥ ३५ ॥ मनहर श्रीमुनिमालका, गुणग
ण परिमलपूर ॥ कंठ ठवे उत्तम जिके, पावे सुख जरपूर ॥ म० ॥
॥ ३६ ॥ मंहा मुनिसर गावतां, सुरतरु सफल समान ॥ अष्टम
हासिद्ध घरे फले, सदा२ कल्याण ॥ म० ॥ ३७ ॥ इति मुनिमाल
का साधु वंदना संपूर्णम् ॥

॥ अथ छिन्नं जिन स्तवन लि० ॥

॥ दो० ॥ वरतमान चौवीसी वंदू, मन सूधै नित मेव री माई ॥
रूपज अजित संजव अजिनंदन, सुमति पदम प्रजु सेव री माई ॥
॥ व० ॥ १ ॥ श्रीसुपार्थ चंड प्रजु प्रणमूं, सुविध शीतल श्रेयांत री
माई ॥ वासपूज्य विमल अनंत धरम जिन, शांति कुंथु परसंस री
माई ॥ व० ॥ २ ॥ अरिजिन मल्लि अने मुनिसुव्रत, नमि नेमी
पास जिनंद री माई ॥ चोवीसमा श्रीवीर जिनेसर, प्रणमूं परमा
जेंद री माई ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ हाळ २ ॥ अह सम सूषा साधु नमुं नित ॥ ए देशी ॥

नित २ अतीत चोवीसी नमियै, जेहना नांम प्रगट ए जाण ॥
केवलग्यानी ते निरवांणी, सागर महाजस विमल वखाण ॥ ४ ॥
॥ नि० ॥ सर्वानुजुति श्रीधरदत्त जिनवर, दामोदर सुतजाश्रीस्वा
मि ॥ मुनिसुव्रत सुमति शिवगति जिन, श्रीअस्ताग नेमीसर नांम
॥ ५ ॥ नि० ॥ अनिल यशोधर तेम कृतारण्य, श्रीजिनेसर सुद्धम

ति मुजगीस, सिवकर स्यंदन संप्रति नामे, वंदीजे जिनवर चोवी
त ॥ ६ ॥ नि० ॥

॥ ढाल ३ ॥ सफल संसारनी ॥

जे जविस्संतिअणागए काल ए तेह चौविस प्रणमीस त्रिहुं
काल ए प्रथम माहाराज श्रेणिकतणो जीव ए श्रीपदमनाज प्रण
मीस सदीव ए ॥ १ ॥ वीरनो पितरियो नाम सुपास ए, हुसी
जिन वीय सुरदेव सुप्रकास ए ॥ श्रेणिक सुत उदाऽ नरिंद ए,
तीसरो तेह सुपास जिणंद ए ॥ २ ॥ शिष्य श्रीवीरनो पोहलो
साध ए, चोथो स्वयंप्रज्ञू नाम आराधि ए ॥ दृढायुव जीव सिद्धां
तमें जाणिये, पंचम सर्वानुज्ञू ते प्रमांणिये ॥ ३ ॥ कीर्त्त इण नाम
इक जीव कहीजिये, देवश्रुत ते ठठो श्यामि सलहीजिये ॥ संख
आवक हुस्यै उदय जिन सानमो, आनंदनो जीव पेढाल जिन
आठमो ॥ ४ ॥ सुनंदनो जीव ते नवम पोहल जिणं, सतक आवक
शतकीर्त्ति दसमो जणूं ॥ देवकीजीव सुनिमुवत इग्यारमो, सत्य
कीजीव ते अमम जिन वारमो ॥ ५ ॥ का देवजीव निकपाय
जिन तेरमो, बलदेवजीव निपुलाक चवदस नमो ॥ पत्तरमो निर
मम देव सुलसा कही, रोहणाजीव चित्रगुप्त सोलम सही ॥ ६ ॥
समाध जिन सतरमो आवका रेवती, अठारमो शदालजीव संवर
जिनपती ॥ दीपायनजीव यशोधर जगणीसमो, कण्ठाकोइजीव
ते विजय जिन बीसमो ॥ ७ ॥ मल्लि इकबीसमो जीव नारदतणो,
देव बावीसमो अंबज आवक जणूं ॥ तेवीसमो अमरजीव अनंत
वीरज नमो, स्वातबुधजीव ते जइ चोवीसमो ॥ ८ ॥ एह आगाम
चोवीस जिन जांणिया, प्रवचन सारजदारथी आणिया ॥ केइ पर-
सिद्ध ने केइ अप्रसिद्ध कहा, साख अनुसारथी साच कर सरदह्या ॥ ए॥

॥ ढाल ३ ॥ आजनिहेजो रे दीसे नाहालो ए देही ॥

विहरमांन जिन वीसे वंदियै, महाविदेह विख्यात ॥ सीमंधर
शुगमंधर बाहुजी, श्रीसुबाहु सुजात ॥ वि० ॥ ६ ॥ स्वयंप्रभु
रुषजानन अनंतवीरजी, सूरप्रभु तेज विशाल ॥ वज्रवर चंडानन
चंडबाहुजी, जुजंग ईश्वर नेमि जाल ॥ वि० ॥ ७ ॥ वैरसेन महा
जड नमुं वली, देवयसा यसोरिद्ध अढीढीपमे विचरे आज ए, नाम
लियां नवनिद्ध ॥ वि० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ४ ॥ रे जीव जिन धर्म कीजिये ॥ ए देही ॥

च्यार तीर्थकर सासता, इणहिज अजिधान ॥ रुषजानन चं
डानन वारिषेण बद्धमांन ॥ च्यार० ॥ ए ॥ अठ कोमिं अप्पन्न
लाख ए सत्ताणू हजार ॥ चउसे ठयासी देहरा, त्रिहुं लोक मजार
॥ च्यार० ॥ १० ॥ नवसे पणवीस कोमिया, बिंब प्रेपत लाख ॥
सहस्र अठावीस च्यारसै, अठयासी जाल ॥ च्यार० ॥ ११ ॥ विज्जू
जिणवर नाम ए, समरघा सुखदाय ॥ प्रणम्यां पाप मिटेपरा, सम
कित सुद्ध पाय ॥ च्यार० ॥ १२ ॥

॥ कलस ॥

इम त्रिण चोवीसी वीस विहरमाण चऊ जिणवर सासता,
संयुत्ता सतरैसै वयालै अधिक आणी आसता ॥ जिन रतनचिंता
मणितणी पर प्रबल वंठित पूर ए, प्रहसमै त्रिकरण श्रुद्ध प्रणमै
सदा जिनचंड सूर ए ॥ १३ ॥ इति श्री ठिन्नं जिन स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ उपदेशमाला पोसह सिधाय लि० ॥

जग चूमामणिजून, उसजो वीरो तिलोय सिरि तिलड ॥
एगो लोगाइचो, एगो चरकू तिहुअणस्त ॥ १ ॥ संवहरमुसज जिणो,
ठम्मासे बद्धमाण जिणचंदो ॥ इह विहरिया निरसणा, जए ऊए जेव
माणेशं ॥ २ ॥ जइता तिलोय गहो, निसइइ बहुचाई असरितज

एस्ति ॥ इय जीयंतकराई, एस्ति खमा सबसादूणं ॥ ३ ॥ न चई
 ऊइ चालेउ, महई महावद्धमाण जिणचंदो ॥ उवसग्ग सहस्सेदिं
 वि, मेरु जहा वायगुं जाहिं ॥ ४ ॥ जहो विणीय विणउ, पढम
 गणहरो समत्त सुयनाणी ॥ जाणंतो वि तमउं, विम्हिय हियउ
 सुणइ सबं ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइउ तं सिरेण इउंति ॥
 इय गुरुजण मुह जणियं, कयंजलिउमेदिं सोयवं ॥ ६ ॥ जइ
 सुर गणाण इंदो, गदगणतारागणाण जइ चंदो ॥ जइय पयाण
 नरिंदो, गणस्स वि गुरु तहाणंदो ॥ ७ ॥ बालुत्ति महीपालो, न
 पया परिहवइ ए स गुरु उवमा ॥ जंवा पुरउं काउं, विहरंति मुणी
 तहा सोवि ॥ ८ ॥ पम्भिरूवो तेहस्सि, जुगप्पहाणागमो महुरवक्को
 ॥ गंजीरो धिइमंतो, उवएसपरो य आयरिउ ॥ ९ ॥ अपरिस्सावी
 सोमो, संगहसीलो अज्जिगहमई य ॥ अविककणो अचवलो, पसं
 तहियउ गुरू होई ॥ १० ॥ कइयावि जिणवरिंदा, पत्ता अयरामरं
 पंह दाउं ॥ आयरिएदिं पवयणं, धारिऊइ, संपयं सयलं ॥ ११ ॥
 अणुगम्मए जगवई, रायसुयजा सहस्स वंदेदिं ॥ तहवि न करे इ
 माणं, परिय छइ तं तहा नूणं ॥ १२ ॥ दिण दिस्सियस्स दमग, स्स
 अज्जिमुहा अऊचंदणा अऊ ॥ नेउइ आसणगहणं, सो विणउ सब
 अऊाणं ॥ १३ ॥ वरससय दिस्सियाए, अऊाए अऊदिस्सिउ साहू ॥
 अज्जिगमण वंदण नमं, सणेण विणएणसो पुऊो ॥ १४ ॥ धम्मो-
 पुरिसप्पन्नवो, पुरिसव रदेसिउ पुरिसजिओ ॥ लोएवि पडू पुरिसो,
 किंपुण लोगुत्तमे धम्मो ॥ १५ ॥ संवाहणस्ससरणो, तइया वाणा-
 रसीइ नयरीए ॥ कन्ना सहस्समहियं, आसी किरूववंतीणं ॥ १६ ॥
 तह वि य सारायसिरी, उल्लहंती न ताइया ताहिं ॥ उयरहिएण
 ड्के, ए ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥ महिलाणसु बहुयाण वि, म
 ऊाउं इह समत्त घरसारो ॥ राग्रपुरिसेदिं निऊइ, जणेवि पुरिसो

जहिं नञ्चि ॥ १८ ॥ किं परजण बहुजाणा, वणाहिं वरमप्प सस्कियं
 सुकयं ॥ इह जरहचक्कवट्ठी, पसन्नचंदो य दिठंता ॥ १९ ॥ वेसो विं
 अप्पमाणो, असंजम पएसु वट्टमाणस्स ॥ किं परियत्तियवेसं, विसं
 न मारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्कइ वेसो, संकइ वेसेण दिस्सिंतं
 मिअहं ॥ उम्मगेण परंतं, रक्कइ राया जणवत्तं य ॥ २१ ॥ अप्पा
 जाणइ अप्पा, जहद्विंतं अप्पसस्किंतं धम्मो ॥ अप्पां करेइ तं तह,
 जह अप्पसुहावहं होई ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो, आविस्सइ
 जेण जेणं जाविण ॥ सो तंमि तंमि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं ॥
 ॥ २३ ॥ धम्मो मएण हुंतो, तोन वि सीउन्ह वावविस्सुत्तिन् ॥ संव
 ष्ठमणसीन्, बाहुवली तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमंइ विग
 प्पिय चिं, तिएण सच्चंदबुद्धिचरिएण ॥ कत्तोपारत्तदियं, कोरइ गुरु
 अणुवएसेणं ॥ २५ ॥ अद्धो निरोवयारी, अविणीत्तं गबिन्ति निरवणा
 मो ॥ साहुजणस्स गरदित्तं, जणेवि वयणिज्जयं लहइ ॥ २६ ॥
 ओवेण वि सप्पुरिसा, सणकुमारु व्केइ बुझंति ॥ देहे खणपरिहाणी,
 जंकिर देवेहिंसे कहियं ॥ २७ ॥ जइता लवसत्तम सुर, विमाण
 वासीवि परिव्रंति सुरा ॥ चिंतिज्जंतं सेसं, संसारे सासयं कयरं ॥
 ॥ २८ ॥ कहंतं जन्नइ सुखं, सुचिरेण वि जस्स उस्समल्लिहियेण ॥
 जं च मरणा वसाणे, जव संसाराणुबंधिं च ॥ २९ ॥ उवएस सह
 ह्सेदिं, बोदिज्जंतो न बुद्धइ कोई ॥ जह बंजदत्तराया, उदाइनिव
 मारत्तं चेव ॥ ३० ॥ गयरुत्तं चंचलाए, अपरिचत्ताइ रायलब्धीए ॥
 जीवासक्कम्म कलिमल, जरिय जरातो परंतं अहे ॥ ३१ ॥ बोत्त
 णवि जीवाणं, सउक्करा इति पाववरियाइ ॥ जयवंजा सा सासा,
 पच्चाएसो हु इणमो ते ॥ ३२ ॥ पन्निवज्जिज्जेण दोसे, नियं सक्कं
 च पायवनियाए ॥ तो किर भिगावईए, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥
 इति पोसइ सिद्धा ॥

॥ अथ राईसंध्यास पोसह सिधाय ॥

॥ निस्सिही निस्सिही नमो खमासमणाणं, गोवमाईणं ॥
महामुणीणं ॥ नवकार ३, करेमिजंतं ३, कहियें, अणुजाणह जि
झिजा, अणुजाणह परमगुरु, गुणगणरयणेहिं मंनिअसरीरा ॥ बहु
परिपुन्ना पोरिसि, राईसंधारण ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संधारं,
वाहुवहाणेण वामपासेणं ॥ कुकुरु पाय पसरण, अंतरं तु पमज्जाए
जूमि ॥ २ ॥ संकोइय संमासं, उवटंतेय काय परिहेहा ॥ दवाई
उवज्जंगं, कसासनिरुंजणाखोयं ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्जा पमान, इमस्स
देहस्सिमाइ रयणीए ॥ आहार मुवहि देहं, सबं तिविहेण वोरिरियं
॥ ४ ॥ आसव कसाय बंधण, कलहा जस्काण परपरीवानं ॥ अरइ
रई पेसुन्नं, माया मोसं च मिच्चत्तं ॥ ५ ॥ वोसिरित्तु इमाइसु, स्कम
ग संसग विग्घ जूआइं ॥ दुग्गइनिबंधणाइं, अठारंस पावहाणाइं
॥ ६ ॥ एगो इं नच्चिमे कोइ, नाइमन्नस्स कस्सवि ॥ एवं अदीण
मणसो, अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ एगो मे सासनु अप्पा, नाए
इंसणसंजुनु ॥ सेता मे बाहिरा जावा, सव्वे संजोगलस्काणा ॥
॥ ८ ॥ संजोगमूला जीवेण, पत्ता डुरकपरंपरा ॥ तम्हा संजोग
संबंधं, सबं तिविहेण वोसिरे ॥ ९ ॥ अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं
सुताहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नं तत्तं, इयसम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥
चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि
पन्नतो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोसुत्तमा, अरिहंता लोसुत्तमा, सिद्धा
लोसुत्तमा, साहू लोसुत्तमा, केवलि पन्नतो धम्मो लोसुत्तमो ॥ च
त्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पव
ज्जामि, साहूसरणं पवज्जामि, केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥
अरिहंता मंगलं मज्झ, अरिहंता मच्च देवया ॥ अरिहंता कित्तिअत्ता
णं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मज्झ सिद्धाय मज्झ

देवया ॥ सिद्धा य कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि ति पावगं ॥ १ ॥ आ
 यरिया मंगलं मझ, आयरिया मझ देवया ॥ आयरिया कित्तिअत्ताणं,
 वोसिरामि ति पावगं ॥ ३ ॥ उवद्याया मंगलं मझ, उवद्याया मझ
 देवया ॥ उवद्यायां कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि ति पावगं ॥ ४ ॥ सा
 हूणो मंगलं मझ, साहूणो मझ देवया ॥ साहूणो कित्तिअत्ताणं,
 वोसिरामि ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि दग अगणि मारुय, इक्किक्के सत्त
 जोणि लस्कान ॥ वणपत्तेय अणंते, दस चउदस जोणि लस्कान ॥
 ॥ १ ॥ विगलिंदिएसु दो दो, चउरो चउरो य नारय सुरेसु ॥ ति
 रिएसु हुंति चउरो, चउदस लस्का यमणुएसु ॥ २ ॥ स्वामेमि सव्व
 जीवे, सव्वे जीवाखमंतु मे ॥ मिन्ती मे सव्वज्जुएसु, वेरं मझ न
 केणवि ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरदिअ डुगंठिअं सम्मं ॥
 ति विहेण पम्किंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमा
 विअ मइ खमिअ, सव्वह जीव निकाय ॥ सिद्धसाख आलोयणह,
 मझह वेर न जाय ॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवसु, चउदह राज
 जमंतु ॥ ते मइ सव्व खमाविया, मझवि तेह खमंतु ॥ ६ ॥ इति
 संधारा गाथा स० ॥

॥ अथ निंदावारक संख्याय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां बोड्यां महा
 वाप रे ॥ वयर-विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे भाय
 वाप रे ॥ नि० ॥ १ ॥ दूर वलंती कां देखो तुस्हे रे, पगमा बलती
 देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलमा धोयां लूगमां रे, कहो केम क
 जला होय रे ॥ नि० ॥ २ ॥ आप संचालो सहुको आपणो रे,
 निंदानी मूको परी टेव रे ॥ ओमे वणे अवगुणे सहु जरयां रे,
 केहनां नलीयां चुए केहनां नेय रे ॥ नि० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते
 आये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो

आपणी रे, जेम बुटकवारो आय रे ॥ नि० ॥ ४ ॥ गुण प्रदजो
सहुको तणो रे, जेहमा देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो
रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ नि० ॥ ५ ॥

अथ सीता सिधाय लिख्यते ॥

॥ जल जलती मिलती घणी रे, जाली जाल अपार रे ॥ सु
जाण सीता ॥ जाणे केसू फूलियां रे लाल, राता खैरअङ्गार रे
॥ सु० ॥ १ ॥ धीज करे सीतासती रे लाल ॥ शीज तणे परि
माण रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, निरखे राणो
राण रे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नान करी निरझल जलें रे लाल, पावक
पासैं आय रे ॥ सु० ॥ ऊज्जी जाणे सुराङ्गना रे लाल, अनुपम रूप
दिखाय रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलियां घणां रे लाल, ऊज्जा
करे हाय हाय रे ॥ सु० ॥ जस्म हुशी इण आगमें रे लाल, राम
करे अन्याय रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव बिन बाँधयो हुवे रे लाल,
मुपनेही नहिं कोय रे ॥ सु० ॥ तो मुऊ अगन प्रजालजो रे
लाल, नहिं तो पाणी होय रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इम कहि पेठी आग
में रे लाल, तुरत अगन थयो नीर रे ॥ सु० ॥ जाणें इह जलजुं
जख्यो रे लाल, जीले धरम सुधीर रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुसुम
वरपा करे रे लाल, एह सती सिरदार रे ॥ सु० ॥ सीता धीजें ऊ
तरी रे लाल, साख जरे संसार रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रक्षियायत स
हुको थयां रे लाल, सधले थया उबरंग रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम
खुशी थया रे लाल, सीता शीला सुरंग रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जग
मांहे जस जेहनो रे लाल, अविचल शील कहाय रे ॥ सु० ॥ क
हे जिन इर्थ सती तणा रे लाल, नित प्रणामीजें पाय रे ॥ सु० ॥
॥ ९ ॥ इति सीतासती सिधाय समाप्ता ॥

॥ अथ अनाथी रुषि सिधाय ॥

॥ श्रेणिक रयवानी चढयो, पेखियो मुनी एं ६ त ॥ वर रू
पकाते मोहियो, रांय पूछे रे कहो विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिकराय हुं
रे अनाथी निर्मथ ॥ तिणमें लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥ श्रे० ॥ ए
आंकणी ॥ इण कोसंबी नगरा वसे, मुऊ पिता परि गल धन ॥
परवार परे परवरयो हुं हुं तेहनो रे पुत्र रतन ॥ श्रे० ॥ २ ॥ इ
क दिवस मुऊ वेदना, ऊपनी ते न खमाय ॥ मात पिता सहु
जूरी रह्या, तोही पखे रे समाधि न आय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरमी
गुण मन उरमी, उरमी अबला नार ॥ कोरमी पीमा में सही,
महिं कीधी रे मोरमी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राजवैद्य बुलाइया,
काधला कोमी उपाय ॥ बावना चंदन लेइया, पया तोही रे दाह
नवि जाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ वेदना जो मुऊ उपशमे, तो लेउं सं
जमजार ॥ इम चितवतां वेदन गई, व्रत लीधो रे हरष अपार ॥
॥ श्रे० ॥ ६ ॥ जगमांहे को केहनो नहिं, ते जणी हुं रे अनाथ ॥
वीतरागनो धरम बाहरो, कोई नहीं रे सुगतिनो साथ ॥ श्रे० ॥
॥ ७ ॥ कर जोमी राजा गुण स्तवे, धन धन तुं अनगार ॥ श्रे०
णिक समकित तिहां लहे, वांदी पहुंचे रे सरग मजार ॥ श्रे० ॥
॥ ८ ॥ मुनिवर अनाथी गावतां, कर्मनी तूटे कोमी ॥ गणि सनय
सुंदर तेहना, पाय वांदि रे बे कर जोमी ॥ श्रे० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ प्रतिक्रमणसिधाय ॥

॥ कर पम्किमणो जावसुं, दोय धनी शुन जाण ॥ लाल
रे ॥ परजव जाता जीवनें, संवल साचुं जाण ॥ लाल रे ॥ १ ॥
कर पम्किमणु जावसुं ॥ ए आंकणी ॥ श्रीमुख वीर समुच्चरे, श्रे
णिकराय प्रतिबोध ॥ ला० ॥ लाख खंमी सोना तणी, दीये दिन
प्रति दान ॥ ला० ॥ २ ॥ कर० ॥ लाख वरस लग ते बली, एम

दीये इव्य अपार ॥ ला० ॥ इक सामायिकनी तुलौ, नौवे तेह लंगार
 ॥ ला० ॥ ३ ॥ कर० ॥ सामायिक चउविसठो, जेनुं वंदन दोय
 दोय वार ॥ लाल रे ॥ व्रत संजारी रे आपणां, ते जव कर्म नि
 वार ॥ लाल रे ॥ ४ ॥ कर० ॥ कर कानसगग गुंजध्यानथी, पच्च
 रक्षाण सूधूं विचार ॥ लाल रे दोय सद्या ये ते वलो, टालो टालो
 अतिचार ॥ लाल रे ॥ ५ ॥ कर० ॥ सामायिक परसादथी, लहीये
 अमर विमान ॥ ला० ॥ धरमसिंह मुनिवर कहे, मुगति तणुं ए
 निदान ॥ ला० ॥ ६ ॥ कर० ॥ इति प्रतिक्रमणसिधाय सं० ॥

॥ अथ मंगलिक सरणां लिख्यते ॥

॥ प्रह उठोने समरिजे हो ॥ जवियण मंगलिक सरणा चार
 ॥ आपदा टाले संपदा हो ॥ ज० ॥ दोलतनो दातार ॥ हियमे रा
 खिजे हो ॥ ज० ॥ १ ॥ अरिहंत सिंह साधा तणी हो ॥ ज० ॥
 कैवलि ज्ञाख्यो धर्म ॥ ए चारु जपतां थकां हो ॥ ज० ॥ दूटे
 आवुं कर्म ॥ हि० ॥ २ ॥ ए चारु मुखकारि हो ॥ ज० ॥ ए चारु
 मङ्गलिक ॥ ए चारु उत्तम कहां हो ॥ ज० ॥ ए चारु तहतरीक
 हो ॥ हि० ॥ ३ ॥ गेले घाटे चालतां हो ॥ ज० ॥ समरुं वारुं
 वार ॥ गामें नगरें चालतां हो ॥ ज० ॥ विघ्न निवारणहार ॥
 ॥ हि० ॥ ४ ॥ माकण साकण भूतकां हो ॥ ज० ॥ सिंह विज्ञाने
 सूर ॥ वैरी दुसन चोरठा हो ॥ ज० ॥ रहे सदाइ दूर ॥ हि० ॥
 ॥ ५ ॥ सुख शाता वरते घणी हो ॥ ज० ॥ जे ध्यावे नरनार ॥ पर
 जव जातां जीवने हो ॥ ज० ॥ सरणाको आधार ॥ हि० ॥ ६ ॥ रा
 खो सरणाकी आसता हो ॥ ज० ॥ नेमो नहिं आवे रोग ॥ वरते
 आनंद सुख सही हो ॥ ज० ॥ वाला तणो संबोग ॥ हि० ॥ ७ ॥
 निशिदिन याकुं ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ जीव तणो उद्धार ॥ कमी
 नहिं कोइ वस्तुनी हो ॥ ज० ॥ याहि जगमें सार ॥ हि० ॥ ८ ॥

मनचिंता मनोरथ फले हो ॥ ज० ॥ वरते कोम कल्याण ॥ शुद्ध
 मनें करी समरता हो ॥ ज० ॥ निश्चै पद निर्वाण ॥ हि० ॥ ए ॥
 ए सरणाने ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ नाम तणो आधार ॥ ए सर
 णाकी कीरति कही हो ॥ ज० ॥ ध्यावो मनह मजार ॥ हि० ॥
 ॥ १० ॥ संवत् अठारे बावने हो ॥ ज० ॥ पालि सहेर सुखकार ॥
 चोथमछ्त्र इम वीनवे हो ॥ ज० ॥ सुनजो बाल गोपाल ॥ हि० ॥
 ॥ ११ ॥ इति श्रीमांगलिक सरणां ॥

॥ अथ सिंहाय संग्रह लिख्यते ॥

॥ ढंढण रुषीनी सङ्गाय ॥

॥ ढंढण रुषिजीने वंदना हूं वारी, उत्कृष्टो अणगार रे हूंवा
 री लाल, अजियह लीधो एहवो हूं० ॥ लेस्युं शुद्ध आधार रे ॥ हूं०
 ॥ १ ॥ हूं० ॥ नितप्रति ऊठे गोचरी हूं० ॥ न मिलै शुद्ध आधार
 रे ॥ हूंवा० मूल नलै अणसूजतो हूं० ॥ पंजर कीधो गातर रे हूं०
 ॥ २ ॥ हूं० ॥ हरि पूवै श्रीनेमने हूं०, मुनिवर सदस अठार रे ॥ हूं
 वा० ॥ उत्कृष्टो कुण एहमें हूं० ॥ मुऊनें कही विचार रे ॥ हूंवा०
 ॥ ३ ॥ हूं० ॥ ढंढण अधिको दाखियो हूं० ॥ श्रीमुख नेमजिणंद
 रे हूंवा० ॥ कृष्ण ऊमाहो वांदवा हूं० ॥ धन जादव कुलचंद रे हूं
 वा० ॥ ४ ॥ हूं० ॥ गलियारे मुनिवर मिळ्या हूं०, बांधा कृष्ण
 नरेस रे हूंवा० ॥ किलाही मिळ्यात्वी देखने हूं०, आयो जाव वि
 सेसरे हूं० ॥ ५ ॥ हूं० ॥ मुऊ घर आवो साधजी हूं०, द्यो मोदक वै
 शुद्ध रे हूं० ॥ मुनिवर विहरीने पांगुरया हूं०, आया प्रभुजीने पास रे
 हूं० ॥ ६ ॥ हूं० ॥ मुऊ लवधै मोदक मिळ्या हूं०, कहोने तुम्हे
 किरपाल रे हूं० ॥ लवध नही वञ्च ताहरी हूं०, श्रीपति लवधि
 निधान रे हूं० ॥ ७ ॥ हूं० ॥ एलेवा जुगतो नही हूं०, व्याख्या परठ-

भ काज रे हूँ० ॥ इंट निवा हे जायने हुं० बूरे करम समाज रे
हुं० ॥ ८ ॥ दे०॥ आंणी चढती जावना हुं०, पांश्यों केवल नाण रे
हुं० ॥ ठंढणं रुषि मुगते गया हुं०, कहे जिनदुर्ष सुजाण रे हुं०
॥ ए॥ दे० ॥ इति ठंढण रुषि सिंज्ञाय संपूर्ण ॥

॥ अथ धनारुषी सिंज्ञाय ॥

श्रीजिनवाणी रे धन्ना, अमिय समाणी मोरा नंदन,
मनकै तो मांनी रे नंदन ताहरै ॥ १ ॥ तूं अतहि वैरागी रे धन्ना,
धरमनो रगि मोरा नंदन, म्हादरो तो मन्मदो रे किम परचावसुं
॥ २ ॥ दस दिस्ती दीते रे धन्ना, तो विन सूनी मोरा नंदन, अनु
मति देतां रे जीन वहे नही ॥ ३ ॥ वत्तसै नारी हो धन्ना,
अतहि पियारी मो० ॥ वाणी तो बोले रे मयुर सुहावणी ॥ ४ ॥
वालक तो कामणी रे धन्ना, वय पिण तरुणी मो० ॥ गजगति चाले
रे चाल सुहावणी ॥ ५ ॥ ए घर मंदिर हो धन्ना, ए सुख सज्या मो० ॥
कोरु बर्त्तासे धननो तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन मांणो रे धन्ना, वय
पिण जांणो मो० ॥ जोगवि लेज्यो रे जोग सुहावणो ॥ ७ ॥ व्रत
अति दोहिलो रे धन्ना, नहिय सुहेलो मो० ॥ सुगम नही ठे रे साधु क
हावणो ॥ ८ ॥ घर जिक्रा हो धन्ना, गुसतणी शिक्षा मो० ॥ कहाणी
रे रदणी नही ठे सारखी ॥ ९ ॥ इक वारे सुणीये हो धन्ना, आ
गम जणीये मो० ॥ जिनवर जांणो हो डुकर जोग ठै ॥ १० ॥
वनवासै रदणा हो धन्ना, परीतह सहणो मो० ॥ कोमल
केता रे लोच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें जारख्यो हे अम्मा,
जूठ न दारख्यो मोरी अम्मा ॥ डुकर मारग जननी दाखियो ॥ १२ ॥
सुख अजिवापी हे अम्मा, जूठ न आखी मोरी अम्मा ॥ कायर मारग
जननी दाखियो ॥ १३ ॥ ए जग स्वारथी हे अम्मा नही परमार
थि मोरी अम्मा, वीर बखाण्यो परखदा सह सुण्यो ॥ १४ ॥

मैं इम जाण्यो हें अम्मा, वीर बखाण्यो मोरी अम्मा, ए धन जो-
वन आयु धिर नही ॥ १५ ॥ अनुमति दीजे हें अम्मा, ढील न कीजे
मोरी अम्मा, जो खिण आवे सु किर आवे नही ॥ १६ ॥ अन-
मति आपी हो अम्मा, जीव सख पायो मोरी अम्मा, संजम लीयो
रे मनमां गद्गद्ही ॥ १७ ॥ ठठर पारणे हे अम्मा, विगय निवा-
रण मोरी अम्मा, वीर बखाण्यो सुरवर आंगलै ॥ १८ ॥ सुख सं-
जम पाले हे अम्मा, दुपण टाले मोरी अम्मा, अंग इग्यारे अरथ
रूमा जणै ॥ १९ ॥ संजम पाळ्यो हे अम्मा, नव पखवामे मोरी
अम्मा, मास संथारे सरवारथसिद्ध लह्यो ॥ २० ॥ इति धन्ना
रूपि सिंहाय संपूर्ण ॥

॥ अथ कर्मसिंहाय लिख्यते ॥

देव दाशव तीर्थकर गणधर, हरि हर नरवर सवला ॥ करम
तणे वन सुख डुख पाया, सवल हुआ महा निवला रे प्राणी, कर्म-
समो नहि कोई ॥ १ ॥ आदीतरजीने करम अटारया, वरस दिव-
स रह्या जूखा ॥ वीने बारे वरस डुख दीया, ऊपना ब्राह्मणी कूखै
रे प्राणी ॥ क० ॥ २ ॥ साठ सहस सुत मारया एकण दिन, जोध
जुवान नर जेला ॥ सगर हुड महा पुत्रनो डुखियो, कर्मतणा फल
एला रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ३ ॥ बत्रीस सहस देसारे साहिब, चक्री
सनतकुमार ॥ सोले रोग सरीरमे ऊपना, कर्म कीयो तनु बार रे
॥ प्रा० ॥ ४ ॥ कर्म दयाल किया हरचंदने, बेची सुतारा राणी ॥
बारे वरस लग माथे आय्यो, नीचतणे घर पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥
॥ ५ ॥ दधिवाहन राजारी बेटी, चाबी चंदनवाला ॥ चौपद ज्युं
चहुटामे बेची, करमतणा ए चाला रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ६ ॥ संजूम नामे
आठमो चक्री, कर्म सायर नाख्यो ॥ सोले सहस जक उजा देखे,
पिण किराही नहि राख्यो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ ब्रह्मदत्त नामे

बारमो चक्री, कर्म कीधो आधो ॥ इम जाणीने अहो जविप्राणी,
 कर्म कोइ मत बांधो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ८ ॥ उपन्न को न जा
 दवरो साहिब, कृष्ण महावल जाणी ॥ अटवी मांदि मूठ एकलमो,
 विल २ करतो पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ९ ॥ पांरुव पांच महा
 ऊजारा, हारी झोपदा नारी ॥ बारै वरस लग वन रनुवनिया, ज
 मिया जेम जिख्यारी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १० ॥ वीस जुजा दस
 मस्तक हूँता, लखमण रावण मारंथो ॥ एकलमै जग सहु नर जीत्या,
 ते पिण कर्मसुं हारयो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ११ ॥ लखमण राम
 महा बलवंता, अरु सतवंती सीता ॥ कर्म प्रमाणे सुख दुख पांन्या,
 वीतक बहु तस वीता रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १२ ॥ समकितधारी
 श्रेणिक राजा, बेटे बांध्यो मुसकै ॥ धरमी नरो कर्म धकाया ॥
 करमसुं जोर न किसका रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १३ ॥ सतिव सिरोमणी झै
 यदि कहियै, जिन सम अवर न कोई ॥ पांच पुरुपती हइ ते नारी,
 पूरव कर्म कमाई रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १४ ॥ आज्ञानगरीनो जे
 स्वामी, साचो राजा चंद ॥ मांइ कीधो पंखी कूकमो, कर्म नाख्यो
 ते फंद रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १५ ॥ ईसर देव ने पारवती नारी, क
 रता पुरुष कहावै ॥ अहनि स महिल मसांणमे वासो, जिहा जो
 जन खावे रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १६ ॥ सहस किरण सूरज परतापी,
 रात दिवस रहे अटतो, सोल कला ससीधर जग चावो, दिन २ जाये
 घटतो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १७ ॥ इम अनेक खंरुया नर करमं,
 आज्ञ्या ते पिण साजा ॥ रुद्धिहरष कर जोमीने विनवै, नमो २
 कर्म महाराजा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १८ ॥ इति कर्म सिंज्ञाय सं० ॥

॥ अथ सात विसनकी सिंज्ञाय लिख्यते ॥

सात विसनना रे संग मतां करो, सुण तेहनो सुविचार वि
 ॥ सात नरकना रे जाइ सातेई, आपै डरक अपार विवेकी ॥

॥ सा० ॥ १ ॥ प्रथम जूवाने रे विसन परुयांधकां, पाम्व पांच
 प्रसिद्ध विवेकी ॥ नलराजा पिण इण विसने पण्यो, खोइ सहू रा
 जरि० वि० ॥ सा० ॥ २ ॥ दूसरे मांस जकण अवगुण घणा, करै
 पर जीव संहार विवेकी ॥ महासतकनी नारी रेवती, नरक गइ
 निरधार विवेकी वि० ॥ सा० ॥ ३ ॥ तीजे मदिरा पांन विसन
 तजी, चित धरी वलि चाह वि० ॥ वीपायण रिपि दहव्यो जा
 दवे, द्वारकानो थयो दाह वि० ॥ सा० ॥ ४ ॥ चौथे विसने वे
 स्थाधर वसै, लोकमें न रहे लाज वि० ॥ कथवन्नादिकनो गथो
 कायदो, कुविसने रे काज वि० ॥ सा० ॥ ५ ॥ पाप आहेमे
 कुविसन सांचवै, प्राणी हणिये प्रहार वि० ॥ मारी मृगली श्रे
 णिक नृप गयो पहली नरक मजार वि० ॥ सा० ॥ ६ ॥ ठेठे
 चोरीने विसने करी, जीव लहे डुक्क जोर वि० ॥ मुंजदेव रा
 जायें मारियो, चावो हुंमक चोर ॥ वि० ॥ सा० ॥ ७ ॥ परस्त्रीय
 संगत कुविसन सातमें, हाणि कुजस बहु होय वि० ॥ राणो
 रावण सीता अपहरी, नास लंकानो रे जोय वि० ॥ सा० ॥ ८ ॥
 इम जांणीने जव्य तुमे आदरो, सीख सुगुरुनी रे सार वि० ॥ इण
 जव परजव आणंद अतिघणा, कहे धर्मसी सुखकार ॥ वि० ॥
 ॥ सा० ॥ ए ॥ इति सात विसनकी सिंझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ चेलणा सतीनी सिंझाय लिख्यते ॥

वीर वांदी वलतां थकां जी, चेलणा दीगो रे निग्रंथा॥ राति वन
 मांदि कांउसग रह्यो रे, साधतो मुगतिनो पंथ ॥ १ ॥ वीर वखा
 णी राणी चेलणा जी, सतिय सिरोमणि जांण ॥ चेमाराजानी
 साते सुता जी, श्रेणिक सीयल परिमाण ॥ वी० ॥ २ ॥ सीत
 ंठार सबलो पमे जी, चेलणा प्रीतम साथ ॥ चारतियो चितमे
 बस्यो जी ॥ सौमि वाहर रह्यो दाथ ॥ वी० ॥ ३ ॥ ऊबक जांगी

कहे चेलणा जी, किम करतो हुस्यै तेह ॥ कुसती मनमाहि ए कुणा
 वस्यो जी ॥ श्रेणिक पळ्यो रे संदेह ॥ वी० ॥ ४ ॥ अंतोनर परो
 जालज्यो जी, श्रेणिक दियो रे आदेस ॥ जगवंत सांसो जाजियो
 जी, चमकियो चित्त तरेस ॥ वी० ॥ ५ ॥ वीर वांदी वलतां थकां
 जी, पैसतां नगर मळार ॥ धुंआनो घोर देखी करी जी, जा जारें
 अजयकुमार ॥ वी० ॥ ६ ॥ तातनो वचन पाली करी जी, व्रत
 लियो अजयकुमार ॥ समयसुंदर कहे चेलणा जी, पामियो जवत
 णो पार ॥ वी० ॥ ७ ॥ इती चेलणा महासती सिंहाय संपूर्ण ॥

॥ अथ वैराग्य सिंहाय ॥

॥ जूलो मनजमरा कांइ जमै, जमियो दिवस ते रात ॥
 मायारो लोत्री प्राणियो, जमियो परमल जात ॥ १ ॥ जू० ॥ कुं
 ज काचो काया कारमी, जेहना करो रे जतन ॥ विणसतां वार लागे
 नही, निरमल राखो रे मन्न ॥ २ ॥ जू० ॥ केहना वोरू केहना
 वाठरू, केहना माय नै बाप ॥ उ जीव जासी एकलो, साथे पुन्य
 नै पाप ॥ ३ ॥ जू० ॥ आस्या तो मृगर जेवनी, मरवो पगला रे
 हेठ ॥ धन संची संच कांइ करो, करवो देवनी वेठ ॥ ४ ॥ जू०
 ॥ लखपति ठत्रपती सब गए, गए लाखो के लाख ॥ गरब करी
 गोखै बैठता, जए जल बल राख ॥ ५ ॥ जू० ॥ जवसायरजल
 डुख जरयो, तिरवो ठे रे जेह ॥ बीचमें बीह सबलो अठै, करमें
 वाय ने मेह ॥ ६ ॥ जू० ॥ उलट नही मारग चालवो, जायवो
 पहिले रे पार ॥ आगल नहि हट वाणियो ॥ संबल लेज्यो रे लार
 ॥ ७ ॥ जू० ॥ मूरख कहे धन माहरो, धन केहतो हतो न आय ॥
 वस्त्रं विना जाय पोदवो, लखपति लाकरु माय ॥ ८ ॥ जू० ॥ मह
 मंद कहे वस्त वोरीयै, जे कुठ आवे रे साथ ॥ अपणों लाज उवा
 रियै, लेखो साहिब हाथ ॥ जू० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ बाहूबल सिंहाय ॥

॥ राजतणां अति लोभिया, भरत बाहूबल जूजे रे ॥ मूठ
उपामी मारिवा, बाहूबल प्रतिबूजे रे ॥ १ ॥ वीरा स्हारा गजध
की उत्तरो, ब्राह्मी सुंदरी ज्ञासै रे ॥ रुषज जिनेसर मोकली, बा
हूबलनें पासै रे ॥ वी० ॥ गज चढ़यां केवल न होई रे ॥
वी० ॥ २ ॥ लोच करी चारित्र लियो, वलि आयो अजिमांनो रे
॥ लघु बांधव बांदू नही, काजसग रह्यो शुज ध्यानो रे ॥ ३ ॥
वी० ॥ बरस दिवस काजसग रह्यो, बेलनियां बीटाणो रे ॥ पंखी
माता मांनिबा, सीत ताप सूकाणो रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ साधवी व
चन सुण्या इसा, चमक्यो चित्त मजारो रे ॥ हय गय रथ में प
रिहरया, एण नवि मूक्यो अहंकारो रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ वैरागै मन
वालियो, मूक्यो निज अजिमांनो रे ॥ पांव उपामी बांदिवा, ऊप
नो केवलज्ञानो रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ पहुंतो केवली परखड़ा, बाह
बल रुषिराया रे ॥ अजर अपर पदवी लही, समयसुंदर बंदे
पाया रे ॥ ७ ॥ वी० ॥ इति ॥

॥ अथ अरणक मुनि सिंहाय ॥

॥ अरणक मुनिवर चाढ्या गोचरी, तमके दाजे सीसो जी ॥
पाय उवराणा रे बेलू परजलै, तन सुकयाल मुनीसो जी ॥ अर०
॥ १ ॥ मुख कमलाणो रे मालती फूल ज्युं, ऊजो गोखने दिगो
जी ॥ खरै डुपदरै रे दीठो एकलो, मोही माननी मीठो जी ॥ २
॥ अ० ॥ वयण रंगिले रे नयणो वेधियो, रुषि अंज्यो तिण वारो
जी ॥ दासीने कहे जाय ऊतावली, न रिषि तेनी आंणो जी ॥
३ ॥ अ० पावन कीजे रुषि घर आंगणो, वहिरो मोदक सारो जी
॥ नवजोवन रस काया कांइ दहो, सफल करो अवतरो जी ॥
४ ॥ अ० ॥ चंडावदनी रे चारित चूक्यो, सुख वितसै दिन रातो

जी ॥ इक दिन गोखै रमंतो सोगवै, तब दीगो निज मातौ जी ॥
 ५ ॥ अ० अरणक३ करती माय फिरे, गलियै२ मजारो जी ॥ क
 हि किण दीगो रे माहरो अरणलो, पूछै लोक हजारो जी ॥ ६ ॥
 अ० ॥ नतर तिहांथी रे जननीरे पाय नमे, मनमें लाज्यो तिवा
 रो जी ॥ धिग्२ पापी रे माहरो जीवने, एह में अकारज धारयो
 जी ॥ ७ ॥ अ० ॥ अगन धुखंती रे सिद्धा उपरै, अरणक अणस
 ण कीधो जी ॥ समयसुंदर कहे धन ते मुनिवरू, मन वंछित फल
 सीधो जी ॥ ८ ॥ अ० ॥ इति अरणक मुनि सिद्धाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ इलापुत्र सिद्धाय लिख्यते ॥

नाम इलापुत्र जाणियै, धनदत्तसेवनो पूत ॥ नटवी देखी रे मो
 हियो, जे राखे घरसूत ॥ १ ॥ करम न ठूटे रे प्राणिया, पूरव नेह
 विकार ॥ निज कुल ठंन्नी रे नट थयो, नाणी सरम लिगार ॥
 ॥ क० ॥ २ ॥ इक पुर आयो रे नाचवा, उंचो वंस विवेक ॥ तिहां
 राय जोवा रे आवियो, मिलिया लोक अनेक ॥ क० ॥ ३ ॥ दोय
 पग पहरी रे पावनी, वस चढयो गजगेल ॥ निरधारा ऊपर नाचतौ,
 खेले नवनवा खेल ॥ क० ॥ ४ ॥ ढोल बजावे रे नाटकी, गावे किन्नर
 साद ॥ पायतल धूवर घमघर्म, गाजै अंवर नाद ॥ क० ॥ ५ ॥
 तिहां राय चिंते रे राजिगै, लुबधो नटवी रे साथ ॥ जो पमै नट
 वो रे नाचतो, तो नटवी मुज हाथ ॥ क० ॥ ६ ॥ दान न आपै
 रे झूपती, नट जाणै नृप वात ॥ हूं धन वंटू रे रायनो, राय वंटै
 मुज घात ॥ क० ॥ ७ ॥ तिहांथी मुनिवर पेखियौ, धन३ साधु
 नीराग ॥ धिग्२ विषया रे जीवना, मन आयो वैराग ॥ क० ॥
 ॥ ८ ॥ संवरजावै रे केवली, ततखिण कर्म खयाय ॥ केवलि मदि
 मा रे सुर करै, समय सुंदर गुण गाय ॥ क० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ मेघकुमार मुनि सिद्धाय लिख्यते ॥

वीरजिनंद समोसरया जी, वंदे मेघकुमार ॥ सुण देशन वै
 रागीयौ जी, ए संसार असार रे मायनी ॥ अनुमति द्यो मुऊ आज ॥
 संयम विषम अपार रे ॥ मा० ॥ अ० ॥ १ ॥ वढ तूं केणे जोल
 व्यौ रे, श्रेणिक तात नरेस ॥ कांइ जणौ किण दूहव्यो रे, हूं नवि
 हुं आदेश रे जाया ॥ संयम विष० ॥ किम निरबाहिस जार रे
 जाया ॥ हूंन० ॥ २ ॥ आदि निगोदे हूं रुढ्यो जी, सहिया डस्क
 अणंत ॥ सासोश्वासैं जव पूरीया जी, तेह न जाणू अंत हे ॥
 ॥ मा० ॥ अ० ॥ ३ ॥ हिवणा तूं बालक अठै जो, जोवन जरयो
 रे कुमार ॥ आठ रमणि परणावियो रे, जोगवि सुख अपार रे
 जाया ॥ हूं नवि० ॥ ४ ॥ जनम मरण निरयातणौ जी, डस्क न
 सहणौ जाय ॥ वीरजिनंद वखाणियो जी, ते मै सुणियो कांन हे
 मायनी ॥ अ० ॥ ५ ॥ वढ कांठलीयै जीमणो जी ॥ अरस विरस
 आहार ॥ जुंइ पाला नित हौंमणो जी, जाणसि तुऊ कुमार रे जाया ॥
 हूं न० ॥ ६ ॥ जमतां जीव अनंत जम्यो जी, धर्म डहेलो होय ॥
 जरा व्यापे जोवन खिसे जी, तब किम करणो होय रे मायनी ॥
 ॥ अ० ॥ ७ ॥ मृगनयणी आठे रमे जी, तोमे नवसर हार ॥ जो
 वनजर ठोरू नही जी, कांइ मूको निरधार कुमरजी ॥ हूं न० ॥
 ॥ ८ ॥ हंसतूलिका सेजनी जी, रूप रमणि रस जोग ॥ अतहि
 सुंहाली देहनी जी, किम हुय संजम जोग रे जाया ॥ हूं न० ॥
 ॥ ९ ॥ स्वारथनो सहू ए सगो जी, अरथ पखे सहू कोय ॥ विषय
 विषम महुरा कहा जी, किम जोगविये सोय हे मायनी ॥ अ० ॥
 १० ॥ खमिश् मान पसाय करी जी, मै दीधुं तुऊ डस्क ॥ दिउ आदेस
 जिम हूं सुखी जी, वीर चरणें ड्युं दीस्क हे ॥ मा० ॥ अ० ॥ ११ ॥
 तन फाटे लोयण ऊरे जी, डख न सहणा जाइ ॥ वढ सुखी हुवो

तिम करो जी, मैं दीधो आदेस रे जाया ॥ संयम वि० ॥ १९ ॥
 मणि माणक मोती तज्या जी, तोज्यो नवसर हार ॥ मृगनयणी
 आठै रमे जी, द्वि अह्न कवण आधार नरेसर ॥ संयम० ॥ १३ ॥
 कुमर जणै सुकुली प्रिया जी, बहु दुख ए संसार ॥ नेह तुमारो
 जाणियो जी, जो ल्यो संयमजार रे नारी ॥ संय० ॥ १४ ॥ रथ
 सिविका तव सजी करी जी, कुंवर धारणी माइ ॥ श्रेणिकराय उ
 नव करै जी, चारित्र ल्यो रिपिराय रे जाया ॥ सं० ॥ १५ ॥ इमें
 जाणी वैरागियो जी, वरजै जे नर नारि ॥ करजोमी पूनो जणै जी,
 ते तरस्यै संसार हे मा० ॥ अ० ॥ १६ ॥ इति मेघकुमार सि० ॥

॥ अथ असिझाई निर्णय सिझाय ॥

श्रावण काती भिगसर मास, पहिली परुवा तीन विमास ॥
 चौथी परुवा वदि वैसाख, चार पुहर असिझाई जाख ॥ १ ॥ जां
 लगि होली ऊमे वार, धुंवर परुती हुवै जिवार ॥ जां परचक्रनो
 जय नदि जाय, तां लग असिझाई कहिवाय ॥ २ ॥ धूलवृष्टि ने
 केस पाखाण, वरसै तां लग असिझाई जाण ॥ ऊजै मल्ल मांढोमांहि
 जांम, तां लग असिझाई तिण ठांम ॥ ३ ॥ जूपति परजव पौहतो
 होय, जां लग पाट न वैसै कोड ॥ तां लग बोली ठै असिझाई, सं
 हुको सरदइज्यो मन मांहि ॥ ४ ॥ उलकापात अने दिगदाह, एक
 पोहर असिझाई आय ॥ निवल मेह तिम जाणो सही, आठ पहर
 सबै जल कही ॥ ५ ॥ चैत्र सुदि पांचम दिनशुक्ली, पन्निवा लग
 असिझाई वकी ॥ पन्निवा बीज तीज चांदणी, समीतांज असिझाई
 गिणी ॥ ६ ॥ आझ नक्षत्र न लागै जांम, गज बीज असिझाई तांम ॥
 गज बीज जो हुवे अकाल, असिझाई वे पुहर संजाल ॥ ७ ॥ चंडग्रहण
 असिझाई जणी, वारह पोहर उत्कृष्टी गिणी ॥ जयन्य प्रकारै आठ विं
 चार, सूर्यग्रहण पोहर जयन्यै वार ॥ ८ ॥ सोल प्रहर उत्कृष्टी कही,

सुगुरु मुखै जविषण सरदही ॥ नगर प्रधान मरे जो कोइ,
 आठ पुहर असिझाई होय ॥ ९ ॥ वसतीथकी सातां घर मांदि, नर
 विहमै अहोरति असिझाई ॥ पुरुष पड्यो होय मृतकअनाथ, तां
 असिजाय कही सो हाथ ॥ १० ॥ पुत्रतणै प्रसवै दिन सात, बेटी
 आठ दिवस विहात ॥ सो कर मांदि कही असिजाई, नारी रतु दिन
 तीन कदाइ ॥ ११ ॥ इमो फूटै प्रसवै गाइ, जां जर रुधिर पमै तिन
 गाइ ॥ असिझाइ सो कर मांदि, त्रिएह पोहर के ऊपर नहो ॥ १२ ॥
 असाठै चौमासै दिने, पन्तिकमणा गायंथी गिणै ॥ बार पोहर
 असिजाई कही, काती चौमासै इण परि सही ॥ १३ ॥ इण पर
 असिजाई ठै बहू, गीतारथ गुरु जाणै सहू ॥ सांजलि ए में कही
 संखेवि, हरखै पय प्रभू कीजै हेवि ॥ १४ ॥ अंतवर्ग अंतकर जेह,
 च्यार मावठबीजे तेह ॥ सत्तम वर्ग बीअं अकरै, तब कबि नाम
 कहियो इण परै ॥ ॥ १५ ॥ इति असिजाइ सिजाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ बावीस अभक्ष सिजाय लिख्यते ॥

जिनशासन रे सूखी सरदहिणा धरो, श्रीगुरुमुख रे नव तत्व
 ए निरता करो ॥ मिथ्यामत रे कुमति कदाग्रह परिहरौ, सहि पालो
 रे ते नर समकित मन खरो ॥ १ ॥ तूटक ॥ मन खरौ समकित
 शुद्ध पालौ, टालो दोषदया परो ॥ धुरि पंच अणुव्रत तीन गुणव्रत,
 च्यार सिद्धाव्रत धरौ ॥ इम देशविरती क्रिया निरती, सुणो जवि
 षण मनरली ॥ दाखविए गुण परह केरा, दोष सम काढौ बली ॥
 ॥ २ ॥ मम काढो रे लोनी नर कूनी करौ, जांणी सावय रे अ
 जक बावीसे परिहरौ ॥ वरु पीपल रे पिलखण नें कटुंबरो,
 जंवरफल रे रखे तुमें जकण करो ॥ ३ ॥ उल्लाखो ॥ रखे
 तुमें जकण करौ मांखण, मद्य मधु आमिष तणो ॥ विष हेम
 करहा ठंमि परहा, दोष मूल नाटी धणो ॥ परिहरो सज्जन र

यणीजोजन, प्रथम डुरगति वारणौ ॥ मम करौ व्यालू अति अ
 सूरौ, रविन्दय विन पारणो ॥ ४ ॥ अथाणो रे अनंतकाय सब
 नाम ए, काचागोरस रे मांदि कठोल न जिमिये ॥ एह वैगण
 रे तुम्ह फला सवि ठाम ए, आपणपूँ रे व्रत लीधो नविखंरु
 ए ॥ ५ ॥ तूटक ॥ नवि खंरुए व्रत नियम लेइ, बेइ फल
 व्रत जंगनौ ॥ अज्ञात फल बहुबीज जोजन, चलित रस होय
 जेहनो ॥ संवर आणी अन्नक ग्यानी, तजो ए बावीस ए ॥
 गुरु वयण विगतैं वली पूठ्यौ, अनंतकाय वत्तीस ए ॥ ६ ॥
 अनंती रे कंद जाति जाणो सहू, जसु ज्ञाण रे पातिक बोड्या
 वै बहू ॥ कचूरौ रे हलदनीली आदू वली ॥ वजचूरण रे कंद
 बहू कुंवलीफली ॥ ७ ॥ तूटक ॥ कुंवलीफली कुंवली बीज पाखै, चाखै
 चतुर नर आंविनी ॥ रतालू पिंमालू अंग थोहर, सतावरी लसण
 कुली ॥ गाजर मूला गिलौ रींगण विरहाली टुकवहुलौ, पढ्यंक
 सूरण वाल वीली मौथ नीली सांजलौ ॥ ८ ॥ वंसकारेला रे
 कूपल कवला तरुणा, अंकूरा रे लोटा ते जलपोयणा ॥ कुमारी
 रे जमरवृक्षनी ठालमी, जे कहिये रे लोके अमृतवेलमी ॥ ९ ॥
 वेलमी तानु ताजा खिलोमा ने खरसुआ, नूय नूफोमा ठत्रा
 कार जाणौ नील फल सेवे जूआ ॥ बत्तीस बोल प्रसद बोड्या
 लहमीरतन सूरि इम कहे, परिहरे जे नर दोष जांणी प्रांणी
 ते सवि सुख लहे ॥ २० ॥ इति बावीस अन्नक सिजाय तं० ॥

॥ अथ गजसुकमाल सिधाय ॥

॥ संवेगरसमे जीलता, मनसुं करे आलोच ॥ देखीने दोहग
 दलै, तासु साध्यो रे में करि लोच ॥ १ ॥ यादवराय धन१ गजसुक
 माल, तेहने करुं रे प्रणाम त्रिकाल ॥ या० ॥ आकणी ॥ प्रनू
 पास संयम आदरयौ, तेहनो ए परिणाम ॥ मन वचन काया वसि

करी, जो हूं पामूं रे केवलज्ञान ॥ १ ॥ या० ॥ मुनि मुगति जा
 यवा अलजयो, परुषैन दिन दस वीस ॥ साहसीक इम उच्चरतो,
 पिण दिन जावे रे तो ठेह दीस ॥ या० ॥ ३ ॥ समसांण जाय
 कानसग रह्यौ, तिण सांजि प्रभुने पूठ ॥ मुनिवर अवर इम चिं
 तवै, एहनै साची रै ठै मुंह मूठ ॥ या० ॥ ४ ॥ मुज सुता विन
 अवगुण तजी, सौमिल अगनि प्रजाल ॥ सिगमी रचि सिर ऊपरै,
 चिहुं दिसि बांधी रे माटीनी पाल ॥ या० ॥ ५ ॥ वेदना जिम अ
 धिक वधै, तिम वधै मन परिणांम ॥ चवदमें गुणठाणें चढ्यो, मु
 निवर पांमी रे केवलग्यान ॥ या० ॥ ६ ॥ देवकी जांमणने अई,
 ते रयण वरस हजार ॥ बांदवा आवी प्रह सनें, पिण नवि देखे रे
 प्राणआधार ॥ या० ॥ ७ ॥ पूठतां प्रभु मांमी करी, रातिनी वी
 नग वात ॥ हरि देखी हियमो फूटला, तेणें कीचो रे रुपिजीनो
 घात ॥ या० ॥ ८ ॥ उपसन सुधारस सेवतां, पांमियो अवेचलरा
 ज ॥ मनरंग साधु महंतना, गुण गावे रे श्रीजिनराज ॥ या० ॥ ९ ॥

॥ अथ प्रष्णचंद्र सिद्धाय ॥

॥ राज बंमी रलियामणो रे, जांणी अग्रिर संसार ॥ वैरागै
 मन वालियो, कांइ लीधो संजम जार ॥ प्रष्णचंद्र प्रणमूं तुमारा
 पाय, तुमे मोटा मुनिराय ॥ प्र० ॥ १ ॥ वनमांहे कानसग रह्यो
 रे, पग ऊपर पग ढाय ॥ बांइ बैजं उंची करी, सूरज सांमी इष्टी
 लगाय ॥ २ ॥ प्र० ॥ श्रेणिक वंदन नीसरयो रे, वीरजीने वंदन
 जाय ॥ देइ तीन प्रदक्षणा, त्रिविध स्वमाय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ डरमु
 ख दूत वचन सुणी रे, कोप चढ्यो ततकाल ॥ मनसुं संग्राम मां
 मियो, जीव पछ्यो जंजाल ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रेणिके प्रश्न पूठियो रे,
 एहनी सी गति आय ॥ जगवंत कहे हिवणां मरे तो, सातमी नर-
 के जाय ॥ प्र० ॥ ५ ॥ खिण इक अंते पूठियो रे, सरवारथ सिद्धि वि

मान ॥ वाजी देवनी डुंडनी, मुनि पांम्या केवलज्ञान ॥ प्र० ॥
 ॥ ६ ॥ प्रणचंद मुनि मुगते गया रे, श्रीमहावारना शिष्य ॥ रिद्ध
 र्ष कहे धन्य ते, जिण दीगा रे परतह ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ उत्पति सिधाय ॥

॥ उत्पत जोय जीव आपणी, मनमांहि विमास ॥ गरजा
 वासे जीवमो, वसियो नव मास ॥ उ० ॥ १ ॥ नारीतणे नात्री
 तले, जिन वचने जोय ॥ फूल तणी जिम् नालिका, तिम नामी वै
 दोय ॥ उ० ॥ २ ॥ तसु तल योनि कहीजिये, वर फूल समान ॥
 आंबतणी मांजर जिसो, तिहां मांस प्रधान ॥ उ० ॥ ३ ॥ रुधिर
 श्रवे तिण मांसथी, रतुकाळ सदीव ॥ रुधिर शुक्र योगे करी,
 तिहां ऊपजे जीव ॥ ४ ॥ उ० ॥ जे अपान पवने करी, वासित
 डुरगंध ॥ तिण आनक तूं ऊपनो, हिव हूउ अंधमंध ॥ उ० ॥ ५ ॥
 नामी वांसतणी जरिये घणी, रूघाला ॥ ताती लोह सलाकतैं, जाले
 ततकाळ ॥ उ० ॥ ६ ॥ तिम महिलानी जोनिमें, वै नव लख जीव
 ॥ पुरुष प्रसंगे ते सहू, मरि जाय सदीव ॥ ७ ॥ ऊपजै नर नारी
 मिढ्यां, पांचेंडी जेह ॥ तेहतणी संख्या नही, तजो कारज एह ॥
 उ० ॥ ८ ॥ नव लख जीव टिके तिहां, उत्कृष्टो वार ॥ जीव ज
 घन्यपणो टिके, एक दोय त्रिण च्यार ॥ उ० ॥ ९ ॥ जीव जघन्य
 तिहां रहे, महुरत परिमाण ॥ वार वरसनी धिति तिहां, उत्कृष्टी
 जाण ॥ १० ॥ उ० ॥ तिहां गरजे कोइ जीवमो, जंपै जग
 दीस ॥ फिर नर आवंतो रहै, संवत्सर चोवीस ॥ ११ ॥ उ० ॥
 महिला वरस पिचावनें, कहिये नीरबीज ॥ पिचहृत्तर वरसां
 पठै, आथै पुरुष अबीज ॥ १२ ॥ उ० ॥ जीमणी कूखै नर वसै,
 तिम वामे नारि ॥ बीच नपुंसक जांणिये, जिनवचन विचार ॥
 १३ ॥ उ० ॥ हिव सामान्यपणो इहां, आयो गरजावास ॥ सात

दिना उपरि रहे, नर गत नव माम ॥ ७० ॥ १४ ॥ आठ व
 रस तिर्यंच रहे, उत्कृष्ट काल ॥ गरजावांसै जोगव्या, इम बहु
 जंजाल ॥ ७० ॥ १५ ॥ कर्मण काये कर लियो, पहिलो आहार
 ॥ शुक्र अने स्त्रोणिततणो, नही जूठ लिगार ॥ ७० ॥ १६ ॥ पर-
 जापत पूरी नही, तिहां विसवांवीस ॥ तिण आहारै तूं थयो, उदा-
 रिक मीस ॥ ७० ॥ १७ ॥ पवन अढै उदरै तिको, उपजायै अंग
 ॥ अगनि करै थिर तेहने, जल सरस सुरङ्ग ॥ १७ ॥ ७० ॥ कठन
 पणै पृथ्वी रचै, अवगाह अकास ॥ पांचजूत सरीरमें, इम करै प्र-
 कास ॥ १८ ॥ ७० ॥ बारै मधुरत तां पठै, विलसै नर नारि ॥ गर-
 जतणी छतपति तिहां, नही अवर प्रकार ॥ १९ ॥ ७० ॥ कलल हु-
 वै दिन सातमें, अरबुद दिन सात ॥ अरबुदथी पेसी वधै, घन मांस
 कहात ॥ २० ॥ ७० ॥ मांसतणी बोटी हुवै, अमतांलीस टांक
 ॥ प्रथम मास जिनवर कहे, मन धरो निसंक ॥ २१ ॥ ७० ॥ सु-
 थिर मास बीजे हुवै, दिव तीजे मास ॥ करमतणै वसि ऊपजे, मा-
 ता मन आस ॥ २२ ॥ ७० ॥ चौथै मासै मातना, प्रणमै सहु अ-
 ग ॥ हाथ अने पंग पांचमें, तिम सुतको संग ॥ २३ ॥ ७० ॥ पि-
 त्त रुधिर ठेठे पमै, सातमें इण संच ॥ नव धमणी नस सातसै, पे-
 सी सय पंच ॥ २४ ॥ ७० ॥ रोमराय पिण सातमें, साढीतीन कोमि
 ॥ ऊपजे ऊणै केतलै, इम आगम जोमि ॥ २५ ॥ ७० ॥ आठमें मा-
 सै नीपनो, इम सकल सरीर ॥ नुंघै सिर वेदन सहे, जंपै जिन वीर ॥
 २६ ॥ ७० ॥ सोणित शुक्र सलेषमा, लघु ने वरुनीत ॥
 चात पित्त कफ गरजथी, थायै नर नीत ॥ २७ ॥ ७० ॥ मात-
 तणी सूटि लगै, बालकनो नाख ॥ रस आहार करे तिहां, आवे ततकाल
 ॥ २८ ॥ ७० ॥ उमनी छये आहारते, जाय नामौनाम ॥ रोम इंडी नख
 चख वधे, तिम मीजी ने हाथ ॥ २९ ॥ ७० ॥ ३० ॥ सबहू अंगे ऊल

स, सरवंग आहार ॥ कवल आहार करे नही, गरजै सुविचार ॥
 ॥ ३० ॥ ३१ ॥ मास बीजे किए जीवने, आये ज्ञान विजं
 ग ॥ अथवा अवधि कहीजिये, तिए ज्ञान प्रसंग ॥ ३० ॥ ३२ ॥
 कटक करे वैक्रियपणें, जूझी नरके जाय ॥ को जिनवचन सुणी
 करी, मरी सुर पिए आय ॥ ३० ॥ ३३ ॥ ऊँचै मुख गोमा
 हिये, सहितो बहु पीर ॥ दृष्टि आगलि वेहुं हाथसुं, रहे मुठी
 जींच ॥ ३० ॥ ३४ ॥ नर विश बख जलादिके, ऊपजै आ
 धान ॥ अथवा विहुं नारी मिटियां, कह्यो गरजविधान ॥ ३० ॥
 ॥ ३५ ॥ कोइ उत्तम चिंतवै, देखी डखावास ॥ पुन्य करी तिम
 नीकलूं, नाउं गरजावास ॥ ३० ॥ ३६ ॥ ऊँठ कोमि चांपे सुई, कोइ
 समकाल ॥ तिएथी गरजै अठ गुणौ, सदे वेदन बाल ॥ ३० ॥
 ॥ ३७ ॥ माता दूखो दूखीयो, सुखणी सुख थाय ॥ माता सूती
 ते सुवै, परवस दिन जाय ॥ ३० ॥ ३८ ॥ गरजयकी डख लख
 गुणौ, जांमैं जिण वार ॥ जन्म थयां डख बीसैरै, धिगू मोह वि
 कार ॥ ३० ॥ ३९ ॥ ऊपज्यो अशुचिपणे जिहां, मल मूत्र कलेस ॥
 पिंम अशुचि कर पूरियो, किहां शुचि लगलेस ॥ ३० ॥ ४० ॥ तु
 रत रुदन करतो थको, जांमैं जिण वार ॥ जात पयोधर मुख ठवै,
 पीयै दूध तिवार ॥ ३० ॥ ४१ ॥ दिन १ दीने दीपतो, करै रंग अपा
 र ॥ लोम कोम माता पिता, पूरै सुविचार ॥ ३० ॥ ४२ ॥ श्रोत्र
 इग्यारे नारिनें, नव नरने जाण ॥ रात दिवस बहता रहै, चैतो चतुर
 सुजाण ॥ ४३ ॥ ३० ॥ सात धातु साते लचा, ठै सातसै ना
 मि ॥ नवसें नामी पिंममें, तिम नीनेले हाम ॥ ४४ ॥ ३० ॥ संधि
 एकसो साठ ठै, सतोत्तर सो सम ॥ तीन दंप पेसी पांचसै,
 ढांकी ठै चरम ॥ ३० ॥ ४५ ॥ रुधिर सेर ११ देहमें, पेसाव
 सरीष ॥ सेर पांच चरबी तिहां, दोय सेर पुरीष ॥ ३० ॥

॥ ४६ ॥ उ० ॥ पित्त-टांक चोसठ अठै, वीरज बत्तीस ॥ टांक बत्ती-
 स सलेखमां, जाणै जगदीस ॥ ४७ ॥ उ० ॥ इण परिमाणयकी
 यदा, उंगो अधिको आय ॥ व्यापै रोग सरीरमें, नवि वाजे काय ॥
 ॥ ४८ ॥ उ० ॥ पोख्यो पहिले दाहके, इम वधियो अंग ॥ खान
 पान जूषण जला, करे नचनवा अंग ॥ ४९ ॥ उ० ॥ हिव बीजै
 दसके जण्यो, विद्या विविध प्रकार ॥ तीजे दसकै तेहने, जाग्यो
 कांम विकार ॥ ५० ॥ उ० ॥ जिण आंनरु तूं ऊपनो, तिणमें
 मन जाय ॥ चोथे दसके धनतणो, करे कोम ऊपाय ॥ ५१ ॥
 उ० ॥ पहुंतो दसके पांचमें, मनमें ससनेह ॥ बेटा बेटा पोतरा,
 परणावे तेह ॥ ५२ ॥ उ० ॥ ठठे दसके प्राणियो, बले परवस
 आय ॥ जरा आइ जोवन गयो, तृष्णा तोही न जाय ॥ ५३ ॥
 उ० ॥ आवै दसकै सातमें, हिव प्राणी तेह ॥ बल जागो बूढो
 अयो, नारी न धरे सनेह ॥ ५४ ॥ उ० ॥ आठमें दसके मोसलो,
 खुलिया सहु दांत ॥ कर कंपावै सिर धुलै, करे फोगट वात ॥
 ॥ ५५ ॥ उ० ॥ नवमें दसके प्राणियो, तन सूकत जाय ॥ सालै
 वचन बहुआंतणो, दिन ऊरता जाय ॥ ५६ ॥ उ० ॥ खाटप्रज्यो
 खूंखूं करे, सहू गाली देह ॥ हाज हुकम हाले नही, दीयो परिजन
 देह ॥ ५७ ॥ उ० ॥ आंख गले वे पुन मिले, पमै मुंहमे लाल ॥
 बेटा बेटा ने वडू, न करे सार संजाल ॥ ५८ ॥ उ० ॥ दस दृष्टा
 ते दोहिलो, लह्यो नरजव सार ॥ श्रीजिन धरम समाचरो, पांमो
 जिम जव पार ॥ ५९ ॥ उ० ॥ चरणपणे जे तप तपे, पाळे निर
 मल सील ॥ ते संसार तरी करी, लहे अविचल लील ॥ ६० ॥
 उ० ॥ कोमि रतन कवनी सटै, कांइ गमे रे गिवार ॥ धरम पवै
 पिण जीवनें, नहि कोइ आधार ॥ ६१ ॥ उ० ॥ काया माया
 कारमी, कारमो परिवार ॥ तन धन जोवन कारमो, साचो धरम

संज्ञार ॥ ६१ ॥ उ० ॥ चवदै राज प्रमाण ए, वै लोक महंत ॥
जनम मरण कर फरसियो, ते वार अणंत ॥ ६३ ॥ उ० ॥ आप
सवारश्रिया सहु, नही केहनो कोय ॥ विण स्वारथ अणपहुंचतै,
सुत पिण वैरी होय ॥ ६४ ॥ उ० ॥ जरां न आवे जां लगे, जां
लग सबल सरीर, धरम करो जीव तां लगे, होय साहसधीर ॥
॥ ६५ ॥ उ० ॥ आरज देस लह्यो हिवै, लाघो गुरु संयोग ॥
अंगश्रकी आलस तजो, करो सुकृत संयोग ॥ ६६ ॥ उ० श्रीनमि
रायतणी परै, चेतो चितमांहि ॥ स्वारथना सहुको सगा, कोइ
किणरो नांहि ॥ ६७ ॥ उ० ॥ जोग संयोग तजी सहु, यथा जे
अणगार ॥ धन१ तसु माता पिता, धन२ अवतार ॥ ६८ ॥ उ० ॥
सुरतरु सुरमणि सारखो, सेवो जिनधरम ॥ जिणथी सुख संपति
वये, कीजै तेहिज कर्म ॥ ६९ ॥ उ० ॥ तंडुलवेयाली अठै, एहं
नो अधिकार ॥ तिणथी ऊद्धरनें कह्यो, नही जूठ लिगार ॥ ७० ॥
उ० ॥ कलस ॥ इह जैनधर्म विचार सांजलि लिये संजमज्ञार ए,
परि सिंह केरा सदा पालै नेम निरतीचार ए ॥ संसारना सुख
सकल जोगवि ते लहे जव पार ए, श्रीजिनदर्ष सुसीस रंगै इम
कहै श्रीसार ए ॥ ७१ ॥ उ० ॥ इति उत्पत्ति इकहत्तरी संपूर्ण ॥

॥ अथ आत्मनिष्ठा लिख्यतै ॥

हे आत्मा ! हे चेतन ! ए कुदृष्टियां, यह कुश्रद्धाया, यह अकार्यमें
प्रवृत्ति, यह रसगृहीपणो, यह खोटे दृष्टांत, सामायक दोष घनी
मात्र कालमें तूं मत चिंतवन कर, क्यारे तूं सम्यक्तमोहनीमें,
कज्जी तूं मिश्रमोहनीमें, कज्जी तूं कामरागमें, कज्जी तो स्ने
हरागमें, क्यारे तूं दृष्टिरागमें, कज्जी तूं कुगुरुमें, कज्जी तूं कु
देवमें, कज्जी तूं कुधर्ममें, कज्जी ज्ञान विराधनामें, कज्जी दर्शन
विराधनामें, कज्जी चारित्रविराधनामें, कज्जी मनोदंभमें, कज्जी व

चनदंरुमें, कच्ची कायदंरुमें, कच्ची हास्यमें, कच्ची रतिमें, कच्ची
 अरतिमें, कच्ची जयमें, कच्ची सोकमें, कच्ची डुंगामें, कच्ची
 कृष्णलेस्यामें, कच्ची नीललेस्यामें, कच्ची कापोतलेस्यामें, कच्ची तुं
 रुद्धिगारबमें, कच्ची तुं रसगारबमें, कच्ची तुं सातागारबमें, कच्ची तुं मा
 यासद्वयमें, कच्ची तूं नियाणासद्वयमें, कच्ची तूं मिथ्यादर्शनसद्वयमें,
 कच्ची तेरे तेरेकाठिया आय फिरता है, कच्ची तेरे बाहिर कर अ
 ठारे पापस्थानक आय फिरता है, रे तूं आत्मा महा दुष्टो, महा
 डुराचारी, अरे तूं हीनतिथिका जाया, अरे तूं हीणपुन्निया, अरे तूं
 हीणदृष्टी, अरे तूं अयोद्धा कामका करणहार, रे तूं दुष्ट पापिष्ठ जीव,
 प्रायें तो तेरे अनंतानुबंधियाक्रोध, अनंतानुबंधियामांन, अनंतानु
 बंधिणीमाया, अनंतानुबंधीलोन्नरी चोकमो, विचारा तेरे स्वपी
 नही, गुणगणा तेरा पलटा नही, धैर्यगुण तेरे आया नही, तृष्णा
 दाह तेरे मिटी नही, आकुल व्याकुलता तेरे मिटी नही, दरियाव
 जेसा कछ्छोख तेरे उठल रहा है, तैं जो धर्मक्रिया करता है सो शून्य
 मनसें करता है, धीरजगुणसें करेगा सो लेखे लगेगा, सूने मनसें
 करी जो क्रिया सो राख पर लीपणे जेसा है, अरे चेतन ! सोगन
 नही लेवे सो पापी, नर लेकर जांगे सो महापापी, तैं अनंतकाय,
 अन्नरू, शीलव्रत, जरदा, जांग, अमल, तमाखू, आदिकरा सोगन
 लेकर खोटा किया, तेरा कहां बूटकबारा होगा, रे चेतन ! तैं पुजलरे
 वास्ते कितनी आकुल व्याकुलता कर रह्यो है, मेरे पारस पत्थर,
 मेरे नवनिधान, मेरे रसकूपा, मेरे रसायण, मेरे चित्रावेल, मेरे अ
 मृतगुटको, वा देवताकूं बस करूं, बादस्याह हो जाऊं, राजा हो
 जाऊं, प्रधान हाकम सेनापती हो जाऊं, किसी तरे धन उपार्जन
 करूं, ये बातें तेरे हमेसां ऊपजै, दसमे गुणगणवालेकेही लोन्नका
 त्याग नहीं, तो तेरी गरज तो कैसें सरे, हे चेतन ! तूं मनमें विचारता

हे मेरा घर मेरा पिता मेरी माता मेरा पुत्र मेरा कलत्र मेरा पुत्र
 ल, अरे चेतन ! चौरासी फिरते चौरासी लाख घर करता फिरा,
 संसारमें न किसीका तूं हे, नहि कोइ तेरा हे, रे चेतन ! तूं
 तेरा उत्पत्ति तो देख, केइ वखत मापणो, केइ वखत पूत्र
 पणो, केइ वखत पुत्रीपणो, किसी वखत स्त्रीपणो, जेसैं ठगकी बेटी
 नें अपणी मांसे पूठा-माताजी में जो पाप करतीहूं सो कोण जो
 नेगा ? मा बोली-बेटी, करेगा सो जोगेगा, तबनो उसने कहा धिक्
 हे इस स्वारथियें संसारकूं, कोइ किसीका नही, यह मनुष्यजन्म,
 आर्यदेस, आर्यकुल, श्रावकके घर जन्म पाया, श्रीजिनेश्वरदेवका
 धर्म पुन्यानुबंधी पुन्यसे पाया, नर पायकरके तेने ब्राह्मण जेसैं क
 उएकूं उमाणे चिंतामणिरत्न फेंककर खोया, तेसैं तें चिंतामणि
 रत्न जेसा सत्य सनातन धर्म जैनका पायकर मंदबुद्धि क्रिया आ-
 मंवरि कुगुरुनके उपदेससैं चिंतामणिरत्न जेसा शुद्ध जैनधर्म
 आज्ञाप्रमाण जो था सो तेने खो दिया, अब तेरा निस्तारा केसैं
 होय, विष्टामें कमिपणें तें अनंती वार पेदा जया, मानरूपी गज
 पर बाहुबल चढ़ा नर संज्वलनमान था, नर बाह्मी सुंदरी बहिना
 जैसी समझाणेवालो श्री जव समझै, नर तेरे सो एसा मान, अरे
 चेतन तेरा कोन हवाल होगा, देख तूं भरतमाहाराजा जिणोके
 केसीक राजशुद्धि सो केसीक जावना जावतां, धिःकार राज्यनें, धिः
 कार पाटकूं, धिःकार चक्रवर्त्तिपदवोळूं, धिःकार मेरे विषयसुखोळूं,
 धन्य श्रीतर्धिकर माहाराजका सो देसविरती धर्म पालते हे, धन्य
 जो सर्वविरती धर्म पालते हैं, धन्य जो वांन देते हे, धन्य जो
 सील पालते हैं, धन्य जो तपस्या करते हैं, धन्य जो जावना जाते
 हैं, एसे जावना जावतें नरनादिक केवलज्ञान केवल दर्शन
 पाया, इस तरें रे जीव तूं उनो नी वरावरी मतकर, वहनो तेसठ

सलाका पुरुष चौधै आरेका जीव तें पंचम कालका ज़रतक्षेत्र-
 का कोना उनोके देखते तूं किस गिणतीमें, कर्म अजीववस्तु तें जी-
 ववस्तु, जीवसें जीवतो हमेसां परिचय करे लेकिन् अजीवसे क्यों
 करै, कर्म सबल तें निर्बल, रे चेतन कर्म तो चौदेपूर्वधारीयोकों गि-
 राया, इग्यारमें गुणठाणेका जीव जुवनजानु केवलीजी, कमलप्र-
 ज्ञाचार्यजी, महाविदेहके मनुष्योक्तूँ मिगाय दिया तो तेरी तो
 विसायतही क्या, आठ करम अछावनही प्रकृती हे प्रजु केसें जीता
 जाय, मोहकर्म पीठै लगा सो केसें जीता जाय, हे चेतन चारित्र-
 की फोजमें रह सद्बोध मोहतेकी आझाँमें रह सदागमसुं परि-
 चय रख, संतोषगुण धार, तृष्णारूप दाहकूं पीठी मार, जेसें तें तिर
 जाय, धन हे साधु मुनिराज पांचे सुमते सुमता, तोने गुप्ते गुप्ता,
 ठक्कायका पीयर, सात महाजयका टालणहार, आठ मदका ज प-
 क, नवविध ब्रह्मचर्यको वामका रखणेवाला, दसविध जतीधर्मका
 उजवालक, इग्यारे अंगका जणणेवाला, बारें उपांगका जणणेवाला,
 कुरकीसंबल मलि, मलिनगात्र, चारित्र पात्र, धन्य हे वह मु ने
 प्रजुकी आझा मुजब धर्म पालै, रे चेतन तुजै कब उदै आवेगा, रे
 चेतन तेरे नदय कहाँसें आवै, तेरे संसाररी बहुलताइ; धन्य देसत्र-
 ती पाले जिके प्रजुजीकी आझा पाले, जिके प्रज्ञात नठ सामायक
 करे, पम्कमणो करे, देवदर्शन करै, प्रजुजीकी द्वादसांगी वाणी
 सुणै, देववंदन, देवपूजन, गुरुवंदन, दांन, तपस्या, सील, पर्वतिथी
 पोसा, संध्याकूं देवसो पम्कमणा जिनाझा प्रमाणै बनावश्यक कर,
 मुजेज्जी कज्जी नदय आयगा, रे चेतन ! तूं बुरे कर्म करता हे बुरा
 हवाल होगा, बुरे परणांमोसे बुरीही गती नदय आयगी, सा-
 मायक मनसुद्धै करो, निंदा विकथा मद परिहरो, पढण गुणना वां-
 चनेकी खप कगे, जेसें जवसायर लीला तरो, सामायकवंदके यह

लक्षण है, नर तेरी सामायक तो निंदा विकथारूप है, तुझे पढ़णें गुणनेकी लगन नही, तेनें तो श्रुतज्ञानका विनय बहुमान नही किया, जो श्रुतज्ञानकी जक्ति करते है उनोको ज्ञान दर्शनकी प्राप्ति होती है, केवलज्ञान नर केवलदर्शन पाता है वोही जीव मुक्तिरूप स्त्रीका जर्तार होता है. दिवस प्रते दै कोई सुजाण सोना खंमी लक्ष प्रमाण, उसके पुन्य होय जेतलो, सामायक कीधा तेतलो ॥ १ ॥ लेकिन तूं इस जरोसे मत झूल, यह तेरी सामायक वो नही, वह सामायक आणंद कामदेव संख पुष्कली आदि उत्तम पुरुषोंकी, चंडावतंसकराजाकी, तेरी सामायक तो एसी है काम काज घरका चिंतवै, निंदा विकथा कर खिज रहै, आरत रौडध्यान मन धरै, तूं सामायक निष्फल करै ॥ १ ॥ सामायकके लक्षण ऐसे है अपणा पराया सरषा गिणै, कंचन पत्थर समवन धरै, साचो थोमो आगम जणै, ते सामायक शुद्धे करै ॥ १ ॥ रे चेतन तें परायाबुरा चाहता, अपणा जला चाहता, वो पराया बुरा या नही चाह्या वो तेनें अपणे आत्माकाही बुरा चाह्या, अरे चेतन तें कंचनकी चाह रखे, पत्थरकूं दूर करै, आखिर एक दिन यही पत्थर तेरे ठाती पर धरा जायगा, रे चेतन तूं मृषावाद बोल रहा है, तूं अपणे आत्माका गुण विचारे तो अवेदी है, अफरसी है, अघाती है, अलेसी है, अविनासी है, तें दिलमें विचारता है यह मेरा सज्जन, यह मेरा दुस्मन है, कोण तेरा सज्जन नर कोण तेरा दुस्मन है, आठ कर्मरूपिया सत्रु है जिनोको तूं ज्ञानरूपिये इंधनसूं वाल जस्म कर जिस्ते तेरा गरज सरे, अहोहो में जव्य हूं अजव्यहूं अथवा डुरजव्यहूं, मेरे संसार पोते वहीत दिखता है, प्रायेतो में अजव्यही दिखताहूं पीठे तो ज्ञानीयोने जाव देखा सो सही, है रे जाइ तें तो एसी सामायक करता है, खणे खाज मोमे

करमका, उंचतणा लेवे सरमका, तेरी सामायक तो ज्ञानी सि-
कारेगा जब लेखे लगेगा, उहा—आत्मनिंद्या आपणी, ज्ञानसार मु-
नि कीन; जो आत्मनिंद्या करे, सो नर सुगुण प्रवीण ॥ १ ॥
इति आत्मनिंद्या संपूर्ण ॥

॥ अथ श्राद्धदिनकृत्य तथा देववन्दनभाष्यादिकसैं मंदिर
जाणेकी पूजन द्रव्य भावसे करणेकी विधि श्रीमहा-
निसीथ सूत्रकी आज्ञा मुजब लिखते हे ॥

महाकल्यसूत्रमें ऐसा लिखा हे ठती शक्ति साधु जिनमंदि-
रमें जाके दर्शन नही करे तो तेलेका मंरु नर श्रावककूं बेलेका
मंरु ॥ प्रथम श्रावक दो च्यार घन्टी रात रहे पिठली तब कुठके
नवकारमंत्रका स्मरण करे, में कोण हूं, क्या मेरी जाति हे, क्या
मेरा कृत्य हे, क्या मेरा धर्म हे, इस तरे धर्मजागरणासैं दिलको
सावचेत करे, पीठे मल मूत्रकी बाधाकूं दूर कर अंग शुद्धि करके
सामायिक लेके राईप्रतिक्रमण करे, फेर घरदोरासरकी पूजा करे,
पीठे यथाशक्ति अन्ना वस्त्र आजूपण पहरेके घोरा हाथी रथ पाल-
खी सिपाइ नोकर चाकर जाई बंधु परिवार सभेत पूजाके लायक
फल फूल प्रमुख संगमे लेकर ज्यजीवोंको मोक्षमार्ग दिखाता
हुआ जिनशासनकी प्रज्ञावना करता थका जिनमंदिरमें जावे.
जिन मंदिरमें प्रवेश करके झोपड़ीकी तरे ज्ञातासूत्रमें अधिकार.
१० त्रिक विधि साचवन करे सो दस त्रिक लिखते हे—

पहिला त्रिक—३ बेर निस्तही कहणेका, जिसमें १ निस्तही
जिनमंदिरमें प्रवेश करतेही कहे पीठे संसार घर संबंधी कुठजी
कार्य विचारणा न करे १; दूसरी निस्तही प्रदक्षणा तीन दियां पीठे
कहे, जिनमंदिरमें फूटा टूटा मरम्मत कराणेकी जो सार शंजाल
रखीथी सोजी ठोमे २; (इसमें डव्यपूजा करणी मोकली रही)

तीसरी निस्तही कहे पीठे निकेवल ज्ञावपूजाही करे, लेकिन इव्य पूजा नही करे, यह प्रथम निस्तही त्रिक कहा. ?

दूसरा त्रिक-ज्ञान त्रिककी आराधना करणेकों प्रनूके दक्षिणावर्तसे तीन प्रदक्षिणा देवे.

तीसरा त्रिक-मूलनायकजीके बिंबको पंचांग मिलाके तीन बेर नमस्कार करे. ३.

चोथा त्रिक-प्रनूकी अंग १ अंग २ नर ज्ञाव ३ ऐसे त्रिविध प्रकारसे पूजा करे, अब निस्तही किये पीठे कृत्य अकृत्य तथा पूजाविधि संक्षेपसे लिखते हे, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, नर कायगुप्ति करके युक्त रहे, पांचो इंडियोकूं वसमे रखे, चलणे नर फिरणेमें उपयोगी रहे, गोतादिक दुसरेंका सुणके चित्तमें व्याकुलता नहि रखे, कुबजी देवकार्यकों ठोरके, नर कार्यकी विचारणा न करे, संपूर्ण राजकथा दिक ४ हो सो विकथाको ठोमे, जन्म नर कर्मके अनुगत वचन नहि बोले अर्थात् कोईके मातापितादिकका किया जया खोटे कार्य कों प्रगट नहि करे तथा कर्मानुगत वचन आंधेको अंधा, गोलेकूं गोला, इत्यादि वचन नहि बोले, निस्तही किये पीठे जिनमंदिरमें धर्मसंयुक्त आत्महितकारी प्रमाणोयेत वचन बोले, जिसने मन वचन कायाके खोटे व्यापारोका निषेध अपनी आत्मासे किया हे उस जीवके ज्ञावसे निस्तही होय, नर जिसने दूषणका त्याग नहि किया हे उसके फकत शब्द उच्चारणे मात्र इव्यनिस्तही होय इस वास्ते पूजायोग्य उत्तम वस्त्र पहरेके आठ तहका उज्जल वस्त्रसे मुखकोस बांधे, धूपादिकसे अंग अपणा शुद्ध करे, ज्ञावसे डुनर। निस्तही कहते मूलगुंजारेंमें प्रवेश करे, जयणा संयुक्त पूजा करे, पूजा करते शरीरमें खाज नही खुणे, खेल खंखार नहि करे, नि केवल जगवानकी स्तवनामें चित्त रखे, प्रथम १ युक्त जब

पंचामृतसे स्नान करावे, सुकमाल अन्ना कोमल सुगंधयुक्त वस्त्रसे जगवानका अंग लूहे, कपूर कस्तुरी मिश्रित शुद्ध केशरचंदनसे विलेपन करे, शुभवर्ण शुभगंधयुक्त जीवादि रहित निर्दोस गुलाब चंपां चंपेली केवला जाई जूई मोगरादिक पुष्पोसे पूजा करे, अष्टांगधूप अंगरवत्ती खेवे, मंगलीक दीपक करे, अखंड नुज्वल अक्षतोसे प्रभूके सन्मुख अष्ट मंगलीक लोखे—दर्पण १ जडासंज्ञ २ चंदमोनेसरावेसंपुट ३ श्रीचंद्र ४ भक्तयुग ५ कलश ६ स्वस्तिक ७ नंदावर्त ८ ऐसे अष्ट मंगलकी रचना करे, पंचरंगे फूलोंसे अष्टमंगलीक पूजे, अष्ट केशर चंदनके हत्ता देवे, उत्तम नैवेद्य चढावे, अष्ट खाद्यफल चढावे, इत्यादि पूजाकी विधी आरती पर्यंत रायपसेणी ज्ञाताधर्मकथा जीवाग्निगमादि सिद्धांतोंमें लिखे मुजब करे, पीछे अंतरंग भक्तिसे प्रभूके सन्मुख नाटक करे, जैसे देवेइ दानवेइ नारद नंदाइराजांकी राणी प्रजावती द्रौपदी रावण प्रमुख केश जीवोने जिनेश्वर तथा जिनेश्वरकी प्रतिमा आगे अष्टा-पदादि तीर्थोंपर तीर्थकर गोत्र उपार्जन किया तैसे शंकारहित जव्यजीव नाटक करता उत्तम फल पावे, जब चंदनादि पुष्पोसे करीजावे सो अंगपूजा १ प्रभूके सन्मुख नैवेद्यादिक चढायाजावे सो अंग्रपूजा २ प्रभूके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक करे सो ज्ञावपूजा ३. इव्यपूजा गर्भित चोथा त्रिक कहाँ ४. अब पांचमा त्रिक—तीन अवस्था विचारणी. पिंसस्थ १, पदस्थ २, रूपातीत ३, इसमें पिंसस्थ अवस्थाके तीन जेद हे. जन्मावस्था १, राज्यावस्था २, श्रमणावस्था ३, उर केवल अवस्था कों विचारणा सो पदस्थ अवस्था, निरंजन निराकार सिद्धावस्था सो रूपातीत कहीजे. ५.

अब ठहा त्रिक—तीन दिशा जोमके प्रभूके सांप्रने नजर रखे.

उर्ध्व १, अध २, तिरछी ३, दहणी ३४ बांझ पिठासी निजर नहीं करे. ६.
अब सातमा त्रिक-तीन घेर धरती प्रमार्जके उस ठिकाणें
चैत्यवंदन करे.

अब आठमा त्रिक-वर्णादिक तीन संपदाका अक्षर शुद्ध उ-
च्चारण करे सो वर्णशुद्धि १, अक्षरोंके अर्थपर आलंबन रखे सो अ-
र्थशुद्धि २, आलंबन एक जिनप्रतिमाका रखे सो मन शुद्धि ३. ७.

अब नवमा त्रिक-तीन मुद्रा करणी. जोगमुद्रा १, जिनमुद्रा
२, मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३. कमलकोशाकार दोनों हाथोंकी अंगुली मिला-
णी सो योगमुद्रा कहीजे, इस योगमुद्रासें शक्रस्तव कहे १, कान्तग-
मुद्रा सो जिनमुद्रा २, उर दो सीपका जोमा तिस आकारसें हाथ रख
णा सो मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३, इस मुद्रासें प्रणिधान जयवीरराय कहे. ८.

अब दशमा त्रिक—प्रणिधान तीन. जिनवंदन प्रणिधान १,
मुनिवंदन प्रणिधान २, प्रार्थना प्रणिधान ३. इसमें जो जावंति चे
इयाई इह संतो तबसंताइ तक तो जिनवंदन प्रणिधान १, जावं
ति केविताहू तिविहेण तिदंम विरियाणं तक मुनिवंदन प्रणिधान
२, जयवीररायसे लेके आज्ञवमखंमा तक प्रार्थनारूप प्रणिधान ३.
एसें दश त्रिकका पहिला द्वार कहा. १०.

अब पांच अग्निगमन साचवणेका दूसरा द्वार कहने हैं. स-
चित्तद्रव्य जो पुष्पादिक अपने जोगमें होय उसकूं दूर धरदेणा १,
उर राजचिन्ह मुगट वत्र खमग चमर पाडुका अचितवस्तुजकाजी
ठोरणा आज्ञापण वगेरे पहरे रखणा २, मन एकाग्र करणा ३, ए-
कपट उत्तरासण करना ४, जिनबिंबकूं देखतेही नमोजुवणबंधुणों
एसें नमस्कार करणा ५. यह उत्तरा द्वार कहा.

अब तीसरा द्वार—दोदिशीका पुरुष दहिनी तरफ घेठके ज-
गवंतकूं बांदे, स्त्री बांझ तरफ घेठके जगवंतकूं बांदे.

अब चौथा द्वार तीत अग्निग्रहका. अग्निग्रह देववांदशामे कहा हे. जघन्यसे तो नव हाथ दूर बैठके देव वांदे १, मध्यम नव हाथसें उपरांत बैठके देव वांदे १, उत्कृष्ट ६० हाथ दूर बैठके देव वांदे ३.

अब पांचमा द्वार चैत्यवंदनका. सो जघन्य १, मध्यम २, उत्कृष्ट ३, एवं तीन जेद हे. एमो अरिहंताणं एसा कहके अथवा एक दोय गाथाका नमस्कार चैत्यवंदन कहके शक्रस्तव कहणा सो जघन्य चैत्यवंदन १, जिस देववंदनसें नमोब्रूणसें लेके अरिहंतचेइयाणं इत्यादिक संपूर्ण कहके एक स्तुतिकी गाथा कहे सो मध्यम चैत्य वंदन तथा कोइ आचार्य कहते हे पांचदंरुक समेत थुईकी व्यास गाथा कहे सो मध्यम चैत्यवंदन कहौजे. पांच शक्रस्तवसे आठ थुईसे देववांदे सो उत्कृष्ट चैत्यवंदन कहौजे.

अब ठठा द्वार पंचांग प्रणिपात करे, दो गोमे. दो हाथ, उर मस्तक, यह पांच अंग मिलाके जमीनमें लगावे.

अब सातमा द्वार. जघन्ये एक गाथासें लेकर उत्कृष्ट एकसो आठ श्लोक तथा काव्यसें प्रज्जुकी स्तवना करे ॥ इति ॥

॥अथ चवदे नियम दिनप्रति प्रमाण श्रावक करे सो विचार लि०॥

सञ्चित १, दध १, विगई ३, पाणहि ४, तंबोल ५, वत्थ ६, कुसुमेसु ७, वाहण ८, सयण ९, विलेवण १०, बंज ११ दिशि १२, न्हाण १३, जत्तेसु १४ ॥ अर्थ ॥ श्रावक नितप्रति नियम सञ्जाले दिनमें जो चीज अपने अंग खाते लगे उसका प्रमाण रखे, उपरांत त्याग करे. उसमें पहिले सञ्चित वस्तुका प्रमाण इस तरेसें करें मट्टी सर्व जाति, पाणी सर्व जाति, जले अग्नि वायु वनस्पतिका ठेदन जेदन, तरकारी फल परबल जीमी तोरी केला मतीरा ककनी खरबूजा नींबु आंब नारंगी जामूण इत्यादिक जो चाहे सो रखे, बाकीका त्याग करे १.

दूसरा द्रव्य प्रमाण, तहां धातु वस्तुकी शली तेसे अपणी श्रंगली विगर जो चीज मुमें मालणोमें आवे सो सब द्रव्यकी गिण तीमे आता हे, नामांतर स्वादांतर स्वरूपांतर परिणामांतर द्रव्यांतर होणोसे द्रव्य जुदा गिणोमे आता हे, जेसैं गहूं एक द्रव्य उसकी पतली रोटी फीणारोटी बेढवारोटी वाटी यह सब जुदा द्रव्य कह लाता हे, इस तरे ज्ञात दाल रोटी कढ़ी मांझिया कट्ट तरकारी सब जात पापम खीचिया लक सब तरेके फीणी घेवर खाजा इत्यादिकेमेंसे सब द्रव्यमेसे जो चड़िये सो रखे वाकी नियम करे, उत्कृष्टपणे एक द्रव्यका नाम लेकर रखे सो एकही द्रव्य कहलावे, जेसेके मेवेकी खीचनी तो वह अनेक द्रव्यसे बणो जई हे तोजी एक द्रव्यही कहिये, इति द्रव्यप्रमाण दुसरा नियम २.

अब तीसरा विगय प्रमाण नियम ॥ तहां दश विगयोंमेंसे आवककूं चार महाविगयका तो त्यागही होता हे, मदिरा १ मांस २ मस्कण ३ जुर सहतका ४ रहे, ६ विगय--घृत १ तैल २ मीठा ३ दूध ४ दही ५ कढाईकी तली चीज ६, यह धारणा प्रमाण रखे, इति विगय नियम ॥ ३.

अथ चोथा पादत्राण नियम ॥ तहां जूनी खमान मोजा अपना इतना विराणा ऐसे नित्य धारणा प्रमाण मोकला रखे, ४. ॥ इति पान हि नियम ॥

अथ पांचमा तंबोल नियम ॥ पांनबीमा सुपारी लोंग इलायची गोटी जुर बनी जायफल जावंत्री प्रमुख सब खादिमवस्तु किरियाणोकी चीज धारण प्रमाण रखे, इति तंबोल नियम ॥ ५.

अथ षष्ठा वस्त्र नियम, पोसाख २ तथा ४ बूटा वस्त्र ५ तथा ७ मोकला रखे, पोसाख १ में पधनी १ जामा १ कम्बलबंधा ३ धोती ४ एक पट्टा उत्तरासन ५ यह पांच वस्त्रकी एक पोसाख

कहेजे. ऐसै स्विकै स्व। मुजब. जो ऐसा नही कर सके तो ४० तथा ५० कपमा दिनमे मोकला रखे. पराया वस्त्र झूल चूकमें आवे तो जयणा ॥ इति वस्त्र नियम ॥ ६.

अब सातमा फूल नियम. गुलाब चंपेली बेला केवमा केक की कुंद मुचकुंद सेवती चंपा मालती आदिक सब फूलका धारणा प्रमाण रखे. ॥ इति फूल नियम ॥ ७.

आठमा वाहन नियम ॥ रथ गाम्भी वहली इका बग्घी कोच पालखी घोडा, हाथी ऊंट तामजांम म्याना इत्यादिक सत्र थलवाहन, पाणीमें चलनेवाले मोरपंखी वतक धुमदोम लचकार मगर पनसोइ पलवार वजरानाव इत्यादि सब जिहाज बोट वगेरे तिरता फिरता चरता रेल वगेरे सब प्रकारके असवारीकी धारणा रखे. ॥ इति वाहन नियम ॥ ८.

अथ शय्या नियम ॥ पलंग खाट तखत चौकी पट्टा गद्दी कुरसी वनात सूजनी सेत्रूंजी डुलीचा चांदणी शीतलपट्टी चटाई सफ दरखतकी ठालका चमकेका कामला मुखमल अतलस कारचोपी इत्यादि धारणा प्रमाणे शय्याका प्रमाण करे. इति शय्या नियम ९.

अथ दशमा विलेपन नियम. सरसूँका राईका आटेका तेल फुलेल सब जातिका केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकूं इत्यादिक शरीरके सुख वास्ते तथा रोगादि कारणे औषधादिकका विलेपन, फोमे परमलम प्रमुख आंखोमें अंजन इत्यादि अंगोपांगमें लगाया सो विलेपन धारणा प्रमाणे परिमाण करे. इति विलेपन नियम १०

अथ ब्रह्मचर्य नियम. रातकों तथा दिनकों सूइ मोरेके दृष्टांत जोगादिकका प्रमाण करे स्वप्नेही मनकी वचनकी जयणा. इति ब्रह्मचर्य नियम ११.

अथ दिशि निदम. पूरव १ पश्चिम २ दक्षिण ३ उत्तर ४
अदिकूण ५ नैरुतकूण ६ वार्यव्यकूण ७ ईशानकूण ८ अधोदि
शि ९ उर्द्धदिशि १० यह दश दिशिका अपने जाणे आणेका
प्रमाण करे, चिठि लिखणी आदमी जेजणा देशांतरकी चिठी
वांचणी उसकी जयणा. इति दिशि नियम १२.

अथ तेरमा स्नान नियम. तहां आज दिनमें स्नान २ बेर
अथवा ४ बेर मोकला लेकिन पाणीका तोल रक्के, घने प्रमुख
का प्रमाण करे, एक स्नानमें इतना पाणी खरच करूं ज्यादा
नही गिराऊं. इति स्नान नियम १३.

अथ चौदमा ज्ञात नियम. दिनमें ज्ञात २ सेर तथा २
बेर जीमूंगा अथवा च्यार बेर उपरांत डुविहार या चोविहार
धारणा प्रमाणे रक्के. तथा दिनमें जल पीणेमें आवे उसका
प्रमाण रक्के तोलसे या मापसे. इति चवदे नियम विचार संपूर्ण १४.

॥ अथ श्रावकके सम्यक्त मूल वारे व्रत ग्रहण विधि लिख्यते ॥

प्रथम जिनमंदिरमें जिनप्रतिमाके सामने शुद्ध सपेद वस्त्र
पहरके चंदनकेशरका तिलक करके चावल चढावे, पीठे अखंड
तंडुल मुठे ३ थालमें रक्के उस पर नारेल रुपया या मोहर
धरे, तीन प्रदक्षिणा देकर इरियावही पन्तिकमे इच्छाका० सम्य
क्त सामाश्चर्यारोहणार्थं चेइयाइं वंदावेह गुरु केह वंदावेमो चैत्यवं
वण करे. बाधे पासे चावलांको साग्रियो करे श्रीफल धरे पीठे
गुरु वर्द्धमान विद्यासे मंत्रकर श्रावकके मस्तक पर वासक्षेप
करे, वर्द्धमान स्तुतिसे देववंदन करवावे पीठे सतरे शुईमें नवकार १
एकेकका कान्तसग करे पीठे शासनदेवता निमित्त च्यार लोगस्त
का कान्तसग करे, पारके प्रगट लोगस्त कहे पीठे ३ नवकार
गुणे शक्रस्तव कहे नमोर्द्धतु० कहके वना स्तवन कहे पीठे जय

चौथराय कहे इति नंदी विधिः । पीठे स्वमासमण देइ श्रुतसां
 मायक सम्यक्तसामायक आराहणार्थ काउसगं करावेइ, गुरु कहे
 करावेमो सम्यक्तसामायक आरोगनार्थ करेमिसाउसगं, ४. लोग
 स्तका काउसगा करे पारके प्रगट लोगस्त कहे पीठे ३ वेर नव
 कार गुणकर गुरुके पास तीन वेर सम्यक्तदंरुक उच्चर गुरु पाठ
 बोले उसकी मनने धारणा रक्के. सूत्रं अहन्नंजते मुह्यन्ति सम वे
 मिष्ठतान् पक्कमामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि नोमेकप्पइ अज्जप्पज्जिइ
 अन्नतिठिएवा अन्नतिठिदेवयाणिवा अन्नतीठिपरिग्गहिय अरिहंत
 चेइयाणिवा वंदित्तएवा नमंसित्तएवा पुर्विअणालित्तएणं आलवित्त
 एवा तेसिअसणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा दाउंवा अणप्पाउंवा
 तेसिगंधमद्धाइं पेसिउंवा नन्नवरायान्नियोगेणं गणाज्जियोगेणं बला
 ज्ञियोगेणं देवान्नियोगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं तंचउव्विहं तंजहा
 दव्वउं खित्तउं कालउं जावउं तव्वदव्वउं दंसण दवाइं अहिगिच्च खित्तउं
 जाव जरहमज्जिमखंमे कालउं जावजीवाए जावउं जावठलेणं नव
 लिज्जामि जावसन्निवाएणं नज्जविज्जामि जावकेरइ, उम्माइवसेणं
 एसो दंसण पावण परिणामो नपरिवरुइ तावमे एसो दंसणाज्जिग्ग
 हो अन्नव्वणान्नियोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्ति
 यागारेणं वोसिरइ. पाठे नुं ह्रीं श्रीं अर्हंनमः एसे अक्षर श्रीगुरुके
 पाससें हाथमें लिखोके जिन प्रतिमाकूं वासकेप चढावे, नवकार
 पढतोथको ३ प्रदक्षिणा देवे, देव गुरुकूं वांदि, पीठे श्रुतसामायक
 धिरि करणार्थ सत्तावीस उत्तास प्रमाणे एक लोगस्तका काउस
 गं करे पीठे प्रगटलोगस्त कहे पीठे सम्यक्तरूप कट्टपट्ट पायके
 अति आनंदसें एसा वचन बोले अरिहंतोमहदेवो, जावजीवं सुसा
 हुणो गुरुणो, जिनपन्नत्तंतत्तं, इयसम्मत्तंमएगहियं. १. पाठे गुरु
 धर्मदेशना देवे, मिश्रवात्वरूप सम्यक्तेके प्रांच अतीचार वर्जे, नित्य

चैत्यवन्दन इतनी बेर कहंगा, इतना नवकारे लिट्ब गुणूंगा, फल
केसरादिक वर्षप्रति इतना जिनमंदिरमें चढाउंगा, ज्ञान दर्शन चा
रित्रके जक्तिमें इतना द्रव्य खरचूंगा, शीलव्रत इतने पर्वनिधिमैं पा
लूंगा, नित्य पञ्चखाण इस मुजब कहंगा, दिनकी नवकारसी आ
दिक रात्रिकों डुविहार तिथिहार चनुविहार डेर बाधीस अजक
चत्तास अनंतकाय बिदल वगेरे ठोदूंगा इत्यादिक अपनी धारणा
प्रमाण सब वस्तुका करे नियम, गुरुके सामने बारे व्रतकी टीप
सुणे अतीचार नहि लगे ऐसे उपयोगसे सदा वर्त्ते ॥

अथ प्राणातिपात व्रत दंभक लि० ॥ अहन्नंजंते तुम्हाणं स
मीधेवेथूलगपाणाइवायं संकप्पिनु निरवराहं पञ्चस्कामि जावज्जीवाए
एगविहं एगविहेणं अथवा डुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए कोणं
नकरेमि नकारवेमि तस्सजंते पक्कमामि निंदामि गरिहामि उ
प्पाणं वोसिरामि ॥ यह पहले व्रतका दंभक तीन बेर उच्चारवे ॥ १ ॥
अहन्नंजंते तुम्हाणंसमीवे थूलगं मुसाइवायं जीहाहेयाइहेउअ
कन्नालीयं गवालीयं जूमालीयं आपणमोसा कूटसाखीयं पंचविहं
पञ्चस्कामि दक्खिन्नाए अविसए दव्वणं खित्तणं कालणं जावणं सबणं
मुसावायं खित्तणं इववा अणववा कालणं जावज्जीवाए जाव
णं जावगहेणं नगहेज्जामि जावउलेणं नउलज्जामि अन्नेणं केणवि
रोगाइयं एसोपरिणामो नपरिवमई तावअज्जिगह डुविहं तिविहेणं
अन्नत्थणाज्जेणं सहस्सागारेणं महत्तगागारेणं वोसिरई ॥ २ ॥
अहन्नंजंते तुम्हाणंसमीवे अदिन्नादाणं खत्तखणणाइयं चोरंकारकरं
रायनिग्गहकारयं सचित्ताचित्त वहुविसयं पञ्चस्कामि वव्वणं खित्तणं
कालणं जावणं दव्वणं अदिन्नादाणं खित्तणं इववा अन्नववा का
लणं जावज्जीवं जावणं जावगहेणं नगहिज्जामि जावउलेणं नउ
लिज्जामि अण्णकेणवि रोगाइयं एसोपरिणामो नपरिवमई ताव अ

अन्न० सह० मह० वोसिरइ ॥ ८ ॥ अहन्नंजंते तुम्हारासमीवं
 सामाश्यं पोसहोववासं देसावगासियं अतिप्रसंविज्ञागवयं जहा स
 तीए पन्निवज्जामि इच्चयं सम्मत्तमूलं पंचाणुअयं सत्तसिरकावयं कुवा
 लसविहं सावगधम्मं उवत्तंपज्जत्ताणं विहरामि अन्न० सह० मह०
 सबस० वोसिरइ ॥ ९ ॥ षट् साख ठ ठंमी च्यार आगार संयुक्त
 पाखूं ॥ इति श्रावककूं संक्षेप बारे व्रत उच्चरावण विधि ॥

॥ अथ वीसथानकका छोटा स्तवन देववांदनेमे कहणेका ॥

श्रीजिनना रे चरण कमल प्रणमी करो, वीस थानक रे
 गणवुं विधि कइउ चित्त धरी ॥ पहले थानक रे नमो अरिहंताणं
 गणउ, सीमंधर रे जयवंत जिन पूजी शुणउ ॥ ब्रूटक० ॥ शुणउ
 जविआं बीजइ थानकि, नमो सिद्धाणं सही ॥ सिद्धपूजा चउर्व
 स जिननी, पूंरुरीक आदिइ कही ॥ त्रीजइ थानक नमो पंचयए
 स्स, प्रजावना संघनी करइ ॥ नमो आयरिआणं चउथइ थानकि
 आचारज जगती धरइ ॥ १ ॥ नमो थेराणं रे पांचमइ श्रिव
 पूजा करो, नमो उवझायाणं रे ठठइ थानक उचरउ ॥ वस्त्र कंब
 र बहुश्रुतनइ ते दीजिए, नमो तवस्सीणं रे सातमें, तपि
 पूजिए ॥ ब्रू० ॥ पूजिए आठमे नमो नाणस्स झावचत्त सुख
 करउ, नमो दंसणस्स नवमें थानक चैत्यसेवा आठ फरसुं वाके
 नमो विनयकारीणं विनय वरुनो कीजिए, इ
 कारीणं पोसह पूरो लीजिये ॥ २ ॥ बारमे
 धारीणं सदा, वृतधारी रे मन वच क्रम लीनो, जिनवर प्र
 धारीणं रे नमो तेरमे अरचिये, समादि, मुख सुंदर जासुं, दूर
 वरचिये ॥ ब्रू० ॥ वरचिये नमो सुपत्तइ सूरजरे देजो अविचल
 पनरमे, नमो वायगस्स विगए, गरकात्त जावनम् ॥
 सतरमे नमो वेयावचकारीणं, जावनम् ॥

निगह दुविहं तिविहेणं अन्नत्थं सहस्सा० महत्त० सब० वोसि
 रइ ॥ ३ ॥ अहन्नंजंतुम्हाणंसमीवे उदारिय वेक्किय जेयं थूलमेहुणं
 पच्चस्कामि अहागहियजंगएणं दिव्वंतिरिठं माणसियं एगविहं एग
 विहेणं पच्चस्कामि दव्वं खित्तं कालं जावत्तं दव्वंणं मेहुणं खि
 त्तंणं इत्था अन्नत्थवा कालंणं जावज्जीवाए जावत्तंणं जावगहेणं
 नगहेज्जामि अन्न० सह० मह० सब० वोसिरइ ॥ ४ ॥ अहन्नं
 जंतु तुम्हाणं समीवे परिग्गहं पमुच्च अपरिमिय परिग्गहं पच्चस्कामि
 थणथन्नाइ नवविहवत्तु विसयं इत्थापरिमाणं उवसंपज्जामि अहाग
 हियजंगएणं तंजहा दव्वं खित्तं कालं जावत्तं दव्वंणं नवविह
 परिग्गहं खित्तंणं इत्था अन्नत्थवा कालंणं जावज्जीवं जावत्तंणं
 जावगहेणं नगहेज्जामि अन्न० सह० मह० सब० वोसिरइ ॥ ५ ॥
 प्रहन्नंजंतु तुम्हाणंसमीवे दिसिपरिमाणं पच्चस्कामि तंजहा दव्वं
 खित्तं कालं जावत्तं दव्वंणं दिसिपरिमाणं खित्तंणं धारणाप
 णं कालंणं जावज्जीवाए जावत्तंणं जावगहेणं नगहेज्जामि जाव
 ० तावअनिगह अन्न० सह० मह० वोसिरइ ॥ ६ ॥ अहसंजं
 तुम्हाणं समीवे जोगोवजोगयेजोयणं अनंतकायवहुवीया राइ
 मुसावाय परिहरामि कम्मंणं पन्नरसकम्मदाणाइं इंगालकम्माइया
 णं जावत्तं खरकम्माइयं रायान्निगोचं परिहरामि तंजहा दव्वं
 रोगाइयं एसोपपन्नं दव्वंणं जोगाव जोगवयं खित्तंणं इत्था अन्न
 अन्नत्थणजोगेणं समीवाए जावत्तंणं जावगहेणं नगहेज्जामि अन्न०
 अहन्नंजंतु तुम्हाणंसमीवे वोसिरइ ॥ ७ ॥ अहसंजंते तुम्हाणंसमीवे
 रायनिगहकारयं सच्चि अववज्ज्जाण पापोपदेश हिंसोपकरण
 कालं जावत्तं दव्वंणं अन्नत्थदं जहासत्तीए परिहरामि तंज
 लंणं जावज्जीवं जावत्तं दव्वंणं अन्नत्थदं खित्तंणं इत्था
 जिज्जामि अप्पेक्षकेणावि -

नमो नाण धराणं, नवूं जणवूं आपिये ॥ ३ ॥ नमो सुअज्जत्तीणं
 रे जगणीसमे ज्ञविया मुणल, पुस्तकपूजा रे नवूं लखावीनइं
 सुणो ॥ वीसमे आनक रे नमो पञ्चावगाणं कही, संघजगती रे
 यथासक्ति कीजे सही ॥ त्रू० ॥ सही कीजे वीस उली एक षठ
 मासि कीजीये, उपवास करिये बे सहस्स गुणिये पम्कमणे
 लाहो लीजिए ॥ त्रणे काले देववंदन नाहण धोअण टालिये,
 आरंज वरजी पुन्य गरजी सीअल सूधो पालिये ॥ ४ ॥ साधु
 साधवी रे आवक आविकाये सेविआं, तीर्थकर रे तेणे नामकर्म
 बांधिआं ॥ वीरशासन रे नव जणां ते जाणिआं, गाणां रे
 सौधर्मसामि वखाणिआ ॥ त्रू० ॥ वखाणिआ गणधर श्रेणिकराजा
 सुपास उदाई नृप बलि, पोष्टिल मुनिवर अने दृढायुष शंख
 शतक आवक रुली ॥ सुलसा रेवती आविकाये एह आनक
 फरसिआं, सेवकजन कढ्याणकारी वयणला सफला किया ॥ ५ ॥
 इति वीसआनक स्तवनं ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग कैरवो ॥ चालो देखो री मधुवनको राव ॥ चा० ॥
 वामानंदन पास जिनेसर, शिर पर रे वाके चमर ढोलाय ॥ चा० ॥
 ॥ १ ॥ तारण तरण जिनेसर लख के, जेटे सहु जवि चित्त सुख
 पाय ॥ चा० ॥ २ ॥ गंगादरस उमाहो लागो, कब फरसुं वाके
 मन वच काय ॥ चा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग घाटी ॥ मेरो मन वश कर लीनो, जिनवर प्र^{जि}
 गंत ॥ मे० ॥ अखियां कमल पांखनियां, मुख सुंदर जग^{जि}
 मे० ॥ १ ॥ कानें कुंल दोय जलके, शशि सूरज देजो अविचल
 मे० ॥ नील वरण तन सोहे, त्रिभुवन परकाश जग^{जि}

प्रभु तुम शरण रहीने, समरुं सासोसास ॥ मे० ॥ लालचंद
अरज सुनीजें, पुरो वांछित आस ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ तुमरी ॥ राग जंगलो ॥ सुणो सुजाण नेमजी, हारे में
खमी पुंकारुं नेम तुंहीं तुंहीं तुंहीं ॥ सु० ॥ अरज करत हुं में
पईयां परत हुं, ईतनी अरज मेरी मानो ॥ सुजा० ॥ १ ॥ विन
अवगुण क्युं तजो मेरे साहेब, नेह नजर मोपें मारो ॥ सुजा० ॥
॥ २ ॥ हरख चंद नेमी राजेसर, हुं जव जवकी चेरी ॥ सुजा० ॥ ३ ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ राग जैरवी ॥ नेम जिणंदजीसैं आंखरुली, मोरी रेन
दिवस नित लग रहीर ॥ ने० ॥ मो० ॥ १ ॥ पहेली आय जन
दोस्ती कीनी, ले पीठें ठिठकाय दर्ई रे ॥ पसुअन पर प्रभु दया
करीने, सिवरमणी तें वर लेई रे ॥ ने० ॥ मो० ॥ २ ॥ केहू
जविक दसना कर दोस्ती, रत्नविमल पद पाय लई रे ॥ ने० मो० ॥ ३ ॥

॥ अथ पद ॥ राग भैरवी ॥

॥ आज प्रभु तोरे चरण लागि, मिथ्यातनिंद में खोई रे ॥
आ० ॥ १ ॥ दरसन कर परसन ज्यो मेरे, आनंद चित्त अब
जोई रे ॥ आ० ॥ २ ॥ तुम विन नर न कोई मेरे, देख्यो त्रिभु
वन जोई रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ दास तुमारो करत विनति, तुम
प्रभु जव जव होई रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पदं ॥

अ. राया. ॥ राग जैरवी ॥ रात गई अब प्रात होन ज्यो, क्या सोये
काळुया जागरे ॥ रा० ॥ दोय घनी तरुको अब रहियो, ऊठ धरममें
ललसं जावज्जीव ॥ १ ॥ जिनवाणी नरवीच धार ले, नर जरम
लिझामि अमोशकेष ॥ रा० ॥ २ ॥ आनंद सुगुरु वचन हित मानो, ए
॥ रा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पदं ॥

॥ राग जैरवी ॥ तुम बिन दीनानाथ दयानिधि, कोन खबर
ले मेरी रे ॥ तु० ॥ १ ॥ जमत फिरयो संसार जगतमें, मेढो जव
दी फेरी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ जव जवके प्रभु तुम जगनायक, राखो
शरणें तेरी रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ उदय आशरो पकड़्यो तेरो, सरण
अही में तेरी रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ कमखानी देशी ॥ जाव धरि धन्य दिन आज सफलो
गणुं, आज में सजन आनंद पायो ॥ हर्ष धरि नजर जरि विमल
गिरि निरख करि, रजतमणि कनक सुरतरु कहायो ॥ जा० ॥ १ ॥
पग पग नमंग धर पंथ नित पूछतां, धन्य दोय चरण तिहां चलत
आयो ॥ आज धन दीह जागी सुरुतकी दिशा, आज धन दीह
गिरि सुजस गायो ॥ जा० ॥ २ ॥ दूर दुर्गति टरी जात्र विधिशुं
करी, पुण्यजंमार पोतें जरायो ॥ वंदत जिनराज मणिरंग सुरगिरि
शिखर, रूपजजिनचंद सुरतरु कहायो ॥ जा० ॥ ३ ॥

॥ अथ सीमंधर जिन स्तवनं ॥

॥ श्री सीमंधर साहिबा, वीनतमी अवधार लाल रे ॥
परमात्म परमेसरु, आत्म परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥
केवलज्ञान दिवाकरु, जांगे सादि अनंत लाल रे ॥ जासक लोकालो
कको, हायिक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ इंद चंद चक्र
सरु, सुर नर रहे कर जोरु लाल रे ॥ पदपंकज सेवें सदा, अणहूते
एक कोरु लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चरणकमल पिंजर वस्यो, मुऊ
मनहंस नित्यमेव लाल रे ॥ चरण सरण मोहि आसरो, जवजव
देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अधम उधारण ठो तुमें, दूर
दूरो जवदुःख लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष मया करे देजो अविचल
सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति सीमं, मन जलाम् ॥

॥ अथ अष्टापद गिरि स्तवनम् ॥

॥ मनमो अष्टापद मोहो माहरी जी, नाम जपू निशि
दीस जी ॥ चत्तारी अठ दस दोय वंदीया जी, चिहुं दिशि जिने
चोवीश जी ॥ म० ॥ १ ॥ जोजन जोजन अंतरें जी, पांवर
शाला आठ जी ॥ आठ जोजन जुंचुं देहरं जी, दुःख दोहग
जाये नाठ जी ॥ म० ॥ २ ॥ जरतें जरायां जलां देहरां जी,
सो जोंघरां थूज जी ॥ आपे मूरत सेवा करे जी, जाण जोईने
ऊज जी ॥ म० ॥ ३ ॥ गौतमस्वामी तिहां चढ्या जी, वली
जागीरघ गंग जी ॥ गोत्र तीर्थकर बांधीयां जी, जाणे जोई जे
ऊज जी ॥ म० ॥ ४ ॥ दैव न दीधी मुऊने पांखरी जी, आवुं केम
हजूर जी ॥ समयसुंदर कहे वंदना जी, प्रह नगमते सूर जी ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ सुण अरदासा सुगुण निवासा, अमची पूरो प्रभु आशा
राज ॥ सु० ॥ देखि नदासा अपणा दासा, दीजें कबुक दिलासा
राज ॥ सु० ॥ १ ॥ चामी चटकी जवमाहि जटकी, नाच्यो में
विध नटकी राज ॥ सु० ॥ २ ॥ हवे मन हटकी आपशुं अटकी,
लागुं प्रभुपय लटकी राज ॥ सु० ॥ ३ ॥ तें हम टाली मुगत
संजाली, प्रीत अमेंहिज पाली राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ एक हथाली
वाजे ताली, वात अचंजा वाली राज ॥ सु० ॥ ५ ॥ परबपंगारी
पाल तुमारी, सेवामें विध सारी राज ॥ सु० ॥ ६ ॥ तत्त्व विचारी
मन शुद्ध धारी, श्रीअमसी सुखकारी राज ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शंखेश्वर स्तवनम् ॥

॥ अंतरजामी सुण अखवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो ॥
सांजलीने आवे तूम तीरें, जनम मरण जय वारो ॥ १ ॥ सेवक
अरज करे देणकेणे ॥ से शिवसुख आलो ॥ ए आंकणी ॥ सहु

तिसुरंगनिरत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ जो निज आतमगुण आनंदी, पु-
 गल संगेजे ह अफंदी ॥ जे परमेसर निजप्रद खीन, पूजो प्रणमो-
 नव्य अदीन ॥ १ ॥ कुसुमां० सांतिजिनंदा० तोरा० (एसा कह
 गोमे टीकी दीजे) ॥ २ ॥ गाथा ॥ निम्मलनांणपयासकर, निम्मलगु-
 णसंपन्न ॥ निम्मलधम्मवएसकर, सोपरमप्पहधन्न ॥ १ ॥ ढाल ॥
 लोकालोक प्रकाशक नांणी, जविजन तारण जेहनी वांणी ॥ पर-
 मानंदतणी नीसांणी, तसु जगंते मुऊ मति ठहरांणी ॥ १ ॥ कु-
 सुमांजली मेलो नेम, जिनंदा तोरा० ॥ (एसा कह हाथे टीकी दीजे)
 ३ ॥ गाथा ॥ जेसिज्जासिज्जंतिजे, सिज्जस्संतिअणंत ॥ तसुआलंबन
 ठवियमण, सोत्तेवोअरिहंत ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिवसुख कारण जेह
 त्रिकाले, सम परिणांमे जगत निहाले ॥ उत्तम साधन मार्ग दिखा-
 ले, इंद्रादिक जसु चरण पखाले ॥ १ ॥ कुसुमांज० पासजिनंदा
 तोरा च० ॥ (एसा कह खांधोके टीकी दीजे) ४ ॥ गाथा ॥ सम्म
 दिठ्ठिदेसजय, साहूसानुणीसार ॥ आचारजज्वझायमण, जोनिम्मल
 आधार ॥ १ ॥ ढाल ॥ चौविह संघे जे मन धारयो, मोहतणो
 कारण निरधारयो ॥ विवह कुसमवर जात गहेवी, तसु चरणे प्रण-
 मंत ठवेवी ॥ १ ॥ कुसुमांजलि० वीरजिनंदा तोराच० ॥ (एसा कह
 मस्तक टीकी दीजे) ५ ॥ (पोढे स्नात्रिया चमर ले के प्रजुजीकूं
 दुलावे) ॥ वस्तु ॥ सयलजिनवर ९ नमिय मनसंग, कल्लाणक वि-
 हि संठविय, करिस धम्म सुपवित्त ॥ सुंदर सय इक सित्तर तित्थंकर,
 इक समय विहरंत महियल, चवण समय इगवीस जिण ॥
 जम्म समय इगवीस, जत्तहि जावे पूजिया, करो संघ सुज-
 गीस ॥ ढाल ॥ जव तीजे समकित गुण रम्या, जिनजक्की प्रमुख
 गुण परिणम्या ॥ तजि इंडिय सुख आसंसना, कर थानक वीसनी
 सेवना ॥ १ ॥ अति राग प्रशस्त प्रजावता, मन जावना एहवी

ज्ञावता ॥ सब जीव करूं शासन रसी, ऐसी ज्ञाविदया मन उल्लेख
 सी ॥ २ ॥ लही परिणाम एहवूं जलूं, निपजावी जिनपद निरम
 लूं ॥ आनुबंध विचे इक जव करी, अज्ञा संवेग ते धिर धरी ॥ ३ ॥
 तिहांथी चवि लहे नरजव उदार, जरते तिम एरवर्तेज सार ॥ म
 हाविदेह विजय प्रधान, मऊखंमे अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥
 ॥ ढाल ॥ पुण्ये सुपना ए देखे, मनमें हरख विशेषे ॥ गजवर
 उज्जल सुंदर, निरमल वृषज मनोहर ॥ निरजय केसरिलिंद, लख
 मी अतिह अवीह ॥ अनूपम फूलनी माला, निरमल शशि सुकमा
 ला ॥ तेज तरणि अति दीपे, इंद्रध्वजा जग जीपे ॥ पूरण कलश
 पमूर, पदम सरोवर पूर ॥ इग्यारमे रयणायर, देखे माताजी गुण
 सायर ॥ वारमें जुवन विमाण, अनुपम रत्ननिधान ॥ अगनशि
 खा निरधूम, देखे माताजी अनोपम ॥ हरखी रायने ज्ञासे, राजा
 अरथ प्रकासे ॥ जगपति जिनवर सुखकर, होस्ये पूत्र मनोहर ॥
 इंद्रादिक जसु नमस्ये, सकल मनोरथ फलस्ये ॥ १ ॥ वस्तु ॥ पुन्य
 उदय २, ऊपना जिणनाह ॥ माता तव रयणी समे, देख सुपने
 हरखंत जागी ॥ सुपन कही निज कंतने, सुपन अर्थ सांजले
 सो ज्ञागी ॥ त्रिजुवन तिलक महागुणी, होस्ये पूत्र निधान इंद्रा
 दिक जसु पाय नमी, करस्ये सिद्ध विधान ॥ १ ॥ ढाल ॥
 चंडाउलाकी ॥ सोहमपति आसन कंपियो, देइ अवधे मन आ
 णंदियो ॥ मुऊ आतम निरमल करण काज, जवजल तारण
 प्रगट्यो जिहाज ॥ १ ॥ जवअरुविय पारग सबवाह, केवलना
 लाइय गुण अगाह ॥ सिव साधन गुण अंकूर जेह, कारण उलं
 ट्यो आसाह मेह ॥ २ ॥ हरखे विकसे तव रोमराय, बलयादिकमां
 निज तनु न माय ॥ सिंहासणथी ऊठ्यो सुरिंद, प्रणमंतो जिन
 आणंद कंद ॥ ३ ॥ सग अरु पय समुहा आवि तब, कर अंजलि

प्रणमिय मठ सत्य ॥ सुख जाये ए कृण आज सार, तिय लोय
 पहु दीगो उदार ॥ ४ ॥ रे रे निसुणो सुरलोय देव, विषयानल
 तापित ननु सखेव ॥ तसु शांतिकरण जलधर समान, मिथ्या
 विष चूरण गरुमवान ॥ ५ ॥ ते देव जगत तारण समठ, प्रगट्यो
 तसु प्रणामी हुन सनत्य ॥ इम जंपी सकठव करेवि, तव देव
 देवी हरखे सुणेवि ॥ ६ ॥ गावे तव रंजा गीत गांन, सुरलोक हुन मंग
 लनिधान ॥ नरहेत्रे आरज वंस गंम, जिनराज वधे सुर हर्ष धाम ॥
 ॥ ७ ॥ पिता माता धरे उठव अलेख, जिनशासन मंगल अतिविशेष ॥
 सुरपति देवादिक हरष संग, संयम अरणी जनने उमंग ॥ ८ ॥
 शुन वेला लगने तीर्थनाथ, जनम्या इंझादिक हर्ष साथ ॥ सुख
 पांम्या त्रिभुवन सर्व जीव, वधाइइ अई अतीव ॥ ९ ॥ (एसा पढ
 चैत्यवंदन करणा पीठे हाथमें साधिया करणा पीठे कलस पंचामृत
 का लेकर खना रहे ॥) श्रीतीर्थपतिनो कलस मज्जन गाईये सुख
 कार, नरखिच मंमण डह विहंमण नविक मन आधार ॥ तिहां
 राव राणा हरख उठव अयो जग जयकार, दिसिकुमर अबधि वि
 शेष जांणी लह्यो हरख अपार ॥ १ ॥ निय अमर अमरी संग कु
 मारी गावती गुण ठंद, जिनजननी पासे आय पहुती गहकती आ
 णंद ॥ हे माय ते जिनराज जायो सचिव धायो रम्म, अम्ह जम्म
 निम्मल करण कारण करिस सूर्यकम्म ॥ २ ॥ तिहां नूमिसोधन
 दीप दर्पण वाय वींऊणधार, तिहां करिय कदली गेह जिनवर ज
 ननि मज्जणकार ॥ वर राखनी जिन पांण बांधी दिये इम आसी
 स, जुग कोमिकोमो चिरंजीवो धर्मदायक ईस ॥ ३ ॥ ढाल उला
 खानो ॥ जिन रयणीजी दस दिसि उज्जलता धरे, मुन लगनेजी
 ज्योतिलचक्र ते संधरे ॥ जिन जनम्यांजी तिण अवसर माताधरे,
 तिण अवसरजी इंझासण पिण अरहरे ॥ नूटक ॥ अरहरे आसन इंद्र

चिंतें कोन अवसर ए वन्यो, जिन जन्म नववकाल जांणी अतदि
 आणंद ऊपनो ॥ निज सिद्धि संपत हेतु जिनवर जांण जगते ऊ
 मह्यो, विकशंत वदन प्रमोद वधते, देवनायक गहगह्यो ॥ १ ॥
 ॥ ढाल ॥ तव सुरपतजी घंटानाद कराव ए, सुरलोकेजी घोषणा एह
 दिराव ए ॥ नरकेत्रेजी जिनवर जन्म हुज अणे, तसु जगतेजी सुरप
 ति मंदिरगिर गणे ॥ बूट० ॥ गणे मंदिर शिखर ऊपर जुवन जीवन
 जिनतणो, जिन जन्मनवव करण कारण आवज्यो सब सुरगणो ॥
 तुम शुद्ध समकित आस्ये निरमल देव देवी निहालतां, आपणा पां
 तिक सर्व जास्ये नाथ चरण पखावतां ॥ २ ॥ ढाल ॥ इम सांज
 लजी सुरवर कोमि वहु मिला, जिन वंदनजी मंदिर गिर सांझमी
 चली ॥ सोहमपतिजी जिनजननीघर आविया, जिनमाताजी वंदी
 स्वामि वधाविया ॥ बू० ॥ वधाविया जिनवर हर्ष बहुले धन्य हूं क
 तपुन्य ए, त्रैलोक्य नायक देव दीगो मुऊ समो कुण अन्य ए ॥ हे
 जगत जननी पूत्र तुमचो मेरु मज्जनवर करी, नवंग तुमचे वलिय
 आपिस आतमा पुन्ये जरी ॥ ३ ॥ ढाल ॥ सुरनायकजी जिन निज
 करकमले ठव्या, पांच रूपेजी अतिशय महिमायें स्तव्या ॥ नाटक
 विधिजी तव वत्तीस आगत्रि वहे, सुर कोमिजी जिन दरशणने ऊ
 भहे ॥ बूट० ॥ सुर कोमकोमी नाचती वलि नाथ सचि गुण गा
 दती, अठपरा कोमी हाथ जोमी हाव जाव दिखावती ॥ जय जयो
 २ तूं जिनराज जगगुरु एम थे आसीस ए, अम त्राण सरण आ
 धार जीवन एक तूं जगदीश ए ॥ ४ ॥ ढाल ॥ सुरगिरवरजी पां
 म्कवनमें चिहूँ दिसे, गिर शिल परजी सिंहासण सासय वसे ॥
 तिहां आणीजी शेके निज खोले ग्रह्या, चोसवेजी तिहां सुरपति
 आवी रह्या ॥ बूट० ॥ आविया सुरपति सर्व जगते कलश श्रेणि व
 षाव ए, सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औपय सर्व वस्तु अणाव ए ॥ अच्यु

यपति तिहां हुकम कीनो देव कोमाकोमने, जिन मज्जनारथ नीर
 व्यावो सबे सुर करजोमने ॥ ५ ॥ ढाल ॥ आत्म साधन रसी देव
 कोमी हसी, उल्लसीने धसी खीरसागर दिसी ॥ पञ्चमदह आदि
 दह गंग पमुहा नई, तीर्थजल अमल लेवाजणी ते गई ॥ १ ॥ जाति
 अम कलश कर सहस अघोत्तरा, उच्च चामर सिंहासण सुजतरा ॥
 उपगरण पुष्प चंगेरी पमुहा सवै, आगमे जासिया तेम आणी ठवे
 ॥ २ ॥ तीर्थजल जरिय करि कलश कर देवता, गावता जावता
 धर्म उन्नति रता ॥ तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता, धन्य अम
 सगति शुचि जगति इम जावता ॥ ३ ॥ समकित बीज निज आत्म
 आरोपता, कलश पाणी मिसे जक्तिजल सींचता ॥ मेरुसिहरोवरे
 सर्व आव्या वही, शक्र उल्लंग जिन देख मन गहगही ॥ ४ ॥ गाथा ॥
 दंडोदेवा अणाइकालो अदिठपूवो, तियलोयतारणो तियलोयबंधु ॥
 मिच्चत्तमोहविद्धंसणो आणाइतिन्नविणासणो, देवादिदेवोदिद्धो २ हि
 यकामेहिं ॥ १ ॥ ढाल ॥ एम पज्जणंति वण जवण जोईसरा, देव
 वेमाणिया जति धम्मायरा ॥ केविकप्पडिया केविमिच्चाणुगा, केवि
 वररमणे वयणेण अइज्जगा ॥ १ ॥ वस्त ॥ तत्थअच्चुय २ इइ आ
 देस, करजोमी सब देवगण लेइ कलस आदेस पामिय ॥ अदन्तुत
 रूप सरूप जुय कवण एह पुछंति सामिय, इइ कहे जगतारणो पा
 रग अम्ह परमेस ॥ नायक दायक धर्मनो करिये तसु अज्जिषेस ॥
 ॥ २ ॥ ढाल ॥ पूर्ण कलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अंगे
 न्हाभे ॥ आतम निरमल जाव करंता, वधते सुज परिणामे ॥ अ
 च्युत्तादिक सुरपति मज्जन, लोकपाल लोकांत ॥ सामानिक इंजाणी
 पमुहा, इम अज्जिषेक करंति ॥ १ ॥ पूर्णक० ॥ गाथा ॥ तबईसा
 णसुरिंदो, सकंपज्जणेशकरिसुपसान ॥ तुम्हअंकेमहतान, विणमि
 त्तअम्हअप्पेह ॥ १ ॥ तासकिंदोपज्जणइ, साहमीयवच्चलमिबहुला

देहा ॥ आणाएवंतेणं गिएहह दोउकयत्थाजो ॥ १ ॥ (कलस ढाले)
 सोहम सुरपति वृषज रूप करि, न्हवण करे प्रभु अंगे ॥ करिय बि
 लेपन पुष्पमाल ठवि, वर आजरण अजंग ॥ १ ॥ तव सुरवर बहु जय
 रव कर, नच्चे धरि आणंद ॥ मोक्षमार्ग सारथपति पांभ्यो, जांज
 सु द्विव जवफंद ॥ २ ॥ कोरु बत्तीस सोवन उवारी, वाजंते वर
 नाद, सुरपति संघ अमर श्रीप्रभुने, जननीने सुप्रसाद ॥ ३ ॥
 आणी थापे एम पयंपे, अह्म निसतरिया आज ॥ पुत्र तुह्यारो
 धणी अह्मारो, तारण तरण जिहाज ॥ ४ ॥ मात जतन कर राख
 ज्यो एहने, तुम सुत अह्म आधार ॥ सुरपति जगते सदित नंदीस
 र, करे जिन जक्ति उदार ॥ ५ ॥ नियश कप्प गया सब निर्जर,
 कहता प्रभु गुण सार ॥ दीक्षा केवलज्ञान कळयाणक, इच्छा चित्त
 मजार ॥ ६ ॥ खरतर गह्व जिनआणा रंगी, राजसार उवझाय ॥
 ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक, सुगुरुतणे सुपसाय ॥ ७ ॥ देवचंद
 जिन जगते गायो, जनम महोहव उंद ॥ बोधबीज अंकूरो उल
 स्यो, संघ सकल आणंद ॥ ८ ॥ ढाल ॥ इम पूजा जगते करो,
 आतम हित काज ॥ तजिय विजाव निज जावमा, रमता सिव
 राज ॥ ९० ॥ १ ॥ काल अनंते जे हूआ, होस्थे जेह जिणंद ॥
 संपइ सीमंधर प्रभु, केवलनाण दिणंद ॥ ९० ॥ २ ॥ जन्ममहोहव
 इण परे, आवक रुचिवंत ॥ विरचे जिनप्रतिमातणो ॥ अनुमोदन
 खंत ॥ ९० ॥ ३ ॥ देवचंद जिन पूजना, करतां जव पार ॥ जिन
 प्रतिमा जिनसारखी, कही सुत्र मजार ॥ ९० ॥ ४ ॥ इति स्नात्र पूजासं०
 ॥ अथ देवचंदजीकृत अष्टप्रकारी पूजा ॥

प्रथम जल पूजा ॥ विमल केवल ज्ञासन ज्ञास्करं, जगत जंतु महो
 दय कारणं ॥ जिनवरं बहुमान जलौघतः, शुचिमनाः स्तपयामि वि
 सुदये ॥ नै ह्रीं श्री परमात्मने, अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा

मृत्यु निवारणाय, श्रीमङ्गलैन्द्राय जलं यजामहे ॥ १ ॥ बीजी चं
 दन पूजा ॥ सकल मोहतमिश्र विनाशनं, परम शीतल ज्ञाव युक्तं
 जिनं ॥ विनय कुंकुम दर्शन चंदनै, सहज तत्त्व विकास कृतेर्चयेः ॥
 ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं केसरचंदनं यजामहे ॥ १ ॥ त्रीजी पुष्प पूजा ॥ विक
 च निर्मल शुद्ध मनोरमे, विशद चेतन ज्ञाव समुन्नयेः ॥ सुपरिणा
 म प्रसून घनैर्नवैः, परम तत्त्व मयं हियं जाम्यहं ॥ ॐ ह्रीं
 प० पुष्पं यजामहे ॥ ३ ॥ चौथी धूप पूजा ॥ सकल कर्म
 महोधन दाहनं, विमल संवर ज्ञावसु धूपनं ॥ अशुभ पु-
 ञ्जल संग विवर्जनं, जिनपते पुरतोस्तु सुहर्षतः ॥ ४ ॥
 ॐ ह्रीं प० धूपं यजामहे ॥ ४ ॥ पांचमी दीपक पूजा ॥ अविक नि
 र्मल बोध विकासकं, जिनगृहे शुभ दीपक दीपनं ॥ सुगुण राग वि
 शुद्ध समन्वितं, दधतु ज्ञाव विकास कृतेर्जनाः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं प०
 दीपं यजामहे ॥ ५ ॥ षष्ठी अकृत पूजा ॥ सकल मंगल केल नि
 केतनं, परम मंगल ज्ञाव मयं जिनं ॥ श्रयंति नव्यजना इति दर्श
 यन्, दधति नाथ पुरोक्त स्वस्तिकं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं प० ॥ अकृतं
 यजामहे ॥ सातमी नैवेद्य पूजा ॥ सकल पुञ्जल संग विवर्जनं, स
 हज चेतन ज्ञाव विलासकं ॥ सरस जोजन नव्य निवेदनात्, पर
 म निर्वृति ज्ञाव महं स्पृहे ॥ ॐ ह्रीं प० नैवेद्यं यजामहे ॥ ७ ॥ आठमी
 फल पूजा ॥ कटुक कर्म विपाक विनाशनं, सरस पक्वफलव्रज ढोकनं ॥
 विहत मोक्ष फलस्य प्रज्ञो पुरः, कुरुत सिद्धफलाय महाजना ॥ ८ ॥
 ॐ ह्रीं प० फलं यजामहे । (अर्थ) इति जिनवर वृंदं नमस्कृतः पूजयं
 ति, सकल गुणनिधानं देवचंद्रं स्तुवंति ॥ प्रतिदिवस मनंतं तत्त्व
 मुद्गावयंति, परम सहजरूपं मोक्षं सौख्यं श्रयंति ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं
 प० अर्थं यजामहे ॥ (वस्त्र) शक्रो यथा जिनपतेः सुर शैल चूला,
 सिंहासनो परिमित स्नपनावसाने ॥ दध्यह्नते कुसुम चंदन गंध

धूपैः, कृत्वा चर्चनं तु दद्याति सुवस्त्र पूजां ॥ १ ॥ नै ह्रीं श्रीं प० वस्त्रं
यंजामहे ॥ इति अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ सत्तरह भेदी पूजाकी विधी ॥

प्रथम स्नात्र करावै पीछै अष्ट प्रकारी पूजा करै फेर रक्तेवीमें कुंकुम तथा
केसरका साथिया करै पीछै शुद्ध जलका कलस केसरमिश्रित रुपया १ कलममें
ढालै मुखकोस बांय उत्तरासण कर तीन नवकार गुणै तीन बैर नमस्कार कर हाथ
के धूप देकर रक्तेवी हाथमें धरै मन सुद्धकर खडा रहे ॥

॥ अथ साधुकीरती सुनो कृत सत्तरह भेदी पुजा प्रारंभ ॥

॥ दूहा ॥ ज्ञाव ज्ञलै जगवंतनी, पूजा सत्तर प्रकार ॥ पर
सिद्ध कीधी डोपदी, अंग ठवै अधिकार ॥ १ ॥ राग सरपदो ॥ ज्योति
सकल जग जागती, हारै अइयो जा० सरसति समरि सुजिंद ॥ सत्तर
सुविध पूजातणी, पञ्चणिसु परमानंद ॥ १ ॥ गाहा ॥ न्हवण १ विलेवण
२ वत्थयुगं ३, गंधारुहणं च ४ पुष्परोहणं ५ ॥ मालारोहण ६ व
न्नयं ७ चुन्न ८, पन्नागय ९ आन्नरणे १० ॥ २ ॥ मालकलासुय
वंसुधरं ११, पुष्पं पगरं च १२ अठमंगलयं १३ ॥ धूव नखेवो १४
गीयं १५, नटं १६ वज्रं १७ तहा जणियं ॥ ३ ॥ सत्तर सुविध
पूजा पवरं, ज्ञाताअंग मज्जार ॥ डुपदसुता डोपदि परै, करियै विधि
विस्तार ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा ॥ राग देसाख ॥

पूर्वमुख सावनं, करि दसन पावनं, अहत धोती धरी नचि
त-मानी रे, अइयोउ० ॥ विहत मुखकोसके क्षीर गंधोदकै, सुनृत
मणिकलस कर विविध बांनो ॥ अ० ॥ १ ॥ नमवि जिन पुंगव,
लोम हस्तेनवं, मार्जनं करिअवा बारियारि ॥ अ० ॥ जणिय कुस
मांजली, कलस विधि मन रली, नवति जिन ईइ जिम तिम अ
गारी ॥ अ० ॥ २ ॥ डूहा ॥ परमानंद पीयूष रस, न्हवण मुगति
सोपान ॥ धर्मरूप तरु सींचवा, जलधर धार समान ॥ १ ॥ पद

क्षी पूजा साचवै, श्रावक शुभ परिणाम ॥ शुचि पखाल जिनतनु
 राणे, करइ सुकृत हितकाम ॥ १ ॥ राग सारंग ॥ पूजा सतर प्र
 कारी, सुण जैनकी पू० ॥ परमानन्द तिण उढ्योरी सुधारस, तप-
 त बुजिय मेरे तनकी ॥ पू० ॥ १ ॥ प्रज्जुकुं विलोक नमि जतन
 प्रभारजित, करत पखाल सुचि धारविनकी ॥ पू० ॥ न्हवण प्रथ-
 म निज वृंजन पुलावत, पंककुवरप जिम धनकी ॥ पू० ॥ २ ॥ तरुणि
 तरणि नवसिंधु तरणकी, मंजरी संपद फल वर धनकी ॥ पू० ॥
 शिवपुर पंथ दिखावन दीपी, धूमरि आपदवेल मरदनकी ॥ पू० ॥
 ॥ ३ ॥ सकल कुशलरंग मिढ्योरी सुमति संग, जागी सुदिसा शुभ
 मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ कहे साधुकीरति सारंगजरकरतां, आस फलो
 मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ ४ ॥ इति प्रथम न्हवण पूजा ॥ १ ॥

एसा पढ पंचामृतसुं न्हवण कीज । डोवे पांवके अंगुठै जलधार दीजै ॥

॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा ॥

(सुंदर अंगलूहणसें अंग जिनविंका प्रमार्जकरकेसर सुगंधद्रव्यमिश्रित लेके खडा रहै)

रामगिरीमें राग ॥ गात्र लूहै जिन मनरंगसुं रे देवा, सखर
 सु धूपित वाससुं ॥ वाससुं हारे देवा वा०, गंध कसायसुं मेलियै
 ॥ गा० ॥ १ ॥ नंदन चंदन चंद मेलिये, हारे देवा नं० ॥ मांहे मृग-
 मद कुंकुम जेलियै, कर लीयै हारे दे० क०, रयण पिंगणि कचो-
 लियै ॥ गा० ॥ २ ॥ पग जानु कर खंवै सिरै रे देवा, जाल कंठ उर
 छंदरंत रै ॥ डुख हरै हारे देवा सुख करै, तिलक नवे अंग कीजोयै ॥
 गा० ॥ ३ ॥ दूजी पूजा अनुसरै, श्रावक दूजी पू० ॥ हरि विरचै जिम
 सुरगिरै, तिम करै हारे देवा ति० जिण पर जनमन रंजियै ॥
 ॥ गा० ॥ ४ ॥ राग ललितमें ॥ दूहा ॥ करहु विलेपन सुखतदन,
 श्रीजिनचंद शरीर ॥ तिलक नवे अंग पूजतां, लहे नवोदधि तीर
 ॥ १ ॥ भिटे ताप तसु देहको, परम शशिरता संग ॥ चित्त खेद सम
 जपसमें, सुखमें समरसीरंग ॥ २ ॥ राग वेलाउत्र ॥ विलेपन कीजै

जिनवर अंगै, जिनवर अंग सुगंधै ॥ वि० ॥ कुंकुम चंदन मृगमद
 यक्ष कर्दम, अगर मिश्रित मनरंगै ॥ वि० ॥ १ ॥ क्रम जानु कर
 खंधै सिर जाल कंठ, उर उदरन्तर संगै ॥ विलुपति अघ मेरो कर
 त विलेपन, तपति बुजित जिम अंगै ॥ वि० ॥ २ ॥ नव अंग नव
 ३ तिलक करतही, मिलत नवे निध चंगे ॥ कहै साधु तन शुचि
 करो सुललित पूजा, जैसै गंग तरंगै ॥ वि० ॥ ३ ॥ इति द्वितीय
 विलेपन पूजा ॥ १ ॥ ऐसा कह विलेपन कीजे, नव अंग पूजिये ॥

॥ अथ तृतीय वस्त्रयुगल पूजा ॥

॥ अत्यंत नरम वस्त्र केसरका साथिया कर प्रभू आगे ले खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ वसन युगल उज्ज्वल विमल, आरोपे जिन अंग ॥
 लाज ज्ञान दर्शन लहे, पूजा तृतीय प्रसंग ॥ १ ॥ राग गोमती ॥
 कमल कोमल घन चंदन चरचित, सुगंध गंधै अधिवासिया ए, हारे
 अइयो ॥ कनक मंमि हय लाल पल्लव शुचि, वसन युग कंति
 अधिवासिया ए ॥ हारे अ० ॥ १ ॥ जिनप उत्तम अंगै सुविधि शक्रो
 यथा, करिय पहरावणी ढोइयै ए ॥ हां० ॥ पापलूहण अंगलूहणो दे-
 वनें, वस्त्रयुग पूज मल धोइयै ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग वैरागी ॥
 देवदुष्ययुग पूजा वन्यो हे जगतगुरु, देवदुष्य हर अब इतनो मांगुं ॥
 तूंही हे सबहि हितु तूंही है सुगति दाता, तिया नमि प्रभुजी के
 चरणे लागूं ॥ दे० ॥ १ ॥ कहै साधू तीजी पूजा केवल दंसण नाण,
 देवदुष्य मिस देहु उत्तम वागूं ॥ श्रवण अंजलि पुट सुगुण अमृत
 पीतां, सब रारु दुख संसय धुरम जांगूं ॥ दे० ॥ २ ॥ इति तृति-
 य वस्त्रयुगल पूजा ॥ (ऐसा कह प्रभुजाकूं वस्त्र चढावे ॥)

॥ अथ चतुर्थी सुगंधचूर्णवासनेपूजा ॥

॥ गोमती रागमें दूहा ॥ पूज चतुर्थी इण परै, सुमति वधारण
 वास ॥ कुमति कुगति दूरै हरै, दहै मोहदल पास ॥ १ ॥ राग
 सारंग ॥ हां हो रे देवा वायनचंदन घस कुमकुमा, चुरण विधि विरचै

वासु ए ॥ हा हो रे देवा कुसुम चूरण चंदन मृगमदा, कंकोलतणो
 अधिवासू ए ॥ हा० ॥ १ ॥ वास दसोदिसि वासतें, पूजै जिन अंग
 नवंगू ए ॥ हा० लाडि जवन अधिवासिया, अनुगामिक सरम अर्ज
 गू ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग पूर्वीगौरी ॥ भेरै प्रभुजीको पूजा-आ-
 नंदमेलै, पू० ॥ वासजवन मोह्यो सबको ए, संपदा जेवै ॥ पू० ॥
 ॥ १ ॥ सत्तर प्रकारी पूजा, विजय देवा तत्ताथेइ ॥ अप्रमित्तगुण
 तोरां, चरण सेवैकि ॥ पू० ॥ २ ॥ कुंकुम चंदन वासै, पूजियै जिन
 राजं तत्ताथेइ, चतुर गति डुक्क गोरी, चतुर्थी धनकि ॥ ३ ॥ पू० ॥
 इति चतुर्थी वासहेप पूजा ॥ (एसा कह चूर्णवास चढावे)

॥ अथ पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ पंचरंगै पुष्प उत्तम ले के खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ मन विकसै तिम विकसता, पुहप अनेक प्रकार ॥
 प्रभु पूजा ए पंचमी, पंचमि गति दातार ॥ १ ॥ राग कामोद ॥
 चंपक केतकी मालती ए, अ० ॥ कुंद किरण मचकुंद ॥ सोवन जाई
 जूहिका, वज्रसिरी अरविंद ॥ १ ॥ जिनवर चरण नवरि धरै ए,
 अ० ॥ मुकुलित कुशम अनेक ॥ सिवरमणीसैं वर वरे, विधि जिन
 पूज विवेक ॥ २ ॥ वि० ॥ इति ॥ राग कानमो ॥ सोहे री माई व
 रणें, मन मोहे री माई वरणें ॥ अहो वरणें, विविध कुसुम जिनच
 रणें ॥ सो० ॥ विकसी हसीय जंपै साहिबकुं, राख प्रभु हम सरं
 णै ॥ सो० ॥ १ ॥ पांचमी पूजा कुशम मुकुलितकी, कु० ॥ पंच
 विपै हां० पं० दुःख हरणै ॥ सो० ॥ कहे साधुकीरति जगति जग
 वंतकी, जविक नरां हारै जण सुख करणें ॥ सो० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ छठी पुष्पमालारोहण पूजा ॥

॥ दूहा ॥ ठठो पूजाए ठती, महा सुरजि पुष्पमाल ॥ गुण
 गूंथी आपे गलै, जेम टलै दुख जाल ॥ १ ॥ राग रामगिरी गुज
 री ॥ नाग पुन्नाग मंदार नवमालिका, मालिकासोम पारिध कली

ए ॥ जला पा० ॥ मरुक दमणक वकुल तिलक वासंतिका, लाल
 गुलाल पामल जिली ए ॥ जलां पा० ॥ १ ॥ जासु मणि मो-
 गरा वेजला मालती, पंचवरणै गुंथी मालती ए ॥ जलां गुं० ॥ हे
 माल जिनकंठ पीठै ठवी लहलहै, जाणि संताप सब पालती ए ॥
 जलां स० ॥ २ ॥ इति ॥ राग आसानरी ॥ देखी दामा कंठ जिन अधिक
 एधतिनंदै, चकोरकूं देखि देखि जिम चंदै ॥ दे० ॥ १ ॥ पंच विधि
 वरण रची कुसमांकी, जैसी रयणा हे जै० बलि सुहमंदै ॥ दे० ॥
 ॥ २ ॥ ठढी रे तोरुपूजा सब मार धूजै ॥ सब अरिषण हारे स०
 होइ तिम ठंदै ॥ दे० ॥ ३ ॥ कहे साधूकीरत सकल आस्था सुख,
 जविक जगत हारे ज० जे जिन वंदै ॥ दे० ॥ ४ ॥ इति ठढी
 तोरु पूजा ॥ ६ ॥ (एसा कह फूलमाला प्रभुंकूं पहिरावे ॥)

॥ अथ सातमी अंगीरचन पूजा ॥ पांच रंगै फूल केसरसैं अंगी रचै ॥

॥ दूहा ॥ केतकी चंपक केवला, सोनै तेम सुगात ॥ चाढो
 जिम चढतां हुवै, सातमीयै सुख सात ॥ १ ॥ राग केदारो गौरी ॥
 कुंकुम चरचित विविध पंच वरणक कुसमसुं ए, हारे अ० ॥ कुंद
 गुलावसुं चंपको दमणको जाससुं ए ॥ १ ॥ सातमी पूजामें अंगी
 अलंकरीयै, अंग अलंक मिस माननी सुगति आलिंगियै ए ॥ २ ॥
 ॥ इति ॥ राग जैरवी ॥ पंचवरणी अंगी रची कुशम जाती, पं० ॥
 कुंद मचकुंद गुलाव सिरोमणि, कर करणी सोवन जाती ॥ पं० ॥
 ॥ १ ॥ दमणक मरुक पामल अरविंदो, अंस जुई वेजलवाती ॥
 पारधि चरण कलार मंदारो, विण पटकूल वनी जान्ती ॥ पं० ॥
 ॥ २ ॥ सुरनर किन्नर रमण गाती, जैरवी कुगति व्रत तिदाती ॥
 पं० ॥ ३ ॥ इति सातमी अंगीरचन पूजा ॥

॥ अथ आठमी गंधवटी पूजा ॥ अगरवत्ती अथवा धूप लेकर खड़ा रहै ॥

॥ दूहा ॥ अगर सेवहारस सार, सुमती पूजा आवमी ॥

गंधवटी घनसार, लावे जिन तनु ज्ञावसें ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥
 कुंद किरण शशि ऊजलो जी देवा, पावन घस घनसारो जी ॥
 सुरजि सिखर मृग नाजिनो जी देवा, चुन्नरोहण अधिकारो जी ॥
 ॥ १ ॥ वस्तु सुगंध जव मोरीयो जी देवा, अशुभ करम चूरीजै जी ॥
 अंगण सुरतरु मोरीयो जी देवा, तव कुमतीजन खीजै जी ॥ तव
 सुमतीजन रीजै जी ॥ २ ॥ राग सामेरी ॥ पूजो री
 माई जिनवर अंग सुगंधै, जि० पू० ॥ गंधवटी घनसार ऊदारै, गोत्र
 तीर्थकर वांधइ ॥ जलाए गो० पू० ॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर से-
 ष्हारस, लावै जिन तनु रागै ॥ धार कपूर ज्ञाव घन वरषत, सामेरी
 मति जागै ॥ जलां सा० पू० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ नवमी ध्वज पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोहन ध्वज धर मस्तकै, सूहव गीत समूल ॥ दीजै
 तीन प्रदक्षिणा, परसिद्ध नवमी पूज ॥ १ ॥ राग मेघगौरी ॥ वस्तु ॥
 सहसजोयणए, हेममय दंरु ॥ युतपताक पंचे वरण, घुमघुमत
 घुघरीय बाजै ॥ मृड समीर लहकै गयण, ल० ॥ जाण कुमतिद
 ल सयल ज्ञाजै ॥ सुरपति जिम विरचै धजा ए, हां ए वि० ॥ न
 वमी पूज सुरंग ॥ न० ॥ तिण पर श्रावक धज वहन, ति० ॥
 आपै दांन अजंग ॥ आ० ॥ १ ॥ राग नटनारायण ॥ जिनराज
 को ध्वज मोहन, ध्वज मोहना रे ध्वज मोहना ॥ जि० ॥ मोहन
 सुगुरु अधिवासीयो, कर पंच सबद त्रि प्रदक्षिणा, क० ॥ सधवधू
 सिर सोहना ॥ २ ॥ जि० ॥ ज्ञांति वसन पंचवरण बन्यो री,
 विधि कर ध्वजको रोहणा ॥ साधू ज्ञात नवमी पूजा नव, पाप
 नियाणा खोहणा ॥ जि० ॥ २ ॥ इति नवमी पूजा ॥

(॥ ए कही ध्वजा चढाईजै ॥ पहली बाजित्र बाजतां सधवस्त्री चांदीके थालमें
 धरकर गीत ग्यान संयुक्त तीन प्रदक्षिणा देकर प्रभु सन्मुख गुंहली कर धजा पर गुरु
 पास वासक्षेप करा के प्रभु सन्मुख धजा विस्तारै ॥)

॥ अथ दसमी आभरण पूजा ॥

(एक रुपया अथवा मुगटादिक आभरण ले के खड़ा रहे ॥)

॥ दूहा राग केदारमे ॥ दसमी पूजा आभरण, रचना यथा अनेक ॥ सुरपति जिम अंगे रचे, तिम श्रावक सुविवेक ॥ १ ॥ सिर सोहे जिनवरतणै, रयण मुगट ऊलकंत ॥ तिलक जाल अंगद जुजा, श्रवण कुंमल अति जंति ॥ २ ॥ राग अधजास गुंमलहार ॥ आसावरी ॥ पाच पीरोजा नीलू लसणिया, मोती माणिक लाल रसणिया, हीरा सोहे रे ॥ धूनी चनी मुल कर केतना, जातिरूप सुजग अंक अंजना, मनमोहे रे ॥ ३ ॥ मौलि मुगट रयणै जड्यो, कानि कुंमल हारे अति जुगतै जुड्यो नर हारू रे, मन वारू रे ॥ जाल तिलक वाहे अंगदा, आभरण दशमी पूजा मुदा सुखकारू रे, दुखहारू रे ॥ ४ ॥ राग केदारो ॥ प्रभु सिर सोहै मुगट मणि रयण जड्यो, रय० ॥ अंगद बाहु तिलक जालस्थल, यहुनीको कवण घड्यो ॥ ५ ॥ प्र० ॥ १ ॥ श्रवण कुंमल शशि तरुण मंमल जीपे, सुरतरुसै अलंकरयो ॥ दुखकेदार चमर सिंहासन, ठत्र सिर नवरि धरयो, अलंकृत उचित वरयो ॥ प्र० ॥ २ ॥ इति ॥ रोक इत्याभरणादि चढावे ॥

॥ अथ इग्यारमी फूलघर पूजा ॥

॥ दूहा ॥ फूलघरो अति सौजन्यो, फूंदै लहकै फूल ॥ महके परिमल फल महा, इग्यारमी पूज अमूल ॥ १ ॥ राग रामगिरी ॥ कोज अंकोल राय वेलि नवमालिका, कुंद मचकुंद वर विच कलू ए ॥ अईयो ० तिलक दमलाकदलं मोगरा परिमलं, कोमला पारिध पारुलू ए ॥ हां० अ० ॥ प्रमुख कुसमै रचै त्रिजुवनकूं रुचै, कुश मगेहे विच तोरणूं ए ॥ हारे अ० ॥ गुच्छ चंडोदयं जूवकान्नयं, जालिका गोख चित्तचोरणूं ए ॥ अ० ॥ २ ॥ राग रामगिरी ॥ मेरो मन मोह्यो माईरी फूलघर आणंद जिलै, फू० ॥ असत नसत दांम वधरी मनोहर, देखत तवही सब डरित खिलै ॥ फू० ॥ १ ॥

कुसुम मंरुप श्रेष्ठ गुह्य चंडोदय, कोरणी चारु विनाश सजै ॥ इग्या
रमी पूजा वणी हे रामगिरी, विबुध विमान जैसे, तिपुरि जजै ॥
॥ १॥ फूलमे० ॥ इति इग्यारमी फूलघर पूजा ॥ (फूलघर चढाईजै ॥)

॥ अथ बारमी पुष्पवर्षा पूजा ॥ पंचरंगे फूल अथवा गुलाबजल लेके खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ वरपै बारमी पूजमैं, कुसुम वादलिया फूल ॥ हर
ण ताप डख लोकको, जानु समा बहुमूल ॥ १ ॥ राग ज़ीम
मढहार करखेकी जाति ॥ मेघ वरसै ज़री पुष्प वादल करी, जानु
परिमाण कर कुसुम पगरं ॥ पंचवरणें वणयो विकच अनुक्रम चिणयो,
अधोवृंत नही पीर पसरें ॥ मे० ॥ १ ॥ वास मढके मिलै ज़मर
ज़मरी ज़िलै, सरस रसरंग तिण डख निवारी ॥ ज़िणप आगै करै
सुरप ज़िम सुख वरै, बारमी पूज तिण पर अगारी ॥ मे० ॥ २ ॥
राग ज़ीममढहार ॥ पुष्प वादलीया वरसै सुसमां, अहो० ॥ यो-
जन अशुचि हर वरस गंधोदक, मनुहर जान समां ॥ पु० ॥ १ ॥
गमन आगमनकी पीर नही तसु, इह जिनको अतिसय सुगुणें ॥
शुंजतर मधुकर इम पज़णै, गुं० ॥ मधुर वचन जिनगुण गुणइ ॥ पु०
॥ २ ॥ कुसुमसुपरि सेवा जो करइ, तसु पीर नही सुमणें, पु० ॥
समवसरण पंच वरण अधोवृंत, विबुध रचै सुमना सुसमा ॥ पु० ॥
॥ ३ ॥ बारमी पूज ज़विक तिम करै, कुसुम विकस हस उचरै ॥
तसु ज़ीमबंधन अधरा हुवै, जे करहिजे जिन नमैं ॥ पु० ॥ ४ ॥
इति बारमी पुष्पवृष्टि पूजा ॥

॥ अथ तेरमी अष्टमंगलीक पूजा ॥ रुपया चावल लेके खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ तेरमी पूजा अवसरै, मंगल अष्ट विधान ॥ युवति रचै
सुमनै सही, परमानंद निधान ॥ १ ॥ राग वसंत ॥ अतुल विमल
मिह्या, अखरु गुणै ज़िह्या, साल रजततणा तंडुला ए ॥ श्लेषण
समाजक विध पंच वरणक, चंद्रकिरण जैसा ऊजला ए ॥ १ ॥
अ० ॥ मेल मंगल लिखै सयल मंगल अखै, जिनप आगै सुधानक

धैर ए ॥ तेरमी पूजा विधि तेरमी मन मेरे, अष्टमंगल अष्टसिद्ध
करे ए ॥ अ० ॥ १ ॥ राग कल्याण ॥ हां हो पूजा वणी ते रसमें,
रसमें ३ हा हो ते० ॥ दर्पण जडासन नंदावर्त पुर्णकुंज, मन्त्रयुग
श्रीवह्न तसुमें ॥ वर्द्धमान स्वस्तिक पूज मंगलकी, आनंद कल्याण
सुखरसमें ॥ १ ॥ पू० ॥ इति तेरमी पूजा ॥

॥ अथ चवदमी धूप पूजा धूप लेके खड़ा रहे ॥

॥ दूहा ॥ गंधवटी मृगमद अगर, सेढहारस धनसार ॥ कर
प्रजु आगल धूपणा, चवदमी अरचा चार ॥ १ ॥ राग वैलानल ॥
कृष्णागर कपूर चूर, सोगंध पंचेपूर ॥ कुदरुक्क सेढहारस सार, गंध
चटी धनसार ॥ १ ॥ गंधवटी धनसार चंदन, मृगमदारस जेलियै,
श्रीवास धूप दसांग अंबर, सुरजि बहु द्रव्य मेलियै ॥ वेरलिय दंरु
कनक मंस्ति धूपधाणो कर धरै, जववृत्ति धूप करंति जोगं रोग
साग अशुज हारै ॥ १ ॥ राग मालवी गोमो ॥ सब अरति मथन
मुदार धूपं, करति गंध रसाल रे, देवाक० ॥ धामधूमावलिय धूसर,
कलुष पातक गाल रे, देवा क० ॥ १ ॥ उर्ध्वगत सूचंत जविकुं, म
धिमधे करनाल रे ॥ चवदमी वामांग पूजा, दीयै रयण विसाल रे ॥
आरती मंगल माल रे, मालवीगोमो ताल रे ॥ स० ॥ २ ॥ इति
चवदमी धूप पूजा ॥ (एसा पढके धूप खेवे ॥

॥ अथ पनरमी गीतज्ञान पूजा ॥

॥ दूहा ॥ कंठ जलै आलापकर, गावो जिनगुन गीत ॥
जावो अथकी जावना, पनरमी पूजा प्रीत ॥ १ ॥ श्रीरागमें
आर्या ॥ यद्वनंत केवलमनंत, फलमस्ति जैनगुण गानं ॥ गुण
वर्ण तान वाद्यै, मात्रा जाषालैर्युक्तं ॥ १ ॥ सप्त स्वर संगीतैः,
स्थानैर्जयतादि ताल करणैश्च, चंचुर चारोचारी गीतं गानं सुनीयुषं
॥ १ ॥ राग श्रीराग ॥ जिनगुण गान श्रुत अमृतं, तार मंझादि अ
नाहत तानं, केवल जिप तिप्प फल अमृतं ॥ जि० ॥ १ ॥ विबुध

कुमार कुमरी आलापै, मुरज नृपंग नाद जनितं ॥ जि० ॥ पाठ प्र-
 बंध धूयो प्रतिमानं, आयति नंद सुरति सुमतं ॥ जि० ॥ १ ॥ सबद-
 समान रुख्यो त्रिभुवनकुं. सुरनर गावे जिन चरितं ॥ सप्त स्वर-
 मोन शिव श्रीगीतं, पनरमो पूज हरै डुरितं रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पू ॥

॥ अथ सोलमी नाटिक पूजा ॥ (कुमार कुमरी नाटिक करै ॥)

॥ दूहा ॥ करजोमी नाटिक करै, सऊ सुंदर सिणगार ॥
 जवनाटिक ते नहि जमै, सोलमी पूजा सार ॥ १ ॥ राग शुद्धनट्ट
 काव्यं ॥ जावादिप्पवणा सुचारु चरणा संपुन्न चंदानना, सपिम्मा
 सम रूव वेस वयसो मत्तेज कुंजत्थणा ॥ लावणा सगुणा पिकस्स
 रवई रागाईआ लावणा, कुमारी कुमरावी जैन पुरज नच्चंति सिं
 गारणा ॥ १ ॥ गद्यं ॥ तएणंते अहस्सयं कुमारिकुमरीन सूरियाजे
 एणंदेवेणं संदिठा रंगमन्वेपविठा जिणानमंता गायंता वायंता नच्चंतित्ति
 ॥ १ ॥ राग नट्ट त्रिगुण ॥ नाचंती कुमार कुमरी, डागरुदि तत्ताथेई
 ॥ अ० ॥ डागरुदि २क थौंगिशन, मुखेतत्ताथेईय ॥ अ० ॥ ना० ॥ वे
 णु वीणा मुरज बाजै, सोलही सिणगार साजै ॥ तनन्नन्ननेईय ॥
 अईयो० ॥ घणण घणण घणणण धुग्घरु घमके, रणसससससेईय ॥
 ॥ अईयो० ॥ १ ॥ ना० ॥ कसंती कंचुकि तरुणी, मंजरी जेकार क
 रणी ॥ सोज्जंती कुमरीय ॥ अईयो० हस्तकं हावादिजावै, ददन्ती
 जमरीय ॥ अ० ॥ ना० ॥ ३ ॥ सोलमी नाटिकतणी, सूरियाजे
 रावन्न कीनी ॥ सुग्गंथ तत्तेईय ॥ अ० ॥ जिनप जगत्ते जविक
 खोणा, आणंद तत्तेईय ॥ अ० ॥ ना० ॥ ४ ॥ इति सोलमी पूजा ॥

॥ अथ सतरमी वाजित्र पूजा ॥

॥ दूहा ॥ ततधन सुखिरै आनधै, वाजित्र चौविध वाय ॥
 जगत जली जगवंतनी, सतरमियै सुखदाय ॥ १ ॥ गाहा ॥ सुर
 मद्दल कंसालो, महुयर मद्दल सुवज्जाए पणवो ॥ सुरनारि नंद तूरो,
 पक्खणइ तूं नंद जिणनाइ ॥ १ ॥ राग मधुमाधवी ॥ तूं नन्दिआ

नन्द बोखत नंदी, चरणकमल जसु जगत्रय वंदी ॥ तूं० ॥ ज्ञान निर्मल
 ल वावन सुरा, तिबल बोखै रंग अतहि आन्दी ॥ तूं० ॥ १ ॥
 जेरी गयण वाजंती कुमति ताजंती, सेवै जैन जैणावंती ॥ जैन
 शासन जयवंत नंदंती, उदयसिंध परपरिय वदंती ॥ तूं० ॥ २ ॥
 सेव जविक मधुमाधव फेरी, जवनी फेरी नप्पजलंती ॥ कहै
 साधु सतरमी पूज वाजित्र सब, मंगल मधुर धुनि कर कहंती ॥
 तूं० ॥ ३ ॥ इति सतरमी पूजा ॥

॥ अथ कलश पूजा ॥ राग धन्यासिरी ॥

॥ जवि तूं जण गुण जिनके सब दिन, तेज तरण मुखराजै
 ॥ ते० ॥ कवित शतक आठ थुणत शक्रस्तव, शुय रंगे हम ठाजै
 ॥ जवि० ॥ १ ॥ अणदलपुर शांति शिवसुख दाइ, नवनिधि सि
 द्ध आबाजै ॥ सतर सुपूज सुविध श्रावककी, जणी में जगति हि
 त काजै ॥ जवि० ॥ २ ॥ श्रीजिनचंड सूरि खरतर पति, धरम
 वचन तसु राजै ॥ संवत सोल अठार श्रावण धुर, पंचमि दिवस
 समाजै ॥ ज० ॥ ३ ॥ दयाकलश गुरु अमर माणिक्यवर, तासु
 पसारै सुविध हुय गाजै, कहै साधुकीरत करत जिन संस्तव, सब
 लीला सुख साजै ॥ ज० ॥ ४ ॥ इति सतर जेदी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ आरती करण विधि तथा आरती ॥

॥ पूजा भये पीछे वस्त्र पहरकर उत्तरासण करकै तिलक करके रंकेवीमें
 स्वस्तिक चावल सुपारी धरकर दक्षिणावर्त्तसें आरती करै ॥

॥ अथ आरती लि० ॥ जै जै आरति शांति तुमारी, तोरा
 चरणकमलकी में जाइ बलिहारी ॥ जै जै० ॥ १ ॥ विश्वसेन अचिराजी
 कैनंदा, शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥ जै० ॥ २ ॥ चालीस धनुष
 सोवनमें काया, मृग लंठन प्रभु चरण सुहाया ॥ जै० ॥ ३ ॥ च
 क्रवर्त्ति प्रभु पंचम सोहे, सोलम जिनवर जग सहु मोहे ॥ जै०
 ॥ ४ ॥ मंगल आरती जोरहिं कीजै, जन्म को लाहो लीजै ॥

जै० ॥ ५ ॥ करजोमी सेवक गुण गावै, सो नर नारी अमरपद
पावै ॥ जै० ॥ ६ ॥ इति श्रीआरती संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपदको पूजामें जो अवस्य चीज चाहिये उसकी याददास्ती ॥

॥ पंचामृत दूध दही घृत मिश्री जल केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकुं मोली
छूटेफूल फूलोकीमाला फूलोकाचंद्रवा धूप चावल गहूं चणोकीदाल मूंग उडद
नव प्रकारका नैवेद्य नवतरेका फल नव प्रकारकी पक्कान खजली मिश्री पतासा
ओला वगैरे अंगलूहणो के वास्ते स्वेतवस्त्र वासक्षेप गुलाबजल अत्तर नारेल इग्यारे
नवनालीकेकलस ॥ ९ रकेवी तसला आरसी मंगलदीपक धी अंगीसमोसरण थाप
नामें रोकनाणा रु?) हानपूजा नारेल समेत ॥ विशेष विधि गुरुमुखसें जाणनी ॥

॥ अथ सिद्धचक्रजीकी बड़ी पूजा लिख्यते ॥

॥ अथ प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ परम मंत्र प्रणामी करो, तास धरी नर ध्यान ॥

अरिहंतपद पूजा करो, निज शक्ति प्रमाण ॥ १ ॥ काव्य ॥ ७ प्यन्न

सन्नाण महोमयाणं, सप्पाणि हेरा सणसंठियाणं ॥ सद्देसणाणं

दिय सज्जणाणं, नमो१ होव सयाजिणाणं ॥ १ ॥ नमोअंत संत

प्रमोद प्रदानं, प्रधानाय ज्ञव्यात्मने ज्ञास्वताय ॥ यथा जेहना

ध्यानयो सौख्यज्ञाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपालराजा ॥ २ ॥ क

र्या कर्म दुष्ममर्म चक्रचूर जेणें, जला ज्ञव्य नवणद ध्यानेन तेणें

॥ करी पूजना ज्ञव्य ज्ञावे त्रिकाले, सदा वासियो आत्मता तेण

कालें ॥ ३ ॥ जिके तीर्थकर कर्म नदये करीनै, दिये देसना ज्ञव्य

ने हित धरीनै ॥ सदा आठ महापाणिहारे समेता, सुरेसै नरेसै स्त

व्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ कस्या घातिया कर्म व्हारे अलग्गा, ज्ञवोप

अही व्हार ठे जे विलग्गा ॥ जगत्यंचकळ्याणके सुख पांमै, नमो

तेह तीर्थकरा मोक्षकामै ॥ ५ ॥ ढाल ॥ तीरथपति अरिहा नमुं,

धरम धुरधर धीरो जी ॥ देसना अमृत वरसता, निज वीरज वरुं

वीरो जी ॥ तो० ॥ नल्लालो ॥ वर अखय निर्मल ज्ञान ज्ञासन सर्व

ज्ञाव प्रकासता, निज शुद्ध श्रद्धा आत्म ज्ञावे चरण धिरता वास

ता ॥ जिन नांमकर्म प्रज्ञाव अतिसय प्रातिहारज सोजता, जगजंतुं
 करुणावंत जगवंत जविकजनने शोजता ॥ ६ ॥ ढाल ॥ श्री सी
 मंधर साद्वि अगे ॥ ए देसी ॥ तीजे जव वर आनक तप कर, जि
 न बांध्युं जिननाम ॥ चउसठ इंडै पूजित जे जिन, कीजे तास प्र
 णाम रे जविका सिद्धचक्र पद वंदो रे ॥ ज० ॥ जिम चिरकालै नं
 दो रे ॥ ज० ॥ उपशमरसनो कंदो रे ॥ ज० ॥ रत्नत्रयीनो वंदो रे
 ॥ ज० ॥ सेवै सुरनर इंदो रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ७ ॥ ए आंकणी ॥ जे
 हने होय कळ्याणक दिवसे, नरके पिण उजवाळूं ॥ सकल अधि
 क गुण अतिशयधारी, ते जिन नमि अघ टाळूं रे ॥ ज० ॥ सि० ॥
 ८ ॥ जे तिहुं नाण सम्मग्न उपज्ञा, जोग करम खिण जांणी ॥ जेइ
 दीक्षा सिद्धा दिये जगने, ते नमिये जिन नाणी रे ॥ ज० ॥ सि० ॥
 ९ ॥ महागोप महामादण कहिये, निर्यामिक सत्थवाह ॥ उप
 मा एहवी जेहने गजै, ते जिन नमिये उछाह रे ॥ ज० ॥ सि० ॥
 १० ॥ आठ प्रातीहारज जसु गजै, पैत्रीस गुणयुत वाणी ॥ जे प्रतिबो
 धै करे जगजनने, ते जिन नमिये उछाह रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ११ ॥
 ॥ ढाल ॥ अरिहंतपद ध्यातो अको, दबह गुण पर्यायै रे ॥ जेद छेद
 करी आतमा, अरिहंतरूपी आयै रे ॥ १२ ॥ वीर जिणेसर उपदिसै, सां
 जलज्यो चित लाई रे ॥ आतम ध्यानि आतमा, रुद्धि मिले सब
 आई रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ उँ ह्रीं श्री परमात्मने, अनंतानंत ज्ञान
 शक्तये ॥ जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमत्सिद्धचक्राय अष्टाङ्ग्यं
 यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी, कीजे दिल खुसियाल ॥ अ
 शुभ करम दूरै टले, फलै मनोरथ माल ॥ १ ॥ काव्य ॥ सिद्धाण
 माणंद रमालयाणं, नमोऽर्पयंत चक्रयाणं ॥ सम्मग्न कर्मस्त्रयका

रगाणं, जम्मंजरा दुस्क निवारगाणं ॥ १४ ॥ करी आठ कर्म खयं
 पार पांम्या, जरा जन्म मरणादि जय जेण वाम्या ॥ निरावरण
 जे आत्मरूपें प्रसिद्धा, थया पार पांमी सदा सिद्धबुद्धा ॥ १५ ॥ त्रि
 ज्ञागोनदेहावगाहात्मदेसा, रह्याज्ञानमयजातिवर्णादिलेसा ॥ सदानंत
 सौख्याश्रिताज्योतिरूपा, अनाबाधअपुनर्जवादिस्वरूपा ॥ १६ ॥
 ॥ चाल ॥ सकल कर्ममल कंथ करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अ
 व्याबाध प्रभुतामई, आतम संपत भूपो जी ॥ उल्लाखो ॥ जे भूप
 आतम सहज संपति, शक्ति व्यक्तिपणें करी ॥ स्वभावक्षेत्र स्वका
 लज्ञावै, गुण अनंता आदरी ॥ स्वस्वज्ञाव गुणपर्याय परणति, सि
 द्धसाधन परजणी, मुनिराज मानसरहंस समवरु, नमो सिद्ध महा
 गुणी ॥ १७ ॥ ढाल ॥ समयपएसंतर अणफरसी, चरम तिज्ञाग
 विसेस ॥ अवगाहन लही जे शिव पुढता, सिद्ध नमो ते असेस रे
 ॥ १८ ॥ ज० ॥ पूरब प्रयोगने गति परणामे, बंधन छेद असंग
 ॥ समय एक ऊरधगति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो रंग रे ॥ ज० ॥
 ॥ १९ ॥ सि० ॥ निरमल सिद्धसिलाने ऊपर, जोयण एक लो
 कंत ॥ सादि अनंत तिहां थिति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो संत रे ॥
 ॥ २० ॥ ज० ॥ जाणै पिण न सकै कही पुर गुण, प्राकृत तिम
 गुण जास ॥ उपमा विण नांणी जवमांहे, ते सिद्ध दिन उल्लास
 रे ॥ ज० ॥ २० ॥ सि० ॥ ज्योतिसुं ज्योति मिली जसु अनुपम,
 विरमी सकल उपाधि ॥ आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध स
 हज समाधि रे ॥ ज० ॥ २१ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ रूपातीत स्वज्ञाव
 जे, केवलदंसणनाणी रे ॥ ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्ध गु
 ण खाणो रे ॥ वी० ॥ २२ ॥ उँ ॥ ह्रीं ॥ इति श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ अथ तृतीय आचार्यपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दिव आचारज पदनणी, पूजा करो विशेष ॥ मो

हतिमर दूरै हरै, सूरै ज्ञाव असेष ॥ १ ॥ काव्य ॥ सूरैणदूरीकय
 कुग्गहाणं, नमो रसूरिस्समप्पहाणं ॥ सदेसणा दाणसमायराणं, अ
 र्खंरुवत्तीसगुणायराणं ॥ नमूं सूरिराजा सदा तत्त्वताजा, जिनेंझग
 में प्रौढ साम्राज्यजाजा ॥ पद्वर्गवर्गित गुणै शोभमाना, पंचाचारने पा
 लवे सावधाना ॥ २ ॥ ज्ञविप्राणिनें देशना देशकालै, सदाअप्रमत्ता यथा
 सूत्र आलै ॥ जिके सासनाधार दिग्दंतकळपा, जगत्ते चिरंजीवज्यो
 शुद्धजळपा ॥ ३ ॥ ढाल ॥ आचारज मुनिपति गणी, गुणवत्तीसे
 धामो जी ॥ चिदानंदरत्नस्वादता, परजावे निक्कामो जी उल्लालो
 ॥ निक्काम निरमल शुद्ध चिदधन, साध्य निज निरधारधी ॥ वर
 ज्ञान दरसन चरण दोरज, साधना व्यापारधी ॥ ज्ञविजीवबोधक
 तत्वसोधक, सयलगुण संपतिधरा ॥ संवर समाधी गत ऊपाधी, उ
 विधत पमुण आदरा ॥ २५ ॥ ढाल ॥ पांच आचार जे सूधा पालै,
 मारग ज्ञाखै साचौ ॥ ते आचारज नमिये तेहसुं, प्रेम करीने या
 चो रे ॥ ज्ञ० ॥ २६ ॥ सि० ॥ वर वत्तीसगुणैकरि सोनै, युगप्रधान
 जगधोहै ॥ जगमोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमूं ते जोहे रे ॥
 ज० ॥ २७ ॥ सि० ॥ नित अप्रमत्त धरम नवएसे, नहि विकथा
 न कषाय ॥ जेहने ते आचारज नमियै, अकलुस अमल अमाय रे
 ॥ ज० ॥ २८ ॥ सि० ॥ जे दिये सारण वारण चोयण, पमिचो
 यण बलि जनने ॥ पटधारी गच्छुंज आचारज, ते मान्या मुनिम
 नने रे ॥ ज० ॥ २९ ॥ सि० ॥ अत्थमिये जिन सूरज केवल, वंदी
 जे जगदीवो ॥ जुवन पदारथ प्रगटनपटुते, आचारज चिरंजीवो
 रे ॥ ज० ॥ ३० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ध्याता आचारज ज्ञा, महामं
 त्र गुप्त ध्यानी रे ॥ पंचप्रस्थाने आतमा, आचारज हुय प्राणी रे
 ॥ वी० ॥ ३१ ॥ नै ह्रीं आचार्यपदे अष्ट इयं यजामहे स्वाहा ३

॥ अथ चौथी पाठरूपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ गुण अनेक जग जेहना, सुंदर शोभित गात्र ॥

जेवझायापद अरचियै, अनुज्ञवरसनो पात्र ॥ १ ॥ काव्य सुत्तजं
 वित्पारणतप्पराणं, नमोश्वायगकुंजराणं ॥ गणस्ससंधारणस्सिमु
 णं, सवप्पणावज्जियमञ्जराणं ॥ १ ॥ नही सूरि पिण सूरिमुधुया,
 हाया, नमूं वाचकात्यक्तमदमोहमाया ॥ वलि द्वादशांगादिर, कहि
 ने, जिके सावधाने निरुद्धाजिधाने ॥ २ ॥ धरै पंचनेवर्चरित्रंवि
 णौघा, प्रवादिहिपोष्ठेदनेतुल्यसिंघा ॥ गुणीगच्छसंधारणेआपूरूपैस
 उपाध्यायतेदंदियेचित्प्रचूता ॥ ३ ॥ ढाल ॥ खंतिजुअप्रतीत सरू
 अऊव मदवजुत्ताजी ॥ सच्चंसोयंअकिंचणा, तवसंयमरजी ॥ चाल ॥
 जल्लावो ॥ जे रम्या ब्रह्मसुगुप्तगुप्ता, सुमति सुमता शुक्ता ज्ञाव प्रग
 द्वादवादं तत्वसाधक, आत्मपरविज्ञंजनकरा ॥ जवच सुखकारण
 रसासन, बहनधोरीमुनिवरा ॥ सिद्धांतवायनदांसु २॥ढाल॥शुद्ध
 कपदधरा ॥ ३३ ॥ ढाल ॥ द्वादशअंगसिद्धायामीजै तेह नमीजै,
 तास ॥ सूत्र अर्थ विस्तार रसिक ते, नमो मल उपशम कय न
 ज्ञ ॥ ३४ ॥ सि० ॥ अर्थसूत्रने दांनद्धि सम्यग्दर्शन तेह नमीजै,
 जवत्रिएहै जे लहै शिवसंपद, नमियैते ॥ सि० ॥ पांच वार उपश
 ॥ मुखशिष्यनीपायेजेप्रज्जु, पाहण एक वार कायक ते सम्यक्,
 कलजन पूजित, सूत्रअर्थ सविजा ५५ ॥ सि० ॥ जे विण नाण प्र
 जकुपर सरिला गणार्चितक, अवि फलियो ॥ सुख निरवाण न जे
 नमतां, नावै जवज्जप सोणन बलित रे ॥ ज्ञ० ॥ ५६ ॥ सि० ॥
 नरस समवयणै, अहितत्यो, ज्ञान चारित्रनुं मूल ॥ समकितदर्श
 वलि, जिनशासन शिवपंचनुं अनुकूल रे ॥ ज्ञ० ॥ ५७ ॥ सि० ॥
 तपसिज्ञायै रत स्वगादिक गुण, खंयउपसम जे आवै रे ॥ दर्शन ते
 आतमा, जगबंत्युं होय नाम धरावै रे ॥ वी० ॥ ५८ ॥ नै ही
 ठकपदे अष्ट अष्ट ड्यं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ अथ ७ मी ज्ञानपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सतम पद श्रीज्ञाननो, सिद्धचक्र तपमाह ॥ आ

हतिमर मुनिरपदं वंदता, निरमल आवे देह ॥१॥ काव्य ॥ साहूषं स
 संजमाणं, नमोऽशुद्धदयादमाणं ॥ तिगुत्तगुत्ताणसमाहियाणं,
 कुम्भदाणं ॥ माणंदपयडिआणं ॥ करेसेवनासूरिवायगगणीनी, करूंवर्णना
 रंरुवत्तोर ॥ मीमुणीनी ॥ समेतासदापंचसमतेत्रिगुता, त्रिगुतेनहाकाम
 में प्रौढ सा ॥ ४१ ॥ बलोवाह्यअच्यंतैरग्रंअटाली, दुइंमुक्तिनेयो
 लवेसावधान ॥ ४२ ॥ डाल ॥ सकल विषयविष वारिनें, निक्का
 सूत्र आलै ॥ ४३ ॥ डाल ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्मम निर्मदा,
 शुद्धजल्पा ॥ ४४ ॥ डाल ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्मम निर्मदा,
 धामो जी ॥ चि ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्मम निर्मदा,
 ॥ निक्काम निर ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्मम निर्मदा,
 ज्ञान दरसन चर ॥ ४५ ॥ डाल ॥ जिम तरुफूजै जमरो वेसें, पीना
 तत्वसोधक, सय ॥ ४६ ॥ डाल ॥ जिम तरुफूजै जमरो वेसें, पीना
 विघ्नत पगुण आदरा ॥ ४७ ॥ डाल ॥ जिम तरुफूजै जमरो वेसें, पीना
 मारग ज्ञाखै साचौ ॥ ते ॥ ४८ ॥ डाल ॥ जिम तरुफूजै जमरो वेसें, पीना
 चो रे ॥ ४९ ॥ डाल ॥ जिम तरुफूजै जमरो वेसें, पीना
 जगबोहै ॥ जगबोहै न रहे खिर आराधै, वंदू दीनदयाल रे ॥ ५० ॥
 ॥ ५१ ॥ डाल ॥ जिम तरुफूजै जमरो वेसें, पीना
 न कषाय ॥ जेहने ते आचारज नहि, कीजै जनम पवित्र रे ॥ ५२ ॥
 ॥ ५३ ॥ डाल ॥ जिम तरुफूजै जमरो वेसें, पीना
 यण बलि जनने ॥ पटबारी गच्छुंज आ अंकूरा रे ॥ ५४ ॥
 नने रे ॥ ५५ ॥ डाल ॥ जिम तरुफूजै जमरो वेसें, पीना
 जे जगदीवो ॥ जुवन पदार्थ प्रगटनपटुते, ओं ॥ ५६ ॥ डाल ॥ जिम तरुफूजै जमरो वेसें, पीना
 रे ॥ ५७ ॥ डाल ॥ जिम तरुफूजै जमरो वेसें, पीना
 ॥ ५८ ॥ डाल ॥ जिम तरुफूजै जमरो वेसें, पीना
 ॥ ५९ ॥ डाल ॥ जिम तरुफूजै जमरो वेसें, पीना
 ॥ ६० ॥ डाल ॥ जिम तरुफूजै जमरो वेसें, पीना

॥ अथ चौथी पाठकपद पूजा ॥

॥ दुहा ॥ गुण अनेक जग जेहना, सुंदर शोचिणी परतीत ॥

ते सम्यग्दर्शनं सदा, आदर्शैः शुभ्रं रीत ॥ १ ॥ काव्य ॥ जिगु-
 त्ततत्तेरुदरक्षणस्ते, नमोऽ निम्नलदं सणस्ते ॥ मिष्ठतनासाईसमु-
 ग्गमस्ते, मूलस्तेसधम्ममहाडुमस्ते ॥ विपर्यासहोवासनारूपमिष्ट्या,
 टलेजेअनादीअवैजेकुपष्ट्या ॥ जिनोक्तेहुईसहजधीशुद्धध्यानं, कहिं
 यैदर्शनंतेहपरमंनिधानं॥५०॥विनाजेहधीज्ञानमज्ञानरूपं, चरित्रंवि-
 धित्रंनवारणवकूपं॥प्रकृतिसातनेउपसमैक्यतेहहोवे, तिहांआपरूपैस
 दाआपजोवै॥५१॥ढाल॥सम्यग् दर्शन गुण नमो, तत्त्व प्रतीत सरू-
 पी जी॥जसु निरधार स्वजाव वै, चेतन गुण जे अरूपी जी॥ चाल ॥
 जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटै सयल पर ईहा टले, निज शुद्ध सत्ता जाव प्रग-
 टै अनुभव करुणा नञ्चलै॥बहु मान परणित वस्तु तत्त्वे अहव सुखकारण
 पणै, निज साध्य दृष्टै सरब करणी तत्त्वता संपति गिणै॥५२॥ढाल॥शुद्ध
 देव गुरु धर्म परीक्षा, सद्वृत्ता परिणाम॥जेह पांमीजै तेह नमीजै,
 सम्यग्दर्शन नाम रे॥ ज० ॥ ५३ ॥ सि०॥ मल उपशम कय उ-
 पशम जेहधी, जे होइ त्रिविध अजंग ॥ सम्यग्दर्शन तेह नमीजै,
 जिनधरमै दृढ रंग रे ॥ ज० ॥ ५४ ॥ सि० ॥ पांच वार उपश-
 म लहीजै, कयउपसमीष असंख ॥ एक वार कायक ते सम्यक्,
 दर्शन नमीइ असंख रे ॥ ज० ॥ ५५ ॥ सि० ॥ जे विण नाण प्र-
 णण न होवे, चारित्रतरु नवि फलियो ॥ सुख निरवाण न जे
 ण लहिये, समकित दरसन बलिउ रे ॥ ज० ॥ ५६ ॥ सि० ॥
 मसठ बोले जे अलंकरियो, ज्ञान चारित्रनुं मूल ॥ समकितदर्श-
 न ते कित प्रणमूं, शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ ज० ॥ ५७ ॥ सि० ॥
 ज०ढाल॥समसंवेगादिक गुण, खंयउपसम जे आवै रे ॥ दर्शन ते
 जाज०नि०मा, खुं होय नाम धरावै रे ॥ वी० ॥ ५८ ॥ उं ह्रीं
 ॥ दर्श पदे अष्ट इयं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ अथ ७ मी ज्ञानपद पूजा ॥

हं दूहा ॥ सप्तम पद श्रीज्ञाननौ, सिद्धचक्र तपमाह ॥ आ

राधीजै गुन मनै, दिन२ अधिक उवाह ॥ १ ॥ काव्य ॥ अन्नाण
 सम्मोहतमोहरस्स, नमो२ नाण दिवायरस्स ॥ पंचंप्यारस्सुवगा
 रगस्स, सत्ताणसवत्थपयासगस्स ॥ होइजेइथीज्ञानगुरुप्रबोधै, यथा
 वर्णनासैविचित्राविबोधै ॥ तिणैजाणीयेवस्तुषट्ठव्यज्ञावा, नहोवै
 विकठानिजेन्नास्वज्ञावा ॥ ५९ ॥ होइपंचमत्यादिसुग्यानजेदै, गुरु
 पासथीयोग्यतातेहवेइं ॥ वलीझेयहेयानुपादेयरूपै, लहैविचमांजे
 मध्यानेंप्रदीपै ॥ ६० ॥ ढाल ॥ जठर नमो गुण ज्ञाननें, स्वपरप्र
 काशक जावै जी ॥ परयाय धरम अनंतता, जेदाजेद स्वज्ञावै जी
 ॥ चाल ॥ जे मोक्ष परणति सकल ज्ञायक कोधवास विलासता,
 मति आदि पंच प्रकार निरमल सिद्धताधन लंठना ॥ स्याद्भावसं
 गी तत्त्वरंगी प्रथम जेद अजेदता, सवि कळप जे अखिकळप वस्तु
 सकल संसय छेदता ॥ ६१ ॥ ढाल ॥ जह अजह न जे विण ल
 हिये, पेय अपेय विचार ॥ कृत्य अकृत्य न जे विन लहिये, ज्ञान
 ते सकल आधार रे ॥ ज० ॥ ६२ ॥ सि० ॥ प्रथम ज्ञान नै पीठे अहिंसा,
 श्रीसिद्धातै ज्ञायुं ॥ ज्ञाननें वंदो ज्ञान न निंदो, ज्ञानीये सिवसुख चा
 र्युं रे ॥ ज० ॥ ६३ ॥ सि० ॥ सकल क्रियाबुं मूल ते अध्या, तेहनुं मूल
 जे कहिये ॥ तेह ज्ञान नित ९ वंदीजे, ते विन कहो किम रहिये
 रे ॥ ज० ॥ ६४ ॥ सि० ॥ पांचज्ञानमांहे जेह सदागम, स्वपरप्रकाश
 क तेह ॥ दीपकपर त्रिभुवन उपगारी, बलि जिम रवि शशि मेह
 रे ॥ ज० ॥ ६५ ॥ सि० ॥ लोक ऊरध अध तिर्यग् ज्योतिष, वैमानि
 क ने सिद्ध ॥ लोक अलोक प्रगट सब जेहथी, ते ज्ञाने मुक्त गुप्ती
 रे ॥ ज० ॥ ६६ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ज्ञानावरणी जे कर्म धा, कय
 उपशम तसु थाये रे ॥ तो होइ एहिज आतमा, ज्ञान मोधता
 जायै रे ॥ वी० ॥ ६७ ॥ नैं हँ प० ज्ञानपदे अष्ट ङ्ग यजा
 महे स्वाहा ॥ इति ॥

॥ अथ आठमी चारित्रपद पूजा ॥

॥ दूहां ॥ अष्टम पद चारित्रनो, पूजो धरी ऊमेद ॥ पूजत
अनुन्नवरस मिले, पातिक होय उछेद ॥ १ ॥ काव्यं ॥ आराहिया
खंमिअसक्कियस्स, नमो२संजमवीरिअस्स ॥ सप्पावणासंगविवट्ठिअ
स्स, निव्वाणदाणाइसमुज्जायस्स ॥ बलिज्ञानफलतेधरियेसुरंगे, निस
संसताघाररोधेप्रसंगै ॥ न्नावांजोधिसंतारणेयानतुल्यं, धरुंतेहचारित्र
अप्राप्तमल्यं ॥ ६७ ॥ होइंजासमहिमाथकीरंकराजा, बलिघादशां
गीज्जणीहोइताजा ॥ बलिषापरूपोपिनिप्पापथायै, अईसिद्धतेकर्मने
पारजायै ॥ ६८ ॥ चाल ॥ चारित्रगुण बलि३ नमो, तत्त्वरमण
जसु मूलोजी ॥ पररमणीयपणो टलै, सकल सिद्धिअनुकूलो जी ॥
उल्लाखो ॥ प्रतिकूल आश्रव त्याग संजम तत्व थिरता दममयी, शुचि
परम खंति मुनींद संपद पंच संश्र उपचयी ॥ सामायकादिक जे
द धरमें यथाख्यातै पूर्णता, अकषाय अकुलस अमल उज्ज्वल काम
कसमल चूर्णता ॥ ७० ॥ ढाल ॥ देसविरत ने सर्वविरत जे, ग्रही
यतिने अजिरांभ ॥ ते चारित्र जगत जयवंतो, कीजै तास प्रणाम
रे ॥ ज० ॥ ७१ ॥ सि० ॥ तृण पर जे षट्खंम सुख ठंमी, चक्र
वर्त पिण वरिज, ते चारित्र अखय सुखकारण, ते में मनमांहि धरि
ज रे ॥ ज० ॥ ७२ ॥ सि० ॥ हूवा रंकपणे जे आदर, पूजत इंद
नरिंद ॥ असरण सरण चरण ते बारू, वरिज ज्ञान आनंद रे ॥
ज० ॥ ७३ ॥ सि० ॥ बार मास पर्यायै तेहनें, अनुत्तर सुखअतिक्रमिये ॥
शुक्ल३ अजिजात्य ते ऊपर, ते चारित्रने नमिये रे ॥ ज० ॥ ७४
॥ सि० ॥ चय ते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र
नांम निरुक्ते जारख्युं, ते बंदू गुणगेह रे ॥ ज० ॥ ७५ ॥ सि० ॥
॥ ढाल ॥ जांणि चारित्र ते आतमा, निजस्वप्नावमांहि स्मृतो रे
॥ लेस्या शुद्ध अलंकरयो, मोहवने नवि जमतो रे ॥ वी० ॥ ७६
॥ नुं ह्रीं ५० चारित्रपदे अष्ट इव्यं यजामहे स्वाहाः ॥

॥ अथ नवमी तपपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ करमकाष्ट प्रति जालवा, परतिख अगनि समांन
 ॥ ते तपपद पूजो सदा, निर्मल घरिये ध्यान ॥ १ ॥ काव्यं ॥ कम्म
 हुमोन्मूलनकुंजरस्त, नमोऽतिवतवोवरस्त ॥ अणोगलदीणनिबंधण
 स्त, दुसज्जअत्थाणयसाहणस्त ॥ ७४ ॥ इयनवपयसिद्धिंलद्धि, विज्जास
 मिद्धं, पयमियसरवगंहीतिरेहसमगं ॥ दिसिवइसुरसारंखोणिपीढाव
 यारं, तिजयविजयचक्रंसिद्धचक्रंनमामि ॥ ७५ ॥ त्रिकादिकपणें कर्म
 कपाय टालै, निकाचितपणें वाधिया तेह वालै ॥ कह्यो तेह तप
 बाह्य अन्यंतर उ जेदे, कमायुक्ति निर्हेत दुर्घ्यान ठेदे ॥ ७६ ॥ होइ
 जास महिमाथकी लब्धि सिद्धि, अवांठकपणें कर्म आवरण शुद्धि
 ॥ तपो तेह तप जे महानंद हेतै, होइ सिद्ध सीमंतनी जिम संके
 ने ॥ ७७ ॥ इम नव पद ध्यावै परम आनंद पावै, नवज्जव सिव
 जावै देव नर जवज पावै ॥ ज्ञानविमल गुण गावै सिद्धचक्र प्रज्ञा
 नै, सवि डुरित समावै विश्व जयकार पावै ॥ ७८ ॥ ढाल ॥ इच्छा
 जेधन तप नमो, बाह्य अन्यंतर जेदै जी ॥ आतम सत्ता एकत्व
 ता, पर परणति उछेदे जी ॥ १ ॥ उल्लाखो ॥ उछेद कर्म अनादि
 संतति जेह सिद्धपणो वरे, शुज योग संग आहार टालो ज्ञाव अ
 क्रियता करै ॥ अंतरमुहूरत तत्व सावै सर्व संवरता करी, निज आ
 त्मनत्ता प्रगट ज्ञावै करो तपगुण आदरी ॥ ७२ ॥ ढाल ॥ इम न
 वपद गुणमंरुलं, चउ निक्केप प्रमाणें जी ॥ सात नयें जे आदरै, स
 म्यग्ज्ञानें जाणै जी ॥ उल्लाखो ॥ निरधारसेती गुणो गुणानो करइजे
 बहुमान ए, जसु करण ईहा तत्त्वरमणें आयै निरमल ध्यान ए ॥
 इम शुद्धसत्ता जखो चेतन सकल सिद्धि अनुसरै, अक्षय अनंत म
 हंत चिदधन परम आनंदता वरै ॥ ७३ ॥ कलश ॥ इम सयल सुख
 कर गुणपुरंदर सिद्धचक्रपदावली, सवि लब्धिविज्जा सिद्धि मंदिर ज
 विक पूजो मन रखी ॥ उवझाय वर श्रीराजसारह ज्ञानधर्मसु रा

जता, गुरु दीपचंद सुचरण सेवक देवचंद सुशोभता ॥८४॥ ढाल ॥
जाणंता त्रिहुं ज्ञाने संयुत, ते जवमुगति जिनंद ॥ जेह आदरे कर्म
खपेवा, ते तप सुरतरु कंद रे ॥ ज० ॥ ८५ ॥ सि० ॥ करम नि
काचित पिण कय जायै, कनासहित जे करतां, ते तप नमियै ते
ह दीपावै, जिनशाशन उजमंता रे ॥ ज० ८६ ॥ सि० ॥ आमोसही
॥ बहु लद्धि, होवै जास प्रजावै ॥ अष्ट महासिद्ध नवनिध प्र
, नमियै ते तप जावै रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ८७ ॥ फल शिव
खुख मोटुं सुरनखर, संपति जेहनूं फूल ॥ ते तप सुरतरु सरिखो
बंदू, शममकरंद अमूल रे ॥ ज० ॥ ८८ ॥ सि० ॥ सर्व मंगलमां
हि पहलो मंगल, वर्णवियो जे ग्रंथै ॥ ते तपपद त्रिकरण नित न
मियै, वरसहाय शिवपंथ रे ॥ ज० ॥ ८९ ॥ सि० ॥ इम नवपद
शुणतो तिहांलीनो, हुं तनमय श्रीपाल ॥ सुजस विलासै चोप्र
खंमै, एह इग्यारमी ढाल रे ॥ ज० ॥ ९० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ इ
नारोधन संवरी, परणित समता योनि रे ॥ तप ते एहिज आत्मा,
वरते निजगुण जोगे रे ॥ वी० ॥ ९१ ॥ आगमनो आगमतणो,
जाव ते जाणो साचो रे ॥ आतमजावै थिर हूँ, परजावै मत
राचो रे ॥ वी० ॥ ९२ ॥ अष्ट सकल समृद्धिने, घटमांहे रुद्धि दा
खी रे ॥ तिम नवपद रुद्धि जाणज्यो, आतमराम है साखी रे ॥
वी० ॥ ९३ ॥ योग असंख्य है जिन कहा, नवपद मुख्यते जाणो रे
॥ ए हतणै अविलंबने, आतमध्यान प्रमाणो रे ॥ वी० ९४ ॥ ढाल
वारमी एहवी, चोथै खंमे पूरी रे ॥ वाणी वाचक जसतणी, कोइय
न रही अधूरी रे ॥ वी० ॥ ९५ ॥ उँ हँ प० तपपदे अष्ट इव्यं
यजामहे ॥ इति नवपद ॥ पूजा ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद पूजाकी कलसंढालण विधी ॥

॥ नव स्त्रात्रिया केसरसैं तिलक करे, हांथके कांकणडोरा बांधे, दहणे हाथमें

साथिया करै, अरिहंत पदमें चावल, नमो अरिहंताणं कहके पहली पंचामृतके नव
कलस ढाले फेर केसरकी टीकी देकर चरणो पर वासक्षेप चढ़ावे यथाक्रम अष्ट व्र
व्य चढ़ावै ॥ सिद्धपदमें गहूं लालरंगकी धजागोटा चढ़ावे, आचार्यपदमें चिणोकी
ढाल पीले रंगकी धजागोटा, उपाध्यायपदमें मूंग, साधूपदमें उडद, वाकी च्यारपद
में चावल चंदनलेपित गोटा चढ़ावे, श्वेतधजा चेत्रीपूना आसोजीपूना वगेरोंमें करे,
नमो सिद्धार्थ इत्यादि नवपदो के न्यारेरे कह के चढ़ावे, गटे मुजव पटे पर नव सा
थिया कर वीचमें अरिहंत ऊपर सिद्ध सिद्धचक्रयंत्र मुजव यथाक्रम चढ़ावै ॥

॥ ओली करणवाला वासक्षेप पूजा करे तो एकेक पूजामें चालकी गाथा
तथा उछाले तक गाय कर अरिहंतपदे वासक्षेप यजामहे कहणा. एसें नवपदो की
चाल ओर उछाला पद वासक्षेप चढ़ाणा ॥

॥ अथ दादागुरुमाहाराजकी लघु अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ न्हवण पूजा ॥ सुरनदी जल निर्मल धारया, प्रबल डुङ्कृत
दाघ निवारया ॥ सकल मङ्गल वंशित दायकं, कुशल सूरि गुरेश्वरणां
यजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनकुशल सूरि गुरौ चरणकमलेभ्य जलं
यजामहे ॥ २ ॥ अथ चंदनपूजा ॥ मलय चंदन केसरवारिणा, निखल
जाड्यरुजातं पदारिणा ॥ सकल ० ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनकु ॥ ३
॥ अथ पुष्पपूजा ॥ कमल केतकि चंपक पुष्पकैः, परिमला हृत् व
ट्पद वृंदकै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥
३ ॥ अथ अक्षत पूजा ॥ सरज तंडुल कैरित निर्मलै, प्रवर मौ
क्तिक पूंज वडुज्वलैः ॥ सकल मङ्गल ० ॥ ॐ ह्रीं प० अक्षतं यजा
महे ॥ ४ ॥ अथ नैवद्य पूजा ॥ बहुविधैश्चरुनिर्वटकेयकैः, प्रवर
मोदकपुंज सुखर्जकै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री नैवद्यं यजामहे
॥ ५ ॥ अथ दीपपूजा ॥ अति सुदीप्तमयै खलुदीपकै, विमल कं
चनजाजन संस्थितै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजि० दीपं य
जामहे ॥ ६ ॥ अथ धूपपूजा ॥ अगर चंदन धूप दशांगजै, प्रसरि
ताखिल दिक्षुधूपकः ॥ सकल मं० ॐ ह्रीं श्री० धूपं यजामहे
॥ ७ ॥ अथ फलपूजा ॥ पनश मोच सदाफल कर्कटै, सुसुखदैः

किल श्रीफल चिर्जटै ॥ सकल मं० ॥ नै ह्री श्री० फलं यजामहे
स्वाहाः ॥ ८ ॥ अर्घपूजा ॥ जल सुगंध प्रसून सुतंडुलै, श्वरुप्रदीप
क धूप फलादिभिः ॥ सकल मं० ॥ नै ह्री श्री श्रीजि० अर्घं यजा
महे स्वाहा ॥ इति श्रीदादाजीकी लघु अष्टप्रकारी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ दादाजीकी आरती ॥

॥ जै जै सदगुरु आरती कीजै, श्रीजिनकुशल सूरि समरी
जै ॥ जैजै० ॥ पहली आरती दादाजीकी कीजै, दुख दोहग सब
दूर हरीजै॥जै०॥१॥बीजी बीज पमंती धारा, जयवारण तूही सुख
कारा ॥ जै० ॥ २ ॥ तीजी परछा पूरक तेरी, दूर हरौ सब दुर्म
ति मेरी ॥ जै० ॥ ३ ॥ चौथी सुगलपूत जियदायक, सुरवर हुक
म धरै ज्युं पायक॥जै०॥४॥पांचमी पांच नदी जिए तारी, संघ स
कलनो संकट वारी ॥ जै० ॥ ५ ॥ ठी पांजोवज विदारी, विद्या
पोथी परगटकारी ॥ जै० ॥ ६ ॥ सातमी चोसठ योगण साथी,
सूरिमंत्र सुरने आराधी ॥ जै० ॥ ७ ॥ इण विध सात आरती
कीजै, मनवंवित संपति फल लीजै ॥ जै० ॥ ८ ॥ जैनलाज खर
सर गणधारी, सदगुरु चरणकमल बलिहारी ॥ जै० ॥ ९ ॥
इति श्रीगुरुदेव आरती संपूर्णमं ॥

॥ अथ सूतकविचार लिख्यते ॥

॥ पुत्र जन्म होनेसे दिन १० इस सूतक ॥ पुत्री जन्म हो
नेसे दिन १२ वार सूतक ॥ नर जो स्त्रीके पुत्र होय, उस स्त्रीके
एक मासको सूतक ॥ पुत्र होके मरण पाये, तो दिन १ एक सूतक ॥
परदेशे मृत्यु होय तो दिन १ एक सूतक ॥ गाय, जैष, घोमी,
सांड, घरमांहे वियावे, तो दिन १ एक सूतक ॥ मरण हूवां कले
वर घर बाहिर लड़ जाय, जहां तक सूतक ॥ दास दासी अपनी
नेष्टायें रहते पुत्र पौत्रादिकका जन्म मरण हो, तो दिन ३ तीन

सूतक ॥ नर जितना महिनाको गर्भ गिरे, तितने दिन सूतक ॥
 अब जिनके जन्म मरणका सूतक होवे ये १९ बार
 दिन देवपूजा न करे. नर मृतकके सूतक में घरका जो
 मूल कांधिया होवे सो १० दस दिन देवपूजा न करे ॥
 नर अन्य घरका ३ तीन दिन देवपूजा न करे. नर जो मृत
 कको वुवा होवे, सो ५४ चौबीस प्रहर पन्तिक्रमण न करे ॥ जो
 सदाका अखंड नियम होवे, तो समताजाव रख के संवरपणामें
 रहे. परंतु मुखसे नवकार मंत्रकाजी उच्चारण करे नहिं. स्थापना
 जीके हाथ लगावे नहिं. नर जो मृतकको वुवा न हो तो मात्र
 आठ प्रहर पन्तिक्रमण न करे ॥

जैनके जब वच्चा होय, तब १५ पदर दिन पीठें दूध पीणो
 कल्ये. गायके वच्चा होय तो १७ सतरे दिन पीठें दूध पीणो कल्ये.
 बकरीको दूध ८ आठ दिन पीठें पीणो कल्ये ॥

१ रुतुवती स्त्री, चार दिन ज्ञानादिकको न वुवे. ९ चार दिन
 प्रतिक्रमण न करे, ३ पांच दिन देवपूजा न करे. ४ रोगादिक का
 रणें तिन दिवस उपरांत कोइ स्त्रीको रक्त चलता दीसे, जिसका
 विशेष दोष नहिं ॥ शुद्ध विवेकसें पवित्र हो कर दिन ५ पांच पीठें
 स्थापना पुस्तक वुवे, जिनदर्शन करे, अग्रपूजा करे, परंतु अंगपूजा
 न करे, साधुको पन्तिखाने. ऋतुवती तपस्या करे, सो तो सफल
 होय. परंतु रुतु दिनमें जिनपूजा प्रतिक्रमणादिक क्रिया सफल न
 होवे, ऐसा चर्चरीग्रंथमें कहा है. जिसके घरमें जन्म मरणका सू
 तक होवे, उहां १९ बार दिन तक साधु आहार पाणी न बहेरे.
 सूतकवालेका घरका जलसें तथा अग्निसें १२ बारा दिन तक देव
 पूजा न करे. निशीथमूत्रके शोलमा उद्देशामें जन्म मरणके सूत
 कवालेका घर दुर्गन्धनिक कहा है.

गायके मूत्रमें २४ चोवीस प्रहर पीठें, जैषके मूत्रमें १६ सोल प्रहर पीठें, गाजर, गधेमा, घोमीके मूत्रमें ८ आठ प्रहर पीठें, क्षर नारीके मूत्रमें ८ चार प्रहर पीठें, संमूर्च्छिम जीव उपजे इत्यादि सूतकका संक्षेप विचार इहां लिखा है. विशेष विचार शास्त्रांतरसें जागृता ॥ इति सूतकविचारः संपूर्णः ॥

॥ अब असत्वायकी विमत कहते हैं ॥

१ धूआरी पने, तासीम असत्वाय जाणवी.

२ सर्वादिस्त्रामां सती छाया तथा अरस्य संबंधी रज उमे, निरंतर पने तो दिन ५ तीन उपरांत असत्वाय.

३ मेह परसते बुदबुदाकारी होय, तो दिन ३ तीन उपरांत असत्वाय.

४ जाना धांटा निरंतर, दिन ७ सात उपरांत वरसे अमे न रहे तो असत्वाय होय.

५ मांसवृष्टि, शिखावृष्टि, केशवृष्टि, धूलिवृष्टि, जालगें होय, तां सीम असत्वाय. अमे जो रुधिरवृष्टि होय तो अहोरात्र असत्वाय.

६ बुदबुदा रहित निरंतर वरसे तो ५ पांच दिन उपरांत असत्वाय होय.

७ चैत्र शुदि पांचमहूँती पन्निवा लगें असत्वाय. तेरस, चौदस, पूनम सीम समी सांजे. अचित्त रजजहावणठं काजस्तग करुं? इठं. अचित्त रज्ज जहावणठं करेमि काजस्तगं. पठी लोगस्त उद्योगरेना चार काजस्तग करवा.

८ आशोशुदि पांचमने दिने छिप्रहरणी आरंजीने पन्निवा लगें असत्वाय.

९ दश दिगुवाहें प्रहर १ एक असत्वाय.

१० अकालें गाजतां प्रहर ९ बे सीम असत्वाय.

- ११ अकालें बीज उब्कापात होय तो प्रहर ? असञ्चाय.
 १२ अजवालीये पक्षें समी सांज, पम्बो, बीज, त्रीज,
 इयारी असञ्चाय, परंतु दश वैकालिक गुणीजें.
 १३ अकालें मैघ वरसे, तो प्रहर ? एक असञ्चाय.
 १४ जूमिकेंपें प्रहर ८ आठ असञ्चाय,
 १५ चंडग्रहणें प्रहर ११ वार उत्कृष्टें, अने जघन्यें प्रहर
 ८ आठ असञ्चाय.
 १६ सूर्यग्रहणें उत्कृष्ट प्रहर १६ सोल, अने जघन्य प्रहर
 १२ वार असञ्चाय.
 १७ आसाढ चनुमासा पम्बिकमण गथाहुंती प्रहर १२
 वार असञ्जाय.
 १८ कार्तिक चनुमासे पण प्रतिक्रम्या पीठें पम्बिवा लगें प्र
 हर वार असञ्जाय.
 १९ मांढोमांढे मल्लादिक युद्ध हुवे, तावत्काल असञ्जाय.
 २० कलह युद्ध जां लगें हुवे, तां लगें असञ्जाय.
 २१ उपाश्रय नजीक स्त्रीपुरुषने कलह हुवे त्यांपर्यंत असञ्जाय.
 २२ फागण चनुमासे रजपर्वी ज्यां लगें रज नमे, अने उप
 शमें नहिं, तां लगें असञ्जाय.
 २३ दंभको मार पम्बते जांलगी अनेरो न हुवे, तां लगी
 असञ्जाय.
 २४ परचक्रादि जय उपजे, अने जां लगें उपशमे नहिं, तां
 लगे सूत्र जणवुं न सूजे ॥ अयं परमार्थः ॥
 २५ नगरमांढे प्रधान पुरुष विद्दमे, तो अहोरात्र असञ्जाय.
 २६ उपाश्रयथी सात घरमांढे जो कौड पुरुष विद्दमे, तो
 अहोरात्र असञ्जाय.

२७ सो हाथमाहे अनाथ पुरुष मृतक पड्यो होय, तो तां अणजद्वे एढले ज्या पर्यंत मृतककूं न उठावे, त्यां सीम असद्याय.

२८ तिर्यचना रुधिर पमवाथी हाथ १०० सो माहे अहो-
रात्र असद्याय.

२९ मनुष्यना रुधिर पमवाथी हाथ १०० सो माहे अहो-
रात्र असद्याय.

३० मनुष्यनां अस्थि, हांत, दाढ पमे हाथ १०० सो माहे
सूत्र पढवुं सूजे नहिं.

३१ स्त्रीने रुतु आवे अके दिन ३ त्रश असज्जाय.

३२ आर्जा नक्षत्र आव्वा पीठें स्वाति नक्षत्र पर्यंत जो गाजे,
वीजे, मेह वरसे, तो असज्जाय न होय.

३३ पुत्रने प्रसवे दिन ७ सात असद्याय. अने दीकरीने प्रस
वे दिन ८ आठ असज्जाय.

३४ कालग्रहण विणकी जणवो गुणवो नहिं. प्रहर १२ बार
असज्जाय.

३५ वैशाखवदि १, श्रावणवदि १, कार्तिकवदि १, मागशि
रवदि १. ए चार दिवसें सदैव असज्जाय अने सूत्रनी असज्जाय
तो प्रहर १२ बार सूधी जाणवी.

॥ अथ साधु ओर श्रावककों कोनसी वस्तु कितने प्रहर ॥

॥ ओर दिन पीछें न खावणी सो लिख्यते ॥

॥ चावल प्रहर ८, राब प्रहर १२, घीस प्रहर २०, गार्गी
प्रहर २४, दहिं प्रहर १६, दूध प्रहर ४, कांजीबर्मा प्रहर २४,
घोमवर्मा प्रहर ४, तट्यां वर्मा प्रहर ४, पूमी प्रहर ८, रोटी प्रहर
४, तथा ६. बाजरा ऊष्ण प्रहर १२, जवार ऊष्ण प्रहर १२, बा
जरीकी खीचमी प्रहर ८, जवारकी खीचमी प्रहर ८, चावलकी

खीचनी प्रहर ४, सीयाले आटो दिन १०, उन्हाले आटो दिन ८, वरसाले आटो दिन ५, पक्कान्न सियाले दिन ३०, उन्हाले पक्कान्न दिन १५, वरसाले पक्कान्न दिन ७, उन्हाले लूण फासू ८ दिन, वरसाले लूण फासू दिन ३, सीयाले फासू लूण दिन ५, सीयाले फासु घी दिन ८, उन्हाले फासु घी दिन ५, वरसाले फासु घी दिन ३, तथा हमेसका सियाले फासु पाणी प्रहर ५, वरसाले फासु पाणी प्रहर ३, सर्व अनाजकी घूघरी पाणी मीजोश प्रहर ८, पाणीकी नसेइ घूघरी प्रहर १८, घी तेलकी तली घूघरी प्रहर २०, तथा २४, वही प्रहर ८, कढी प्रहर ४, सर्व दाल प्रहर ४, तथा ६, रायता प्रहर ८, घीकी तली प्रहर १६. एवं सर्व वस्तु ए कीये परिमाण उपरांत च्लितरस होवे, सो साधु तथा श्रावकको खावे योग्य रहे नहिं ॥

॥ अथ नव ग्रह तथा दस दिग्पाल की स्थापन और पूजन विधि तथा आह्वान विसर्जन विधि लिख्यते ॥

॥ पांच दस स्नात्रिया शुद्ध होकर गुरू के पास केसरका तिलक करै, केसर मंत्रायकै दाहिणा हाथके मौली नर कांकणमोरा मंत्राय के बाँधै ॥ (नमो परमेष्ठि नमस्कारं) इत्यादि स्तोत्रसें गुरु आत्मरक्षा करावै, पीठै एक आलीमें १०, एक आलीमें ९, फेर एक आलीमे फेर ९, ऐसें २८ नागरवेलका पान रखै, जिसपर पुष्प अकृत नैवेद्य फल रोकड्य यथाशक्ति धरै नरजी पंचामृत फूल पुष्पमाला अकृत नैवेद्य तरेर के गीले नर सूकेफल अनर गुलाबजल केसर कपूर कुंकु आदि पूजापेका सामान रखै, फेर स्नात्रपूजा की आपना रखै, स्नात्र करावे अष्ट प्रकारी पूजा करावै पीठै दसदिग्पाल के पट्टे ऊपर जलका गींटा देकर वासकप करे ॥ एकेक दिग्पालके केसरकी टीकी देकर पुष्प चढाके फल नैवेद्यादि समेत नागरवेलका पान चढावै ॥

॥ अथ दस दिग्पालके पट्टेकी पूजाविधि ॥

॥ नैऋत्याय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इहयस्मिन्जं
 बूदीपे दक्षिणज्जरतार्द्धक्षेत्रे अमुकनगरे अमुकचैत्ये अमुकपूजामहो
 न्वे आगच्छ१ बलिगृहाण१ उदयमन्युदयं कुरुस्वाहाः नैऋत्याय न
 मः इति इन्द्राह्वानपूजा ॥ (पूर्वदिशि जल चंदनादि अष्ट द्रव्य च
 ठावै) ॥ १ ॥ अथ अग्नि दिग्पाल पूजा ॥ नैऋत्याय सायुधाय सवा
 हनाय सपरिकराय अस्मिन्जंबूदीपे दक्षिणज्जरतार्द्धक्षेत्रे अमुकनगरे
 अमुकचैत्ये अमुकपूजामहो न्वे आगच्छ१ बलिगृहाण२ उदयमन्यु
 दयं कुरुस्वाहाः नैऋत्याय नमः ॥ २ ॥ अथ यम दिग्पाल पूजा ॥ नैऋ
 त्याय सायु० सवा० सपरिच्छदा अस्मिन्जंबु० दक्षिण० अमुकन०
 अमुकचैत्यै० अमुकपूजा० आग० बलिगृ० उदयम० स्वाहा नैऋ
 त्याय नमः ॥ दक्षिण ॥ ३ ॥ अथ नैऋताय दिग्पाल पूजा ॥ नैऋताय
 सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० दक्षि० अमुक पूजामहो न्वे
 आग० बलिं० उदय० स्वाहा नैऋताय नमः ॥ ४ ॥ अथ वरुण दि
 ग्पाल पूजा ॥ नैऋत्याय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० अमुकपू०
 आ० बलिं० उदय० स्वाहा नैऋत्याय नमः ॥ पश्चिम० ॥ ५ ॥ अथ वा
 यव दिग्पाल पूजा ॥ नैऋत्याय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० द०
 अमुकचैत्यै० अमुकपूजामहो न्वे० आ० बलिं० उदयम० स्वाहा
 नैऋत्याय नमः ॥ वायव्य ॥ ६ ॥ अथ कुबेर दिग्पाल पूजा ॥ नैऋ
 त्याय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमु
 कपूजामहो न्वे आ० बलिगृ० उदय० स्वाहा नैऋत्याय नमः उत्तर
 दिशि ॥ ७ ॥ अथ ईशान दिग्पाल पूजा ॥ नैऋत्याय सायु०
 सवा० सप० अस्मि० द० अमुकपू० आ० बलिं० उद० स्वाहा
 नैऋत्याय नमः ॥ ईशानकूल ॥ ८ ॥ अथ ब्रह्म दिग्पाल पूजा ॥
 नैऋत्याय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० द० अमुकन० अमुकचैत्यै

अमुक पू० आ० वलि० उदय० स्वाहा नैब्रह्मणेनमः ॥ उर्ध्वदिशि०
॥ ए ॥ अथ नाग दिग्पाल पूजा ॥ नैनागाय सायु० सवा० सप०
अस्मिन्० दक्षि० अमुकन० अमुकचैत्यै अमुकपू० आ० वलि०
उदय० स्वाहा नैनागायनमः ॥ १० ॥ अथोदिशि अष्टङ्ग्य चढावै ॥
ऊपर कसूंमल वस्त्र बांधै मौलीसे, पीठै ॥ नैदशदिग्पालायनमः
॥ एसा कहके यथाशक्ति रोकमङ्ग्य समेत नागरवेलका पांन आदि
सर्व ङ्ग्य चढावै, पट्टेके चोतरफ दस घृतके दीपक धरे अथवा एक
दीपक आगै धरै ॥ इति दस दिग्पाल पूजमविधिः ॥

॥ अथ नव ब्रह्म पूजनविधिः ॥

॥ अथ सूर्य पूजा ॥ नैनमोआदित्याय सायुधाय सवाहना
य सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणऋतक्षेत्रे अमुकनगरे अमुक
चैत्यै अमुकपूजामहोद्यवे आगच्छ २ वलिपूजांगृहाण २ उदयमङ्ग्युदयं
कुरु २ अत्रपीठेतिष्ठ २ स्वाहा नैसूर्यायनमः ॥ (एसापढकेजलचंदनादि
अष्टङ्ग्यचढावै) ॥ १ ॥ अथ चंद्रपूजा ॥ नैचंडाय सायु० सवा० स
प० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुकपू० आ० वलि ५०
उदय० अष्टपीठेति० स्वाहा नैचंडायनमः ॥ २ ॥ अथ मंगल पूजा ॥
नैनमोन्नोमाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमु०
अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे उदय० स्वाहाः नैन्नोमायनमः ३ ॥
अथ बुधपूजा ॥ नैनमोबुधाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अ
मुकनग० अमु० चै० अमुकपू० आ० वलि० उदयम० अत्रपी०
स्वाहा नैबुधायनमः ॥ ४ ॥ अथ वृहस्पति पूजा ॥ नैनमोवृहस्पतये
सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुक
पूजाम० आ० वलि० अत्रपी० उदय० स्वाहाः नैवृहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥
अथ शुक पूजा ॥ नैनमोशुक्राय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जंबू
हो० द० अमुकन० अमुकचैत्ये० अमुकपू० आ० वलिगृ० अत्र

पीठे उदयम० नैशुक्रायनमः ॥ ६ ॥ ॥ अथ शनि पूजा ॥
 नैमोशनिश्वराय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन०
 अमुकचैत्ये० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे तिष्ठ१ उदयम०
 स्वाहा नैशनिश्वरायनमः ॥ ७ ॥ ॥ अथ राहु पूजा ॥ नैम
 मोराहवे सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै
 त्ये अमुकपूजा० आ० वलि० अत्रपी० उदयम० नैराहवेनमः॥८॥
 अथ केतू पूजा ॥ नैमोकेतवे सायु० सवा० सप० अस्मिन्
 न्जं० द० अमुकनग० अमुकचै० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे
 तिष्ठ२ उदय० स्वाहा ए नैकेतवेनमः ॥ इति ॥ (इसी मुजब ऊपर लाल
 वस्त्र मोलीसे बांधे पीठे नागरबेलके पान आदि अष्टड्य रोकन ड्य
 समेत सांभने जेट धरे फेर ऐसा कहे ॥ नैवग्रहायनमः ॥ च्यारों तरफ
 नवदीपक वा एक दीपक सांभने धरे इति मवग्रह थापन पूजनविधिः
 ॥ बाये तरफ मंरुलके नवग्रहकी थापना करे दहिणे बाजू दसदिग्पाल
 की थापना करे ॥ जिस महोन्नवमें इनोकी पूजा कराणी उस महो
 न्नवका नाम लेणा विशेष विधि गुरुमुखसे सीखणी ॥ शुद्ध जल
 से पवित्रपणे बनायाजया सधवस्त्रीके या पुरुषके हाथसे पांचरंग
 के धानके बाकला पांच रंगकी खजली गुलगुला खीर दहीका करवा
 मालपूवा पांचरंगके लड्डु इत्यादि खाद्य उत्तम वस्तु मंगाकर एक परातमें
 सब ड्य एकठो करै नुर घृत खांन अक्षर गुलाबजल पंचरंगे फूल
 यहजी बाकलोंमें मिलावे पीठे गुरु ३ तीन बार मंत्रके तीन बेर
 बाकुलो पर वासक्षेप मालै,) अथ वासक्षेप मंत्र ॥ नैहांहीसवोंप
 एवंबिंबस्यरक्षस्वाहा नैमोअरिहंताणं नैमोसिद्धाणं नैमोआ
 यरिआणं नैमोउवज्जायाणं नैमोलोएसवसाहूणं नैमोआगास
 गामीणं नैमोचारणलद्धीणं जेइमे किन्नर किंपुरस महोरग गरुड
 गंधर्व जरक रक्कस पिशाच न्यूअ माइणप्पज्जइउ. जिणघरनिवासिं

णा सन्निधियाय तेसबेविलेवण ध्रुवपुष्पफलवश्वसणाहिं वलिपद्मि
 ञ्चन्ता तुष्टिकराज्वंतु पुष्टिकरा संतिकराज्वंतु सवज्जणकुर्वंतु सवजि
 णाणं संहणप्पजावज पसज्जजावतणे सवत्थरसंकुर्वंतु सवडुरियाणी
 नासंतु सवाशिवसुवससंतु संतितुष्टिपुष्टिलिवसत्थयणकारिणोज्वंतु
 स्वाहाः ॥ इस मंत्रसें तीन वेर वासुदेवकुं मंत्रके बलबाकुलमें
 मालके सुद्ध करे ॥ पीछे आधा बलबाकुल दूसरी परातमें विसर्जनके
 वास्ते बलसें ढककर रखलेने. आधा लेकर घरके तथा चैत्यके ऊपर
 इग्यारे स्त्रात्रिया शुद्ध होकर पहला एक श्रावक चोटीके बाज खों
 लकर बलबाकुल लेके पूर्वकी तरफ खड़ा रहे, २ दूसरा केसरकी
 कटोरी, ३ तीसरा पुष्पकी चंगेरी, ४ चौथा ड्रेता, ५ पांचमा धूप
 धाणा, ६ छटा दीपक, ७ सातमा चमर, ८ आठमा घंटा, नववा
 जलका कलश, १० दसवा बलबाकुलकी घाडी, ११ इग्यारवा मंग
 लवाजित्र. इस तरे सब स्त्रात्रिये एकेक दिशाकी तरफ खड़ा रहे.
 जब गुरु शुद्धमंत्र उच्चारण करचूकै तब क्रमसें जल चंदन फूल वा
 कुलादिक चढ़ावै, चामरकरे, आरीसा दिखावै, वाजित्र बजावै ॥

॥ अथ दस दिग्पाल आह्वानमंत्र ॥

॥ ऐरावतःसमारूढः शक्रः पूर्वदिशिस्थितः संघस्यशांतयेस्तु
 स्तु वलिपूजांप्रयच्छतु ॥ १ ॥ (ऐसा कहके पूर्वदिशाकी तरफ
 बलबाकुल चढ़ावै) (अग्निकूशके सांघने) ॥ सदावह्निदिशो
 नेता पावकोमेपवाहनः संघस्यशांतयेस्तु वलिपूजांप्रयच्छतु ॥ २ ॥
 (ऐसा कह बाकुलादिद्रव्य चढ़ावै) (दक्षिणदिशकी तरफ) ॥
 दक्षिणस्यांदिशःस्वामी यमोमहिषवाहनः संघस्य० वलि० ॥ ३ ॥
 (बलबाकुल चढ़ावै वाजित्र बजावै) (नैऋतकूणकी तरफ) ॥
 यमापरांतरालोको नैऋतः शिववाहनः संघस्य० वलि० ॥ ४ ॥
 (अथ पश्चिमदिशि) ॥ यः प्रतीचीदिशोनाथः वरुणोमकरस्थितः

संघस्य० वलि० ॥ ५ ॥ (अथ वायव्यकूण) ॥ हरिणोवाहनंयस्य
 चायव्याधिपतिर्मरुत् संघस्य० वलि० ॥ ६ ॥ (अथ उत्तर दिशि)
 ॥ निधाननवकारूढ उत्तरस्यादिशिप्रभुः संघस्य० वलि ॥ ७ ॥
 (ईशान कूण) ॥ सितेदृषेधिरूढश्च ईशानांचदिसोविभुः संघस्य०
 वलि० ॥ ८ ॥ (अथ अधोदिशि) पातालाधिपतियोस्तु सर्वदापद्म
 वाहनः संघस्य० वलि० ॥ ९ ॥ (अथ उर्ध्वदिसि) ब्रह्मलोकवि
 ज्ञोयस्तु राजहंससमाश्रित संघस्य० वलि० ॥ १० ॥ इति दश दि
 ग्पाल आह्वानविधिः ॥

॥ अथ पूजा प्रतिष्ठादि हुयां पीछे दिग्पाल विसर्जनविधि ॥

॥ थोर बलवाकुलादि द्रव्यपूजा पूर्ववत् ॥

॥ नैनमोईंजाय पूर्वदिग्धिष्टायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्र

नेत्राय वज्रायुधाय सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणाईं अमुं रुन
 गरे अमुकचैत्ये अमुं रुमहोद्यवे सर्वोपद्वाद्दलिरक्ष १ गच्छ १ स्वाहा ॥

पूर्वदिशाकी तरफ नैंंजायनमः ॥ १ ॥ (अग्नि कूण) ॥ नैनमोअ

ग्निमूर्त्तये शक्तिहस्ताय सायुधाय सवा० सप० अस्मिन्० अमुक०

सर्वोपद्वाद्दलिरक्ष २ गच्छ २ स्वाहा ॥ इति ॥ (दक्षिणदिशि) नैनं

मोअ दक्षिणदिग्धिष्टायकाय महिषवाहनाय दंरुआयुधाय कृष्ण

सायु० सवा० सप० अस्मि० सर्वोपद्वाद्दलिरक्ष १ गच्छ १ स्वा

३ ॥ इति ॥ (नेरुतकूणे) ॥ नैनमोनेरुताय खरुगहस्ताय

सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्वाद्दलिरक्ष २ गच्छ २

४ ॥ इति ॥ (पश्चिमदिशि) ॥ नैनमोवरुणाय पश्चिम

दिग्धिष्टायकाय मकरवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु०

सर्वोपद्वाद्दलिरक्ष १ गच्छ १ स्वाहा ॥ ५ ॥ इति ॥ (वायवकूणे) ॥

नैनमोवायवे वायवाधिपतये ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सायु०

सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्वाद्दलिरक्ष २ गच्छ २ स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥

(उत्तरदिशि) ॥ नैनमोधनदाय उत्तरदिग्धिष्टायकाय नरवाहनाय
 गन्दाहस्ताय सप० अस्मि० अमुकनगरे सर्वोपद्रवाहलि० गच्छ१ स्वा
 हा ॥ ७ ॥ इति ॥ (ईशाणकूले) नैनमोईशानाय त्रिसूलहस्ताय
 ईशानाधिपतये वृषजवाहनाय सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाह
 लि० गच्छ१ स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति ॥ (उर्ध्वलोके) नैनमोब्रह्मणे रा
 जहंसवाहनाय उर्ध्वलोकाधिष्टायकाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्०
 अमु० सर्वोपद्रवाहलि० गच्छ० स्वाहा ॥ ९ ॥ इति ॥ (अधोलोके)
 नैनमोनागाय पातालनिवासाय पद्मवाहनाय० सायु० सवा० सप०
 अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाहलि१ गच्छ२ स्वाहा ॥ १० ॥ (इस
 तरे पढे बाद सर्व देवतोंके विसर्जनका श्लोक पढै ॥ यथा ॥ शक्राद्या
 लोकपालादिशिवदिसिगता शुद्धसद्धर्मशक्ताः, आयातास्त्रात्रकाले क
 लुषहृतिकृते तीर्थनाथस्यजक्त्याः न्यस्ताशेषापशद्याविहितशिवसु
 खाः स्वास्पदंसांप्रतंतं, स्त्रात्रेपूजामवाप्यस्वमतिकृतमुदोयांतुकल्याण
 प्राजः ॥ १ ॥ आग्याहीनंक्रियाहीनं, मंत्रहीनंचयत्कृतं; तत्सर्वहम
 तंदेवः, प्रसीदपरमेश्वरः ॥ २ ॥ आह्वानंनैवजानामि, नैवजानामि
 पूजनं; विसर्जनंनैवजानामि, त्वमेवशरणंमम ॥ ३ ॥ पीठै यथाश
 क्ति ज्ञानपूजा गुरुपूजा साधर्मीवात्सल्य करै ॥ इति नवग्रह दश
 दिग्पाल स्थापन आह्वान विसर्जन विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद मंडल पूजाविधि ॥

प्रथम सुंदर अंगोपांगवाले नव स्त्रात्रिया मंत्रितजलसें स्नान
 करे (जलमंत्र) ॐ ह्रीं अमृतेअमृतोन्नवे अमृतवर्षणी अमृतंश्राव
 य१ स्वाहा (इस मंत्रसें जलमंत्रे, पीठे) ॐ ह्रीं अमलेविमले वि
 मलोन्नवे सर्वतीर्थजलोपमे पांपावावाअशुचिशुचिन्नवामिस्वाहा (इस
 मंत्रकों सातवेर पढता हुवा स्नान करे, पीठे ॥ ॐ ह्रीं आँ क्राँः॥ (सा
 त वेर इस मंत्रसें वस्त्र शुद्ध कर पहिरे पीठे ॥ ॐ आँ ह्रीं क्राँ अर्दते

नमः) इस मंत्रसें सान वेर गुरु पाससें केसर मंत्रायके तिलक करै. (पीठै) नै हूँ अवतर २ सोमे २ कुरु २ वडगु २ सुमणसे सो मणसे महुमहुरे नैकवलीकः कः स्वाहा ॥ (इस मंत्रसें मोली मेंढल मरोमाफली मंत्रायके हाथके बांधै नर जब मंमलजीके व्यासं तरफ मौलीमेंढल बांधे सोज्जी इसी मंत्रसें मंत्रायके बांधे. इस तरे अपना अंग शुद्ध करके स्नात्रिया गुरुके सामने हाथ जोमके बैठै तब गुरु आत्मरक्षा स्तोत्र जो पहिली लिखा हे उससें तीन वेर पढ़के गुरु आत्मरक्षा करवावे. पीठै तीन वेर नवकारमंत्रसें मंत्रके चोटीके गांठ देवे तथा तीन नवकार गुणके सब स्नात्रियाके कानामें फूंक देवे. इतनी विधी तो हरकोइ पूजा प्रतिष्ठा मंमलादिकमें स्नात्रियोंको प्रथम अवस्य कराणी चाहियें. पीठै मंदिर्जीमें अधिष्टायक जो देव देवी होय उसकी पूजा करावै अष्टङ्ग्य चढ़ावै. पीठै चंपेलीके तेलमें हिंगलू वा सिंदूर मिलाके क्षेत्रपालजी की पूजा करे, चांदीके वरक या मालीपाना चढ़ावै, अतर चढ़ावे, फूल धूप नैवद्य फल जल शोकङ्ग्य इत्यादि सर्वङ्ग्य (नैक्षेत्रपाला यनमः) ऐसा बोलता हुवा चढ़ावै. पीठै मंमलजीके दहणे तरफ १० दिग्पालके पट्टेकी थापना करे. अकेक दिग्पालकी पूजा पढ़के जल चंदनादि सर्व ङ्ग्य चढ़ावै. नागरवेलके पांन समेत दसोंकी पूजा पढ़के ऊपर लालवस्त्र मोलीसें बांधे. आगे फेर सर्व द्रव्य चढ़ाके दीपक करै. पीठे बायें तरफ नवग्रहके पट्टेकी थापना कर पूर्वोक्त काव्य पढ़के इसी मुजब पूजा करै.) पीठै सर्व स्नात्रिया कूं १७ स्तुतीसें देववंदावै.

अठारे स्तुतिका देववंदाणेकी विधी लिखते हैं ॥ पहली इरियावही पन्क्तिमें चार नवकारका काजसग्न कर लोगस्स कहे. नीचे बैठके दहिणागोमा धरतीपर रख के मावागोमा नमीभूत करके चैत्यवंदन करै.

नमोऽनु० कहेके अरिहंतचेश्याणं० वंदणवन्ति० अन्ननु० १
 एक नवकारका काजसग करै. नमोर्हत् सिद्धा० कहेके यदंहिन
 मनादेव शुईकी पहली गाथा कहे ॥ लोगस्स० वदण० अन्ननु० एक
 नवकारका काजसग इस शुईकी दुसरी गाथा कहे. पुरक
 रवरदी० वंदणवन्ति० एक नवकारका काजसग० शुईकी तीसरी
 गाथा कहे. सिद्धाणंबुद्धा० वेयावच्चगरा० वंदणव० एक नवकारका
 काजसग शुईकी ४थी गाथा कहे. पीठै वेठके नमोऽनु० कहेके खमा
 हो के श्रीशांतिनाथ देवाधिदेव आराधनार्थ करेमिकाजसगं वंदण
 व० अन्ननु० १ नवकारका काजसग कर० ॥ रोगशोगादिज्जिर्दोपै रं
 जितायजितारये नमः श्रीशांतयेतस्मै विहितानतशांतये ५ (ततः
 श्रीशांतिदेवतानिमित्तंकरेमिकाजसगं० १ नवकारका काजसग)
 ॥ श्रीशांतिजिनज्जाय ज्ञायायसुखसंपदं श्रीशांतिदेवतादेया दशांति
 मपनीयते ६ (ततः श्रीशुतदेवतानिमित्तं०) सुवर्णशाखनीदेयात्
 द्वादशांगीजिनोद्भवा श्रुतदेवीसदामह्य मशेषश्रुतसंपदं॥७॥ (ततः श्री
 ज्ञुवनदेवताआराधनार्थं०) चतुर्वर्णायकीस्तुति १ गाथा कहे ॥ (ततः
 क्षेत्रदेवतानिमित्तं०) यासांक्षेत्रगतास्सन्ति १ गाथा कहे ॥ ए ॥
 (ततः श्रीअंबिकादेवतानिमित्तं०) अंबानिहितमिंवामे सिद्धबुद्धसम
 न्विता सितोसिंहेस्थितागौरी वितनोत्तुसमीहितं ॥ १० ॥ (ततः श्री
 पद्मावतीदेवतानिमित्तं०) धराधिपतिपत्नीया देवीपद्मावतीसदा कुड्मे
 पद्भवतःसामां पातुफुल्लत्फणावली ॥ ११ ॥ (ततः श्रीचक्रेश्वरीदे
 वतानि०) चंचश्चक्रधराचारु प्रवालदलसन्निष्ठा चिरंचक्रेश्वरीदेवी
 नंदतानिवज्राच्चमां ॥ १२ ॥ (ततः श्रीअनुभादेवतानि०) खड्गखे
 दककोदंरु वाणपाणिस्तमित्युतिः तुरंगममनाहुता कड्याणानिकरो
 तुमे ॥ १३ ॥ (ततः श्रीकुवेरदेवतानि०) मथुरापुरीसुपार्थ श्री
 पार्थस्तूपरक्का श्रीकुवेरानगरारूढा सुतांकावतुवोज्ञयात् ॥ १४ ॥

(ततः श्रीब्रह्मदेवतानिमित्तं करेमि) ब्रह्मशांतिसमांपाया दपाया
दीरसेवकः श्रीमत्सत्यपुरेसत्या येनकीर्त्तिःकृतानिजः ॥ १५ ॥

(ततः श्रीगोत्रदेवतानिमि०) यागोत्रंपालयत्येव सकलापायतःस-
दा श्रीगोत्रदेवतारक्षां शंकरोतुनतांगिरां ॥ १६ ॥ (ततः श्रीशक्रा
दिसमस्तदेवतानिमि०) श्रीशक्रप्रमुखायक्षा जिनशासनसंस्थिताः
देवादेव्यस्तदन्येपि संघरक्षंत्वपायतः ॥ १७ ॥ (ततः श्रीसिद्धायि
का श्रीशासनदेवतानि० च्यारलोगस्सको काञ्चस्सग्गकर स्तुति
कहे) श्रीमद्विमानमारूढा यक्षमातंगसेविता सामांसिद्धायिकापातु
चक्रेचापेपुधारणी ॥ १८ ॥ लोगस्स कहके वेठै चैत्यवं० नमोत्तु०
जयवीयराय पर्यंत कहै ॥ इस तरै १८ स्तुतिसे देववांछण विधि॥

॥ अथ मंडल प्रतिष्ठाविधिः ॥

॥ प्रथम दोनों तरफ मौली सूत्रकी वत्ती जगाके घृतका दी
पक करै, इन दोनों दीपकको चार प्रहर अखंरु रखै (पीठै) सो
ने चांदी वगेर के कलसमें अबोटजल जरके सोनवाणी करै, हाथमें
कलस लेके सात नवकार गुणै ॥ ॐ ह्रीं जीरावलापार्श्वनाथरक्षांकुरु
स्वाहा ॥ इस मंत्रसें सात बेर जलको मंत्रके मंमलजीके च्यारों तर
फ धारा देवे, ऊपर जरा ठींटा देकर पवि करै, धूपखेवै (पीठै)
नवतारी मौलीसूत्रका साढातीन आंटा मंमलजीके बाहर करदेवे,
पूर्वोक्त मंत्रसें मंत्रके मौली तथा मंडल मरोमाफली चारुं तरफ
वांछे (पीठै) केसरकी कटोरी हाथमें लेके ॥ ॐ आं ह्रीं श्री अर्हतेनमः ॥
इस मंत्रसें मंत्रके मंमलके ऊपर केसरका ठींटा देवे (ऊपर) चा
वलोंको साधियो करै, टीकीदेवे, मंमलके अगामी साधिया चाव
लोंका वा नंद्यावर्त्त करके नालेर रुपिया ऊपर जेट धरै, (पीठै)
केशरचंदन लेकर मंमलजीके चारों तरफ तीन रेखा आलेखन क
रै ॥ (पीठै) वासुदेव पुष्प हाथमें लेके ॥ ॐ जूगसीजूतधात्रीविश्वा

धारैनमः ॥ इस मंत्रसे सात बेर मंत्रके मंमलजूमि तथा पीठकी पूजा करै, फेर आचार्यगुरु वासकेप हाथमें लेके ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं त्पीठायनमः ॥ इस मंत्रसे सात बेर मंत्रके मंमलपीठकी पूजा करे (पीठै) स्नात्रिया हाथमें पुष्प चावल ले लेके तीन बेर मंमल कों वधावे. नीचे चावलोंका साधिया करके रुपिया नालेर आपना कों धरे (पीठै) स्नात्रिया मंदरके भीतरसे प्रतिमाजी लायके त्रि गम्मेके सिंहासण पर मंत्र पढके आपन करै. (स्थापनमंत्र) ॥ ॐ नमोअर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखायपरमेष्ठिने दिग्कुमरीपरिपूजिताय च तुषष्टिसुरासुरैर्जसेविताय देवाधिदेवाय त्रैलोक्यमहिताय अत्रपीठेति षष्ठं स्वाहाः ॥ इस मंत्रको ७ बेर पढके नव प्रतिमा वा एक प्रतिमा स्थापन करै इस तरे मंमलप्रतिष्ठा करके पीठै सिद्धचक्रपूजा सुरू करै ॥

॥ अथ सिद्धचक्र पूजा ॥

॥ प्रथम एक रकेवीमें सपेद गोटा, सपेद वस्त्र, सपेद धजा, ८ कर्कतनरत्न, ३४ हीरा, पुष्प अक्षत फल नैवद्य दीप धूप हाथमें ले के अरिहंतपदकी पूजा पढै (यथा) अथाष्टदलमध्याब्ज कर्णिकायांजिनेश्वरान् आविर्भूतोत्पलसद्वोधा नात्रतःस्थापयाम्यहं ॥ ॥ १ ॥ निःशेषदोषेधनधूमकेतुः नपारसंसारसमुद्रसेतून् यजैसमस्ता, तिशयैकदेतून् श्रीमज्जिनानांबुजकर्णिकायां ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं त्रयोनमः स्वाहा (इस मंत्रकूं बोलके अर्हत्पदकी पुजा करै. अपने २ जगे सर्व द्रव्य चढावै. पीठै रकेवीमें लालगोटा, लालधजा लालवस्त्र, ८ मांणकरत्न, ३१ मूंगा, अष्ट द्रव्य लेके सिद्धपूजा पढै (यथा) तस्यपुर्वदले सिद्धान् सम्यक्तादिगुणात्मकान् निःश्रेयसंपदंप्राप्तान् निदयेत्तन्निर्जरः ॥ ३ ॥ तत्पूर्वपत्रे गतितः प्रणष्टः दुष्टाष्टकर्माभिमिश्रशुद्धि प्राप्तान्नरान्सिद्धिमनंतबोधान् सिद्धान्यजेशांतिकरान्नराणां ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धे त्रयोनमः स्वाहा (पूर्व दिसकी तरफ सिद्धपदकी

पूजा करै. सर्व द्रव्य चढावै इति ॥ (पीठै) रैकबीमें पीला गोटा,
पीली धजा, पीलावस्त्र, ५ गोमेदकरत्न, ३६ सोनेकाफूल, जलादि
सर्व द्रव्य ले के पूजा पढै (यथा) स्थापयामिततःसूरीन् दक्षिण
स्मिन्दलेमले चरतःपंचधाचारान् षट्त्रिंस्तगुणैर्युतान् ॥ ५ ॥ सू
रीसदाचारविचारसारा नाचारयंतः स्वपरान्यथेष्टं उग्रोपसर्गैकानेवा
रणार्थं मन्त्र्यर्चयाम्यक्षतगंधधूपैः॥६॥ ॐ ह्रीं श्रीं सूरीज्योनमः स्वा
हा (दक्षिणदिसकी तरफ आचार्य आपना पूजा करै इति ॥ पीठै)
हरागोटा, हरीधजा, हरवस्त्र, मूंगकालरु, ४ इंद्रनील, २५ मरकतप
न्ना, सर्व द्रव्य लेके खमा रहे. उपाध्याय पद पूजा पढै (यथा)
षादशांगश्रुताधारान् शास्त्राध्ययनतत्परान् निवेशयाम्युपाध्यायान्
पवित्रेष्वश्विमेदले ॥ ७ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशंप्रशांत्यै पठंतियेन्या
न्यपिपाठयंति अध्यापकस्तांनपराब्जपत्रै स्थितान्पवित्रान्परिपूज
यामि ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेज्योनमः स्वाहा (पश्चिमदि
शाकी तरफ उपाध्यायपदकी आपना पूजा करै इति ॥ पीठै)
स्यामगोटा, स्यामवस्त्र, स्यामधजा, उरुदकालरु, ५ राजपट्ट, २७
अरिष्टरत्न, जलादि सर्व द्रव्य ले के साधूपदकी पूजा पढै (यथा)
व्याख्यादिकर्मकुर्वाणान् शुज्जध्यानैकमानसान् उदकपत्रगतान्द्वारान्
साधुवासीससुव्रतान् ॥ ९ ॥ वैराग्यमंतर्वचसिप्रसिद्धं सत्यंतपोद्वा
दंशधाशरीरे येषामुदक्यवगतान्सुकृतान्पवित्रान् साधून्सदातान्प
रिपूजयामि ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सर्वसाधुज्योनमः स्वाहा ॥ ५ ॥
(उत्तरदिसाकी तरफ साधूपदकी आपना पूजा करै इति ॥
पीठै) सपेदगोटा, सपेदधजा, सपेदवस्त्र, ६७ मोती, सर्व द्रव्य
हाथमे ले के खमा रहे काव्य पढै (यथा) जिनेंद्रोक्तमनश्चक्ष, ल
क्षणेदर्शनेयजे ॥ मिथ्यात्वमग्रनंशुद्धं, न्यस्तमीशानसद्वले ॥ ११ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शनायनमः स्वाहाः (ईशानकूर्णमें दर्शनपदकी

आपना पूजा करै इति ॥ पीठै) ५१ मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा,
 श्वेतवस्त्र, चावलोकालक्षु, आदि सर्व द्रव्य ले खम्हा रहै ॥ काव्य
 पढै (यथा) मशेषद्रव्यपर्याय, रूपमेवावज्ञासकं ॥ ज्ञानमाग्नेयप
 त्रस्थं पूजयामिहितावहं ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानायनमः
 स्वाहा ॥ ७ ॥ (अग्निकूणकी तरफ ज्ञानपदकी आपना पूजा करै ॥
 इति ॥) फेर) रकेवीमें ७० मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा, श्वे
 तवस्त्रादि सर्व द्रव्य ले के खम्हा रहे. काव्य पढै (यथा) सामायि
 कादिजिज्ञेदै, श्रारित्रचारुपंचधा ॥ संस्थापयामिपूजार्थ, पत्रैहनेरु
 तैक्रमात् ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग्चारित्रायनमः स्वाहा (नैरु
 तकूणकी तरफ चारित्रपदकी आपना पूजा करै इति ॥ ८ ॥)
 पीठै) रकेवीमें ५० मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा वस्त्रादि सर्व
 द्रव्य लेके काव्य पढै (यथा) द्विधाछादशयाजिनं, पूतेपत्रतपस्व
 यं ॥ निधाययामिजक्तयात्र, वायव्यांदिशिशर्मदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं
 श्री सम्यग्गतपसेनमः स्वाहाः (वायव्यकूणकी तरफ तपपदकी आ
 पनापूजा करै इति ॥ अथअर्थ) निःस्वेदत्वादिदिव्यातिशयम
 धतनन्श्रीजिनेद्रान्सुसिद्धान्, सम्यक्तादिप्रकृष्टाष्टकयुगान्नृदाचार
 साराश्वसूरीन् ॥ शास्त्राणिप्राणिरह्याप्रवचनरचनासुंदराण्यदिसंज्ञं,
 स्तत्सिद्धयैषाठकानांयतिपतिसहिता नर्चयाम्यर्घदानै ॥ १५ ॥ इत्थं
 अष्टदलंपद्मं, पूरयेदर्हदादिजिः ॥ स्वाहांतैप्रणवाद्यश्च, पदैर्विघ्ननिवृत्त
 ये ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हं अतिआजसा सम्यग्दर्शन ज्ञान चा
 रित्र तपसेज्यो ह्रीं श्री अर्हं परमेष्ठिन परमनाथ परमदेवाधिदेव
 परमार्हन् परमानंतचतुष्टय परमात्मनेतुज्यंनमः (इति मूलामंत्र)
 इति सिद्धचक्र प्रथम वलय पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय वलय पूजा ॥

पहिले वलयमें एक तो बीचमें चार दिशिमें चार विदि

सोमे ऐसे अष्टदल कमलके आकार नव कोठे मंजलके मध्य प्राग
में होय उनोकी पूर्वोक्त प्रकार पूजा करवै (पीठै) दूसरे वलयमें
चूनीके आकार १६ कोठा होय (जिसमें) एकेक कोठाके अनं
तर आठ कोठोंमें अवर्गादि आठ वर्ग स्थापन करै (ओर) एकेक
कोठा बीचमें खाली रहा है उसमें अनाहतपद नुँ ह्रीं एमो अरि
हंताणं) ऐसा पद स्थापन करै (पीठै) एक रकेवीमें मिश्री ल-
वंग (तथा) एक रकेवीमें मोटी दाखां ले के खना रहे. अनाहत
पदमें मिश्री लवंग चढावै ओर आठ वर्गमें दाखां चढावै (यथा)
(नुँ ह्रीं एमो अरिहंताणं) मिश्री लोंग चढाणा ॥ अ आ इ ई
उ ऊ रु ऋ नृ ए ऐ न औ अं अः (नुँ ह्रीं स्वर वर्गायनमः)
(इहां) १६ दाख चढावै १ (नुँ ह्रीं एमोअरिहंताणं) मिश्री
लोंग ३ क ख ग घ ङ (नुँ ह्रीं व्यंजनकवर्गायनमः) १६ दाख
चढावै ४ (नुँ ह्रीं एमोअरिहंताणं) ५ च ठ ज ञ त्र (नुँ ह्रीं
त्रवर्गायनमः ॥ ६ (नुँ ह्रीं एमोअरिहंताणं) ७ ट ठ ढ ण
(नुँ ह्रीं टवर्गायनमः) ८ (नुँ ह्रीं एमोअरिहंताणं) ९ त थ द
ध न (नुँ ह्रीं तवर्गायनमः) १० (नुँ ह्रीं एमोअरिहंताणं) ११
प फ ब ज्ञ म (नुँ ह्रीं पवर्गायनमः) १२ (नुँ ह्रीं एमोअरिहंता
णं) १३ य र ल व (नुँ ह्रीं यवर्गायनमः) १४ (नुँ ह्रीं एमो
अरिहंताणं) १५ श ष स ह (नुँ ह्रीं शवर्गायनमः) १६ पहिले
अ वर्गसे प वर्ग तक वर्ग प्रति सोले १ दाख चढावै सब ९६
(ओर) य र ल व १ श ष स ह १ इण दो वर्गोंमें ६४ चौसठ
दाख चढावै इति ॥ दूसरा वलय पूजा ॥ २ ॥

॥ (अब तीसरा वलयमें) चार दिश चार विदिशिमें आठ
परमेष्ठिपद स्थापन निमित्त आठ कोठा करै इस आठ कोठाके
बीचमें वलाका तीन २ देवे तीनुं वलाकामे २४ खाना होय एके

क खानेमें ९ दोय ९ दोय लब्धिपद स्थापन करणेतैं चोवीस घरौ
में ४८ लब्धिपद होय स्थापन कर पूजन करणा ॥

॥ अथ लब्धिपद पूजनविधि ॥

आठ परमेष्ठीपदमें (नैं ह्रीं परमेष्ठिनेनमः स्वाहा) एसा
८ वेर कहके ८ बीजोरा चढावै, नर लब्धिपदका नाम बोलके खा
रका ४८ चढावै (यथा) नैं ह्रीं अर्हणमोजिणाणं ॥ १ ॥ नैं ह्रीं
अर्हणमोउहिजिणाणं ॥ २ ॥ नैं ह्रीं अर्हणमोपरमोहिजिणाणं ॥
॥ ३ ॥ नैं ह्रीं अर्हणमोसबोहिजिणाणं ॥ ४ ॥ नैं ह्रीं अर्हणमोअ
णंतोहिजिणाणं ॥ ५ ॥ नैं ह्रीं अर्हणमोकुब्बुद्धीणं ॥ ६ ॥ नैं ह्रीं
अर्हणमोवायबुद्धीणं ॥ ७ ॥ नैं ह्रीं अर्हणमोपयाणुसारीणं ॥ ८ ॥
नैं ह्रीं अर्हणमोआसोविसाणं ॥ ९ ॥ नैं ह्रीं अर्हणमोदिठिविसाणं ॥
॥ १० ॥ नैं ह्रीं अर्हणमोसंजिन्नसोयाणं ॥ ११ ॥ नैं ह्रीं अर्हणमोस
यंसंबुद्धाणं ॥ १२ ॥ नैं ह्रीं अर्हणमोपत्तेयबुद्धाणं ॥ १३ ॥ नैं ह्रीं अ-
र्हणमोबोहिवुद्धीणं ॥ १४ ॥ नैं ह्रीं अर्हणमोउज्जुमईणं ॥ १५ ॥
नैं ह्रीं अर्हणमोविजलमईणं ॥ १६ ॥ नैं ह्रीं अर्हणमोदसपूवीणं ॥ १७ ॥
नैं ह्रीं अर्हणमोचउदसपूवीणं ॥ १८ ॥ नैं ह्रीं अर्हणमोअवंगनिमत्तकु
सलाणं ॥ १९ ॥ नैं ह्रीं अर्हणमोविजवणइठिपत्ताणं ॥ २० ॥ नैं ह्रीं
अर्हणमोविज्जाहराणं ॥ २१ ॥ नैं ह्रीं अर्हणमोचारणलद्धीणं ॥ २२ ॥
नैं ह्रीं अर्हणमोपप्पासमणाणं ॥ २३ ॥ नैं ह्रीं अर्हणमोआगासगामी
णं ॥ २४ ॥ नैं ह्रीं अर्हणमोखीरासवेणं ॥ २५ ॥ नैं ह्रीं अर्हणमोस-
प्पियासवाणं ॥ २६ ॥ नैं ह्रीं अर्हणमोमहुआसवाणं ॥ २७ ॥ नैं ह्रीं अ-
र्हणमोअमियासवाणं ॥ २८ ॥ नैं ह्रीं अर्हणमोसिद्धायणाणं ॥ २९ ॥
नैं ह्रीं अर्हणमोअयवयामहाइमहावीरवद्धमाणबुद्धरिस्सीणं ॥ ३० ॥
नैं ह्रीं अर्हणमोअगातवाणं ॥ ३१ ॥ नैं ह्रीं अर्हणमोअस्कीणमहाण-
सियाणं ॥ ३२ ॥ नैं ह्रीं अर्हणमोवद्धमाणाणं ॥ ३३ ॥ नैं ह्रीं अर्हण

मोदित्ततवाणं ॥ ३४ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोत्तततवाणं ॥ ३५ ॥ ॐ-ह्रीं अ
 र्हणमोमहातवाणं ॥ ३६ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोघोरतवाणं ॥ ३७ ॥ ॐ
 -ह्रीं अर्हणमोगोरगुणाणं ॥ ३८ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोघोरपरिक्रमाणं ॥ ३९ ॥
 ॐ-ह्रीं अर्हणमोघोरबंजयारीणं ॥ ४० ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोआमोसहि
 पत्ताणं ॥ ४१ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोखेलोसहिपत्ताणं ॥ ४२ ॥ ॐ-ह्रीं अ
 र्हणमोजह्नुसहिपत्ताणं ॥ ४३ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोविष्णोसहिपत्ताणं ॥
 ४४ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोसर्वोसहिपत्ताणं ॥ ४५ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोम
 णवलीणं ॥ ४६ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोवधणवलीणं ॥ ४७ ॥ ॐ-ह्रीं अर्ह
 णमोकायवलीणं ॥ ४८ ॥ ॐ-ह्रीं अर्ह अरुवाललब्धिपेदज्योनमः ॥ इत
 तरे लब्धिपदका नाम बोल २ के तीजे चोथे पांचमें वलयमें ४८ खारका
 चढ़ावै ॥ (पीठे) मंरुलजीके गलेमें -ह्रींकारजी स्थापन किया हे
 (जहांसे) साढातीन नवलाका मंरुलजीके चोतरफ देके नीचे
 (क्रों) ऐसा अक्षर लिखा हे (जिसके) प्रथम वलयमें आठ दि-
 शायें आठ गुरुपादका स्थापन करके ८ आठ दामिमफल चढ़ाव
 (यथा) ॐ-ह्रीं अर्हत्पाङ्कजाज्योनमः ॥ १ ॥ अनारचढ़ावै ॥ ॐ-ह्रीं सि
 ष्ठपाङ्कजाज्योनमः ॥ २ ॥ ॐ-ह्रीं आचार्यपाङ्कजाज्योनमः ॥ ३ ॥ ॐ
 -ह्रीं गुरुपाङ्कजाज्योनमः ॥ ४ ॥ ॐ-ह्रीं परमगुरुपाङ्कजाज्योनमः ॥
 ५ ॥ ॐ-ह्रीं अष्टगुरुपाङ्कजाज्योनमः ॥ ६ ॥ ॐ-ह्रीं अनंतगुरुपाङ्क
 जाज्योनमः ॥ ७ ॥ ॐ-ह्रीं अनंतानंतगुरुपाङ्कजाज्योनमः ॥ ८ ॥ ॐ
 -ह्रीं अष्टगुरुपाङ्कजाज्योनमः स्वाहा ॥ इत तरे ठेके वलयमें ८ द्वा
 र्मम चढ़ावै (पीठे) सातमा वलयमें आठों दिसामें जयादिक ८
 देवीको स्थापन करके ८ नारंगी चढ़ावै (यथा) ॐ-ह्रीं जयायै नमः
 स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ-ह्रीं जंजायै नमः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ-ह्रीं विजयायै नमः
 स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ-ह्रीं शंजायै नमः स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ-ह्रीं जयंत्यै नमः
 स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ-ह्रीं मोहायै नमः स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ-ह्रीं अपराजिता

धैनमः स्वाहा ॥ ७ ॥ मुँह्नीअंधायैनमः स्वाहा ॥ ८ ॥ (इसी
 तरे) सातमें वलयमें ८ नारंगी चढ़ावै (पीठे) आठमें वलयमें
 १६ विद्यादेवीयोकी स्थापना करके चांदीके वर्ग लपेटी १६ सुपा
 री चढ़ावै (यथा) मुँह्नीरोहण्यैनमः ॥ १॥ मुँह्नीप्रज्ञसैनमः ॥ २॥
 मुँह्नीवज्रशृंगलायैनमः ॥ ३ ॥ मुँह्नीवज्रांकुशायैनमः ॥ ४ ॥ मुँ
 ह्नीचक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥ मुँह्नीपुरुषदत्तायैनमः ॥ ६ ॥ मुँह्नी
 काल्यैनमः ॥ ७ ॥ मुँह्नीमाहाकाल्यैनमः ॥ ८ ॥ मुँह्नी
 गौर्यैनमः ॥ ९ ॥ मुँह्नीगंधार्यैनमः ॥ १० ॥ मुँह्नीसर्वास्त्र
 महाज्वालयैनमः ॥ ११ ॥ मुँह्नीमानव्यैनमः ॥ १२ ॥
 मुँह्नीवैरोह्यायैनमः ॥ १३ ॥ मुँह्नीअनुसायैनमः ॥ १४ ॥ मुँह्नी
 मानस्यैनमः ॥ १५ ॥ मुँह्नीमाहामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ इस तरे
 आठमा वलयकी दोलके वरक समेत सुपारी चढ़ा के पूजा करै पी
 ठे नवमें वलयके बायें तरफ शासनदेवीयां ॥ १४ की स्थापना
 कर पूजा करै ॥ १४ पूंगीफल चढ़ावै (यथा) मुँचक्रेश्वर्यैनमः ॥ १॥
 मुँअजितवलायैनमः ॥ २ ॥ मुँडुरितायैनमः ॥ ३ ॥ मुँकाल्यैनमः
 ॥ ४ ॥ मुँमहाकाल्यैनमः ॥ ५ ॥ मुँश्यामायैनमः ॥ ६ ॥ मुँशांतायैनमः
 ॥ ७ ॥ मुँनृकुट्टियैनमः ॥ ८ ॥ मुँसुतारकायैनमः ॥ ९ ॥ मुँअशोकायैनमः
 ॥ १० ॥ मुँमानव्यैनमः ॥ ११ ॥ मुँचंदायैनमः ॥ १२ ॥ मुँविदि
 तायैनमः ॥ १३ ॥ मुँअंकुशायैनमः ॥ १४ ॥ मुँकंदप्पाययिनमः
 ॥ १५ ॥ मुँमिर्वाण्यैनमः ॥ १६ ॥ मुँवलायैनमः ॥ १७ ॥ मुँधार
 ण्यैनमः ॥ १८ ॥ मुँधरणप्रियायैनमः ॥ १९ ॥ मुँनरदत्तायैनमः
 ॥ २० ॥ मुँगांधार्यैनमः ॥ २१ ॥ मुँअंविकायैनमः ॥ २२ ॥ पद्माव
 त्यैनमः ॥ २३ ॥ मुँसिद्धाधिकायैनमः ॥ २४ ॥ इति ॥ इहिणे त
 रफ २४ यक्षराजकी स्थापना करै वरकलपेटी २४ सुपारी चढ़ावै ॥
 (यथा) मुँब्रह्मशांत्यैनमः ॥ २४ ॥ मुँपार्थायैनमः ॥ २५ ॥ मुँगो

मेधायनमः ॥ २२ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ २१ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥
 २० ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ १९ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ १८ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥
 १७ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ १६ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ १५ ॥
 नैऋतकुट्यैनमः ॥ १४ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ १३ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥
 १२ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ ११ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ १० ॥
 नैऋतकुट्यैनमः ॥ ९ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ ८ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥
 ७ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ ६ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ ५ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥
 ४ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ ३ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ २ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ १ ॥
 नैऋतकुट्यैनमः ॥ १ ॥ इति ॥ पीठे चार दिशामें ४ द्वारपालकी
 स्थापना कर के पीठा बलवाकुल चढावे (यथा) नैऋतकुट्यैनमः
 ॥ १ ॥ पूर्वदिशि ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ २ ॥ दक्षिणदिशि ॥ नैऋतकुट्यैनमः
 ॥ ३ ॥ पश्चिमदिशि ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ ४ ॥ उत्तरदिशि ॥
 पीठे चार विदिसकी तरफ चार वीरपदमें काले बलवाकुल चढावे
 (यथा) नैऋतकुट्यैनमः ॥ १ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ २ ॥ नैऋतकुट्यैनमः
 ॥ ३ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ ४ ॥ (इस तरे दसमें बल
 यमें आठ दिशामें ४ द्वारपाल ४ वीर स्थापन करै पीठे पूर्ण कल
 सके आकार ऊपरसे कियाजया सिद्धचक्रजीके गलेके ठिकाणे ठि
 काणे नवनिधान पढ़ै तब सोने चांदीके कलसादिकोमें यथाशक्ति
 रोकनाणा मालके स्थापन करै) (यथा) नैऋतकुट्यैनमः ॥ १
 ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ २ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ ३ ॥ नैऋतकुट्यैनमः
 ॥ ४ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ ५ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ ६ ॥ नैऋतकुट्यैनमः
 ॥ ७ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ ८ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ ९ ॥ (इस तरे मुखस्थानकपदे ९ कलस स्थापन करै ॥ पीठे
 कोहलेका फल हाथमें ले के दक्षिणनेत्रके बराबर पासमें बंगली
 का आकार किया है (जहां) नैऋतकुट्यैनमः ॥ १ ॥ एसा

कहके चढ़ावै ॥ फेर कोइलाफल हाथमें ले के बायेंनेत्रके पास बंग
 लीमें (नैऋत्रपालायनमः) ऐसा बोलके चढ़ावै २ ॥ पीठै तीसरा
 कोइलाफल) हाथमें ले के नीचै पींहिके दक्षिणे तरफ बंगलीमें)
 नैचक्रेश्वर्येनमः (ऐसा बोलके चढ़ावै ॥ ३ ॥ (पीठै) चौथा को
 इलाफल हाथमें ले के नीचे पींदके बाये तरफ बंगलीमें (नैऋत्र
 सिद्धसिद्धचक्राधिष्टायकायनमः) ऐसा बोलके चढ़ावै ॥ ४ ॥ (पीठै
 दसूँ दिशामें इंडादिक दस दिग्पालकी स्थापन करै, वणसकेतो अ
 पणा २ वर्ष मुजब वस्त्र नैवद्य पुष्पादि इत्य चढ़ावै अथवा सर्वकों
 एक इत्य सर्व समान चढ़ावै (यथा) नैऋत्रायनमः ॥ १ ॥ कनक
 वर्ण चंदन केसर चंपो द्राख पीलावस्त्र पांन सुपारी रोकइव्य आ
 दि सर्व इव्य चढ़ावै १॥ (अग्निकूणे) नैऋत्रवेनमः ॥ २॥ रक्तवर्ण
 का वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ २ ॥ (दक्षिणदिसि) नैऋत्रायनमः
 ॥ ३ ॥ काळे वर्णका वस्त्रादि इव्य चढ़ावे ॥ ३ ॥ (नैऋतकूणे)
 नैऋत्रायनमः ॥ ४ ॥ धूसरवर्णका वस्त्रादिक इव्य चढ़ावै (पश्चि
 मदिश) नैऋत्रायनमः ॥ धूसरवर्णका सर्व इव्य चढ़ावै ५ (वा
 यव्यकूण) नैऋत्रायनमः ॥ ६ ॥ नीलवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य च
 ढावै ॥ ६ ॥ (उत्तरदिसि) नैऋत्रायनमः ॥ ७ ॥ सपेदव
 र्णका वस्त्रादिक इव्य चढ़ावै ॥ ७ ॥ (ईशानकूण) नैऋत्राय
 नमः ॥ ८ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक इव्य चढ़ावै ॥ ८ ॥
 (अयोदिसि) नैऋत्रायनमः ॥ ९ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक इव्य
 चढ़ावै ॥ ९ ॥ (उर्ध्वदिशि) नैऋत्रायनमः ॥ १० ॥ सपेदवर्णका
 वस्त्रादि सर्व द्रव्य चढ़ावै ॥ १० ॥ इस तरे दस दिग्पालका स्था
 पन पूजन करै ॥ (पीठै यंत्रके पींड़ीके स्थानक नव कोठा किया
 गया है जहां नवग्रहकी स्थापन पूजन करै (यथा) नैऋत्रायनमः
 लालवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ १ ॥ नैऋत्रायनमः ॥ २ ॥

सपेदवर्णवस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ २ ॥ उँजोमायनमः ॥ ३ ॥ लो
लेरंगवस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ ३ ॥ उँबुधायनमः ॥ ४ ॥ मृंगेरंग
का वस्त्रादि द्रव्य चढावै ॥ ४ ॥ उँबृंहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥ पीलेवर्ण
वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ ५ ॥ उँशुक्रायनमः ॥ ६ ॥ सपेदवर्णनंदोल
वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ ६ ॥ उँशनेश्वरायनमः ॥ ७ ॥ नीलेरंग
का वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ ७ ॥ उँराहवेनमः ॥ ८ ॥ कालेरंग
का वस्त्रादि द्रव्य चढावै ॥ ८ ॥ उँकेतवेनमः ॥ ९ ॥ ठीटरंग व
स्त्रादि द्रव्य चढावै ॥ ९ ॥ इस तरे नीचै नवग्रहकी स्थापनपूजा
करै. पीठै स्नात्र नवपदजीकी पूजा पढावै चैत्यवंदन कर शुद्ध क
हकर नवपद स्तवन कहै ॥ पीठै गुरु पास आकर ज्ञानपूजा कर
वासक्षेप लेवे ॥ गुरुपूजा वस्त्रपात्रसें करै पीठै यथाशक्ति साध
भी वास्तव्य करै ॥ इति मंगल पूजनविधि ॥ जाणना चाहिये
(जब) कोइ श्रीमंत उलीकी तपस्या करै तब तो ठए महीने मं
गल पूजा विस्तार विधीसे करता रहै ॥ ४ ॥ वरसे तप पूरण
जये बाद उज्ज्व के साथ मंगलपूजा कराके नव२ उपगणोसें उ
द्यापन करै. जलजात्रादि अष्टाईमहोच्चव कर धर्मशालासिणगारै
(फेर) देवका देवखाते, ज्ञानका ज्ञानखाते, गुरुका गुरुखाते च
ढावै. रुद्धिरहित जावसें यथाशक्ति रोकद्रव्य चढावै (उँर) पंचा
यती संघकी तरफसें मंगलीकके वास्ते मंगलपूजादिक नवपदपूजा
अवश्य विधिसंयुक्त करता रहै ॥ इति उद्यापनविधि ॥

॥ अथ सर्व तपस्याविधि लिख्यते ॥

॥ अथ सत्तर सो को गुणनो लिख्यते ॥

॥ अथ जंबूद्वीपमें प्रथम महाविदेहे जिननामकी प्रथम पंक्ती ॥ १ ॥

जयदेवस्वामीसर्वज्ञायनमः ॥ १ ॥ करणजस्वामीसर्वज्ञाय
नमः ॥ २ ॥ श्रीलक्ष्मीनाथसर्वज्ञा ॥ ३ ॥ श्रीअनंतनाथसर्वज्ञा

धनमः ॥ ४ ॥ श्रीगंगाधरसर्वज्ञायनमः ॥ ५ ॥ श्रीविशालर्षदसर्व
 ज्ञा ॥ ६ ॥ प्रियंकरनाथसर्वज्ञा ॥ ७ ॥ अमारिदत्तसर्वज्ञा ॥
 ॥ ८ ॥ श्रीकृष्णनाथसर्वज्ञा ॥ ९ ॥ श्रीगुणगुप्तसर्वज्ञा ॥ १० ॥
 श्रीपद्मनाभसर्वज्ञा ॥ ११ ॥ श्रीजलंधरस्वामिसर्वज्ञा ॥ १२ ॥
 श्रीयुगादित्यसर्वज्ञायनमः ॥ १३ ॥ श्रीवरदत्तसर्वज्ञा ॥ १४ ॥
 श्रीचंद्रकेतुसर्वज्ञाय ॥ १५ ॥ श्रीमहाकायसर्वज्ञा ॥ १६ ॥ श्री
 अमरकेतुसर्वज्ञा ॥ १७ ॥ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः ॥ १८ ॥
 श्रीहरिहरसर्वज्ञायनमः ॥ १९ ॥ स्तम्भेन्द्रनाथसर्वज्ञा ॥ २० ॥
 श्रीशांतिकृतसर्वज्ञा ॥ २१ ॥ अनंतकृतसर्वज्ञा ॥ २२ ॥ गर्जेन्द्र
 प्रज्ञसर्वज्ञाय ॥ २३ ॥ सागरचंद्रसर्वज्ञा ॥ २४ ॥ महेश्वरदत्त
 सर्वज्ञा ॥ २५ ॥ लक्ष्मीचंद्रसर्वज्ञा ॥ २६ ॥ रुक्मनाथसर्वज्ञा ॥
 ॥ २७ ॥ सोमकांतसर्वज्ञाय ॥ २८ ॥ नेमिन्द्रसर्वज्ञा ॥ २९ ॥
 अजितन्द्रसर्वज्ञा ॥ ३० ॥ महीधरसर्वज्ञा ॥ ३१ ॥ श्रीराजे
 श्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ अथ घातकीखंडे प्रथम महाविदेहे जिननामानि ॥ २ पंक्ती ॥

वीरचंद्रसर्वज्ञा ॥ १ ॥ वल्लसेनसर्वज्ञा ॥ २ ॥ नीलकांति
 सर्वज्ञा ॥ ३ ॥ पूंजकेसीसर्वज्ञा ॥ ४ ॥ रुग्मिकसर्वज्ञायनमः ॥
 ॥ ५ ॥ खेमंकरसर्वज्ञा ॥ ६ ॥ मृगांकनाथसर्व ॥ ७ ॥ मुनिमू
 र्त्तिसर्वज्ञा ॥ ८ ॥ विमलनाथसर्वज्ञा ॥ ९ ॥ आगमिकसर्वज्ञा ॥
 ॥ १० ॥ दुक्तितनाथसर्वज्ञा ॥ ११ ॥ वसुधाधिपसर्वज्ञा ॥ १२ ॥
 महल्लनाथसर्वज्ञाय ॥ १३ ॥ वनदेवसर्वज्ञाय ॥ १४ ॥ वर्त्मृत
 सर्वज्ञाय ॥ १५ ॥ अमृतवाहनसर्वज्ञा ॥ १६ ॥ पूर्णमेन्द्रसर्व
 ज्ञाय ॥ १७ ॥ श्रीरेवांतिसर्वज्ञा ॥ १८ ॥ श्रीकल्पशाकसर्वज्ञा ॥
 ॥ १९ ॥ श्रीनलनीदत्तसर्वज्ञा ॥ २० ॥ श्रीविद्यापतिसर्वज्ञा ॥ २१ ॥
 ॥ २२ ॥ श्रीसुपार्श्वनाथसर्वज्ञाय ॥ २३ ॥ श्रीज्ञानुनाथसर्वज्ञाय ॥

॥ २३ ॥ श्रीप्रज्ञजलसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीविशिष्टसर्वज्ञा० २५ ॥
 श्रीजलप्रज्ञसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ २७ ॥
 श्रीरुषिपालसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ श्रीकुमंगदत्तसर्व० ॥ २९ ॥ श्री
 वज्रधरसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीभूतानंदसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीती
 र्थेश्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ ओली ३ घातकीखंडे महाविदेहे जिननामानि ॥

॥ धरमदत्तसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीभूमिपतीसर्वज्ञा० ॥ २ ॥
 श्रीमरुदत्तसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीसुमित्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीषेण
 नाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीप्रज्ञानंदसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीपद्माकरसर्व
 ज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीमहाघोषसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीचंद्रप्रज्ञनाथसर्वज्ञा०
 ॥ ९ ॥ श्रीभूमिपालसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीसुमतिषेणसर्वज्ञा० ॥ ११
 ॥ अतिच्युतसर्वज्ञाय० ॥ १२ ॥ श्रीललितांगसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥
 श्रीतीर्थभूतिसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअरचंडसर्वज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीसमा
 धिसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीमुनिचंडसर्वज्ञायनमः ॥ १७ ॥ श्रीमहेंद्रनाथ
 सर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीशशांकनाथसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीजगदीश्वर
 सर्व० ॥ २० ॥ श्रीदेवेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीगुणनाथसर्वज्ञा०
 ॥ २२ ॥ श्रीज्योतनाथसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीनारायणनाथसर्वज्ञा०
 ॥ २४ ॥ श्रीकपिनाथसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीप्रज्ञाकरसर्वज्ञा० ॥
 २६ ॥ श्रीजिनदीक्षितसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीसकलनाथसर्वज्ञा० ॥
 ॥ २८ ॥ श्रीशिलारनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीवज्रधरसर्वज्ञा० ॥
 ॥ ३० ॥ श्रीलहस्राज्ञसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीअशोकनाथसर्वज्ञा० ॥ ३२ ॥

॥ ओली ४ ॥ पुष्करार्द्धप्रथममहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ श्रीमेघवाहनसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीजगद्विरुषिकसर्वज्ञा० ॥
 ॥ २ ॥ श्रीमहापुरुषसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीपापहरसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥
 श्रीमृगांकनाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीसूरसिंहसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीज
 गत्पूज्यसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीसुमतिनाथसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहाम

हेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्रीअमरजूतिसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीकुमार
 चंद्रसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीवीरपेणसर्वज्ञायनमः ॥ १२ ॥ श्रीरमणनाथ
 सर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीस्वयंप्रज्ञसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअचलनद्रसर्व
 ज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीअमरकेतुसर्व० ॥ १६ ॥ श्रीसिद्धार्थसर्वज्ञाय०
 ॥ १७ ॥ श्रीसफलस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीविजयदेवसर्वज्ञाय
 नमः ॥ १९ ॥ श्रीनरसिंहसर्वज्ञाय० २० ॥ श्रीशीतानंदसर्वज्ञाय०
 ॥ २१ ॥ श्रीचंद्रारिकसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीचंद्रातपसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥
 श्रीचंद्रगुप्तसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीदृढरथसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीमहा
 यशसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीज्योतिर्नाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीप्रद्युम्नना
 थसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ श्रीमहातेजसर्वज्ञायनमः ॥ २९ ॥ श्रीपुष्पकेतु
 सर्वज्ञायनमः ॥ ३० ॥ श्रीकामदेवसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीसमस्तकेतुस
 र्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ ओली ५ ॥ पुष्करार्द्ध द्वितीयेप्रहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ प्रसन्नचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ महासेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ वज्र
 नाभसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ सुवर्णबाहुसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीकूरचंद्रसर्व
 ज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीवयवीर्यसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीविमलचंद्रसर्वज्ञा० ॥
 ७ ॥ श्रीयसोधरसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहाबलसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्री
 वज्रसेनसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीविमलशोधसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीजी
 मनाथसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ श्रीमेरुजडसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीजङ्गुप्तसर्व
 ज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीमुदयसद्व्यसर्वज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीसुव्रतनाथसर्व
 ज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीहरिचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीप्रतिष्ठाधरसर्वज्ञा०
 ॥ १८ ॥ श्रीअतिश्रेष्ठसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीकनककेतुसर्वज्ञा० ।
 ॥ २० ॥ श्रीअजितवीर्यसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीफलगुप्तनाथसर्वज्ञा०
 ॥ २२ ॥ श्रीब्रह्मजुतसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीहितकरसर्वज्ञा० ।
 २४ ॥ श्रीवरुणदत्तसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीयशकीर्तिसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥

नागेंडनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीमहीधरसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ कृतब्र
ह्मनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीमहेंडनाथसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीवर्द्ध
मानसर्व० ॥ ३१ ॥ श्रीसुरेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३२ ॥

॥ ओली ६ ॥ पांच भरत पांच एरवत जिननामानि ॥

(जंबुद्वीपेऽजरतक्षेत्रे जिननामानि) श्रीअजिनाथसर्वज्ञा०
॥ १ ॥ (धातकीखंमेप्रथमजरते०) सिद्धांतनाथसर्वज्ञायनमः ॥ २ ॥
(धातकीखंमे द्वितियजरतेजिननांम) करणनाथसर्वज्ञायनमः ॥
॥ ३ ॥ (पुष्करार्धेप्रथमजरतेजिननांम) प्रज्ञासनाथसर्वज्ञा० ॥ ४
॥ (पुष्करार्धेद्वितियजरतेजिननांमः) प्रज्ञावकनाथसर्व० ॥ ५ ॥ (जं-
बूद्वीपेऽएरवतक्षेत्रेजिननांम) चंद्रनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ६ ॥ (धात
कीखंमेप्रथमएरवतेजि०) जयनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ७ ॥ (धातकीखंमे
द्वितियएरवते) पुष्पदंतसर्वज्ञायनमः ॥ ८ ॥ (पुष्करार्धेप्रथमएरव
तेजिनना०) आग्नाहिकसर्वज्ञाय० ॥ ९ ॥ (पुष्करार्धेद्वितियएरवतेजि०)
श्रीबलिज्जडनाथसर्वज्ञायनमः ॥ १० ॥ इति सत्तर सय तीर्थंकर तपका
गुणना संपूर्ण ॥ १६ स्थानं, ३० लाल, ३८ नीला, ३६ पीला, ५०
श्वेत, सर्व संख्या १७० ॥

॥ अथ सत्तर सो जिन को स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ स्वस्ति श्री दायक सदा, त्रैसलेय जिनचंद ॥ त-
त्पद नामी कंधरा, कारण सिव सुखकंद ॥ १ ॥ वार्द्धकासरदातणो,
नर धरि समरण शक्ति ॥ सद्युत्तर सत जिनतणी, रचस्थुं नुति सु
चि ज्ञक्ति ॥ २ ॥ ठे जे द्वीप समस्तने, मध्यमेरु कनकाज ॥
पूर्वापर जवि तेहनें, विजय नामको लाज ॥ ३ ॥ मूलविजय वसु
प्रतिदिशा, कथनामें युगतीस ॥ शीतोदा तरणीतणो, कारण वि
श्वावीस ॥ ४ ॥ खंरु धातकी दूसरो, द्वीप मनोहर तेह ॥ कंचन
गिरि युग ठे तिहां, मन धारो धर नेह ॥ ५ ॥ त्रयतम पुष्कर जां

णिये, द्वीप सकल गुणखांश ॥ अर्थ ज्ञाग जमु उत्तमें, गिरि युग
 जलद समान ॥ ६ ॥ ज्ञोन्नवि संख्या विजयनी, प्रति मेरौ वत्तीस
 ॥ थारो गणित अनुक्रमें, षष्ठयुत्तर शत हींस ॥ ७ ॥ एह अढाइ
 द्वीपनी, विजयतणो परिमाण ॥ काल चतुर्थ तिहां सदा, ज्ञाप्यो
 श्रीजिनज्ञाण ॥ ८ ॥ जिण तीर्थकर वारके, विचरथा जे जिनरा
 य ॥ ते हूं प्रति विजये ज्ञणूं, आगमसुं चित लाय ॥ ९ ॥ (ढाल
 पारणेकी) ॥ तिण काले ने तिण समे जी, तीर्थकर महाराज ॥ अ
 जित जिनेसर राजता जी, तारण तरण जिहाज ॥ ज्ञविकजन ध
 रज्यो धर्म सनेह ॥ ढेर ॥ १ ॥ अतिशय चौतीस संजुआ जी, वां
 णी गुण पैतीस ॥ लोकालोक प्रकाशता जी, प्रणमत नर सुर ईस ॥
 ज्ञ० ॥ २ ॥ एहवा श्रीजिन वारके जी, एकसो साठ जिनंद ॥ वि
 चरथा महियल बोधता जी, विजय मऊार सज्जंद ॥ ज्ञ० ॥ ३ ॥
 पंचर ज़रतैरवतैं जी, दशमित श्रीजिनराय ॥ विचरै जगजन ता
 रता जी, समस्यां संपति आय ॥ ज्ञ० ॥ ४ ॥ ए सत्तर सो जिन
 वरू जी, अतुल सकल गुणखांश ॥ श्यांमवरण सोले कह्या जी,
 अकल कला द्युतिवांश ॥ ज्ञ० ॥ ५ ॥ रक्ताकृति त्रिंशत कह्या जी,
 नीलवरण वसु तीस ॥ रवि जिम ऊललह ज्ञाधरू जी, कनकवर
 ण वत्तीस ॥ ज्ञ० ॥ ६ ॥ रजत युक्त पय जलकणा जी, सम सित
 विमल प्रकाश ॥ ज्ञविक चकोर प्रमोदता जी, शशि जिम जिन पञ्चा
 स ॥ ज्ञ० ॥ ७ ॥ प्रति जिन व्रत उपवासथी जी, बीस प्रमित
 जपमाल ॥ त्यक्त कषाय शुजातमां जी, धरिये ज्ञाव विशाल ॥
 ज्ञ० ॥ ८ ॥ इम ए तप पूरण दुयां जी, उजमणे निज शक्ति ॥
 कीजे श्रीजिनशासने जी, संघ सहूनी ज्ञक्ति ॥ ज्ञ० ॥ ९ ॥ ए त
 पविधि ज्ञवि जे करे जी, प्रेम सहित जिनधर्म ॥ साधन गुण अ
 नुमोदता जी, ते लहे दिव-शिव शर्म ॥ ज्ञ० ॥ १० ॥ कलश ॥

संवत् मूनि सर लोक नारद चंड ज्येष्ठ पुर ए, वदि सप्तमी रवि
दिने हितवह्मन्न कथनधर भूर ए ॥ गुरु खरतरांवर तरणि सन्नि-
न्न जैनचंड सनूर ए, ए तवन कीधो जीमगंजे श्रमणचंड कपूर ए
॥ ११ ॥ इति श्रीसत्तर सय जिन स्तवनं ॥

॥ अथ कम्मपयडी को गुणनो लिख्यते ॥

॥ जानावरणीकर्मकी ५ प्रकृती-मतिजानावरणीरहितायश्री
सिद्धायनमः १, श्रुतजानावरणीरहितायश्रीसिद्धायनमः २, अवधि
जानावरणीरहितायश्रीसि० ३, मनपर्यवज्ञानावरणरहितायश्रीसि
द्धा० ४, केवलज्ञानावरणरहितायसि० ५, (दर्शनावणकर्मकी नव
प्रकृती ए)-चक्षुदर्शनावरणरहितायसि० ६, अचक्षुदर्शनावरण
र० ७, अवधिदर्शनावरणर० ८, केवलदर्शनावरणर० ९, निष्कर्म
रहितायसि० १०, निद्रानिद्रारहि० ११, प्रचलार० १२, प्रचलाप्रच
ला० १३, शीणद्धी० १४ ॥ (वेदनीकर्म की प्रकृति २)-सातावे
दनीरहितायश्री० १५, अशातावेदनीरहिताय० १६, (मोहनी
कर्म की प्रकृती १८)-सम्यक्तमोहनीर० १७, मिश्रमोहनीरहिताय
१८, मिथ्यात्वमोहनीर० १९, अनंतानुबंधीक्रोधर० २०, अनंतानु
बंधीमानर० २०, अनंतानुबंधीमायार० २२, अनंतानुबंधिलोत्तर०
२३, अप्रत्याख्यानीक्रोधर० २४, अप्रत्याख्यानीमानर० २५, अप्रत्या
ख्यानीमायार० २६, अप्रत्याख्यानीलोत्तर० २७, प्रत्याख्यानीक्रो
धर० २८, प्रत्याख्यानीमानर० २९, प्रत्याख्यानीमायार० ३०,
प्रत्याख्यानीलोत्तर० ३१, संज्वलनक्रोधर० ३२, संज्वलमानर०
३३, संज्वलनमायार० ३४, संज्वलनलोत्तर० ३५, हास्यमोह
नीर० ३६, रतिमोहनीर० ३७, अरतिमोहनीर० ३८, जयमोह
नीर० ३९, सोकमोहनीर० ४०, दुःखमोहनीर० ४१, स्त्रीवेदर०
४२, पुरुषवेदर० ४३, नपुंसकवेदर० ४४ ॥ (आयुर्कर्मकी प्रकृति।

४)-देवायुरहि० ४५, नरायुर० ४६, तिर्यचायुरहि० ४७, नरकायुरहि० ४८ ॥ (नामकर्मकी प्रकृति १०३)-देवगति ४९, नरकगति० ५१, तिर्यचगति ५२, नरगतीरहिता० ५०, ऐकंद्रीजातिर० ५३, वेइंद्रीजातिर० ५४, तेइंद्रीजातिर० ५५, चौरेंद्रीजातिर० ५६, पंचेंद्रीजातिर० ५७, औदारिकशरीरर० ५८, वैक्रियशरीरर० ५९, आहारकशरीरर० ६०, तेजसशरीरर० ६१, कर्मणशरीरर० ६२, औदारिकअंगोपांगर० ६३, वैक्रियअंगोपांगर० ६४, आहारकअंगोपांगर० ६५, औदारिकऔदास्किबंधनर० ६६, औदारिकतेजसबंधनर० ६७, औदारिककर्मणबंधनर० ६८, वैक्रियबंधनर० ६९, वैक्रियतेजसबंधनर० ७०, वैक्रियकर्मणबंधनर० ७०, आहारकबंधनर० ७२, आहारकतेजसबंधनर० ७३, आहारककर्मणबंधनर० ७४, औदारिकतेजसकर्मणबंधनर० ७५, वैक्रियतेजसकर्मणबंधनर० ७६, आहारकतेजसकर्मणबंधनर० ७७, तेजसतेजसबंधनर० ७८, कर्मणकर्मणबंधनर० ७९, तेजसकर्मणबंधनर० ८०, औदारिकसंघातन० ८१, वैक्रियसंघातनर० ८२, आहारकसंघातनर० ८३, तेजससंघातनर० ८४, कर्मणसंघातनर० ८५, वज्ररूपजनाराचसंघयणर० ८६, रूपजनाराचसंघ० ८७, नाराच० ८८, अर्थनाराचसंघयणर० ८९, कीलकासंघयणर० ९०, सेवार्त्तसंघयणर० ९१, समचतुरस्त्रसंस्थानर० ९२, न्यग्रोधसंस्थानर० ९३, सादिसंस्थानर० ९४, वामनसंस्थानर० ९५, कुञ्जसंस्थानर० ९६, हुंरुक्संस्थानर० ९७, कृष्णवर्णरहि० ९८, तीलवर्णर० ९९, लोहितवर्णर० १००, पीतवर्णर० १०१, स्वेतवर्णर० १०२, सुरज्जिगंधर० १०३, उरज्जिगंधर० १०४, तिक्तसर० १०५, कटुकसर० १०६, आम्लसर० १०७, कषायसर० १०८, मधुरसर० १०९, शीतफरसर० ११०, उष्णफरसर० १११, ज्वारीफर

सर० ११२, हलकाफरसर० ११३, परखराफरसर० ११४, सुक-
 मालफरसर० ११५, लूखाफरसर० ११६, चीकणाफरसरहितया०
 ११७, नरकानुपूर्वीर० ११८, तिर्येचानुपूर्वीर० ११९, नरानुपूर्वी
 र० १२०, देवानुपूर्वीर० १२१, शुज्जविहायोगति १२२, अशुज्ज-
 विहायोगतिर० १२३, पराधातनामकर्मर० १२४, ऊत्तासनामकर्म
 र० १२५, आतपनामकर्मर० १२६, उद्योतनामकर्मर० १२७, अ
 गुरुलघुनामकर्मर० १२८, तीर्थेकरनामकर्मर० १२९, निर्माणनाम
 कर्म १३०, उपधातनामकर्मर० १३१, व्रतनामकर्मर० १३२, बाद
 रनामकर्मर० १३३, पर्यासिनामकर्मर० १३४, प्रत्येकनामकर्म
 १३५, धिरनामकर्म १३६, शुज्जनामकर्म १३७, सौज्ञाग्यनाम
 कर्म १३८, सुस्वरनामकर्मर० १३९, आदेयनामकर्म १४०,
 यशनामकर्म १४१, आचरनामकर्म १४२, सूद्धमनामकर्म १४३,
 अपर्यासिनामकर्मर० १४४, साधारणनामकर्मर० १४५, अधिर
 नांमकर्मर० १४६, अशुद्धानांमकर्मर० १४७, दौर्ज्ञाग्यनामकर्मर०
 १४८, दुस्वरनामकर्मर० १४९, अनादेयनामकर्मर० १५०, अयश
 नांमकर्मर० १५१, (गोत्रकर्मकी प्रकृति २) उच्चैर्गोत्र १५२, नी
 चैर्गोत्र १५३, ॥ (अंतरायकर्मकी प्रकृति ५) दानांतरायकर्मर०
 १५४, लाज्जांतरायकर्मर० १५५, ज्ञोगांतरायकर्मर० १५६, उप
 ज्ञोगांतरायक० १५७, वीर्यांतरायकर्मरहितायश्रीसिद्धायनमः ॥
 ॥ १५८ ॥ इति श्रीकम्मपयमीरो गुणनो संपूर्ण ॥

॥ अथ कम्मपयडी स्तवन लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ सेनामात जितारि सुत, श्रीसंजव जिनराज ॥
 मूलकरम उत्तर पगइ, हणी चढे सिवपाज ॥ १ ॥ अष्ट करमकुं
 दय करी, गुण अष्टक निष्पन्न ॥ सादि अनंत स्थिति लही, चिदा
 नंद विदधन्न ॥ २ ॥ तासु चरण प्रणमी करी, कम्मपयमि विस्ता

२ ॥ वरणं जविजन हितजनी, प्रवचने अनुसार ॥ ३ ॥ (ढाल ॥
 ॥ रामचंदेके बाग ए देशी) ॥ अष्ट कर्म तीर्थेश, नामे जिन कह्या
 री ॥ हेयवस्तु परित्यज्य, आत्मगुण ग्रह्य री ॥ १ ॥ नाण दंडाण
 आवर्ण, वेदनी मोह बूरो री ॥ आजखो नाम कर्म, कर्मांतराय चूरो
 री ॥ २ ॥ ज्ञानावरणी कर्म, दर्शनावर्णतणो री ॥ वेदनीय अंतराय,
 तीस कोमाकोमि जणो री ॥ ३ ॥ नामकर्म गोत्रकर्म, बीस को-
 माकोमि हुवे री ॥ आयु सागर तेतीस, हिव मोहनीय शुवे री ॥
 ॥ ४ ॥ सत्तर कोमाकोमि सागर मान जण्यो री ॥ ए उत्कृष्ट
 स्थिति जोरु, केवली काल गण्यो री ॥ ५ ॥ जघन्य स्थिति पंचकर्म,
 अंतरमुहुर्त्तपणो री ॥ नाम गोत्र दोय कर्म, आठ महुर्त्त गणो री ॥
 ॥ ६ ॥ अकषाय वेदनी वर्ज्य, वेदनी कर्म वेदे री ॥ बारे महूरत
 मान, शास्त्रानुसार सुदै री ॥ ७ ॥ नाणावरण अंतराय, पंच ञेद
 जुदा री ॥ वेदनीय गोत्र कर्म, दो दो ञेद नदारी ॥ ८ ॥ दर्शना
 वरण नव ञेद, आयु च्यार विवे री ॥ मोह कर्म अमवीस, सौ त्रिक
 नाम सघे री ॥ ९ ॥ एकसो अष्टावन्न, उत्तर प्रकृति कही री ॥
 अष्ट करमना जाण, सर्व विकल्प सही री ॥ १० ॥ ढाल ॥ नण
 दल चुमले जोवन जिल रह्यो ॥ ए देशी ॥ पाटे सम ज्ञानावरण
 वे, दर्शनावरण प्रतीहार, जविषण कर्म विवेचन कीजिये ॥ मधु
 लिप्ता अलिधारानी परे, वेदनी कर्म सुदार ॥ जविय ० ॥ १ ॥ म
 दिरावाक समान वे, मोह सुजट महाराण, जवि ० ॥ खोमे बंदीखान
 सारखो, आयुकर्म प्रमाण ॥ ज० क० ॥ २ ॥ चीतारे सम नाम कहीजे,
 गोत्र कुंजार समान, ज० ॥ श्रीधर जंकारी सम दाख्यो, अंतराय
 कुण्यान ॥ जवि० क० ॥ ३ ॥ अष्ट कर्म ए जावना, वीर वेदे व्या
 ख्यान, ज० ॥ कर्म संसार स्वरूप वै, अकरम सिद्धि सुथान ॥ ज
 वि० क० ॥ ४ ॥ मित्र सासादन मित्रा रिति, देसदिरिति प्रमत्त,

ज्ञ० ॥ अप्रमत्त गुण अंत सबीमें, करमबंध अठ सत्त ॥ ज्ञ० क०
 ॥५॥ अपूरव अनिवृत्ति गुणमें, आयु वरज सप्त बंध, ज्ञ० ॥ सुहुम
 संपराय दशम ठाणें, विन मोहायु षट खंध ॥ ज्ञवि० क० ॥ ६ ॥
 उपशम खीण सजोगमें, वेदनी बंध उदार, ज्ञ० ॥ अयोगी गुण
 चवदमें, नही बंधत कर्म द्वार ॥ ज्ञ० ॥ क० ॥ ७ ॥ कर्मबंध हेतु
 कह्या, मिथ्यात अविरत जोय, ज्ञ० ॥ क्रोध प्रमुख कषाययो, यो
 ग युगत च्यार होय ॥ ज्ञ० ॥ क० ॥ ८ ॥ पन्नवणा उपांगमें, कर्म
 स्थिति पद लेय; ज्ञ० ॥ कर्म वेद पणवीसमें, कर्म प्रकृति वेद ज्ञेय
 ॥ ज्ञवि० क० ॥ ९ ॥ कम्मपयमी कर्मग्रंथमें, कर्मतणो निरधार,
 ज्ञ० ॥ बंध सत्ता उद्दीरणा, उदय प्रमुख परकार ॥ ज्ञवि० ॥ क०
 ॥ १० ॥ इकसो अठावन थया, चञ्चलजत्त तप सार, ज्ञवि० ॥ त
 प उद्यापन इम करो, पूजा अष्ट प्रकार ॥ ज्ञवि० ॥ क० ॥ ११ ॥
 अष्ट ज्ञानोपगण ज्ञला, अष्टगंगल वृद्ध थाल, ज्ञवि० ॥ चात्सल्य
 चञ्चल संघनी, यथाशक्ति सुविशाल ॥ ज्ञ० ॥ क० ॥ १० ॥ इच्छा
 रोधन तप करे, कर्म प्रकृतिनो सार, ज्ञ० ॥ सुरनर सुख अनुक्रम
 लही, शिवरमणी जरतार ॥ ज्ञ० क० ॥ १३ ॥ कलश ॥ जिन-
 चंद्र सूरि मुणिंद खरतर गण ख शशि सम युगवरा, तासु वचने
 स्तवन कीधो नयर श्रीवालूचरा ॥ चंद्रानुयोग निध्येक वरषे विशद
 फाळगुन द्वादशी, उवजाय तत्व प्रधान गणिनें अमृत गति चित्त
 नित वशी ॥ १४ ॥ इति श्री कम्मपयमी स्तवनं ॥

॥ अथ नवकार तप स्तवन ॥

॥ दूहा ॥ चोवीसे जिनवर ममी, पंच परमेष्टि सार ॥ परम
 मंत्र नवकारनी, महिमा जणूं उदार ॥ १ ॥ ढाल १ ॥ मुनिवर
 आर्य सुहस्त ॥ ए देशी ॥ समरो श्री नवकार, सार पूरवतणों,
 नव निधि सिद्धि आपे सदा ए ॥ महिमा मोटी जास, संकट तब

टलै, मिले मनोरथ संपदा ए ॥ १ ॥ अमसठ वरण विख्याति,
 सात गुरु अकर, नव पद आठे संपदा ए ॥ सात सागरनां पाप,
 जाये अस्करे, संपूरण पांचसैं मुदा ए ॥ २ ॥ पुष्करवर छीपार्द्ध,
 सिद्धावट गांम, पासे परवत कंदरा ए ॥ चोमासी पञ्चस्कांण, करने
 तिहां रह्या, दमसार नामे मुनीसरा ए ॥ ३ ॥ जील जीलणी बेअ,
 मन सुध जावसुं, नवकार मुनि पासे जणी ए, बीजे जव राज-
 सिंह, रतनवती रांणी, शिवसुख पांम्या कर्म हणी ए ॥ ४ ॥ रत
 नपुरी यसोज्ञइ, सेठतणो सुत, शिव नामा विसनी धणूं ए ॥ अति
 आदरसुं तात, नवकार सीखव्यो, महामंत्र गुणवहु जणूं ए ॥ ५ ॥
 एकदा योगी एक, समसाने ले गयो, शिवकुमार मनमें धर्यो ए ॥
 नवकारने परजाव, सबल संकट टढ्यो, सोनापुरसो तिण कर्यो ए ॥
 ॥ ६ ॥ ढाल १ ॥ चरणकरणधर मुनिवर वंदिये ॥ ए देशी ॥ श्री
 नवकार तणी महिमा सुणो, पोतनपुर सुज गामो जी ॥ सेठ सु-
 जद्र तणी सुता श्रीमती, आविका धर्मनो कामो जी ॥ श्री० ॥ १ ॥
 मिथ्यामते किण एक विवहारिये, परणी मनधर रागो जी ॥ धरम
 न मूके हणिये मन धरी, कलसमें सूंख्यो नागो जी ॥ श्री० ॥ २ ॥
 साप फीटीने फूलमाला अई, महियल महिना एहो जी ॥ पिउने
 कुटंब सद्गुं प्रतिबूझ्यो, साचो धर्म सनेहो जी ॥ श्री० ॥ ३ ॥
 क्षितिप्रतिष्ठित बलराजा तिहां, इक दिन बूगो मेहो जी ॥ नदीपूर
 बीजोरो आवियो, नृपने दीधो तेहो जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ स्वाद
 लही चिठी राजा करी, बीजोराने कांमो जी ॥ व्यंतर जह करे
 नरने तिहां, दे बीजोरो तामो जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ चिठी आवी
 जिनदाससेठनी, आवक शुद्ध विवेको जी ॥ नमस्कार जण बीजोरो
 अह्यो, बूझ्यो व्यंतर ठेको जी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ढाल ३ ॥ नमस्कार
 खमणी ने मन गमणी ॥ ए देशी ॥ श्री वसंतपुर जितशत्रु राया

जज्ञ नांमि नारि सुहाया ॥ चंरुपिंगल चोरयो नृप हारा, गणिका
 ने दीधो मनुहारा ॥ १ ॥ गणिका पहरयो हार ते जाणी, सूखो
 दीधो चोर ते आणी ॥ निज प्रमाद गणिका पठतावे, चोर समीपे
 ठानी आवे ॥ २ ॥ नमस्कार पिंगलने दीधो, तास प्रजावे वंठित
 सीधो, नृपने घर सुत अइ अवतरियो, पापी चोर एणे ऊधरियो ॥
 ॥ ३ ॥ मथुरानगरी जिशंदाससेठ, तिहां किण हुंरुक पापनी डेठ ॥
 एकदा चोरी करतां जाळ्यो, राजा हुकमें सूखी घाळ्यो ॥ ४ ॥
 हुंरुक चोर ते प्यासे गाढो, सेठ कने जल मांग्यो टाढो ॥ नौकार
 दीधो उषगार आंणी, सुर थयो ततखिण धर्म सहिनाणो ॥ ५ ॥
 चंपानगरीमें जे कीधूं, सुजज्ञ सनी निकलक प्रसीधूं ॥ श्रीनवकार
 प्रसाद ते जांणो, मनमें एहनी आसति आंणो ॥ ६ ॥ ढाल ४ ॥
 ज्ञरतनृप ज्ञावसुं ॥ ए देशी ॥ अमावसि पूनिम करी ए, वीजल
 वांथी आकास, नमुं नवकारने ए ॥ १ ॥ वृक्ष उपानी चलावियो ए,
 अनुपम महिमा जास ॥ न० ॥ २ ॥ वाठरूया एक चारतो ए,
 नदिय प्रवाह्यो बाल, न० ॥ नमस्कार मन चिंतव्यो ए, जल फाटो
 ततकाल ॥ न० ॥ ३ ॥ हत्या चार करी हवे ए, वली करया पाप
 अनेक, न० ॥ ठुटकरबारो एहथी ए, आवे चित्त विवेक ॥ न० ॥
 ॥ ४ ॥ संत्र मांहे मोटो कह्यो ए, लाख गुणे मनरंग, न० ॥ ती
 र्थकर पद ते लदे ए, श्रीनवकारने संग ॥ न० ॥ ५ ॥ दिनर
 अधिकी संपदा ए, मनवंठित सुख आय, न० ॥ दयाकुसल वाचक
 वरू ए, धर्ममंदिर गुण गाय ॥ न० ॥ ६ ॥ इति श्रीनवकारका
 चोढालिया स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नवकार तपविधि लिख्यते ॥

शुभदिन गुरूके पास नवकारतप ग्रहण करे, जिस पदका
 जितना अक्षर होय उतनाही उपवास करे ॥ उस पदका ॥ १००॥

गुणना करे सो लिखते हे ॥ १ ॥ एमोअरिहंताणं ॥ उपवास ७ ॥
 २ । नमो सिद्धाणं ॥ उपवास ५ ॥ ३ । नमो आचरियाणं ॥ उपवा
 वास ७ ॥ ४ । एमोउवझायाणं ॥ उपवास ७ ॥ ५ । एमोलोए
 सबसाहूणं ॥ उपवास ६ ॥ ६ । एसोपंचनमोकारो ॥ उपवास ७ ॥
 ७ । सबपावप्पणासणो ॥ उपवास ७ ॥ ७ । मंगलाणंचसव्वेसिं ॥
 उपवास ७ ॥ ८ । पढमंहवइमंगलं ॥ उपवास ६ ॥ ९ । एसे नवकार
 भंत्रका ६७ उपवास करे ॥ किंकप्पत्तरु ॥ वरुनवकार अथवा ऊपर
 लिखा सो स्तवन सुणे, तप पूर्ण होणेसें यथाशक्ति नवपदका
 उच्चव करे, चवदे पूर्वका सार इस नवकारके तप प्रज्ञावसें अनेक
 सुख संपदाकी प्राप्ति होय ॥ इति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक स्तवन लिख्यते ॥

नमिय पयकमल सुज्जजाव सवि जिनतणा, पंच कड्याण
 दिण जणिसु जिनवरतणा ॥ कसिण कत्तीतणै पस्सि पंचमि दिणै,
 नाण संजवतणौ खयकरम चिहुं तणैः ॥ १ ॥ नेमि जिण चवण
 सुरज्जवणथी वारसै, पन्नमपह जम्म वलि दिक्क तसु तेरसै ॥ वीर
 सिवमां वसै पस्सि दिव ऊज्जलै, नाणसिरि सुविधि अर तीज बार
 सि मिले ॥ २ ॥ ज्ञास ॥ मिगसर वदि रे सुविधि पंचमी जनमि
 यो, सोइ ठै रे संयमधर सुर पणमियो ॥ दसमी दिन रे वीरे सं-
 यम आदरयौ, इग्यारसि रे उपमप्पह सिवसिरि वरयौ ॥ सिर वरयौ
 मिगसर सुदि दशमी दिण रयणि अरजिन जामीयो, वलि मुगति
 पिण तिण दिवस पत्तो व्रत इग्यारसि पांमीयो ॥ इग्यारसै वलि
 मल्लिजिणने जम्म दिक्क सुनाणीया, वलि मल्लि दिक्का नाण ठै
 अंग पोसि वखाणिया ॥ ३ ॥ इहां कारण रे लिखित दोष संज्ञा
 विचै, कइ कोइ रे अवर हेतु पिण ज्ञाविचै ॥ ते परि सवि रे गीना-
 रथ सदगुरु लहै, श्रुतकेवलि रे वचन सह सम सदहे ॥ सदहै

सहूयै ते प्रमाणजि वलि इग्यारसि नमितणौ, श्रीनाण कळयाणक
 चउदसि जनम संजवनों शुणौ ॥ पूनिमें संजव दिस्का पांमी दया
 धरि जगजोवनी, हिव पोस वदि दसमी इग्यारस जनम दिस्का
 पासनी ॥ ४ ॥ बारस तिथि रे चंदप्पह जिण जाइयौ, वलि तेर
 सि रे संजम रंग सुणाइयौ ॥ चवदस दिन रे श्रीशोतल थयो के-
 वली, पोसह सुदि रे ठठ विमल नाणी वली ॥ नाणी वलि थयौ
 नवमि संती अजितनाथ इग्यारसें, चवदसें अजिनंदनें केवल पूनि
 में धम्मे वसें ॥ माहाइ ठठे पनुम चवियो बारसें शीतल थयौ,
 वलि तासु संजम कसिण तेरसि रिसह जिण शिवपुर गयो ॥ ५ ॥
 अम्मावसि रे दिवसें नाण इग्यारमें, जिन पांमी रे माहसुद्धे हिव
 अनुक्रमे ॥ सित बीजे रे अजिनंदन वासुपूजनों, कळयाणकरे ज
 नम ठांण अनुक्रम मनो ॥ अनुक्रमे मानों बिहू बीजे विमल धरम
 सुजामिया, श्रीविमल दिस्का चउथि अठमि अजित नतपति पांमि
 या ॥ नवमिये दिस्का अजित पांमी बारसें अजिनंदनें, श्रीधर्मनाथे
 सार संयमसिर वरि तेरसि दिनें ॥ ६ ॥ ज्ञास ॥ फागुण वदि ठठे सुपास
 केवलसिरि पत्तो, सत्तम वलि तसु मुगति चंड्रपत्तु नाणें जुत्तो ॥
 नवमि सुविह जिण चवण रिसह इग्यारसि केवल, बारस सुवय नाण
 जम्म सेयंसह निम्मल ॥ ७ ॥ तेरसि व्रत सिङ्गस तणो चवदस वसु
 पुज्ज, जम्म हुज्ज अम्मावसें ए तसु संजम रज्ज ॥ सुकज बीज चउथि
 अठमिये अर मद्धि संजव, चवण सुबारसि मद्धि मुगति सुवय वय
 उज्जव ॥ ८ ॥ (ढाल फागनी) चैत्र पढम पस्कि चउथि नाण च
 वणं पासस्स, पंचमि ससिपह चवण जम्म अठमि रिसहस्स ॥
 वलि संजम पिण रिसहसांमि अठमि आदरियो, धवल तीज हिव
 कुंथुनाथने केवल फुरियो ॥ ९ ॥ पंचमि अजित अनंत अने सं
 जवने मुगति, नवमि इग्यारस मुगति नाण वलि पांम्यो सुमति ॥

॥ त्रिशलादेवें वीरनाह तेरसनिस्ति जायो, पूनिम दिन श्रीपदमना
ह केवलसिरि पायो ॥ १० ॥ ज्ञास ॥ हिव वैसाख वंदेपनिवा दिन,
कुंथु सिद्ध शीतल बीजें दिन, पंचमी कुंथु चरित्र ॥ ठठे, श्रीशी
तल अवतरियो, दशमैं नमिजिण सिवसिरि वरियो, तेरसि जनम
अणंत ॥ ११ ॥ चवदस दिस्का नाण अणंतह, जनम हुत्त श्रीकुंथु
जिणंदह, वंदह सिवपुर सत्थ ॥ सेत चउथ अजिनंदन उत्तम, ध
रमनाथ चवियो वलि सत्तमि, अठमि सिद्ध चउठ ॥ १२ ॥ सुम
तिनाथ अठमिये जायो, नवमें संयम सांमे पायो, गायो धरि आ
णंद ॥ दशमें नाण वीरजिण पामी, बारसि चव्यो विमल जगस्वा
मी, तेरसि अजिय जिणंद ॥ १३ ॥ ढाल ॥ जेठ कसिण पस्कि
ठठ, चवियो सेयंस, अठमी सुवय जनमियो ए ॥ नवमि मुगति
सोपत्त, तेरस चवदसि, संति जम्म सिव वय हुत्त ए ॥ धरमनाथ
सिव पत्त, धवली पंचमें, नवमें वसुपुज्ज अवतरयो ए ॥ श्रीसुपास
जिण जम्म, बारसि तेरसि, जगगुरु संयमसिरि वरयो ए ॥ १४ ॥
ज्ञास ॥ हिवै असाढ वदि चउथि रिसहेस, चवण सत्तमिहि सिरि
विमल ॥ मुक्क नवाम नमि वय गहण, सेय ठठै चवण ॥ वीरनो
अठमि नेमि मुक्क चवदसें श्रीवसुपुज्ज जिणंद, ठ सय वर साधु
कर परवरयो ए ॥ बहुतर वरस लख पुरि चंपापुरें, करमदणि मुग
ति रमणी वर्यो ए ॥ १५ ॥ ढाल ॥ श्रावण वदि हिव तीज मु
गति सेयंसह पामिय, सत्तमि चविउ अणंतनाह अठमि नमि जा
मिय ॥ नवमि कुंथुजिण चवण हुत्त अह निम्मल बीजै, सुमति
चवण पंचमिह नेमिजिण जम्म जणीजै ॥ १६ ॥ ठठे सुनिवर ने
मि हुय, अठमि सीधो पास ॥ सुनिसुवय पूनिमरयणि, चविउ गुं
णमणि वास ॥ १७ ॥ ज्ञास्व वदि सत्तमें संति ससि चवण ज्व
रकथ, अठमि चविय सुणस नवमि सुदि सुविध सिवंगय ॥ हिव

आसु वदि तेरसी ए ॥ श्रीवीर जिनेसरं गच्छ ॥ हरेण अम्मावेमो
 ए, नांणी नेमीसर ॥ १७ ॥ पुनिम नमि जिणवरं चविय, इण
 पर वारह मासि ॥ श्रीआवस्यक दाखवी, जिण कळयाणक रासि
 ॥ १८ ॥ जिणं चवण जम्म चरित्त केवल नांण शिव प्रापति दि
 ने, अरिहंत जत्ते सुद्ध चित्ते तप करे जे इक मनै ॥ कळयाण नीते
 कोमि पांमी अनुक्रमे सिवसुख लहे, ए हेतु जांणी सुगुरु नांणी
 एह कळयाणक कहे ॥ १९ ॥ इम पांच जरते ऐरवत्त करि एक
 दिन जिनवरतणा, दस कळयाणक हुवे इण दिन सुर करे उच्चव
 यणा ॥ जिम हुआ ते तिम वली होस्ये पंच कळयाणक सदा, श्री
 पुन्यसागर कहे खरतर एह आराहो मुदा ॥ २० ॥ इति श्रीपंच
 कळयाणक स्तवनं ॥

॥ अथ रुषिमंडल सुणणेकी वा पूजणेकी विधि ॥

॥ प्रथम आद्यंताकर संलक्ष० यह रुषिमंडल स्तोत्र धूप
 दीपादि विधि संयुक्त आठ महीने तक प्रज्ञात समय सुणें. रुषिमं
 दलमें जो मूल मंत्र हे सो शुद्ध दिन शुद्ध घटी हाथमें फल
 फूल जेट शक्ति माफक लेकर गुरुके पास जावे. जेट धरके वि-
 नय संयुक्त मूलमंत्र गृहण करै. उसका ७००० आठ हजार जाप
 आठ महीनेमें करे. आंबिलकी शक्ति होय तो हमेस करै, नहीतो
 आठम चौदस दो आंबिल जरूर करे. आठ महीने बाद ऊजमणा
 करै. ऊजमणेके दिन एकसो आठ घेर सुणै. पीठै शक्ति होय तो
 विधि संयुक्त रुषिमंडल स्थापन करायके पूजा करै. विशेष जक्ति
 करे तो २४ प्रकार पूजा करावै, गुरुजक्ती करे, साहमी वञ्चल करै.
 विशेष विधि गुरुगमसें जाणनी ॥ रुषिमंडल सुणणेवाले पूजणेवा
 ले जव्यजीवके घरमें कच्ची उपद्रव नहि होय, सदा आनंद उछाह रहे ॥

॥ अथ भगवंतके नव अंग पूजन ॥

॥ दूहा ॥ जल जरी संपुट यत्रमां, युगलिक नर पूजंत ॥

झषन्न चरण अंगूठमों, दायक जवजल अंत ॥ १ ॥ जानु बले का
 नसगग रह्या, विचर्या देस विदेस ॥ खमां२ केवल लह्यो, पूजो
 जानु नरेस ॥ २ ॥ लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान ॥
 कर कंमे प्रजु पूजना, पूजो जवि बहुमान ॥ ३ ॥ मान गयो दीय
 अंसथी, देखी वीर्य अनन्त, जुजावले जवजल तरया, पूजो खंध म
 हंत ॥ ४ ॥ रत्न त्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विसरांम ॥ ना
 जिकमलनी पूजना, करतां अविचल धांम ॥ ५ ॥ हृदयकमल
 उपशम बले, बाढ्यो राग ने छेष ॥ हेम दहे वनखंमनें, हृदयक
 मल संतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देइ देसना, कंठ विवर वरतूल,
 मधुर ध्वनी सुर नर सुणे, तिम गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ तर्थकर पद
 पुन्यथी, त्रिजुवन जन सेवंत, त्रिजुवन तिलक समा प्रजु, जाल
 तिलक जयवंत ॥ ८ ॥ सिद्धशिखा गुण ऊजली, लोकांतिक जगवंत ॥ व
 सिया तिण कारण विजु, शिरशिखा पूजंत ॥ ९ ॥ उपदेशक नव
 तत्वना, तिम नव अंग जिषांद, पूजो बहु विध जावथी, कहे शुज
 वीर मुषिंद ॥ १० ॥ इति नव अंगपूजन उहा ॥

॥ शिक्षा दोहा ॥

जीवमा जिनवर पूजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा नमैं
 परजा नमैं, आण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंजे बांध्यो जल रहे,
 विन कुंज न होय ॥ ज्ञानिं बांध्यो मन रहे, गुरु विन ज्ञान न
 होय ॥ २ ॥ गुरु दीपक गुरु देवता, गुरु विन घोर अंधार ॥ जे
 गुरुवाणी वेगला, रमवमिया संसार ॥ ३ ॥ जावे जिनवर पूजिये,
 जावे दीजे दांन ॥ जावें जावना जाविये, जावें केवलज्ञान ॥ ४ ॥
 पांच कोमीनें फूलने, पांम्या देश अद्वार ॥ राजा कुमारपालने, व
 रत्या जैजैकार ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ नव पदों के नव चैत्यवंदन, नव स्तवन तथा नव थुई ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन ॥

जय२ श्रीअरिहंत जानु, जविकमल विकासी ॥ लोकालोक
अरूपि रूपि, सम वस्तु प्रकासी ॥१॥ समुद्धात शुभ्र केवलै, कय
कृत मल रासी, शुक्ल चरम शुचि पादसै, जयो वर अविन्यासी ॥
॥ २ ॥ अंतरंग रिपुगण हणी ए, दुय अप्पा अरिहंत ॥ तसु पद
पंकजमें रमत, हीरधरम नित संत ॥ ३ ॥ इति ॥ जंकिंचिं नाम-
तित्थं० नमोर्हं० ॥

॥ अथ अरिहंतपद स्तवनं ॥

पूजो मनरली हां हो दादा कुशल सूरिंद ॥ ए चाल ॥ श्री
तेरम गुण वसिके कंत, कर्मकुं जंजे श्रीअरिहंत ॥ मन मानले ॥
अष्ट समयमें समय तीन, सर्व आहारथी होवे हीन ॥ म० ॥ १ ॥
वादरकायें मन वच जोग, तनु२सैं फुन दृढ तनुयोग ॥ म० ॥ सुद्ध
मकायतें मन वच रोक, निज वीथैं ताकुं कर फोक ॥ म० ॥ २ ॥
संझी मात्रके मन व्यापार, बेइंद्रीने बाक्य प्रचार ॥ म० ॥ आदि
समय रह्यो पनकसु जीव, सुषम लह्यो तिण योग अतीव ॥ म० ॥
॥ ३ ॥ एपां योगथी समयें एक, होना संख गुणो कर ठेक ॥ म० ॥
समयासंखे जोग निरोध, कृत्वा जो लह्यो जोगी सोध ॥ म० ॥ ४ ॥
वेदसमेनाहारता पाय, कुशल कहे ते श्रीजिनराय ॥ म० ॥ तेरमें
गुणमें गुण समै देव, आपो सा जगकुं नितमेव ॥ म० ॥
इति अरिहंतपद स्तवनं ॥

॥ अथ अरिहंत पद थुई ॥

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक लोकालोक सरूपो जी, केवल
ग्यानकी ज्योति प्रकाशक अनंत गुणो करि पूरो जी ॥ तंजै जव
ग्यानक आराधी गोत्र तीर्थकर नूरो जी, बारे गुणां करि एहवा अ
रिहंत आराधो गुण नूरो जी ॥ इति अरिहंत पद थुई ॥

॥ अथ सिद्धपद चैत्यवन्दन ॥

श्रीशैलेशी पूर्व प्रांत, तनुहिंनत जागी ॥ पुव पञ्चपसंग
सैं, ऊरध गत जागी ॥ १ ॥ समय एकमें लोकप्रांत, गयो निगुण
निरागी ॥ चेतनजूपें आत्मरूप, सुदिशा लही सागी ॥ २ ॥ केवलें
दंशणनाणथी ए, रूपातीत स्वज्ञाव ॥ सिद्ध जये तसु हीरधर्म,
वंदे धरि गुज्ज ज्ञाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपद चैत्यवं० ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवनं ॥ थारे महिलां ऊपर मेह झरोखें वीजली ॥ ए चाल ॥

अष्ट वरस नग मास हीना कोमी पूर्वमें, म्हारा लाल ही० ॥
जुत्कष्टो करै वास सयोगी धाममे, म्हा० स० ॥ अजोगीके अंत तजै
जवतव्यता, म्हा० त० ॥ शैलेसी लहै कर्म दलै गुण श्रेणिता,
म्हा० दलै० ॥ १ ॥ ह्रस्वाकर पंच काल रहै ते योगमें, म्हा०
र० ॥ तेरस प्रकृतिनो अंत करीने अंतमें, म्हा० क० ॥ गमन करे
नगरऊतें अक्रिय होयने, म्हा० अ० ॥ पुव पयोग असंग स्वज्ञाव
अबंधने, म्हा० स्व० ॥ २ ॥ इहु गुण नव परमाण योजन लकें
कही, म्हा० यो० ॥ वर्तुल विशदाज्ञास निराखंवन सही, म्हा०
नि० ॥ मध्ये योजन अष्ट घनाकृति अंतमें, म्हा० घ० ॥ मही प-
क्षथी हीन जणी सिद्धांतमें, म्हा० ज० ॥ ३ ॥ तनुपञ्चारा नाम
सिद्धासैं जोयने, म्हा० सि० ॥ जुग लोचनमें जाग अलोककुं स्प-
र्शनैं, म्हा० अ० ॥ लघु अंगुल वत्तीस प्रमाणऽवगाहणा, म्हा०
प्र० ॥ वृद्धि धनु शत पंच गुणासैं हीनता, म्हा० गु० ॥ ४ ॥
मिलिया एकमेंनंत अवाधा ना लही, म्हा० अ० ॥ अष्ट प्राण धरि
रम्य सिरिही जो सही, म्हा० सि० ॥ बीजो पद श्रीसिद्ध धरो म
नगेहमें, म्हा० ध० ॥ कुशल जये जगजीव मिलोगा तेहमें, म्हा०
मि० ॥ ५ ॥ इति सिद्धपद स्तवनं ॥

॥ अथ सिद्धपद शुई ॥

अष्ट करमकुं धमन करीनें गमन कियो शिववासी जी, अ-

व्यावाधे सादि अनादि चिदानंद चिदरासी जी ॥ परमात्मपद पूर-
ण विलासी अध घन दाघ विनासी जी, अनंत चतुष्टय शिव
पद ध्यावो केवलज्ञानी ज्ञासी जी ॥ १ ॥ इति सिद्धपद शुद्ध ॥

॥ अथ तृतीय आचार्य पद चैत्यदंदन ॥

जिनपद कुल मुख रस अनिल, मित रस गुण धारी ॥
प्रबल सबल घन मोहकी, जिणतें चमुहारी ॥ १ ॥ रुज्वादिक जि
नराज गीत, नव तन विस्तारी ॥ जवकूपें पापें परत, जगजन
निस्तारी ॥ २ ॥ पंचाचारी जीवके, आचारजपद सार ॥ तिनकुं
वंदे हीरधर्म, अष्टोत्तर सो वार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ आचार्य पद स्तवनं ॥ नणदल वींदली ये ॥ ए चाल ॥

खंती खरुगथी जेणे, हणयो क्रोध सुजट सम देणे हो, गण
पति गुणपेखी ॥ टेर ॥ मान महा गिरि वयरे, अति शोचन महव वयरे
हो ॥ ग० ॥ १ ॥ दंजरूप विसवेली, वर अज्जवकीलै ठेलो हो ॥ ग० ॥
मुर्खावेलथी जरियो, लोहसागर मुत्तें तरियो हो ॥ ग० ॥ २ ॥ मदन
नाग मद दीनो, जिण दमसम जंत्रे कीनो हो ॥ ग० ॥ मोह माहा
मल्ल ताळ्यो, पुण वैराग मुगरे पाळ्यो हो ॥ ग० ॥ ३ ॥ दोस गयंद
वस कीनो, धर उपशम अंकुस लीनो हो ॥ ग० ॥ अंतरंग रिपु जेद्या,
सुरवर पिण जिण णिषेद्या हो ॥ ग० ॥ ४ ॥ रस कति गुणथी लीणो,
सूत्र अरथे आगम पीनो हो ॥ ग० ॥ आचारजपद एहवो, धरी जी
व कुशलता सेवो हो ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति आचार्यपद स्तवनं ॥

॥ अथ आचार्यपद शुद्ध ॥

॥ पंचाचारकुं पालै उजवाळै दोष रहित गुणधारी जी, गु
ण ठत्तीसे आगमधारी द्वादस अंग विचारी जी ॥ प्रबल सबल घन
मोह हरणकुं अनिल समो गुण वाणी जी, कृमा सहित जे संज
म पालै आचारज गुण ध्यानी जी ॥ १ ॥ इति शुद्ध ॥

॥ अथ उपाध्यायपद चैत्यवन्दन ॥

॥ धन धन श्री नवजाय राय । सठता धन नंजन । जिन
वर दिसत डुवाल संग । कर कृत जन रंजन ॥ १ ॥ गुणवण नं
जण मण गयंद । सुय शृणि कियगंजण । कुणालंध लोय लोयसों ।
जत्थय सुय मंजण ॥ १ ॥ महा प्राणमें जिन लह्यो ए । आगमसें पद
तुर्य । तिनपेँ अहनिश हीर धर्म । वंदे पाठक वर्य ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तवनं ॥ सांवलिया अलगा रहोनें ॥ ए देशी ॥

॥ हुयने ३ दूरी हुयने, चेतन जावै सठने, दूरी हुयने ॥ तुं
मुऊ पास क्यूं आवै, दू० ॥ तुऊनें कुण वतलावे, दू० ॥ ए आंकणी
॥ तो संगै निज पंचेडोनो, रचना चरम जुलाणो ॥ नाणावरणी
खयजवसमसें, जावेडी मंमाणो ॥ दू० ॥ १ ॥ इयै ते परजाते
कीना, जातिनाम व्यपदेश ॥ एवंतो गो तुरग गजादिक, किण क
में उपदेश ॥ दू० ॥ २ ॥ इत्यादिक बहु मुऊकुं संका, तेरे संगे ला
गी ॥ नीलवर्णकी समता सेती, में ज्यो तोसुं रागी ॥ दू० ॥ ३ ॥
उप कहिये हणियो जवियानो, अधियां लाजत आय ॥ आधीनांमन
पीरानामें, मायोयेनविलाय ॥ दू० ॥ ४ ॥ आधिक्ये स्मरीयै वर
आगम, सूत्रसें ते नवझाय ॥ तत् सेवाते हणि सठताकूं, चेतन
कुशलता पाय ॥ दू० ॥ ५ ॥ इति उपाध्याय स्तवनं ॥

॥ अथ उपाध्यायपद शुद्ध ॥

॥ अंग इग्यारै चवदै पूरब गुण पचवीसना धारी जी, सूत्र
अरथधर पाठक कहियै योग समाधि विचारी जी ॥ तपगुण सूर
आगम पूरा नय निक्षेपै तारी जी, मुनिगुण धारी बुध विस्तारी
पाठक पूजो अविकारी जी ॥ १ ॥ इति उपाध्यायपद शुद्ध ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमसाधुपद चैत्यवन्दनं ॥

॥ दंसण नाण चरित्त करी, वर शिवपद गामी ॥ धर्म शुद्ध
शुचि चक्रसें, आदिम खय कामी ॥ १ ॥ गुणपमत्त अपमत्ततें,

जये अंतरजामी ॥ मानस इन्द्रिय दमनचूत, समदम अजिरामी
॥ २ ॥ चारुति घन गुणगण जरयो ए, पंचम पद मुनिराज ॥
तत्पदपंकज नमत हे, हीरधर्मके काज ॥ इति ॥

॥ अथ साधुपद स्तवनं ॥ मालनर मति कहो ॥ ए देशी ॥

॥ निकषाया जगजन कहे, धारै चनुगति वसनसें रोस हो,
मुनिंदजी ॥ राग हीण जय तूं करै, साहिबा शिवरमणीसें हेत हो
मुनिंदजी ॥ १ ॥ सर्व प्रमाद तजी रहै, सा० ठै पूरब कोरु हो
मु० ॥ शत सोगम आगम करै, सा० लघु कालै गुण आदि हो
मु० ॥ २ ॥ स्त्यानहीनिद्रा नदै, सा० पांमे कर्म निकंद हो मु० ॥ प्रच
लानिझमें रही, सा० बारम गुणनो वास हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ स्थि
ति रस घात प्रमुख धरै, सा० जो गुण संख्यातीत हो मु० ॥ तो
पिण तिण जगमें लही, सा० त्रिक घन गुणनी ख्यात हो मु० ॥
॥ ४ ॥ रयण त्रयसें शिवपथै, सा० साधन पर वर जीव हो मु०
॥ साधु हुवइ तसु धर्ममें, सा० कुशलु जवतु जगतीव हो मु०
॥ ५ ॥ इति साधुपद स्तवनं ॥

॥ अथ साधुपद शुद्ध ॥

॥ सुमति गुपति कर संजम पालै दोष बयालीस टालै जी,
षट् काया गोकुल रखवालै नव विध ब्रह्मव्रत पालै जी ॥ पंच म
हाव्रत सूधा पालै धर्म शुक्ल उजवालै जो, रूपकश्रेणि कर कर्म
खपावै दमपद गुण उपजावै जी ॥ १ ॥ इति साधुपद स्तुति ॥

॥ अथ दर्शनपद चैत्यवंदन ॥

॥ हुय पुगल परियट्ट, अष्ट परमित संसार ॥ गंठिजेद
तव करि लहै, सब गुण आधार ॥ १ ॥ दायक वेदक शशि असं
ख, नवसम पण बार ॥ विना जेण चारित्र नाण, नही हुवै शिव
दातार ॥ २ ॥ श्री सुदेव गुरु धर्मनी ए, रुचि लह्यन अजिरांस ॥
दरसनकुं गणि हीग्धर्म, अहतिंस करत प्रणाम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ दर्शनपद स्तवनं ॥ रामचंदके वाग आंदो मोहि रह्यो री ॥ ए चाल ॥

॥ देव श्री जिनराज, गुरु ते साथ ज्ञायो री ॥ धर्म जिन
श्वर प्रोक्त, लक्षण बोधितणो री ॥ १ ॥ बोधि लाजके काज ससम
नरक जलो री ॥ तेष विना सुरलोक, तातें अधिक बुरो री ॥ २ ॥
मिथ्या तापे तप्त, बोधही बांहु लहेरी ॥ उपशम कायक ठेद, ई
श्वर तीन कहे री ॥ ३ ॥ जवसायर हे अपार, फुल अस्ताव क
ह्यो री ॥ जसु लाजे ते होय, गोसपद मात्र खरोरी ॥ ४ ॥ यद
जावे अप्रमाण, नाण चारित्र जलारी ॥ बोधधर्ममें जीव, लाजें
कुशल कला री ॥ ५ ॥ इति दर्शन पदं ॥

॥ अथ दर्शनपद थुई ॥

॥ जिनपसुत्ततत्त सूधा सरथै समकित गुण उजवाळै जी,
जेद ठेद करि आतम निरखी पशु टाळी सुर पावै जी ॥ प्रत्या-
ख्याने सम तुल्य ज्ञाख्यो गणधर अरिहंत मूरा जी, ए दर्शनपद
नित २ वंदो जवसागरको तीरा जी ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ क्षिप्रादिक रस राम वह्नि, मित आदम नाण ॥ जाव मि
लापसैं जिन जनित, सुय वीस प्रमाण ॥ १ ॥ जव गुण पज्जवि
उहि दोय, मण लोचन नाण ॥ लोकालोक स्वरूप ज्ञाण, इक के
वल ज्ञाण ॥ २ ॥ नाणावरणी नासथी ए, चेतन नाण प्रकाश ॥ ससम
पदमें हीरधर्म, नित चाहत अवकास ॥ ३ ॥ इति ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ अथ ज्ञानपद स्तवनं ॥ म्हारे अति उछरंगे ॥ ए चाल ॥

जिनवर जाषित आगम ज्ञाणिया, तत्व यथास्थित गमिया
जी ॥ म्हारे जगजन तारू ॥ ते उत्तम वर नाण कहायै, जविजन
अहनिश चाहै जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ जहाजहा कुपंथा सुपंथा, पे
यापेय अर्थथा जी ॥ म्हा० ॥ देव कुदेव अहित हितधारी, जाणें
जेश विचार जी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ श्रुति मति दोय ठै इंडी सारू

तेण परोक्त विचारू जी ॥ म्हा० ॥ नही मण केवल हे वारू, जीव
प्रत्यक्ष सुधारू जी ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ अयेविजस्स बलें जग जाणें,
लोकादिक अनुमाने जी ॥ म्हा० ॥ त्रिभुवन पूजै जासु पसायें,
थारी शुद्ध अध्यवसायें जी ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ नाणावरणी उपशमं
हेयथी, चेतन नाणकुं विलसै जी ॥ म्हा० ॥ सप्तम पदमें जवि
जन हरखे, निसदिम कुशलता निरखै जी ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ ज्ञानपद शुई ॥

मति श्रुति इंडी जन्तित कहियै लहियै गुण गंजीरो जी,
आतमधारी गणधर विचारी द्वादस अंग विस्तारो जी ॥ अवधि मं
नपर्यव केवल वलि प्रत्यक्ष रूप अवधारो जी, ए पांच ज्ञानकूं वंदो
पूजो जविजनने सुखकारो जी ॥ १ ॥ इति शुई ॥

॥ अथ चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

जस्स पसायें साहु पाय, जुग२ समितेंद ॥ नमन करै शुद्ध
जाव लाय, फुन नरपति वृंद ॥ १ ॥ जंपै धरि अरिहंतराय, करि
कर्म निकंद ॥ सुमति पंच तीन गुप्ति युत, दै सुख अमंद ॥ २ ॥ इखु
कृति मान कसायथी ए, रहित लेस सुचिचंत ॥ जीव चरित्तकूं हीर
धर्म, नमन करत नित संत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

॥ अथ चारित्रपद स्तवनं ॥

॥ निर्विकल्प अजं निर्गुणी, चिंदाज्ञास निरसंग ॥ सुग्यानी
साजलो ॥ टेर ॥ मूर्ति हीन चेतन करै, रूपी पुदगल रंग ॥ सु०
॥ १ ॥ स्पर्धक कारण वर्गणा, कायें कारण जाव ॥ सु० ॥ कृत्वां जो
गसुधामता, लब्धा संख स्वजाव ॥ सु० ॥ २ ॥ पर्याप्ता लघु जो
गमें, वृद्धि लहे जगमानं ॥ सु० ॥ मध्ये वसु संमयें लहे, अंते द्वौते
जाण ॥ सु० ॥ ३ ॥ सहकारी मानसमुखा, कारण रम्य वलेण ॥
सु० ॥ प्राप्ता घस्र प्रकारता, सप्त पृथ्वीतका तेन ॥ सु० ॥ ४ ॥ तडो
धन रूपी जलो, चेतन संजम धाम ॥ सु० ॥ कर घन मिल पद

धर्ममें, कुशल जवतु अजिराम ॥ सु ॥ ५ ॥ इति चारित्रपद स्तवर्न ॥

॥ अथ चारित्रपद युई ॥

॥ कर्म अपचय दूर खपावै आतम ध्यान लगावे जी, बारे
जावना सूधी जावै सागर पार ऊतारै जी ॥ खट खंम राजकूं दूर
तजीनें चक्रो संजम धारै जी, एहवो चारित्रपद नित वंदौ आतम-
गुण हितकारै जी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीरुषजादिक तीर्थनाथ, तजव सिव जाण ॥ बिहि अं
तेरपि बाह्य, मध्य द्वादस परिमाण ॥ १ ॥ वसुकर मित आमो स
ही, आदिक लब्धि निदान ॥ जेदें समता युत खिणें, दृग्धन कर्म
विमान ॥ २ ॥ नवमो श्रीतपपद जलो ए, इच्छारोध सरूप ॥ वंदनसें
नित हीरधर्म, दूर जवतु जवकूप ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद स्तवन ॥

॥ बारस जेद जण्या जिनराजे, बाह्य मध्यतणा जग काजे
रे ॥ म्हारे शिवपदश्रेणि ॥ ए आंकणी ॥ तिण जेव सिद्धितणा
वर ग्याता, जिनवर पिण तपना कर्ता रे ॥ म्हारे शि० ॥ १ ॥ स
मता सहितें जिनतें जारी, जखी कर्मचमु पिण हारी रे ॥ म्हारे
शिवपदश्रे० ॥ जीव कनकसें कर्म कचौरा, दहे तप पावकका जोरा
रे ॥ म्हारे शिव० ॥ तप तरुवरना कुसम हें रुद्धि, देव नरनी
फल ते सिद्धि रे ॥ म्हारे शि० ॥ पाप सकल हे तमनी रासी, तप
जानुसे जायें नासी रे ॥ म्हारे शि० ॥ ३ ॥ जस्त पसायें लहिये
वारू, लब्धा सगली जगहितकारू रे ॥ म्हा० ॥ अति डुकर फुन
साध्यता हीना, काम तातें वारू कीना रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ इच्छा
रोधन रूपी कहिये, तपपदही चैतन बहिये रे ॥ म्हा० ॥ पाठक
श्रीहीरधर्म रूपासे, नवपद कुसलाकूं जासे रे ॥ म्हारे शि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ तप पद युई ॥

इन्द्रारोधन तप ते ज्ञाख्यो आगम तेहनो साखी जी, इव्य
ज्ञावसे द्वादश दाखी जोग समाधी राखी जी ॥ चेतन निजगुण
परणित पेखी तेहिअ तपगुण दाखी जी, लबधि सकलनो कारण
देखी ईश्वर सें मुख ज्ञाखी जी ॥ १ ॥ इति तपपद स्तुति ॥

॥ अथ श्रुतिविंशति जिन स्तुति ॥

श्रीमद्वृषज्ज सर्वज्ञ, वृषज्जांक सुवर्णरुक् ॥ जय देवाधि देवाहा,
नाजिराजेंद्र नंदनः ॥ १ ॥ जुगस्यादौ त्वयायेन, ज्ञानत्रय युते न
यत् ॥ जनन्या मरुदेवाबाः, बावनं जठरं कृतं ॥ २ ॥ इति वृषज्ज
स्तुति ॥ अर्हताजितनाथेन, गज लांठन शालिना ॥ जितसत्रु
महीपाल, पुत्रेण कनकत्विषा ॥ ३ ॥ विजयाकुक्षि रत्नेन, जगवं-
स्त्वयका जिनः ॥ जिता रागादयोयेन, वंदेत्वां सर्वदा मुदा ॥ ४ ॥
इत्यजित स्तुति ॥ जितारिन्नृपतेर्वर्यात्, संजवः संजवान्निधः ॥
सेनाया मंहनो हेम, वणों गंधर्व लांठनः ॥ ५ ॥ सर्वसौख्यप्रदो मुख्य,
ज्ञान दर्शन संयुतः ॥ मुनीनां पूंगवो देवो, नित्यं दिसतुमांजिनः ॥
॥ ६ ॥ इति शंजव स्तुतिः ॥ सिद्धार्था नंदनं सार्व, वीतरागं जग-
त्पतिं ॥ श्रीसंवर समुत्पन्नं, प्लवगांकं हिरण्यज्ज ॥ ७ ॥ अजिनंदन
नामानं, विशुद्ध हृदयं सदा ॥ यस्तौति परया जक्त्या, सनालोकेजि
नंद्यते ॥ ८ ॥ इत्यजिनंदन स्तुति ॥ मेघान्निध धरि त्रोल, तन
यो मंगलप्रदः ॥ क्रौंच लक्षण नृदेम, मरीचिर्मगलांगजः ॥ ९ ॥ सत्वं
सुमतिनाथेश ॥ सुमतिं तनु सत्तमां ॥ जविनां पुण्य कर्तृणां, स्वर्ग
सौख्या वलि प्रदं ॥ १० ॥ इति सुमति स्तुतिः ॥ सुसीमापुत्र
सत्कोक, नवद्युति धराधर ॥ धराजिव नृपोद्भूतः, पद्म लक्षण
धारकः ॥ ११ ॥ जवाब्धौ जव संकीर्ण, उस्तरे पततां नृणां ॥
त्राणाय सततं देव, पद्मप्रज्ज जिनेश्वर ॥ १२ ॥ इति पद्मप्रज्ज

स्तुति ॥ श्रीसुपार्श्वान्निघोदेवः, पृथ्वीजः स्वस्तिकांकजृत् ॥
 प्रतिष्ठ नृप संजात, श्रामीकर करो जिनः ॥ १३ ॥ समुद्र
 इव गंजीरः, कर्माणां ह्येदने परः ॥ यः सार्वः परमब्रह्मा, रतं
 नौमि सदा विभू ॥ १४ ॥ इति सुपार्श्व स्तुतिः ॥ चंद्रप्रज्ञ प्र
 ज्ञोकांतं, चंद्र लक्षण संयुतः ॥ तमापतिष्ठ विज्ञान, तमोव्यूह वि
 नाशनः ॥ १५ ॥ संसार जलधेर्नाथ, महसेन नृपोन्नव ॥ लक्ष्मणा
 पुत्रमां स्वामि, नव केवल बोधजृत् ॥ १६ ॥ इति चंद्रप्रज्ञ स्तुति ॥
 (अत्राद्यश्चत्रबंधः श्लोकः) ॥ संस्तुतोबोधदत्ताश्रु, सुरासुरनरेश्वरैः
 ॥ सुविधिर्वीरितशर्म, सुग्रीवनृपनंदनः ॥ १७ ॥ यस्यासीकननीरा
 मा, माननीयादिवौकसां ॥ मानमुक्तोवदातोयो, मायौमकरलांघिनः
 ॥ १८ ॥ इति सुविधनाथ स्तुतिः ॥ (चामरबंधाविमौ) ॥ श्री
 मंहीतलनाथेश, नन्दादृढरथात्मजः ॥ ज्ञास्वत्सुवर्णवदेह, श्रीवत्सांक्षां
 कधारक ॥ १९ ॥ त्वदीयचरणांज्जो, सेवकानांवपुर्नृतां ॥ प्राक्कृ
 तं वृंजनव्यूहं ॥ डुष्टंशंज्जोद्यहेविज्जो ॥ २० ॥ इति शीतलनाथ स्तु
 तिः ॥ विष्णुर्वैशार्कवदेवो, विष्णुपुत्रोहिरण्यजः ॥ श्रेयोवृद्धिकरोज
 स्व, खड्गलांघिनजृज्जिनः ॥ २१ ॥ हित्वाकर्मरिपुन्सार्व, श्रेयांसश्रे
 यसैः सेह ॥ परज्ञानमयेनत्वं, महानन्दपदं परं ॥ २२ ॥ इति श्रेयां
 स स्तुतिः ॥ ११ ॥ वरोवर्त्तिरामीहा, जवतांश्चदि ॥ ऊटितिष्ठे
 दितुंचित्ते, ज्ञोन्नव्याः प्राप्तुमकरं ॥ २३ ॥ तदाज्जध्वमेनंहि, वासु
 पूज्यजयासुतं ॥ वसुपूज्यकुलोत्तंसं, महिषांकंचरक्तजं ॥ २४ ॥ इ
 ति वासुपूज्य स्तुतिः ॥ १२ ॥ श्रीमद्दिमलनाथेऽ, कृतवर्मसमुन्नवः
 ॥ गूकरांकधरस्यामा, पूत्रकल्याणदीधिते ॥ २५ ॥ चंद्रवर्द्धिमलज्ञान,
 त्वदांयस्मरणंविना ॥ कुर्वन्नपेतिनोब्रह्म, प्रक्रियांनातिविस्तरां ॥ २६
 ॥ इति विमल स्तुतिः ॥ १३ ॥ हेमवर्णस्यपूत्रस्य, सुयशःसिंह
 सेनयोः ॥ देवस्यश्वेनचिह्नस्य, वर्धनान्तगुणोदधेः ॥ २७ ॥ इन्द्र

योपियस्यांतं, गुणानांलेजिरेनहि ॥ अनन्तस्यगुणान्तस्य, कमोवकुं
 नरः कथं ॥ २८ ॥ इत्यनंत स्तुतिः ॥ १४ ॥ सुव्रतापूत्रवज्रांक,
 ज्ञानुवंशार्कसन्निभः ॥ कनकप्रज्ञसर्वज्ञ, धर्मनाथान्निधेश्वरः ॥ २९ ॥
 तवागोपिपुरश्चारी, ज्ञातलेयास्यशोकतां ॥ अनुत्तरफलाः संति, सतां
 संगतयोपिहि ॥ ३० ॥ इति धर्मनाथ स्तुतिः ॥ विश्वसेनधराधी
 सं, नन्दनंमृगलक्षणं ॥ आचिरेयंसुवर्णानां, कलायामिजिनेश्वरं ॥
 ॥ ३१ ॥ तंश्रीमन्नांतिनामानं, यस्याग्रेकुर्वतेमुदा ॥ प्राज्यांसुमनसां
 वृष्टिं, विबुद्धाविबुधप्रियां ॥ ३२ ॥ इति शांतिनाथ स्तुतिः ॥ श्री
 युतायाः श्रियपुत्र, श्रेयस्करहिरण्यज्ञ ॥ सूरिज्ञूपतिसंजात, बागल
 क्षणधारकः ॥ ३३ ॥ कुंशुनाथजिनेशस्य, तीर्थंकरजगत्पते ॥ मदीयं
 पापसंदोहं, जवांतरकृतंघनं ॥ ३४ ॥ इति कुंशुनाथ स्तुतिः
 सुदर्शननृपोद्भूतं, नंदावर्त्ताकसंयुतं ॥ अञ्जोजवन्निरालेपं, देवीपुत्रसु
 वर्णजं ॥ ३५ ॥ जगन्मुख्यागुणाः सर्वे, धुर्य्यप्रभुतयाजिनं ॥ चरी
 कर्मिनमस्तमा, अरायपरमात्मने ॥ ३६ ॥ इत्यरनाथस्तुति ॥ १८
 ॥ कुंजप्रज्ञावतीपूत्रौ, नीलवर्णौघटांकजृत् ॥ जगन्मित्रइवध्वान्त,
 नासनाद्विदितःसदा ॥ ३७ ॥ उत्रत्रययुतोज्ञाति, देवयोविष्टपत्रये
 ॥ तस्यश्रीमल्लिनाथस्य, स्मरणेनमुदासखे ॥ ३८ ॥ इति मल्लिना
 थ स्तुतिः ॥ सुमित्रनृपतेःसूनो, पद्माकुक्षिपवित्रकृत् ॥ कुर्मल
 क्षणजृद्धर्म, दायकस्यामलहृये ॥ ३९ ॥ मुनिसुव्रतदेवेन, क्षीणक
 र्मारिमंरुल ॥ देहित्वंमेव्ययीज्ञावं, पदंतत्पुरुषोत्तमः ॥ ४० ॥ इ
 ति मुनिसुव्रत स्तुति ॥ २० ॥ श्रीमद्विजयज्ञूपाल, कुलोत्तंसहिर
 ण्यरुक् ॥ वप्रासुतनमिनाथ, नीलोत्पलसदंकजृत् ॥ ४१ ॥ यस्ते
 पंचजनोदेव, निन्दाचकुरुतेश्वयं ॥ सएतिपरमज्ञानं, कोपिनह्यत्र
 संशयः ॥ ४२ ॥ इति नमिनाथ स्तुतिः ॥ २१ ॥ शिवायास्तनयेव
 र्य्ये, समुद्रविजयोन्नवे ॥ हरिवंसहरौशंजौ, शंखांकिकमलप्रज्ञे ॥ ४३

॥ त्यक्तराजीमतीस्नेहे, नेमनाथेजितेस्मरे ॥ सिद्धिप्रमदयामाला, प्र
त्यक्षेपिजिनेश्वरे ॥ ४४ ॥ इति नेमनाथ स्तुतिः ॥ २२ ॥ अश्वसेना
कञ्जूपाल, सुतेनपरमेष्ठिना ॥ वामेयेनदितायेन, कमठस्याजिमान
ता ॥ ४५ ॥ तस्मैश्रीपार्श्वनाथाय, नमोस्तुमामकंसदा ॥ पवनास
नचिन्हाय, नीलवर्णायसंज्ञवे ॥ ४६ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥
श्रीमत्सिद्धार्थवंशार्क, त्रिशलेयजगत्मणे ॥ महानादध्वजाद्वैत, क
ल्याणंकरसर्वदा ॥ ४७ ॥ चरमस्तीर्थकृद्दीर, मोहेज्जहननेमृगात् ॥
त्वन्नक्तिदत्तचित्ताय, कमलांदेहिमेजिन ॥ ४८ ॥ इति वीरप्रभुस्तुतिः
॥ २४ ॥ इति श्रीकृष्णकल्याणोपाध्याय कृत चतुर्विंशति जिन स्तुतिः ॥

अथ नवपदजाके जलीके देववन्दनमें कहणेका चैत्यवन्दन प
हली लिखा है ॥ ॥ अथ नवपद वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

सुरमणी तम सहु मंत्रमां, नवपद अजिरामी रे लोय ॥
अहो न० ॥ करुणासागर गुणनिधी, जग अंतरजामी रे लोय ॥
अहो ज० ॥ १ ॥ त्रिभुवनजन पूजित सदा, लोकालोक प्रकासी
रे लोय ॥ अहो लो० ॥ एहवा श्रीअरिहंतजी, नमुं चित्त जल्लासी
रे लोय ॥ अहो न० ॥ २ ॥ अष्ट करमदल कथ करी, थया सिद्ध
मरूपी रे लोय ॥ अहो थ० ॥ सिद्ध नमो ज्ञवि ज्ञावधी, जे आगम
अरूपी रे लोय ॥ अहो जे० ॥ ३ ॥ गुण उत्तीसे सोजता, सुंदर
सुखकारी रे लोय ॥ अहो सु० ॥ आचारज तीजै पदै, बंदू अविकारी
रे लोय ॥ अहो वं० ॥ ४ ॥ आगमधारी उपशमी, तप डु विध
आराधी रे लोय ॥ अहो त० ॥ चोथे पद पाठक नमो, संवेग
समाधी रे लोय ॥ अ० सं० ॥ ५ ॥ पंचाचार पालण परा,
पंचाश्रव त्यागी रे लोय ॥ अ० पं० ॥ गुणरागी मुनि पांचमें, प्रणमं
वरुजागी रे लोय ॥ अ० प्र० ॥ ६ ॥ निज पर गुणनें जलखै,
श्रुत अक्ष आवै रे लोय ॥ अ० श्रु० ॥ ठेठे गुण दरसल नमो, आ-

तम शुभ्र ज्ञावे रे लोय ॥ अ० आ० ॥ ७ ॥ ग्यान नमो गुण
सातमे, जे पंच प्रकारे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ स्व पर प्रकाशक
दिनमणी, अज्ञान निवारे रे लोय ॥ अ० अ० ॥ ८ ॥ आठमें चां
रित्रपद नमो, परज्ञाव निवारी रे लोय ॥ अ० ५० ॥ खंत्यादिक
दस धर्मनो, जेह ठे अधिकारी रे लोय ॥ अ० जे० ॥ ए ॥ नवमे
वलिं तपपद नमो, बाह्याज्यंतर जेदे रे लोय ॥ अ० बा० ॥ बांध्या
काल अनंतना, जे कर्म उठेदे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ १० ॥ ए
नवपद बहुमानथी, ध्यावै शुभ्र ज्ञावै रे लोय ॥ अ० ध्या० ॥ नृप
श्रीपालतणी परै, मन वंछित पावै रे लोय ॥ अ० म० ॥ ११ ॥
आसू चैत्रुक मासमां, नव आंबिल करिये रे लोय ॥ अ० न० ॥
नव नली विधि युत करी, शिवकमला वरिये रे लोय ॥ अ० शि० ॥
॥ १२ ॥ सिद्धचक्रनी बहु परै, वर महिमा कीजे रे लोय ॥ अ० ॥
व० ॥ श्रीजिनलान्न कहे सदा, अनुपम जस लीजे रे लोय ॥ अ० ॥
अ० ॥ १३ ॥ इति नवपद स्तवनं ॥

॥ अथ नवपद स्तवन २ जुं ॥ राग मारू ॥

तीरथनायक जिनवरू जी, अतिसय जास अनूप ॥ सिद्ध
अनंत महागुणी जी, परमानंद सरूप ॥ जविक मन धारज्यो रे ॥
धारज्यो नवपद ध्यान ॥ ज० ॥ १ ॥ ए टेर ॥ श्री आचारज गण
धरू रे, गुण ढत्तीस निवास ॥ पाठक पदधर मुनिवरू जी, श्रुत दा
प्रमिसुखिलास ॥ ज० ॥ २ ॥ सुमति गुपति धर शोभता जी,
समतावंत ॥ सम्यग्दर्शन सुंदरू जी, ज्ञान प्रकाश अनंत ॥
॥ ३ ॥ संबर साधना चरण ठै रे, तप उत्तम विधि दोय ॥
नवपदना ध्यानथी रे, निरुपाधिक सुख होय ॥ ज० ॥ ४ ॥
मन त सम जिनधर्मनो रे, मूल ए नवपद जाण ॥ अविचल अनु
जैव कारणे जी, नितप्रति नमत कळयाण ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ३ जुं ॥ राग प्रभाती ॥

नवपद ध्वान धरो रे, जविका न० ॥ मन वच काया कर
एकंते, विकषा-दूर हरो रे ॥ न० ॥ १ ॥ मंत्र जमी अरु तंत्र घणो
रा, इन सबकुं विसरो रे ॥ अरिहंतादिक नवपद जपनें, पुण्य जं
कार जरो रे ॥ न० ॥ २ ॥ अरुसिद्ध नवनिधि मंगलमाला, संपत्ति
सद्गज वरो रे ॥ लालचंद याकीबलिहारी, सुरतरु बीज खरो रे न० ॥ ३ ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ४ थुं ॥

जीया चतुरस्रजाण नवपदके गुण गाय रे, जी० ॥ नवपद
महिमा जगमें मोटी, गणधर पार न पाय रे ॥ जी० ॥ १ ॥ जो
अपणो आतमसुख चाहे, तो इक ध्यान लंगाय रे ॥ जी० ॥ करम
निकाचित दूर करणकुं, सुंदर शुद्ध ऊपाय रे ॥ जी० ॥ २ ॥ इन
को पुष्ट आलंबन करतां, अजर अमर पद आय रे ॥ जी० ॥ इव
जिन जए आगामी होंयगे, नवपद संग पसाय रे ॥ जी० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ५ सुं ॥

जिन नित नमो, नित नमो नमो नमो, जि० ॥ अरिहंत
सिद्ध नर आचारज, उवजाया मन गमो२ ॥ जि० ॥ १ ॥ सर्व
साधू मंगल ए पांचू, याहीसैं दिल रमो२ ॥ जि० ॥ दर्शन ज्ञान
चरण तप उत्तम, याहीसैं दिल दमो२ ॥ जि० ॥ सर्व पाप तज
जज नवपदकुं, सर्व पाप उपशमो२ ॥ जि० ॥ बाल कहे यही सार
जगतमें, नर द्वार मत जमो२ ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद थुई ॥

नितप्रति हूं प्रणामुं सिद्धचक्र सुज जाव, हिव कारज सि
द्धिनो लाधो एह ऊपाय ॥ तुज नाम पसारैं आरति व्याधि पुलाय,
जग तुज अनुग्रहणी सुख संपत्ति मुज आय ॥ १ ॥ श्रीअरिहंत न
मिथै सिद्ध सूरि उवझाव, मुनिवर त्रिक करनें दंसण नाण सुहाय ॥

हुग विधि चारित्तै वुध विध तप मन ज्ञाय, ये नवपदं ध्यावता नि
रूपम शिवसुख आय ॥ १ ॥ विद्यापरवादे जाणो ए अधिकार, श्री
गुरु उपदेशें सिद्धचक्र उद्धार ॥ प्रवचन अनुसारें ज्ञाण्यो एह विचा
र, जविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणजंमार ॥ ३ ॥ जिनधरम अ
नुसगी चक्रेसरि सुखकार, सेवकनें आपे सुख संपति परिवार ॥
हिव निहि उदंश करि चारित्रनंदी मन ज्ञाय, जिनचंद सूरीसर
स्वरतरपति सुपसाय ॥ ४ ॥ इति शुई ॥

॥ अथ जैतीसंयुक्त नवपद उली करण विधि लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम दिवस विधि लिख्यते ॥

(प्रथम) आसो सुदि ३ अथवा चैत्र सुदि ३ सें उली सरू
करे, कजी तिथि घटी होय तो ६ सें सरू करे, वढी होय तो ७ सें
सरू करे, लेकिन आंबिल ए पूनम तक करे. प्रथम जमीन शुद्ध
करके मांरणादिकसें चित्रित करे, पीठे पट्टे पर सिद्धचक्र आपके त्रि
काल पूजा करै. प्रज्ञातसमें राईपरिक्रमणा करके पीठे वस्त्रोंकी
परिलेहणा करै. जहां सिद्धचक्रकी आपना हे उहां आयके पांचे
शक्रस्तवे देव वांटे, पीठे नव चैत्योंमें अथवा नव प्रतिमा आगे नव
चैत्यवंदन करै, वासक्षेप पूजा करे, पीठे केसरचंदनसें पूजा करै.
गुरु पास आयके अष्ठुठिनमिके पाठसें राई आलोवे, आंबिलका प
खस्काण करै. प्रथम अरिहंतपदका श्वेत रंग हे इस वास्ते चावलोंसें
जुंर गरमपाणीसें आंबिलका नियम करे. पीठे अरिहंतके बारे गु
णोंको विचार कर नमस्कार करै, सो लिखते हैं. सब गुणोमे इडा
मिखमासमणो वं० पाठ कहिके नमस्कार करै ॥

॥ अथ द्वादश अरिहंत गुणाः ॥

१ असोकवृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥

२ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

- ३ दिव्यध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ४ चामरयुग प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ५ स्वर्णसिंहासण प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ६ ज्ञानमंजुल प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ७ डुंडुजि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ८ वत्रत्रय प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ९ ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
- १० पूजातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
- ११ वचनातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
- १२ अपायापगमातिशय संयुताय श्रीअ० ॥ इति द्वादसअ० गु०

॥ इत्यादि नमस्कार करके अन्नचूससियेणं कहिके १२ लोगस्तका काजसग्न करै, एक लोगस्त प्रगट कहे, पीठै स्वस्थानक जा के चैत्यवंदन करै, पञ्चखाण पार के आंबिल करै, पहले वखत जल पीवे तब चैत्यवंदन कर के पीवे, पीठै मध्याह्न समय पांचे शक्रस्तवे देव वांदै, गुणनो (१०००) ॥ जँ हँ एमो अरिहंताणं ॥ इस पदका करै, श्रीपालचरित्र सुणे, पूण पहर दिन रहणैसँ तीसरी बेर पांचे शक्रस्तवे देव वांदै, पीठै फेर चैत्यवंदन कर के तिबिहार पञ्चक्राण करे पाणहारका । फेर सामायक ले के दिन रहते प्रति क्रमण करै, आरती के वखत दीप धूप पुष्प पूजा करै अथवा पहले आरती वगेरे करके पीठै पन्निक्मणा करै, (सोणे के वखत) पहले इरियावही परकमके चैत्यवंदन करै, फेर राइ संधारा गाथा सुणै ॥ निज नही आवे जहां तक नव गुल स्मरण करै ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितिय दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ अब इसी मुजब दूसरे दिन प्रजात समे की सब करणी पहले मुजब करके सिद्धपदका लाल रंग दे इस वास्ते गेहूंकी रो-

होसैं आबिल करै ॥ लै हूँ एमो सिद्धाणं ॥ इस पदका दो हजार गुणना करै, सिद्धपदका ८ गुण हे, ८ नमस्कार गुरु करावै सो लिं॥

॥ अथ सिद्ध अष्ट गुणाः ॥

१ अनंत ज्ञान संयुताय श्री सिद्धाय नमः ॥

२ अनंत दर्शन संयुताय श्रीसि० ॥

३ अव्याबाध गुण संयुताय श्रीसि० ॥

४ अनंत सम्यक्त चारित्र्य गुण संयुताय श्रीसि० ॥

५ अक्षयस्थिति गुण संयुताय श्रीसि० ॥

६ अरूपी निरंजन गुण संयुताय श्रीसि० ॥

७ अगुरु लघु गुण संयुताय श्रीसि० ॥

८ अनंतवीर्यगुण संयुताय श्रीसि० ॥ इति सिद्धाष्टौगुणाः ॥

यह आठ नमस्कार करके अन्नब्रूसलि० कहके आठ लोगस्सका काउसग करै, एक लोगस्स प्रगट कहे, फेर पूर्वोक्त करणी करै ॥

॥ अथ तृतीय दिवस विधि लिख्यते ॥

पूर्वोक्त विधिसें प्रज्ञात कर्त्तव्य करै, आचार्यपद पीले वर्ण हे इस वास्ते चणाकी दालका आंबिल करै ॥ लै हूँ एमो आयरि आणं ॥ इस पदका दो हजार जाप करै, आचार्यके ३६ गुण हे, वत्तीस नमस्कार गुरु करावै सो लिख्यते हे ॥

॥ अथ आचार्य छत्रीस गुणाः ॥

१ प्रतिरूपगुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥

२ सूर्यवत्तेजस्वी गुण संयुताय श्रीआ० ॥

३ युगप्रधानागम संयुताय श्रीआ० ॥

४ मधुर वाक्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥

५ गांजीर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥

६ धैर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥

- ७ उपदेशगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- ८ अपरिश्रावीगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- ९ सौम्यप्रकृतिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १० शीलगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- ११ अविग्रहगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १२ अविकथकगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १३ अचपलगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १४ प्रसंतवदनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १५ क्षमागुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १६ मृडुगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १७ सर्वसंगमुक्तिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १८ रुजुगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १९ द्वादस विध तपगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- २० सप्तदश विध संयमगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- २१ सत्यव्रतगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- २२ सौचगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- २३ अकिंचनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- २४ ब्रह्मचर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- २५ अनित्य ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
- २६ असरण ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
- २७ संसार स्वरूप ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
- २८ एकत्व स्वरूप ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
- २९ अन्यत्व ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
- ३० अशुचि ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
- ३१ आश्रव ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३२ संवर जावना जावकाय श्रीआ० ॥

३३ निर्जरा जावना जावकाय श्रीआ० ॥

३४ लोकस्वरूप जावना जावकाय श्रीआ० ॥

३५ बोधदुर्लभ जावना जावकाय श्रीआ० ॥

३६ धर्मदुर्लभ जावना जावकाय श्रीआ० ॥ इतिषट्त्रिंशत् आ०

॥ यह उत्तीस नमस्कार करके अन्नचूससि० कहके उत्तीस

३६ लोगस्सका काजसग करे, प्रगट लोगस्स कहे. पूर्वोक्त करणी क्रमसें करै. इति तृतीय दिवस विधि ॥

॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं एमो नवज्ञायार्णं ॥ इस पदका २, हजार जाप करै. हरेसूंगका आंबिल करै. उपाध्याय पदके २५ गुण याद करके नमस्कार करै ॥

॥ अथ उपाध्यायजी के २५ गुण लिख्यते ॥

१ श्रीआचारांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः ॥

२ श्रीसुयगमांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

३ श्रीगणगंगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ०

४ श्रीसमवायांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

५ श्रीजगवतीसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

६ श्रीज्ञातासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

७ श्रीउपासगदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

८ श्रीअंतगदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

९ श्रीअणुत्तरोववाइसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

१० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

११ श्रीविपाकसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

१२ उत्पादपूर्व पठनगुण यु० ॥

- १३ आश्रायणीपूर्व पठनगुण यु० ॥
 १४ वीर्यप्रवाद पठनगुण यु० ॥
 १५ अस्तिप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
 १६ ज्ञानप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
 १७ सत्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
 १८ आत्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
 १९ कर्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
 २० प्रत्याख्यानप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
 २१ विद्याप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
 २२ अविध्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
 २३ प्राणायामप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
 २४ क्रियाविसालपूर्व पठनगुण यु० ॥
 २५ लोकविंशतार पठनगुण यु० ॥ इति पंचविंशत्योपाध्यायगुणः ॥

इस तरे २५ नमस्कार करै, खम्हा हो के अन्नबूँ कहेके २५
 लोगस्सका काउसगग करै, प्रगट लोगस्स कहेके पारे, पीठै पूर्वोक्त
 करणी करै ॥ इति चतुर्थ दिवस विधि ॥

॥ अथ पंचम दिवस विधि लिख्यते ॥

नैं हँ एमो लोए सब साहूणं ॥ इस पदका २ हजार गुण-
 ना करै, साधुपद काले वर्ण हे इस वास्ते उम्ह के बाकलोसैं आं-
 धिल करै, सर्व साधूपदके सत्ताईस गुण विचारता हुवा नमस्कार करै ॥

॥ अथ साधुपदके २७ गुण लिख्यते ॥

- १ प्राणातिपातविरमणव्रत युक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
 २ मृषावादविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
 ३ अदत्तादानविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
 ४ मैथुनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥

- ५ परिग्रहविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
 ६ रात्रिभोजनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
 ७ पृथ्वीकाय रक्तकाय श्रीसा० ॥
 ८ अग्निकाय रक्तकाय श्रीसा० ॥
 ९ तेजकाय रक्तकाय श्रीसा० ॥
 १० वायुकाय रक्तकाय श्रीसा० ॥
 ११ वनस्पतिकाय रक्तकाय श्रीसा० ॥
 १२ त्रसकाय रक्तकाय श्रीसा० ॥
 १३ एकैन्दीजीव रक्तकाय श्रीसा० ॥
 १४ बेइन्दीजीव रक्तकाय श्रीसा० ॥
 १५ तेइन्दीजीव रक्तकाय श्रीसा० ॥
 १६ चोइन्दीजीव रक्तकाय श्रीसा० ॥
 १७ पंचेन्दीजीव रक्तकाय श्रीसा० ॥
 १८ लोभ निग्रहकाय श्रीसा० ॥
 १९ क्षमागुण युक्ताय श्रीसा० ॥
 २० शुभ्रज्ञावना ज्ञावकाय श्रीसा० ॥
 २१ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीसा० ॥
 २२ संजमयोग युक्ताय श्रीसा० ॥
 २३ मनोगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥
 २४ वचनगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥
 २५ कायगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥
 २६ सीतादि द्वाविंशति परीसह सहण तत्पराय श्रीसा० ॥
 २७ मरणांतनुपसर्ग सहण तत्पराय श्रीसा० ॥ इति साधुगुण॥

इस वजे २७ नमस्कार करै, २७ लोगस्सका कानुसग्ग करै,
 प्रगट लोगस्स कहिके पारे, पीढे पूर्वोक्त करणी करै, यह पंच पर

मेष्टि पदके सत्र गुण मिलाएँ १०८ होता है, इस वास्ते मालामें एकसो आठ मणिये होते हैं ॥ इति पंचम दिवस विधिः ॥

॥ अथ षष्ठ दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ नै ह्रीं एमो दंसरास्त ॥ इस पदका २ हजार जाप करै, दर्शनपद सपेद वर्ण है इस वास्ते चावलोंका आंबिल करै, सम्यक्तके सरसठ गुण चिंतवकर नमस्कार करै ॥

॥ अथ सम्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते ॥

- १ परमार्थ संस्तवनारूप श्रीसदर्शनाय नमः ॥
- २ परमार्थ ज्ञानृसेवनारूप सद् ॥
- ३ व्यापन्न दर्शन वर्जनरूप सद् ॥
- ४ कुदर्शन वर्जनरूप सद् ॥
- ५ शुश्रूषारूप सद् ॥
- ६ धर्मरागरूप सद् ॥
- ७ वैयावृत्तरूप सद् ॥
- ८ अर्हद्विनयरूप सद् ॥
- ९ सिद्धविनयरूप सद् ॥
- १० चैत्यविनयरूप सद् ॥
- ११ श्रुतविनयरूप सद् ॥
- १२ धर्मविनयरूप सद् ॥
- १३ साधूवर्ग विनयरूप सद् ॥
- १४ आचार्य विनयरूप सद् ॥
- १५ उपाध्याय विनयरूप सद् ॥
- १६ प्रवचन विनयरूप सद् ॥
- १७ दर्शन विनयरूप सद् ॥
- १८ संसारे जिनसारमिति चिंतवनरूप सद् ॥
- १९ संसारे जिनमति सारमिति चिंतवनरूप सद् ॥

- ३० संसारे जिनमत स्थित साध्वादि सारमिति चिं० ॥
 २१ शंकादूषण रहिताय सद० ॥
 २२ कांक्षादूषण रहिताय सद० ॥
 २३ विचिकित्सारूप दूषण रहिताय सद० ॥
 २४ कुदृष्टिप्रशंसादूषण रहिताय सद० ॥
 २५ तत्परिचय दूषण रहिताय सद० ॥
 २६ प्रवचनप्रज्ञावकरूप सद० ॥
 २७ धर्मकथाप्रज्ञावकरूप सद० ॥
 २८ वादीप्रज्ञावकरूप सद० ॥
 २९ नैमित्तिकप्रज्ञावकरूप सद० ॥
 ३० तपस्वीप्रज्ञावकरूप सद० ॥
 ३१ प्रज्ञास्थायिक विद्याभूतप्रज्ञावक सद० ॥
 ३२ चूर्णग्रंजनादि सिद्धप्रज्ञावक सद० ॥
 ३३ कविप्रज्ञावकरूप सद० ॥
 ३४ जिनसासने कौसलता भूषण सद० ॥
 ३५ प्रज्ञावनाभूषणरूप सद० ॥
 ३६ तीर्थसेवाभूषणरूप सद० ॥
 ३७ स्थैर्यताभूषणरूप सद० ॥
 ३८ जिनसासने भक्तिभूषणरूप सद० ॥
 ३९ उपशम गुणरूप सद० ॥
 ४० संवेग गुणरूप श्रीस० ॥
 ४१ निर्वेद गुणरूप श्रीस० ॥
 ४२ अनुकंपा गुणरूप श्रीस० ॥
 ४३ आस्तिका गुणरूप सद० ॥
 ४४ परतीर्थकादि वंदनवर्जनरूप सद० ॥

- ४५ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जनरूप सद्व० ॥
 ४६ परतीर्थकादि आलाप वर्जनरूप सद्व० ॥
 ४७ परतीर्थकादि संलाप वर्जनरूप स० ॥
 ४८ परतीर्थकादि असनादि दानवर्जन श्रीस० ॥
 ४९ परतीर्थकादि गंधपुष्पादि प्रेषणवर्जन श्रीस० ॥
 ५० राजान्नियोगाकारयुक्त श्रीसद्व० ॥
 ५१ गणान्नियोगाकारयुक्त श्रीस० ॥
 ५२ बलान्नियोगाकारयुक्त श्रीसद्व० ॥
 ५३ सुरान्नियोगाकारयुक्त श्रीसद्व० ॥
 ५४ कांतारवृत्याकारयुक्त श्रीस० ॥
 ५५ गुरुनिग्रहकारयुक्त श्रीस० ॥
 ५६ सम्यक्तचारित्रधर्मस्व मूलमिति चिंतनरूप सद्व० ॥
 ५७ चारित्रधर्मस्य पुरस्यद्धारमिति चिंतन श्रीसद्व० ॥
 ५८ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सद्व० ॥
 ५९ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सद्व० ॥
 ५९ चारित्रधर्मस्याधारमिति चिंतनरूप सद्व० ॥
 ६० चारित्रधर्मस्य ज्ञाजनमिति चिंतनरूप स० ॥
 ६१ चारित्रधर्मस्य सन्निभमिति चिंतनरूप स० ॥
 ६२ अस्तिजीवेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीसद्व० ॥
 ६३ सचजीव नित्येति श्रद्धानस्थानयु० सद्व० ॥
 ६४ सचजीव कर्माणि करोतीति श्रद्धानस्थानयु० स० ॥
 ६५ सचजीव कृतककर्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्थान यु० स० ॥
 ६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस०
 ६७ अस्तिपुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस० ॥ इति स० ॥ —
 ॥ इति वजे समस्त नमस्कार कर खमा होके अन्नभूषण कद्वे

६७ लोगस्सका कानुसंग्ग करै. एक लोगस्स षगट कहके पारे. पीठै
पूर्वोक्त करणी करै. इति षष्ट दिवस विधिः॥

॥ अथ सप्तम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं नमो नाणस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करै.
ज्ञानपद उज्ज्वल वर्ण, तंडुलका आबिल करै, इकावन जेद ज्ञानपद
के चिंतव के नमस्कार करै ॥

॥ अथ ज्ञानपदके ५१ भेद लिख्यते ॥

- १ स्पर्शनेंडी व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- २ रसनेंडी व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- ३ घ्राणेंडी व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- ४ श्रोत्रेंडी व्यंजनावग्रह मति० ॥
- ५ स्पर्शनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- ६ रसनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- ७ घ्राणेंडी अर्थावग्रह मति० ॥
- ८ चक्षुरिंडी अर्थावग्रह मति० ॥
- ९ श्रोत्रेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- १० मन अर्थावग्रह मतिज्ञाना० ॥
- ११ स्पर्शनेंद्रीईहा मति० ॥
- १२ रसनेंद्रीईहा मति० ॥
- १३ घ्राणेंडीईहा मति० ॥
- १४ चक्षुरिंद्रीईहा मति० ॥
- १५ श्रोत्रेंद्रीईहा मति० ॥
- १६ मनेकरीईहामति० ॥
- १७ स्पर्शनेंडीअपाय मति० ॥
- १८ रसनेंद्रीअपाय मति० ॥
- १९ घ्राणेंद्रीअपाय मति० ॥

- २० चक्षुरिन्द्रियपाय मति० ॥
 २१ श्रोतेन्द्रियपाय मति० ॥
 २२ मनैनापाय मति० ॥
 २३ स्पर्शनेन्द्रियधारणा मति० ॥
 २४ रसनेन्द्रियधारणा मति० ॥
 २५ घ्राणेन्द्रियधारणा मति० ॥
 २६ चक्षुरिन्द्रियधारणा मति० ॥
 २७ श्रोतेन्द्रियधारणा मति० ॥
 २८ मनोधारणा मति० ॥
 २९ अक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ३० अनक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ३१ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ३२ असंज्ञी श्रुत० ॥
 ३३ सम्यक् श्रुत० ॥
 ३४ मिथ्या श्रुत० ॥
 ३५ सादि श्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ३६ अनादि श्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ३७ सपर्यवसति श्रुत० ॥
 ३८ अपर्यवसति श्रुत० ॥
 ३९ गमिक श्रुतज्ञान० ॥
 ४० अगमिक श्रुत० ॥
 ४१ अंगप्रविष्ट श्रुत० ॥
 ४२ अनंगप्रविष्ट श्रुत० ॥
 ४३ अणुगामि अवधिज्ञानाय नमः ॥
 ४४ अणूणगामि अवधि० ॥

४९ वद्धमान अवधि० ॥

४६ हीयमान अवधिज्ञा० ॥

४७ प्रतिपाती अवधि० ॥

४८ अप्रतिपाती अवधि० ॥

४९ रुजुमति मनःपर्यवज्ञानाय नमः

५० विपुलमति मनःपर्यवज्ञा० ॥

५१ लोकालोक प्रकाशक श्रीकेवलज्ञानाय नमः॥इति पं० ज्ञा०॥

इस तरे ५१ नमस्कार करै, खना होके अन्नचू० कहके एका
वन लोगस्सका काउसग करै. एक लोगस्स प्रगट कहके पारे. पीबै
पूर्वोक्त करणी करे. इति सप्तम दिवस विधि ॥

॥ अथ अष्टम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ नै ह्रीं नमो चारित्तस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करे.
चारित्र पदका उज्ज्वल वर्ण है, इसीसे तंडुलका आंवल करे. सत्तर
जेद चारित्रपदके चिंतवके नमस्कार करे.

॥ अथ चारित्रपद के ७० भेद लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूप चारित्राथ नमः ॥

२ मृषावादविरमणरूप चारित्रा० ॥

३ अदत्तादानविरमणरूप चारि० ॥

४ मैथुनविरमणरूप चारि० ॥

५ परिग्रहविरमणरूप चारि० ॥

६ क्षमाधर्मरूप चारित्रेभ्यो नमः॥

७ आर्यवधर्मरूप चारित्रे० ॥

८ मृडुताधर्मरूप चारित्रे० ॥

९ मुक्तधर्मरूप चारित्रे० ॥

१० तपोधर्मरूप चारित्रे० ॥

- ११ संयमधर्मरूप चारि० ॥
- १२ सत्यधर्मरूप चारि० ॥
- १३ सौचधर्मरूप चारि० ॥
- १४ अकिंचनधर्मरूप चा०
- १५ वंजधर्मरूप चारि० ॥
- १६ प्रण्वीरकासंयम चारि० ॥'
- १७ नदगरकासंयम चारि०
- १८ तेजुरकासंयम चा० ॥
- १९ वाजुरकासंयम चारि० ॥
- २० वनस्पतिरकासंयम चारि० ॥
- २१ वेइंद्रीरकासंयम चारि०
- २२ तेइंद्रीरकासंयम चारि० ॥
- २३ चौइंद्रीरकासंयम चारि० ॥
- २४ पंचेइंद्रीरकासंयम चारि० ॥
- २५ अजीवरकासंयम चारि० ॥
- २६ प्रेकासंयम चारि० ॥
- २७ उपेकासंयम चारि० ॥
- २८ अतिरक्तवस्त्रज्जक्तादि परठन त्यागरूप संयम चारि० ॥
- २९ प्रमार्जनरूप संयम चारि० ॥
- ३० मनसंयम चारि० ॥
- ३१ वाक्संयम चारि० ॥
- ३२ कायासंयम चारि०
- ३३ आचार्य वेयावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥
- ३४ उपाध्याय वेयावृत्त्यरूप संयम चारि० ।
- ३५ तपस्वी वेयावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥

- ३६ लघुशिष्यादि वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा० ॥
 ३७ गिलाणसाधु वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा० ॥
 ३८ साधु वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा० ॥
 ३९ श्रमणोपासक वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा० ॥
 ४० संघवेद्यावृत्त्यरूप चारि० ॥
 ४१ कुलवेद्यावृत्त्यरूप चारि० ॥
 ४२ गणवेद्यावृत्त्यरूप चारि० ॥
 ४३ पशुपंरुगादिरहित वसति वसण ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
 ४४ स्त्रीदास्यादि विकथावर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
 ४५ स्त्रीआसनवर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
 ४६ स्त्रीअंगोपांग निरीक्षण वर्जनरूप चारि० ॥
 ४७ कुरुयंतरसहित स्त्रीदावज्ञाव सुणन वर्जन ब्र०
 ४८ पूर्वस्त्रीसंज्ञोग चिंतन वर्जन ब्रह्मगुप्त चा०
 ४९ अतिसरस आहारवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
 ५० अतिआहार करणवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
 ५१ अंगविज्ञूषावर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
 ५२ अणसण तपोरूप चा०
 ५३ उणोदरी तपोरूप चा० ॥
 ५४ वित्तसंखेवरूप चा० ॥
 ५५ रसत्याग तपोरूप चा० ॥
 ५६ कायकिलेस तपोरूप चा० ॥
 ५७ संलेखणा तपोरूप चा० ॥
 ५८ प्रायश्चित्त तपोरूप चा० ॥
 ५९ विनय तपोरूप चा० ॥
 ६० वेद्यावच्च तपोरूप चा० ॥

६१ सिज्जाय तपोरुप चा० ॥

६२ ध्याम तपोरुप चारि० ॥

६३ उपसर्ग तपोरुप चा० ॥

६४ अनंत ज्ञान संयुक्त चा० ॥

६५ अनंत दर्शनसंयुक्त चा० ॥

६६ अनंत चारित्रसंयुक्त चा० ॥

६७ क्रोध निग्रहकरण चारि० ॥

६८ मान निग्रहकरण चारि० ॥

६९ माया निग्रहकरण चा० ॥

७० लोभ निग्रहकरण चा० ॥ इतिसित्तचारित्रज्ञेदाः ।

॥ इस तरै ७० नमस्कार करै, खमा हो के अन्नब्रूससि०
७० लोगसका कानसग करै, एक लोगस प्रगट कहे, पूर्वोक्त क
रणी करै ॥ इति अष्टम दिवस विधिः ॥

॥ अथ नवम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ नैं हँ एमो तवस्स ॥ इस पदका २ हजार गुणना करै,
तपपदका उज्ज्वल वर्ण इस वास्ते चावलोंका आंबिल करै, पञ्चास्
ज्ञेद तपपदके चिंतव के नमस्कार करै ॥

॥ अथ तपपद के ५० भेद लिख्यते ॥

१ यावत् कथक तपसे नमः ॥

२ इत्वर तपज्ञेद तपसे नमः ॥

३ बाह्यऊणोदरी तपज्ञेद तपसे नमः ॥

४ अर्ज्यंतरऊणोदरी तपज्ञेद त० ॥

५ इव्यतपवृत्ती संखेप तपज्ञेद त० ॥

६ क्षेत्रतप वित्ती संखेप तपज्ञेद त० ॥

७ कालतप वित्ती संखेप तपज्ञेद त० ॥

८ ज्ञावतप वित्ती संखेप तपज्ञेद त० ॥

१७ कायकिलेस तपन्नेद तप० ॥

१० रसत्याग तपन्नेद तप० ॥

११ इंद्रिकषाय योग विषयक संलीणता तपसे नमः ॥

१२ स्त्री पशु पंरुकादि वर्जित स्थान अवस्थित संलीणता त० ॥

१३ आलोचन प्रायश्चित्त तप० ॥

१४ पक्कमण प्रायश्चित्त तप० ॥

१५ मिश्र प्रायश्चित्त तपसे ॥

१६ विवेक प्रायश्चित्त तप० ॥

१७ उपसर्ग प्रायश्चित्त त० ॥

१८ तप प्रायश्चित्त त० ॥

१९ नेद प्रायश्चित्त त० ॥

२० मूल प्रायश्चित्त त० ॥

२१ अणवस्थित प्रायश्चित्त त० ॥

२२ पारंचिय प्रायश्चित्त त० ॥

२३ ग्यान विनयरूप तप० ॥

२४ दर्शन विनयरूप तप० ॥

२५ चारित्र विनयरूप त० ॥

२६ गुर्वादिक मन विनयरूप त० ॥

२७ वचन विनयरूप त० ॥

२८ काय विनयरूप त० ॥

२९ उपचारक विनयरूप तप० ॥

३० आचार्य वेयावच्च त० ॥

३१ उपाध्याय वेयावच्च त० ॥

३२ साधू वेयावच्च त० ॥

३३ तपस्वी वेयावच्च त० ॥

३४ लघुशिष्यादि वेयावच्च त० ॥

३५ गिलाणसाधू वेयावच्च त० ॥

३६ श्रमणोपासक वेयावच्च त० ॥

३७ संघ वेयावच्च तप० ॥

३८ कुल वेयावच्च त० ॥

३९ गण वेयावच्च तप० ॥

४० वायणा तपसेनमः ॥

४१ पृच्छना तपसे नमः ॥

४२ परावर्त्तना तपसे नमः ॥

४३ अनुप्रेक्षा तपसे नमः ॥

४४ धर्मकथा तपसे नमः ॥

४५ आर्त्तध्याननिवृत्त तपः ॥

४६ रौद्रध्याननिवृत्त तप० ॥

४७ धर्मध्यान चिंतन त० ॥

४८ शुक्लध्यान चिंतन तप० ॥

४९ बाह्य उपसर्ग तपसे नमः ॥

५० अन्त्यंतर उपसर्ग तपसे नमः ॥ इति पंचाश तपपद त्रैदाः ॥

इस तरे ५० नमस्कार करै. खमा होके अन्नबूससि० इत्यादि कहेके ५० लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहे. पीठै पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति नवम दिवस विधिः ॥

॥ अथ तपस्या ग्रहण करणैको गुरु पास जाणेकी विधिः ॥

प्रथम शुभ घन्टी देखेके अन्ना वस्त्र आभूषण पहरेके तिलक करके दोवसरसुं मस्तकमें धारण करके हाथके मौली बांधेके अक्षत सुपारी श्रीफल नैवद्य यथाशक्ति रोकड़्य लेके नवकार गुणता जया गुरुके पास जावै. द्वादशावर्त्त वंदना करके ग्यानपूजा करै

धीरै प्रमोदवन्त होके तप ग्रहण करे, ग्रहण करनेकी विधि आगे लिखी हे ॥ इति तपस्या ग्रहणार्थ गुरु पास जानेकी विधिः ॥

॥ अथ संक्षेप उजमणाविधि उलीकी लिख्यते ॥

पंचवर्ण के अनाजसें सिद्धचक्रका मंमल करै. सिद्धचक्रजी के चौ तरफ तीन गढ़ चूनीके आकार बनावे, पहिले गढ़में अष्टदल कमलके आकार नवपद स्थापन करै. पद९ के रंग मुजब गुण प्रमाणसें रत्न चढावे नर पंचवर्णके फूज, पंच वर्णके धान्य, नव नालेरका गोटा रंगके अपणेश रंग मुजब धीतुरेसे नरके चढावै पंचरंगी ए धजा चढावै, दूसरे बलयमें सोले श्रीफल अथवा सुपारी चढावै. तीसरे बलयमें ४८ ठूहारा चढावै, नव निधानोंकी जगे नव बने फल चढावै, नवग्रह दसदिग्पाल पदमें पकान्न रंगरंगे चढावै. इत्यादिक विधि संयुक्त सिद्धचक्र स्थापना घरदेरासरमें करै. नर जिनमंदिरमें बाहिरले मंमपमें ५ ॥ ७ ॥ हाथ प्रमाणें मंमल रचना करै. विस्तारसें सब विधि गुरुके हाथसें करै, नवपद जीकी पूजा पढाय कलस ढालै, धवलमंगल गीतग्यान गावै, वाजि न्र बजावै, महा महोन्नव उदार चित्तसें करै, मंगलझीप आरती प्र मुख करै. दूसरे दिन विसर्जन करै. इति संक्षेप सिद्धचक्र मंमल विधिः ॥ अब इसमें दिन गुरु पास आयके उलीके तपकों पारै. तप पारणकी विधि आगे लिखी हे तथा उद्यापनमें ग्यानज्ञतिके कार ए ए पूरा ए बीटांगणा ए पुस्तक ए लेखण ए ठवणी नव जिल मिल ए रुमाल ए मोरा ए मिजासणा ए आपना ए चंद्रआ ए पूठीया ए आरती ए कलश ए जपमाला ए मंदिर करवावे, ए प्रतिमा ए तिलक ए मुगट इत्यादिक नवर चीज बणवावे, शक्ति नही होय तो यथाशक्ति रोकनाणो चढावै. देवपदका देवमें देवे, गुरुपदका गुरुकूं देवे, ज्ञानपदका ज्ञानखाते लगावै, इत्यादिक यथायोग्य शुभलेखमें खरच करै. इति सिद्धचक्र संक्षेप उजमणाविधिः ॥

॥ अथ द्वादश मास पर्वाधिकार प्रारंभः ॥

॥ अथ चैत्रमासमें पर्वाराधन स्वरूप लिख्यते ॥

॥ चैत्र महीनेमें चैत्र सुद ७ से लेके चैत्र सुदि १५ पर्यंत ए दिन अति उत्तम है. उत्तमताका कारण ऐसा है—वारे महीनोंमें तीन अष्टादश महोत्सव आते हैं जिसमें चैत्र आसोजकी अष्टाई तो सास्वती है. आठमसेपूनुम तक इन दोनों महोनोमें व्यासुं निकायके देवता उर ६४ इंद्र एकठे होकर आठमा नंदीश्वर छीपमें जाते है; (पुन्याहं२) कहते जये अष्ट इवसें पूजन करै, गीत गान नाटकादिकसें अनेक तरेसें जक्ति करै, पीठै नवमें दिन अपणे२ जन्मकुं स फल मानते जये अपणे२ देवलोक जावे. इसी सुजव तीसरी अष्टाई आसाठ चोमासेकी (१४) पीठै (४२) दिन जाणेसें संवत्सरी पर्व साचवणेकुं (८) दिन तक अष्टादश महोत्सव करै. लेकिन यह अष्टादश सास्वती नहीं कही, कोइ बखत व्यासुं निकायके देवता ए कठे होकर नहींजी जावै, पहली पीठैजी करलेवै ॥ यह नवपदज की जुली शाश्वती अष्टादशमेंही की जाती है, नवपद माहात्म अङ्किकार दशमा विद्याप्रवादपूर्वमेंसें उद्धार करके जगज्जीवोके अनंत सुख प्राप्ति वास्ते श्रुतकेवली जगवान जगद्बाहूस्वामीनें इसको सिद्ध करा, इस वास्ते जगज्जीवोको यह तप प्रमाण है, उर जो जिवी अपनी अपनी कुयुक्तिये लगाकर खंरुन करते हैं सो तीर्थकरका वचन उत्थापणेसें अनंतसंसारमें जमेगें. सूत्रोंमें जगवंत महावीरने फुरमाया है, हे गोतम दीतराग सर्वज्ञ के वचन सूत्रोंमें हैं उर उन सूत्रोंमेंसें एक हरफकेजी यथार्थ अर्थकुं तोरुके नया कल्पन करेगा पंचांगी विरुद्ध परंपरागम विगर सो अनंतसंसारी होगा (सूत्रनाम किसका है) ॥ सुतंगणहररइयं, तदेवपत्तेयबुद्धरइयंच ॥ सुयकेवलिनारइयं, अजिन्नदसपूविणारइयं ॥ १ ॥ (अर्थ) गणधरोका रचा, प्रत्येकबुद्धोका रचा, श्रुतकेवली चौदे पूर्वधारियों का रचा, संपूर्ण दस पूर्वधारियोंका रचा जयेकुं जगवानने सूत्र कहा है. सूत्र १, पयन्ना २, आगम ३, सिद्धांत ४, ग्रंथ ५, इत्यादिक

दस नाम जगवानने अनुयोगद्वारसूत्रमें सूत्रका लिखा है, एकार्थ वाचक है इस वास्ते जइवाह उमास्वातिवाचकादिकोके बनाये निर्युक्त वेद प्रशमरति आदि पांचसो ग्रंथ सूत्रवत् मानने चाहिये, एक क्रोम पुस्तक श्रुतकेवलीयोके बनाये अर्जी जंमारोमे मौजूद है ॥

॥ अथ अष्टापद जुली करण विधि लिख्यते ॥

॥ इसी चैत्र मासमें सुदि (८) से लेकर पूर्णमासी तक (केइयक जयजीव) अष्टापदजीकी जुली करते हैं (जिसमें) पत्तिकमणा, देववंदन, देवपूजा, इत्यादिक सब विधि नवपदजीकी जुली तुल्य करै. (इतना विशेष है) श्री अष्टापद तीर्थाय नमः (इस पदका) २००० गुणना (वा) बीस जाप करै. अरिहंतपदके १२ गुणका नमस्कार करै, १९ लोगस्सका काजसगग करै, आत्रिल (वा) एकात्तलोका पञ्चस्काण करै, पीठे पूणमासीके दिन अष्टापदपर्वतकी थापना करै, मंमल रचै, सो विधि लिख्यते हैं ॥

पूर्व

१ । १ ।

त्रिवेदिकमध्य

असोकवृक्ष

जड़ः

(चत्तारि दस्किणाए, पञ्चिमजु

अठउत्तराई ॥ दस पुवाए दो अठा,

वंयमि वंदे चउबीसं ॥ १ ॥ पुवा

इं नसजमजियं ॥ दस्किणजु सं

जवाइ चत्तारि, पञ्चिम सुपासमा

इ, धम्माइ दसजुजरु ॥ २ ॥)

इति प्रथम परिपाटी ॥ प्रथम

यथाक्रमसें चोबीस कोठे मंमल

में बणाणा. इहां कांकणमोरे मो

ली आत्मरक्षापूर्वक नवपदजीके

मंमलवत् जाणना. नवग्रह दश

दग्पाल थापना करे. पीठे एक

काव्य पढ २ के एकेक कोठेमें एक

१५१६१७१८१९२०२१२२२३२४

— ४ — ५ — ६ — ७ — ८ — ९

जड़ः

३०३१३२३३३४३५

पश्चिम

जिनेश्वरके नामके चिठी उस पर वरक चढ़ा सुपारी चढ़ावे।
 एवं ॥ २४ ॥ अथ काव्य ॥ श्रीनाञ्जयजिनेश्वरं, नंदायत
 सितांशुकः ॥ यथाकुमुदतीनेता, नंदायतसितांशुकः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं
 श्रीं अर्हं ऐं श्रीरूपज्ञदेवस्वामी वेदिकापीठे तिष्ठस्वाहा ॥ १ ॥
 उपाध्वमजितं ज्ञत्वा, कंदधानामनेकपं ॥ प्रणतोद्योधितं ज्ञान, कंद
 धानामनेकपं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअजितस्वामी ० ॥ २ ॥
 श्रीशंजवप्रपन्नाये, समयं ते सदादरात् ॥ ते संतारवनान्मुक्ति, समयं
 ते सदादरात् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसंजवस्वामी ० ॥ ३ ॥
 ये जिनंदनते तीर्थ, राजपादसंज्ञाजनाः ॥ विलसंति चिरं ते त्र, राजपा
 दसंज्ञाजनाः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअजि ० ॥ ४ ॥ पूजि
 तां ह्रीं दीप्यमुत्तये, कांताराजीवमालया ॥ सुमते तव लीनादः, कांतारा
 जीवमालया ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऐं श्रीसुमति ० ॥ ५ ॥ पद्मप्रज्ञ
 सुदृष्टीनां, जूरिशोभातपोदयाः ॥ हन्यात्तमांसि पूषेव, जूरिशोभात
 पोदयाः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीपद्मप्रज्ञ ० ॥ ६ ॥ सुपाश्वे
 तत्श्रुतं श्रुत्वा, दर्पकोपक्रमानलां ॥ मुंचंति जंतवः शान्ता, दर्पकोप
 क्रमानलां ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसुपार्श्व ० ॥ ७ ॥ ज्ञवांश्चंद्र
 प्रज्ञेण, यैरज्ञाजिसमुन्नतः ॥ यैरज्ञाजिसमुन्नतः ॥ ८ ॥
 ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीचंद्र ० ॥ ८ ॥ सुविधेस्त्वद्विधिंप्राप्य, प्रमाद्यंत
 समाहितः ॥ ये ते श्रेयः श्रियं श्रस्त, प्रमाद्यंत समाहितः ॥ ९ ॥ ॐ
 ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसुविधि ० ॥ ९ ॥ सेवतेशीतलत्वाये, देवसंपन्न
 केवलं ॥ अपि मुक्तिर्न वेत्तेषां, देवसंपन्नकेवलं ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं
 अर्हं ऐं श्रीशीत ० ॥ १० ॥ श्रीश्रेयांसतनूजाजां, परमोक्षगतिर्नवान्
 ॥ अनंतानसत्त्वविश्रान्तं, परमोक्षगतिर्नवान् ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं
 अर्हं ऐं श्रीश्रेयांस ० ॥ ११ ॥ वासुपूज्यनवस्वर्णं, नीरजारूढसक्रमः ॥ हर
 स्वविरहं मोहं, नीरजारूढसक्रमः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री

वासुपूज्य० ॥ १२ ॥ विमलत्वांप्रतिस्वये, रंजयंतिमनोज्ञं ॥ अपि
 दुर्जयमुच्चैस्ते, रंजयंतिमनोज्ञं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीवि
 मल० ॥ १३ ॥ जग्मिवांसमनंतत्वां, नमस्यंतिमहापदं ॥ येतेविश्वत्र
 योलहमी, नमस्यंतिमहापदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअनं
 त० ॥ १४ ॥ नाशुतस्तवसिद्धांतो, येनावीतनयस्ततः ॥ वरंधर्मजि
 नद्धर्मा, येनावीतनयस्ततः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीधर्म० ॥
 ॥ १५ ॥ श्रीशांतेदेहिनां देहि, सारंगविदधेधृतिं ॥ शर्मकर्मततेरंक,
 सारंगविदधेधृतिं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीशांति० ॥ १६ ॥
 कुंशुनाथस्तुपंथानं, विधुतारोवृषादृतः ॥ पुंसांतन्यात्पिनाकीच, वि
 धुतारोवृषादृतः ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीकुंशु० ॥ १७ ॥
 येनत्वंनाचितःकर्म, वनवैश्वानरोपमः ॥ सोअरनाथकुधीर्जव्या, व
 नवैश्वानरोपमः ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअर० ॥ १८ ॥ नां
 ह्रिपद्मसुनःसिद्धि, पतिपन्नसुदारुणः ॥ येनतेज्जिद्यतेमद्धे, प्रतिपन्न
 सुदारुणः ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीमल्लिस्वामी० ॥ १९ ॥
 श्रीसुव्रतजिनाधीश, मङ्गमालोपलक्षितं ॥ विरंचिमिवसेवद्ध, मङ्ग
 मालोपलक्षितं ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीमुनि० ॥ २० ॥
 देव्योपित्वद्गुणोज्ञाना, सहामंदरसानुगाः ॥ गायंतित्वांनमेज्जक्त्या,
 सहामांदरसानुगाः ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीनमि० ॥
 ॥ २१ ॥ तृष्णातापात्वयावर्षे, शंमितादानवारणा ॥ श्रीने-
 मेजनतांराध्य, शंमितादानवारणा ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं
 ऐं श्रीनेम० ॥ २२ ॥ पार्श्वदेवसदाकृत, महाहारतरंगिताः ॥
 नाट्यंतिचरित्रंते, महाहारतरंगिता ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री
 पार्श्व० ॥ २३ ॥ वीरोजिनपतिःपातुः, तत्त्वानःकांचनश्रियं ॥ वि
 ब्रन्नमेषुनिस्सीमां, तत्त्वानःकांचनश्रियं ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं
 ऐं श्रीवीरस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठ२ स्वाहाः ॥ २४ ॥ पीठे

चोवीस माहाराजकी पूजा करावै, पीठै बलवाकुल दंके दिग्पालो
को विसर्जन करै ॥ इति अष्टापदपूजा ॥ दूसरापर्व ९ ॥

॥ शासनाधिपति जन्मकल्याणक पर्वाधिकारः ॥ ३ ॥

चेत्र सुदि १३ के दिन श्रीमहावीरस्वामीका जन्मकल्याणक
जया हे, इस वास्ते सब जगे धर्मरागीपुरष गुरुमुखसँ समजके जल
जात्रादिक संपूर्ण जन्मकल्याणकका महोत्सव करै, एसँही शक्तिवंत
श्रावककूँ धर्मके उद्योत वास्ते सब जगवंतके कल्याणक जो जो
होय उसका उत्सव करणा, एसी शक्ति नहीं होय तो सासनाधी-
श्वर देवाधिदेव श्रीमहावीरस्वामीके ज्यवनकल्याणकसँ लेकर नि-
र्वाणकल्याणक पर्यंत जिसदिन जो कल्याणक होय उसीका महो-
त्सव पूजन करणा चाहिये, इससँ धर्मका उद्योत होय, श्रीसंघमें
परम आनंद होय ॥ इति तीसरा पर्व ३ ॥

॥ अथ चैत्रोपूनमपर्वाधिकार सामाचारी सतकानुसारसे लिखते हे॥

प्रथम चावलके पूंजसँ सेतुंजयपर्वतकों स्थापन करै (तिस्र
पर) पट्टा रखके श्रीपुंरुरीक गणधर (वा) श्रीऋषभदेवस्वामीका
विंव स्थापन करै, अकृत मोतियोसँ पर्वतको बधावै, केसरचंदनसँ
पर्वतको पूजै, सब श्रीसंघ एकठे होकर पर्वतके चो फेर तीन प्रद-
क्षिणा देवे (पीठै) पूजन सुरू करै (यथा) दश (१०) बीस (२०),
तीस (३०) चत्ता (४०), पन्ना (५०) पुष्पदामेणलदर्श ॥ चउठठठअठम,
दसमदुवालय कलांडच ॥ १ ॥ अब प्रथम १० प्रकारसँ पूजनका
अधिकार लिखते हैं, एकाग्र चित्तसँ अष्टमंगलीक आगे रखके
श्रुद्धोदकसँ मूलप्रतिमाको न्दवण करावै, पीठै श्रीसंघ खमा होके
(१०) दस नमस्कार उच्चारपूर्वक १० फूल तथा १० फूलमाला
चढाके प्रतिमाके १० तिलक करै, यथाशक्ति सुपारी नारेल इत्यादि,
सब चीज उत्कृष्टसँ दस १ जघन्ये नारेल १ सुपारी १० उर फल

फूल यथासंज्ञव चढ़ावै, धूप खेवै, कपूरकी आरती करै, पीठै सिद्ध
 गिरी गुणगर्भित चैत्यवन्दन करके पांचे शंकरस्तवे देव वांदै, १० ख
 मासमण देके (श्रीसिद्धक्षेत्र पुंमरीक गणधराय नमः) इस पदका
 १० वेर नमस्कार करै, पीठै (श्रीसिद्धक्षेत्र पुंमरीक आराधनार्थ करै
 मि कान्तसगं अन्नबूससि०) कहके १० लोगस्सका कान्तसग करे
 (इहां केइ आचार्यने कहे ते कि बहुत उन्हव होय वखत कम रहे तब
 एक लोगस्सका कान्तसग करै १० जेतीके ठिकाणे १० गाथाका
 स्तवन कहे) पीठै अनेक प्रकारका वाजित्र वजावै ॥ इति प्रथम
 पूजा विधि ॥ अब इसी तरै (वीस । तीस । चालीस । पच्चास ।
 यह चारों पूजाके जेद जाण लेणा (इतनाही विशेष हे) दूसरी
 पूजामें १० के ठिकाणे २० की विधि करै ॥ तीसरी पूजामें १०
 की जगे ३० की विधि करै, चौथी पूजामें १० की जगे ४० की
 विधि करै, पांचमी पूजामें सब विधि ५० की करै, तथा (सिद्ध
 क्षेत्र श्रीपुंमरीकाय नमः) इस पदका दो हजार गुणानो करै, उ-
 त्कृष्टसे पांचूं पूजामें जुदीर धजा चढ़ावै, जघन्यसे पांचूं पूजा किये
 पीठै १ धजा चढ़ावै । यह तप गुरुके मुखसे लेके जघन्य १ वर-
 स, ज्यादा हो सके तो ७ वरस, उत्कृष्ट १२ वरस विधि संयुक्त
 तपस्या करै, गुरुके मुखसे उपदेश सुनै, संपूर्ण तप हुयां पीठै
 सिद्धगिरीकी जात्रा करै, ग्यानपूजा करै, गुरुनक्ती करै, सा-
 हमीवन्तल करै (यह) चैत्रीपूनमके दिन श्रीरुषभदेवस्वामी
 के प्रथम गणधर श्रीपुंमरीकजी पांच कोमी साधू साथ अहय
 सुखको प्राप्तजये, (इसवास्ते) जरत प्रथम चक्रवर्तीने चैत्री
 पूनमको आराधन करके (यह) चैत्रीपूनम पर्व प्रसिद्ध कि-
 या, यह चैत्रीपूनम पर्व आराधन करणसे इस जवमें अनेक सुख
 संपदा प्राप्त होय, स्त्रियोंके पुत्र पुत्रादिककी वांछा पूरण होय, नर

आधिभ्याधि सोग संताप सब दूर होय, परञ्जवमें देवादिक रुद्धि
प्राप्त होय, कीलकर्मों होणेंसे अक्षयसुखकों प्राप्त होय ॥ इति चै
त्र मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ चैत्रपूनम स्तवन लिख्यते ॥

(ढाल) पय प्रणमी रे जिनवरना सुपसानलै, पुंरुगिर रे
गईस हूं सुज ज्ञानलै ॥ मति सुरगिर रे सहस जीज जो मुख हु
वै, किम ते नर रे विमलाचलना गुण तवै ॥ (उल्लाखो) किम
तवे गुणगण एह गिरिना जिहां मुनि सीधा बहू, गिरिरायना गुण
वै अनंता कहे जिनवर मुख सहू ॥ निय जनम सफलो करण कारण
केतला गुण ज्ञाषियै, तिरयंच नारकतणी गतिना दुःखदूरैराखियै ॥
१ ॥ (चाल) जिनराजारे पहिलो आद जिनेसरू, तसु नंदनरें
चक्रवर्ति जरतेसरू ॥ तसु अंगज रे पुंरुरीक गुणगण निलो, समदम
रस रे विनय विवेक गुणै जलो ॥ (उल्लाखो) गुण जलो अनु
क्रम आदि जिनवर पास संजन शिवपुरो, पुंरुरीक गणधर प्रथम
विहरै सुमति गुप्तै संचरी ॥ पण कोमि साथे विमलगिरिवर मुग
ति पदवी पाव ए, सुदि चैत्रपूनम तेण ए गिरि पुंरुरीक कहाव ए
॥ २ ॥ (चाल) हिव चैत्री रे पूनम पर्व सुहामणो, सेत्रुंजे रे आरा
ध्यां फल हुवे वणो ॥ मनसुद्धे रे आपणपै आनक रही, आराध्यां
रे यात्र पुन्य पामे सहो ॥ (उल्लाखो) ते पुन्य पामे दान तप जप
धर्म ध्यान मने धरै, बहु ज्ञाव ज्ञतै त्रिविध पूजा आदि जिनवरनी
कौ ॥ ज्ञावना ज्ञावै तेण दिवसै पंचकोमि गुणों फलै, अनुक्रमे ते नर
मुगति पामी सिद्धसुंदरने मिलै ॥ ३ ॥ (चाल) दस वीसा रे तीस
चालीस पूजा कही, पन्नासा रे श्रावक निरती सरदही ॥ चउथ ठे
रे अठम दसन डुवाखसे, पूजा फल रे अनुक्रम ए मुज मन वसै ॥
(उल्लाखो) मन वसै पूजकपूरथूपै मासखमण फले वली, सामन्न

धूपै परकनो फल जे करे मननी रली ॥ हिव पूजनी विधि जैम
 गुरुमुख सुणीअवै परंपरा, ते मोह माया कपट ठंकी सुणो जवि
 यण सादरा ॥ ४ ॥ (ढाल) तंडुलरासि विमलगिरि आपी, तसु
 ऊपर पट्टादिक आपी ॥ प्रतिमा आदिजिनेसर केरी, पुंररीकनी
 आपी निवेरो ॥ ५ ॥ सेतुंजगिरिने मन चिंतीजै, करमतणा मल
 दूर करीजै ॥ मोती तंडुल करीय वधावो, तीन प्रदक्षण पुज रचा
 वौ ॥ ६ ॥ मंगलीक पहिला तिहां आठ, करमबंध दूरै करि आठ ॥
 प्रतिमा मूल सनात्र करेवा, जिनवरना गुण हियमे धरेवा ॥ ७ ॥
 ऊजा अई नवकार गुणंता, दसर जैती तिलक करंता ॥ माला
 पुष्प पूंगीफल ढोवो, मेरु जरण वर धूप उरकेवो ॥ ८ ॥ (ढाल)
 शक्रस्तव पांचे देव वांदै, जघन्यना वंदण पाप बैदे ॥ दसे नमस्का
 र करंत जैती, राखी करी दृष्टि जिनेइ सेती ॥ ९ ॥ आराधिया
 काजे कानसग, जिणे किये जांजै कर्मवग्ग ॥ लोगस्तज्जोय दसे
 चखाणु, वेला प्रमाणे अहिएग आणूं ॥ १० ॥ इणे प्रकारै धूपपूज
 एह, इसी परै बीजा च्यार तेह ॥ दसांतणी वृद्धि तिहां गिणीजै,
 एक चित्त सूधै शुज पुन्य कीजै ॥ ११ ॥ धजातणी रोप तिहां करी
 जै, एकेक पूठै अथवा गिणिजै ॥ महुत्तरे आरति मंगलेवो, पठा
 प्रजु आगल ते करेवो ॥ १२ ॥ (कलश) इम करिय पूजा यथा
 योगै संघपूजा आदरो, साहमोवहल करो जविका जवसमुइ ल।
 लावरो ॥ संपदा सोहग तेह मानव रुद्धि वृद्धि बहू लहै, आअमर
 माणिक सीस सुपरै साधुकोरति इम कहै ॥ १३ ॥ इति श्री चै०स्त०॥

॥ अथ नंदीश्वर तपस्या करण विवि लिख्यतै ॥

स्तवन पहली वक्ते स्तवनोमें लिखा है सो सुणाणा. अथ शुज
 धमी शुजदिन गुरुके पास नंदीश्वरतपग्रहण करे. नंदीश्वरदीपके च्यारु
 दिसि तरफ ५२ चैत्यकी अपेक्षायें अमावस २ (५२) वावन उपवास

करै, जिस दिन जो मादाराजके नामका उपवास होय उसही नामका १००० गुणना करै, सो लिखते हैं ॥ १ श्रीरुषज्जाननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ २ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ३ श्रीवारिषैणजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ४ श्रीवर्द्धमानजी सर्वज्ञाय नमः ॥ (यह) च्यार नामकुं ४ वेर ऊलटा, ४ वेर सुलटा गिणो ॥ अनुक्रमे १३ उपवास करणसें एक जुली होय, ४ जुली करणसें यह तप संपूर्ण होय ॥ पीठे शक्ति मुजब ऊजमणा करै, नंदीश्वरद्वीपका मंमल वणावै, पूजा करावे, इत्यादि महोन्नवकरके ग्यानपूजा, गुरु पूजा करै, साह मीवन्नल करै, मंमलकी विधि एकेक दीसीमें (१३) तेरे २ पंहामकी रचना करै चार दिसामें ५२ करै, बीचमें अंजनगिरी, च्यारुं दिसां में च्यार श्वेतपर्वत, दोय २ दधिमुखपर्वतके बीचमें दोय २ रतिकर पर्वत, एवं ८ रतिकर, एवं सब एक दीसीमें १३, च्यारुं दिसिके ५२, सब पर जिनविंव थापे, इनकी पूजामें ५२ थापना, ५२ नारेल, ५२ पान नागरवेलके, ५२ अंगलूहणा, इत्यादि सब चीज ५२ वावन लेवे, क्रमसें एकेक काव्य पढ़के जल चंदनादि अष्ट द्रव्यसें अंगपूजा तथा अग्रपूजा करे ॥ इति नंदीश्वर तपस्याधिकारः ॥

॥ अथ वैशाख मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ वैशाखके महीनेमें मिति वैशाख सुदि ३ हे सो अक्षय तृतिया नामसें पर्व प्रसिद्ध हे, इस दिन श्रीरुषज्जदेव स्वामीके चारित्र ग्रहण कियां पीठें वारे मासीका पारणा सोमयशराजाके पुत्र श्रीश्रेयांसकुमरजीके हाथसें इक्षुरससेती जया, उस वखत उत्तम दानके प्रज्ञावसें सब देवगण प्रमोदवंत होके सुगंधजलकी वर्षा १, सुगंधपुष्पोंकी वर्षा २, सादीवारे कोमि सोनइयोकी वर्षा ३, आकासमें अहोदान २ ऐसी उदघोषणा ४, देवउंडनी वाजित्र ५, ऐसे पांच द्रव्य प्रगट किये, श्रेयांसकुमरका जस तीन जुवनमें विस्तरण

हुआ. उस दिनसे आहारदानकी विधी सबको मालम नई. इस दानके प्रज्ञावसे श्रेयांसकुमार अक्षयसुखको प्राप्त जया. इस वास्ते अक्षयतृतिया पर्व श्रीसंघमें परम मंगलकारी है. इस पर्वके आणसे वस्त्र आभूषण पहरेके जगवंतके मंदिर जाके अष्ट द्रव्यसे पूजन करै, स्नात्र, अष्ट प्रकारी, सतरह जेदी, आदि पूजा करावै. पोछे गुरुके मुखसे एकासणादिकेक पञ्चस्काण करके पर्वकी महिमा सुणे. अपने घर गुरुको वहिरायके सब कुटुंब समेत जीमें, नर जो मंगलीक कार्य करणा होय सो इस दिन करै, इस माफक इस पर्वको जो जन्मजीव सेवन करते रहेंगे उनोका तपतेज हमेसां बढ़ता रहैगा ॥ इति अक्षयतृतिया पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ तृतिय ज्येष्ठ मासाभ्यंतर पर्वाधिकारः ॥

॥ जेष्ठ कृष्णत्रयोदशीके दिन सोलमें श्रीशांतिनाथ स्वामीका निर्वाण कल्याणकका दिन है इस वास्ते इस उचम दिनमें सब जगे श्रीसंघ एकठा होके विधिसंयुक्त शांतिपूजाका महोत्सव करावै, शांतिजल लेजाके अपने घरमें ढांटे. इस शांतिपूजाके कराणसे मारी, हेजा, इत्यादिक समुदायिक रोग कच्ची श्रीसंघमें प्राप्त न होय (अथवा) किसी आवकके घरमें रोग चाला रहता होय तो (वा) बहुत चिंता रहती होय तो इसी दिन शांतिपूजाका उत्सव कराणा चाहिये. (इससे) आधि व्याधि ग्रहादिककी पीडा सब दूर होय, अनेक मंगलश्रेणी प्रवर्त्तन होय ॥ इति ज्येष्ठ मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ आषाढ मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ आषाढसुदि १४ के दिन चौमासी इस नामसे पर्व प्रसिद्ध है सो लि० है. ॥ यथा ॥ सामायकावस्यकपोषधानि, देवार्चनस्नात्रविक्षेपनानि ॥ ब्रह्मक्रियादानतपोमुखानि, जन्मव्याश्रतुर्मासकमंरुनानि ॥ १ ॥ (अर्थ) ज्ञानव्याप्तानि सामायकादि धर्मकृत्यानि चतुर्मासकस्यं

मंथलानि अलंकारभूतानि विद्यन्ते ॥ अहो नव्य प्राणी जीवो यह
सामायककों आद लेके जो धर्मकृत्य हे सो चोमासेके मंथल हे, अ
र्थात् अलंकार समान हे. यथाशक्ति यह चोमासेपर्वमें कोइ जीव
सामायक पम्पिक्रमणा पोसा करै, कोइ जगवानके मंदिरमें नाना-
प्रकारकी पूजा करे, केइ सीलव्रत पालै, कोइ सुपात्रदान देवे, कोइ
नानाप्रकारकी तपस्या करै, जेसा धर्मकाम अपनी शक्तिसें वण
आवै सो करै, इसमें विरोध नही. लेकिन कोईजी प्रकारसें धर्मका
उद्योत करणा चाहिये. जिससें सब श्रोसंधनें कल्याणमाला प्रगट
होय, नर चोमासी (१४) के दिन सब मंदिरोंमें दर्शन करणों
जाणा, पांच शक्रस्तवसें देववाँदै, पीठै गुरुके पास जाके चोमासे
पर्वका व्याख्यान सुणे, सब चीजका प्रमाण करके उपरांतका सोगन
लेवै, सांझकूं चोमासी पम्पिक्रमणा करे. इस मुजब काती चोमासे
फागुण चोमासे कौंजी सेवन करै ॥ इति चतुर्मासपर्वधिकार,

॥ अथ श्रावणमास मध्ये तपस्याधिकार कथ्यते ॥

श्रावणमासमें केइ नव्यजीव मम्माई आदि क्षेत्रोंमें तरे १
की पूजा लाखीणी अंगिया कराय के चोमासेपर्वका उद्योत करते
हैं, इस माफक सब जगे तरे २ की पूजा कराणी चाहिये. नर देस
देसमें श्रावणमास इस महीनेमें केइ २ तरेकी तपस्यायें करती हे.
जिसमें उत्तमफलकी देणेवाली केइयक तपस्या विधिप्रपाकग्रंथसे
उद्धरण करके संक्षेपविधिसें इहां लिखते हैं ॥

॥ अथ वुटकर तपस्याविधि लिख्यते ॥

पुरिमह १, एकांतण १, नीवी १, आंखिल १, उपवास १,
(यह १ नली) इस तरे पांच नली करै. तपोदिन २५. ऊजमणें
२५ लाडू चढावै ॥ इति इंद्रीजयतप ॥ १ ॥

एकांतण १, नीवी १, आंखिल १, उपवास १, इस तरे

उत्ती च्यार करै. तपोदिन १६. ऊजमणें १६ लहू चढावै ॥ इति
कषायजयतपः ॥ ३ ॥

नीवी १, आंबिल १, उपवास १, इसी तरे उत्ती ३ करै. तपो
दिन ए. ऊजमणें ए लाडू चढावै ॥ इति योगशुद्धितपः ॥ ३ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकंदर उपवास ३. ऊजमणें झा
नपूजा करै ॥ इति नाणतपः ॥ ४ ॥

इकसार उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३. ऊजमणें
स्नात्र पूजा करावै ॥ इति दर्शनतप ॥ ५ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३. ऊजमणें
गौतमस्वामीकी पूजा करै ॥ इति चारित्रतपः ॥ ६ ॥

अहम १, उठ, १, उपवास १, एकासण १, एकलठाणो १, इति
१, नीवी १, आंबिल १, यह एक उत्ती. इसी तरे उत्ती आठ करै.
तपोदिन ८८. ऊजमणें रूपेका वृक्ष, सोनेका कुहामा करायके ग्यान
खाते देवे ॥ इति आठ कर्मसूत्रतपः ॥ ७ ॥

जाइवा वदि चउथलें लेके पनरे दिन पर्यंत इकसार एकास
णा अथवा बिआसणा करै, घरदेरासर आगे अथवा अछे ठिकाणें
कलस स्थापन करै, एक सुठी चावल सदा कलसमे जरै, संवत्सरीके
दिन कलस ऊपर नारेल रख के महोत्सवपूर्वक मंदरमें जाके देव
आगे रखै, स्नात्रपूजा करै, ज्ञानपूजा करै ॥ इति अक्षयनिधि तपः ८ ॥

श्रीवासुपूज्य पूजापूर्वक रोहिणी नक्षत्र के दिन उपवास वा
नीवी, आंबिल सात वरस सात मास करै (श्रीवासुपूज्यस्वामी
सर्वज्ञायनमः) इस पदका २००० गुणना करै, गुरू के पास स्त
वन सुणै. (सो स्तवन आगे लिखेगें) ऊजमणें ज्ञानके उपकरणसँ
ज्ञानजक्ति गुरुजक्ति करै. इति रोहिणीतपः ॥ ९ ॥

सुद्धिपक्षके पांचमेके दिन श्रीनेमि अंबिका पूजापूर्वक पाच

एकासणादिक तप करै, अंबिकादेवीकूं वेस चढ़ावै ॥ इति अंबिकातपः १

सुदिपक्षके इग्यारसके दिन सिद्धांतपूजापूर्वक मौनसंयुक्त
उपवास करै, इति श्रुतदेवतातपः ॥ ११ ॥

सुदि पक्षमें एकांतर उपवास ८। पारणें आंबिल ८, एवं दिन
१६. ऊजमणें ज्ञानपूजा करै, इति सर्वांगसुंदरतपः ॥ १२ ॥

चैत्रमासे एकांतर उपवास १५, एवं दिन ३०. ऊजमणें
सोनेका अथवा रुपेका वृक्ष अनेक फल सहित चढ़ावै ॥ इति सौ-
ज्याम्यकल्पवृक्षतपः ॥ १३ ॥

पनिवा, बीज, तीज, १ अनुक्रमसैं पूनम पर्यंत (१५) उप-
वास करै, जो तिथि चूले सो तिथि नर करै, ऊजमणें एकसो बीस
लहू मंदिर चढ़ावै, स्नात्र करावै ॥ इति सर्वसुखसंपत्तितपः ॥ १४ ॥

वरसातका चार मास नर पोष, चैत्र, चढ़ षट मास टा-
लके ठोटी पांचमतप सरू करै, अंधारी नजवाली पांचम मास ५
लग एकासणादि तप करै, ऊजमणें ज्ञानपूजा करै ॥ इति ठोटी
पांचमतप ॥ १५ ॥

सुद पांचमकूं पांच वरस पांच मास उपवास करै, उपवास
के दिन देव वांइणादिक क्रिया करै, ऊजमणें पुस्तकादिक ज्ञानोप-
गरण पक्षान फल कलशादिक पांच ५ चढ़ावै, सत्तरजेदी पूजा
करावै, साहमी वखल करै ॥ इति ज्ञानपंचमीतपः ॥ १६ ॥

॥ आषाढ सुदि पनिवा, बीज, तीज, चोथ, पांचम, एकाश-
णादि तप करै, अशोगवृक्ष पूजापूर्वक देव आगे नेवेद्य चढ़ावै, इस-
तरै वरस १ तप करै, ऊजमणें चावलोंसैं अशोगवृक्ष लिखके पूजा
करै ॥ इति अशोगवृक्षतपः ॥ १७ ॥

आषाढ वदि ७ श्रीविमलनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ श्रावण
वदि ७ श्रीअनंतनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ काती वदि ७ श्रीअष्ट

दिनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ पोषवदि ७ श्रीपार्श्वनाथ पूजापूर्वक उपवास करै, स्नात्र करै, ऊजमणें चावलोंने लोकनाथ वणाके साते राज सात पावनी करके उसपर सिद्धक्षेत्र (उसकों) सोनेरत्न का मुगट चढावै ॥ इति मुगटसप्तमीतपः ॥ १८ ॥

आसोज सुदि ८ तक एकाशणादि तपकरै, आठ प्रकारकी पूजा करै, नैवेद्य चढावे, पहिले वरस अष्टापदकी एक पावनी, इस तरे आठे वरसे आठ पावनी अष्टप्रकारी पूजापूर्वक आराधिय, ऊजमणें अष्टापदपूजा करावै, पकवान फल सर्व चौबीस चढावै ॥ इति अष्टापदपावनीतपः १९ ॥

सुदि पक्षके ८ आठमके दिन उपवास अथवा आंबिल करै, ऊजमणें दूधका कटोरा जरके आठ लक्ष्म देव आगे चढावै ॥ इति अमृतआठमितपः २० ॥

॥ वदपक्ष अथवा सुदपक्ष के दशम के दिन दस उपवास अथवा बीस एकासणा करै, ऊजमणें अखंमित घी धारपूर्वक ती ए प्रदक्षणा देवे ॥ इति अखंमितदशमीतपः ॥ २१ ॥

वदिपक्ष अथवा सुदिपक्षमें ११ के दिन सिद्धांतपूजापूर्वक एकाशण, जीवी, आंबिल, वा उपवास ११ करै, ऊजमणें ११ अं गकी पूजा करै ॥ इति श्रीङ्गारअंगतपः ॥ २२ ॥

सुदिपक्षके १४ के दिन एकासणादि १४ तप करै, ऊजमणें ज्ञानपूजा करै, चवद प्रकारके पकवान प्रमुख चढावै ॥ इति १४ पूर्वतपः ॥ २३ ॥

पांच अमृततेला मास ६ में करै (प्रथम तेले) सिखरणसे पारणा (दूसरे तेले) सारेका पारणा (तीसरे तेले) लापशीका पारणा (चौथे तेले) लक्ष्मसे पारणा (पांचमें तेले) खीरसे पारणा, पारणे प्रथम साधूकों वहिराके पारणा करै ॥ इति पंचामृततेलातपः ॥ २४ ॥

अठम १, एकासणो १, अठम १, एकासणो १, अठम १,
एकासणो १ ॥ यह मोटारत्नोत्तरतपः ॥ २५ ॥

आंबिल १२ करके ऊजमणें रूपाका चक्र मंदर चढावै तो
सदा जय होय, विणज व्यापारमें लाज होय ऊगमेमें जीत होय॥
इति धर्मचक्रतपः ॥ २६ ॥

उपवास ५, व्यासणा ५ एकांतरै करै॥इति पंचमहाव्रततपः२७॥
उपवास १, एकसणो १, नीवी १, आंबिल १, व्यासणो १, उपवास
१, एकासणो १, नीवी १, आंबिल १, व्यासणो १.

एवं दिन १० पूनमसें सुरू करै. पारणै साधु पण्डितानै, ग्यानपूजा
करै ॥ इति दालिङ्हरणतपः ॥ २८ ॥

एकेंडिये उपवास १, बेइंडिये ठठ १, तेंडिये अठम १,
चौरेंडिये दसम १, पंचेंद्रिये द्वादशम १, ठक्कयें चतुर्दसम १, तप करै.
ऊजमणें सुखमीसें ६ स्त्री जीमावे॥इति ठक्कायआलोयणतपः॥२९॥

नीवी आठ निरंतर करै ॥ इति सासूसुखतपः ॥ ३० ॥

आंबिल आठ निरंतर करै ॥ इति सुसरसुखतपः ॥ ३१ ॥

ठठ पांच करै ॥ इति पूत्रीसुखतपः ॥ ३२ ॥

॥ अठम पांच करै ॥ इति पुत्रसुखतपः ॥ ३३ ॥

॥ उपवास आठ एकांतर करै॥ इति जर्तारसुखतपः ॥ ३४ ॥

॥ नीवी पांच निरंतर करै ॥ इति जेठसुखतपः ॥ ३५ ॥

॥ एकासणा पांच निरंतर करै ॥ इति देवरसुखतपः ॥ ३६ ॥

॥ एकासणा पांच एकांतर करै॥ इति पितामातासुखतपः ३७

॥ इत्यादिक केइ तरीके तपस्या बहुत ठिकाणकी आवक
एयो कियाकरती हे. इस वास्ते बहुतोके उपगारार्थ शास्त्रोंसे उद्धार
करके संक्षेपविधिसें इहां लिखी हे. ज्यादा शक्ति होय तो पूजा
सादमीवचन तीर्थयात्रा इत्यादिक सातुं शुभकैत्रोमें अपना धन

खेरच करै, धर्मका उद्योत करै ॥ इस तपस्याके प्रज्ञावत्सैं इस जन्ममें संसारसंबंधी दुःखदालिङ्ग दूर होके सर्व कुटुंबमें सुख संपदा होय, परजन्ममें देवादिक रुद्धी प्राप्त होय. (किंबहुना) इति वृट् कर तपस्याविधिः ॥

॥ अथ भाद्रपद मासे पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ ज्ञाड्वा महिनेमें मिति ज्ञाड्वा सुद ४ तथा केइ मतकी अपेक्षासे ५ तिथिओं संवत्सरी नामसे पर्व प्रसिद्ध है (प्रथम इस संवत्सरी पर्वकी महिमा कहते हैं) जैसे जगत्रमें अनेक मंत्र हैं पर नवकार समाप्त कोइ मंत्र नहीं १, तीर्थोंमें सेत्रुंजय समान कोइ तीर्थ नहीं २, पंचदानमें अन्नयदान सुपात्रदान समान कोइ दान नहीं ३, गुणमांहे विभवगुण ४, व्रतमांहे ब्रह्मव्रत ५, नियममें संतोष नियम ६, तपमें उपशमतप ७, दर्शनमें जैनदर्शन ८, जलमांहे गंगा जल ९, अलंकारमांहे चूनामणी १०, ज्योतिषोंमें चंद्रमा ११, तेजमांहे सूर्य १२, गजमें एरावण १३, बैत्यमांहे रावण १४, तुलसीमें पंचवत्स्रजकिशोर १५, वृक्षफलावंतमांहे मोर १६, वनमांहे नंदन १७, काष्ठमांहे चंदन १८, साहसीकमें विक्रमादित्य १९, न्वावधंतमें श्रीराम २०, रूपवंतमें काम २१, सतीमांहे शीता २२, शास्त्रमांहे ज्ञाता २३, सुगंधमें कस्तूरी २४, वस्तुमें तेजनतूरी २५, वाजित्रमें जंघा २६, स्त्रीमांहे रंजा २७, धातुमें स्वर्ण २८, दाता में कर्ण २९, गौमें कामधेनु ३०, वृक्षमें कल्पवृक्ष ३१, जलमें अमृत ३२, स्नेहमांहे घृत ३३, इत्यादिक सर्व चीजोंमें एक १ चीज उत्तम होती है. इस तरे सर्व पर्वोंमें उत्कृष्ट राजाधिराज पर्व श्री संवत्सरी (दूसरा नाम) श्रीपर्युषण पर्वकों जगवंत श्रीमाहावीर स्वामीजीने उत्तम वर्णन किया. अब श्रीपर्युषणपर्वके आणसे प्रथम श्रीसाधुके करणे योग्य धर्मकृत्य कहते हैं ॥ संवत्सरी प्रतिक्रमण

करै १, लोच करावै २, तेलका तप करै ३, सर्व मंदिरोमें जगवंत की जावस्तवना करै ४, सर्व श्रीसंघसें खमावै ५. यह पांच कारण के वास्ते श्रीतीर्थकर गणधरोनें पर्युषणापर्व प्रवर्त्तन किया ॥ अब शुद्धश्रावक संवहरी पर्व आराधन करणोकूं आठ दिन अठाइ महो नव करै सो कल्पलता शास्त्रोंसें लिखते हे ॥ प्रथम श्रुतज्ञानकी जक्ति करै, कल्पसूत्रजीकूं विधिसंयुक्त अपने घर लेजाके रात्रीजागरण करावै, प्रजातसमय नगरके सर्व श्रीसंघकूं निमंत्रण कर यथा योग्य सत्कार सन्मान करै, पीठै पुस्तकग्राहक पुरुष सर्वसें उत्तम वस्त्र आनूपण पहरेके सुगट ठात्र चामर इत्यादिक समेत साक्षात् इंद्रमहाराजका रूप बनाकर हाथी पर अथवा पालखी पर बैठ अष्ट मंगलीकरचित्त थालमें पुस्तक धरके अपने दोनुं हाथमें थाल धरके दोनुं तरफ पुरुष अष्टा वस्त्र आनूपण पहरेके चमर ढालै, अनेक प्रकारके वाजित्र वाजते जये, दान देते जये, नानाप्रकारके श्रुतज्ञानके गुण वर्णन करते जये, नगरमें प्रदक्षणा तुल्य फिरके गुरुके पास आवै. गुरु पिला खमा होके विनयसंयुक्त पुस्तकको नमस्कार करके आगे रखै. श्रीसंघके आज्ञासें वाचनापूर्वक वांचे १, नगरमें सब जगे अमारिपमह बजावै, दूसरा वचनसें तथा द्रव्यसें कसाइ धोवी जमजूजा इत्यादिक सबका आरंज ठोकावे २, सुपात्रदान देवे ३, विदाम सुपारी नालेरादिक की प्रजावना करे ४, श्रीवीतरागदेवकी उदार जक्तिसें पूजा करै, चौदसके दिन संवहरीके दिन चतुर्विध श्रीसंघ इकोठे हो कर सर्व मंदिर दरसन करणोको जावै ५, सचित्तका परिहार करै ६, ब्रह्मचर्य पाले ७, चउठ, ठठ, अठमादिक तप करै ८, अपने ९ वित्तके अनुसार जन्मकल्याणकका नव करै १०, अठपहरी पोसा करै १०, संवहरी प्रतिक्रमण करै ११, निसल्य होके सर्व श्रीसंघसें खमावै १२, पारणोके दिन पोसह १३ पणोवाले साधमीजाइ-

योंकी जक्ति करै १३, गुरुजक्ति करै १४, संवच्चरी दान देवै, साहमी
 वञ्चल करै १४. इस विधिसंयुक्त यह कल्पसूत्र एक चित्त सुणनेसँ
 आराधन करलेसँ आठ जवसँ मोक्षस्थानकूँ प्राप्त होता हे (नर)
 केइयक जव्यजीव अत्यंत शुभ ज्ञाव धरतेजये अठमादि तप कर
 के युक्त कल्पसूत्रजीकों वांचते हे नर सुणनेवाले प्रमाद निडा वि
 कथा ठोरके अठमादि तप करके एक चित्तसँ शुद्धज्ञाव रखके इक
 बीस बेर सुणते हे, सो जव्य देवगतीकों प्राप्त होके तीसरे जव सि
 द्विस्थानकों प्राप्त होते हे ॥ इस पर्यूषणपर्वका महोत्सव जो जव्य
 जीव करते हे सो धन्य हे, धर्मके प्रज्ञावीक हे, अपनी लक्ष्मीसँ
 धर्मका उद्योत करते हे. उस पुण्यात्माकों देव सहायता करते हे नर
 नमस्कार करते हे ॥ (अब कल्पसूत्रजीका महात्म कहते हे ॥ यह
 कल्पसूत्र नवमेंपूर्वसँ उद्हरण कियाजया दशाश्रुतस्कंधका आठमा
 अध्यायन हे. सर्व श्रीसंघके मंगलके कारण श्रुतकेवली श्रीजद्रवाहु
 स्वामी प्रसिद्ध किया हे. यह श्रीकल्पसूत्रके अनंत विषय हे. जेसँ
 सर्व नदीके बालू के कण होय उससे जी एक सूत्रके अनंत विषय हे.
 इस कल्पसूत्रका महात्म जो देवाचार्य हज्जार जीज करके कहे
 तोजी महात्मका एक अंस जी कह सकता नही. ऐसा इस पर्वका
 महात्म जाण जो जव्यजीव शुद्ध ज्ञावसँ सेवन करेंगे सो अनेक तरे
 सँ रुद्धि वृद्धि सुख सौभाग्य कों प्राप्त होंगे. नर परजवमें देवादिक
 रुद्धि पावके मुक्तिसुखकों प्राप्त होंगे ॥ इति पर्यूषणपर्वाधिकारः६॥

॥ अथ आश्विन मास मध्ये पर्वाधिकारः ॥

॥ आसोज महीनेमें मिति आसोज सुदि ७ से लेके आसो
 ज सुदि १५ तक नवपदजी की नली तथा अष्टापदजीकी नली
 विधिसंयुक्त करै. सो सब विधि पहली लिखो हे उसी माफक करै॥

॥ अथ कार्तिक मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्तिक महीनेमें मिति कार्तिक वदि अमावस हे सो दी-

पमालिका नामसें पर्व प्रसिद्ध है. यह दीपमालिकापर्व कवसें जया
 सो लिखते है. चौबीसमें तीर्थकर श्रीमहावीरस्वामी समस्त साधु
 साध्वी साथ विचरते थेके अंतकी चोमाली मध्यमपावापुरीमें आ-
 यके रहे, उहां आगामीकालकी सर्व बात जग्यजीवोंके सामने निरू-
 पण किया, फेर अपना अंत समय जाण के हस्तिपालराजाके शु-
 क्कशालामें आयके रहे. अपने पर गौतमस्वामीका बहुत स्नेह देख
 के निजीक गाममें देवशर्मा ब्राह्मणकों प्रतिबोध देणेकूं जेजा. पि
 ठामी पद्मासन धारण करके शोले पहर तक अखंर देसना देते
 जये बहुतर वरसका आयू पूरण पालके इसी अमावासके दिन पि
 ठली दो घन्टी रात रहणेसें सिद्धिस्थानकों प्राप्त जये. जिस समय
 जगवंतका निर्वाणकल्याणक जया उस समय चोसठ इंद्र देवताग
 णके आणे जाणेसें वना उद्योत जया, नर जो राजा पोषधमें बैठे
 जयेथे सो जावउद्योतका अस्तपणा देखके सब जगे रत्न धरके इत्य-
 उद्योत किया. एकमके प्रज्ञात समें देवतोका आणा जाणा नर व
 चन सुणके श्रीगौतमस्वामीकूं केवलज्ञान उत्पन्न जया, दूजके दिन
 सुदर्शना वहिन अपने जार्ई नंदिवर्द्धनराजाकूं घरमें बुलाके जीमा
 या, शोक दूर कराया जिससें जार्ईबीज प्रवर्त्तन हुई. इससें यह
 दीवाली पर्व वना उत्तम है. इस दिवालीकी रातकूं जो गुणना
 करते है सो लिखते है ॥ ॥ श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥
 श्रीमहावीरस्वामी पारंगतायनमः ॥ श्रीगौतमस्वामी सर्वज्ञायनमः
 ॥ इस एक२ पदको १००० गुणनो करै, उपवास करै, रात्रीजागर
 ण करै, निर्वाणकल्याणककी आरती करै ॥ स्तवन बोलै । निर्वाण
 कल्याणकका अधिकार सुणै । गौतमरास सुणै. इत्यादिक उदार
 चित्तसें सर्व ठिकाणें दीवालीपर्वका उन्नव करणा चाहियै ॥ दिवा
 लीका स्तवन पूर्वे लिखा है सो पढ़ै ॥

॥ अथ ग्यानपंचमी पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ दूसरा काती महीनेमें कार्तिक सुदि पंचमी सो ज्ञानपंचमी नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन सर्व जन्मजीवोंको ज्ञानका विशेष आराधन करना चाहिये. ज्ञानके समान संसारमें उत्तम पदार्थ कुछ भी नहीं है. सर्व तत्त्वमें ज्ञानके समान कोई तत्त्व नहीं. मोक्षमार्ग साधनकूं ज्ञान समान कोई उपाय नहीं. इस ज्ञानपंचमीके आराधनसें अनेक दुष्टकर्म नाश होय. गूंगापणा, मूर्खपणा, वक्रपणा, और कोढ़ादिकरोग सर्व दूर होय. अनुक्रमें ज्ञानावरणी कर्म के हय होणेसें पांचो ज्ञान प्रगट होय. जैसें वरदत्त गुणमंजरी के रोगादिकके सर्व उपद्रव दूर होके मनोरथ पूर्ण जये, इस तरे जो ज्ञानपंचमीका आराधन करेगा उसका मनोरथ पूर्ण होगा ॥

॥ अथ ज्ञानपंचमी देववंदन विधि ॥

॥ प्रथम पवित्र स्थानक चोकीपट्टे पर ग्यानकों स्थापन करै, उसके आगे पांच साधिया करै, फल फूल प्रमुख चढ़ावै, पांच बत्ती का दीपक चढ़ावै, अगर कपूरका धूप खेवै, पूजा पढेके वासुदेव कपूरसें ज्ञानपूजा करै, यथाशक्ती रोकद्रव्य चढ़ावै तथा पूजा विटांगणादि चढ़ावै. (ज्ञानपूजा लिखते है) नमंतिसाभंतमहीवनाहं, देवायपूयंसुविदेयपूषिं ॥ ज्ञत्तीयचित्तंमणिदामएहिं, मंदारपुष्पंसवेहिनाणं ॥ १ ॥ तद्देवसद्वामणिमुत्तिएहिं, सुगंधपुष्पेहिंवरंसएहिं ॥ पूयंतिवंदंतिनमंतिनाणं, नाणस्सदाज्ञायज्जवस्कथाय ॥२॥ यह गाथा पढेके ज्ञानपूजा करै. (इस तरे द्रव्यपूजा करके पीठे ज्ञानपूजा करे सो लिखते हैं) खमासमण दे के । इरियावही पम्किमें । लोगस्स कहे । वेठके । मुंहपत्ती पम्किलेहे । अणूजाणह मेमिज्जगहं (इत्यादिक) दो वांदणा देवै, पीठे पांच खमासमण दे के ज्ञानका नमस्कार कहै ॥

॥ अथ ज्ञाननमस्कार लिख्यते ॥ सकल वस्तु प्रतिज्ञास ज्ञानु

निरमल सुखकारण, सम्बन्धदर्शन पुष्टहेतु ज्वजलनिधि तारण ॥ सं-
 यमतप आनन्दकंद अज्ञान निवारण, मार विकार प्रचार ताप तापि-
 त जिन वारण ॥ १ ॥ स्याद्वाद परिणाम धर्म परणति पन्निबोद्धण,
 साहु साहुणी संघ सर्व आराधन सोहण ॥ मोह तिमर विध्वंससूर
 मिथ्यात्व पणासण, आतमशक्ति अनंत शुद्ध प्रभुता परगासण ॥
 ॥ २ ॥ मति श्रुति अबधि विशुद्ध नाण मणपज्जव केवल, जेद प-
 चास कायोपसमिक एक कायिक निरमल ॥ दोय परोक्ष प्रथम तिहां
 डुग परतह दीसत, सकल प्रतह प्रकाश ज्ञास भुव केवल अपर-
 मित ॥ ३ ॥ धर्म सकलनो मूल शुद्ध त्रिपदी जिन ज्ञासौ, बाहिर
 अंग प्रधान खंघ गणधर सुप्रकाशौ ॥ शाखाश्रीनिर्युक्ति ज्ञाप्य पन्नि
 शाखा दीपै, चूरण टीका पत्र पुष्प संशय सब जीपै ॥ ४ ॥ पंचां-
 गी सार बोध कह्यो जिन पंचम अंगै, नंदी अनुयोगद्वार शाख मा-
 नो मनरंगे ॥ वीर परंपर जीत अनुजव उपगारी, अज्यासो आग-
 म अगम निरुपम सुखकारी ॥ ५ ॥ मोहपंक हर नीर सम सिद्धांत
 अवाधै, देवचंड आणा सहित नयजंग आराधै ॥ ए श्रुतज्ञान सोहा
 मणो सकल मोक्ष सुखकंद, जगते सेवो जविकजन पामो परमा-
 नंद ॥ ६ ॥ इति ज्ञानस्तुति ॥ इत्यादि नमस्कार कहके । एमो
 त्थुणं० जावंतिचेइयाइं० जावंतिकेविसाहू० नमोर्हत् सिद्धा० । कह-
 के ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय० ॥ इत्यादि ज्ञानका स्तवन बोलै, जयवी-
 यराय० कहै, वंक्षणव० अन्नबू० कहके एक नवकारका कान्तसग
 करै, शुई कहै ॥ ॥ अथ शुई लिख्यते ॥ देविंदवंधियपएहिंपरूवि
 चाणि, नाणाणिकेवलमणोहिमईसुयाणि ॥ पंचाविपंचमगईसियपं-
 चमीए, पूयातवोगुणरयाणजियाणदिंतु ॥ १ ॥ यह स्तुति कहके
 (ज्ञान आराधवा निमित्त करेमि कान्तसगं) नस्सुत्तरी० अन्नबू०
 कहके ? लोगस्सका कान्तसग करै, (पारके) बोधागाधं० (इत्या-

दिगाथापढ़के) पीठै ॥ आज्ञासिन्धोदियनाणें । सुयनाणंचेवहु हिना
 णंच ॥ तहमणपङ्कवनाणें । केवलनाणंचपंचमयं ॥ २ ॥ यह गाथा
 कहके । इष्टामिखमासमणो० श्रीमतिज्ञानायनमः १, श्रीश्रुतिज्ञा
 नायनमः २, श्रीअवधिज्ञानायनमः ३, श्रीमनपर्यवज्ञानायनमः ४,
 समस्त लोका लोकजास्कर श्रीकेवलज्ञानायनमः ५. इस तरै पांच
 नमस्कार करै, धिरता होय तो (५१) ज्ञानके गुणोंको नमस्कार
 करै, सो पूर्वे नवपदजीके गुणनेमें लिख्या है ॥ उस माफक करै
 ॥ पीठै (हुँ हूँ एमोमाणस्स) इस पदका २००० गुणना करै. कम
 धिरता होय तो इग्यारे अंगकी सिझायों पढ़ै वा सुणें, सो लिखते हे॥

॥ प्रथम आचारांग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल हठीलानी ॥ पहिलो अंग सुहामणो रे, अनुपम आ
 चरांग रे ॥ सुगणनर ॥ वीर जिनंदे ज्ञापियो रे लाल, नववाई जाल
 नवंग रे ॥ सु० १ ॥ बलिहारी ए अंगनीरे, हुं जानं वारंवार रे ॥ सु० ॥
 विनये गोचरी आदरे रे लाल, जिहां साधुतणो आचार रे ॥ सु०
 ब० ॥ १ ॥ सुयखंध दोष बै जेइना रे, प्रवर अध्ययन पचवीस रे ॥ सु०
 ॥ उद्देशादिक जाणिये रे लाल, पिच्यासी सुजगोस रे ॥ सु० ब० ३ ॥
 हेतु जुगत कर सोजता रे, पद अठार हजार रे ॥ सु० ॥ अक्षरप
 दने ठेहमे रे लाल, संख्याता श्रीकार रे ॥ सु० ब० ४ ॥ गमा अनंता
 जेहमां रे, बलिलि अनंत पर्याय रे ॥ सु० ॥ त्रस परितो बै इहां
 रे लाल, आवर अनंत कहाय रे ॥ सु० ब० ५ ॥ निबद्ध निकाचित
 सासता रे, जिनप्रणीत ए ज्ञाय रे ॥ सु० ॥ सुणतां आतम नलसे
 रे लाल, प्रगटे सहज स्वज्ञाव रे ॥ सु० ब० ६ ॥ सुगुण आवक
 वारू आविका रे, अंगे धरिय नल्लास रे ॥ सु० ॥ विधिपूर्वक तुमे सां
 जखो रे लाल, गीनारथ गुरु पास रे ॥ सु० ब० ७ ॥ ए सिद्धांत
 सहिन्नानिलो रे, ऊतारे नव पार रे ॥ सु० ॥ विनयचंद्र कहे माहरे

रे लाल, एहिज अंग आधार रे ॥ सु० व० ८ ॥ इति आचारांग सि० ॥

॥ अथ २ सुयगडांगसूत्र सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल रसियानी ॥ बीजो रे अंग तुमे सांजलो, मनोहर
श्रीसुगमांग ॥ मोरासाजन ॥ त्रिणसे तेसठ पाखंमीतणो, मत खंज्यो
धर रंग ॥ मो० १ ॥ मीठी रे लागे वाणी जिनतणी, जागे जे
हथी रे ग्यान ॥ मो० ॥ ए वाणी मन माणी माहरे, मानु सुधा रे
समान ॥ मो० मी० २ ॥ रायपसेणी उपांग ठे जेहनो, ए तो सूत्र
गंजीर ॥ मो० ॥ बहुश्रुत अरथ जाणे सहू, कीर नीर धनु तीर ॥
मो० मी० ३ ॥ एहना रे सुयखंध दोय ठे, वलि अध्ययन तेवीस
॥ मो० ॥ उदेसा समुदेसा जिहां जला, संख्याये रे तेत्रीस ॥ मो०
मी० ४ ॥ नव निक्षेप प्रमाण जरया, पद ठसीस हजार ॥ मो० ॥
संख्याता अक्षर पदमांहे, कुण लहे तेहमो रे पार ॥ मो० मी० ५ ॥ ग
मा अनंता पर्याय वली, जेद अनंत जिय मांहि ॥ मो० ॥ गुण
अनंत त्रस परित्त कह्या, आवर अनंत जे मांहि ॥ मो० मी० ६ ॥
निबद्ध निकाचित्त जे सासय कमा, जिम पखत्ता रे जाव ॥ मो० ॥
जापी रे सुंदर एह प्ररूपणा, चरण करणनो रे जाव ॥ मो० मी०
७ ॥ करिये जगत जुगत ए सूत्रनी, निश्चै लहिये रे मुक्ति ॥
मो० ॥ विनयचंद्र कहे प्रगटे एहथी, आतमगुणनी रे शक्ति ॥
मो० मी० ८ ॥ ८ ॥ इति सूयगमांग सिद्धाय ॥ २ ॥

॥ अथ ३ ढाणांगसूत्रसिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आठ टके कंकण लियोरी ॥ ए चाल ॥ बीजो अंग
जलो कह्यो रे जिनजी, नामे श्रीढाणांग ॥ मोरो मन मगन अयो ॥
हारे देखीर जाव, हारे जीवाजीव स्वजाव ॥ मो० ॥ मवल जगत
करी ठाजतो रे जि०, जीवाजिगम उपांग ॥ मो० ॥ १ ॥ एह
अंग मुऊ मन वस्यो रे जिनजी, जिम कोकिल दल अंव ॥ मो० ॥

गुहिर ज्ञाव कर जागतो रे जि०, आज तो एह आलंब ॥ मो० २
 ॥ कूट शैल सिखरी शिला रे जि०, काननमें बलि कुंरु ॥ मो० ॥
 गह्वर आगर इह नदी रे जि०, जेहमें अठे रे नंदन ॥ मो० ॥ ३ ॥
 दस ठाणा अति दीपता रे जि०, गुणपर्याय प्रयोग ॥ मो० ॥ परित्त
 जेहनी वाचना रे जि०, संख्याता अनुयोग ॥ मो० ॥ ४ ॥ वेष्ट सि
 लोक निजुत्तुं रे जि०, संगहणी पदिवित्त ॥ मो० ॥ ए सहु सं-
 ख्यातां जिहां रे जि०, सुशतां नलसे चित्त ॥ मो० ॥ ५ ॥ सुय
 खंघ इक राजतोर रे जि०, दश अध्ययन नशर ॥ मो० ॥ नदेशादिक
 वीस ठे रे जि०, पद बहुतर हज्जार ॥ मो० ॥ ६ ॥ रागी जिनशा
 सन तणो रे जि०, सुणे सिद्धंत वखाण ॥ मो० ॥ विनयचंड कहै
 ते हुवे रे जि०, परमारथरा जाण ॥ मो० ॥ ७ ॥ इति श्री० गा० सं० ॥

॥ अथ ४ ॥ समवायांगमूत्र सिज्ञाय ॥

॥ ढाल ॥ थारा महिलां ऊपर मेह ऊरोखे बीजली ॥ एचाला ॥
 चोथो समवायांग सुणो श्रोता गुणी, हो लाल सुणो श्रो०, पन्नवणा
 नृपांग करो सोजा वली, हो लाल करो सो० ॥ अरध मागधी ज्ञावा
 साखा सुरतणी, हो लाल साखा सु०, समकित ज्ञाव कुसुम परि-
 मल व्याप घणी, हो लाल परि० ॥ १ ॥ जीव अजीवने जीवाजीव
 समासयी, हो लाल जी०, लहीयै एहथी ज्ञाव विरोध कांड नथी,
 हो लाल वि० ॥ ज्ञांगा तीन स्व समयादिकना जाणीये, हो लाल
 यादि०, लोक अलोक ने लोकालोक वखाणीये, हो लाल लो० ॥ २ ॥
 एकअकी ठे सत समवाय परूपणा, हो लाल सम०, कोमाकोमि प्र
 माणक जीव निरूपणा, हो लाल जी० ॥ वारसविह गणी पिटकत
 णो संख्या कही, हो लाल त०, सासता अरथ अनंत कि ठे एहना
 सही, हो लाल ठे० ॥ ३ ॥ सुयखंघ अध्ययन नदेशादिके जला, हो
 लाल न०, संख्यायें एक एरु प्रत्येके गुण निला, हो० प्रत्ये० ॥ पद

एक लाख चौमाल सहस तेजतरा, हो० स०, पदनें अग्रउदय सं-
 रूयाता अकरा, हो० सं० ॥ ४ ॥ ज्ञाप्य चूर्ण निर्युक्ती करी सोहे सदा,
 हो० करी०, सुणतां जेह गंजीर त्रिपत न होय कदा, हो० त्रि० ॥
 जेह नमावै अंगकि अन्तरगत हसी, हो० अन्त०, जल वरसंते जोर
 कुण न हुवे खुसी, हो० कु० ॥ ५ ॥ जाग्यो धरम सनेह जिणंदसुं
 माहरो, हो० जि०, तजिया शास्त्रमिण्यात सुत्र जाण्यो खरो, हो०
 सू० ॥ जिम मालती लहे जूंग करीनेन विरहे, हो० क०, इश्वर
 शिर सुरगंग तजी परि नवि वहे, हो० त० ॥ ६ ॥ ए प्रवचन नि-
 अंशतणो जुगते वसो, हो० त०, साकर सेलनी डाख अकी पिण
 मीठसो, हो० अ० ॥ स्युं कहिये बहु वात विनयचंद्र इम कहै, हो,
 वि०, एहना सुणने ज्ञाव श्रोता अति गहगहै, हो० श्रो० ॥ ७ ॥

॥ अथ ५ ॥ भगवतीसूत्र सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल पंशोमानी ॥ पंचम अंग जगवती जाणिये रे, जिहा जिन
 वरना वचन अथाह रे ॥ हिमवंत परवत सेती निकळ्या रे, मानुं पर
 तिख गंग प्रवाह रे ॥ पं० १ ॥ सूरपन्नत्ती नामे परगमी रे, जेहनी
 वै उद्दाम उवांग रे ॥ सूत्रतणी रचना दरिया जिसी रे, मांदिवा
 अरथ ते सजल तरंग रे ॥ पं० २ ॥ इहां तो सुयखंथ एक अति
 जलो रे, एकसो एक अध्ययन उदार रे ॥ दश हज्जार उद्देसा जेह
 ना रे, जिहां किण प्रश्न ठत्तीस हज्जार रे ॥ पं० ३ ॥ पद तो दोय
 लाख अरथे जरया रे, ऊपर सहस अक्याली जाण रे ॥ लोकालो
 क स्वरूपनी वर्णना रे, विवाहपन्नत्ती अधिक प्रमाण रे ॥ पं० ४ ॥
 करिये पूजा अने परजावना रे, धरिये सदगुरु ऊपर राग रे ॥
 सुणिये सूत्र जगवती रागमूं रे, तो होय जवसागरनो त्याग रे ॥ पं०
 ५ ॥ गोतम नामे इय चढाइयै रे, सम्यक् ज्ञान उदय होय जेम
 रे ॥ कीजै साधु तथा साहमीतणी रे, जगति युगति मन आणो

प्रेम रे ॥ पं० ६ ॥ इण विधसुं ए सूत्र आराधतां रे, इण जव
सीजे वंठित काज रे ॥ परजव विनयचंड कहे ते लहे रे, मोहन
सुगतिपूरीनो राज रे ॥ पंच० ७ ॥ इति श्रीजगवतीसूत्र सिंहाय सं० ॥

॥ अथ ६ ॥ ज्ञातासूत्र सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ कितलख लागा राजाजीरै मालियै ॥ ए देशी ॥
ठो अंग ते ज्ञातासूत्र वखाणियै जी, जेहना ठै अरथ अनेक नइं
रु हो ॥ म्हारा सुणज्यो धरि नेह सिद्धांतनी वातनी जी ॥ श्रवणे
सुणतां गाढो रस ऊपजे जी, मधुरता तर्जित जिम मधुखंरु हो ॥
म्हा० १ ॥ जंबुद्वीपपन्नत्ती उपांग ठै जेहनो जी, इण मांहे जिन
पूजानी विधि जोरहो ॥ म्हा० ॥ अर्चिक सुण परम शातिरस अ
नुजवे जी, चर्चिक सुण करै सम सोर हो ॥ म्हा० २ ॥ नगर न
द्यान चैत्य वनखंरु सोहामणो जी, समवसरण राजानो मात ने
तात हो ॥ म्हा० ॥ धरमाचारज धर्मकथा तिहां दाखवी जी, इह
लोक परलोक रुद्धि विशेष मुहात हो ॥ म्हा० ३ ॥ जोग परि
त्याग प्रव्रज्या पर्यवा जी, सूत्र परिग्रह वारू तप उपधान हो ॥
म्हा० ॥ संलेहण पञ्चरक्काण पादपोषगमनता जी, स्वर्गगमन शुभ
कुल उत्पत्तान हो ॥ म्हा० ४ ॥ बोधिलान्न वलि तंत ते अंतक
त्या कही जी, धर्मकथाना दोय ठै खंध हो ॥ म्हा० ॥ पहिलाना
नगणीस अध्ययन ते आज ठै जी, बीजाना दस वर्ग महा अनुबं
ध हो ॥ म्हा० ५ ॥ नंठकोमि तिहां सकल कथानक ज्ञापिया जी,
ज्ञाप्या वलि नगणीस नदेस हो ॥ म्हा० ॥ संख्याता हज़ार जला
पद एहना जी, एह थकी जायै कुमति कलेश हो ॥ म्हा० ६ ॥
विनय करे जे गुरुनो बहु परै जी, तेहने श्रुत सुणतां बहु फल
होय हो ॥ म्हा० ॥ ते रसिया मन वसिया विनयचंडने जी, सो मांहे
मित्रै जोया एककै दोय हो ॥ म्हा० ७ ॥ इति ज्ञाताधर्मकथांग सि० ॥

॥ अथ ७ ॥ उपासकदशा सूत्र सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल विठियानी ॥ हिवै सातमो अंग ते सांजलो, उपा
सगदशा नामे चंग रे ॥ श्रमणोपासकनी वर्णना, जसु चंदपन्नती
उपाग रे ॥ १ ॥ मन लागो मोरो सूत्राशी, एतो जव वैराग तरंग
रे ॥ रस राता ज्ञाता गुण लहै, परमारथ सुविहित संग रे ॥ म०
२ ॥ इण अंगे सुखबंध एक ठै, अघ्ययन उद्देस विचार रे ॥ दस २
संख्यायें दाखव्या, पद पिण संख्यात हजार रे ॥ म० ३ ॥ आनं
दादिक श्रावकतणो, सुणतां अधिकार रसाल रे ॥ रस लागे जागे
मोहनी, श्रोताजनने ततकाल रे ॥ म० ४ ॥ श्रोता आगल तो वां
चतां, गीतारथ पामे रीज रे ॥ जे अर्द्धदग्ध समजै नही, तेहसुं तो
करवी धीज रे ॥ म० ५ ॥ दस श्रावक तो इहां ज्ञापिया, पिण
सूत्र जणयो नही कोय रे ॥ ते मोटे शुद्ध श्रावक जणी, एक अरथ
नी धारणा होय रे ॥ म० ६ ॥ साचो होय ते प्ररूपियै, निस्संक
पणें सुजगीस रे ॥ कवि विनयचंड कहै स्युं थयो, जो कुमती क
रस्यै रीस रे ॥ म० ७ ॥ इति उपासकदशांग सिंहायः ॥

॥ अथ ८ ॥ अंतगडदशांग सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी ॥ ए देशी ॥ आ-
ठमो अंग अंतगडदशा जी, सुणी करो कान पवित्र ॥ अंतगड के
वली जे थया जी, तेहना रे इहां चरित्र ॥ आठ० ॥ १ ॥ कर्म के
ठिन दल चूरतां जी, पूरता जगतनी आस ॥ जिनवरदेव इहां ज्ञा
सता जी, सासता अर्थ सुविदास ॥ आठ० २ ॥ सकल निक्षेप न
य जंगथी जी, अंगना जाव अजंग ॥ सहिज सुख रंगनी तड्डि
का जी, कड्डिका जास उवाग ॥ आ० ३ ॥ एक सुखबंध
इण अंगनो जी, वर्ग ठै आठ अजिराम ॥ आठ उद्देस
ठे वली जी, संख्याता सहस/पद ठाम ॥ आ० ४ ॥ आठम

१ पाठमें जी, एहवोअ ठे रे मीठास ॥ सरस अनुजव रस
 १ जी, संपजै पुण्यनी रास ॥ आ० ५ ॥ विषयलंपट नर जे
 जी, निरविषयी सुण्यां आय, जिम माहा विष विषधरतणो
 नागमंत्रे सुण्या जाय ॥ आ० ६ ॥ अमृतवचन मुख वरसती
 जा, सरस्वती करो रे पसाय ॥ जिम विनयचंड इण सुत्रना जी,
 तुरत लहै अजिप्राय ॥ आ० ७ ॥ इति श्रीअंतगमदशा सूत्र सि० ॥

॥ अथ ए ॥ अणुत्तरोवाई अंग सिज्ञाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ नणदल विंदली लै ॥ ए चाल ॥ नवमो अंग
 अणुत्तरोवाई, एहनी रुच मुजने आई हो ॥ श्रायक सूत्र सुणो
 ॥ सूत्र सृणो हित आणी, एतो वीतरागनी वाणी हो ॥
 आ० १ ॥ जसु कळयाणवतंसिका नामै, सोहे उपांग प्रकामे हो ॥
 आ० ॥ ए तो आगमने अनुकूला, मानु मेरुसिखरनी चूला हो ॥
 आ० २ ॥ ए तो सूत्रनो नाम सुणीजै, तिमर अंतरगति जीजै
 हो ॥ आ० ॥ प्रगटै नवल सनेहा, एहशी जलसे मोरी देहा हो ॥
 ॥ आ० ३ ॥ अणुत्तर सुरपद पाया, तेहना गुण इणमें गाया
 हो ॥ आ० ॥ नगरादिक ज्ञाव वखाण्या, ते तो ठढै अंगे आण्या
 हो ॥ आ० ४ ॥ इहां एक सुयखंध वारू, त्रिण वर्ग वली मनोहारू
 रे ॥ आ० ॥ उद्देसा त्रिण सनूरा, संख्यात सहस पद पूरा हो ॥
 आ० ५ ॥ सूत्र सुणावूं अमे तेहनें, साची श्रद्धा हुय जेहने हो ॥
 आ० ॥ श्रोताथी प्रीत लगावूं, निंदकने मुंह न लगानं हो ॥ आ० ॥
 ६ ॥ जे सुणतां करै बकोर, ते तो माणस नही पिण ढोर हो ॥
 आ० ॥ कवि विनयचंड कहे साचो, श्रुत रंगै सहुको रांचो हो ॥
 आ० ॥ ७ ॥ इति श्रीअणुत्तरोवाई सिज्ञायः ॥

॥ अथ १० ॥ प्रणव्याकरण सिज्ञाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आघा आम पधारो पूज ॥ ए देसी ॥ दशमो अंग

सुरंग सुहावै, प्रणवाकरणा नामें, सूत्र कल्पतरु सेवे ते तो, चि
दानंद फल पामे ॥ आवो१ गुणना जाण तुमने सूत्र सुणाजें ॥
पुष्पकली ज्युं परिमल महकै, गुरु परागने रागै ॥ तिम उपांग
पुष्पिका एहनो, जोर जुगति करि जागै ॥ आवो० २ ॥ अंगु
ष्ठादिक जिहां प्रकास्या, प्रणवादिक अति रूमा ॥ ते ठै अष्टोत्तर सत्
ए तो, सूत्र मध्य मणिचूमा ॥ आ० ३ ॥ आश्रव द्वार पांच इहां
आण्या, पांचे संवर द्वारा ॥ माहामंत्र वाणीमां लहियै, लवधि जेद
सुखकारा ॥ आ० ४ ॥ सुखबंध एक ठै दसमे अंगै, पणयालीस
अज्ञयणा ॥ पणयालीस उद्देस वली पद, सहस संख्यातनी रयणा
॥ आ० ५ ॥ जे नर सूत्र सुणै नही कानै, केवल पोषे काया ॥
माया मांहि रहै लपटाणा, ते नर इमहिज आया ॥ आ० ६ ॥
सूत्र मांहि तो मारग दोयठै, निश्चयनय व्यवहारा ॥ विनयचंद्र कहै
ते आदरियै, तज मन मदन विकारा ॥ आवो० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ ॥ विपाकसूत्र सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल कमखानी ॥ सुणो रे विपाकश्रुत अंग इग्यारमो,
तजो विकथा वृथा जे अनेरी ॥ ललित उपांग जसु प्रवर पुष्पचूलि
का, मूलिका पाप आतंक केरी ॥ सु० १ ॥ अशुभ किंपाक सम
डुकृतफल जोगवी, नरकमें गरक थया जेह प्राणी ॥ सुकृतफल जोग
वी स्वर्गमांजे गया, तास वक्तव्यता इहां आणी ॥ सु० २ ॥ दोयश्रुत
खंधने वीश अध्ययन वलि, वीस उद्देस इहां जिन प्रयुंजे ॥ सहस
संख्यात पद कुंद मचकुंद जिम, बहुल परिमल ब्रमर चित्त गुंजै ॥
सु० ३ ॥ सरस चंपकलता सुरजि सहने रुचै, अन्य उपगारनी बुद्धि
माटे ॥ सूत्र उपगार तेहथी सबल जाणियै, जेहथी पुरुष सुख अ-
चल खाटै ॥ सु० ४ ॥ बंध ने मोक्षना बेडं कारणअठै, डुकृतने
सुकृत जोवो विचारी ॥ डुकृतने परिहरी सुकृतने आदरी, जिनव-

चन धारियै गुण संजारी ॥ सु० ५ ॥ म करं रे म कर निंदा नि-
गुण पारकी, नारकी तणी गति कांइ बांधै ॥ नारकी प्रकृत तज
सहज संतोष जज, लाग श्रुत सांजली धरमबंधै ॥ सु० ६ ॥ सुख
ने दुःख विपाक फल दाखव्या, अंग इग्यारमें वीतरागै ॥ चिरजयो
वीर शासन जिहांसूत्रा, कवि विनयचंद्रगुण ज्योति जगै ॥ सु० ७ ॥

॥ अथ इग्यारै अंगकी वर्णना लिख्यते ॥

॥ ढाल वधावाकी ॥ अंग इग्यारे में शुण्या, सहेली ए ॥
आज अया रंगरोल कि ॥ स० ॥ नंदीसूत्र मांहि एहनो, स० ॥
जाव्यो सर्व निचोल कि ॥ १ ॥ सहेली ए आज वधामणा ॥ आंक-
णी ॥ पसरी अंग इग्यारनी, स० ॥ मुऊ मन मंरुप वेल कि ॥ सींचू
ते हरखे करी, स० ॥ अनुजव रसनी रेल कि ॥ स० २ ॥ हेज धरी
आंजलै, स० ॥ कुश बूढा कुण बाल कि ॥ तो ते फल लहे फू
स० ॥ स्वादे अतहि रसाल कि ॥ स० ३ ॥ हरख अपार धरी
स० ॥ अहम्मदावाद मजार कि ॥ जास करी ए अंगनी,
॥ वरत्या जय२कार कि ॥ स० ४ ॥ संवत सतर पचावनें,
॥ वरषारुतु नजजास कि ॥ दसमी दिन सुदि पक्षमां, स० ॥
अई मन आस कि ॥ स० ५ ॥ श्रीजिनधर्म सूरी पाटवी,
॥ श्रीजिनचंद्र सूरीस कि ॥ खरतरगहना राजिया, स० ॥
राजै सुजगीस कि ॥ स० ६ ॥ पाठक रहखनियान जो, स० ॥
तिलक सुपसाय कि ॥ विनयचंद्र कहे में करी, स० ॥ अंग
र सिझाय कि ॥ स० ७ ॥ इति श्रीइग्यारे अंग सिझाय ॥

॥ अथ ज्ञानका पुनः स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग ठुमरी ॥ मेरे रे मन मानी ज्ञान जरी, मे० ॥ पर उप
सुगुरु वताई, पांचु जेदें करी ॥ मति श्रुति अवधि अवर मन
केवल बोध वरी ॥ मे० १ ॥ तप करि अग्नि मूस दंसनकी,

करमें धन ल करी ॥ सक्रिय संजम करतामुं मिल, सिद्धि रसान
धरी ॥ मे० २॥ पूरण पुन्य मिली मोहि सजनी, सरलानन्द दरी,
बाल कहै अब विसरत नांही, पल दिन एक घरी ॥ मे० ३॥ इति पद ॥

॥ पुनः आगम स्तवन ॥ २ ॥

श्रुत अतहि जलो, संघ सकल आधार नमूं श्रीजुवन तिलो
॥ आंकणो ॥ अरण्ये श्रीवीरजिनंद आख्यो, सूत्रे श्रीगणेशरगुरु
ज्ञाण्यो, तडुजयथी जे मुनिवर आख्यो ॥ श्रु० १ ॥ जेहथी जग
जाव सकल जाणे, नय एकांत मुनिजन नवि ताणे, निश्चय विवहार
ते मन आणे ॥ श्रु० २ ॥ जिहां अंग उपांग वै अति रूपा, ठ छेद
पयना नहि कूना, मूलसुत्र नंदी अनुयोग चूना ॥ श्रु० ३ ॥ जिहां
निरयुक्ती सूत्रे संगी, बलि ज्ञाप्य चूरण टीका चंगी, पंचम अंगे
कही पंचांगी ॥ श्रु० ४ ॥ जिहां साधु श्रावक मारग लहियै,
संवेगपखी बलि सरदहियै, ए त्रिण विन जवमारग कहियै ॥ श्रु०
५ ॥ जेहनी अनुपेदा नित करियै, उपचारे दूषण परिहरियै,
आराध्यां निज अनुजव तरियै ॥ श्रुत० ६ ॥ जिन आगमना जे,
गुण गावे, शुद्धाशय जे मनमें ध्यावे, ते कृमाकल्याण सदा पावै ॥
श्रु० ७ ॥ इति ज्ञान स्तवनं ॥

॥ अथ कार्तिक चोमासाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्तिक महोनेमें निति कार्तिक सुदि १४ के दिन सब
मंदरमें दर्शन करणेंको जाणा, व्याख्यान सुणना, सामायकादिक
धर्मकृत्य करणा । इत्यादिक सब अधिकार आसाढ चोमासे मुजव
जाणना ॥ इति कार्तिकचोमासा सेवनविधिः ॥

॥ अथ कार्तिक पूर्णमासीका अधिकार लिख्यते ॥

प्रथम कार्तिक वदि १ सैं सेत्रुंजरास सुणें, निवी वा,
एकासणा व्यासणादि तप करै, दोनुं टंक पढिकमणा करै, देववंद-

नादि करै, (नैं हँ) श्रीसिद्धक्षेत्र अनन्तसिद्धायनमः ॥) इस मंत्रका जाप करे १०८ बेर ॥ शक्ति होय तो सिद्धगिरी यात्रा करणेंको जावै, कातिपूनमके दिन विस्तारसंयुक्त सिद्धगिरीकी पूजा करावै, अठारह महोत्सव करै, विस्तारसैं देववंदनादिक विधि करै, (५१) बेर सेनुजरास सुखे (नैं हँ) श्रीसिद्धक्षेत्र अनन्तसिद्धाय नमः) इस पदसैं २१ जेती देवै. (कदास) सिद्धगिरी जाणेंकी शक्ति नही होय तो जहां सिद्धगिरीका पट्ट मंठा होय उहां महोत्सव संयुक्त दर्शन करणेंको जावै, पूजादिक सब विधि करै, उठन्नत्त कर के वा चउत्त्यन्नत्त करके इस पर्वकूं आराधन करै, गुरुन्नक्ति करै, सा हमीवह्वल करे. इत्यादिक विधि संयुक्त सिद्धगिरीकी सेवना करणेंसैं सर्व अशुन्नकर्म विध्वंस होय, मंगलमाला प्रवर्तन होय ॥ इस दिन श्रीद्रावन् वारखिन्न प्रमुख दस कोमि साधु सिद्धिस्थानक प्राप्त ज्ञए, जिससैं इस दिन जो धर्मकृत्य करणेंमें आता हे उसका नि-
 श्रे दशकोमि गुणा फल होता है ॥ इस नरतक्षेत्रमें सिद्धगिरीके समान दुतरा तीर्थ नही. संवत् १९३२ की सालमें मेरा चतु-
 र्मास मुंबईमें था. उहांसैं कार्तिकमें यात्रा गया, तब सर्व बिंवोके दरसन करके गिणती देखणेंमें आई सो बारे हज्जार तीनसैं अठ्ठावनकी संख्या मिली, नर बहुत जगे चरणोंकी स्थापना हे, अन-
 न्त साधू अणसण लेके परमपद पाए हे, इस वास्ते जो तुरत न व्यी जीव होंगें सो शुद्धजावसैं इस तीर्थको सेवेंगें, जो सेवते हे सो धन्य हे. गुर्जरदेस वासियोंकी बहुलता तार्थआसातनाकारी देवद्रव्यज्जक जतीसाधू जो संवेगपदी गीतार्थोंके छेपी एसी वक वृत्तिसैं जीर्णोद्धार तथा नोकारसी प्रमुखके बाहनेसैं अन्य देसांतरी जात्रार्थी जव्यजीवोंका धन उगणेंकी वृत्तिसैं तीर्थ सेवन अनन्त सं-
 सारका जवन्नरण समजके वर्जना, एसैं डुरबुद्धियोंकी पूजाव्रतपञ्च-

खाणादि द्रव्यकरणी श्रावकाचारवृत्तिरूप जाणके उनोका संगन्ती न
करणा. शुद्धजावसें सिद्धगिरी सेवे ताकूं नमस्कार हे ॥

॥ अथ सिद्धगिरी स्तवनं ॥ १ ॥

॥ देशी गरबानी ॥ ते दिन क्यारे आवसी हे, जो रे बहिनी
॥ जासुं सिद्धाचलनी जात्र, मोरी सहियां हे ॥ पाजै चढतां प्रेमसुं
हे, जो रे बहिनी ॥ गाइयै गुण अखियात, मोरी सहियां हे ॥ ते
दि० १ ॥ अदन्तुत ऊंचो देहरो ए, जो रे बहिनी ॥ मूलनायक आ
दिनाथ, मोरी सहियां हे ॥ जोली जगत जली परे हे, जो रे ब०
॥ निरख्यां होय सनाथ ॥ मो० ते० १ ॥ नाही निरमल नीरसुं
हे, जो रे० ॥ पहिर खीरोदक चीर, मो० ॥ केसर जरिय कचो-
लमी हे, जो रे० ॥ पूजसुं सुगुण सुधीर ॥ मो० ते० ३ ॥ रुमी
रायणठांहमी हे, जो रे० ॥ आदिजिनंद ऊदार, मो० ॥ तिहां
जगनाथ समोसरया हे, जो० ॥ पूरब निनाणू वार ॥ मो० ४ ॥
इण गिरवरियै ऊपरा हे, जो रे० ॥ सीधा साधु अनंत, मो० ॥
चोमासे रह्या होय जिनवरा हे, जो रे० ॥ अजित जिनेसर शांती
॥ मो० ५ ॥ चेलणातलाइ सिद्धसिखा हे, जो रे० ॥ अदन्तुत
उलकाजोल, मो० ॥ सिद्धवरु सेत्रुंजैनदी वहे हे, जो रे० ॥ करिये
नित रंगरोल ॥ मो० ६ ॥ इण कुंगर दीठा अकां हे, जो रे० ॥
ऊपजै परमानंद, मो० ॥ गहिरी गिरवर ठांहमी हे, जो रे० ॥ कहे
नित जिणचंद ॥ मो० ते० ७ ॥ इति सिद्धाचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ २ ॥

श्रीचिंझप्रभु प्राहुणो रे । ए देशी ॥ नमो रे नमो से-
त्रुंजगिरी रे, त्रिकरण शुद्ध त्रिकाल रे ॥ पापपमल दूरै टलै रे, तूटे
करमजंजाल रे ॥ नमो० १ ॥ पूरब निनाणू समोसरया रे, प्रथम
जिनंद जगदीस रे ॥ बावीसम जिनवर विना रे, समवसरया

तेवीस रे ॥ नमो० १ ॥ साधु अनंत अनसण ग्रही रे, सीधा ए
 हिज ठोम रे । काल अनंत वलि सीऊस्यै रे, साधू अनंती कोमि
 रे ॥ नमो० २ ॥ अनंत कट्याणक जूमिका रे, महिमावंत महंत
 रे ॥ सास्वतो तीरथ ए सहो रे, अतिशय जास अनंत रे ॥ नमो०
 ४ ॥ कोमि जवांतर जे किया रे, पातिक विविध ऊपाय रे ॥ से-
 नुंजै सनमुख चालतां रे, पगर ते सहू जाय रे ॥ नमो० ५ ॥
 धन दिन तेहिज जाणसूं रे, वहिस्युं सेनुंजे केरी वाट रे ॥ गहरी
 यथाविध पालस्युं रे, संघ सहित गहगाट रे ॥ नमो० ६ ॥ पगर
 जव अवतिघणा रे ॥ पगर याचकदान रे ॥ प्रेम जगत साहमीतणी
 रे, जीर्णोद्धार प्रधान रे ॥ न० ७ ॥ धन ते गिरिराय निरखसुं रे, व-
 दती मंगलसाल रे ॥ मणि मोतीयमे वधावस्युं रे, रजत सोवन जर
 थाल रे ॥ नमो० ८ ॥ धन दिन ते गिर फरसस्युं रे, करस्युं पाव-
 न मोरी काय रे, जगति जुगति जुहारस्युं रे, नाजिनंदन जिनराय
 रे ॥ नमो० ९ ॥ द्रव्य जाव करसुं मुदा रे, पूजा विविध प्रकार रे ॥
 जावै जावना जावसुं रे, करसुं सफल अवतार रे ॥ नमो० १० ॥
 रत्नत्रयी जमती जली रे, देसुं ते धर बुद्धि रे ॥ जवजव त्रमण
 निवारसुं रे, लहिसुं आतमसुद्धि रे ॥ नमो० ११ ॥ विध फरसन
 मन माहरो रे, मोहि रह्यो दिनरात रे ॥ पुन्य प्रबलथी पामियो
 रे, उज्जलगिरि केरी जात रे ॥ नमो० १२ ॥ नाथ धूलेवा सुपसा-
 यथी रे, कारज सगला सिद्ध रे ॥ कहै जिनहरष सूरीसरू रे, हो-
 यजो मंगल बुद्ध रे ॥ नमो० १३ ॥ इति सिद्धाचल स्त० ॥

॥ पुनः सिद्धगिरि स्तवन ॥ ३ ॥

॥ देशी पंथीमानी ॥ अंग ऊमाहों मोने अतिघणो, जेटवा
 विमलगिरिंद रे पंथीमा ॥ नाजिराया कुल चंदलो, जिहां वसै मरु-
 देवानंद रे पंथीमा ॥ वहिलुं बोले रे पंथी म्हारा वहिलुं बोले रे ॥

सेतुंजो ठे कितनी दूर रे पंथीमा ॥ वडि० १ ॥ पादीताणो नगर
 सोहामणो, स्त्री ललतासरनी पाल रे पंथीमा ॥ जिहां अंबला रे
 वमला घणा, फुक रही चंपलारी माल रे पंथीमा ॥ वडि० २ ॥
 धन ते पंखी पारेवमा, सेतुंज वसिया जे मोर रे पंथीमा ॥ ऊमा
 हो करीने जे घर रहे, माणस नही ते ढोर रे पंथीमा ॥ वडि० ॥
 ३ ॥ सेतुंज वाटे जी चालतां, जीणीर ऊमे खेह रे पंथीमा ॥
 मैला आवे संयना कापमा, निरमल आवै देह रे पंथीमा ॥ वडि०
 ४ ॥ उंचो देहरो आदिनायनो, आगल चोक विसाल रे पंथीमा ॥
 जिहां मिलर घणा मानवी, गावै प्रभुनुण माल रे पंथीमा ॥ वडि०
 ५ ॥ बल केसर जर वाटका, पूजेवा जिनवर अंग रे पंथीमा ॥
 फूयाइंदो सोइ प्रभु सिर सेहरो, दिवलांरी ज्योनि अजंग रे पंथी-
 मा ॥ वडि० ६ ॥ ए गिरवर दीठां माहंग, ऊजै पगन आनंद रे
 पंथीमा ॥ मोने जेटणरो जी कोन ठै, प्रेम वणे जिनचंद रे पंथी-
 मा ॥ वडि० ७ ॥ इति श्रीसिद्धाचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ २ ॥

॥ जात्रा निनाणूं करिये विमलगिर, जात्रा० ॥ पूरव निना
 णूं वार सेतुंज गिर, रूपन जिनंद समोसगियै, सेतुंजगिर यात्रा०॥
 कोनिसहस्र जव पातक तूटै, सेतुंज लामे मग जरये ॥ विम०
 जात्रा० १ ॥ चोथ ठह दोय अठम नपस्या, कर चढियै गिरवरियै ॥
 विम० जा० ॥ पूरुरीक पद जपियै हरियै, अव्यवसाय शुभ धरियै ॥
 वि० जा० २ ॥ पापी अजदी निजर न देखै, हिलक पिला ऊवरि
 यै ॥ वि० जा० ॥ भूमिसंथारी ने नारितणो संग, दूधकी परह-
 रियै ॥ वि० जा० ३ ॥ एकल आहारी ने सचिन परिहारी, गुरु साथे
 पद चरिये ॥ वि० जा० ॥ पम्कमणा दोय विधमुं कीजै, पापपम-
 ल विप हरियै ॥ वि० जा० ४ ॥ कलिकाल ए तीरय मोटो, प्रवइल

सम जवदरियै ॥ वि० जा० ॥ उत्तम ए गिरवर सेवता, पदम कहै
जव तरियै ॥ वि० जा० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ५ ॥

॥ राग प्रजाती ॥ जाव धर धन्य दिन आज सफजो गिणयो,
आज में सजन आनंदपायो ॥ जा० ॥ हर्ष धर निजर नर विम-
लगिरि निरख कर, रजत मणि कनक मोतियन वधायो ॥ जा०
॥ १ ॥ पगर उमंग धर पंथ नित पूछतां, धन्य दोष चरण जिहां
चलत आयो ॥ जा० ॥ आज धन दीह जागी सुकृतकी दिशा, आज
धन दीह में सुजस गायो ॥ जा० २ ॥ डर डरगते टरो जात्र
विधसुं करी, पुन्यजंघार पोते जरायो ॥ वदत जिनराज मनरंग सु-
रगिरसिखर, रुषज जिनचंद सुरतरु कहायो ॥ जा० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ मार्गशोर्ष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ मिगसर महीनेमें मिति मिगसर सुद ११ सो मोनइग्या-
रस नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन मेढसें कळयाणक जये हैं सो
लिखते है. जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान, यह तीन कळयाणक श्रीमल्लि-
नाथस्वामी के जये, श्री अरयनाथस्वामीनें दीक्षा अंगीकार करी. श्री
नमिनाथस्वामीकों केवलज्ञान जया. एतें इस जरतक्षेत्रमें वर्तमान
चोवीसीके पांचकळयाणक जये. इस तरे पांच जरत, पांच एरवत
में, चोवीसीके पांच२ कळयाणक मिलाएतें पच्चास कळयाणक जये.
अतीत, अनागत, वर्तमानकालकी अपेक्षासें मेढसें कळयाणक जये.
इस वास्ते यह दिन वरुा उत्तम है. इस दिन मौन संयुक्त उपवास
करै, अठ पहरी पोसा करकै मौनइग्यारसका गुणना करै. पोसह
की शक्ति नही होय तो देसावगासि लेके गुणना करे. ऐसे
इग्यारे वरसमें इग्यारे उपवास करे. अगर जो इग्यारस करणे
की इच्छा होय तो महीनेमें दोनों पक्षकी दो एकादसीकों इ-

ग्यारे वरस इग्यारे महीना करै, यह तपस्या करतां इग्यारै अंग ज्ञा-
वसैं सुणैं, इग्यारै अंग लिखायके देवै, पढ़ेवालोंको सहाय देवै,
तपस्या ग्रहण करणेकी तथा पारणेकी विधि करै, सो गुरुमुखसैं
करै. (समवसरण बैठा जगवंत) इत्यादि इग्यारसका स्तवन पूर्वे
लिख्या हे सो पढ़े वा सुणै. पीछै न्यापनमें पेंतालीस आगमकी
पूजा करै. यथाशक्ति साहमीबहुल करै, गुरुपूजा करै ॥ इति विधिः॥

॥ अथ मोनएकादशीको गुणनो लिख्यते ॥

॥ जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे अतीत

२४ जिन पंच क-

ल्याणक नमः ॥

॥ प्रथमः ॥

४ श्रीमहायशसर्वज्ञायनमः

६ श्रीसर्वानुज्ञूतिअर्हतेनमः

६ श्रीसर्वानुज्ञूतिनाथायनमः

६ श्रीसर्वानुज्ञूतिसर्वज्ञायनमः

७ श्रीश्रीधरनाथायनमः

जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे वर्त्तमान २४

चिन पंच कल्याणक ॥२॥

२१ श्रीनमिसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीमह्विअर्हतेनमः

१९ श्रीमह्विनाथायनमः

१९ श्रीमह्विसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीअरिनाथायनमः

जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे अनागत २४

जिन पंच कल्याणक ० ॥३॥

४ श्रीस्वयंप्रभुसर्वज्ञायनमः

॥ धातकीखंडेपूर्वभरते अतीत

२४ जिन पंच कल्या

णक नमः ॥ ४ ॥

॥ द्वितीयः ॥

४ श्रीअकलंकसर्वज्ञायनमः

६ श्रीशुभ्रंकरअर्हतेनमः

६ श्रीशुभ्रंकरनाथायनमः

६ श्रीशुभ्रंकरसर्वज्ञायनमः

७ श्रीसत्तनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वभरते वर्त्तमान २४

जिन पंच कल्याणकनाम ॥५॥

२१ श्रीब्रह्मेन्द्रसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीगुणनाथअर्हतेनमः

१९ श्रीगुणनाथनाथायनमः

१९ श्रीगुणनाथसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीगांगीलनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वभरते अनागत २४

जिन पंच क० नाम ॥६॥

४ श्रीसांप्रतिसर्वज्ञायनमः

६ श्रीदेवश्रुतग्रहतेनमः
 ६ श्रीदेवश्रुतनाथायनमः
 ६ श्रीदेवश्रुतसर्वज्ञायनमः
 ७ श्रीजडयनाथायनमः
 पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअतोते २४ जि
 नपंचकल्याणक० प्रथ॥७॥
 ४ श्रीमृडुसर्वज्ञायनमः
 ६ श्रीव्यक्तग्रहतेनमः
 ६ श्रीव्यक्तनाथायनमः
 ६ श्रीव्यक्तसर्वज्ञायनमः
 ७ श्रीकलाशतनाथायनमः
 पुष्करार्द्धपूर्वभरतेवर्त्तमान२४जिन
 पंचकल्याणक । ८ ।
 २१ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः
 १ए श्रीयोगनाथग्रहतेनमः
 १ए श्रीयोगनाथनाथायनमः
 १ए श्रीयोगनाथसर्वज्ञायनमः
 १८ श्रीअयोगनाथायनमः
 पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअनागत२४जिन
 पंचकल्याणकनामः ९
 ४ श्रीपरमसर्वज्ञायनमः
 ६ श्रीशुद्धार्त्तिग्रहतेनमः
 ६ श्रीशुद्धार्त्तिनाथायनमः
 ६ श्रीशुद्धार्त्तिसर्वज्ञायनमः
 ७ श्रीनिष्केशनाथायनमः

६ श्रीमुनिनाथग्रहतेनमः
 ६ श्रीमुनिनाथनाथायनमः
 ६ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः
 ७ श्रीविशिष्टनाथायनमः
 धातकीखंडेपविमभरतेअतोत
 २४जिनपं०ना०द्वितिया॥१०॥
 ४ श्रीसर्वार्थसर्वज्ञायनमः
 ६ श्रीहरिज्ञग्रहतेनमः
 ६ श्रीहरिज्ञनाथायनमः
 ६ श्रीहरिज्ञसर्वज्ञायनमः
 ७ श्रीमगधाधिनाथायनमः
 धातकीखंडेपश्चिमभरतेवर्त्तमान
 २४पंचकल्याणकना० ॥११॥
 २१ श्रीप्रयत्नसर्वज्ञायनमः
 १ए श्रीअक्षोभग्रहतेनमः
 १ए श्रीअक्षोभनाथायनमः
 १ए श्रीअक्षोभसर्वज्ञायनमः
 १८ श्रीमल्लिसिंहनाथायनमः
 धातकीखंडेपश्चिमभरतेअनाग-
 त २४ जि०पं०क० १२
 ४ श्रीआदिकरसर्वज्ञायनमः
 ६ श्रीधनदग्रहतेनमः
 ६ श्रीधनदनाथायनमः
 ६ श्रीधनदसर्वज्ञायनमः
 ७ श्रीपौषनाथायनमः

६ श्रीत्रिविक्रमनाथायनमः
 ६ श्रीत्रिविक्रमसर्वज्ञायनमः
 ७ श्रीनारसिंहनाथायनमः
 धातकीखंडेपूर्वएवतेवर्त्तमान२४
 जिनपंचकल्याणकनाम॥२०॥

२१ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः
 १९ श्रीसंतोषितग्रहतेनमः
 १९ श्रीसंतोषितनाथायनमः
 १९ श्रीसंतोषितसर्वज्ञायनमः
 १८ श्रीकामनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएवतेअनागत२४ करार्द्धपूर्वएवतेअना० २४
 जिनपंचकल्याणकनाम॥२१॥ जिनपंचक०नाम ॥ २४ ॥

४ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः
 ६ श्रीचंद्रदाहग्रहतेनमः
 ६ श्रीचंद्रदाहनाथायनमः
 ६ श्रीचंद्रदाहसर्वज्ञायनमः
 ७ श्रीदिलादित्यनाथायनमः

धातकीखंडे पश्चिमएवते
 जिनपंचक० नाम

४ श्रीपुरुषसर्वज्ञायनमः
 ६ श्रीअवबोधग्रहतेनमः
 ६ श्रीअवबोधनाथायनमः
 ६ श्रीअवबोधसर्वज्ञायनमः
 ७ श्रीविक्रमसर्वज्ञायनमः

६ श्रीवशिष्नाथायनमः
 ६ श्रीवशिष्सर्वज्ञायनमः
 ७ श्रीउदयज्ञाननाथायनमः
 ७ श्रीरार्द्धपूर्वएवतेवर्त्तमान२४
 जिनपंचक०नाम ॥ २३ ॥
 श्रीतमोकंदनसर्वज्ञायनमः
 श्रीसायकाक्षग्रहतेनमः
 श्रीसायकाक्षनाथायनमः
 श्रीसायकाक्षसर्वज्ञायनमः
 श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः

४ श्रीनिर्वाणसर्वज्ञायनमः
 ६ श्रीरविराजग्रहतेनमः
 ६ श्रीरविराजनाथायनमः
 ६ श्रीरविराजसर्वज्ञायनमः
 ७ श्रीप्रथमनाथायनमः
 पुष्करार्द्धपश्चिमए०अतीत२४
 जिनपंचक०नाम॥२८॥

४ श्रीअश्ववृंदसर्वज्ञायनमः
 ६ श्रीकुटिलग्रहतेनमः
 ६ श्रीकुटिलनाथायनमः
 ६ श्रीकुटिलसर्वज्ञायनमः
 ७ श्रीवर्द्धमाननाथायनमः

खंडेपश्चिमएवतेवर्त्मान२४
नपंचकल्याणकनामा॥२॥

१ श्रीसुशान्तसर्वज्ञायनमः

१ ए श्रीहरअर्हतेनमः

१ ए श्रीहरनाथायनमः

१ ए श्रीहरसर्वज्ञायनमः

१० श्रीनंदिकेशनाथायनमः

पातकीखंडेपश्चिमएवतेवर्त्मान०२४

जिनपंचकल्याणकनामा॥२७॥

४ श्रीमहामृगेंद्रसर्वज्ञायनमः

६ श्रीअसौचितअर्हतेनमः

६ श्रीअसौचितनाथायनमः

६ श्रीअसौचितसर्वज्ञायनमः

७ श्रीधर्मैंद्रनाथायनमः

इति मौनएकादशी गुण

॥ अथ विधि ॥ ॥ १

एनेसें नेहसें माला होती है. १

थोमे जचोंमें अनंतसुखको प्राप्त इति

॥ अथ पोष मास मध्येति

॥ पोष महीनेमें मिति पक्ष

पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीपार्वती

इसीसें यह दिन श्रीसंघमें परमअ

नाथस्वामीका अधिकार सुणे, का

हां श्रीपार्वतीनाथस्वामीका नाम

करणको जावै, जो कच्ची यात्रा

पुष्करार्द्धेपश्चिमएवतेवर्त्त०

२४जिनपंचक०ना०२९

१ श्रीनंदिकसर्वज्ञायनमः

१ ए श्रीधर्मचंद्रअर्हतेनमः

१ ए श्रीधर्मचंद्रनाथायनमः

१ ए श्रीधर्मचंद्रसर्वज्ञायनमः

१० श्रीविवेकनाथायनमः

पुष्करार्द्धेपश्चिमए०अना०

२४जिनपंचक० ॥३०॥

४ श्रीकलापसर्वज्ञायनमः

६ श्रीविसोमअर्हतेनमः

६ श्रीविसोमनाथायनमः

६ श्रीविसोमसर्वज्ञायनमः

७ श्रीआरणनाथायनमः

नसंपूर्ण ॥

४ श्रद्धयाणककी एकेक माला गु

६ श्रीजीव शुद्धचित्तसें गुणोंमें तो

६ श्रीब्रह्मार्गशार्प मास मध्ये प० ॥

६ श्रीव्रतधर लिख्यते ॥

७ श्रीनिर्वा, सो पोषदसमी नामसे

॥पुष्करार्द्धपूर्वका जन्मकल्याणक है,

जिनपंचक है, इस दिन श्रीपार्वती

४ श्रीअष्टाहिना पञ्चस्काण करै, ज

६ श्रीवशिष्ठ होय उहां जात्रा

जा सकै तो जहां

श्रीपार्श्वनाथस्वामीका मंदिर होय जहां महोत्सव संयुक्त दरसन करणैको जावै, जलयात्रादि महोत्सव करैक अष्टोत्तरीस्नात्र करवै अथवा पंचकढ्याणकजीकी वा सत्तरजेदी पूजा करवै, तोरण बांधै, गीतगान नाटकादिकसँ अनेक तरैके उत्सव करै, और (पास जिनेसर जगतिलो ए) वा (वाणी ब्रह्मा वादिनी० आदिक) पार्श्वनाथस्वामिके गुणगर्जित स्तवन पढ़ै वा सुणै. इस पर्वका सेवन करणैसँ आधिभ्याधि सोग संताप सर्व दूर होंगे, अनेक तरैसँ रुद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यको प्राप्त होंगे ॥ (स्तवन पासजिनेसर जगतिलो) सुणै वा पढ़ै सो उर (वाणी ब्रह्मा०) पढ़ली लिखाहे॥इति॥

॥ अथ माघ मास पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ माघ महीनेमें मिति माघ वदि १३, सो मेरुतेरस नाम सँ पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीरुषभदेवस्वामीका निर्वाणकढ्याणक हे, इस वास्ते जगवंतमहाराज इस दिनको उत्तम कहा है. इस दिन चोविहार उपवास करै, रत्नमई पांच मेरु जगवानके आगे चढ़ावै, बीचमें १ वरुा मेरु, च्यारुंदिस ठोटा च्यार मेरु, एसँ पांच मेरु चढ़ावै. एसी शक्ति नही होय तो सोनेके, चांदीके, वा घृतके मेरु करके चढ़ावै । आगे च्यारुं दिश तरफ च्यार नंद्यावर्त्त करै, अष्टप्रकारी, सत्तरहजेदी पूजा पढायके अष्ट द्रव्य चढ़ावै. पीठै श्रीरुषभदेवस्वामी (पारंगतायनमः) इस पदका दो हज़ार गुणना करै, उर जो कोइ तेरसके दिन पोसह करे तो पूजादिक सब विधि पारणैके दिन करै. अतिथिसंविज्ञाग करैक पारणा करै. इस तरै १३ वरस अथवा तेरे महीना तप करै. पीठै शक्ति मुजब उत्सवसँ ऊजमणा करै, तीर्थोंकी यात्रा करै, साधभीवहल करै ॥ इहां दृष्टांत कहते हैं ॥ इसँ अयोध्यानगरीमें अनंतवीर्यराजाका पूत्र विंगलरायकुमार गोमुनीके पास इस पर्वका अधिकार सुणकै

तपस्या करी, तपस्याके कारणसे पांगलापणका रोग मिटा. तब त-
पस्या पूर्ण जयां पीठै तेरे मंदिर बनवाया, १३ रत्नमंड, १३ स्व
र्णमंड, १३ रूपैमंड प्रतिमा स्थापन करी. १३ वेर संयसमेत ती-
र्थोंकी यात्रा करी, तेरे वेर साधमीं वात्सल्य किया, बहोत तरेसे
ज्ञान जक्ति करी, अंतमें महसेनकुमरको राज्य देकै श्रीसुव्रताचार्य-
जीके पास दीक्षा ग्रहण करी, अनुक्रमे चवदे पूर्वको पढके सर्व क-
र्मोंका क्षय करके अनंतसुखको प्राप्त जया, जो जव्यजीव इस
पर्वको विधी संयुक्त सेवन करेगा सो इस जव उर पर जवमें अनेक
सुखको प्राप्त होगा. इति माघ मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ काल्युणमास मध्ये पर्वाधिकारः लिख्यते ॥

॥ फाद्युनमहनेमें मित्ती फाद्युन सुद १४, सोतीनरे चो-
मासेकी चौदश नामसे पर्व प्रसिद्ध हे । इस दिनको सर्व कर्त्तव्य
आपादचोमासे तुल्य करै, सो पहली लिखा हे ॥
अब इहां विशेष होलीका अधिकार लिखते हैं ॥ ॥ अमणजगवंत
श्रीमहावीरस्वामी वारे महीनोंमें ६ वने पर्व कहा हे. ३ तीन
चोमासे, १ बुली, १ पर्यूपण. जिसमें बुली २ का उर पर्यूपण
का एवं ३ अठईका महोत्सव तो प्राये सर्वत्र होता हे. जिसमें जी
जेसा बीकानेरमें खरतर गठवालोका पोथा अर्थात् पुस्तकका उठ-
व हाथीके होदे वने आमंत्रसे होता हे वा वरघोसा पुस्तकका मुं-
डमें जी होता हे. लेकिन हस्त्यारूढ नही. उर कार्तिक महोत्सव अ-
न्यत्र जी बहोत जगे होता हे लेकिन कलकत्ते जेसा महोत्सव स्वमतमें त
था परमतमें कहाइ जी जारतवर्षमें हमने देखा नही. दक्षिणमें मल्ले-
वार तक हम गये, पूरबमें दिल्ली लखनेउ आगरा कासी पटना तक
में नही देखा. जगणीसें वावनके वर्षमें हम यह उठव कलकत्तेमें
देखा था, उर फागुणमहोत्सव मकसूदावा का बहोत अठा होता

हे, जगणीसमें सुमतालीसमें देखा था, दुसरी जगे नही कहाँ ज़ी देखा, लेकिन किसी ज़ी धर्ममहोत्सवमें आज्ञा विरुद्ध जो काम होय सो अज्ञा नही. एक तो जगवंतके समवसरणके संग आजकलके ज्ञाग्यवानलोक धूपके रुस्सें रेतीके रुस्सें आप तो जाते नही फक-
त बेसमझ अदम्योंको जेजदेतेहैं, वो लोक कूदते नाचते जागते समवसरणकों उठावादेते लेजातेहैं उसमें कितनी आसतना होती हे, कितना कर्म बंधताहे, उसकूं सम्यक्तीजीव विचारके आप विवे-
क विनय संयुक्त शुद्धज्ञावसें धर्मकाममें उद्योग करतेहैं उनका दोनुं जव सफल हे. वोही महोत्सव लायकतारीफके हे इस वास्ते आ-
त्मार्षी धर्मज्ञ पुरुष हे सो होसका चोमासापर्वका ज्ञाणके सर्व जगें जगवंतके धर्मका उद्योत करतेजये शुद्धध्यानरूप अग्निसें अष्ट कर्म-
रूपी काष्ठको जलाके होली करते हैं, पीठै सुबोधजलसें स्नान क-
रके अत्यंत सुंदरताकूं प्राप्त होते हैं. अब यह होलीपर्व दो प्रकारसें हैं. इव्यें जुर ज्ञावै. सो प्रथम इव्य होलीका अधिकार लिखते हैं ॥
॥ इस फाटगुनमहीनेमें चौदश पूर्णमासी के दिन केश्यक अज्ञा-
नीजीव विवेकविकल जयेथके नीचजातिके परंपराको प्राप्त जये
थके लकड़ ठाणे जलायके द्रव्यमई होलिका करते हैं, उत्तम चोमा-
सा धर्मपर्वका विराधना करते हैं. दूसरे दिन मलमूत्र रेतीसें क्रीमा
करते हैं, खोटे वचन बोलते हैं, गधे पर चढते हे, अनेक जीवोंकों
डुःख देते हैं, ऐसे जीव वीतरागकी आज्ञा ठोरके ज्ञांरु जरमोंकी
कुलमर्याद करते हैं, मिष्टान्न त्याग विष्टा खाते हैं, दूध ठोर पेसाब
पीते हैं. ऐसे पुद्गल निकेवल कर्मका सघन बंधन करकै दुर्गतिकों
उपार्जन करते हैं, अनर्थदंरुसें अनंत जव संसारकी स्थिती बांधते
हैं. इसवास्ते आत्मार्षी ज्ञव्यजीवोंकों ज्ञावहोली करणा चाहियै.
सो इस मजब-प्रज्ञके गुणग्राम वसंतके स्तवन बोलै, रात्रीजागर-

ण करावै, मंदिरोंमें पूजा करावै, महोत्सव निकालै, नानाप्रकारका
 नाटिक करै, साहसीवहल करै, साधर्मिजाई आपसमें नाना-
 तरेकी क्रीडा करै ॥ आगे राजालोक जी वसंतरुतु आणैसैं मदन
 महोत्सव करणैकों जाते थे, नानातरेके जल चंदन केसर अबीर गु-
 लाबसे सहरके लोक बगीचोंमें क्रीडा करते थे, इत्यादि लेख तो
 शास्त्रोंमें बहोत जगे वांचणोंमें आया हे, लेकिन मलमूत्र राख धूमसैं
 खेलणा, होली जलाणा, पादत्राण खाणा, जंम चेषा करणी, कुल
 मर्याद ठोमणा, वनेरोकी लज्जा ठोमणी, ऐसा कृत्य उत्तम पुरु-
 षोंके करणे लायक नही. यह क्रीडा वाममार्गीयोकी चलाइ जई
 हे. इसकों प्रवृत्त जयें प्राये दो हज़ार वर्ष करीब जया. पीछे स्वामी
 शंकराचार्यकूं यह बात सम्मत जई तबसैं धीरेऽ अज्ञानी जीव ए-
 ककी देखादेख बहोत लोक करणे लगगये, लेकिन ऐसी कर्त्तव्यता
 किसी जी शास्त्रमें नहीं देखणोंमें आई. देखो केसी आश्चर्यकी बात
 हे, जब मंदिरजीमें पूजादिक महोत्सवका काम होता हे उस वख-
 त तो जाणों को फुरसत नही मिलती हे, नर होलीके दिनोंमें मा-
 तापिता जई वहिन सबोंकी लज्जा ठोमके बहोत दिलमें खुसव-
 खती मानताजया पागलके माफक ज्ञानोंकी तरे बकते फिरता हे.
 कोइ वैस्यानुका नाच होता होय उहां तो हज़ारूं रुपये खरच कर
 देतेहे. मनमें फूलते हैं हमने वना नाम किया. तत्व नजरसे देखे
 नर विचारे तो नाम क्या निकला, बलके अशुजगतीके पाये पूरे-
 मजबूत बंध करणोंमें आये. ऐसी लज्जाठोमके जिनमंदिरका महो-
 त्सव करो, सत्रीजागरण, नाटकादिक धर्मका उधोत करो, ऐसी
 होली खेखो सो तुमारा दोनोंही जन्म सुधरे, द्रव्ये नर जावे
 होलीका स्वरूप वांचके आत्मार्थी धर्मज्ञ तो प्रसन्न होयगें,
 नर जो महामूर्ख अज्ञानीजीव होंगे सो ओ दोष धारण करेंगें नर

सच्ची वातकूं कुयुक्तियोंसें जूठी उधरावेंगे, नर मध्यस्थ विचारवंत तो
 ऐसा कहेंगे यह वात सच्च है. कितका पर्व किसका खेल, निकेवल
 इसमें अनर्थ दंभ लगता है, लेकिन हम इकेला क्या करें, ज्ञाइव-
 षोंको ऐसा करते देख हमजी करते हैं, हमसें रहा जाता नही.
 परंतु यह प्रया बंध हो जाय तो अच्छो है. इस वास्ते है ज्ञव्यजो-
 वो इसमें समुदाणी कर्म बंधता है. ठोमे सो घन्य है. नरकके जाते
 का संग नही करणा. जेसें सरकारकी एनके जाणकार चोरो
 करणेवालेका तथा खूनी केदीकी संगत नर वात तक नही करते
 उस मुजब एकका अनर्थ खेल देख डुतरेको बचना चाहिये.
 काम वो करणा जिसमें दोनों जवमें लाज होय. इस डव्यहोलीके
 खेलमें वमो२ लमाइयां होजाती है. मेमता सहर हालीके ख्या-
 लसें पुष्करणे नर जोजकोंकी लमाइमें तमाम नजाम होगया.
 नर परजवमें अरगैर बोलणेके फल सब धर्मोंमें बुरा लिखा है.
 इस नावत जो जो कठोर लवज लिखा है उसकूं वांच विवेकी मेरे
 पर गुस्ता नही लावेंगे. जो कुठ लिखा है सो पूर्वाचार्योंके वचना-
 नुसार लिखा है. हितोपदेश समझके ठोमणेका प्रयत्न करेंगे. मेरे
 तो नवकारमंत्रके अरुसठ अक्षर शुद्ध गुणनेवाले धर्मबंधु है. जि-
 समें जी सर्व जीवायोनिसें मित्रता है. कम या ज्यादा जो कुठ
 अपशब्द लिखा होय तो मित्रामिडकम ॥१॥ इति फा० ॥ प० ॥

॥ अरी भावहोरी खेलनेके स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग गाल ॥ होरी खेलीयै नर वृद्धन एसो दाव
 ॥ हो० ॥ दयामिर्द्ध अति जली रे, तप मेवा पकवान ॥ सील अ-
 थाणो अति जलो, वारी संजम नागरपान ॥ हो० १॥ लेस्या मा-
 दल जाव रुफ रे, को मान होय ताल ॥ पांच सुमतिकों अरगजो, वारी
 नवतत्व लेहुं गुलाल ॥ हो० २॥ सुमताकेसर घोलियै रे, दमवाको

ठिककाव ॥ ग्यान पिचरको पकरकै, वारी मुगतिवधू चित लाव ॥
हो० ३ ॥ ऐसा साज वणायकै रे, रूपनदेव गुण गाय ॥ श्रीजि-
नचंद्र इम खेलतां, वारी जव २ पातिक जाय ॥ हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत होरी तालयत् ॥ जय बोलो रे पास जिने-
सरकी, ज० ॥ मस्तक मुगट सोहे मननोहन, अंगिया सोहे केस-
रकी ॥ ज० १ ॥ त्रिजुवन ज्योति अखंनित तनकी, स्यामवटा
जैसी जलधरकी ॥ ज० २ ॥ बालपणे प्रभु अदभुत ज्ञानी, करुणा
कीधी विषधरकी ॥ ज० ३ ॥ कमठ बनाय वाय ज्युं बादल, जीत
करी अपणे घरकी ॥ ज० ४ ॥ मातवासा बुदरे जिन जाया,
राणी अश्वसेन नरसरकी ॥ ज० ५ ॥ अष्ट करमदल सबल स्वपा-
ये, श्रेणि चढ्या जे शिवपुरकी ॥ ज० ६ ॥ कहै जिनचंद्र मेरे प्रभु
पारस, जैसी न्याया सुरतरुकी ॥ ज० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ मधुवनमें जाय मची होरी, म० ॥ ग्यान
गुलाल अवीर बनावो, सुमताकेसर रंग घोरी ॥ म० १ ॥ अमृत
रूप धरम जिनवरको, शुध कामा कहै करजोरी ॥ म० २ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ यादव मन मेरो हर लियो रे, या० ॥
संजमदूती कान लगी जव, शिवनारी पर चित दियो रे ॥ या० २ ॥
मोह ठोरु गिरनार सिधाए, नव जव नेह अलग कियो रे ॥ या०
३ ॥ तुम हो तीन जुवनके साहिव, सुरनर कहै तुने चिरंजीयो
रे ॥ या० ४ ॥ वार १ मेरो वंदना होयज, चंद्र कहै मन
हरखियो रे ॥ या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ इक सुण लै अरज मेरी, इ० ॥
इह संसार गहर तरु सिंधु, नमर पनत जिहां जव फेरी ॥ इ० १ ॥
क्रोधादिक बहु मगरमछ हे, ग्रहत जंतु न कान देरी ॥ इ० २ ॥
एसें जलधिसें पार करो तो, तारण तरण ॥ इ० ३ ॥

धरमजिनेसर जगपरमेसर, दूर करो दुखकी वेरी । ५० ४ ॥ परम
कामागुण दायक लायक, अनुपमकीरत जग तेरी ॥ ५० ५ ॥ इति ॥

॥ पुनः होरी ॥ सांवरो सुखदाई, जाकी बिब वरणी न जाई
सा० ॥ श्री ॥ अश्वसेन वामा नंदकी, कीरत त्रिजुवन ठाई ॥ समे-
तैसिखरगिरि मंरुण प्रजुको, देख दरस हरखाई—हृदय मेरो अति
हलसाइ ॥ सां० १ ॥ आज हमारे सुरतरु प्रगढ्यो, आज आनंद वधा
ई ॥ तीन जुवनको नायरु निरख्यो, प्रगटी पूर्व पुन्याई—सफल
मेरो जनम कहाई ॥ सां० २ ॥ प्रजुके दरस सरस विन पाये, ज-
वण जटक्यो में जाई ॥ अब प्रजु चरण सरण चित चाहत, बाल
कहै गुण गाई ॥ प्र० सां ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ नेना हरखाई, आज तेरी सूरत निर-
खी ॥ ने० ॥ जवण संचित पाप करम सब, देखत दूर पुलाई, सु-
मति वधारण कुनति विचारण, ज्ञान विमल जलसाइ ॥ आ० १
॥ वामानंदम अति ठबि सुंदर, महिमा वरणी न जाई ॥ दीनद-
याल दयाकर दीजै, आनंद हरख सदाइ ॥ आ० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग काफीमें होरी ॥ ऐसें फागुण मस्त महीने च-
लोरी, देखो स्याम सखी मोपै होरी ॥ ऐसें० ॥ ब्रजकी सखी सब
वनण निकली, खेलत मिलण होरी ॥ मारे गुलाल अश्वीरमुठोजर, अप-
ने प्रीतस रंगरोरी ॥ च० ए० १ ॥ फूलत फूल सजी वनणके,
सधुरर रस जोरी ॥ कलि कोयल कल करत मरत विन, प्रियतमर
गौरी ॥ च० ए० २ ॥ रस अनरस रास, रसे रस, सरस दरस
प्रजु मोरी ॥ प्रो ॥ तजी सुमता ममता मन, बाल कहै कर जोरी ॥
च० ए० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग काफी होरी ॥ नेम स्यामसैं कहियो मोरी, ने० ॥
तमुडविजै शिवादेवीको नंदन, यादवकुल उदयो री ॥ तेजपूज तनु

सावलो रूमो, कित गयो मो-चित चोरी—अरज नहीं लीनी मोरी
 ॥ ने० १ ॥ व्याहन आए मेरे मन जाए, लाये वल दल जोरी ॥
 तोरणसैं रथ फेर चले हो, चढ गए गिरकी नुरी—मदन महा रिपु
 तोरी ॥ ने० २ ॥ व्याकुल जईहुं दरस विन देखे, रहि हे मुख
 कुं मोरी ॥ कमलनयन राजमतीसखियनसैं, विनती करै करजारी-
 लगी है मुक्तिकी मोरी ॥ ने० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ होरी खेलो रे जविक मन थिर करकै, हो०
 ॥ सुमति सुरंग गुलाल मंगावो, अदीर ऊमावो जोली जरकै ॥
 हो० १ ॥ ग्यान ध्यान रुफ ताल बजावो, गुण गावो प्रभु हित धरकै
 ॥ हो० २ ॥ अनुभव अतर फूलैल मंगावो, वास दिसोदिस महम
 हकै ॥ हो० ३ ॥ क्रोध मान रजधूस उमावो, ज्युं तेरा पाप सब-
 ल थरकै ॥ हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ होरीके खेलईया, तूं तो प्रभू नज विलं-
 व न कर रे ॥ हो० १ ॥ विनय संजारी जर पिचकारी, हारै तूं
 तो शिवरामा वर वर रे ॥ हो० २ ॥ आगम लाल गुलाल जर
 जोरी, हारै तूं तो खेल वसंत घर रे ॥ हो० ३ ॥ सील सुरंग
 आचूषण अंगै, हारै तूं तो जावना वामा पहिर रे ॥ हो० ४ ॥ नी-
 रंजन प्रभुना गुण गावो, हारै तूं तो आत्म अनुभव वर रे ॥
 हो० ५ ॥ ग्यान विज्ञान फूली फुलवारी, हारै तूं तो गूँजत मन
 मधुकर रे ॥ हो० ६ ॥ वामानंदन पासजिनेसर, हारै तूं तो ज-
 गनायक जगगुरु रे ॥ हो० ७ ॥ अजिनलान्न कहै प्रभु संगै,
 हारै तूं तो अनुपम नव निसतर रे ॥ हो० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ वाकै ममतानें धूप मचाई, आज सुमतासंग
 खेलेंगे होरी ॥ वा० ॥ जिनशासनव्रतरंगमहिलमें, दीपकधोव बनाई
 ॥ आ० वा० १ ॥ सरधासखी कृमा मृडना मिल, रुजुता मुक्ति सुहाई ॥

नर अनेक सुमति सखी ब्रजमें, अनुभव रंग रंगाई ॥ आ० वा० १ ॥
 जाव सौच तप दान शील सब, निज गुण बंधु सदाई ॥ जिन गुण
 गान संगीत निरत धुनि, जक्ति जिणंद बढ़ाई ॥ आ० वा० ३ ॥
 खेलत संजम फाग मिलै सब, षाल आणंद बढ़ाई ॥ अब कुमता
 संग रंग करे तो, मेरे चित न सुहाई ॥ आ० वा० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ समकित विन जीव जगत जटक्यो, स० ॥ चतुरा
 सी जव जमतां २, नरजव पायो सो दिख खटक्यो ॥ स० १ ॥ गर
 जावास नव मासे नीकौ, ओऊकी संगत तूं लटक्यो ॥ स० २ ॥
 पुन्य संजोग मिलवौ कुल आवक, ग्यान प्रकाश जयो घटको ॥
 स० ३ ॥ विषय विकार रम्यो तरुणी संग, मायासैं तेरो मन अट
 क्यो ॥ स० ४ ॥ सुरत संजाल तूं जाग रे मानवी, सूयो शिवपु
 रकुं सटको ॥ स० ५ ॥ रूपचंद कहै प्रभु गुण गावौ, स्वर्गपुरीमें
 नहि अटको ॥ स० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ बिसरे मत नाम प्रभूजीको, वि० ॥ प्रभूजीको ना
 म चिंतामणि सरिखो, निरमल नीर सदा निको ॥ वि० १ ॥ ना
 ज कुमर मरुदेवीको नंदन, तीन जुवन सिर हे टीको ॥ वि० २
 ॥ चतुर कुशल चित धोलसुं राव्यो, कुण लहै रंग पतंग फीको
 वि० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ नेम निरंजन ध्यावो रे, वनमें तप कीनो ॥ ने० ॥
 बहुत हठासुं व्याह रचायो, जीव देख क्या आणी रे ॥ व० ने० १ ॥
 सब यादव मिल व्याह रचायो, पहिर जराव जरीनो रे ॥ व० ने०
 २ ॥ कंकण मुगट हाथसुं तोरै, पसुवन पर चित दीनो रे ॥ व०
 ने० ३ ॥ जनधर नूषण कहै जविजननै, सहु जगमें जस लीनो रे
 व० ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः फाग ॥ गढ़ गिरनारकी तलहटी, फाग खेले खेलै ने-

मकुमार ॥ ग० ॥ इक दिशि सायर जल जरयौ, दिशि दूजी गिर
 वर गिरनार ॥ विच सहसावन सोजतो, तिण माहे खेले नेमकु
 मार ॥ ग० १ ॥ फूड्या केवना केतकी, विच फूड्या मरुआमचकुंद
 ॥ वासै मोगरा मालती, तिण मांहै खैले नेमजिणंद ॥ ग० २ ॥
 आंवा मोर्या बागमें, तिण ऊपर कोयल करे टहुकार ॥ वाजै
 पवन दक्षिणतणी, स्यामजमरा कर रह्या रे गुंजार ॥ ग० ३ ॥ आं
 व पके नींबू पके, नारंगी पके तूत अनार ॥ काचै नेमकुमर अजू
 नहीं, नारी ऊपर जसु प्यार ॥ ग० ४ ॥ हरि हलधर गोपि मिली,
 विच घेरयो श्रीनेमकुमार ॥ सोवन सांसी जलजरी, मुख ऊपर ठां
 टे बडुनार ॥ ग० ५ ॥ नेम हठी हठ ना तजै, समजायो जोरें य-
 डनाथ ॥ रिद्धरष वाचक कहै, वांत सोभजे जिवादेवी मात ॥ ग० ६

॥ पुनः होरी ॥ धन राजुल तेरो जाग री, नेमनाथ वर
 पायो री सजनी ॥ ध० ॥ पहिली में पूजू रुद्रज जिगंदा, जिण
 मोहि दियो सुहाग री ॥ ने० १ ॥ सोनेको ठत्र धरयो सिर ऊपर,
 गल मोतियनकी माल री ॥ ने० २ ॥ चंपा चंपेली दोनुं मरुआ,
 फूल चढाजं गुलाब री ॥ ने० ३ ॥ धूप दीप नैवद्य आरतो, मुख
 बोलो जयकार री ॥ ने० ४ ॥ ग्यानमंदिरकी एहि बीनती, जवर
 दीज्यो दीदार री ॥ ने० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ ऐली होरी तो हो रही चंयानगरमें, फा-
 गणके दिन आये ॥ ऐ० १ ॥ वासुपूजजीके नवल मंरुपमें, होय रही
 हो सुखदाए ॥ ऐ० २ ॥ केसर घोरी जरिय कचोरी, प्रभुजीके आं-
 गियां रचाए ॥ ऐ० ३ ॥ चोवा चंदन अवर अरगजा, लाल गुलाल
 ठरुआए ॥ ऐ० ४ ॥ विंध धांतिकी पूजा रचाए, रत्नसुंदर चित
 लाए ॥ ऐ० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ बलिहारी हुं विमलाचल गिरकी, व० ॥

निविम डुरित नर शिखर जि डुरकी, नवसागर तारण तरकी ॥
 व० १ ॥ तीन जुवन तीरथ तारागण, सोजा लहिय निशाकरकी
 ॥ व० ॥ सुंदर अनुपम अतिसय करिकै, महिमा जीती सुरगिरकी
 ॥ व० २ ॥ परमात्म पद प्रतिबिंब तनको, बंढित पूरण सुरतरु-
 की ॥ व० ॥ वर सोरठ मंरुल मंरुनकी, सकल करम रज जल-
 धरकी ॥ व० ॥ बलि बलिहारी वारंवारी, श्रीनाम्नेय जिनेसर-
 की ॥ व० ३ ॥ ए गिरि बुढ़याचल परि जिनकी, डुति दीपै जेम
 दिनेसरकी ॥ व० ॥ असरण सरण प्रथम जिनवरकी, अगणित क-
 रुणासागरकी ॥ व० ४ ॥ युगलाधरम निवारण की सहु, तीन जु-
 वन जनहितकरकी ॥ व० ॥ सोवन वरण सरीर विराजित, वृषन
 लंठन सोजाधरकी ॥ व० ५ ॥ सुंदर प्रभुकी मोहनमूरति, देखत
 परमानंद नरकी ॥ व० ॥ केवलकमला प्रभुकी निरंतर, पदतल
 नमत सुरासुरकी ॥ व० ॥ चरण सरण होयजो शिवचंदकै, नव
 एहिज जिनवरकी ॥ व० ॥ ७ ॥ इति पद ॥

॥ रागवसंत ॥ ऐसै प्रभु नेमनाथ, मेरे दिल वसिया ॥ ऐ०॥
 त्रिगढमें विराजमान, डुंडुनि सुणत कान ॥ अपठर मिल करत
 गान, तान मान रसिया ॥ ऐ० १ ॥ लिंगासण विराजै साम, जीत
 लिए रूप काम ॥ देख्या दिल हर्ष धाम, स्वाम नाम लसिया ॥
 ऐ० २ ॥ तीन ठत्र चमर सार, पंच वर्ण पुष्प धार ॥ गहिर अ-
 सोक सार, नामंरुल हसिया ॥ ऐ० ३ ॥ दिव्यधुनी मिली चंग,
 द्वादश वखाणै अंग ॥ अष्ट प्रतीहार संग, कुसल चित्त वसिया ॥ ऐ० ४ ॥

॥ रागवसंत ॥ संजवजिन सुखकारी, हो लाला, सं० ॥
 हारे हो रे लाला ॥ सं० ॥ एक अरज अवधारो हमारी हो लाला
 ॥ सं० ॥ बाता तीन जुवनके जगगुरु, दाता विरुद विचारी ॥ साता
 दीजै साहिव मोकूं, तक आयो सरण तिहारी हो लाला ॥ सं० १ ॥

सेनामात उयर अवतारी, जयवंत तात जितारी ॥ प्रभु पदकज
 लंठन अधिकारी, अश्वरतन अनुहारी हो लाला ॥ सं० २ ॥ साठ
 पूरव लख आयु अवगाहन, धनुष च्यारसे धारी ॥ सोढन वरण
 सेवे दुरितारी, सावन्ही नगरी सारी हो लाखा ॥ सं० ३ ॥ समेत
 सिखर पर मुगत सिधाए, सहस साधु परिवारी ॥ इंद्राक्षिक मिल
 मंगल गावत, नाचत नाग कुमारी हो लाला ॥ सं० ४ ॥ त्रिकरण
 सुद्धसें त्रिभुवन पतिकुं, वंदना होख्यो हमारी ॥ चरणकमल सेवा
 चित चाहत, सुगुण सदा हितकारी होलाखा ॥ सं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत होरी ॥ सारो सोरठ देस बिखावो रसिया,
 सा० ॥ सोरठ देसमें नीकै दोय तीरथ, गढगिरनार सैत्रुंजगिरिया ॥
 सा० १ ॥ रेवतगिर पर जडुपति केरा, दिख्या ग्यानकेवल रसि
 या ॥ सा० २ ॥ राजुलनारी नेमोसर हाथै, संजम लेइ जवोदधि
 तरिया ॥ सा० ३ ॥ सैत्रुंजगिर पर श्रीरिसहेसर, पूरव निनाणुं
 समोसरिया ॥ सा० ४ ॥ इहां अणगार अनंत अपारा, अणसण कर
 सिवपुर वरिया ॥ सा० ५ ॥ नाज्जनंदनकूं करुं जुहारा,
 सा० ६ ॥ हीण अमारने होत लगारा, ज्ञानविमल प्रभु तिर धरियां
 ॥ सा० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ जिनराज जुहारो, क्या बैठे जव हारो रे ॥
 जि० ॥ रथ पाउधारे चंदाप्रभुजी, नयणे आय निहारो ॥ शुचि त
 न कर हियरा हरख जरे, प्रभु पूजो प्राण पियारो ॥ जि० क्या०
 १ ॥ पूरण पुन्य उदयश्री पायो, नरजव सफल जमारो ॥ जवि
 जन मन जमरा रंग जरे, प्रभु चरणकमल चित धारो ॥ जि० २ ॥
 जवहुख जंजननाथ निरंजन, नाम लीये निततारो ॥ ममता तज सम
 ता संग जेखी, निज आतम काज सुधारो ॥ जि० ३ ॥ आज नगरमें
 रंग वर्धाई, घरइ मंगलाचारो ॥ रथ महोदय रचना रची हइ, मुख

जयर सबद उचारो ॥ जि० ४ ॥ पतित उधारण विरुद्ध विचारी,
सेवक सुगुण संनारो ॥ प्रभु पंकजकी हिव सरणा ग्रही, जवसा
यर पार नतारो ॥ जि० क्या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मनमोहन गज गतकी गामनी, आज चली
गिरनार कामनी ॥ मन० ॥ सुंदर रूप वणाय सखी सब, शिखर
सैल जैसे चमके दामनी ॥ आ० १ ॥ नेमप्रभुको व्याह मनायो,
मोसें प्रीत लगाइ आमनी ॥ आ० ॥ तौरण आय चले मोहि गोमी,
कोन चूक थोपै काढी जामनी ॥ आ० ॥ २ ॥ में न तजुंगी
नव जव केरी, प्रीत वणी जैसी इंधु यामिनी ॥ आ० ॥ रा-
जुल पहली प्रीतमसेती, बाल कहै नई सुमति गामिनी ॥ आ०
म० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ रंग लख्यो गुरु ज्ञान, होरी चेतन खेले ॥
रं० ॥ शील सुरंगी चीर मंगाये, बहिरे आप सुजान ॥ हो० रं० १ ॥
पर मंदिर तज अविचल लीजै, धर्म दया धर ध्यान ॥ हो० रं० २ ॥
हिल मिल आप परम रस आखै, सुमत सखी पहिचान ॥ हो०
रं० ३ ॥ ज्ञान गुलाल लाल रंग लागै, सोहै अदभुत वान ॥ हो०
रं० ४ ॥ सुमति अबीर उभाय जगतमै, वैठै शिवपुर धान ॥ हो०
रं० ५ ॥ अनुभव राग मगन गुण गावै, तप जप सुंदर धान ॥
हो० रं० ६ ॥ ऐसा खेल नविकजन धारै, वंछित पावैदान ॥ हो०
रं० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिदानंद खेले फाग, हो हो होरी आई ॥
मनमृदंग बजै तन मांही, गावत आगम राग ॥ हो० १ ॥ ज्ञान
गुलाल सदा रंग लागै, खेलत सुमत सुदाग ॥ हो० ॥ समकित
केसर चीर रंगान, पहिरो मनवैराग ॥ हो० २ ॥ लाख चोरासी रा-
मत ठांमी, च्यारुं गतिलें जाग ॥ हो० ॥ अविचल सुख पंचमगति

पावै, योग जतन कर जाग ॥ हो० ३ ॥ एसा खैल नविकजन
धरै, पावै नवजल प्राग ॥ हो० ॥ चेतनता सुद होय जगतमें,
समकितके रंग लाग ॥ हो० ४ ॥ इति पदम् ॥

पुनः होरी ॥ होरी खेलो नेमसैं धाय२, डुरजनकी लाज
मेरी करे रे बलाय ॥ हो० ॥ ज्ञानगुलाल अवीर उमावो, कमा
करो रंग लाय २ ॥ ड० हो० १ ॥ शोल संजमव्रत पान भिठाई,
ध्यान धरूंगी में गाय गाय२ ॥ ड० हो० ॥ अष्ट कर्मकी खेह
उमावो, ज्ञान हियामें लाय २ ॥ ड० हो० ३ ॥ जगतचंदकी अ-
रंज वीनती, सरण गद्दी में तेरी जाय२ ॥ ड० हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मेरी घटकी गागरिया रंगसे नरी, शिवपुरकी
वात पूवूं कवकी खरी ॥ मे० ॥ परमजोत प्रभु सिद्धशिला पर,
परमात्म निज ध्यान धरी ॥ मे० १ ॥ मोहन रंग नरयो रंग शी-
वपुर, अजर अमर पद सुख करी ॥ मे० २ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ बावो रुचन बैठै अलवेसर, मारो गुलाल
मुठी नरकै ॥ बावो० ॥ मुठी नरकै पसली नरकै, बावो० ॥ चू-
आ२ चंदन उर अगरजा, केसरका मटका नरकै ॥ बावो० १ ॥
रतनजमित शिर ठत्र विराजै, अंगी जमाव जमी जरकै ॥ बावो०
२ ॥ बाँदै बाजूबंध बहिरखा विराजै, फूलनके गजरे सरकै ॥ बा०
३ ॥ नाजिराया मरुदेवीको नंदन, रमिथे नवि आदीसरसैं ॥ बा०
४ ॥ आदिखान हेदास तुमारो, तार लीओ अपणे करकै ॥ बावो० ६ ॥

॥ पुनः होरी राग टण्डो ॥ गिरिराजकुं हमारी वंदना रे,
जिनराजकुं हमारी वंदना रे ॥ नवःडुख वारण शिवसुख कारण,
देखत नवनही फंदना रे ॥ जि० १ ॥ नाजिराय मरुदेवीको नंद-
न, प्रणमुं रुचन जिनंदना रे ॥ गि० २ ॥ निशि वासर प्रभु ध्यान
तुमारो, जिम चातक दिख चंदना रे ॥ जि० ३ ॥ चतुर कुशल कहै

शरण तुमारो, सिद्धगिरि कर्म निकंदना रे ॥ गि० ४॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ दरशन कीयो आज शिखरगिरिको, द० ॥
देख्यो मधुवन शीतानालो, नीर वहे बै अति नीको ॥ द० १ ॥ बी-
स कोसर्था दरसन दीगो, जागो जरम सकल जियको ॥ द० २ ॥
बीसे टूँके बीस गोमटनी, तामे चरण जिनेसरको ॥ द० ३ ॥ अब
जिनवरके शरणे आयो, रसतो पायो मुगतिपदको ॥ द० ४ ॥ ६०

॥ पुनः होरी ॥ सिद्धगिरिजीको दरसन करलै, संघयात्रा-सं-
घयात्रा करणसैं पाष कटत हे, सिद्ध० ॥ कोटि अनंता इण गिरि
सीधा, ताकूं शीस नमाय ले ॥ संघ० १ ॥ रुषन्न जिनेश्वरजीको
दरशन, शुद्ध आतम पावन करलै ॥ संघ० २ ॥ रूपचंद कहै
नाथ निरंजन, जवश्का डुख हरलै ॥ संघ० ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मोहे अपने रंगमें रंगदे, मेरे साहिब आदि
जिनंद चंद ॥ मोहे० ॥ रंग तूही रंग रे ज तूही है, संजम रंग
मोहि रंगदै ॥ मेरे सा० मो० १ ॥ रंग मिथ्यात लग्यो हे अना-
दिको, सो अब इनकूं खिनदै ॥ मेरे सा० मो० २ ॥ रत्नत्रयी रु-
द्धि तेरी में देखी, सो अब मुऊकुं सऊदे ॥ मेरे सा० मो० ३ ॥
ज्ञान दर्शन चारित्र रंग हे, बा विच केवल धरेदे ॥ मेरे० मो० ४ ॥
जूथरदास कहै समकित दे, आप समान मोहि करदे ॥ मेरे० मो० ५ ॥

॥ पुनः होरी ॥ मेरे पारसप्रज्जुजीके रंगमंरुपमें, खेलत संत
वसंत ॥ ज्ञान गुलाल विवेक अरगजा, विनय अवीर विलसंत ॥
॥ मे० १ ॥ प्रज्जुगुण प्रेम पिचरकी वूटत, समता सखिय मिलंत
॥ आगम लहर फूली फुलवामी, मुनिवर ब्रमर गुंजंत ॥ मे० २
अंग आनूषण पंचेंडिय वस, गुरुसेवास लहंत, बार जावना ग-
हिर कसूंवा, पीवत मन हरखंत ॥ मे० ३ ॥ अद्वैत पंच माहा
व्रत वागा, पहिरे तन संहंत ॥ कहै जिनचंद प्रज्जुकी कृपासैं, नी-

रखे नवल वसंत ॥ मेरे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ रंग मन्थो जिन द्वार चालो खेलिये होरी,
रं० ॥ पास प्रभु दरवार रे ॥ चा० ॥ फागण के दिन च्यार रे, चा०
कनक कचोरी केसर घोरी, पूजो विविध प्रकार रे ॥ चा० १ ॥
कृष्णागर की धूप घटत हे, परिमल महके अपार रे ॥ चा० २ ॥
लाल गुलाल अबीर उमावत, पास जी के दरवार रे ॥ चा० ३ ॥
जर पिचकारी गुलाब की ठिरको, वामा देवी कुमार रे ॥ चा० ४ ॥
ताल मृदंग वीण रुफ बाजै, जेरी जुंगल रणकार रे ॥ चा० ५ ॥
सब सखियन मिल नाटक करकै, गावत मंगल सार रे ॥ चा० ६ ॥
॥ रत्न सागर प्रभु ज्ञावना ज्ञावै, मुख बोलै जयकार रे ॥ चा० ७ ॥

॥ पुनः होरी ॥ नेम जी से कहियो मोरी, सामरे से कहियो
मोरी ॥ तोरण आए किण जर माए, ठोरु चलै अजि मानी ॥ हां
रे लाला ठो० ॥ पशुवन के शिर दोष चढ़ायो, तोमी प्रीत पुरानी-
दया दिल में नहि आणी ॥ सा० १ ॥ चूक पमी सो मुंह से कहियो,
ना करिये सोधाणी ॥ आठ जवो की प्रीत बंधाणी, नवमे चले क्युं
ज्यानी—श्याम तेरी सूरत पिठाणी ॥ सा० २ ॥ या जोरी जुग में
बेह लागी, राजुल गुल की वामी ॥ वीनती सुण कै अमर पद दीजै,
रंग विजय सुख दानी—आवा उर गमन ठिदानी ॥ सा० ३ ॥ ६० ॥

॥ पुनः होरी ॥ महाराजा तोरे मंदिर में बसै रंग, जिन०
॥ श्रीचिंतामणि पास जी, तोरे० ॥ ज्ञान सुख अवीर अरगजा,
सुमता चीर सुचंग ॥ श्रीचिं० तोरे० १ ॥ अनुजव लहर फुली फु-
लवामी, दिन २ बढ़ते रंग ॥ श्रीचिं० तोरे० २ ॥ उपशम वागा
अंग अनोपम, शुक्र ध्यान के संग ॥ श्रीचिं० तो० ३ ॥ अमरचंद
चिंतामणि चित धर, तुझ सुं अविहम रंग ॥ श्रीचिं० तो० ४ ॥ ६० ॥

॥ पुनः होरी ॥ तोरी अंगिया वण हे सुरंग, श्रीचिंतामणि

पास प्रजूजी, तोरी० ॥ सुविवेकी श्रावक मिल आये, आणी ज्ञाव
 अन्नंग ॥ श्रीचिं० तोरी० १ ॥ ग्रहबंधीकी ज्ञांत जली हे, वुंठियां
 नव२ रंग ॥ श्री० ॥ जरकस जामो खूब बन्यो हे, कोर केवना
 संग ॥ श्रीचिं० २ ॥ मस्तक मुगट काने दोय कुंमल, बाजूबंध
 सुचंग ॥ श्रीचिं० ॥ फूलनकी गल माल सोजत है, सौरंग वास
 सुगंध ॥ श्रीचिं० ३ ॥ त्रिजुवन साहब तखत विराजै, महिरवान मनरंग
 ॥ श्रीचिं० ॥ सुरनर याकी सेवा करत है, रात दिवस धर रंग ॥
 श्रीचिं० ४ ॥ सुनिजर है साहिबकी सब पर, संघ है सकल सुरंग
 ॥ श्रीचिं० ॥ ज्ञावना ज्ञावो जिनगुण गावो, अमर घणै नठरंग
 ॥ श्रीचिं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः दोरी ॥ चिंतामणि चिन ध्यावो रे, वंठित फल पा-
 वो ॥ चिं० ॥ सकल जदिक जन मिल कर आवो, राग फाग गुण
 गावो रे ॥ वंठित० १ ॥ अवीर गुलाल लाल संग लावो, जर२ मु-
 ठियां नवावो रे ॥ वंठित० चिं० ॥ कुंकुम केसरकुं ठिककावो, ज्ञा-
 व शुक्ल जल ज्ञावो रे ॥ वंठि० चिं० २ ॥ अंगी चंगी पुहप ब-
 नावो, दीपक ज्योति दीषावो रे ॥ वंठित० चिं० ॥ दरस सरस
 करके सुख पावो, पुण्य जंमार जरावो रे ॥ वंठित० चिं० ३ ॥ वा-
 जित्र वाजाविविध वजावो, नृत्य संगीत नचावो रे ॥ वंठित० चिं०
 ॥ अमरसिंधुर आनंद बवावो, जिनजीर्ण लयलावो रे ॥ वं० चिं० ४ ॥

॥ पुनः दोरी ॥ मत मारो पिचकारी रे, में तो सगरी जीज
 गई ॥ म० ॥ ताल मृदंग वजत मनमांदि, गावत आगम राग ॥
 लाल में तो स० १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागे, खेलत सुमति
 सोहाग ॥ लाल में० २ ॥ समकितकेसर चीर रंगानें, पहिरुं मन
 वैराग ॥ लाल में० ३ ॥ लख चोरासी रामत ठोरुं, ज्यारों गति
 सोहाग ॥ पिया में तो० ४ ॥ ऐसा खेल खेले सब प्यारी, शिव-

सुंदरी वर मांग ॥ लाल में ५ ॥ ज्ञानसागर प्रज्नु विविध प्रकारै,
इण विध खेले फाग ॥ पिया में ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ नेम मिले तो वातां कीजिये, हो प्यारे जिन-
जी, नेम ० ॥ मे हूं तुमारी खिजमतगारी, प्रेमका प्याला पीजीये ॥
हो ० ने ० १ ॥ हम हे केतकी तुम हो २ जमरा, फिर वासना लीजीये
॥ हो ० ने ० २ ॥ मैं हूं धरती तुम हो मेहला, कबहु तो मिलना
कीजीये ॥ हो ० ने ० ३ ॥ नेम राजुल मिल सुगति सिधाए, रूपचंद पद
दीजीये ॥ हो ० ने ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ आतम तत्व विचारो ज्ञानसैं, कर्म कटै ज्युं शुक्ल
ध्यानसैं ॥ आ ० ॥ पुदगल जीव स्वरूप पिठाएयो, ममता मिट
गई सारी जानसैं ॥ कर्म क ० आ ० १ ॥ क्रोधादिक अरि अंधकार
सम, नास ज्यो सब ज्ञानज्ञानसैं ॥ कर्म क ० आ ० २ ॥ परमातम
पद पावत सोई, विनय जजत पद अचल आनसैं ॥ कर्म ० आ ० ३ ॥

॥ पुनः होरी ॥ लाल तेरे नयनोकी गति न्यारी, एतो उपस-
मरसकी क्यारी ॥ लाल ते ० ॥ काम क्रोधादिक दोष रहित हे,
नयन जये अविकारी ॥ निझ सुपनदशा नहिं यामैं, दर्शनावरण
निवारी ॥ लाल ते ० १ ॥ ओर नयनमें काम क्रोध हे, बहोत
जरी हे खुमारी ॥ पर धन देख हरणकी इच्छा, यामैं हे हुसिया-
रो ॥ लाल ते ० २ ॥ ऐसा लज्जन हे नयनोंमें, क्युं पामे जव पारी,
योही विचार करो दिल अपने, होत कर्मसैं जारी ॥ लाल ते ० ३ ॥
धर्म विना कोई सरणा नही हें, एसो निश्चै धारी ॥ विनय कहै
प्रज्नु जजन करो नित, योही तारनहारी ॥ लाल ते ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ दर्शन विन जीवसंसार जम्यो, द ० ॥ चो-
रसी लख योनिमें जटकत, लहि मानवजव युंही गम्यो ॥ द ०
१ ॥ पुन्य वदय श्रावक कुल पायो, यटमें ज्ञान उद्योत जयो ॥ द ०

३॥ माया ममतामें निश दिन तूं, विषय विकारसुं नहिं विरम्यो॥
 ६० ३ ॥ सार विवेक धार रे चेतन, जटकत जवमें क्युं जरम्यो
 ॥ ६० ४ ॥ कहत कमाकट्याण निरंतर, जज जगवंत तेरो पाप
 शम्यो ॥ ६० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत ठोमो मोने यूंही रे, कोइ चूक बतावो
 ॥ म० । अबीर गुलाल जावसें रमतां, हमसुं कदिय न खेलो रे
 ॥ कोइ० म० १॥ रथ फेरी प्रजुजी घर आये, चढिया गढ गिरनारी
 रे ॥ को० म० २ ॥ बहुत हठासुं व्याह मनायो, जीव देख दया
 आणी रे ॥ को० म० ३ ॥ राजुल ऊनी अरज करत हे, एक वार
 फिर जोवो रे ॥ कोइ० म० ४ ॥ नेमराजुल दोनुं सुगत सिधाए,
 पहली राजुल नारी रे ॥ कोइ० म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ अटक्यो चित्त हमारो री, जिन चरण कमलमें
 ॥ अट० ॥ शीतलनाथ जिनेसर साहिब, जिनवर प्राण आधारो
 री ॥ जि० अ० १ ॥ माता नंदादेवीको नंदन, दृढरथ नृपको प्या-
 रो री ॥ जि० अ० २ ॥ श्रीवृद्ध लंछन जनम जदिलपुर, कुल
 इक्ष्वाग उदारो री ॥ जि० अ० ३ ॥ नेन धनुष शरीर सुसोजित,
 कनक वरण अनुकारो री ॥ जि० अ० ४ ॥ एक लक्ष पूरब आयु
 कहिये, नाम लिआं निसतारो री ॥ जि० अ० ५ ॥ दीनदयाल जगत
 प्रतिपालक, अब मोहे पार उतारो री ॥ जि० अ० ६ ॥ हरखचंदके
 साहिब सच्चे, हुं तो दास तुमारो री ॥ जि० अ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ मंगल स्तवनं ॥ मंगल राजै गिरनार, नेमपद मंगल है
 देवा ॥ म० ॥ मंगल राजेमती पद मंगल, मंगल रहनेमि धार ॥
 ने० १ ॥ मंगल गणपति मंगल पाठक, सब तपसी विच सार ॥
 ने० २ ॥ मंगल धन धन्नामुनि नायक, मंगल सब अणगार ॥ ने० ३
 ॥ जय२ होमकुसल गुरु जंपै, आनंदधन अवतार ॥ ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ इम मास द्वादश तप सुसंग्रह विधिप्रपासैं संयही, अति सुगम ज्ञाप प्रकाश करतां ज्यज्जन मन गहगही ॥ निधि बाण नंद सुचंड विक्रम साध सुदि पूनम सही, श्रीवृद्धत्वरतर गच्छ पाठक रामगणि विधि इम कही ॥ १ ॥

अथ पंच कल्याणक टिपनिका स्वरूप मुच्यते ॥

॥ जिस महीनेमें जितने दिन जगवंत के कल्याणक के हे सो सर्व ज्यजीवों के सेवन करणे योग्य है, लेकिन कोण तिथिकूं कोणसा कल्याणक सेवन करणा सो जाणे विगर सेवन कर सकते नही (ओर विशेषमें) पंच कल्याणककी तपस्या करणेवाले ज्यजीवों के अवस्य पंचकल्याणककी टीप गुणें विगर काम चलता नही, इस वास्ते गुणने मुजब विधिप्रपासैं पंच कल्याणककी टीप लि०

॥ अथ पंच कल्याणककी टीप लिख्यते ॥

कार्तिककृष्णपक्षे ॥ ५

कार्तिकशुक्लपक्षे ॥ ५ ॥

५ श्रीसंजवनाथजीसर्वज्ञाय०

३ श्रीसुविधनाथजीसर्वज्ञाय०

१५ श्रीपद्मप्रभुजीअर्हतेनमः

१२ श्रीअरनाथजीसर्वज्ञायनमः

१२ श्रीनेमनाथजीपरमेश्विनेन०

मार्गशीर्षशुक्लपक्षे ॥ ६ ॥

१३ श्रीपद्मप्रभुजीनाथायनमः

१० श्रीअरनाथजीअर्हतेनमः

३० श्रीवर्द्धमानजीपारंगतायन०

१० श्रीअरनाथजीपारंगताय०

मार्गशीर्षकृष्णपक्षे ॥ ४

११ श्रीअरनाथजीनाथायनमः

५ श्रीसुविधनाथजीअर्हतेनमः

११ श्रीमल्लिनाथजीअर्हतेनमः

६ श्रीसुविधनाथजीनाथायन०

११ श्रीमल्लिनाथजीनाथायनमः

१० श्रीवर्द्धमानजीनाथायनमः

११ श्रीमल्लिनाथजीसर्वज्ञायन०

११ श्रीपद्मप्रभुजीपारंगतायनमः

११ श्रीनिमिनाथजीसर्वज्ञायन०

पौषकृष्णपक्षे ॥ ५ ॥

१० श्रीपार्श्वनाथजीअर्हतेनमः

१४ श्रीसंजवनाथजीअर्हतेनमः

१५ श्रीसंजवनाथजीनाथायन०

- ११ श्रीपार्श्वनाथजीनाथायनमः पोषशुक्लपक्षे ॥ ५ ॥
- १२ श्रीचंद्राप्रभुजीअर्हतेनमः ६ श्रीविमलनाथजीसर्वज्ञाय०
- १३ श्रीचंडाप्रभुजीनाथायनमः ए श्रीशान्तिनाथजीसर्वज्ञा०
- १४ श्रीशीतलनाथजीसर्वज्ञाय० ११ श्रीअजितनाथजीसर्व०
- माघकृष्णपक्षे ॥ ५ । १४ श्रीअग्निनंदनजीसर्वज्ञा०
- ६ श्रीपद्मप्रभुजीपरमेष्ठिने० १५ श्रीधर्मनाथजीसर्वज्ञा०
- १२ श्रीशीतलनाथजीअर्ह० साधशुक्लपक्षे ॥ ए
- १२ श्रीशीतलनाथजीना०नमः २ श्रीअग्निनंदनजीअर्ह०
- ११ श्रीरूपपद्मदेवजीपारंगता० २ श्रीवासुपूज्यजीसर्वज्ञा०
- ३० श्रीश्रेयांसजीसर्वज्ञायम० ३ श्रीविमलनाथजीअर्ह०
- फाल्गुनकृष्णपक्षे ॥ १० ३ श्रीधर्मनाथजीअर्हतेनमः
- ६ श्रीसुपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय० ४ श्रीविमलनाथजीना०न०
- ७ श्रीसुपार्श्वनाथजीपारंगता० ८ श्रीअजितनाथजीअर्ह०
- ७ श्रीचंडाप्रभुजीसर्वज्ञायन० ए श्रीअजितनाथजीनाथा०
- ए श्रीसुविधनाथजीपरमेष्ठिने० ११ श्रीअग्निमंदनजीनाथा०
- ११ श्रीरूपपद्मदेवजीसर्वज्ञायनमः १३ श्रीधर्मनाथजीनाथाय०
- १२ श्रीश्रेयांसजीअर्हतेनमः फाल्गुणशुक्लपक्षे । ५
- १२ श्रीभुनिसुव्रतसर्वज्ञायनमः २ श्रीविमलनाथजीपरमेष्ठिने०
- १३ श्रीश्रेयांसजीनाथायनमः १ श्रीसुतोशरीपरमेष्ठि०
- १४ श्रीवासुपूज्यजीअर्हतेनमः ८ श्रीसंजवनाथजीपरमेष्ठि०
- ३० श्रीवासुपूज्यजीनाथायनमः ११ श्रीमल्लिनाथजीपारंग०
- चैत्रकृष्णपक्षे ॥ ५ १२ श्रीभुनिसुव्रतजीनाथाय०
- ४ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमेष्ठिने० चैत्रशुक्लपक्षे । ८
- ४ श्रीपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय० ३ श्रीकुंभुनाथजीसर्वज्ञा०
- ५ श्रीचंडाप्रभुजीपरमेष्ठिने० ५ ॥ १० ॥ तनाथजीपारंग०

८ श्रीआदिनाथअर्हतेनमः

८ श्रीआदिनाथजीनाथाय०

वैशाखकृष्णपक्षे ॥ ९

१ श्रीकुंथुनाथपारंगतायनमः

२ श्रीशीतलनाथजीपारंगता०

५ श्रीकुंथुनाथजीनाथायनमः

६ श्रीशीतलनाथजीपरमेष्टि०

१० श्रीनमिनाथजीपारंगताय०

१३ श्रीअनंतनाथजीअर्हतेन०

१४ श्रीअनंतनाथजीनाथायन०

१४ श्रीअनंतनाथजीसर्वज्ञा०

१४ श्री कुंथुनाथजीअर्हतेन०

ज्येष्ठकृष्णपक्षे ॥ ८ ॥

८ श्रीमुनिसुव्रतजीअर्हते०

ए श्रीमुनिसुव्रतजीपारंग०

१३ श्रीशांतिनाथजीअर्ह०

१३ श्रीशांतिनाथजीपारंग०

१४ श्रीशांतिनाथजीन०

आषाढकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥

४ श्रीआदिनाथजीपरमे०

७ श्रीविमलनाथजीपार०

ए श्रीनमिनाथजीनाथा०

श्रावणकृष्णपक्षे । ४

३ श्रीश्रेयांसजीपारंग०

७ श्री अनंतनाथजीप

५ श्रीसंज्ञवनाथजीपारंग०

५ श्रीअनंतनाथजीपारंग०

ए श्रीसुमतिनाथजीपारं०

११ श्रीसुमतिनाथजीसर्व०

१३ श्रीवर्द्धमानजीअर्हतेनमः

१५ श्रीषट्प्रज्ञजीसर्वज्ञाय०

वैशाखशुक्लपक्षे ८

४ श्रीअज्जिनंदनजीपरमे०

७ श्रीधर्मनाथजीपरमे०

८ श्रीअज्जिनंदनजीपारंग०

८ श्रीसुमतिनाथजीअर्हते०

१० श्रीवर्द्धमानजीसर्वज्ञाय०

१२ श्रीविमलनाथजीपारंग०

ज्येष्ठशुक्लपक्षे ॥ ४ ॥

५ श्रीधर्मनाथजीपारंगता०

ए श्रीवासुपूज्यजीपरमेष्टि०

१२ श्रीसुपार्श्वनाथजीअर्ह०

१३ श्रीसुपार्श्वनाथजीनाथा०

आषाढशुक्लपक्षे ३

६ श्रीवर्द्धमानजीपरमेष्टि०

८ श्रीनेमनाथजीपारंगता०

१४ श्रीवासुपूज्यजीपारंग०

श्रावणशुक्लपक्षे ५

२ श्रीसुमतिनाथजीपरमे०

५ श्रीनेमनाथजीअर्हते०

८ श्रीनमिनाथजीअर्ह०

६ श्रीनेमिनाथजीनाथाय०

ए श्रीकुंभुनाथजीपरमे०

८ श्रीपार्श्वनाथजीपारंग०

भाद्रपदकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥

१५ श्रीमुनिसुव्रतपरमेष्टि०

७ श्रीचंडाप्रभूजीपारंग०

भाद्रपदशुक्लपक्षे १

७ श्रीशांतिनाथजीपरमे०

ए श्रीसुविधनाथजीपारंग०

८ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमे०

आश्विनशुक्लपक्षे १

आश्विनकृष्णपक्षे ॥ २

१५ श्रीसुविधनाथपरमेष्टि०

१३ श्रीमहावीरजीगर्भाय०

३० श्रीनेमनाथजीसर्वज्ञा०

इति श्रीपंचकल्याणक टीप संपूर्ण। गर्भापहार षष्ठमप्यस्ति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक विधि ॥

॥ प्रथम शुभ दिन शुभ घर। गुरुके पास पंच कल्याणक तप ग्रहण करै, उपवास (वा) आंबील एकासणादिकका पञ्चस्काण करै, तीन टंक देववंदन करै, परिक्रमणा करै, जिस दिन जो मा- हाराजका कल्याणक होय उसका २००० गुणना करै, उर पहली लिखा जो पंच कल्याणकका स्तवन सो सुनै या पढ़ै, जहां ज- गवंतकी कल्याणक जूमि होय उहां वरु महोन्नवसें संघ समेत यात्रा करणैको जावै, उहां विधी संयुक्त सर्व जगवंतके पंच क- ल्याणकका उन्नव करै, जो शक्ति नहिं होय तो शासनपति श्रीम- हावीरस्वामीके षट् कल्याणकका उन्नव करै ॥ अब २३ जगवंतकी अपेक्षार्थे पांच, श्रीवीरप्रभूके अपेक्षार्थे षट् कल्याणक संक्षेप उन्नव विधि लिख्यते ॥ च्यवन कल्याणकको (परमेष्टिनेनमः) कहियै, इस दिन चवदे स्वप्नादिककी पूजा करायकै च्यवन कल्याणादिकका उन्नव करै, हीरा चढावै ॥ १ ॥ जन्म कल्याणककूं (अर्हतेनमः) कहणा, इस दिन जलजात्रादिकका महोन्नव करके अष्टौ-

क्षत्री स्नात्रादिक करावै, वस्त्र चढावै ॥ २ ॥ दिक्षा कल्याणकर्कों
 (नाथायनमः) कहणा. इस दिन समवसरण निकालै, अशोक वृ-
 क्षादिकके नीचै स्थापन करकै दिक्षाका उन्नव करै, घृत गुग्गु वस्त्रा-
 दिक चढावै, शक्ति मुजब दान देवै ॥ ३ ॥ केवलज्ञान कल्याण-
 कर्कों (सर्वज्ञायनमः) कहणा. इस दिन समोसरणमें जगवंतर्कों
 विराजमान करकै आठ प्रातिहार्य प्रगट करै, तरे२ के उन्नव करै,
 वस्त्र आभूषण चढावै, सुपेदचंदन चर्चित गोला चढावै ॥ ४ ॥ नि-
 र्वाण कल्याणकर्कों (पारंगतायनमः) कहियै. इस दिन निर्वाण
 कल्याणकके जावगर्भित उन्नव करै, लड्डू चढावै ॥ ५ ॥ और ठग
 गर्भापहार कल्याणकका उन्नव करणा होय तो ज्यवनकल्याणकके
 उन्नव समान करै ॥ ६ ॥ इस मुजब सर्व कल्याणकका उन्नव करै.
 तपस्या पूर्ण होयेलें पंच कल्याणकजीकी पूजा करावै, गुरुभक्ति
 करै, साहमीबन्ध करै. इत्यादिक विधि संयुक्त यह तपस्या जो
 ज्यजीव करेंगे सो अनंत सुखर्कों प्राप्त होंगे ॥ इति पंचकल्याणक
 तपस्याधिकारः ॥

॥ अथ पखवासेको स्तवन लिख्यते ॥

॥ सीमंथर करजो मया ॥ ए देशो ॥ जंबुद्वीप सोहामणो,
 दक्षिणभरत उदार ॥ राजग्रही नगरी जली, अलिकापुर
 अवतार ॥ १ ॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामिजी, समरंता सुख थाय
 ॥ मनवंछित फल पामियै, दोहग दूर पुलाय ॥ श्री० २ ॥ राजकरै
 तिहां राजियो, सुमित्र नरेसर नाम ॥ पटराणी पद्मावती, शील-
 गुणें अजिराम ॥ श्री० ३ ॥ श्रावण उज्ज्वल पूनमें, श्रीजिनवर हरिवंश
 ॥ माताकुक्षि सरोवरै, अवतरियो राय हंस ॥ श्री० ४ ॥ जेठ पदम
 पद अरुमी, जायो श्रीजिनराज ॥ जन्ममहोन्नव सुर करै, त्रिभुवन
 हरख न माय ॥ श्री० ५ ॥ शामल वरण सोहामणो, निरूपम

रूप निधान ॥ जिनवर लंठन काढवो, वीस धनुष तनु मान ॥ श्री०
 ६ ॥ परणी नार प्रज्ञावती, जोग पुरंदर साम ॥ राजलीला सुख
 जोगवै, पूरै वंछित काम ॥ श्री० ७ ॥ तब लोगांतिक देवता, आ-
 वि जंपै जयकार ॥ प्रभु फागुण वदि बारसै, लीधो संजम नार
 ॥ श्री० ८ ॥ शुभ फागुण वदि बारसै, मनधर निरमल ध्यान ॥
 च्यार करम प्रभु चूरिया, पाम्यो केवलज्ञान ॥ श्री० ९ ॥ (ढाल १ ॥
 सुख कारण जवियण ॥ ए देशी ॥ ततखिण तिहां मिलिया च-
 लिया सुरनर कोमि, प्रभुना पदपंकज प्रणमै बेकर जोमि ॥ बेकर
 जोमि मठर ठोमी समवसरण विरतंत, माणक हेम रूपमय त्रि-
 गमो ठत्रत्रय ऊलकंत ॥ सिंहासण बैठा तिहां स्वामी चोविह धर्म
 प्रकासै, वारै परखदा बैठी आगलि सुणै मन नडहासै ॥ १० ॥ त-
 पने अधिकारै पखवासो तप सार, पनवाथी कीजै पनरह तिथी
 ऊदार ॥ पनरह तिथी कीजै गुरु मुख लीजै जिस दिन हुवै उप-
 शम, श्रीमुनिसुव्रत नाम जपोजै वांदी देव नड्हास ॥ तप ऊजमणै
 रजत पालणो सोवन पूतलो चंग, मोदकथाल देहरै मूंकी जिन
 वर स्नात्र सुरंग ॥ ११ ॥ तप करियै निरंतर अदुरव दर्शनी जेम, म-
 नवंछित केरा सुख पामीजै तेम ॥ पुत्र मित्र परिवार परं अति व-
 छन्न जरतार, जस कीरत सोजाग वनाई महियल महिमा जाण
 ॥ परजव मुगति फल लहियै, ए तपने प्रमाण ॥ १२ ॥ थिर थापी
 चतुर्विध संघतणो अधिकार, जरवठ प्रमुख नगरादिक करिया वि-
 हार ॥ विहार करी प्रतिबोधे खंदक पंच सयां परिवार, कार्तिक-
 सेठ जितशत्रु तुरंगम सुव्रत नाम कुमार ॥ तीस सदस वरष आ-
 ऊखो पालै जग दया सार, श्रीसम्मेतंशिखर परमेसर पुहता मुग-
 ति मजार ॥ १३ ॥ इम पंच कल्याणक शुणिया त्रिभुवन ताय,
 मुनिसुव्रतस्वामी वीसमो जिनवर राय ॥ वीसमो जिनवर राय

जगतगुरु जयजंजण जगवंत, निराकार निरंजन निरूपम अजरा-
मर अरिहंत ॥ श्रीजिनचंद विनय शिरोमणि सकलचंद गणि सीत,
वाचक समयसुंदर इम पन्नणै पूरो मनह जगीस ॥ ॥१४॥ इति ॥

॥ अथ पखवासा तप विधि लिख्यते ॥

प्रथम शुज्जदिन गुरुके पास तप ग्रहण करकै सुद (१) प-
निवासैं पूर्णमासी तक इकसार १५ उपवास करै. जो शक्ति नहीं
होयतो प्रथम सुदि पक्षकी पनिवा १, दूसरे सुदि पक्षकी दूज, एसैं
अनुक्रमसैं पनरे सुद पक्षमें तपस्या पूर्ण करै. श्रीमुनिसुव्रतस्वामी
के पांच कट्याणक ज्ञावगर्भित स्तवन पढ़ै. गुरुका संयोग होय
तो गुरुके पास सुणै. (श्रीमुनिसुव्रतस्वामी सर्वज्ञायनमः) इस
पदका १००० दो हज़ार गुणना करै. और तप ग्रहण करणेकी
तथा देववंदनादिककी विधि पहले लिखी हे उस मुजब विवेकी
जोब सब तपस्याकी विधि करै. विधि संयुक्त करणसैं उत्तम फल
मिलता है ॥ इति पखवासाविधि ॥

॥ अथ दश पञ्चकाण स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सिद्धारथ नंदन नमूं, महावीर जगवंत ॥ त्रिगर्भ
वैद्य जिनवरू, परषद वार मिलंत ॥ १ ॥ गणधर गौतम तिण
समे, पूवै श्रीजिनराय ॥ दस पञ्चस्काण किंसा कह्या, कीयां कवण
फल आय ॥ २ ॥ (ढाल १ ॥ सीमंधर करज्यो मया ॥ ए देशी) ॥
श्रीजिनवर इम उपदिसै, सांजल गोयम ताम ॥ दस पञ्चस्काण कियां
अकां, लहिये अविचल ठाम ॥ श्री० ३ ॥ नवकारसी बीजी पोरसी
१, साढपोरसी पुरिमद्ध ४ ॥ एकासण नीवीकही ६, एकलगाण देवट्ठि ॥
श्री० ४ ॥ दात ७ आंबिल ए उपवास १० ही, एहिज दस पञ्च
स्काण ॥ एहना फल सुण गोयमा, जूजूवा करुं वखाण ॥ श्री०
५ ॥ रतनप्रज्ञा १ सर्करप्रज्ञा २, वालुक तीजी जाण ॥ पंकप्रज्ञा

४ तिम धूमप्रज्ञा ५, तमप्रज्ञा ६ तमतमं ७ ठाम ॥ श्री० ६ ॥
 नरक सात कही ए सही, करम कठिन कर जोर ॥ जीव करम
 वस ते सही, ऊपजै तिणहीज ठोर ॥ श्री० ७ ॥ ठेदन जेदन
 तामना, जूख तृषा वलि त्रास, रोमर पीना करै, परमाहम्मो
 तास ॥ श्री० ८ ॥ रात दिवस क्षेत्रदेवता, तिल जर नहीं जिहां
 सुख ॥ किया करम जे जोगवै, पामे जीव बहु दुःख ॥ श्री० ९ ॥
 इक दिनरी नवकारसी, जे करै ज्ञाव विशुद्ध ॥ सो वरस नरकनो
 आनखो, दूर करै ज्ञानबुद्धि ॥ श्री० १० ॥ नित्य करै नवकारसी,
 ते नर नरक न जाय ॥ न रहै पाप वलि पावला, निरमल होवे
 जी काय ॥ श्री० ११ ॥ (ढाल १ ॥ श्रीविमलाचल सिर तिलो
 ॥ ए चाल) ॥ सुण गोतम पोरसी कियां, महा मोटो फल होय ॥
 ज्ञावसुं जे पोरसी करै, डुरगति ठेदै सोय ॥ सु० १२ ॥ नरक मांहि
 जै नारकी, वरसैं एक हज्जार ॥ करम खपावै नरकमें, करता बहु-
 त पुकार ॥ सु० १३ ॥ एक दिवसनी पोरसी, जीव करै इकतार ॥
 करम हणें सहस एकना, निहचैसुं गणधार ॥ सु० १४ ॥ डुरगति
 मांहि नारकी, दस हज्जार प्रमाण ॥ नरक आयु खिण एकमें, सा-
 ठपोरसी करै हाण ॥ सु० १५ ॥ पुरिमद्ध करै नित जीव जे, नरके
 ते नवि जाय ॥ लाख वरस करमनें दहै, पुरिमद्ध करम खपाय ॥
 सु० १६ ॥ लाख वरस दस नारकी, पामें दुःख अनंत ॥ इतरा
 करम एकासणें, दूर करै मन खंत ॥ सु० १७ ॥ एक कोमि वरसां
 लगै, करम खपावै जीव ॥ नीवीय करतां ज्ञावसुं, डुरगति हणो
 सदीव ॥ सु० १८ ॥ दस कोमि जीव नरकमें, जितरो करै करम
 दूर ॥ तीतरो एकलठाणही, करै सही चकचूर ॥ सु० १९ ॥ दात
 करंता प्राणियो, सो कोमि परिमाण ॥ इतरा वरस डुरगति तणा,
 ठेदै चतुरसुजाण ॥ सु० २० ॥ आंबिलनो फल बहु कह्यो, कोमि

एक हजार ॥ करम खपावै इणपरै, ज्ञाव आंखिल अधिकार ॥ सु०
 २१ ॥ कोमि सहस दस वरसही, सहे दुःख नरक मजार ॥ उपवास
 करै इक ज्ञावसुं, तो पामे मुगति मजार ॥ सु० २२ ॥ (हाल ३॥
 केकेइ वर लाधो ॥ ए देशी) ॥ लाख कोमि वरसां लगे, नरके क-
 रता रीव रे ॥ गोतम गणधारी ॥ ठठम तप करतां थकां, सही
 नरक निवारे जीव रे ॥ गो० २३ ॥ नरके वरस कोमि लाखही,
 जीव लहै तिहां डुक्क रे ॥ ते डुख अठम तपहुंती, दूर करी पामे
 सुक्क रे ॥ गो० २४ ॥ ठेदन जेदन नारकी, कोमाकोमि वरसोइ
 रे ॥ कुगति कुमतिनें परिहरो, दसमें एतो फल होइ रे ॥ गो०
 २५ ॥ नित फासू जल पीवतां, कोमाकोमि वरसनो पाप रे ॥ दूर
 करै खिण एकमें, निश्चै होय निःपाप रे ॥ गो० २६ ॥ वलिय वि-
 शेषे फल कह्यो, पांचम करै उपवास रे ॥ पामे ग्यान पांचे ज्ञला,
 करता त्रिजुवन परकास रे ॥ गो० २७ ॥ चवदस तप विधिसुं
 करै, चवदह पूरव होय धार रे ॥ इम अनेक फल तपतणा, कहतां
 वलि नावै पार रे ॥ गो० २८ ॥ मन वचने काया करी, तप करै
 जे नर नार रे ॥ इग्यारे वरस एकादशी, करतां लहै ज्ञव पार रे ॥
 गो० २९ ॥ आठम तप आराधतां, जीव न फिरै संसार रे ॥ अनं
 त ज्ञवाना पापथी, ठूटै जीव निरधार रे ॥ गो० ३० ॥ तपहुंती
 पापी तरया, निसतरियो अरजुनमाल रे ॥ तपहुंती दिन एकमें,
 शिव पाम्यो गजसुकमाल रे ॥ गो० ३१ ॥ तपना फल सूत्रे कहा,
 पञ्चस्काणतणा दस जेद रे ॥ अवर जेद पिण ठै घणा, करतां ठेदे
 जय वेद रे ॥ गो० ३२ ॥ (कलशः) ॥ पञ्चस्काण दस विध फल
 परुण्या महावीर जिणदेवए, जे करै ज्ञविअण तप अखंनित तासु
 सुर पय सेव ए ॥ संवत्त निधि गुण अश्व शशि वलि पोस सुदि
 दशमी दिने, पदमरंग वाचक शीस गणिवर रामचंड तप विधि

ज्जणे ॥ ३३ ॥ इति दस पञ्चस्काण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ दस पञ्चस्काण तप विधिः ॥

॥ यह दस पञ्चस्काणके स्तवनमें खुलासा दस पञ्चस्काणके जेद नर बेला तेला पांचम आठम इग्यारस चौदश इत्यादिक तपस्या करणेके फल जगवंत श्रीमहावीरस्वामीके वचन मुजब उत्तम पुरुषोने रचना करीहै. इस वास्ते धर्मरागी पुरुष इस स्तवनको पढ़के तपस्या करणेमें आदरवंत होता है, नर किसीके दश पञ्चस्काण तप करणेकी इच्छा होय तो पहिले दिन नवकारसी, दुसरे दिन पोरसी, इस तरै स्तवन मुजब १० पञ्चस्काण दस दिवसे सेवन करै, सदा स्तवन सुणें पढ़ै, अंतमें पूजा करावै, शक्ति माफक उद्यापन करै. इस तपस्याके प्रज्ञावसें डुरगतिबंध दूर करके अच्छी गती पावे, महा एश्वर्यवंत होय, ज्ञाग्यवंत होय ॥ इति ॥

॥ अथ वीश स्थानक स्तवन लिख्यते ॥

श्री सिद्धाचल जेठिये ॥ ए देशी ॥ वीस थानक तप सेविये, धर कर शुज्ज परिणाम लाल रे ॥ तीजै जव सेव्यो थको, बांधे तीर्थकर नाम लाल रे ॥ वी० १ ॥ तप रचना अधिकी कही, ज्ञाताअंग मज्जार लाल रे ॥ सुणजो जवि तुमे ज्ञावसुं, चित्तसें करिय जच्चार लाल रे ॥ वी० २ ॥ सुविहित गुरु पासे ग्रहै, वीस थानक तप एह लाल रे ॥ निरदूषण शुज्ज महुरते, उचरीजै ससनेह लाल रे ॥ वी० ३ ॥ अरिहंत १ सिद्ध २ प्रवचन नमूं ३, सूरि ४ थिवर ५ जव-ज्ञाय ६ लाल रे ॥ साधु ७ नाण ८ दंसण ९ अरु, विनय १० नमूं जलसाय लाल रे ॥ वी० ४ ॥ चारित्र ११ बंज १२ क्रियापदे १३, तप १४ गोयम १५ जिण १६ ईस लाल रे ॥ चारित्र १७ ज्ञातने १८ श्रुत जणी १९, नमूं तीर्थ २० पद वीश लाल रे ॥ वी० ५ ॥ वीस दिवसमें ए कही, पद गुणनो कर मेव लाल रे ॥

अथवा दिन विसा लगै, बीसे पद गुण मेव लाल रे ॥ वी० ६ ॥
 एक ढली पट मासमें, पूरी जो नवि होय लाल रे ॥ फेर
 नवी करणी पमै, पिठली निष्फल जोय लाल रे ॥ वी० ७ ॥
 ठठ अठम उपवाससुं, अथवा देखो शक्ति लाल रे ॥ पोसह कर
 आराधियै, देव वांदै निज ज्ञक्ति लाल रे ॥ वी० ८ ॥ संपू-
 रण पद सेवतां, पोसहनो नहि जोग लाल रे ॥ तोही सात पदै
 सही, पोसह करियै संजोग लाल रे ॥ वी० ९ ॥ सूरी शिवर
 पाठक पदै, साधु चारित्र मुजःण लाल रे ॥ गौतम तीर्थपदै सही,
 सात आनक मन मान लाल रे ॥ वी० १० ॥ पद२ दीठ करै स-
 दा, दोय२ जाप हजार लाल रे ॥ पन्निकमणो दोय टंकही, करियै
 पूजा सार लाल रे ॥ शक्ति मुजब तप कीजियै, एक ढली करो
 वीत्त लाल रे ॥ बीसावीसी च्यारसै, तप संख्या कही एम लाल
 रे ॥ वी० ११ ॥ जिस दिन जो पद तप करै, तिसके गुण चित
 धार लाल रे ॥ काजसगने परदक्षणा, मुख जणियै नवकारलाल
 रे ॥ वी० १२ ॥ जिस पदकी स्तवना सुणै, कीजै जिनपद ज्ञक्ति
 लाल रे ॥ पूजन शुद्ध मन साचवै, दिन२ वढती शक्ति लाल रे
 ॥ वी० १३ ॥ मृतक जनम रतुकालमें, कवि धारयो उपवास लाल
 रे ॥ सो लेखे नहिं लेखवो ॥ निकेवल तप जास लाल रे ॥ वी०
 १४ ॥ सावज्ज त्यागपणो करै, सोक न धारे चित्त लाल रे ॥ शील
 आचूषण आदरै, मुखसुं बोलै सत्य लाल रे ॥ वी० १५ ॥ जेठ
 आसाढ वैशाखमें, मिगसर फागुण मांह लाल रे ॥ ए षट् मासे
 मांहिनै, व्रत ग्रहिये वरुजाग लाल रे ॥ वी० १६ ॥ तप पूरण
 हुवां अकां, ऊजमणो निरधार लाल रे ॥ कीजै शक्ति विचारीनै,
 उठव विविध प्रकार लाल रे ॥ वी० १७ ॥ बीस२ गिणती तणा,
 पुस्तक पूरा आदि लाल रे ॥ ग्यानतणी पूजा करै, मुंकीजै हठवाद्

लाल रे ॥ वी० १९ ॥ फलवधी नगरनी श्राविका, कौधी विध चित्त
 लाय लाल रे ॥ जनम सफल करवा जणी, उहिज मोक्ष उपाय
 लाल रे ॥ वी० २० ॥ कलश ॥ इम वीर जिनवरतणी आझा धार
 चित्त मजार ए, सहु देख आगमतणी रचना रची तप विध सार
 ए ॥ वसु नंद सिद्धि चंड वरसै चैत्र मास सुहंकरू, मुनि केशरी
 शशि गढ खरतर जणी स्तवना मनहरू ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक तप करण विधि लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम शुभ महुर्त्तके दिन नंदी स्थापनापूर्वक सुवि
 हित गुरुके पास वीस स्थानकतप विधिपूर्वक उच्चरै. एक जली दो
 महीनेसे लेकर ठ महीने पूरी करै. कदास ठ महीनेमें पूरी नहीं कर
 सके तो वो जली गिणतीमें नहीं. जर फेर नइ करणी परती है.
 एक जलीके वीस पद हे (तहां) कोइ वीस दिनमें वीस पद
 जुदा गिणते हे, कोईक वीसों दिनमें एकही पद गिणते हें, दूसरै
 वीशों दिनमें दूसरा पद, एसे वीशों पदकी वीश जली करै. तिहां
 पदाराधनेके दिन प्रबल शक्तिवंत अठम तप करिके आराधै. वीश
 अठमसे एक जली होय (एसे) वीस जली ४०० से अठमसे आ
 राधै. और उससे कम शक्ति होय तो ठहले आराधै. उससे कम
 शक्ति होय तो चोविहार उपवास करिके आराधै. उससे हीन शक्ति
 होय तो तिबिहार उपवास करिके आराधै, उससे हीनशक्ति आंत्रिल
 (न्तथा) तिबिहार एकाशना करिके आराधै. उसमें जो शक्तिवान
 होय सो तो सर्व तपस्याके दिन अठ पहरी पोसह करै. हीनशक्ति
 दिनपोसह करै. वीसों पद पोसहसेती आराधै. जो पोसह शक्ति
 सर्व पदमें नहीं होय तो आचार्यपदमें १, उपाध्यायपदमें २, शिवर
 पदमें ३, साधूपदमें ४, चारित्रपदमें ५, गौतमपदमें ६, जर तीर्थपद
 में ७, यह सात आनक पद तो पोसह करेकी आराधै, जो इतनी

ज्नी शक्ति नहिं होय तो उस दिन देसावगासी करै, सावद्य व्यापार
 वोमै, सो शक्ति ज्नी नही होय तो यथाशक्ति तप करै आराधै,
 अपणी हीणता ज्ञावे तथा मृतक जन्म के सूतकमें उपवासादि तप
 नही गिणै जावै, स्त्रियां ज्नी ऋतुसमयका तप नही गिणै, तथा तपके
 दिन पोसह सहित करै तो व्होत श्रेयकारी है, वो अगर नहीं हो
 सके तो तपके दिन उज्जय टंक पम्क्कमण करै, तीन टंक देववंदन
 करै, दो हज्जार एक पदका जाप करै, ब्रह्मचर्य पालै, जूमि शयन
 करै, तपके दिन अति सावद्य व्यापार नही करै, असत्य नहि बोले,
 सब दिन तप पदके गुण कीर्तनमें रहै, तथा तपके दिन पोसह करे
 तो पारणके दिन जिनज्जक्ति करै पारणा करै, जो तपके दिन पो-
 सह नही होय तो उसी दिन श्रीजिनज्जक्ति करै करावै, ज्ञावना
 ज्ञावै तथा तपके दिन तप पदके गुण जेद प्रमाण संग्यासैं काज-
 सग्न करै, इतनाही तज्जुण स्मरणपूर्वक खमासमण देइ वंदणा करै,
 उस पदका गुण याद करै उदात्त स्वरसैं स्तवना करै, हर्षित रहै॥

॥ अथ वीस स्थानक गुणना और काजसग्नका प्रमाण लिखते है॥

(एमो अरिहंताण) १००० गुणना लोगस्स १२ का काज-
 सग्न ॥ १ ॥ (एमो सिद्धाणं) २००० गुणना लोगस्स १५ का का-
 जसग्न ॥ २ ॥ (एमो पवयणस्स) ३००० गुणना लोगस्स ७
 का काजसग्न ॥ ३ ॥ (एमो आयरिआणं) दो हज्जार गुणना
 लोगस्स ३६ का काजसग्न (एमो श्रेयाणं) दो हज्जार गुणना
 लोगस्स १५ का काजसग्न ॥ ५ ॥ (एमो उवज्जायाणं) दो ह-
 ज्जार गुणना लोगस्स १५ का काजसग्न ॥ ६ ॥ (एमो लोए सब
 सादूणं) दो हज्जार गुणना लोगस्स २७ का काजसग्न ॥ ७ ॥
 (एमो नाणस्स) दो हज्जार गुणना लोगस्स ५ का काजसग्न
 ॥ ८ ॥ (एमो दंसणस्स) दो हज्जार गुणना लोगस्स १७ का

कान्तसग ॥ ए ॥ (एमो विणयसंपत्ताणं) दो हज़ार गुणना
 लोगस्स १० का कान्तसग ॥ १० ॥ (एमो चरित्तस्स) दो ह-
 ज़ार गुणना लोगस्स ६ का कान्तसग ॥ ११ ॥ (एमो बंजवय
 धारीणं) दो हज़ार गुणना लोगस्स ए का कान्तसग ॥ १२ ॥
 (एमो किरिआणं) दो हज़ार गुणना लोगस्स २५ का कान्तसग
 ॥ १३ ॥ (एमो तवस्तीणं) दो हज़ार गुणना लोगस्स १५ का
 कान्तसग ॥ १४ ॥ (एमो गोयमस्स) दो हज़ार गुणना लोगस्स
 १७ का कान्तसग ॥ १५ ॥ (एमो जिणाणं) दो हज़ार गुणना
 लोगस्स १० का कान्तसग ॥ १६ ॥ (एमो चरणस्स) दो हज़ार
 गुणना लोगस्स १२ का कान्तसग ॥ १७ ॥ (एमो नाणस्स) दो
 हज़ार गुणना लोगस्स ५ का कान्तसग ॥ १८ ॥ (एमो सुअना-
 णस्स) दो हज़ार गुणना लोगस्स १० का कान्तसग ॥ १९ ॥
 (एमो तिष्ठस्स) दो हज़ार गुणना लोगस्स ५ का कान्तसग करै
 ॥ २० ॥ इति वीस स्थानक गुणना संपूर्णम् ॥

इत्यादि विधि संयुक्त वीशों जुलीमें सर्व पदके उच्चव महो-
 च्वव प्रज्ञावना ऊजमणापूर्वक करै. जिनशासनके उन्नतीके वास्ते
 इतनी शक्ति नहीं होय तो एक जुली तो विशेष उच्चवादि संयुक्त
 करणी चाहियै. इहां विधिप्रपाक ग्रंथसँ वीश स्थानक सेवनविधि
 संक्षेप मात्रसँ लिखी हे. जो गुरुका संयोग होय तब तो विस्तारसँ
 वीशों पदकी जुदीर विधि गुरुके मुखसँ समझके करै. जो गुरुका
 संयोग नहि होय तो विवेक संयुक्त इस विधिकों देखकै वीस स्था-
 नक तपकों सेवन करै, वीस स्थानकका स्तवन सुणें वा पढ़ै, वीस
 स्थानकजीकी पूजा करावै, अर्पणी शक्ति माफक वीस२ ज्ञानोप-
 करण करावै, देवपदका देवखाते लगावै, ज्ञानपदका ज्ञानखाते
 लगावै, गुरुपदका गुरुखाते लगावै, सब तीर्थोंकी यात्रा करै,

साहमी वल्ल कैंर, इत्यादिक इन्हें तुर जावै विधि संयुक्त शुद्ध
जावसैं जो ज्ञव्यजीव यह बीस स्थानक पदकों सेवन करेंगें सो
जिन नाम कर्मकों उपार्जन करकैं तीसरै जव अनंत सुखकों प्राप्त
होंगें, इत्यलंविस्तरेण ॥ इति बीस स्थानक तप न्तो विधि सं० ॥

॥ अथ बीस स्थानक मंडल पूजन लिख्यते ॥

एमोएंतविन्नाणसदंसणाणं, सहाणंदियासेसजंतूगणाणं ॥
जवत्तोजविन्नायणेवारणाणं, एमोवोहियाणं वराणं जिणाणं ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हज्योनमः ॥ १ ॥ इति प्रथमपदे जिनेंद्रपूजा ॥ अथ
सिद्धपूजा ॥ लोगगजागोपरिसंठियाणं, बुद्धाणसिद्धाणमणि-
दियाणं ॥ निस्सेसकम्मरक्खकारणाणं, एमोसयामंगलधारणाणं ॥
॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेज्योनमः ॥ २ ॥ अथ तृतीय पद ॥
अणंतसंसुद्धगुणाकरस्स, दुक्कंधयारुग्गदिवाकरस्स ॥ अणंतजीवा-
णदयागिहस्स, एमो२ संघचउविहस्स ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प्रवचनायनमः
॥ ३ ॥ अथ चतुर्थ पद ॥ कुवादिकेलीतरूणिंधुराणं, सुरीसरणां-
सुणिबंधुराणं ॥ धीरत्तसंतज्जियमंदराणं, एमोसयामंगलमंदिराणं ॥
४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं आचार्येभ्योनमः ॥ ४ ॥ अथ पंचम पद ॥ सम्म-
त्तसंयमपतितजविजन अतिहथिरकरताज्जत्ता ॥ अवगुणअडुषित
गुणविज्जुषित चंडकिरणासमोज्जत्ता ॥ अष्टाधिकादससहससीलांगरथ
रुचिरधाराधरा, जवसिंधुतारणाप्रवरकारणनमोशिवरमुनीवरा ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं स्थविरायनमः ॥ अथ षष्ठ पद ॥ सवोहिवीजंकुरुकार-
णाणं, एमोश्वायंगावारणाणं ॥ कुवोहिदंतीहरिणोसराणं ॥ विग्घो-
षसंतावपयोहराणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेभ्यो नमः ॥ ६ ॥ अथ
सातमा पद ॥ संतज्जियसेसपरीसहाणं, निस्सेसजीवाणदयागिहा-
णं ॥ सन्नाण पज्जायतरूवणाणं, एमो२ होउतवोधणाणं ॥ ७ ॥ ॐ
ह्रीं श्रीं सम्यग्साधुभ्योनमः ॥ ७ ॥ अथ अष्टम पद ॥ वदवपज्जा

यगुणाकरस्स, सयापयासीकरणोधुरस्स ॥ मिञ्चत्तअन्नाणतमोहरस्स,
 णमो२ नाणदिवायरस्स ॥ ८ ॥ नुँ ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥
 ८ ॥ अथ नवम पद ॥ अणंतविन्नाणसुकारणस्स, अणंतसंसारवि
 दारणस्स ॥ अणंतकम्मावलिधंसणस्स, णमो२निम्मलदंसणस्स ॥
 ९ ॥ नुँ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ ९ ॥ अथ दशम विनय-
 पद ॥ आणंदियासेसजगज्जणस्स, कुंदिंडुपादामलताचणस्स ॥ सुध-
 म्मजुत्तस्सदयासयस्स, णमो२श्रीविणयालयस्स ॥ १० ॥ नुँ ह्रीं
 श्री सम्यग्विनयैनमः ॥ १० ॥ अथ इग्यारम चारित्र पद ॥ क-
 म्मोघकंतरदवानलस्स, महोदयानंदलयाजलस्स ॥ विन्नाणपंकेरुह
 कारणस्स, णमोचरित्तस्सगुणापणस्स ॥ ११ ॥ नुँ ह्रीं श्री सम्यग्चा-
 रित्राय नमः ॥ ११ ॥ अथ द्वादशम चारित्र पद ॥ सग्गापवगाग्ग-
 सुहप्पयस्स, सुनिम्मलाणंतगुणालयस्स ॥ सब्बयाज्जूषणज्जूषणस्स,
 नमोहिशीलस्सअदूसणस्स ॥ नुँ ह्रीं श्री सम्यग्ब्रह्मचैयनमः ॥ १२ ॥
 अथ तेरमें क्रिया पद ॥ विशुद्धसद्वाणविज्जूषणस्स, सुलद्धिसंपत्तिसु
 पोषणस्स ॥ णमोसदाणंतगुणप्पदस्स, नमो२सुद्धक्रियापदस्स ॥
 १३ ॥ नुँ ह्रीं श्री सम्यग्क्रियायै नमः ॥ अथ चवदमा तप पद ॥
 लद्धीसरोजावलितावणस्स, सुखसंलग्गसुपावणस्स ॥ अमंगलानो
 कुहडुद्धवस्स, नमो२निम्मलसत्तवस्स ॥ १४ ॥ नुँ ह्रीं श्री सम्यग्त्व-
 से नमः ॥ १४ ॥ अथ पनरमा गौत्तम पद ॥ अणंतविन्नाणविज्जाकर
 स्स, डुवालसंगीकमलाकरस्स ॥ सुलद्धासाजयगोयमस्स, नमो२ग
 णाधीस्सरगोयमस्स ॥ १५ ॥ नुँ ह्रीं श्री गौतमायनमः ॥ अथ
 सोलम पदे जिनपूजा ॥ मणुस्ससत्तासयासयाणं, सुरा२धी सर-
 वंदियाणं ॥ रवींडुबिंबामलसग्गुणाणं, दयाधणाणंहिनमोजिणाणं
 ॥ १६ ॥ नुँ ह्रीं श्री जिनेज्योनमः ॥ अथ सतरमें चारित्तधारीपद
 ॥ सच्चिंद्रियापारविकारदारी, अकारणासेसजणावेगारी ॥ महान्न-

वातंकरणापहारी, जयोसदाशुद्धचरित्तधारी ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्री
 सम्यग्चारित्रधारीभ्यो नमः ॥ १७ ॥ अथ अठारहें ज्ञानपदपूजा
 ॥ शुद्धक्रियामंरुलमंरुणस्त, संदेहसंदोहविवंरुणस्त ॥ मुत्तीउपादा
 नसुकारणस्त, नमोहिनाणस्तजसोधणस्त ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्री
 सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥ १८ ॥ अथ उगलीसमें श्रुतपद ॥ अन्नाणव
 ह्नीवनवारणस्त, सुबोहिबीजांकुरकारणस्त ॥ अणंतसंसुद्धगुणाल-
 यस्त, नमोदयामंदिरतठयस्त ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग्श्रुतयै
 नमः ॥ १९ ॥ अथ बीसमें तीर्थपद ॥ तुज्यंनमःसकलविश्ववशं
 कराय, तुज्यंनमःस्त्रिजगतीजनशंकराय ॥ तुज्यंनमःजुवनमंरुल
 मंरुनाय, तुज्यंनमोस्तुजिनपंकविवंरुनाय ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्री स
 म्यग्तीर्थपदेभ्योनमः ॥ २० ॥ ध्वजासमेत अष्ट इव्य चढावै (पीठै)
 ६४ इंद्रपूजा अखरोट चढावै ॥ ॐसौधमेंझायनमः १ ॥ ॐ इशाणें
 झायनमः २ ॥ ॐसनत्कुमारेंझायनमः ३ ॥ ॐमाहेंझायनमः ४ ॥
 ॐब्रह्मेंझायनमः ५ ॥ ॐलांतकेंझायनमः ६ ॥ ॐशुक्रेंझायनमः ७
 ॥ ॐसहस्रारेंझायनमः ८ ॥ ॐप्राणतेंझायनमः ९ ॥ ॐअ-
 च्युतेंझायनमः १० ॥ ॐचंद्रेंद्रायनमः ११ ॥ ॐसूर्येंद्रायनमः १२ ॥
 ॐचमरेंद्रायनमः १३ ॥ ॐवलींद्रायनमः १४ ॥ ॐधरेंद्राय
 नमः १५ ॥ ॐभूतानेंद्रायनमः १६ ॥ ॐवेणुदेवेंद्रायनमः १७ ॥
 ॐवेणुदालींद्रायनमः १८ ॥ ॐहरिकान्तेंद्रायनमः १९ ॥ ॐहरिस्त
 हेंद्रायनमः २० ॥ ॐअग्निशिखेंद्रायनमः २१ ॥ ॐअग्निमाण
 वेंद्रायनमः २२ ॥ ॐपूर्णेंद्रायनमः २३ ॥ ॐविशिष्टेंद्रायनमः
 २४ ॥ ॐजलकान्तेंद्रायनमः २५ ॥ ॐजलप्रज्ञेंद्रायनमः २६
 ॥ ॐअमितगतींद्रायनमः २७ ॥ ॐमितवाहनेंद्रायनमः २८ ॥
 ॐवेलवेंद्रायनमः २९ ॥ ॐप्रज्ञजनेंद्रायनमः ३० ॥ ॐघोषें
 द्रायनमः ३१ ॥ ॐमहाघोषेंद्रायनमः ३२ ॥ ॐकालेंद्रायनमः

॥ ३३ ॥ नैमहाकालेन्द्रायनमः ॥ ३४ ॥ नैसरूपेन्द्रायनमः ॥ ३५ ॥
नैप्रतिरूपेन्द्रायनमः ॥ ३६ ॥ नैपूर्णचन्द्रेन्द्रायनमः ३७ ॥ नैमाणचन्द्रेन्द्राय-
नमः ॥ ३८ ॥ नैज्योमिन्द्रायनमः ॥ ३९ ॥ नैमहाज्योमिन्द्रायनमः ॥
४० ॥ नैकिन्नरेन्द्रायनमः ॥ ४१ ॥ नैकिंपुरुषेन्द्रायनमः ॥ ४२ ॥ नैसत्पुरुषे-
न्द्रायनमः ॥ ४३ ॥ नैमहापुरुषेन्द्रायनमः ॥ ४४ ॥ नैअमितकार्येन्द्रायनमः ॥
४५ ॥ नैमहाकार्येन्द्रायनमः ॥ ४६ ॥ नैगीतरतीन्द्रायनमः ॥ ४७ ॥ नैगीत-
यरेन्द्रायनमः ॥ ४८ ॥ नैसन्निहितेन्द्रायनमः ॥ ४९ ॥ नैसामानि-
केन्द्रायनमः ॥ ५० ॥ नैधात्रेन्द्रायनमः ॥ ५१ ॥ नैविधात्रेन्द्रायनमः
॥ ५२ ॥ नैरुपिन्द्रायनमः ॥ ५३ ॥ नैरुषिपालतेन्द्रायनमः ॥ ५४ ॥
नैइश्वरेन्द्रायनमः ॥ ५५ ॥ नैमहेश्वरेन्द्रायनमः ॥ ५६ ॥ नैवत्सेन्द्रा-
यनमः ॥ ५७ ॥ नैदिसालेन्द्रायनमः ॥ ५८ ॥ नैहास्येन्द्रायनमः ॥
५९ ॥ नैश्रेयसेन्द्रायनमः ॥ ६० ॥ नैहास्यस्तेन्द्रायनमः ॥ ६१ ॥
नैपदगेन्द्रायनमः ॥ ६२ ॥ नैपदगपतेन्द्रायनमः ॥ ६३ ॥ नैमहाश्रे-
येन्द्रायनमः ॥ ६४ ॥ इतिचोसठइन्द्रनामपूजा ॥ अथ १६ विद्या-
देवीपदे १६ सुपारी चढावै ॥ ॥ नैरोहिण्यैनमः ॥ १ ॥ नै-
प्रज्ञसैनमः ॥ २ ॥ नैवज्रशृंषलायैनमः ॥ ३ ॥ नैवज्जाकुर्शयैनमः
॥ ४ ॥ नैचक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥ नैपुरुषदत्रायैनमः ॥ ६ ॥ नैका-
ल्यैनमः ॥ ७ ॥ नैमहाकाल्यैनमः ॥ ८ ॥ नैगौर्यैनमः ॥ ९ ॥ नै
गंधार्यैनमः ॥ १० ॥ नैमहाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ नैमानव्यै-
नमः ॥ १२ ॥ नैवैरोढ्यायनमः ॥ १३ ॥ नैअवुत्तायैनमः ॥ १४
॥ नैमानस्यैनमः ॥ १५ ॥ नैमहामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ इति षो-
रुश विद्यादेवी नाम पूजाः ॥ ॥ अथ २४ यक्षपदे सो-
पारी चढावै ॥ ॥ नैब्रह्मशांतियैनमः ॥ २४ ॥ नैपा-
श्वयक्तायनमः ॥ २३ ॥ नैगोमेधायनमः ॥ २२ ॥ नैनृकुट्यैनमः
॥ २१ ॥ नैवरुणायनमः ॥ २० ॥ नैकुबेरायनमः ॥ १९ ॥ नैय-

कैशायनमः ॥ १८ ॥ ॐगंधर्वायनमः ॥ १७ ॥ ॐगुरुमायनमः ॥
 १६ ॥ ॐकिन्नरायनमः ॥ १५ ॥ ॐपातालायनमः ॥ १४ ॥ ॐप-
 ण्मुखायनमः ॥ १३ ॥ ॐकुमारायनमः ॥ १२ ॥ ॐयक्षराजाय-
 नमः ॥ ११ ॥ ॐब्रह्मण्येनमः ॥ १० ॥ ॐअजितायनमः ॥ ए ॥
 ॐविजयायनमः ॥ ८ ॥ ॐनातंगायनमः ॥ ७ ॥ ॐकुसमायनमः ॥
 ६ ॥ ॐतुंबुर्येनमः ॥ ५ ॥ ॐयक्षनायकायनमः ॥ ४ ॥ ॐत्रिमुखा-
 यनमः ॥ ३ ॥ ॐमहायक्षायनमः ॥ २ ॥ ॐगोमुखायनमः ॥ १ ॥
 इति २४ यक्ष नाम पूजा ॥ ॥ अथ २४ यक्षणी नाम लि० ॥
 ॐचक्रेश्वर्येनमः ॥ १ ॥ ॐअजितबलायैनमः ॥ २ ॥ ॐदुरितार्येनमः
 ॥ ३ ॥ ॐकालिकायैनमः ॥ ४ ॥ ॐमहाकाट्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐश्या-
 मायैनमः ॥ ६ ॥ ॐशांतयैनमः ॥ ७ ॥ ॐभूकुट्यैनमः ॥ ८ ॥
 ॐसुतारकार्येनमः ॥ ए ॥ ॐअशोकायनमः ॥ १० ॥ ॐमानव्येनमः
 ॥ ११ ॥ ॐचंद्रायनमः ॥ १२ ॥ ॐदिदितायैनमः ॥ १३ ॥ ॐअंकु-
 शायैनमः ॥ १४ ॥ ॐकंदपार्येनमः ॥ १५ ॥ ॐनिर्वाण्येनमः ॥
 १६ ॥ ॐबलायैनमः ॥ १७ ॥ ॐधारिण्येनमः ॥ १८ ॥ ॐधरणप्रियायैनमः
 ॥ १९ ॥ ॐनरदत्तायैनमः ॥ २० ॥ ॐगंधार्येनमः ॥ २१ ॥ ॐअं-
 विकायैनमः ॥ २२ ॥ ॐपदमावत्यैनमः ॥ २३ ॥ ॐसिंहायकायै-
 नमः ॥ २४ ॥ इति ॥ अथ नव निधान नाम ॥ ॐनैसर्पका-
 यनमः १ ॥ ॐपांडुकायनमः २ ॥ ॐपिंगलायनमः ३ ॥ ॐसर्वरत्नायनमः
 ४ ॥ ॐमहापद्मायनमः ५ ॥ ॐकालायनमः ६ ॥ ॐमहाकालायनमः
 ७ ॥ ॐमाणवायनमः ८ ॥ ॐशंखायनमः ९ ॥ इति नव
 निधान पदे ए कलश चढावै ॥ अथ दश दिग्पालादि नाम ॥
 ॐविजयस्वामिनेनमः ॥ १ ॥ ॐक्षेत्रपालायनमः ॥ २ ॥ ॐचक्रेश्व-
 र्येनमः ॥ ३ ॥ ॐधरणेंद्रायनमः ॥ ४ ॥ ॐपद्मावत्यैनमः ॥ ५ ॥
 ॐइंद्रायनमः ॥ ६ ॥ ॐअस्येनमः ॥ ७ ॥ ॐयमायनमः ॥ ८ ॥

नैऋतायनमः ॥ ४ ॥ नैऋतायनमः ॥ ५ ॥ नैऋतायनमः ॥ ६ ॥
 नैऋतायनमः ॥ ७ ॥ नैऋतायनमः ॥ ८ ॥ नैऋतायनमः ॥ ९ ॥
 नैऋतायनमः ॥ १० ॥ इति दशदिग्पालः ॥ नैऋतायनमः ॥ १ ॥
 नैऋतायनमः ॥ २ ॥ नैऋतायनमः ॥ ३ ॥ नैऋतायनमः ॥ ४ ॥
 नैऋतायनमः ॥ ५ ॥ नैऋतायनमः ॥ ६ ॥ नैऋतायनमः
 ॥ ७ ॥ नैऋतायनमः ॥ ८ ॥ नैऋतायनमः ॥ ९ ॥ इति नवग्रह
 नाम ॥ इहां वीस स्थानक मंमल पूजनकी विधि विशेष लिखी
 है । सो नाममात्रस्थापन पूजनकी हे, इस उपरांत मंमल प्रतिष्ठा
 बलबाकुलादिककी संपूर्ण विधि नवपद मंमल पूजामें लिखआए
 हे उस मुजबही करणी । फेर विशेष विधि कराणी होय तो वि-
 द्वाजन गुरुकों पूढे करणी ॥ इति वीसस्थानक मंमल पूजा वि० सं॥

॥ अथ रोहणीतप स्तवन लिख्यते ॥

॥ शाश्वत देवत सामणी ए मुज सानिध कीजै, जुलो
 अक्षर जगति जणी समझाई दीजै ॥ मोटो तप रोहण तणी ए
 जिएरा गुण गांठ, जिम सुख सौहग संपदा ए वंछित फल पांठ ॥
 १ ॥ दक्षिण जरते अंगदेस ठे चंपानयरी, मधवा राजा राज्य करै
 तिण जीता वयरो ॥ पाटतणी राणी रूवनी ए लखमी इण नामै,
 आठ पूत्र जाया जिएं ए मनमें सुख पामे ॥ २ ॥ रोहिणी नामे
 कन्यका ए सबकुं सुखकारी, आठों पूत्रों ऊपरां ए तिण लागै प्यारी
 ॥ वाधै चंडतणी कला ए जिम पख ऊजवालै, तिम ते कुमरी धाय
 माय पांचै प्रतिपालै ॥ ३ ॥ कुमरी रूपे रूवनी ए घर अंगण वैठी,
 दीठी राजा खेलती ए तिण चिंता पैठी ॥ तीन जुवन विच एहवी-
 ए नही दूजी नारी, रंजा पडमा गवर गंग इण आगल हारी ॥ ४ ॥
 ॥ पुरुष न दीषै कोइ इसो जिएने परखानं, आंख्या आगल साल
 वधै तिण चखन न पांठ ॥ देशना राजवी ए ततखिण तेभाया,

सबल सजाई साथ करी नरपति पिण आया ॥ ५ ॥ वीतशोक
 राजातणो ए वै कुमर सोजांगी, कन्याकैरी आंखनी ए तिणसेती
 लागी ॥ ऊजा देखै सकल लोक चढिया केइ पाला; चित्रसेनरे कंठ
 ठवी कुमरी वरमाला ॥ ६ ॥ देव अनै देवांगना ए जपै जैजैकार,
 रक्षियायत थयो देखने ए सारो संसार ॥ कर जोमी कहै लोक व
 खत कन्यारो जामो, वीतशोकनो कुमर थयो सिर ऊपर
 लामो ॥ ७ ॥ इम विवाह थयो जलो ए दीया दान अपार ॥
 घर आया परणी करी ए हरखयो परिवार ॥ वीतशोक निज पूत्र
 जणी अपणो पाट दीधो, आपण संजम आदरी ए जगमें जस
 लीधो ॥ ८ ॥ (ढाल-प्रजु प्रणमुं रे पास जिणोसर थंजणो ॥ ए
 देशी) ॥ तिण नगरी रे चित्रसेन राजा थयो, सुख मांही रे
 केतलो काल बही गयो ॥ इण अवसर रे आठ पूत्र हुवा जला,
 चढते पख रे चंद्र जिस्ती चढती कला ॥ (उछालो) चढती कला
 हिव राय वैठो पास वैठी रोहणी, सातमी जूमी कंतसेती करै क्री
 मा अतिघणी ॥ आठमो बालक गोद ऊपर रंगसूं राणी लियो,
 पूत्रने प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥ ९ ॥ (चाल)
 इक कामण रे गोख चढी छे पनी, शिर पीटे रे दीन स्वरे रोवे
 खनी ॥ बूढापण रे मन गमतो बालक सूओ, हुं एकज रे तिण
 अधिकेरो दुख हुं ॥ (उछालो) दुख हुवो देखी रोहिणी हिव
 कहै इम प्रीतम जणी, ए नार नाचै अनै कूदै कहो किम मोटा
 धणी ॥ एहवो नाटक आज तांइ में कदे देखयो नही, मुऊने त-
 मासो अने हासो देखतां आवै सही ॥ १० ॥ (चाल) इण वचनै
 रे रीसाणो राजा कहै, तूं पापण रे परतणी पीमा नवि लहै ॥ ए
 दुखणी रे पूत्र मुअे तरुपरु करै, जब वीतेरे वेदना जाणीजै-तरै ॥
 (उछालो) जाणै तरै तूं बात दुखनी-गस्वगहली कामनी, इम

कड़ी राजा हाथ जालियो तेहना बालकजणी ॥ सातमा जूयथी
 तलै नाख्यो तिसै हाहारव थयो, रोहणी हसती कहै प्रीतम पूत्र
 नीचै किम गयो ॥ ११ ॥ (चाल) हिव राजा रे पूत्रतणै शोकै
 करी, थयो मुरठित रे रोवै अति आंख्या जरी ॥ पमतो सुत रे
 सासणदेवत जालियो, कंचनमयरे सिंहासण वैसारियो ॥ (उल्लाखो)
 वैसारियो कर जोम आगै करै नाटक देवता, गोदे खिलावै केइ
 हसावै पायपंकज सेवता ॥ ऊपनो जूपतने अचंजो देख ए कारण
 किसो, जो कोइ ग्यानी गुरु पधारै पूठियै सांसो इसो ॥ १३ ॥
 (चाल) चिंतवतां रे चारतिया आया जिसै, राजा पिण रे पुहतो
 एने तिसै ॥ सुण देशना रे पूठे प्रश्न सोहामणो, कहो स्वामी
 धूरवज्रव बालकतणो ॥ (उल्लाखो) बालकतणो जव जूप पूठै
 कहै इण पर केवली, रोहणी राणीनो जवांतर अने राजानो वली
 ॥ श्रीगुरु पासे पाठलै जव रोहणी तप आदर्यो, तपतणो सगते
 साधुजगते तुम्ह जवसायर तर्यो ॥ १३ ॥ (चाल) कहै राजा रे
 रोहणितप किम कीजियै, विधि ज्ञाखो रे जिम तुम पासे लीजियै
 ॥ तब मुनिवर रे विधि रोहणीरा तपतणी, इम जंपे रे चित्रसेन
 राजाजणी ॥ (उल्लाखो) राजाजणी विधि एह जंपै चंड-रोहणतप
 आवियै, उपवास कीजै लाज लीजै जली जावना जावियै ॥ बा-
 रमा जिनवरतणी प्रतिमा पूजियै मनरंगसुं, इम सात वरसा लगे
 कीजै तजी आलस अंगसुं ॥ १४ ॥ (ढाल-वीर सुणो मोरी वीनती
 ॥ ए देशी) ॥ तप करियै रोहणितणो, वलि करिये हो ऊजमणो
 एम ॥ तप करतां पातिक टलै, तिण कीजे हो तपसेती प्रेम ॥
 त० १५ ॥ देव जुहारी देहरे, तिण आगे हो कीजै वृद्ध अशोक ॥
 गुणनो बारम जिनतणो, जला नेवज हो धरियै सहु थोक ॥ त०
 ॥ १६ ॥ केशर चंदन चरचियै, कीजै आगे हो आठे मंगलीक ॥

विधसुं पुष्पाक पूजियै, ते पामे हो शिवपुर तहतीक ॥ त० १७ ॥
 सेवा कीजै साधूनी, वलि दीजे हो मुंह माग्या दान ॥ संतोपीजै
 साहमी, मनरंगे हो करष पकवान ॥ त० १८ ॥ पाटी पोथी पूं-
 वना, भिस लेखण हो जिलमिल सुजगीस, नवरुवाली वीटणा,
 गुरु आगे हो धरो सत्ताईस ॥ त० १९ ॥ चोथो व्रत पिण तिण
 दिने, इम पाले हो मन आण विवेक ॥ इण विध रोहणि आदरै,
 ते पामे हो आनंद अनेक ॥ त० २० ॥ (हाल-धरम करो जिनवर
 तणो ॥ ए देशी) ॥ इम महिमा रोहणतणी, श्रीग्यानी गुरु परकासे
 रे ॥ चित्रसेन ने रोहणी, वासुपूज्य तीर्थकर पाले रे ॥ ५० ११ ॥
 इण परि रोहण आदरी, ऊपर ऊजमणो कीयो रे ॥ चित्रसेन ने
 रोहणी, मन सूधै संजम लीधो रे ॥ ५० २२ ॥ आठै पूत्रे आदरी,
 दिख्या बारम जिन आगे रे ॥ वलि नानाविध तप तपै, धरमतणी
 मति जागे रे ॥ ५० २३ ॥ करि अणसण आराधना, लहि केवल
 शिवपद पाया रे ॥ जिन वाणी आणी हियै, प्रभु चरणां चित
 लाया रे ॥ ५० २४ ॥ मनमोहन महिमा नीलो, में तवियो शिव-
 पुरगामी रे ॥ मन मान्या साहिवतणी, हिव पुन्ये सेवा पामी रे
 ॥ ५० २५ (कलश) ॥ इम गगन डुगमुनि चंद्र वरसे (१७२०)
 चोथ आवण सुदि जली ॥ में कही रोहणतणी महिमा सुगुरु सु
 ख जिम सांजली ॥ वासुपूज्य अमने थया सुप्रशान चित्तनी चिंता
 हली, श्रीसार जिनगुण गावतां हिव सकल मन आख्या फली ॥
 २८ ॥ इति रोहणीतप स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ रोहणीतप विधिः ॥

॥ शुद्ध दिन गुरुके पास रोहणीतप ग्रहण करै, रोहणी न-
 कत्रके दिन उपवास करै, बारमा श्रीवासुपूज्य स्वामीका पूजन
 करै, आगे अष्ट मंगलीक रचना करै, अष्ट द्रव्य चढ़ावै, देव वंदना-

दिक करकै धर्मोपदेश सुणै (श्रीवासुपूज्य स्वामी सर्वज्ञायनमः)
इसका दो हजार गुणना करै, एसें सात वरस तप करणेंसें सुख
शोभाग्य बधेगा, पूत्रादिकका शोक संताप न होगा. विशेष अधि-
कार स्तवनसें जाणना ॥ इति रोहण तप विधिः ॥

॥ अथ छम्मासी तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ गौतमस्वामी रे बुध दो निरमली, आपो करिय पसाय
॥ महावीरस्वामी जै जै तप किया, तेहनो कहिसुं विचर ॥ वलि १
वांछु वीरजी सुहामणा ॥ १ ॥ जावठ जंजण सेव्यां सुख करै,
गातां नव निधि आय ॥ बारे वरसां वीरजी तप कियो, दूर करै
सहु पाप ॥ व० २ ॥ बे कर जोमी ए हूं वीनवूं, श्रीजिनशासन
राय ॥ नाम लियांथी नव निधि संपजै, दरिशाण डुरित पुलाय ॥
व० ३ ॥ नव चोमासा जिनजीरा जाणियै, एक कीयो ठम्माश ॥
पांचे ऊणा ठ वलि जाणियै, बारकेकोजीमाश ॥ व० ४ ॥ बहुतेर
माशखमण जग जीपता, ठ दो मासी रे जाण ॥ तीन अढाई दो
दो कीया, दो दोढ माशी वखाण ॥ व० ५ ॥ जइ महाजइ-शि
वगति जाणियें, उत्तम एहना प्रकार ॥ विचमें पारणो स्वामी नहि
कियो, नहि कीयो चोथो आहार ॥ व० ६ ॥ लिहुं उपवासे प्रति
मा वारमी, कीधा बारे जी माश ॥ दोयसें वेला जिनजीरा जा
णियै, इण गुणतीस विदास ॥ व० ७ ॥ तीनसे पारणा जिन
जीरा जाणियै, तीन गुणतोस पचास ॥ एहमें स्वामी केवल पा
मिया, पाम्या मुगति आवास ॥ व० ८ ॥ कलश ॥ इम वीर जि
नवर सयल सुखकर अतहि डुकर तप करी, संयमसु पाली कर्म
टाली स्वामी शिव रमणी वरी ॥ सेवक पन्नणें वीर जिनवर चरण
बंदित तुमतणा, संसार कूप पमंत राखो आपो स्वामी सुख घणा
॥ ९ ॥ इति ठम्मासी-स्तवन ॥

॥ अथ छम्मासी तप विधिः ॥

॥ शासनके अधिपती श्रीमहावीरस्वामी सर्वसँ उत्कृष्ट ठम्मासी तप किया. इस वास्ते इस वखतमें संघयण बल पराक्रम के हीनपणोंसेँ इकसार ठम्मासी तप नहिँ कर सकतेहैं तोनी ठम्मासीके १८० उपवास करणोंसेँ जघन्य ठम्मासी तपके फलकों जीव प्राप्त होताहे. नर देव वंदनादि क्रिया करै, स्तवन ठम्मासीतपका सुणै, इस स्तवनमें वीरप्रभूके सर्व तपस्याकी संख्या कही है. (श्रीमहावीरस्वामीनाथायनमः) इसका २००० गुणना करै. वीर प्रभूके नामका तीर्थ होय उहां यात्रा करणोंको जावै, शुद्ध ज्ञावना जावै, शक्ति मुजब उद्यापन करै. इस तपस्याके प्रज्ञाव लघुकर्मों जीव होकर अनंतसुखकों प्राप्त होय ॥ इति ठम्मासी तप विधि ॥

॥ अथ बारेमाशी तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ दान उल्लट धरी दीजीयै ॥ ए देशी ॥ त्रिभुवन नाथ क तूं धणी, आदि जिनेसर देव रे ॥ चौसठ इंद्र करै सदा, तुज पदपंकज सेव रे ॥ त्रिभु० १ ॥ प्रथम प्रभूपाल प्रभु तूं अयो, इस अवसरपणी काल रे ॥ तुज सम अवर न को प्रभु, तूं प्रभु दीनदयाल र ॥ त्रि० २ ॥ प्रथम तर्पणकर तूं सही, केवलज्ञान दिणंद रे ॥ धर्म प्रज्ञापक प्रथमतूं, तूंही हे प्रथम जिनंद रे ॥ त्रि० ३ ॥ अंतर अरि जे आतमतणा, काल अनादि धिति जेह रे ॥ ते तप शक्तियें तें दएया, आत्म वीरज गुण गेह रे ॥ त्रि० ४ ॥ ताहरी शक्ति कुण कह सकै, जेहनो अंत न पार रे ॥ छादश माशनो तप कर्यो, तेह अपानक सार रे ॥ त्रि० ५ ॥ एह उत्कृष्ट तप वरणव्यो, आगममें जिनराज रे ॥ ते करवूं अति आकरुं, तप विना किम सेरे काज रे ॥ त्रि० ६ ॥ तीनसै साठ उपवास ते, ते इस पंचम काल रे ॥ अवसर आदरै कम विना, ते पिण ज्ञवि सुविताल रे ॥

त्रि० ७ ॥ ए तप गुरुमुख आदरै, शास्त्रतणे अनुसार रे ॥ पन्निक्क
मणादिक जावथी, शुद्ध क्रिया मन धार रे ॥ त्रि० ८ ॥ चित्त स
माधि शुद्ध जावथी, धरे ताहरो ध्यान रे ॥ ते नर उत्तम फल लहै,
कवि लहै उत्तम ग्यान रे ॥ त्रि० ९ ॥ काल अनादि संसारमें, ज
न्म मरणतणा दुःख रे ॥ ते लहे धर्म पाया विना, तप विना किम
हुवै सुख रे ॥ त्रि० १० ॥ हिव लह्यो नरत्तव पुण्यथी, वलि ल
ह्यो श्रीजिन धर्म रे ॥ तत्त्वनी रुचि अइ हे मुजै, हिव मिट्यो म
नतणो जर्म रे ॥ त्रि० ११ ॥ जव२ एक जिनराजनो, सरण हो
ज्यो सुखकार रे ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, में कियो हिवै परिहार
रे ॥ त्रि० १२ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र ए, मोक्षमार्ग सुविशाल रे
॥ जव२ जे मुऊ संपजै, तो फलै मंगलमाल रे ॥ त्रि० १३ ॥
श्रीजिनशासन तप कह्यो, ते तप सुरतरु कंद रे ॥ धन२ जे नर
आदरै, काटै ते करमनो फंद रे ॥ त्रि० १४ ॥ कलश ॥ इम ना
जिनंदन जगत वंदन सकल जन आनंदनो, में शुण्यो धन दिन
आजनो मुऊ मात मरुदेवी नंदनो ॥ संवत सुनेत्राकासनिधि शशि
नयर श्रीवालूचरै, श्रीजिनसौजाग्य सुरिंद के सुपशाय विजय वि-
मल वरै ॥ १५ ॥ इति श्री बारै माशी तप स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ बारै माशी तप विधिः ॥

॥ प्रथम तीर्थकर श्रीरुषजदेवस्वामी उत्कृष्ट बारै माशी तप
स्या करी. इस वास्तै जव्यजीव बारै माशी तपस्याका जाव लायकै
(३६०) तीनसेसाठ उपवास करै. जिस दिन व्रत होय उस दिन
देवदंडनादि क्रिया करै, बारै माशी तपका स्तवन सुणै ॥ (श्री
रुषजदेवस्वामीनाथायनमः ॥) इसका १००० गुणना करै.
तपस्या पूर्ण होनेसे सिद्धगिरी यात्रा करणको जावै. शक्ति माफक
उद्यापन उच्च करै. इस तपस्याके प्रसाद जव्यजीवोके कजी दुख

दौनाग्यकी प्राप्ति न होय, सदा तपतेज बढना रहै ॥ इति वारैमा.
श्री तपस्या विधिः ॥

॥ अथ अठाईस लब्धि स्तवन लिख्यते ॥

॥ इहा ॥ प्रथमं प्रथमं जिनैसरु, श्रुद्ध मने सुखकार ॥
लब्धि अठावीस जिन कही, आगमने अधिकार ॥ १ ॥ प्रश्नव्याक-
रणें प्रगट, जगवतीसूत्र मऊार ॥ पन्नवणा आवस्यके, वारु लब्धि
विचार ॥ २ ॥ आंगुल तप कर ऊपजै, लब्धां अठावीस ॥ ए-
हिव परगट अरथसुं, सांजलज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥ (ढाल ॥ सफल
संसारनी ॥) अनुक्रमें देव अधिकार गाथातणे, लब्धिना नाम-
परिणाम सरिया जणे ॥ रोग सह जाय जसु अंग फरस्यां सही,
प्रथम ते लब्धि वै नाम आमोसही ॥ ४ ॥ जासु मल मूत्र उपव-
समा जाणियै, वीथ वप्पोसही लब्धि वखाणियै ॥ श्लेष्म उपव-
सारिखो जेहनो, तीजी खेछोसही नाम वै तेहनो ॥ ५ ॥ देहना
मैलथी कोढ दूरे हुवै, चोथी जछोसही नाम तेहनो ठवै ॥ केश
नख रोम सहू अंग फरस्यां सही, रहै नही रोग सब्बोसही ते कही
॥ ६ ॥ एक इंडिय करी पांच इंडियतणा, जेद जाणे तिका नाम
संजिणना ॥ वस्तु रूपी सहू जाणियै जिण करी, सातमी लब्धि-
ते अवधिग्याने करी ॥ ७ ॥ (ढाल ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए-
चाल ॥) हिव आंगुल अडियै ऊणो मानुषकेत्र, संज्ञा पंचेडि तिहां
जे वसय विचित्र ॥ तसु मननो चिंनित जाणे थूल प्रकार, ते रुज्जु
मति नामे अठम लब्धि विचार ॥ ८ ॥ संपूरण मानुषकेत्रे संज्ञा-
वंत, पंचेडिय जे वै तसु मन वातां तंत ॥ सुखम परजायें जाणे
सहू परिणाम, ए नवमी कहियै विपुलमती सुज्ज नाम ॥ ९ ॥
जिण लब्धि प्रज्ञावें ऊमी जाय आकाश ॥ ते जंघाविज्ञाचारण
लब्धि प्रकाश ॥ जसु वचन सरापै खिलमैं खेहं आय, ए लब्धि

इंग्यारमी आसीविस कहिवाय ॥ १० ॥ सहूँ सूखम बादर देखै
 लोकालोक, ते केवल लबधी बारमियै सहूँ थाक ॥ गणधर पद ल
 हियै तेरम लबधि प्रमाण, चवदम लबधे करी चवदै पूरब जाण
 ॥ ११ ॥ तीर्थकर पदवी पामे पनरमी लबधि, सोलम सुखदाई चक्र
 वर्त्तिपद रिद्ध ॥ बलदेवतणो पद लहियै सतरमी सार, अठारमी आखा
 वासुदेव विस्तार ॥ १२ ॥ मिसरी घृतकीरै मेढयाजेहसवाद, एहवी
 लहै वाणी जगणीशम परसाद ॥ जणियो न विजलै सूत्र अरथ सुविचा
 र, ते कुष्ट कबुद्धी बीसम लबधि विचार ॥ १३ ॥ एकै पद जणियां आ
 वै पद लख कोम, इकवीसमी लबधी पयाणुसारणी जोम ॥ एकै
 अरथे करी उपजै अरथ अनेक, बावीसम कहियै बीजबुद्धि सुविवेक
 ॥ १४ ॥ (ढाल ॥ कपुर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए चाल ॥) सो
 लह देशतणी सही रे, दाहक सगति बखाण ॥ तेह लबधि तेवीस-
 मी रे, तेजोलेस्या जाण ॥ चतुर नर सुणज्यो ए सुविचार ॥
 आगमने अधिकार, च० ॥ वारू लबधि विचार ॥ च० ॥ एआंकणी
 ॥ १५ ॥ चवद पूरबधर सुनियरू रे, उपजंता संदेह ॥ रूप नवो रचि
 मोकले रे, लबध आहारक एह ॥ च० १६ ॥ तेजोलेस्या अगनमी
 रे, उपशमवा जलधार ॥ मोटी लबधि पचवीसमी रे, शीतोले
 स्या सार ॥ च० १७ ॥ जेण सगति सुं विकुरवै रे, विविध प्रकारै
 रूप ॥ सदगुरु कहै ठावीसमी रे, वैक्रिय लबधि अनूप ॥ च० १८
 ॥ एकण पात्रे आदमी रे, जीजानै केइ लाख ॥ तेह अस्कीणम
 हानसी रे, सत्तावीसमी साख ॥ च० १९ ॥ चूरै सेन चक्कीसनी
 रे, संघादिकने काम ॥ तेह पुलाक लबधी कही रे, अठावीशमी
 नाम ॥ च० २० ॥ तेज शीत लेस्या बिहुं रे, तेम पुलाक विचार
 ॥ जगवतीसूत्रमें जाणियो रे, ए त्रिहुनो अधिकार ॥ च० २१ ॥
 पन्नदणा आहारनी रे, कलपसूत्रगणधार ॥ तीनइ इकर मिली रे,

वांरू आठ विचार ॥ च० १२ ॥ प्रश्नव्याकरणे सही रे, बाकी ल
वधां वीश ॥ सांजलतां सुख ऊपजै रे, दोलत हुवै निशदीस ॥
च० १३ ॥ (कलश) संवत सत्तरैसे ठवीसे मेरुतेरस दिन जलै,
श्रीनगर सुखकर लूणकरणसर आदिजिन सुपसानलै ॥ वाचना
चारज सुगुरु सानिध विजय हरख विलासए, श्रीधर्मवर्द्धन स्तवन
जणतां प्रगट ग्यान प्रकास ए ॥ १४ ॥ इति १८ लब्धि स्तवनं ॥

॥ अथ अष्टाईस लब्धि तप विधिः ॥

॥ शुभ दिन गुरुके पास २८ लब्धि तप ग्रहण करै, अन
क्रमसँ २८ उपवास करै, स्तवन सुणे. जिस दिन जो लब्धिका उ
पवास होय उसही नामका गुणना करै. तप पूर्ण होणैसँ शक्ति
मुजब नद्यापन करै. इस तपस्यासँ निर्मल बुद्धि उत्पन्न होय, सदा
आनंद रहै. इति २८ लब्धितप विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ १४ पूर्व स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ बे कर जोम्नी ताम ॥ ए देशी ॥ जिनवर श्री
वर्द्धमान, चरम तीर्थकर, प्रह ऊठी प्रणमं मुदा ए ॥ श्रुतधर श्री
गणधार, सूरि शिरोमणी, नमतां नव निधि संपदा ए ॥ १ ॥ चवदै पूर
व नाम, सूत्रै जूजूवा, वीरजिनंदे जाणिया ए ॥ ते हिव सुगुरु पसा
च, वरणविस्थुं इहां, आगममें जिम उपदिस्याए ॥ २ ॥ पहिला पूर्व
उत्पाद १, दूजो अग्रायणी २, वीर्यवाद ३ तीजो नमूं ए ॥ अस्ति,
नास्तिप्रवाद ४, सत्ता जाणियै, नारग रयण पंचम ५ गिणुं ए ॥
॥ ३ ॥ ठठो सत्यप्रवाद ६, सत्तम आतम ७, कर्मप्रवाद अठम गिणो
ए ८ ॥ प्रत्याख्यानप्रवाद ९, नामे नवम, विद्याप्रवाद दशमो
कह्यो ए १० ॥ ४ ॥ इग्यारम नाम कढ्याण ११, प्राणायु बारमो
१२, क्रियाविशाल तेरम जणो ए १३ ॥ विंडुसार १४ इण नाम,
चवदे ए कहा, साख अकी में संग्रह्या ए ॥ ५ ॥ (ढाल २ ॥ श्री

विमलाचल शिर तिलो ॥ ए देशी ॥) उत्पाद पूर्व सोहामणो,
 कोटी पद परिमाण ॥ षट ज्ञाव प्रगट है ते जिहां, त्रिपदी ज्ञाव
 विनाण ॥ १ ॥ सर्व इव्यपर्ययतणो, जीव विशेष प्रमाण ॥ दूजो
 पूर्व अग्रायणी, विन्तुं लख पद जाण ॥ २ ॥ पद लख सत्तर जेहनी,
 संख्या परगट एह ॥ वीर्य प्रबलता जीवनी, ज्ञापी तीजै तेह ॥ ३ ॥
 चोथे पूर्वे जे कह्यो, अस्ति नास्ति प्रवाद ॥ पद संख्या साठ लाख-
 नी, सप्तजंगी स्यादाद ॥ ४ ॥ ग्यान प्रवाद पद पंचमो, सूत्रे आणयो
 जोरु ॥ मत्यादिक पण जेदसुं, पद संख्या इक कोरु ॥ ५ ॥ सत्य-
 प्रवाद ठगो कहूं, ज्ञाषुं सत्य स्वरूप ॥ संख्या पद इक कोरुनी,
 ज्ञाषी अगम अनूप ॥ ६ ॥ नित्यानित्यपणो इहां, आतम इव्य
 सुज्ञाव ॥ ठवीस पद कोरु जेहना, सूत्रै आण्या ज्ञाव ॥ ७ ॥ कर्म
 प्रवादतणो हिवै, प्रगटपणें अधिकार ॥ लाख असी पद जेहना,
 कोरुनी इग निरधार ॥ ८ ॥ नवमो पूर्व कहूं हिवै, नामे प्रत्याख्या-
 न ॥ लाख चोरासी जेहना, पद संख्या चित आन ॥ ९ ॥ अति-
 शय गुण संयुत ज्ञणी, साधन साध्य निदान ॥ विद्या अनुपमं
 सातसै, कोरुनी वरस लख जान ॥ १० ॥ कढ्याण नाम इग्यारमो,
 ठवीस कोरु प्रमाण ॥ ज्योतिषशास्त्र विचारणा, चोविह देव क-
 ढ्याण ॥ ११ ॥ प्राणायु पद बारमो, ठप्पन्न लख इग कोरु, प्राण
 निरोधन जे क्रिया, शास्त्रे आणयो जोरु ॥ १२ ॥ ख्यायिक्यादिक
 जे क्रिया, ठंद क्रिया सुविशाल ॥ पद संख्या नव कोरुनी, तेरमी
 क्रिया-विशाल ॥ १३ ॥ लोकसारविंडु चवदमो, नामे अरथ नि-
 दाल ॥ पद संख्या इग कोरुनी, लाख पचवीस संजाल ॥ १४ ॥
 लोकप्रत्यय देखण ज्ञणी, संख्या गज परिमाण ॥ सोले सहस्र अरु
 तीनसै, उर तयासी जाण ॥ १५ ॥ पूरब संख्या ए कही, गुण-
 मालाश्री देख ॥ आगे बुधजन सोभज्यो, वाकी देश विशेष ॥ १६ ॥

(हाल ॥ यीर जिनेसर उपदिसै ॥ ए चाल) सूत्रे गुंथे गणधरा,
 अरथै अरिदंत ज्ञाखै रे ॥ ते श्रुतज्ञान नमूं सदा, पाप तिमर जिमं
 तासै रे ॥ १ ॥ वाणी रे जिएंदनी, सुणज्यो चित हित आणी रे, तत्व
 रमणता अनुसरै, संपूरण गुण खाणी रे ॥ वा० २ ॥ विषय कषाय
 तजी करी, ग्यान जगत जर धारी रे ॥ विधि संयुत जिनमंदिरै,
 प्रभु मुख पाश जुहारी रे ॥ वा० ३ ॥ तप जप संजम आदरी,
 श्री श्रुतज्ञान निधानो रे ॥ सदगुरु चरण नमी करी, संवरजोग
 प्रधानो रे ॥ वा० ४ ॥ अकृत लेश ऊजला, गुंढली सुंदर कीजै रे ॥
 नाण दंसण चारित्रनी, ढिगली तीन धरीजै रे ॥ वा० ५ ॥ चवद
 पूर्व व्रत इण परै, सुगुरु संजोगे लेई रे ॥ विधिसुं पुस्तक पूजीयै,
 चित अति आदर देई रे ॥ वा० ६ ॥ इम तप संपूरण अयां, ऊज-
 मणो दिव कीजै रे ॥ घर सारू धन खरचने, नरजव लाहो लीजै
 रे ॥ वा० ७ ॥ पूठा परत विटांगणा, पूरब नास प्रमाणो रे ॥ नव-
 करवाली कोथली, लेखण ठवणी जाणो रे ॥ वा० ८ ॥ देहरै देव
 जुहारने, आरती मंगल कीजै रे ॥ सनात्रपूजा बलि साचवी, तत्व
 सुधारस पीजै रे ॥ वा० ९ ॥ इण पर तप आराधतां, डुरगति का-
 रण वेदै रे ॥ चवदह रज्जु सिरोमणी, जीव अक्षयगति वेदै रे ॥
 ॥ वा० १० ॥ तप आराधन विधि ज्ञानी, आगम वचने जोइ रे ॥
 ज्ञवियण पिण तुमे आदरो, ज्युं जवभ्रमण न होई रे ॥ वा० ११ ॥
 (कलश) इम सयल सुखकर गछ खरतर तपै रवि जिम क्रांत ए,
 सौजाग्यसूरि मुणिंद इण पर कह्यो पूर्व वृत्तंत ए ॥ संवत अठारै
 बरस विभूं नयर श्रीबालूचरै, ए स्तवन जणतां श्रवण सुणतां स-
 यल मनवंडित फलै ॥ १२ ॥ इति चवद पूर्व स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ १२ पूरब तप विधि लिख्यते ॥

॥ चवदै पूर्वकी तपस्याके १४ उपवास करे, जिमं दिन जो

पूर्वका उपवास होय उसी पूर्वका नामसे (२०००) गुणना करै, स्तवन सुणे, इस स्तवनमें १४ पूर्वके नाम और विधि सर्व लिखी हैं इस मुजब विवेकी जीव गुरुओं समझें करै, यह तपस्याके करनेसे ज्ञानावरणादि कर्मका कथोपशम होय, शुद्ध ज्ञानका उदय होय ॥ इति १४ पूर्व तप विधिः ॥

॥ अथ तिलक तपस्या स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सासण देवी सारदा, वाणी सुधारस वेल ॥ बालक हित ज्ञानी बगसियै, सुबुधि सुरंगी रेल ॥ १ ॥ नवम अंग जिन पूजतां, मन लहि शुद्ध परिणाम ॥ तप तिलके फल पामिये, दवदंती गुणधाम ॥ २ ॥ (ढाल ॥ वीर जिणोसर उपदिसै ॥ ए देशी) कमला जिम कुंरुणपुरै, नृजबल नरपति नीमो रे ॥ पदमनी पदम सुवासना, श्वेतगज स्वप्ने नीमो रे ॥ पदम० १ ॥ परतख्य फल ए पुन्यना, प्रसवी सुता पूरै माझै रे ॥ दवदंती नाम दीपतो, गुणमणि बुद्धि प्रकाशै रे ॥ पद० २ ॥ चौसठ कला विचक्षणा, रूप गुणे करी रंजना रे ॥ देवगुरु धर्म दीपावती, व्रतधारी दृढ बंजना रे ॥ प० ३ ॥ प्रतिमा पूजै शांतनी, देवे दीधी त्रिकालो रे ॥ मात पिता प्रमोदमुं, स्वयंवर वरमालो रे ॥ प० ४ ॥ उवजायाधिप श्रीनिषदनो, नल लिखियो निलामै रे ॥ आनंदसु पंथ आवतां, पूरब पुन्य उधामै रे ॥ प० ५ ॥ मङ्गम रयणी तम जरी, मधुरवकुंत इहां वनमें रे ॥ मणि जाले तेज दिनमणी, जा अत देखी अहो मनमें रे ॥ प० ६ ॥ ग्यानधारी गुरु कोइ मिलै, पूढियै एह प्रसन्नो रे ॥ कर्म बलै मुनि आविया, परीसंह जीत मदन्नो रे ॥ प० ७ ॥ पंच जीत पंच पालता, टालता दुस्सह सबला रे ॥ संजम शुद्ध संजालतां, उद्यम शिवसुख कमला रे ॥ प० ८ ॥ छुहा ॥ मणि तेजै मुनि तरुण्ये, रथ अकी स्त्री जरतार ॥

देवै तीन प्रदक्षणा, विधिसुं चरण जुहार ॥ ए ॥ देशना सुण पा-
 वन अथा, ज्ञान सुधारस पाय ॥ को तप परजव तिलक है, कदि
 ये श्रीमुनिराय ॥ १० (दाख-जरत नृप जावसुं ए ॥ ए देशो) ॥
 मधुर स्वरै मुनिवर कहे ए, नाणी गुरु सुपसाय, दीपक सहू लोकना
 ए ॥ कर्म शुजाशुज परजवै ए, इह जव फल निपजाय, करम
 गति वंकी ए ॥ ११ ॥ उहिनाण जव प्रागनो ए, नृप सुणे निर
 मल जाव, समकित साहीयो ए ॥ धर्मवती को नृपवधू ए, जा
 एयो हे तत्व प्रस्ताव, साची जिन वाचना ए ॥ १२ ॥ चोअ प्रमुख
 नृप चूपसुं ए, किरिया शुद्ध करी एह, जलै चित जावसुं ए ॥
 ॥ नवांग पूजै तिलकसुं ए, चाढै जिन चोवोस, रेयण कंवर ज
 ष्या ए ॥ १३ ॥ तिलकसें पामियो ए, समकित एह सतीस, जनम
 सफलो गिणे ए ॥ जगवन तप विधि जाधियै ए, नत्र कहै बोध
 वरीस, पीहर पट्कायना ए ॥ १४ ॥ आदिनाथ अरिहंतना ए,
 पट् उपवास कहीस, त्री चोवीहारस्युं ए ॥ चोअ दोय जिन वीरना
 ए, अजितादिक वावीस, आशा गुरु शिर वही ए ॥ १५ ॥ पोपअ
 त्रीस तीने अथा ए, पूजन तिलक चढाय, तारक जगदीसने ए ॥
 अथापन संघ जक्तिसुं ए, जन्म सफल नरराय, मूधै मन साधियै
 ए ॥ १६ ॥ सुण वाणी समकित ग्रहै ए, पय प्रणमी गुरु वीर, चित
 ऊमाहीयो ए ॥ इण पर जे जवि आदरै ए, थायै चरम शरीर, मूत्र
 सुख शासतो ए ॥ १७ ॥ (कलश) श्रीशांति दाता त्रि जगत्राता जविक
 ध्याता सुखकरा, इम सतीय साध्यो तप आराध्यो सुजस वाध्यो
 शिवधरां ॥ आगमे आखै सूरिय साखै सुगुरु जाषै सुण अथा, शुद्ध
 ध्यावै जविक जावै विजय विमल जिनवर कया ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ अथ तिलकतपस्या विधि ॥

॥ शुज दिन गुरुके पास तिलकतपस्या ग्रहण करकै तीस

उपवास करै. प्रथम श्रीरुषभदेवस्वामीके ४ उपवास करै, जब
(श्री रुषभदेवस्वामी सर्वज्ञायनमः) इस पदका १००० गुणना
करै. फेर श्री महावीरस्वामीके २ उपवास करै, तब (श्रीमहावी-
रस्वामी सर्वज्ञायनमः) इस पदका १००० गुणना करै. और श्री
अजितनाथस्वामीको आद लेकै (२२) बाईस जगवंतोका बाईस
उपवास करे. जब उन २ जगवंतोंके नामसे दो दो हजार गुणना
करे, उर सर्व विधि स्तवन मुजब करे ॥ इति तिलकतपस्या विधिः ॥

॥ अथ शोलिये तपका स्तवन ॥

वीर जिनेसर ज्ञाषियो रे लाल, सहु व्रतमें सिरताज, जवि.
प्राणी रे ॥ कषायगंजन तप आदरो रे लाल, इणथी पातिक जा-
य ॥ ज० वी० १ ॥ कोर वरष तप आदरे रे लाल, क्रोध गमावै,
फल तास ॥ ज० ॥ मान करे जे प्राणिया रे लाल, ते जगमें,
न सुहाय ॥ ज० वी० २ ॥ व्रतमें माया आदरी रे लाल, स्त्रीपणो-
पायो मल्लिनाथ ॥ ज० ॥ रूप पराव्रत कीया घणा रे लाल, आ-
षाढजूति गणिका साथ ॥ ज० वी० ३ ॥ च्यार कषाय ठे मूलगा
रे लाल, उत्तम सोले जेद ॥ ज० ॥ इम जव २ जमतो थको रे
लाल, जीव पामे बहु खेद ॥ ज० वी० ४ ॥ एकासन व्रत जे करे
रे लाल, लाख वरस दुख हाण ॥ ज० ॥ नीवी व्रत दूजो कह्यो रे
लाल, ए धारो जिनवर वाण ॥ ज० वी० ५ ॥ आंबिलनो फल बहु
कह्यो रे लाल, उपजै लबधि अपार ॥ ज० ॥ उपवास करतां ज्ञा
वसुं रे लाल, पामे जवनो पार ॥ ज० वी० ६ ॥ इम दिन शोले
तप करो रे लाल, पूरण व्रत ए आय ॥ ज० ॥ देव गुरु पूजा करै
रे लाल, मन वंछित फल आय ॥ ज० ॥ नर सुर रिद्धि पिण जो-
गवे रे लाल, निश्चै मुगति जाय ॥ ज० वी० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शोलिये तपकी विधि लिख्यते ॥

॥ क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४, यह च्यार कषायमें

अनंतानुबंधी १, अप्रत्याख्यानी २, प्रत्याख्यानी ३, संज्वलेन ४, इस
मुजब एकेक कपायके च्यार ष्ठेदकरणेसँ १६ होते है, इनकों दूर कर
लेकों प्रथम एकाशणा १, निवि २, आंबिल ३, उपवास ४, इस
अनुक्रमसँ १६ दिन तप करै, स्तवन सुणे, तप पूर्ण होणेसँ यथा
शक्ति उद्यापन करै ॥ इति शोलिया तप विधिः ॥

अथ पैतालीस आगम तप विधि ॥

गुरुके पास शुद्ध दिन पैतालीस आगमतप ग्रहण करै, २
दूज, ५ पांचम, ११ इग्यारस, इत्यादिक ज्ञानतिथिके दिन अनुक्रम
सँ उपवास वा एकाशणा करै, जिस दिन जो आगमका तप
होय उसी आगमका गुणना करै, सिद्धांत लिखावै, सिद्धांत सुणे,
पढ़नेवालोंकों साहाय करै, अपना शक्ति मुजब सर्व ठिकारो ज्ञान
की वृद्धि करै (प्रणमं श्रीगुरु पाय) इत्यादि ज्ञानके स्तवन
सुणे, सो आगे लिखा है, एसँ तपस्याके ४५ दिन पूर्ण होणेसँ
पैतालीस आगमकी पूजा करावै, मंदिर उपाश्रयमें ज्ञानोपगरण
चढ़ावै. इस तपस्याके करणेसँ मुखपशा दूर हो के शुद्ध आत्मज्ञान
की प्राप्ती होय ॥

अब ४५ आगमका गुणना लिख्यते ॥

॥ प्रथम इग्यारै अंग ॥

- | | |
|-----------------------------|------------------------------|
| १ श्रीआचारागजीसूत्रायनमः | २ श्रीसुयगमांगजीसूत्रायनमः |
| ३ श्रीगणगंगजीसूत्रायनमः | ४ श्रीसमवायांगजीसूत्राय० |
| ५ श्रीजगवतीजीसूत्रायनमः | ६ श्रीज्ञाताधर्मकथाजीसूत्रा० |
| ७ श्रीउपासगदशाजीसूत्रा० | ८ श्रीअंतगमदशाजीसूत्रा० |
| ९ श्रीअणुत्तरोववाइजीसूत्रा० | १० श्रीप्रअयाकरणजीसूत्रा० |
| ११ श्रीविपाकजीसूत्रायनमः॥ | |

॥ अथ बारै उपांग नाम ॥

- | | |
|-------------------------|----------------------------|
| १ श्रीउववाईजीसूत्रायनमः | २ श्रीरायपत्तणीजीसूत्रायन० |
|-------------------------|----------------------------|

- ३ श्रीजीवाग्निगमजीसूत्राय० ४ श्रीपन्नवर्णाजीसूत्रायनमः
 ५ श्रीजंबूद्वीपपन्नतीसूत्राय० ६ श्रीचंदपन्नतीसूत्रायनमः
 ७ श्रीसूरपन्नतीजीसूत्राय० ८ श्रीकप्पियाजीसूत्रायनमः
 ९ श्रीरूप्यवर्णिसियाजीसूत्राय० १० श्रीपुष्पियाजीसूत्रायनमः
 ११ श्रीपूष्पचूलियाजीसूत्राय० १२ श्रीवन्दिदसाजीसूत्रायनमः

॥ अथ छ छेदका नाम गुणना ॥

- १ श्रीव्यवहारछेदसूत्रायनमः २ श्रीवृहत्कल्पजीसूत्रायनमः
 ३ श्रीदसाश्रुतस्कंधजीसूत्राय० ४ श्रीनिशीथजीसूत्रायनमः
 ५ श्रीमहानिशीथजीसूत्राय० ६ श्रीजीतकल्पजीसूत्रायनमः

॥ अथ दस पयन्ना नाम गुणनो ॥

- १ चोसरणपयन्नाजीसूत्रायन० २ संथारपयन्नाजीसूत्रायनमः
 ३ श्रीतंडुलपयन्नाजीसूत्रायन० ४ श्रीचंदाविज्ञियासूत्रायनमः
 ५ श्रीगणविज्ञियासूत्रायनम० ६ श्रीदेवविज्ञियासूत्रायनमः
 ७ श्रीवीरश्रुवोजीसूत्रायनमः ८ श्रीगन्नाचारजीसूत्रायनमः
 ९ श्रीज्योतिष्करंजीसूत्राय० १० श्रीमहापञ्चरकाणजीसूत्राय०

॥ मूल सूत्रके नामका गुणना ॥

- १ श्रीआवस्यकजीसूत्रायनमः २ श्रीउत्तराध्ययनजीसूत्राय०
 ३ श्रीसंघनिर्युक्तीजीसूत्रायन० ४ श्रीदशमीकालिकजीसूत्राय०
 ५ श्रीअनुयोगद्वारजीसूत्राय० ६ श्रीनंदीसूत्रजीसूत्रायनमः

॥ अथ प्रैतालीस आगम स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ चोवीसै श्रीतीर्थपति, नमूं देव अरिहंत ॥ अर्थ
 प्रकाशै गणपपुर, द्वादश अंग महंत ॥ १ ॥ त्रिपदी लहि गणपति
 रचै, सूत्र अर्थ संजोग ॥ अक्षररूपै सारदा, प्रणमूं त्रिकरण योग ॥
 ॥ २ ॥ टीका कर्त्ता जगतगुरु, सूत्र करै गणधार ॥ पंचांगी युत वि-
 स्तरै, नय निक्षेप विचार ॥ ३ ॥ उपम काल दुर्जिहसे, जूले बा-
 रम अंग ॥ कंठ पावसे, लिखत कर, रचना रची अजंग ॥ ४ ॥

खंडिल अरु देवर्द्धि गणि, आचारज सय पंच ॥ चौरासी आगम
 लिखै, कोटि ग्रंथ तज खंच ॥ ५ ॥ काल दोबसैं अब मिलै, आगम
 पैतालीस ॥ ताको मुनि विवरण करै, माने विसवावीस ॥ ६ ॥
 (ढाल ॥ जगतगुरु त्रिसला नंदनजी ॥ ए देशी) ॥ आचारांग पहि-
 लो कह्यो जी, मुनि आचार विचार ॥ सुयगमांग दूजोअठै जी,
 पापंमी निरधार ॥ जगतगुरु ज्ञाखै वीर जिनंद ॥ १ ॥ दस ठाणा
 ठाणांगमे जी, समवायांग संख्यात ॥ सहस ठत्तीस जल प्रश्नो
 जी, जगवई अंग विद्वात ॥ ज० २ ॥ धर्मकथा ज्ञाता ज्ञानी जी,
 दस आवक व्रतधार ॥ दसानुपासक सातमो जी, अंग कह्यो निर-
 धार ॥ ज० ३ ॥ अंतगर्भ केवली जे थया जी, वरणन अष्टम
 अंग ॥ पंचानुत्तर जे गया जी, अणुत्तरोवाई चंग ॥ ज० ४ ॥
 अंगुष्ठादिक प्रश्नो जी, प्रश्नव्याकरण नाम ॥ सुख दुःखना फल
 ज्ञाषिया जी, सूत्र विपाके ताम ॥ ज० ५ ॥ अठार सहस आ-
 चारांगमें जी, पद संख्या परिमाण ॥ वर्ण संख्याते पद हुवे जी,
 ठाण डुगुण सब जाण ॥ ज० ६ ॥ उववाई उपांगमे जी, कोणिक
 अंवरु रूप ॥ वर्णन नगरी आदि दे जी, सांजल जविजन चूंप ॥
 ज० ७ ॥ सूरियांज पूजा करी जी, जिन प्रतिमा नवरंग ॥ इव
 ज्ञाव बिहुं जेदसूं जी, रायप्रभू चित चंग ॥ ज० ८ ॥ जीवतणो
 अजिगम सही जी, विजयदेव प्रस्ताव ॥ जीवाजिगम तीजो कह्यो
 जी, सुर कृत बहु विध ज्ञाव ॥ ज० ९ ॥ पन्नवणामें जाणज्यो
 जी, जीवाजीव विचार ॥ जंबूद्वीपनी वर्णना जी, नाम थकी गुण
 धार ॥ ज० १० ॥ सूर चंद्र विग्रह गती जी, पन्नर्त्ता बिहुं जाण ॥ कप्पिया
 कप्पवर्मिसियाजी, पुप्फिया नाम वखाण ॥ ज० ११ ॥ पुप्फचूलिया
 जाणीये जी, वन्हिदशा इण नाम ॥ नामथी अर्थ पिठाणज्यो
 जी, सांजलता सुख धाम ॥ ज० १२ ॥ (ढाल २ ॥ खयाली लाल,

અણવટ રંગ લાગો ॥ એ દેશી) ॥ ઘેદતણા પ્રાયશ્ચિતના જી, ઘેદ ઠેઠે જાણ ॥ વૃહત્કલ્પ વિવહારમેં જી, જ્ઞાણ્યો જગવંત જ્ઞાન ॥ સુજ્ઞાની લાલ ફણસું નિત રાચો ॥ રાચો ૨ રે જીવિક દિલદાર, ફણસું નિત રાચો ॥ સુજ્ઞા ૦ ૧ ॥ મહાનિશીથે જ્ઞાણિયો જી, જિનપૂજા વિહું જેદ ॥ શ્રાવક દ્વ્યે જ્ઞાવસૂં જી, મુનિવર જ્ઞાવ ઝમેદ ॥ સુજ્ઞા ૦ ૨ ॥ જીતકલ્પ વલિ નિસીત ઢે જી, ઝર દશાશ્રુતસ્કંધ ॥ દશ પયજ્ઞા જાણિયે જી, ચૌસરણ સંધાર પ્રબંધ ॥ સુ ૦ ૩ ॥ તંડુલવયાલી ચંદાવિજ્ઞયા, ગણવિદ્યા અજ્ઞિધાન ॥ દેવવિજ્ઞયા વીરણ્ણો જી, ગજાચાર નિધાન ॥ સુ ૦ ૪ ॥ જ્યોતિકરંમ, મહા પચ્ચંકાણ જી, વ્યાર સૂત્રઢે મૂલ ॥ આવશ્યક દશમીકાલિક જી, ઉત્તરધ્યયન અમૂલ ॥ સુ ૦ ૫ ॥ વ્યારે અનુયોગે કરી જી, રચના સૂત્રે જાણ ॥ તેદ ન્યાય નિક્ષેપથી જી, અનુયોગદ્વાર પ્રધાન ॥ સૂ ૦ ૬ ॥ દ્રવ્યાનુજોગ ઠેઠે દ્રવ્યની જી, ચર્ચા વિધિ વિસ્તાર ॥ ચરણ કરણ અનુયોગમેં જી, મુનિ શ્રાવક આચાર ॥ સૂ ૦ ૭ ॥ ગણતાનુયોગ ગણના કરી જી, પૃથ્વી નિરી વિમાણ ॥ વર્મમૂલ ઘનમૂલથી જી, જાણો ચતુરસુજાણ ॥ સુ ૦ ૮ ॥ ધર્મકથા અનુયોગમેં જી, ધર્મકથા દૃષ્ટાંત ॥ એ વ્યારો વિસ્તારોયા જી, પેંતાલીસ સિદ્ધાંત ॥ સુ ૦ ૯ ॥ (ઢાલ તીસરી ॥ સાંગાનેર વિરાજે ॥ એ દેશી) ॥ સુણ ૨ ગોતમવાણી, ઇમ વીર વેદે ગુણખાણી રે, જીવિયાં આગમસું મન લાવો ॥ મન કલ્પિત વાત મ ગાવો રે ॥ જ ૦ આ ૦ ૧ ॥ નંદીસૂત્ર ચિરનંદો, યામે પંચજ્ઞાનને વંદો રે ॥ જ ૦ આ ૦ ॥ જ્ઞાનના જેદ વખાણ્યા, મતિ અઠાવીસે આણ્યા રે ॥ જ ૦ આ ૦ ૨ ॥ શ્રુત ચંવેદે વીસાં જેદે, એમિ ય્યામતને ઢેદે રે ॥ જ ૦ આ ૦ ॥ અવધિજ્ઞ અસંખ્ય પ્રકારે, મનપર્ય વ હુય જેદ ધારે રે ॥ જ ૦ આ ૦ ૩ ॥ કેવલ એક પ્રકારે, એ સર્વ વિધિ નંદી જ્ઞાસે રે ॥ જ ૦ આ ૦ ॥ એતો સહુ આગમની નૂંદ, સ્યા-

द्वाद गंगनी बूंद रे ॥ ज्ञ० आ० ४ ॥ अंग उपांगनी टीका, कर्ताने
 नमूं निरञ्जीका रे ॥ ज्ञ० आ० ॥ प्रथम शीलांगाचारी, श्रीअजय
 देव बलिहारी रे ॥ ज्ञ० आ० ५ ॥ मलयगिरी गुरुस्वामी, इत्यादि
 कने सिर नामी रे ॥ ज्ञ० आ० ॥ सामान्य विशेषे ज्ञाखी, निश्चय वि
 वहार वै सांखी रे ॥ ज्ञ० आ० ६ ॥ उत्सर्ग वचन ठेकेड, अपवाद
 वचनने लेख रे ॥ ज्ञ० आ० ॥ इक मनसुं आराधो, मन वंठित स
 गला साधो रे ॥ ज्ञ० आ० ७ ॥ (ढाल ४ ॥ मंगल कमला कंद ए
 ॥ ए देशी) ॥ पैतालीस आर्गमतणी ए, हिव तप विध सुणज्यो
 हित ज्ञणी ए ॥ दूज पांचम एकादसी ए, ज्ञानतिथि तपथी कर्म
 जाय खसी ए ॥ १ ॥ शक्ति ठते उपवास ए, आंबिल निविथी उ
 ल्लास ए ॥ एकासण अथवा करै ए, इम पैतालीस दिन आचरे ए
 ॥ २ ॥ जाप करै दो हजार ए, देववंदन पूजन सार ए ॥ प्रतिक
 मण करै दोनुं टंक ए, आगम सुणै अर्थ निसंक ए ॥ ३ ॥ उजमणो
 हितचित्त करै, गुरु ज्ञक्ति चित्तसुं आदरे ए ॥ ज्ञक्ति करै साहमीतणी
 ए, जे पढय पढावै ते ज्ञणी ए ॥ ४ ॥ अन्न वस्त्र पुस्तक करै दान ए,
 तिण मनुष्य जनम परिमाण ए ॥ ते पामे श्रुतज्ञान ए, क्रमथा
 लहै पद निरवाण ए ॥ ५ ॥ (कलश) शुभ नंद सर । नधि चंद्र
 वरयै माघ सुदि पंचमी दिने, वर नयर वीकानेर सुंदर वृहत्स्वरतर
 गण घणे ॥ गणधार कीर्ति सुरिंद पाठक रामगणि रुद्धिसार ए, इ
 म करिय स्तवना सुय महोदय सदा जयप्रकार ए ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ गणधर तपस्या विधिः ॥

॥ शुभ दिन गुरुके पास ११ गणधर तप ग्रहण करै. ११
 दिन उपवास वा एकैसणां करै. जिस दिन जो गणधर मादारा
 जंका तप होय उसी नामका २००० गुणना करै ॥

॥ अथ इग्यारे गणधरोका नाम गुणनो ॥

१ श्रीइंझूतिगणधरायनमः २ श्रीअभिज्ञूतिगणधरायनमः

- ३ श्रीवायुजूतिगणधरायनमः ४ श्रीव्यक्तजूतिगणधरायनमः
 ५ श्रीसुधर्मास्वामीगणधराय० ६ श्रीमन्मिहस्वामीगणधराय०
 ७ श्रीमोर्यपूत्रजीगणधरायनमः ८ श्रीअकंपितजीगणधराय०
 ९ श्रीअचलजीगणधरायनमः १० श्रीमेतार्थजीगणधरायनमः
 ११ श्रीप्रज्ञवजीगणधरायनमः

॥ यह ११ गणधर जगवंत श्री महावीरस्वामीके शिष्य जातिके ब्राह्मण थे, विद्यमान द्वादसांगीके रचना करणेवाले ज्ञेये, इस वास्ते मंगल जाणके यह तपस्या करै, गणधरपदकी आराधना करै, गोतमरास सुणे, पूर्ण होणेसें गणधरोकी पूजा करावै, आचार्य उपाध्यायादिककी ज्ञति करै, यथाशक्ति परमान्न भोजनसे साहमी बद्ध करै ॥ इति एकादश गणधर तपविधिः ॥

॥ अथ सर्व तपस्या प्रथम गुरुके पास ग्रहण करै सो विधि ॥

प्रथम ५ साधियां करै (नमंतसामंत) यह गाथा पढ़के शक्ति मुजब ज्ञान पूजा करै, इरियावही पम्किने, एक लोगस्सका काजसग करै, पार कै प्रगट लोगस्स कहै, नीचा बैठकै मुंहपत्ती पम्किने है, दो वांदणा देवै, स्थापनाजी को खमासमण देई (जगवान अमुक तप गहणत्थं चेश्यं वंदावेहं) एसा कह चैत्यवंदन करै, एमो-
 नुणं इत्यादि अरिहंतचेश्याणं अन्नबु० कह ४ घुई कहै, चौथी गाथा कहकै नीचा बैठके एमोनुणं कहै, फेर खमा होके (श्रीशांतिनाथस्वामी आराधनार्थ करेमिकाजसगं अन्नबु०) कहकै १ लोगस्सका काजसग करै, पार कै नमोर्हतसिद्धा० कहकै (श्रीमतेशांतिनाथाय, नमःशांतिविधायिने ॥ स्त्रैलोक्यस्यामराधीस, मुकुटाज्यर्चितां हृथे ॥ १ ॥ यह घुई कहकै (शांतिदेवताआराधनार्थकरेमिकाजसगं अन्नत्पु०) कहै, एकेक नवकाराका काजसग करै, घुई पढै, (शांतिः शांतिकरः श्रीमान्, शांतिदिशतुमे गुरुः ॥ शांतिरेव सदातेषा,

येषांशांतिर्गृहे २ ॥१॥) पीठे श्रुतदेवताकी क्षेत्रदेवताकी ज्योतिर्देवता-
 की स्तुति कान्तसंग एकैक नवकारका करके अनुक्रमसें कहे. पीठे
 शासनदेवताका कान्तसंग एक नवकारका करै (यापातिशासनं जैनं,
 संद्यप्रत्यूहनाशनी ॥ सान्निप्रेतसमृध्यर्थं, जूयाञ्चासनदेवता ॥१॥)
 पीठे समस्त वैयावृति कर आराधनार्थं करैमि कान्तसंग अन्नबु०
 एक नवकारका कान्तसंग करै, पार के (श्रीशक्रप्रमुखाय स्वाहा, जिन-
 शासनसंस्थिताः ॥ देवान् देव्यस्तदन्येपि, संघरक्षन्त्वपायतः) यह
 शुई कहै नीचा बैठके नमोत्युणं कहै, जयविराय पर्यंत चैत्यवंदन
 करै, फेरं खमासमण देके (जगवन् अमुक तप ग्रहणं करैमि
 कान्तसंग) एक लोगस्तका कान्तसंग करै, पार के प्रगट लोगस्त
 कहै, खमासमण देके ३ नवकार गुण. फेर खमासमण देके
 (इच्छकार जगवन् अमुक तप ग्रहण दंभक उच्चरावो जी) गुरु कहै
 (उच्चरावेमो) पीठे (अहसंजंतेतुह्माणांसमीवे अमुकतवंउपसंपञ्जा-
 चाणंविहरामि ॥ तंजहा दवन् कालन् जावन् दवन् अमुकतवं
 खित्तणंइत्तावा अन्नबुदा कालन् जावपरिमाणं जावन् जाव-
 गहेणंनगहिज्जामि जावबलेणंनठलिज्जामि सन्निवाएणंनज्जविज्जामि
 जावअस्सेणवा केणइरोगायंकादिपरिणामवसेण एसोमेपरिणामोनप-
 रिवज्जइ तावमेएसतवो अन्नबुदायाजियोगेणं गणाजियोगेणं बलाजि
 योगेणं देवाजियोगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तोक्तारेणं अन्नत्थणाजोगेणं
 सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहितियागारेणं वोंसिरामि॥)
 जो तप ग्रहण करै उसी तपका नाम लेके गुरुके पास ३ बेर यह
 पाठ सुणे, गुरु नहीं होय तो आपनाचार्यजी समझै तीन बार यह
 पाठ पढ़ै, पीठे गुरु कहै (हत्थेणं सुत्तेणं अत्थेणं तडुज्जयेणं सम्मं-
 धारणीयं गुरुगुणेहिंबुद्धाहि नित्यारगपारगाहोहि) एसो गुरु कहै.
 पीठे खमासमण देके गुरुमुखे पञ्चखाण करै अथवा गुरु नहीं होय

तो आप मुखे करै. इति सर्व तपस्या ग्रहण विधिः संपूर्ण ॥

॥ अथ सर्व तप पारणविधिः लिख्यते ॥

प्रथम ज्ञानपूजा करै इरियावही पम्किमे, अमुक तवपा० मुहपत्ती पम्किहै २ वांङणा देवै (इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन्नुप्पेअम्हं अमुक तप पारावेह) गुरु कहे (पारावेमो) इच्छामिख-मासमणो० इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् अमुक तप निस्समणत्वं करेमि काउसग्गं अन्नत्तू० कहेके १ नवकारका काउसग्ग करे, स्तुतिकी गाथा कहे, पीठै एमोत्तूणं कहे, बैठकै जगवन् अमुक तप करतां अविधि आशातनायें करी जो कोइ दूषण लागो होय सो मन वचन कायायें कर मिच्छामिउक्कमं. और ज्ञानज्जत्ति इव्यसें जावसें किया होय सो प्रमाण फल दायक होणा. गुरु कहे (नि-आरगपारगाहोह) पीठे पच्चरकाण करै, अमुक तप आलोयण नि-मेत्तं करेमि काउसग्गं अन्नत्तू० कहेके ४ लोगस्सका काउसग्ग करै, अगट लोगस्स कहे, पीठै उपगरण पात्र जत्त पानादिकसें साधुज्ज-त्ते करै. अपनी शक्ति मुजब जैनशास्त्रके पढेवाले तथा पढा-गेवाले विद्यागुरुकी ज्जत्ति करै, साहमी वज्जल करै, पहरावणी करै, पीठे याचकोंका दान सन्मान करै ॥ इति सर्व तपस्या पारण विधि ॥

॥ अथ उपधान तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ श्रीमहावीर धरम परगासै, बैठी परखद वारजी ॥ अमृ-त वचन सुणी अति मीठा, पाने हरख अपार जी ॥ १ ॥ सुणो २ ॥ श्रावक उपधान वह्या विन, किम सुजै नवकार जी ॥ उत्त-म अध्ययन बहुश्रुत अध्ययने, एह जण्यो अधिकार जी ॥ सु० ॥ २ ॥ महानिशीत सिद्धांत मांहे पिला, उपधान तप विस्तार जी, अनु-त्तम सुद्ध परंपर दीसे, सुविहित गह्व आचार जी ॥ सु० ॥ ३ ॥ तप उपधान वह्यां विन किरिया, तुह अलप फल जाण जी, जे

उपधान बह्यां नर नारी, तेहनो जनम प्रमाण जी ॥ सु० ॥ ४ ॥
 तप उपधान कह्यो सिद्धांते, जो नवि माने जेह जी ॥ अरिहंतदेव-
 नी आण विरायै, जमस्यै जव२ तेह जी ॥ सु० ॥ ५ ॥ अघज्या
 घाट समा नर नारी, विन उपधाने होय जी ॥ किरिया करता
 आदेश निरदेश, काम सैरै नहि कोय जी ॥ सु० ॥ ६ ॥ इक धेवरने
 खांने जरियो, अतिघणो मीठो आय जी ॥ एक श्रावक उपधान वेह
 तो, धन३ ते कहिवाय जी ॥ सु० ॥ ७ ॥ (ढाल २) ॥ नवकारतणो
 तप पहिलो वीसम जाण, ऽरियावहीनो तप बीजो वीस
 म आण ॥ इण बिहुं उपधाने निश्चै नाण मंमाण, वारे उपवासै
 गुरु मुख वे वे वाण ॥ ८ ॥ पैत्रीसम त्रीजो एमोत्रुणं उपधान,
 त्रिण वायण उगणोस तप उपवास प्रधान ॥ अरिहंतचेई तप चो
 यो चोकर एह, उपवास अढाई वाण एक गुण गेह ॥ ए ॥ पांचमो
 लोगस्त तप अढावीसम नाम ॥ साढापनरह उपवास वायण त्रि
 ण ठाम ॥ पुस्करवरदी तप ठगे ठक्रम सार, साढात्रण उपवासे
 वाण एक सुविचार ॥ १० ॥ सिद्धाणंबुद्धाणं सातमो उपधान म
 ल, उपवास करै इक चोविहार ततकाल ॥ एक वाणि करै वलि
 गुरुमुख सरस रसाल, गठनायक पासै पहरै माल विशाल ॥ ११ ॥
 माल पहरण अवसर आणी मन उठंग, घर सारू वारू खरचै धन
 बहु जंग ॥ अति उठव कीजै रातीजोगो दिख खोल, गीत गान गवा
 वै पावै अति रंगरोल ॥ १२ ॥ (ढाल ३ ॥) ए साते उपधान,
 विधिसों जे वडै, ते सूयो किरिया करै ए ॥ खिण न करै परमाद,
 जीव जतन करइ, पूंजि२ पगलां जरै ए ॥ १३ ॥ न करै
 क्रोध कयाय, इम३ हसै नही, मरम केहनो नवि कहै ए ॥
 नाणे घरनो मोह, उत्कृष्टी करै, साधुतणी रहणी रहै ए ॥ १४ ॥
 पहुर सीम सिझाय, करि पोरसि जशी, उंचै स्वर बोलै नही ए ॥

मन माँहें जावै एम, धन २ ए दिन, नरञ्जव मोहि सफल सँदी ए
॥ १५ ॥ जे साते उपधान, विध सेती वहै, पहिरै माल सोहामणी
ए ॥ तेहनी किरिया शुद्ध, बहु फल दायक, करम निर्जरा अति-
धली ए ॥ १६ ॥ परञ्जव पामे रुद्धि, देवतणां सुख, बत्तीसवद्ध
नाटक पमै ए ॥ लानै लील विलास, अनुक्रम शिवसुख, चढती
पदवी जे चढै ए ॥ १७ ॥ (कलश) इम वीर जिनवर जुवन
दिनयर माता त्रिसला नंदणो, उपधानना फल कहै उत्तम जवि-
य जन आनंदणो ॥ जिनचंद युगपरधान सदगुरु सकलचंद मुनी
सरो, तसु सीस वाचक समयसुंदर जणै वंछित सुखकरो ॥ १८ ॥
इति सात उपधान गर्भित स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ संघ मालारोपण विधि लिख्यते ॥

प्रथम मालारोपणके मुहुर्त्तके पहिले दिन मध्याह्न समे सु-
हागणस्त्री चांदी आदिके आलके अंदर कुंकुमका साधिया करकै
ऊपर चावलौका करै, पांच सुपारी १ नालेर धरकै माला पधराके
सुहागणस्त्री अपणें हाथसँ सिर पर धरै, पीठें सब संघ समेत गीत
गाते वाजित्र वाजते गुरु पास आवै, सधवस्त्री गुंढली करै, छुर
स्त्रियां गहुंली गावै, पीठें गुरु उर्ध्व सासँसँ वर्द्धमान विद्यासँ मंत्रकर
वासकेपसँ माला प्रतिष्ठित करै, यथा ॥ उँहँहीणमोअरिहंताणं ।
उँहँहीणमोसिद्धाणं । उँहँहीणमोआयरियाणं । उँहँहीणमोउवझायाणं ।
उँहँहीणमोलोएसद्धसाहूणं । उँहँहीणमोअरदुल जगवउ वद्धमाणसा-
मिस्त ॥ जएविजये जयंते अपराजिए सबदसिद्धिए उँहँही ठः ठः ठः
स्वाहाः ॥ इति वर्द्धमानविद्याः ॥ पीठें वाजित्र वाजते स्वस्थानके
आवै, बाजोट पर आल रस्कै, धूप दीप संयुक्त रात्रीजागरण करै,
श्रीफलादिककी प्रज्ञावना करै, पीठें मालाआदक प्रज्ञात समे प्रति-
क्रमण करकै पमिलेइण देववंदनादि करकै जिनपूजा करै, पीठें

मुहुर्तकी वखत बाजिर्त्रादि उज्जव संघ समेत गुरु पास आवै, पाच श्रीफल रोक इव्य हाथमें लेके पदले जो नांदकी थापना करी हे- नांद कहीये समोसरणका चित्रपट सो वसी ठवणी पर मोलीसे लपेटके आपे सो उस नांदके च्यारों खूणों पर च्यार साधिया कुंकुं नर चावलोका करके नारेल नर रोक मोहर वगेरे जेट करै. साधि- यों पर अछे विदामादि फल चढ़ावै. पीठे मालाग्राहक चरवला मुहपत्ती हाथमें लेके गुरुके संग इरियावही पम्किमे. पीठे आवक खमासमण देके आवकमुहपत्ती पम्किहै, फेर खमासमण देके इच्छकारजगवन् तुझे अम्मं संघपति मालाआरोहावणि देववंदा मणि वासनिक्षेप करो. तब गुरु वासक्षेप करै. पीठे फेर खमास मण देई तुझे अहं संघपति माला आरोहावणी देववंदावो, गुरु कहे वंदेइ, आवक इच्छं कही गुरुके साथ देववंदन करै ॥

॥ अथ देववंदन विधिः ॥

॥ प्रथम खमासण देके इच्छा० जगवन् चैत्यवंदन करुं. गुरु कहे करेइ. पीठे गुरु चैत्यवंदन बोलै. आवक एमोबुणं कहे अरिहंत चेइयाणं क० कहके एक नवकारका काजसग करै, नमोईत्सिद्धा० कहके गुरु स्तुति कहै. यथा ॥ अहंतनोतुसश्रेय। श्रियंयध्याननोनरैः । अप्पेडीसकला त्रेहि । रहंसासहसोव्यते ॥ १ ॥ पीठे लोगस्सज्जो० सबलोए० वंदणव० अन्नबु० कहके १ नवकारका० स्तुति कहै. उमितिमंताय । शासनस्थनतासदायदंहीच । आश्रियंतेश्रियांते । जवतोशजिनापातु ॥ २ ॥ पीठे पुस्करवर० वंदन० कहके १ नवकारका० स्तुति कहै. नवतत्त्वयुतात्रिपदी । मिश्रेतारुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता, वरधर्मकी र्त्तिविद्या । नद्यास्याज्जैनगीज्जीयात् ॥ ३ ॥ पीठे सिद्धाणंबुद्धाणं० त तः श्रीशांतिनाथ आराधनार्थं करेमि काजसगं वंदणव० अन्नबु० कहके एक लोगस्सका काजसग करै, नमोईत्० स्तुति कहै ॥ श्री

शांतिश्रुतशांति । प्रशांतिकोवशांतिमुपशांति । नयतुसदायस्यपदा ।
 सुशांतिदाःशांतिजिने ॥ ४ ॥ ततः द्वादशांगीआराधनार्थं क० वं०
 एक नवकारका० पारके नमोर्दत्तसि० ॥ सकलार्थसिद्धिसाधन । बीजो
 पांगासदास्फुरदुपांगा । जवतादनुपहतमहा । नमोपहाद्वादसांगीव ॥
 ५ ॥ ततः सुयदेवयाए आराधनार्थं करेमि कान्तसगं अन्नबु० कहके
 १ नवकारका० नमोर्दत्तसि० ॥ वदवदतीवागवादनी । जगवतिकःश्रु
 तगमेबु । रंगसरंगमितिवर । तरणीस्तुज्यंनमश्तिदः ॥ ६ ॥ ततः
 शासनदेवता निमित्तं करेमि का० अन्नबु० १ नवकारका० स्तुति॥
 उपसर्गविलयवियन । निरत्तीजिनशासनावनैकरता । हतमिहसमिही-
 तत्कृते । स्थुशासेनैदेवताजवतु ॥ ७ ॥ पीठै समस्त वेयावञ्चकरा-
 णं शंतिकराणं सम्मदिदिसमाहिकराणं अन्नबु० १ नवकारका का-
 न्तसग स्तुति०॥ संघत्रयेगुरुगुणोघनिधोसुवैया । ब्रत्यादिकृत्यकरणैक
 निवद्धकृता । तैशांतयेसहजवंतुमुरासुरीजिः । सष्टृष्टयोनिखिलविघ्न
 विधातदक्षा ॥ ८ ॥ प्रगटपणे एक नवकार नमोबूखं जावंतिचे०
 नमोर्दत्तसि० कहकै स्तवन कहै ॥ नैमितिनमो जगवत । अरिहंत
 सिद्धाचारियजवजाए । वरसवसाहूमुणिसंघ । धम्मतिज्यपवयण
 स्त ॥ १ ॥ सप्पणवनमोतहजगवइ । सुयदेवयाइसुहयाए । सिव
 संतिदेवयाय । सिपवयणवदेवयाणंच ॥ २ ॥ इंदागणीयमनेरइया ।
 वरुणोवायुकुवेरईसाणा । वंजोनागुत्तिइशम । मवियसुदिसाणपाला
 ण ॥ ३ ॥ सोमयमवरुणवेसमण । वासवाणंतहयपंचण्हं । तहलोगपा-
 लयाणं । सुराई गहाणयनवन्हं ॥ ४ ॥ साहंतस्तसमरकं । मझमिणंचेव-
 धम्मणुठाणं । सिद्धिमविग्गंजुत । जिणाणंनवकारज्जणियं ॥ ५ ॥ इति
 स्तवनं ॥ जयवीराय कहै पीठै जगवान आगे परुदा करकेमालाग्राह
 क गुरुकूं द्वादशावर्त्त वंदनार्थे वांढे, पीठै खमा होके कहै इच्छकार
 ज० तुझे अहं संघपति मालाआरोहावणी उद्देसावणी नंदीसुत्र

संज्ञलावली कान्तसंग करावो. गुरु कहे करेह. इहं. संघपतिमाला
 आरो० उद्दे० करेमि कान्तसंगं अन्ननु० कहके ? लोगस्तका का०
 प्रगट लोगस्त कहे, गुरुजी कान्तसंग करै, पीठै मालाग्राहक खमा
 समण देइ इहाकार जगवन् नंदीसूत्र संज्ञलावो, तब गुरु खमा
 होकर हाथमें वासकपे लेके तीन नवकार सुणावै, नित्यारगपार
 गाहोइ कहके मस्तक पर वासकपे करै, पीठै श्रावक खमासमण
 देके इहा० संघपति माला उद्देसन्, गुरु कहे उद्देसन्, फेर श्रावक
 इहामि० इहाका० किंजणामी, गुरु कहे वंदित्पवेइ, खमासमण देके
 इहं तुह्ये अहं संघपति मालान्दित् इहामो अणुसतिं उदिदि२ ख
 मासमणां इत्येणं सुत्तेणं अत्येणं तद्वज्जयेणं जोगकरीजाहि गुरु
 गुणबुद्धीजाहि नित्यारगपारगाहोइ, फेर खमासमण देइ तुह्याणं
 पवेशेणं संदिसइ साहुणंपवेशमी, गुरु कहे पवेश, पीठै खमासमण
 देके तीन नवकार गुणता जया नांदकूं तीन प्रदक्षिणा देवे वासकपे
 चढावै, गुरु ? प्रदक्षिणा देवे, पीठै मालाग्राहक मूहपत्ती पनिलेहै,
 खमासमण देके इहाका० तुह्याणंपवेशयं संदिसइजगवन् कान्तसंगं
 करेमी इहामी० इहाका० जगवन् तुह्ये अहं संघपति माला उद्दे
 सामणी आरोहावली करेमिकान्तसंगं अन्ननु० कहके ? लोगस्तके
 कान्तसंग प्रगट लोगस्त कहे पीठै खमासमण देके वेसणो संदिसानं
 दूजै खमासणे वेसणो वाजं, पीठै खमासमण देके जो विधि करत
 अविधि आसातना लागी होय ते सहु मन वचन कायार्थ करी नि
 इति नांदकी क्रिया ॥ पीठै मालाग्राहक जगवानके नव अंग नव र
 थिया मोहर वगेरे चढाके नमस्कार करै, मुंडुर्त्तकी वखत मंदरजी
 बाहिर जमीन खुदी होय तो जगवानके सनमुख सर्व संघ आय
 खमा रहे, पीठै मालाग्राहक गुरुके पास आके नव अंग पूजा करे, न
 कपिया मोहर आदि ज्ञान निमित्ते जेठ धरै, पीठै गुरु उर्ध्वभासे माला

हाथमें लेके ७ नवकार गुणै, पीठै जो माला पहिरावै जिसको माला पहिरायेवाला यथाशक्ति पहिरामणी करै. माला पहिरायेवाला उर्ध्व-
श्वासै करी संघपतिकों माला पहिरावै, दोनुं जणें ८ दिन तक सच्चित्त
कुशीलादिकका गुरु पास पञ्चखाण करै, पीठै मंदरजी पर चढ़ाए-
की थजा सो संघपति थालमें लेके मंदिरजीके बाहिरकर तीन प्र-
दक्षणा देकर गुरु पास चासकेप पूजन कराके मंदिरजीके ऊपर
चढ़ावै, पीठै सर्व संघके सामने गुरु धर्मोपदेस देवै, साधमी वात्स-
ल्य करै ॥ इति संघपति मालारोपण विधिः ॥

॥ अथ उपधान तप विधि लि० ॥ नित्यकर्त्तव्यता यथा ॥

॥ नित्यकर्त्तव्यता कुछ तो शास्त्रोके लिखतसैं कुछएक दे-
देखलेमें आई जो परंपरा सो लिखते हैं ॥ उपधानवाला श्रावक
विगयोमेंसैं एक घीहीज लेता हे उर विकृती नहीं लेता १, उप-
धानमें तीस विगयोंकी नीवीतोंमेंसैं एकही नीवीता लेणा का-
रणयोगसैं खांम वगेरे लेणेकी जयणा २, उत्कट इव्यादिक नही
लेणा ३, घी तेलका वधारचा साग जी नहीं लेणा धूंगाखा हुवा
लेणा ४, हरासाग नीलोती नहि लेणा ५, तलाहुवा प्रापर सीरा
वगेरे नहि लेणा ६, अन्न पुरषणेवाली रात्री प्रायश्चित्त करणेसैं
स्त्री शुद्ध होती है अन्यथा नही ७, अन्न पुरषणेवाली स्त्री फटावस्त्र
अथवा कारीलगावस्त्र नहि पहरे ८, नोजन करणेकी जगा ऊरू
वगेरे देणेवाली व्रत प्रायश्चित्त करै अखंमित वस्त्र रखे तो शुद्ध ९,
जितने वस्त्रादि उपकरण तप प्रवेशके प्रथम दिन पासमें रखे हैं
वो सब नोगानोगकी दोनों वखत पमिलेहणा करणी १०, जीनणके
ठिकाणे जो जो थाली कटोरा वगेरे रखेहे वो सब नोजन करे जिस
दिन पादोनपोरसीमें पमिलेहणाकी वखतही पमिलेहणा दूसरी
वखत अन्यथा नही ११, कदाचित्-हार कुंमलदिक गहणा अपणे

शरीरसें उतारके अपने घरादिकमें रखा होय तब विना उपधान-
 वाली जो स्त्री अठपहरी पोसा लिया हुवा होय तिसके हाथसें
 रातका दिनका नही वह उपधानवाहीकूं देवै नर वोही स्त्री प्रजात
 समें उनके कहे मुजब ठिकाणे धरदेवै ११, उपधानमें सर्व वस्त्र
 आप अथवा मातृकणके हाथसें पन्ध्रह्यां शुद्ध होय १२, सब
 क्रिया अनुष्ठानादिक आदेस निर्देसादिक मातृकणके आदेससें शुद्ध
 होय १३, क्रिया अनुष्ठानकी कराणेवाली मातृकण जी दोनुं वखत
 पन्ध्रक्रमण करै रात्री प्रायश्चित्त करै सात बेर देव वांछे तब शुद्ध
 होय अन्यथा नही १४, रजस्वलाके तीन दिन तपमें नही गिणे
 जाय १५, महास्वध्याय संबंधी आसोज सुदिकी तथा चैत्र सुदिकी
 सातम आठम नवम दिन तीन तपस्यामें नही गिणे जाय १६,
 प्रतिक्रमणमें प्रजात समें नवकारसीकाही पञ्चस्काण करै पीठे
 क्रिया करती वखत गुरुके पास उपवास १ अथवा आंघ्रिक
 २ नीवी ३ अथवा एकासणोका ४ करै १७, पञ्चस्काण पारती
 वखत पहली नवकारसी पारै पीठे उपवासादिक पारै १८, पहले
 दो उपधान तप ग्रहण करणेके दोनों दिन नंदीके आरुंवरसें देरी
 हो जाती हे इस वास्ते अठपहरी पोसा वण नहि आता इस
 वास्ते तीसरे पहरकी पन्ध्रहण किये बाद सर्वोपगरणोके पन्ध्र-
 हणके रातकूं निश्चै पोसा लेणा २०, प्रजातसमें उपधानवाही गुरु-
 के पास आयके इरियावही पन्ध्रहणके पोषय वपुन सामायक लेके
 वस्त्र पन्ध्रहण नर अंग पन्ध्रहण करै, पीठे मुहपत्ती पन्ध्रह-
 णके (उहीपन्ध्रहणसंदिस्तानं उहीपन्ध्रहणकरुं) ऐसे खमासण
 होय देवे पीठे ठव वंदन दिये बाद खमासमण दश देवै उसका
 क्रम ऐसे हैं बहुवेलंसंदिस्तानं १ बहुवेलंकरुं वैसणोसंदि० वैसणो-
 गानं० सिझायसं० सिझायक० पांगरणोसं० पांगरणोपन्धिगहुं

कंठासणोसं० कंठासणोपनिगहूं) एवं१० ॥ २१, पीठै वंदन दिया
 वाद सुख तप पूछा २२, सांजकूं जी यही क्रिया करणी लेकिन
 इतना विशेष हे पट पमिलेहणा नर अंग पमिलेहणा तो करै परंतु
 उपधि पमिलेहण नही करै, पीठै गुरुवंदन ठव दिये वाद स्वमासमण
 दस देवै (नहीपमिलेहणसंदिस्सा० नहीपमिलेहणकरूं सिज्जायसं०
 सिज्जायक० वैसणोसंदिस्सा० वैसणोठाउं) बाकी पहलीकी तरै २२,
 न्यारा पमिक्कमणा होणोसैं पाकीवंदना सुखतपपूछना पर्यंत क्रिया
 सब करदेना २३, माला पहरणोमें सांजकूं माला मंत्रायके अपने
 घर रात्रीजागरण करकै प्रज्ञातसमें आचार्य पास माला पहरणी
 तिसके वाद दिन दश तक दशाहिका करणी उहां पोसा नही
 लिया हुआ जी हे तो जी तिविहार एकासणा करताजया निरा-
 रंजी होकर रहै २४, सज्जी उपधान उत्कृष्ट विधिसें वहना, उसके
 अज्ञावमें श्रावक एकांतर उपवास नर साधुओंने उपवास आमल
 निवी एकासणा करकै उतनेही उपवासकी संख्या पूर देणी लेकिन
 दिन संख्याका नियन नहीं हे ॥ इति नित्यकर्तव्यता समयसुंदरो-
 पाध्याय कृत संस्कृतोपरिअस्मद् कृत ज्ञाषा संपूर्ण ॥

॥ अथ उपधान तप विधि लिख्यते ॥

पंच मंगल श्रुत नवकार जिसका उपधान वहणेवाला बारे
 उपवाश अथवा चोवीस आंबिल ३५ नीवी अरुतालीस एकासणा
 करके १२ उपवासकी पैठ पूर कर पीठै पांच अध्ययनकी वाचना
 नमो अरिहंताणंसें लेके नमो लोएसवसाहूणं तककी १ वाचना
 एक दिनमें लेवे, तिसके वाद तीन अध्ययनकी वाचना एसोपंचनमो-
 क्कारो १, सबपावप्पणासणो २, मंगलाणंचल्लवेसिं पढमंहवइमंगल ॥ एवं
 ३, अध्ययनकी दूसरे दिन एक वाचना करै, फेर इस नवकारके आठ
 अध्ययनोंकी एकही वाचना एक दिनमें लेवे तो ठवतो आंबिल करै,

फेर तेला करे, तेलेके पारणे आंखिल करै, फेर तेला करै, फेर आंखिल करे, फेर तेला कर पारणा करके आठ अध्ययनौकी एकही दिनमें वाचना लेवे. आठ आंखिल ३ तीन तेला मिलाएते उपवास १२ जये. यह पंच मंगल नवकारका पहिला उपधान अविविसें करे तो पोसा २० वीस करै उपवास १२ करै, विधिसुं वहे तो १६ पोसा उपवास १२॥ यह पहिला वीसरुतर्प २०॥ अब दूसरा इरियावह्नीका उपधानमें आठ अध्ययन तीन अंतकी चूला उसमें जी अगलेकी तरेही १२ उपवासादिक पीठे इच्छाकारेणसंदिस्तहसुं लेकर जेमे जीवाविराहिया तक एक वाचना लेणी, एगेदियासं लेकर ठामिकानुसंगं तक दूसरी वाचना देणी, नर एकही वाचना लेणी होय तो पहली तरे आठ आंखिल ३ तेला करके लेवै॥ इरियावह्नीका श्रुतस्कंधका तप वीसरु नामका अविविसें पोसा २० उपवास १२, विधिसुं वहे तो पोसा १६ उपवास १२॥ ॥ अब तीसरा जावारिहंतका तीसरा उपधान जगणीस उपवासाकी पैठरकर वाचना ३ लेवे सो इस सुजव. पहली १ तेला करै पीठे नमोब्रुणंसे लेकर गंधद्वीणं तक पहिली वाचना लेवे, फेर १६ आंखिल करै, लोगुत्तमाणंसे लेकर धम्मवरचानुरंतचक्रवट्टीणं तक दूसरी वाचना लेवै २, पीठे सोले आंखिल करके अप्पमिहयवरणाणंसे लेकर सवेत्तिविहेणवंदामि तक तीसरी वाचना लेवै ३, यह तीसरा उपधान नमोब्रुणका पैत्रीसरु नामका जिसमें उपवास १९ विधिसुं वहे तो पोसा ३५, अविविधिसुं करता पोसा उपवास ॥ ॥ अथ चोआ स्थापना अरिहंत श्रुतस्कंधका उपधान अध्ययन तीन, जिसमें पहली १ उपवास कर ३ आंखिल तीन करै. अरिहंतचेइयाणं इहांसे लेकर वंदणवत्तियाए अन्नञ्जुत्तसीएणं अप्पाणं वोसिरामि तक १ वाचना लेणी. यह आपनारिहंतका

चोथा उपधान चतुर्कर्म नामका जिसमें पोसा ४ उपवास १॥
 अठाई ॥ ॥ नामारिहत चतुर्वीसत्येका पहले तेला करै, पीठै
 लोगस्तनज्जोयगरे इहांसे लेके चतुर्वीसंपिकेवली तक पहली वाचना
 लेवै, फेर बारे आंबिल करके नसज्जमजियंचवंदे इहांसे लेकर पास-
 तद्वदमांछ तक दूसरी वाचना देणी, फेर तरे आंबिल करके एवम-
 एअजित्युआसे लेकर सिद्धासिद्धिममदिसंतु तक तीसरी वाचना
 लेवै, ए नामारिहत चतुर्वीसत्येका अठावीसकनाम तप विधिसुं व-
 दतां दिन २० पोसा २० उपवास साढापनरे एकांतर करै, अवि-
 धि करता दिन अठाईस पोसा २० उपवास साढासतरे ॥ ५ ॥

सुत्रार्थश्रुतस्कंध पहली १ उपवास पीठै ५ आंबिल पीठै पुकर-
 वरदीवठेसे लेकर सुयस्तजगवतकरेमिकानसगं तक एक वाचना
 देणी, यह ठा उपधान श्रुत्रार्थक नाम ठकन पोसा ६ उपवास
 साढातीन ॥ ६ ॥ ॥ अथ सिद्धार्थकश्रुतस्कंध सातमा उपधान
 पोसह समेत चोविहार उपवास १ करै, पीठै सिद्धार्थबुद्धार्थसे ले-
 के तारेइनरिवनारिवा तक एक वाचना देणी, यह सातमा उपधान
 मालाका तप ॥ ७ ॥

॥ अब उपधान तप प्रवेश विधि लिख्यते ॥

॥ जब वहीत श्रावक अथवा वहीत श्रावकएया उपधान
 वहे तब तो संघके नामसे चंद्रमा अछा देखणा, संघकी कुंजरास
 हे, अगर एक श्रावक अथवा एकही श्रावकणी उपधान वहे तो
 अपणे नामसे चंद्रबल लेवै तथा उपधानवाही सांजहुं वाचनाचार्य
 के पास आयके इरियावही पन्तिकमके स्वमासमण देके कहे (अमुक
 उपधान तपे पवेतह) गुरु कहे (पवेसामो, नवकारसी करणा अंग
 पमिलेहण संदिस्साणा) तब उपधानवाही कहे (तद्वत्ति) इहां जमा
 श्रमण दिये वाद चोवीहार करै, चाहेपाणी पीवै वा अथवा जोजन

करे व्यवस्था नहीं है, अथ किसी जी कारण करके सांजकू खमासण नहीं दिया होय तो तब पम्निकमणोंके वखतसे पहली पिठली रातकू जी खमासण देणा काल वखत पम्निकमणा करणा नवकारसीका पञ्चस्काण मालकण पास करणा पीठै सूर्य उदय जये वाद वाचनाचार्य पास आणा, तहां पहले दो उपधानमें (नवकारके उर इरियावहीके) तो प्रारंभमें अवस्य नंदीकी स्थापना करणी उर उत्क्षेप जी इन दोनों उपधानोंका नंदीमेंही करणा, इस उपरांत बाकी उपधानोंमें नंदीका नियम नहीं है, तिसके बाद प्रजातसमें पहले उत्क्षेप करणा, तिसके बाद पोसा सामायक लेणा, पीठै दो वांदणा देके पञ्चस्काण करणा, फेर मुहपत्तीपूर्वक सुखतप पृष्ठा वांदणा होय देवै ॥ इति उपधान तप प्रवेश विधि ॥

॥ अय उपधान तप उत्क्षेप विधिः लिख्यते ॥

॥ पहले इरियावही पम्निकमके मुहपत्ती पम्निलेहके दो वांदणा देवै, खमासण देके उपधानवाही कहे (पहले उपधानमें पंच मंगल महासुयस्कंध तवंउरिक्वह) गुरु कहै (उरिक्वामो) पहले पंच मंगलउपधान महाश्रुतकंध उस्केवावणियं नंदीपवेसावणियं कान्तसगं करावेह, गुरु कहै करावेमो, पहले उपधान पंच मंगल महासुयस्कंध उस्केवावणियं नंदिपेवसावणियं करेमिकान्तसगं अन्नन्नउससिएणं इत्यादि कान्तसगमें चंदेसुनिम्मलयरा तक चिंतवै, पार के प्रगटलोगस्त कहे, पीठै खमासण देके पहले उपधान पंच मंगल महा श्रुतस्कंध उस्के वावणियं चेइयाइवंदावेह, गुरु कहे वंदावेमो, वासक्केपंकरावेह, गुरु कहे करेमो, पीठै वासक्केपपूर्वक संपूर्ण चैत्यवंदन करै, ऐसें सर्व उपधानोंमें उत्क्षेप जाणना, इतना विशेष हे पहले दो उपधानोंका उत्क्षेप नंदीमेंही करणा बाकी उपधानोंके विषे सो जब नंदी होय जब तो नंदीमें करे जो नंदी नहीं आपे तो प्रातसमे प्रवेश

के दिन उत्क्षेप करणा, लेकिन जो जो उपधान रहे उसका नामोच्चारण करणा ॥ इति उत्क्षेप विधिः ॥

॥ अथ वाचना विधिः ॥

॥ सांजकूं पहिले चोविहारका पञ्चस्काण कर इरियावही पनिकमके मुहपत्ती पनिलेहके दो वांदणा देवै पहले उपधान पंच मंगल महा श्रुतस्कंधका प्रथम वाचना प्रतिग्रहण निमित्त करेमि कां उसगं अन्नबू० कहेके कांउसग सागरवरगंजीरा तक लोगस्स विचारे, पार के प्रगट लोगस्स कहे, दोय खमासमण देके इच्छाकारेण संदिस्सह प पहिले उपधान पंचमंगल० प्रथम वाचना प्रतिग्रहणार्थं चेइयाइ वंदावेह, गुरु कहे वंदावेमो. वासक्षेपकरावेह, करावेमो. पीठै गुरु वासक्षेप करै, पीठै चैत्यवंदन करै, पीठै खमासण देके उपधानवादी दोनुं हाथोंमें मुहपत्ती लेके मुखकूं ढांककर अर्द्धवनतगात्री होयके चार तीन पांचों अध्ययनोंकी वाचना देवे, वाचनामें मिञ्जामिडुक्कं एसें सब जगे वाचनान्जिलाप जाणना ॥ १ ॥ इति वाचना विधिः ॥

॥ अथ तपः संपूर्ण क्रिया निक्षेप विधिः ॥

॥ अथ तपस्या पूर्ण होय उस आखरी दिनको सांजकूं चोविहार करके अथवा प्रज्ञातसमें इरियावही पनिकमके मुहपत्ती पनिलेहके दो वांदणा देके उपधानतपवादी कहे—इच्छाकारेण तुषे अम्हं अमुक तवंनिस्सिवह, गुरु कहे निस्सिवामो. फेर खमासण देके कहे—इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् अमुक तप निस्सिवणं कां उसगं करावेह, गुरु कहे करावेमो. इच्छामि० अमुक तप निस्सिवणं करेमि कांउसगं अन्नत्थू० कहेके एक नवकारका कांउसग करके खमासण देवै, अमुक तप निस्सिवणं चेइयाइ वंदावेह. वंदावेमो गुरु कहे. पीठै संपूर्ण चैत्यवंदन करै ॥ इति निक्षेप विधिं ॥

॥ अथ पडिपुत्ता विगय पारण विधि लिख्यते ॥

प्रज्ञातसमें गुरुके पास आयके न्यारा प्रतिक्रमण किया इत्त

वास्ते मुहपत्ती पन्निहके वंदन ठव देवे (दो वांदणा देवै इसीकूं
ठव वंदन कहतै हे) गुरूके साथ पन्निहमणा कीया होय तो वा-
दिणा दोयही देवै, पीठै गुरु कहे पवेयणंपवेह एसा कहके कहे प
रुपुसोविगयपारणयंकरेहत्ति, पीठै अपणी इच्छानुसार पञ्चरकाण-
करै पीठै गुरूके सामने कहे उपधानमें अन्नक्ति आसातना करी
होय तस्त मिच्छामिडुकमं ॥ इति ॥

॥ अथ क्षमाश्रमण विधि लिख्यते ॥

॥ उपधान वहणेवाला प्रज्ञातसमें गुरू पास आयके गुरूकी
आज्ञासैं इरियावही पन्निहमके आगमन आलोचकर पोसा सामायक
लैके दोय खमासणपूर्वक पन्निहहणा नर अंगपन्निहहणा करै, पीठै
मुहपत्ती पन्निहके पहिले खमासणसैं उहीपन्निहहणसंदिस्ताएमि,
दूसरी खमासण देके उहीपन्निहहणकरूं, पीठै मुहपत्ती पन्निहके गु-
रुकूं ठव वंदन देवै पीठै गुरु कहे—पवेयणं पवेयह. उपधानवाही कहै.
इच्छा ० अमुक उपधान निमित्तं निरुद्धं वातवंकरावेह. गुरु कहे उप-
धासे आंवले निरुद्धेति एकाशणे, एसा कहे, पीठै दश खमासणसैं
अनुक्रमसैं कहै—बहुवेलंसंदिस्तावेमि १, बहुवेलंकरेमि २, वइसणं
संदिस्तावेमि ३, वइसणं ठाएमि ४, सझायंसंदिस्ताएमि ५, सझा-
यंकरेमि ६, पांगरणोसंदिस्ताउं ७, पांगरणोपनिगहूं ८, कठासणो-
संदिस्ताउं ९, कठासणोपनिगहूं १०. पीठै मुहपत्ती पन्निहके दो
वांदणा देवै, गुरु कहे सुखतप. उपधानवाह। कहे, तुमारे प्रसाद ॥
इति प्रज्ञात विधि ॥ अब तीसरे पहरकी पन्निहहणा जये वाद
स्थापनाके आगे मालकणीके हुकमसैं इरियावही पन्निहमके पहिले
खमासणसैं पन्निहहण करूं १, दूसरी खमासणसैं पोसहसावा
प्रमाळु २, एसा कहके मुहपत्ती पन्निहके, एसैं दो खमासण देणो-
पूर्वक अंग पन्निहहणा नर मुहपत्ती पन्निहके. इहां अंग शब्द करके

कटिपट्ट (अर्थात् कणदोरा जाणना) ऐसा गीतार्थ कहते हैं. पीठे वसति प्रमार्जकरं तहां जो उसही दिन नोजन कीया होय तब तो पहरे वस्त्र पमिलेहे, बाकीके अवशेष वस्त्र नहीं पमिलेहे, जो उस दिन उपवास होय तब तो एकजी वस्त्र नहीं पमिलेहे. पीठे गुरु पास आयके इरियावही पम्किमके पमिलेहणा १, अंगपमिलेहणा २, फेर गुरुके सामने करे. पीठे सिंझायसंदिस्साएमि सिंझायंकरेमि आठ नवकार गुणे. पीठे मुहपत्ती पमिलेहके ठव वांदणा देवै. पीठे त्रिविहार अथवा चोविहारका पञ्चस्काण कर दस खमासण अनुक्रमसँ इस मुजब देवे—उहीपमिलेहणसंदिस्सां १, उहीपमिलेहणकरं २, सिंझायसंदिस्सां ३, सिंझायकरं ४, बइसणोसंदिस्सां ५, वैसणोठां ६, कठासणोसंदिस्सां ७, कठासणोपमिग्गहुं ८, पांगरणोसंदिस्सां ९, पांगरणोपमिग्गहुं १०. पीठे मुहपत्ती पमिलेहके दो वांदणा देकर सुखतप पूठै, पीठे सर्वोपगरण पमिलेहे, मातृका (पालसिया) प्रमुख पमिलेहै, तथा जिस दिन नोजन करै उस दिन पूण पहरकी पमिलेहणकी वखत थाली कटोरादिक सर्व उपनोगके पात्रादिक पमिलेहै, उपवासके दिन नहीं पमिलेहे ॥ इति तीसरे प्रहर क्रिया विधि ॥ तथा पाखीपम्किम अंगामें असिंझाईका काउसग नही करे तो आवती परकी तक सर्व अंतकी असिंझाई होय, इरियावहीका पाठ जी गुण्या नहीं सूजै. इस वास्ते असिंझाईमें जी असिंझाईका काउसग करणा. युगप्रधान श्रीजिनचंद्रसूरजी महाराजनें महोपाध्याय श्रीसागर चंडगणिकूं पूठा तब ऐसाही जबाब दिया योगारंजकी यह विधी है ॥ इहां चउमासीमें योगारंजमें वर्षकी महीनेकी शुद्धिका मुहुर्त्त नहि देखणा, दिन शुद्ध देखणा ॥ मृडधुवचरक्षिपेः । वारेजोमं शनिंविना ॥ आद्याटनंतपोनंथा । लोचनादिसुजं २ ॥ १ ॥ इति

आचारदिन करे ॥

॥ अथ उपवान तप विवरन गाथा ॥

॥ श्रीमुहपत्तीपन्नासं । अठारसआसणम्मिपन्निहेहा ॥ दंमे
पत्तेसोलस । कप्पेपणवीसगोअमा ॥ १ ॥ पणवीसचोवपट्टे । गुरु
कंबलतइयच्चेवसंथारे ॥ कढासणेअठारस । जपेदंमेअपंचेव ॥ २ ॥ इति ॥
प्रतिलेखणा विचारः ॥ पणउववासायाम । अठयंकुणइअठमंअंते ॥
नवकारउवहाणं । इत्तियमित्तंइरियाए ॥ १ ॥ सकठयंमितहएगं ।
अठमंअंविवाणवत्तीसं ॥ अरिहंतचेइयठए । चउत्थमायामत्तियगं
च ॥ २ ॥ चउवीसठएमठम । मेगंपणवीसहुंतिआयामा ॥ नाण
उयंमिचउठं । आयामापंचउवहाणं ॥ ३ ॥ चउवीसंउववासा । ए
गासीअंविवाणसवंगं ॥ पंचोत्तरंचपोसहसय । सुवहाणेसुजाणेसु ॥
४ ॥ बारसवारसएगो, पणवीसअट्ठाइपाणपन्नरस ॥ अठयउववासा
। सवंगंसठचउसठी ॥ ५ ॥ नवकारसहियपोरसी । पुरमठअवठएगउ
जंतेहिं ॥ इगठाणयनिविगई । विलेहिंअठं वलेणंच ॥ ६ ॥ पणया
लाचउवीसं । सोलसचउइहिअठहिकमेणं ॥ चउइउहियएणेणय ।
आयरणाइोइउववासे ॥ ७ ॥ इति उपधान तपोगाथाविधि संपूर्ण ॥

॥ अथ रुषिमंडल मंडल पूजा लिख्यते ॥

॥ प्रथम १४ तीर्थकरोंके नामकी चिठियां लिखके बीच मं-
रुलमें २४ कोठोंमें धरे, इति चतुर्विंशति तीर्थकराः हैं। नमः १ क्रौं-
नमः ववववववववववववववव १, ववववववववववववववव २, वववव-
वववववववववव ३, ववववववववववववववव ४, उँ हैं। अर्हज्योनमः
उँ हैं। सिद्धेज्योनमः उँ हैं। आचार्येज्योनमः उँ हैं। उपाध्यायेज्योनमः
उँ हैं। सर्वसाधुज्योनमः उँ हैं। ज्ञानेज्योनमः उँ हैं। दर्शनेज्योनमः उँ हः
चारित्र्येज्योनमः ॥ इति प्रथम वलय १ ॥ दूसरी वलयमें दश दिग-
पालोंके नामकी दस चिठी दश कोठोंमें धरे ॥ इति द्वितीय वलय २ ॥

तीसरी बलयमें नव ग्रहोंके नामकी नव कोठेमें नव चिह्नियां ॥ इति
तृतीय बलय ॥ इसके उपरांत अकारादिक सोलें स्वर उकारादिक
तेतीस वर्ण इन्द्रजुति आदि इग्यारे गणधरोके नाम नुँह्नी युक्त लि-
खें. पीठै अमृतालीश लब्धिपद नुँह्नीअर्द्ध एसा आदिमें देकर लिखें
॥ अमृतालीश लब्धिपदोंके नाम नवपद मंरुलपूजामें लिखे हे उस
मुजब लिखे. पीठै चौबीस तीर्थंकरोंके पिता नुँनाजयेनमः १ इ-
त्यादि लिखे. पीठै नुँमरुदेवायैनमः इत्यादि चौबीस तीर्थंकरोंके
माताका नाम लिखे ॥ नुँह्नी नुँह्रियैनमः १, नुँश्रियैनमः २, नुँघृत्यै-
नमः ३, नुँलक्ष्म्यैनमः ४, नुँधूमगोप्यैनमः ५, नुँचंरुयैनमः ६, नुँसरस्व-
र्यैनमः ७, नुँजयायैनमः ८, नुँअंबायैनमः ९, नुँविजयायैनमः
१०, नुँक्लिन्नयैनमः ११, नुँअजितायैनमः १२, नुँनित्यायैनमः १३,
नुँमदद्रवायैनमः १४, नुँकामांगायनमः १५, नुँकामबाणायैनमः
१६, नुँसानंदायनमः १७, नुँनंदमालियेनमः १८, नुँमायात्यैनमः
१९, नुँमायावित्यैनमः २०, नुँरौद्र्यैनमः २१, नुँकालायैनमः २२,
नुँकाल्यैनमः २३, नुँकालप्रियायैनमः २४. एसे श्रीदेव्यादि चौबी
सोंके २४ कोठेमें नाम लिखे. इसके बाद २४ यक्ष नर २४ यक्ष-
णीका नाम लिखे. १६ विद्यादेवीका नामकी स्थापना लिखे, पीठै
नव निधानोंके नाम लिखे, फेर चौसठ इंडोंके नाम लिखे. पहली
वीशस्थानक मंरुलपूजामें लिखा हे उस मुजब. इस मुजब लिखके
अष्ट सिद्धिका नाम लिखे नुँअणिमसिद्धयेनमः १, नुँगरिमसिद्धये-
नमः २, नुँत्रधिमसिद्धियैनमः ३, नुँप्राकास्यसिद्धयेनमः ४, नुँमहि-
मसिद्धियैनमः ५, नुँईसित्वसिद्धयेनमः ६, नुँविसित्वसिद्धयेनमः
७, नुँप्राप्तसिद्धयेनमः ८, इति अष्ट सिद्धिः नामानि ॥ नुँश्रीधरणें
डोरकतुः १, श्रीपद्मावतीरकतु २, श्रीगौतमस्वामिनेनमः ३, श्रीवै-
रोद्यारकतु ४. इति श्रीरुषिमंरुल पूजन विधि संपूर्ण. एण पदोंमें

द्रव्य नवपदमंजल बीस स्थानक मंजलपूजा मुजब चढ़ावै ॥

॥ अथ शांतिक पूजाविधि सर्व उपद्रव शांत्यर्थ लिख्यते ॥

॥ शुभ दिन शुभ मुहूर्तमें जिनमंदिरमें समवसरण पर जिनप्रतिमा स्थापन करावै, आगे पंचपरमेष्ठीपट्ट स्थापन करै तथा जगवनाके दहिणे पासे दश दिग्पालपट्ट नुर बांधे पासे नव ग्रह का पट्ट स्थापन करै, पीछे एक वस्त्र एक बड़ा मट्टीआदिकका हंसा ऊपर खमी सपेदमट्टी पोतके चार२ केसर कुंकूका साधिया करै, पीछे उंची नीची दोय टिवची काठकी बांधे, नीची टिवची पर मोटा हंसा धरै, उंची पर बड़ा हंसा धरै, हंसाके तले एक बिंदु करै, दोनुं मटकाके अंदर साधिया करै, वस्त्र मटकेकी टिवची नीचे चावलका साधिया करै, ऊपर नालेर रुपिया आपनाका धरै, दोनुं मटका ऊपर मोलीसूत्र बटके पंचरंगी खजली एकेक खूणें २१ इक्कीस२ पोंकर चारों कोणोंमें ८४ खजली पोंके तणी बांधे, नालेरके आकार मोलीसूत्र को दसो नीचला मोटा हंसामें लटकतों रखके ऊपरकी मोली बड़ा हंसाके बिंदुमें पोंकर ऊपर जो चौ खूणी तणी बांधीदे जिसके बीचमें गांठ देवे, पीछे जो संघ समुदायकी तरफसे शांतिक पूजा होय तो मंदिरजीका कलश लेवै नुर एक जणकी तरफसे होय तो शांति कराणेवालेके घरसे-ती सधवस्त्री जिसका माता पिता सासू सासरा चारों मावित्र जीता होय, जिस स्त्रीकुं अन्ना वस्त्र आभूषण पहिरायके कलशके अंदर कुंकूमकेसरका साधिया करके चावल सुपारी पंचरत्न की पोटली धरके मुख पर नारेल ठकणे माफक वस्त्र धरके ऊपर लाल कसुंमल वस्त्र मोलीसें बांधे, ऊपर कलशके चारों तरफ चार साधिया कर स्त्रीके मस्तक पर रखके गीत गानपूर्वक वाजित्रादि अनेक उद्भव समेत जिनमंदिरमें लावे, समवसरणके स-

मुख चावलोंका साधिया करके ऊपर कलश स्थापन करै, पीठे पाच दश जणा ड्ये जर जावे अपना अंग शुद्ध करै, गुरुके पास से केसर मंत्रायके तिलक करै. इत्यादि सर्व विधि इहांसे आगे नव ग्रह दश दिग्पालका आह्वान ^{रूप} ~~रूप~~ ^{पुरुष} ~~पुरुष~~ ^{धृ} ~~धृ~~ ^{ति} से देववन्दन वगेरे करे सो सब विधि पूर्वे लिखी है ^{गणितः ने शि} ~~गणितः ने शि~~ ^{के} ~~के ^{बलबाकुल} ~~बलबाकुल ^{सब} ~~सब ^{देके} ~~देके ^{पीठे} ~~पीठे सुंदर अंगोपांगवाले ^{पुत्रादि संयुक्त} ~~पुत्रादि संयुक्त ^{विवेकगुणधारक} ~~विवेकगुणधारक~~ आठ स्नात्रिया मुखकोश बांधके तीन १ नवकार गुणे, जिसमें दो स्नात्रिया दो नालीवाला कलश हाथमें लेके मटकाके दोनों तरफ खमा रहै, एक स्नात्रिया धूप खेवता रहै, १ स्नात्रिया फूल चंदन वासक्षेप चढाता रहै, दो स्नात्रिया लोटोंमें जल जरके दोनों तरफ धारा देणेवाले कलशोको पूरता रहै, दो जणे दोनों तरफ चमर हुलता रहै. प्रथम गुरु आदि सकल संघ सात २ नवकार गुणे, स्नात्रिया एकेक नवकार गुणके एकेक धारा देवै, एसे सात धारा देवै तब गुरु मधुरस्वरें स्पष्ट अक्षरोंसे नमोर्हत्सिद्धाचा ० कहके अजितशांति प्रमुख साते स्मरण गुणें. पीठे ज्ञतामर वमीशांति बोटीशांति गुणें, तथा सकल संघमें जिसको साते स्मरण वृद्धशांति आती होय तब तो गुरुके संग अपने मनमें गुणता रहै, जर नहि आवे तो संघ सर्व नवकारमंत्र गुणता रहै, जहां तक साते स्मरण शांति गुणे तहां तक अखंड ऊपरले बोटे कलशोंमें धारा देता रहै, बीक कोई नही करै, आपसमें दूसरी संसारी विकथा न करे, साते स्मरणादि सर्व गुणें पीठे तीन नवकार गुणके कलस धरे, पीठे नीचेके हंमेमेसे जितप्रतिमाकूं निकालके अग्नी तरे अंगलूहणा करके केशर पुष्पादिकसे पूजा करै, जगवानकी अग्नी तरे अंगी रचना करै, नानाप्रकारका नैवद्य फल चढाके आरती जतारै, मंगलदीपक करै. पीठे शांतिजल सर्व संघ लगावै.~~~~~~~~~~~~

अपने घरोंमें ठाटे, शांतिपूजाकी मोली गुरूके पाससे लेके राखनी बांधे. इससे संपूर्ण संघमें नगरमें देशमें मरी आदिक सर्व रोग दोष दूर होके शांतिकर्म्म अनेक प्रकारसे रुद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकी प्राप्ति होय. परागे पंचमालवाकुल परातमें रस्का आ सो लेके गुरु पूर्वोक्त क्षात्रिदिग्पालपट्ट उगल विसर्जन विधि पूर्व लिखी हे उस मंत्रोंसे विसर्जन करके ठोटा शांतिक पूजा विधि सं०

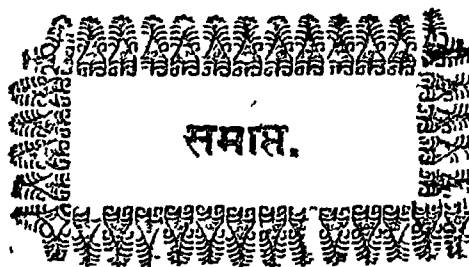
॥ अथ पंच तीर्थ आरती लिख्यते ॥

॥ पहली आरती प्रथम जिणंदा, सत्रुंजय मंमण रूपज जि-
णंदा ॥ जय२ आरती आदि जिनंदकी ॥ दुसरी आरती मरुदेवी-
नंदा, जुगला धरम निवार करंदा ॥ ज० १ ॥ तीसरी आरती त्रि-
जुवन मोहे, रत्नसिंघासन म्हारा प्रज्जुजीने सोहे ॥ ज० ॥ चौथी
आरती नित्य नई पूजा, देव रुषजदेव अवर न दूजा ॥ ज० २ ॥
पंचमी आरती प्रज्जुजीने जावे, प्रज्जुजीना गुण सेवक हम गावे ॥
॥ ज० ३ ॥ आरति कीजै प्रज्जु शांतिजिनंदकी, मृग लंठनकी में
जाजं बलिहारी ॥ जय५ आरति शांति तुमारी ॥ विश्वशेन अचि-
राजीको नंदा, शांतिजिनंद मुख पूनमचंदा ॥ ज० ४ ॥ आरति
कीजै प्रज्जु नेमजिनंदकी, शंख लंठनकी में जाजं बलिहारी ॥ आ०
समुद्रविजय शिवादेवीकों नंदा, नेमिजिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ०
५ ॥ आरति कीजै प्रज्जु पाशजिणंदकी, फणंद लंठनकी में जाजं
बलिहारी ॥ आ० ॥ अश्वशेन वामाजीके नंदा, पाशजिनंद मुख
पूनमचंदा ॥ आ० ६ ॥ आरति कीजै महावीर जिनंदकी, सिंह
लंठनकी में जाजं बलिहारी ॥ आ० ॥ सिद्धारथ त्रिसलाकों नंदा,
वीरजिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ७ ॥ आरति कीजे चौवीश जिनं-
दकी, चौवीस जिणंदकीमें जाजं बलिहारी ॥ आ० ॥ चरण कम-
ल नित सेवित इंदा, चौवीश जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ८ ॥

(७८३)

जैसे, उस शाखामें जगत्पुज्य श्रीसाधूगुणसें विराजेमान
 गोलगणिः परमगुरु ज्ञेये, जिनोके शिष्य पंक्ति श्रीकुशलनि
 मुनिः ज्ञेये, उन परमपुरुषसाधूजी माहाराजका चरणाब्जचं
 कि ७० श्रीरामलालगणिः ने शिष्यमंजरी पं । केमचंदमुनिः चि ।
 चंद अमरचंदादि शिष्योके तथा पाठशाला श्रीबीकानेर वास्तव्य
 क विद्यार्थियोके लिये पंच प्रतिक्रमणादि नित्यकर्तव्य सर्व जी
 के उपगारार्थ उपायके प्रसिद्ध करा हे.

ठिकाणा पुस्तक मिलखे का बीकानेर बन्ना उपसारा विद्या
 ला ७ । श्री । परमोपगारी युक्तिवारिधिः । रामलाल ज । गणिः ॥



करजोमी सेवक इम बोलैं, नहि कोइ माहरा प्रभुजीने तोले ॥ इति ॥

॥ अथ चक्रेश्वरीदेवी आरती लिख्यते ॥

॥ जय१ आरती देवी तुमारी, नित्य प्रणमुं हुं तुम चरणारी

॥ ज० १ ॥ श्रीसिद्धाचल गिरि रखवाली, नाम चक्रेश्वरी जग सौ-

ख्याली ॥ ज० २ ॥ सुविहित गङ्गनी शासनदेवी, सकल संघने

सुख करेवी ॥ ज० ३ ॥ निलवट टोलनी रत्न विराजै, काने कुंम

ल दोय रवि शशि ठाजै ॥ ज० ४ ॥ बांहे बाजूबंध वोरखा सोहे,

नीलवर्ण सहु जनमन मोहे ॥ ज० ५ ॥ सोवनमय नित्य चूनी

खलके, पाये घूघरमा घमघमघमके ॥ ज० ६ ॥ वाहन गरुड चढ्या

बहु प्रेमे, तुऊ गुण पार न पामु केमे ॥ ज० ७ ॥ चूनी जन्मां

देह अति दीपे, नवसरा हारे जग सहू जीपे ॥ ज० ८ ॥ नित१

मानी आरती ऊतारे, रोग सोग जय दूर निवारे ॥ ज० ९ ॥ तसु

घर पूत्र पुत्रादिक ठाजै, मन वंछित सुख संपद राजे ॥ ज० १० ॥

देवचंड मुनि आरति गावे, जय१ मंगल नित्य वधावै ॥ ज० ११ ॥ इति ॥

॥ अथ चोपड खेलण विचार स्तवन ॥

॥ राग सोरठी ॥ अरे माहरा प्राणीया, चतुरनर, चोपरु इण

विध खेल रे ॥ अशुभ करम मल ऊरकै च० ॥ जाजम कर वैराग

रे, बनीय विठायत वैस जो च० ॥ जहू नही कुमतिको लाग रे ॥

अरे० १ ॥ दान शील तप जावना च०, चोपरु एह प्रसार रे ॥

आठ दाव इक बोलमैं च०, आठ० ॥ निवार रे ॥ अरे प्राणा त

देव गुरु धर्म तीनूं जला च० ॥ श्रीरि जी जान रे ॥

हाथे लिया च०, उज्जल लेख ॥ एसी अ० ३ ॥

चारित्र जला च०, तीनूं गु० ३ इति; नही नव त या

धरो च०, ए सब सोला सचिहुं उर मन व पमकी सा

दे च०, पोबारा व्रत धार रे तु गिरना सदा में

कर हियै विचार रे ॥ अ० ५ ॥ पट् काया ठकनी पनी च०, हिर-
 दे दया विचार रे ॥ पुन्य नदय पंजनी पनी च०, पंच महावन धार
 रे ॥ अ० ६ ॥ च्यार तीन काणा पञ्चा च०, सातुं विसन निवार
 रे ॥ जे डुरगति दायक सही च०, बाधे अनंत संसार रे ॥ अ०
 ७ ॥ चिहुं गति बाजी लग रही च०, डुख सहा जरपूर रे ॥
 करम कटै सुख ऊपजै च०, रतनसागर कहे सूर रे ॥ अ० ८ ॥ इति

॥ अथ सेतुंज खेलन विचार स्तवन लिख्यते ॥

॥ सेतुंज खेल खिलारी, सब समझ देख सेतुंजकी घात,
 लख दोनं दल अपने परायैकी जात ॥ कान विध कर मोह वाद-
 स्याकों मात, जब जाणु तोय चतुर खेल खिलार ॥ हे से० १ ॥
 आहुं कर्म पिपादे आगे फुकतेही आवै, काम क्रोध गज चलत श्रंज
 त नहीं श्रंजै ॥ लोच ऊंच चारुं खूटकी मरोम चल ध्यावै, मान
 माया के तुरंग चाल चपल दिखावै ॥ मिथ्यामत सो वजीर वीर
 वाके दंग ठामो, वाके मारवैकों दा ॥ ~~पणो संजारे~~ ॥ हे से० २ ॥
 तेरे ग्यान सो वजीर वीर तेरे दंग ठामो, आगे अंग समकित
 के पिपादे हलकारो ॥ ~~संग सांढिया सवार पर सांढियाको~~
 नारो, सत्य वचन तुरंग ~~सु~~ तुरंग निवारो ॥ कृमा शील दोय
 फील राखो दलकै अंग ~~ही~~, पर दल कर मारो ठिनमें संहार ॥
 हे से० ३ ॥ जप तप स ~~व्रत याके घेरे चिहुं नर, जब वाकै चल-~~
 नइ रहै नही गोरे ~~तेरी होगी जीत दूजो हारेगो~~
 सुजशको ~~बंधेगो मोरु, ठामे इंद्र धरणेंद्र~~
 वर, तेरे ~~गुण अगाह ॥ हे से० ४ ॥~~
 खेल

स्तवन लिख्यते ॥

महरदी करणा हो, टु० ॥ में

हुं अधम पापकी मूरत, मेरा दोस न धरणा हो ॥ तु० १ ॥ अ-
ष्ट जवनकी प्रीति हमारी, नवमे जव निरवाहना हो ॥ तु० ॥ २ ॥
रूपचंद जगतनकी वीनती, आवागमन निवारणा हो ॥ तु० ३ ॥
इति पदम् ॥ पुनः ॥ लोक चवदके पार किनारे, पूरण ब्रह्म-
का वासा हे ॥ लो० ॥ पैतालीस लाख जोजनकी शिक्षा, फिटक
रंतन उजासा हे ॥ लो० ॥ निरमल जोत विराजै साहिब,
ग्यान ध्यान परकासा हे ॥ लो० १ ॥ पंच वरणकी धजा
फरुके, क्या कहूं अब तमासा है ॥ नाथ निरंजन
नाम तुमारो, नरनकी क्या आसा है ॥ लो० २ ॥ चौसर ईश ख-
मे बाँके द्वारे, खिजमत बंदा खासा है ॥ रूपचंद कहे नाथ निरं-
जन, चरणकमलका दासा है ॥ लो० ३ ॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥
सखि सध बनठन, सखी० ठाढ़े नाज़ि नृपतजूके द्वारे आगे ॥ स० ॥
रिपज्ञकुमारको जनम जयो हे, मंगल मुस्क उचारै री ॥ स० १ ॥
ताल मृदंग राबाब मधुरी धुनि, बीणा बाजे सुर तारे ॥ नाचत हां
व जाव करी राजत, ताँ - लेत सुर तारे री ॥ स० २ ॥ सुरवनिता
मिल गई बधाई, मोति ॥ स० ३ ॥ जगबंधव जगपतिकुं निर-
आनंद हर्ष अपारे ॥ स० ३ ॥ इति पदम् ॥ पुनः
जेन तेरे दरस पर ॥ इकर हो जि० ॥ तुम विन जवरमें
7दा, अब मैसी नर ॥ गु० ५ ॥ हो० १ ॥ अष्ट काम में
हैं, उनकूं वे ॥ या० ॥ सरण गहे आणा न
॥ इति द गुणामी, ? ॥ श्री ॥ नूदम् ॥
हे, महा० ॥ जिनंदन वैर ॥ एसी ॥
री, विध जु जीत० ३ इति; नही माह ॥ रु या
॥ प दी० २ ॥ गिरना सदा में ॥ मुझ ही सा

रूपज्ञदास पूरो आस गुण गाउं रे ॥ म्हा० ३ ॥ इति पदं ॥
 पुनः ॥ मन लीमो हमारो जिनचरणा रे, पोत जलधि जवतर
 णा रे ॥ म० ॥ आदि पुरुष जगतारण निसुण्यो, कर्म विकट धन
 हरणा रे ॥ म० १ ॥ नाजि तात मरुदेवी माता, नंद रूपज्ञ सु
 खकरणा रे ॥ म० २ ॥ सिद्धपादिक प्रगटन जग तत्पर, कुमतांग
 दल टरनां रे ॥ म० ३ ॥ सारंग दृग शशि वदन मनोहर, अं.
 कनक सम वरणा रे ॥ म० ४ ॥ श्रीजिनहंस सूरिश्वर जंपै, जिन
 समरण दिल धरणा रे ॥ म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग जिंजोटी ॥ २ ॥ ॥ अजित अजित जिन ध्या
 न, म्हारे मन रे अ० ॥ जितशत्रु विजयाको नंदन रे, वंदन त्रय युत
 ज्ञान ॥ म्हा० १ ॥ त्रिहुं जगतारन टारन अघको रे, वारुं तन धन
 ज्ञान ॥ म्हा० अ० २ ॥ जिन वचनामृत पान करीजै रे, केवल
 निरमल ग्यान ॥ म्हा० अ० ३ ॥ श्रीजिनहंस सूरि प्रभु पाए रे, निवृ
 त्ति पुरंदर स्यांन ॥ म्हा० अ० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ यह
 अरजी मोरी सहियां, मोहे तारल गहव हिया ॥ य० ॥ में नाहि
 जाणूं सहियां, य० ॥ में तारण रण दयायो ठै, में यातें शरणो ग
 हियां, इनतें उवार लहियां ॥ य० ॥ निवारं ॥ इन करमनके वश
 हुयकै, में जटक्यो चिहुं गति मरि दल य० मो० १ ॥ हित करकै
 दाश निहारै, करजोमि पमि हुं याकै घेपेशव देति क्युं न सहियां
 ॥ य० मो० ३ ॥ इति पदं ॥

तेरी

बंधेगो मोर गोमोराय अरज सु
 १ गुणगने, दिलजर दरशण
 रसण दीजै, सकल करम
 सौहन पत्तणो, प्रहजगी प्रण
 ॥ तु मेंना प्रभु इण दिल

चसणावे, तेंना तो गुण सुर गावंदा हो ॥ प्र० १ ॥ संतके सागर
 गुणके आगर, जोही ध्यावे सो पावंदा हो ॥ प्र० २ ॥ तुमहो त
 त्वज्ञानके दाता, जिवजन ताप मिटावंदा हो ॥ प्र० ३ ॥ कहै जि
 नचंद ऐसे प्रभु मेरे, चरणकमल चित्त ल्यावंदा हो ॥ प्र० ४ ॥
 इति पदं ॥ पुनः ॥ हम जाणतहें तुम तारोगे, हम० ॥ ना-
 जिराय मरुदेवीको नंदन, मेरी तर निहारोगे ॥ हम० १ ॥ आदि
 जिनेसर अंतरजामी, खामी कबुन विचारोगे ॥ हम० २ ॥ जगजीवन
 जगतारक तुमहो, एही विरुद संजारोगे ॥ हम० ३ ॥ श्रीजिनसौजा
 ग्य सूरिंदके साहिव, जवजल पार ऊतारोगे ॥ हम० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ पंथीमा पंथ चलेगो, प्रभु जजले दिनचार ॥ पं० ॥ जूठी
 काया जूठी माया, जूठो सब परवार ॥ पं० १ ॥ बालपणमें खेल गमायो,
 जोवन मायाजाल ॥ पं० २ ॥ वृढापण आयो धरम न पायो, पीठे
 करत पुकार ॥ पं० ३ ॥ क्या ले रहत त्या ले जायगो, पाप पु
 ण्य दोष लार ॥ पं० ४ ॥ दया जोरे आधार ॥ पं० ५ ॥ इति पदं कित जू

जोमे थारे कोण जुमेगो ॥ पाप जवाणो कर जाणो, प्रभुजी
 तूं तारण संसार ॥ जो० १ ॥ तूं तूं नहि बनो ॥ राग
 जलायो नवकार ॥ जो० २ ॥ सुजाव ॥ प्र० ३ ॥
 जव२ देज्यो दीदार ॥ जो० ४ ॥ सुगु ॥ प्र० ५ ॥

॥ राग खंजायची ॥ या० ॥ एक मोर पप ॥
 ॥ भ्रमत२ लख चौरासीमें, १ ॥ श्रीजि ॥ दान व्रत
 कैसे० १ ॥ ए रिपु कर्म वैर ॥ एसी ॥ लखकी,
 ॥ म० कैसे० २ ॥ जो जीव० ३ इति नही ॥ सुक ॥ या
 काज सा ॥ म० कैसे० ३ चिहुं नर मन व ॥ जंही सा
 वाजे वैज ॥ सरणाईनु गिरना सदा में ॥ जंही सा

वै ॥ महा० १ ॥ इंडाणी मिल मंगल गावै, मोतियन चौक पुरावै
 वै ॥ महा० २ ॥ सेवग प्रजुजीसैं अरज करै वै, चरणारी सेवा
 प्यारी लागे वै ॥ महा० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग अमाणो १ ॥ मोतनकी माला जिन गल सोहे,
 मोति० ॥ मस्तक सुगट सोहे मनमोहन, कुंमल लागत वाला ॥
 ॥ जि० १ ॥ जजोरी जजो तुम लोक सहरके, नहिय जजै सो
 काला, माणक पर प्रजु महिर करो तो, अपणा विरुद संझाला ॥
 जि० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सोरठ ॥ रहै तुम आज क्युं जीवन डुराय, रहेष
 ॥ जीय जीवन सखियन में प्यारी, हारी हा हा खाय ॥ र० १ ॥
 अविरत धुंघट पट उघारी, अनुभव मुख निरखाय ॥ र० २
 ॥ जव परणित परिपाक इतै पर, आई धाई माय ॥ र०
 ३ ॥ अति आग्रह स० ३ ॥ सारकूं, जीवन कंठ लगाय ॥ र०
 ४-५ अति-प्यार ॥ महा० अ० ४४ वांकनी करमगति जाय न
 अरजी मोरी सहियां, मोहे तारल गहौनहार सो होय रही ॥ हे माय
 जाणूं सहियां, य० ॥ में तारण रण हिनकूं, राजुलकों तव चाह
 हियां, इनतें उवार लहियां ॥ य० निवा-विलख मुरजाय रही ॥
 हुयकै, में जटक्यो चिहुं गति मजिर दल पतिजगता, जानत सकल
 दाश निहारै, करजोनि पति जे याके हो, पावक कुंममें धीज दही ॥
 ॥ य० मो० ३ ॥ इति पदं ॥
 गगकाफी (को)
 तेरीशिकराजा, निज सुत कोणक
 बंधेगतकी, आपणकी अपघात
 १ भनकमें राजा, अकल कथा
 १ नटसीकी, नवल सरवमें
 १ पुनः ॥ १ ॥ प्यारो
 ॥ ॥ ग्यान जग नगुण

। वासादेवं। मातरहं न लेस ॥ म्हा० १ ॥ मोहि तिमिर डख
नागकूं तारण, मान बढ़ावत हैत ॥ चंद फतै नित एही चाहै,
रजोमीने वीन खेत ॥ म्हा० २ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥

॥ राग रमत हे, में कैसे मनाऊं री ॥ मे० ॥ सोतन
राजा विन, न रमतां, मोहि न बुलावै री ॥ मे० १ ॥ हाहा करत
जलत फिदैया परत हूं, कोइ पिया मिलावै री ॥ विरहानल अति
मेरे पिया विन, कोन बुझावै री ॥ मे० २ ॥ सुमता नंद, सोहत
नुजव आयो, सब परठ सुणावै री ॥ ग्यानसार प्यार
मिल, सोरठ गावै री ॥ मे० ३ ॥ इति पदं ॥ ४॥ इति ॥

॥ राग सोरठमलार ॥ वरषित वचन ॥ बा
मेरो, व० ॥ श्रीश्रुतज्ञान गगनतैऊमटी, ग्यानघटा, विरो रेकवु कर-
१॥ स्याद्वादनय विजुरी चमकित, देखत कुमनि शकूं उरु सेवा सु-
॥ अरथ विचार गुहर धुनि गरजित, रहत न गये जूआ जूठ पर
गु० ॥ १ ॥ श्रद्धा नदी चढी अति जोरे आंति सुहाई रे, नवजल
नरनरयो सुमतारससागर, समकित नू प्रगटे पुन्य अंकुरे चिहुं दिस, पाप जवा
इया नविजन, बोलत नक्तिनरी ॥ हंके रसें नहि ठानो ॥ राग
संजम खेती, नविक कसान करे ह सुजाव ॥ प्र
सहज स्वजाव फली ॥ हो सुगु० ॥ हो सुगु० ॥ प्र
१में रंग, वन्यो हे म्हारे ॥ या० ॥ एक मोर पपे जो
१मीको संग ॥ व० या० १ ॥ श्रीरि दान व्रत
आ अंग अंग ॥ व० या० २ ॥ एसी, २० ॥ राखकी,
में नेप्रसाद अंजंग ॥ व० या० ३ इति; नह ॥ सुक ह या
॥ रागमलार चिहुं उरु मन व ॥ सुक ह या
घन गरजै ॥ चि० ॥ नेमप्रभु गिरना सदा में ॥ सुक ह या

रसै ॥ चि० १ ॥ दाडुर मोर सोर सुण श्रवणें, नयन ज्ञे घन
जरसै ॥ चि० २ ॥ हुंढत हुंढ सकल वनशमें, कवहुं पिया ना ढर
सै ॥ चि० ३ ॥ सो दिन सफल जाणेंगे सजनी, दिवस घरी जिन
फरसै ॥ चि० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ मोरवा पपइया बोले
पीउर घनमें, नेमपिया रहे सहसावनमें, मो० ॥ निशि अंधियारी
कारी विजुरी मरावै, दूजी विरह व्याकुल जई तनमें ॥ मो० १ ॥
वरषित गरजत दाडुर, सोर करत रहे नदियां रनमें ॥
काला, मा० ॥ आणंद यह सम देखण चाहै, राजुल जई विरागण ठि
जि० २ ॥ इति पदं ॥ इति पदं ॥

॥ जीय जीवन विहाग। समझ नर जीवन धोरो, धोरो धोरो धोरो
अविरत घूंघट युधुषटत विनही, गलत जात जेसैं उरो ॥ स० १ ॥
॥ जब परणित तेन करो सो, विन मासो विन तोरो ॥ जो कबु
३ ॥ अति आयह पुनपरहो जिम मोरो ॥ स० २ ॥ तन धनं
४-५ इत्यादि ॥ म्हाजै धनधोरो ॥ रूपचंद ब्रसनाको बांध्यो,
थरजी मोरी सहियां, मोहे ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः॥ मत कर मा
जाखूँ सहियां, य० ॥ मैं ता ॥ म० ॥ वेलूकी नीत नसको मोती,
हियां, इनतेँ नवार लहियां ? म० १ ॥ दीयाँ गहरि नाव पुरा
हुयकै, में झटक्यो चिटुंगति बंदु कै कहै नाथ निरंजन, आखर जंगल
दाश निहारै, करजोरि पकि पै पदं ॥

॥ यद मो० ३ ॥ इति पं०
गगकाफी (को)

ना॥ आणेंदघन प्रभु आवसी, सेजनी रंगरोला ॥ नि० ४॥ इति पदम् ॥

॥ राग जैवंती ॥ आज तो हमारे जाग, वीरप्रभु आए
॥ आ० ॥ चंदना खनी डुवार, चितलें करै विचार ॥ देखत दी
॥ र हीया, हरख जराये हे ॥ आ० १ ॥ आज मेरी आस फली,
पली मेरी रंगरली ॥ विकसी आतम कली, प्रभु पात्र पाए हे ॥
आ० २ ॥ धन दिन आज मेरो, गयो सब कर्म जेरो ॥ सुरुत बहु
रो, जगवान दिल जाए हे ॥ आ० ३॥ सिद्धारथराय नंद, सोहत
रदचंद ॥ कहै जिनचंद चित, आनंद वधाये हे ॥ आ० ४॥ इति ॥

॥ राग परज ॥ बावरो रे आज मनवो मारो ॥ बा
गप रंगीला वाकी रंगीली, ठर रंगीलो वाको सांवरो रेकबु कर-
॥ आपन आवै वारी न लिख जेजै, प्रीत करणकुं ठरु सेवा सु-
आ० २॥ आनंदघन पिया निजघर आवै, मिट गये जूआ जूठ पर
॥ आ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग जंगलो ॥ रुषज विहारी, आंति सुहाई रे, नवजल
॥ रु० ॥ प्रथम तीर्थकर प्रथम जिनेसर,
॥ रु० १ ॥ धनुष पांचसैं मान, मनोहर सो कर जाणो, प्रभुजी
॥ रु० २ ॥ नाजिराय मरुदेवा, सुजाव नहि ठानो ॥ राग
॥ रु० ३॥ जुगलाधरम निवा, सुगुं प्रभु
॥ रु० ४॥ केवल पाय प्रभु सुगुं, एक मोर पप
॥ रु० ५ ॥ आनंदघन प्रभु एजि, दान व्रत
गरी हो ॥ रु० ६ ॥ इति पदं ॥ राग
॥ रु० ७॥ चित कबु, जंगन
॥ सु० १ ॥ ऊपर बाज, मातभरक नह
॥ सु० २॥ होणहार वश मस्य, में मन व
॥ होत पदारथ जावी न, कार सदा में

॥ नृदय करम गत देख जगतकी, जिनवर क्युं न ज्ञै रे ॥ सु० ५५ति
 पदं ॥ पुनः ॥ सहियो री मिल चालो प्रभु पूजन काज, स०
 ॥ समवसरण विच आप विराजै, वीरनाथ महाराज ॥ स० ॥ १
 श्रेणक झूप चेलणाराणी, जक्ति करत हे आज ॥ स० २॥ निज
 द्रव्य लिये पुर के जन, उमंगर गुज साज ॥ स० ३ ॥ वे प्रभु
 दोन दयाल जगतके, हितकर धर्म जिहाज ॥ स० ४॥ इति पदं ॥

॥ राग कहरवो ॥ मनवा जिनंद गुण गाय रे, म० ॥ या
 जिनजीके दरस सरसतें, दुखदोहग मिट जाय रे ॥ म० १ ॥ सद
 गुरु वचन परतीत मानले, आतमसुं लय लाय रे ॥ म० २ ॥ जव
 ॥ जीय कं सुखदाई, आनंद वंठित पाय रे ॥ म० ३ ॥ इति पदं ॥
 अविरत ६ चलो देखो री मधुवनको राव, च० ॥ वामानंदन
 ॥ जव परणि सिर पर रे वाके चमर धुराय ॥ च० १ ॥ तारण
 ३ ॥ अति आनंदके, जेटै सहु जवि चित सुख पाय ॥ च० २॥
 १०-पुर्नरि म्यांनं ॥ म्यांगो, कव फरसुं वाके मन वच काय ॥ च०
 अरजी मोरी सहियां, मोः ॥ राखुं रे हमारा घटमें, जिनराज
 जाणूं सहियां, य० ॥ में ता ॥ जाके प्रज्ञाव मेरा, अज्ञानका अंधेरा,
 हियां, इनतें नवार लहियां ॥ सुरत तेरी रागै, पेख्या विज्ञाव
 हुयकै, में जटक्यो चिहुं गति ॥ मुद्रा प्रमोदकारी, रुषजे
 दादा निहारै, करजोनि पमि ॥ हो० ३ ॥ त्रैलोक्यनाथ तुम
 ॥ य० मो० ३ ॥ इति पदं ॥ तेरे सनाथ हमही ॥ हो० ४ ॥ प्र
 गगकाफी रीको ॥ तुम रि जाखै, दिख मांज याही राखै
 व०, तेरे ॥ तेरे लो
 तेलन ॥ का क्या म
 ना ॥ तेरे लोको चाह लग्यो, सखी
 एक कहै ॥ में जाय प्रभु दीक्षा लीनी,
 ॥ य चहे प्रभु गिरनार ऊपर,

अब कैसे विसराजा रे ॥ ते० २ ॥ चैनविजै कहै धन२ राजुल,
 प्रभु चरणां चित लाजा रे ॥ ते० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः आरे-
 मुखमारी हो वारी राज, प्यारी ठवी वरणी न जाय ॥ आ० ॥
 शीस मुगट सोहै सिर टीको, काने आरे कुंमल सोहाय ॥ आ०
 १ ॥ मोहनगारी सूरत आरी, देख्या म्हारो मनमो लोजाय ॥ आ०
 २ ॥ उरऊत नेण नए दोउं निरखत, आंसु प्रभु प्रीतनी लगाय ॥
 आ० ३ ॥ जव२ पाशजिनंदजी की सेवा, एसी म्हारे दिलमेमें
 चाव ॥ आ० ४ ॥ बाल कहे तुमही प्रभु मेरे, मेरे तुम्हही सुहाय
 ॥ आ० ५ ॥ इति पदं ॥

राग काफी कानमो ॥ एसी विध तेने पाइ रे, कबु कर-
 नी करजा ॥ ए० ॥ जव जैनधर्म रुचि, सुगुरु सेवा सु-
 खदाई रे, जसु पातिहाणी, ज० ए० १ ॥ हिंसा जूआ जूठ पर
 तिरिया, परिग्रह म० हाणी ॥ जा० घट जायगा दरजा ॥ ए० २ ॥
 तप जप शंजम श० नधराणी ॥ सुमति सुहाई रे, जवजल
 निधि तरजा ॥ ए० ३ ॥ सुख वि०

रागकालिंगमो ॥ ए० सुख पाओ कर जाणो, प्रभुजी
 मो० ॥ में मतिदीण महा ह० एक पसें नहि ठानो ॥ राग
 द्वेष अरु मोह महा मद, वारी सुजाव ॥ ए० १ ॥
 ए रिपु कर्म पमयो मुकु केमोरा ॥ हो सुगु० प्र० ए० २ ॥
 दायह मांहि अलूज्यो, ज्युंआरा, ज० एक मोर पपे जोज
 जववाशी तूं सिंववासी, ज० ॥ आणार ज० ३ ॥ दान व्रत
 साम संजारो, तो हिव विणा जंगन ॥ ए० ४ ॥ राखकी,
 सदाई शिवसुख दाता, स० मातभरक नह ॥ ए० ५ ॥ सु० सु० या
 सूरिने निज वर, दीजै सु० ॥ में मन व ॥ मु० सु० सा
 रागनैरवी ॥ वी० ॥ कार सदा में ॥ सु० सु० सु०

मेहरवान जई रे ॥ वी० ॥ आप नही आवै बोधा पठावै, तेरी
सूरन कुरवान जई रे ॥ वी० १ ॥ साशशनायक एही अरज दे,
दाजै दरस वनो वैर जई रे ॥ वी० २ ॥ आस दासको पूरण
कीजै, चरण सरण लपटाय रही रे ॥ वी० ३ ॥ इति पदं ॥

राग विज्ञास ॥ जोर जयो अब जाग बावरे, जो० ॥ कोउ
पुन्य तें नरजव पायो, क्यूं सूतो अब पाय दावरे ॥ जो० १ ॥ धन
वनिता सुत तात आतकों, मोह मगन ए विकल जाव रे ॥ जो०
२ ॥ कोइ न तेरो तूं नही का को, इह संजोग अनाद सुजाव रे ॥
जो० ३ ॥ आरज देस उत्तम गुरु संगत, पाइतें बहु पुन्य प्रजाव रे
॥ जो० ४ ॥ ग्यानसार जिन मारग पायो, क्यूं मूवै अब पायनाव
रे ॥ जो० ५ ॥ इति पदं ॥

राग खट्वा ॥ जागरे सवै रै ऊरजा ॥ १० ॥ उदयो उदयाच-
ल रविमंजल, पुन्यकाल क्यूं रै फल चोर ॥ १ ॥ कमलखंम
वनं विकसानी, अजुअ न जोल दान कर ॥ जा० २ ॥ चेत-
न धर्म अनादि तुमारो, जम ॥ इति ॥ ३ ॥ जा० ३ ॥
तुम कुल दोय अवस्था पड़्यो, जम नीसाणी ॥ जा० ४
आतम रूप संज्ञार आगति ॥ ५ ॥ घर कुमति घराणी ॥ जा०
६ ॥ सुध बुध जनि पति ॥ ७ ॥ ते घट वध होत कहाणी ॥
८ ॥ य० मो० ३ ॥ इति पदं ॥ ग्यानसार पद निजर जया
गगकाफी शोको ॥ १ ॥ तुम जहाँ
रै लो ॥ सखी मेरे मन जावनो,
का क्या म ॥ २ ॥ तोरणसे रथ फेर च-
जा ॥ तेरे ॥ सां० १ ॥ नव जव नेह
क कहै ॥ रावणो ॥ आनंद राजुल
॥ २ ॥

राग ललित ॥ आज रुषज्ञ घर आवै, देखो माई आ० ॥
रूप मनोहर जगदानंदन, सबहीके मन जावै ॥ दे० १ ॥ केइ सुगता
फल माल विसाला, केइ मणि माणक लावै ॥ दे० २ ॥ हय गय
रथ पायक केई कन्या, ले प्रज्जु वेग वधावै ॥ दे० ३ ॥ श्रीश्रेयांस-
कुमर दानेसर, इहुरस वहिरावै ॥ उत्तमदान अधिक अमृतफल,
साधुकीरत गुण गावै ॥ दे० ४ ॥ इति पदं ॥

रागरामकली ॥ अंगण कलप फल्यो री, हमारे माई
अं० ॥ रुद्धि वृद्धि सिद्धि सुख संपत्ति दायक, श्रीशांतिनाथ मिळ्यो
री ॥ ह० अं० १ ॥ केशर चंदन मृगमद घोली, मांहे बराल
मिळ्यो री ॥ पूजत श्रीशांतिनाथजीकी प्रतिमा, अलग उदंग ट-
ल्यो री ॥ ह० अं० २ ॥ शरणे राख ॥ आज रे साहिब, ज्युं पारे
वो पळ्यो री ॥ समयसुंदर कहै तुंकार ॥ आज हंडरिसुं सुहलो री
॥ ह० अं० ३ ॥ इति पदं ॥ तरण जिह्वाज मोरा आतमराम,
जिनमुख जोवा जइये रे, तारो करो रे केवने सुंदरसण वै अति
दोहलो, थे ॥ म सोहीलो नेहारो रे ॥ सुख मरी ॥ खंयचटको म-
टवरी हाथ अमोलखचो रेगयो ॥ एक धरी ॥ ह० ॥ कायाध-
ट पाशजिणंदजोसुं, राजे ॥ ते ॥ सुजाव धरी ॥ सु-
पानीता मारा चेतन, करजेरीरा ॥ हो सुगु० ३ ॥ म-
चंद लहीने, कर तूं सिद्ध वटारा, ॥ एक मोर पप-
रो ॥ नज मन नाजिनंथ ॥ ५ ॥ शरणे ॥ दान व्रत
धारै, सुरनर करत हे सेज ॥ पणा जंगन ॥ २ ॥ राखकी,
॥ घ० मातबरक नई ॥ ३ ॥ मुज ह या
रंग कलव हरलै रे ॥ ४ ॥ में मन व ॥ ५ ॥ सा
मुनिजन अरु धरले रे ॥ ६ ॥ कार सदा में ॥ ७ ॥

पति वमे सुरपति, वासुदेव बलदेव ॥ नमत ब्रह्मा रुद्र नारद, शेष
मणिधर सेव ॥ ज० १ ॥ असंख्य शरण हे विरुद जाको, नक्ति-
वच्छल जेव ॥ राजसिंह प्रभु रुषज सिर पर, नाथ हे नितमेव
॥ ज० ३ ॥ इति पदं ॥

ताल छुमरी ॥ आबो नेम रहजाबो सदन, हमको न सँ
ताबो रे ॥ आ० ॥ व्याहन आये सऊके सजन, पशुवनको सुन देख
रुदन ॥ गिरनारी चलै निज ठांमी वतन, तकसीर बताबो रे ॥
आ० १ ॥ पूनम जैसे चंदवदन, मनमोहन मूरत स्यामवरण ॥
मेरी नीकी लगी नव जवकी लगन, मत बेह दिखाबो रे ॥ आ०
२ ॥ संयमदत्ती लागी प्रवण, प्रभुकुं सिखाये नीके भ्रमन ॥ सब
जुठे पमेगें कोलवच ॥ फेरी न जाबो रे ॥ आ० ३ ॥ कपूर
कहै प्रभुजीके चर ॥ पदं ॥ वैराग धरण ॥ लेन दोन नेम
जिनजीकी शरण, जाग रे सब रै ॥ गावो रे ॥ आ० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः कारिण्यं कथू - स्व फलं ददातु ।
की० ॥ अथ अजुअ नालिदान - जिन सूरत प्यारी रे ॥
- तमारे जक रउ ॥ इति करत अहोनिशि वंदन

॥ दर्शनार्थ तुमारा, जम ॥ १ ॥
॥ य अवस्था पड़्यै ॥ जाके ॥ गहारी रे ॥ की० १ ॥ अं-

॥ कदव रूप संज्ञार आ ॥ वं सध धन तरु परिमल ॥ वीच
॥ पुन विगनि वे ॥ की १ ॥ सांजरी

सुध बुध जल बुध गत मन्त्र ॥ कौ १ ॥ सावला
राजा निरुद्ध रजानि पति ॥ ॥ गते ॥ बावै ॥ प्रच अतिशय

यः सो० ३ ॥ इति पं० नैऋत्ये सना० श्री ३ ॥ सुंदर सुज्ञग

गगकाफी शक्ति
सर्वत्र ज्ञा, सर्वत्र जीव जन्म मन प्रे-

का क्या मः ॥ तोरणा दे ॥

जा ॥ तेरे । सां० १॥ जय अंगवान,
वा समोसखा

१६ कहे रावणो ॥ आ
१७ को रावणो ॥ रावणो, दु

वैकिपाविना ॥

डुख होते जनम मरण ॥ बैठ जव नयन रतना जमी रे, अनु
 शिवपुरमें हुवा अपमान, मरो अब सकूं रे, पलक न कीजै जेज
 ॥ नाम जो जिनके दान देते, आतुं कार्त्तिक सुदि निधि सार ॥
 तिनके चरण सेते, शषी सुमताकों तुम संघ जयकार ॥ नि० ६ ॥
 सूर, वरे वो जव जव सुख जैरपूर। ली जिम लीन ॥ रुद्धसार जिन
 जिन नूर हुवै डुखदूर, करो जव न सु० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ खेमटा ॥ लीजै, शर्धनाथ स्तवनं ॥
 प्रभु तुममें मिली ॥ अगहन मुख देख्यो गोमी पारसको, मेरो ज
 ल रही सहजानंद जवि चंदगो ॥ अन्य देवकूं बहुत में ध्यायो, तो
 प्रभु आनन, मुख शिखर जलैआजरे में० १ ॥ जव जटकत शरणे
 अगोचर तेरी मदि जेसे वणे लाज ॥ आजरे में० २ ॥ कमठ हरा
 मुऊकूं आश दीस तिहारो, मनवकार ॥ आजरे में० ३ ॥ रूप
 लग रही लगन सु इन, जगबंध तरण जिह्वाज ॥ आजरे में० ४ ॥
 सुनिजर प्रतिपाल सु अवतारो करो रे विने गुन ॥ अजर कर
 ५ ॥ गंज अजीम सु निहारो रे पन पर पंचव तदा पुनः
 ने० प्र० ६ ॥ इति पदं ॥ सुख मरी ॥ स्वयंकर ॥ शि०

॥ राग पीलू ॥ आयो एक धरी ॥ ह
 शरणागत तेरी ॥ आ० ॥ ते सुजाव धरी ॥ सु
 फिख्यो धरती सत्र हैरी ॥ गीरा को हो सुगु० ३ ॥ गमी
 व, आन जई तुममें जटारा, जज एक मोर पप गोमत
 वीन ॥ पारसनाथ ५ ॥ शरण जनेह दान व्रत
 गू मन राग खांवाज निशा जंगन ५ ॥ २ ॥ सुखकी,
 नरण करलै रे ॥ घ० सातभरक नह माह ॥ सुख या
 नो के सम सब हरलै रे ॥ ॥ में मन व ॥ सुख सा
 न के गुयेमें धरलै रे ॥ घ० कार सदा में ॥ सुखी
 हे शिवश

घंट वाजै धननननन, इंद्रोक्त हरखनयो ॥ जनमे वर्द्धमानकुंवर,
 वीतराग तननननन ॥ धं० १ ॥ मृदंग ताल गुण विसाल, जलरी
 नाद कुननननन ॥ धं० २ ॥ रूपचंद राग रंग, होत ध्यान
 मगनननन ॥ धं० ३ ॥ इति पदं ॥ निरंजन सांझ्यां रे, सांझ
 मेश टुकसा मुजरा लै ॥ तुम तीरथके देवता जी, हम केशरदा
 बोल ॥ कनककचोली हाथमें जी, पूजा करुं रंगरोल ॥ नि० १ ॥
 तुम अंबरदा मेहला प्रभु, हम गिरवरदा मोर ॥ रुमजुमर मेहला
 वरसे, ठमर नाचै मोर ॥ नि० २ ॥ हमगुण काली कोयली जी,
 प्रभुगुण आंवा मोर ॥ मांजरके परतापसे कांइ, करवा लागी लोर
 ॥ नी० ३ ॥ तुम हो मोतीयनकी लरी रे, हमगुण जंदा जोर ॥
 रूपचंद दिलदार मयाकर, तुम विन देव न नर ॥ नि० ४ ॥
 राग कल्याण ॥ ऐसे सहर विच कोनसाहि, प्रेम जमो निज
 नीनेजीके पवनके कांगरे, दस दरवाजै रंकरी, कंचन वरण सुवा
 पुनः केनीस नुअर, नगरकुंकरत सुवन रमण केलास ॥ व०
 की० ॥ अथ ॥ तुमारो, जमु चेतनइ अमृतालीश उदार ॥ व० ॥ का
 दरसणइ य अवस्था पड़्यै ॥ जोके इ कहिसार ॥ व० था० ११ इति ॥
 अ. कंदव रूप संज्ञार आ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 उ. सुध बुध जल बुध गति ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 दाश निहा करजामि पमि ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 ॥ य० मो० ३ ॥ इति पं ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 गगकाफी रंको ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 व०, तेरे ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 लिन ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 ॥ तुमि जा, पावै ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 ॥ ते लो ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 ॥ का क्या ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 ॥ इति पदं ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 ॥ या ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 ॥ ते हारो, निज ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 ॥ क कहै ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

गिरनारी दीपत मोहन वेलनियां ॥ २० ३॥ रूपचंद कहै नाथ नि-
 क्तवधू गुण वेलनियां ॥ २० ४॥ इति पदं ॥ विराजो
 , विराजो मंदिरमें, प्रभु गोमीचा पारसनाथ ॥ वि० ॥
 चंदन ओर अरगजा, केशरमें गरकाव ॥ वी० १ ॥ शिर
 ओ ठत्र विराजै, मोतियमे तपे रे निलाम ॥ वी० २ ॥ जव
 रमें आण पमाहुं, बांह पकर मुऊ तार ॥ वी० ३ ॥ रूपचंद
 नाथ निरंजन, आवागमन निवार ॥ वी० ४ इति पदं ॥
 किरा देखा हमारा स्वामी, स्वामी अंतरजामी रे ॥ कि० ॥
 जवकी प्रीत प्रकाशी, नवमें गया शिवगामी रे ॥ कि० १ ॥
 सावनकी कुंजगलीनमें, मिले मोहे अंतरजामी रे ॥ कि० २ ॥
 आये, गिरनारके ऊपर, नारी तारी केवल पामी रे ॥ कि० ३॥
 वण नागकुं तारणागीनो, कहुं वू आज शिरनामी रे ॥ कि० ४ ॥
 चंद कहै नाथ निरंजन, अवधू सो जोगी गुरु मेरा, उस प वा
 इति पदं ॥ पुनः सुखर एक मय विन ठाण ॥ अरंज कर
 स्वामी अंतरजामें लाल सुख मरी पुनः
 ज्ञानी ध्यानीन मान तुलसी सुख मरी ॥ स्वयंकर ॥ शि०
 वलिहारी ॥ १॥ सुख मरी एक घरी ॥ २ ॥
 हे न्यारी ॥ कि० ३ ॥ सुजाव धरी ॥ सु-
 कि० ४ ॥ नाथ निरंज तोच धीरा ॥ १ ॥ सुगु० ३ ॥
 मुजरा साजिम न्यारा, १॥ १ ॥ एक मोर पप-
 मु० ॥ साहिव सुअ० ॥ ५ ॥ १ ॥ दान व्रत
 मु० १ ॥ केशर चं ॥ चलणा जंगन ॥ २ ॥
 वजाजं अगर उखातकाव, मातबरक नह ॥ ३ ॥
 वाजित्र वजाजं ॥ ४ ॥ च० १ ॥ में मन व ॥ ५ ॥
 हरखित, दास ॥ मिलके, ॥ ६ ॥ सदा में ॥ ७ ॥

फंदा तोम मोहकी फासी ॥ जिनचंड सूरेश्वर विजयराजके सर
सन ॥ श्रीसां० ३ ॥ पाठक हितवृत्तन चैत्य प्रतिष्ठा कीनी, श्री
संघ सदा कल्याण जक्ति बुध दीनी ॥ सन् उगणी सय अमताल
माघ सुद लीनी, सुज वस्तपंचमी कुशल निधान नवीनी ॥ ल
क्ष्मी वरदायक श्रीपारस पद चीनी, रुद्रसार कहै सुखकार जक्तिरस
पीनी ॥ जइ कंचन काया प्रजु चरणनके फरसन ॥ श्रीसां० ४इति ॥

॥ अथ लावणी नेमनाथजीकी ॥

नेमनाथ मोरी अरज सुणीजै, मेहुं दासी चरणोकी, तोरण
आये फेर मत जान, तुमकुं सोगन जादवकी ॥ ने० १ ॥ जान
लेइ तुम व्याहन आए, लारे सेना माधवकी ॥ ठप्पन्न कोर जादव
मिल आए, ए अवसर नही फिरणोकी ॥ ने० २ ॥ रय फेरी गिर-
वरकुं सिधाए, हमकुं ठांमी नव जवकी ॥ मेरे सामरे श्याम सखू
णे, में इहां नही अब रहणोकी ॥ ने० ३ ॥ सुण जिनजी में तो-
कुं कहतहुं, देखूं शोभा गिरवाकी ॥ मातापिता वायव सब ठंमी ॥
जामुं संगे यादवकी ॥ ने० ४ ॥ हाथ जोरके वीनवै राजुल,
बात सुणो पियु मुऊ घरकी, हमकुं ठोम चले निरधारी,
अब हे पीतम सरणोकी ॥ मा० ५ ॥ नेम कहे तुम सु-
ण हो राजुल, विषयारस पीत प्रकोरषी ॥ यह संसार असार निरं-
तर, कर करणी ता-तहि पें जलक ॥ पियुजी पासे संयम
लीयो, जिनसें क पा दर-भानर प्रश ॥ गिरवा करीने उत्तम कीनी, यह
जव पार उत्तरणोकी ॥ ने० ६ ॥ राजा राजुल नारी, पो-
इता सेज परमपद, रै व जिवधे, दा रां राजुल नारी, पो-
हे जिनकी ॥ ने० ७ ॥ कावना, जगले मर ॥ लावणी, जिनसें
काया उदरणोकी ॥ ने० ८ ॥ सुखकोर, पण्डा धूपहै, फिर फेरा नहि
॥ ने० ९ ॥ चंपा धूपहै, फिर फेरा नहि
॥ ने० १० ॥ चंपा धूपहै, फिर फेरा नहि

॥ अथ जिनदासजी कृतं १० घन तथां लावणीयो ।

॥ अरे तुम जपो मंत्र नवकार, जीनोसें उतरो जब पार

॥ होय तेरी कायाको आधार, सफल कर ले ओ अव-

तार ॥ ध्यान तुम मनमें धरो नर नार, खाए दुख की संसार

॥ करो प्रभु निहाल अजो जिनदास, रखो प्रभु मुझ चके पा

स ॥ १ ॥ सरकजा कुमति नार काली, तेरी संगतसें गई लाली

समताकी में टाली, आतमा तपमें नहिं धाली ॥ अनंत जब दुख बांध्या

खाली, वेदना निगोदकी जाली ॥ अमरपद जिनदास मांभे, फि० ॥ अरु

पुजीकूं लागे ॥ २ ॥ शीश नित नमुं नाजिनंदन आणकर बोढ्यो

केशर चंदन ॥ करत सब इंद्रादिक बंदन, कटःही धर्म ॥ अब मनु

॥ साध्यो तें शिवपुरको साधन, सर्व जीवन अब० १ ॥ में सुरनर

गुण जिनदास गावै, शीश चरणों० ॥ मारे शिव समताका सुख

या मेरा हसकर, चढ़ावुं चंदन के कुदेव जला कर ध्याया, जला

सकर, पाप दल दूर गया खसकरन विषय जोग जाया ॥ में पम्या

हटाया कर्मो कालसकर ॥ श्रीजिनगो० ॥ पण लग्यो अंत जब आय

लिया वासा ॥ ४ ॥ समझ मन जब परमाद धर्म कर जाई रे, धर्म०

कणवाला ॥ वस्या तेरे हिये कुर लही तुं सुकृत कर रे, तुं सु० ॥

ला ॥ फेर तो ममताकी माला में धर रे, तुं करमकी माला काट

यासें दे दिया ताला, देखो जियार २ कहुं तोय जगतसें तर रे ॥ तुं

गणधर प्रेमपती, मुझे वरदानर रे, ज० ॥ तुं सीख सुगुरुकी मान

अमती ॥ पूठ पर खमे जागततिरिया कर जान बैन अर जाई सो ने

मिटी मेरी दुर्गतिकी सब गती मुझ मन जायो सदा गुण गीत, गन

चंद जक्तिसें पावै ॥ ६ ॥ किकरो नरक नही जानें ॥ अई० ॥

ज्यां जरती कुमति नारी ॥ ६ ॥ में मन वच काया आ० ॥ ६ ॥

कामी संसारी ॥ इनोकी हार ॥ सदा में जानें ॥ सोनंद ॥ १ ॥

धरमधारी ॥ तु तुम परमारथ पाया, शरण अब जिनदास आ
या ॥ ७ ॥ चैत नर निगोदका वासी, कराई जगमें तें हांसी ॥
कुमतिकी गले फांसी, सुमतिखुं रखी हे उदासी ॥ कुमतिकी
वसी सेरखासी, मान रह्यो ममताकुं भासी ॥ हियो
खोल अतिकुं परखो, करो जिनदास आप सरखो ॥ ८ ॥

...र तेरी जिंदगानी, शीख सूत्रोंकी नहीं मानी ॥ किया
 नेमनिग्रंथज्ञानी, कानसें लगे कुमति रानी ॥ जगतमें ऊन
 आये फेर मत जाती तेरी पुरगतिकी गानी ॥ सेवक तोरा जिनदास
 लेइ तुम व्याहन अग्रही काजै ॥ ए ॥ सफल नर तेरी जिंदगानी,
 मिल आए, ए अवसर री ॥ किया निज गुरु निग्रंथज्ञानी, कानसें
 वरकुं सिधाए, हमकुं बांसागतमें अधिक चढयो पाणी, गती तेरी
 ऐ, में इहां नहीं अब रहयोकी ॥ जिनदास वाजै, सुधारोगे तुमही
 कुं कहतहुं, देखूं शोभा गिरवाकी ।

जामुं संगे यादवकी ॥ ने० ४ ठकर अपणें, जिन मंदिर जइये ॥
 बात सुणो पियु मुऊ घरकी ॥ ही० चल० ॥ चरण जिनवरजी
 अब है पीतम सरणकी ॥ मा० १० ॥ करम सब तन मनका भेटो
 ए हो राजुल, विषयारस पीत प्र० ॥ कोरुषानवरका गुण नज लीजै, सम
 तर, कर करणी ॥ त० १० ॥ जलजनीका लहिये रे—जाज० ॥
 लीयो, जिनसे का दरभ्यान ॥ र० १० ॥ तज तामस तन मनका
 नव पार ऊतरणो ॥ त० १० ॥ र० १० ॥ तज तामस तन मनका
 हता सेज परमपद ॥ र० १० ॥ र० १० ॥ तज तामस तन मनका
 है जिनकी ॥ ने० १० ॥ र० १० ॥ तज तामस तन मनका
 काया उदरणकी ॥ र० १० ॥ र० १० ॥ तज तामस तन मनका
 ॥ ने० १० ॥ र० १० ॥ तज तामस तन मनका
 ॥ ने० १० ॥ र० १० ॥ तज तामस तन मनका

जगतमें रहता नदासी रे ज०, परख्या में जिनराज कटी मेरी डुर
गतिकी फासी ॥ तजो सब धंदा—मेरी ज्या० त० ॥ जिनवर मुख
पूनमचंदा, जिनदास तुमारा बंदा ॥ मेरे एक जिन दर्शन चाहिये
रे—मे० ॥ च० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ तुम जजो जिनेसर देव, मुगतिपद पाईरे—मु० ॥

अब अचल अखंभित ज्योति सदा सुखदाईरे ॥ में रुढ्यो चोरासी
मांदि झूढ्यो में जरम, झूढ्यो० ॥ महारे नदय अनंता डुख बांध्या
जंज कर्म ॥ में कदियक हूनु रंक फिरयो तज शरम, फि० ॥ अरु
कदियक राजा ज्यो गरयको गरम ॥ जब गरब आणकर बोढ्यो
पारका मर्म, पण निर्मल जगमें जैन कियो नही धर्म ॥ अब मनु
ष्य जनममें चेत धनी शुज आई रे, घ० ॥ अब० १ ॥ में सुरनर
का सुख वार अनंती पाया, अन० ॥ मारे शिव समताका सुख
हाथ नहिं आया ॥ में कुगुरु अने कुदेव ज्ञा कर ध्याया, ज्ञा०
॥ में जलज्यो अनादि अज्ञान विषय जोग ज्ञाया ॥ में पन्था
लोन्नेके फंद जोम्तो माया, जो० ॥ पण लग्यो अंत जब आय
कालने खाया ॥ अब परहर सब परमाद धर्म कर जाई रे, धर्म०
अ० २ ॥ अब डुलज अवसर लही तुं सुकृत कर रे, तुं सु० ॥
अब दानशील तप जाव हीयामें धर रे, तुं करमकी माला काट
पण परिहर रे, पा० ॥ अब वार २ कहुं तोय जगतसें तर रे ॥ तुं
निर्मल नयणे देख जगतसें मर रे, ज० ॥ तुं सीख सुगुरुकी मार्ग
अज्ञानी नर रे ॥ अब पर तिरिया कर जान बैन अर जाई सो ने
वे० ॥ अ० ३ ॥ अब जिनवर मुज मन जायो सदा गुण गीत, गन
सदा० ॥ अब इतन दुख पा करो नरक नही जाउं ॥ अ० ॥
मांही देव जिनेसर नेमके ॥ में मन वच काया ॥ अ० ॥
द्वयानं ॥ ए दथा, कि कार, सदा में चाउं ॥ सानंद, ॥

घोरासी के माहि फेर नही आनं ॥ यूं अरज करै जिनदास, कीरत
एगाई रे ॥ की० अब० ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमति कुमतिकी लावणी ॥ हारे तूं कुमति कलेसण
नार, लगी क्यूं केमे, ल० ॥ चल सरक खनी रह दूर तुजें कुण
ठेमे ॥ हारे तूं सुमतीको जरमायो, मुजे क्युं ठोमी, मुजे० ॥ मेरी सदा
शाश्वती प्रीत भिन कमें तोमी ॥ तुज विन सूनी मेरी सेज, कहूं करजोमी,
क० ॥ उठ चलो हमारी संग सुखे रहो पोढ़ी ॥ युं फुरश कुमति
आंसु आंखसे रेमे, आं० च० १ ॥ हारे तेरी नरक निगोदकी सेज, सेति
में रुठो, सेति० ॥ पकरयो साचो जिनराज, संग तेरो वूटो ॥ तेरो
भूरख माने वात, हियाको फूटो, हिया० ॥ में सहज हुबो हुं दूर
तार तेरो टूटो ॥ तुम करो दूरसे वात आव मत नेमे, आ० च०
२ ॥ मेरी अनंतकालकी प्रीत पलक नहिं पाली, पल० ॥ सुमती
के लागो संग मुजें क्यों टाली ॥ तूं सुमतीको सिरदार, सुणावे
गाली, सु० ॥ तेरी हम दोनूं हे नार गोरो जर काली ॥ तूं हम
कूं ठेले दूर सुमतिकुं तेमे, सु० च० ॥ ३ ॥ अब कुमतीको लल
धायो, रती नहिं मिगियो, र० ॥ सुणकर सूत्रनकी शीख, साच होय
जगियो ॥ चेतन कुमतीकी सेज, दूरसुं जगियो, दू० ॥ जिनराज
वचनको ग्यान, हिये में जगियो ॥ जिनदास कुमति तूं वात खोटी
ल मन खेमे, खो० ॥ च० ४ ॥ इति पदं ॥

अब ॥ पुनः ॥ तुम तजो जगतका खयाल, इसकका गाना, इस०
हता से अलप कुमर खूट जाय, नरक उठ जाणा ॥ तें दिना चार
हे जिनकी च लिया हे वासा, लि० ॥ तेरे सिर पर बैठा काल, करे
काया उद्धर ॥ में बोलूं साची वात, जूठ नहीं पासा, जू० ॥ तूं सूता
निंद, किसी कर आसा ॥ अब की देव जिनराज खलक
मा, खल० ॥ तेरे जीवन-सुखाका रंग, जूठ सब

आसा ॥ अब हिये धरो मेरी सीख, समऊ रे दिवाना, स० तु० ॥
 १ ॥ अब बुरी जलो सब वात, मोन कर रीजे, मो० ॥ ए मुख मी
 ठा संसार जेद नहीं दीजै ॥ कर वोतराग विसवास, हिये धर ली
 जै, हिये० ॥ पण नीच नारका संग मांहे मत ज़ीजै ॥ अब सात
 विसनको संग, प्रीत मत कीजै, प्री० ॥ तोड़े डुरगति दे पोहचाय
 तेरो तन ठीजै ॥ तुं सुख डुखका सिरदार, रंक नह राना, रं० तुं० २
 ॥ तुं विसरगया जुग वीच, नाम जिनवरका, ना० ॥ पच रह्या कु
 टंबके काज, किया फंद धरका ॥ ते दया धरम विन खोया, जनम
 सब नरका, ज० ॥ तेरे पछे बांध्या पाप, कसाई सरखा, अब लि
 या नहीं ते लाज, वखत पर करका, व० ॥ तेरी वीती वात सब जा
 य जनम युं खरका ॥ अब सुणो शीख सूतरकी सुलट रे
 स्याना, सु० ॥ तुम० ॥ ३ ॥ तेरी चरण सेज पर पोढ्या, आनंद
 दिल आया, आ० ॥ मेरी ज़गी जूख सब प्यास सुधारस पाया ॥
 मेरे सिर पर तुम शिरदार, जिनेसर राया, जि० ॥ में चाहुं चर
 णकी सेव सफल कर काया ॥ अब द्यो दोलत दरसणकी, मेरे ए
 हि माया, मे० ॥ यूं अरज करै जिनदास अलख गुण गाया ॥ अब
 बुरा कुगुरु उपदेश सुणो मत काना, सु० तुम० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः नेमनाथजी की लावणी ॥ दे गया दगा दिलदार,
 सुणो मेरी माई, सु० ॥ जग रही नेम दरसनकी, सरस
 असनाइ ॥ अब अजब अली जो नेम, मेरे शिर ठाजै ॥
 ॥ मे० ॥ जादवकी देखी ज्ञान, जगत सब लाजै ॥ एसो नेम
 नवल इक वींद, अनोखो बाजै, अ० ॥ सुरनर सब गावै गीत, गनन
 में गाजै ॥ अब दोमर सब डुनियां, देखणे आई, दे० ॥
 १ ॥ अब चढा नेम ते गिरवर रे ॥ ग्यापवरकर, आ० ॥
 आयै सुरंगा साज, किल्लै वनखंर में० ४ ॥ इति परमानंद, ॥ रि

हिया जरकर, ह० ॥ ले गयो पत्नी नेमनाश्र, मेरो मन हरकर ॥
 सखी सुख संपत अंगणमें, आज चल आई, आ० ह्मे० २ ॥ अब
 इण अवसरमें सूरत, स्यामकी लागी, श्या० ॥ पशुअनकी सुणी
 पुकार, दया दिल जागी ॥ जिन ली परवतकी वाट, तृष्णाकूं त्या-
 गी, शिवरमणीके शिर वींढ, वण्यो वैरागी ॥ अब महल चढ़ी रा-
 जुलकूं, खनी ठिटकाई, ख० दे० ३ ॥ अब रेतीके सरवरमें, टिके
 नही पाणी, टि० ॥ जिनगुण गाया नहीं जाय, अलप जिंदगानी ॥
 अब कठन जीव डुरगतको, बन्यो मेंदानी, ब० ॥ जिनदास करो
 जव पार, दया दिल आणी ॥ अब शरण सतीके बैठ लावणी
 गई ॥ ला० ॥ दे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ मगसी पार्श्वनाथकी लावणी ॥

मुलक बीच मगसी पारसका बाज रह्या मंका, मुगति गढ
 जीत लिया वंका रे, मु० ॥ मुल० ॥ करमदल बलकूं कय कोया रे,
 क० ॥ मुगतिमहलमें केलि करै, अनुजव अमृत पीया ॥ शाशता
 जीया, महाराज शा० ॥ कल्याणक कारज कीया, अमरापुर पद-
 वी लीया, कमठ जसका करगये फंका रे, क० ॥ मुल० १ ॥ प्रजु
 पारसजले जाई रे, प्रजु पा० ॥ जाव जमरकामेट जोत तेरी जगमें
 सवाई ॥ टेककूं टालो, महाराज टे० ॥ चंचल चितसे मत चालो, गुमान
 गरवकूं गालो, गरवसे धूरु मिली लंका रे, ग० ॥ मु० २ ॥ मेरे
 शुज जाग्य उदय आया रे, मेरे० ॥ इण पंचम आरा मांहि प्रजु
 मगसी पाया, पापसे मरता, महाराज पाप० ॥ जवि जीव ध्यान
 दिल धरता, श्रावक नित समरण करता, मरण डख मिट्या मेरे
 हंका रे, म० ॥ मु० ३ ॥ महिमो मगसीकी अब जाणी रे,
 काहू नहि ऊधनी मेरी ॥ खब बिना पाणी ॥ में
 ॥ वर जाच्या, मगसी कर आसा ॥ अब ॥ स जिनंदसे राच्या, म-
 ॥ ॥ खल० ॥ तेरे जीवन

गंसीपारश हे साचा, करो मत मनमें कोइ संका रे ॥ क० मु० ४ ॥

॥ उपदेश लावणी ॥ सुकृतकी वात तेरे हाथ रती ना रही
रे, पुदगलमें मान्यो सुक कलपना कही रे ॥ सु० ॥ जग मांहे
जैन निज सार संघाते आवै, संघा० ॥ इसकुं तजकर क्युं वैगो,
विषय गुण गावै ॥ अमृतकूं अलगो ढोल, बिसन विष खावै, वि० ॥
सुगतीको मारग मेट, नवटमें जावै ॥ थारी तुछ जिंदगानी मांदि, विक-
ल बुध जई रे ॥ पु० १ ॥ थारे धन दोलत जंमार जरयांहे मोती, ज-
र्या० ॥ संत्रु सज्जन सब बने, जगत हुय गोती ॥ कोइ मसलें तेख
फूलेल, धोवे कोइ धोती, धो० ॥ सन्मुख उठ आवै, अंबला तेरो मुख
जोती ॥ एसी संपत छिन मांदि सरब क्य जई रे, स० ॥ पुद० ॥
१ ॥ तें खटरस खाया खूब, खजाना खोया, ख० ॥ निसदिन सु-
खजर सुंदरकी, सेजमें सोया ॥ सजिया शोले सणगार, नारिसें
मोह्या, ना० ॥ तें अंतरवटका मैल रती ना धोया ॥ या नरक नि-
गोदकी वाट, पकर कर लही रे, प० ॥ पु० ३ ॥ मन मातो
आठ मद मांदि, गरबसें बोले, ग० ॥ में सुख संपतको ना
मेरे कुण तोले । दुर्बल करता पोकार, पलक नही खेवीनवै,
चाकर हुय रह्या इजूर चमर सिर ढोलै, अब
यो हाथ, चेत तूं सही रे, चे० ॥ पु० ४ ॥ कायासें जिन धारी है ॥
इ चंगी, व० ॥ पलजर परवारयो पुन्यतणो धारी है ॥ कहुं
परजवकी वाट, होय कुण संगी, हो० ॥ ते काल आचारी है ॥
काया पनी नंगी ॥ जिनदास कहे करमोलै है ॥ कहुं में० २ ॥
॥ पु० ५ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः धारी है ॥ निन्नव अरु

तुम तजकर राजुल नार, तर कहुं में० ३ ॥ संवेगी
में नमुं नेमके पाय गया गिरवर रे ॥ ग्यान ध्यानसें शिवपद-
पछे लागी, तुम त्याग चलै वनखंर में० ४ ॥ इति पदं ॥ आदि

सत्तवंती जावसैं त्यागी, जा० ॥ थारे अंतरघटमें ज्योत ज्ञानकी
 जागी ॥ यूं रोती राजकुल नार नेण जर रे, नेण॥ में० १ ॥ में अरज
 करुं करजोम, करो मन परसन, करो० ॥ मेरे सिरपर तुम सिरदार,
 देजो मोहे दरसन ॥ अब सुख सखियनका देख, लग्यो मन तरसन,
 ल० ॥ मेरे आवै नयणमें नोर लग्यो नित वरसन ॥ मेरे नेम मिल-
 नकी आस, मिलूं क्यूं कर रे, मि० ॥ में० २ ॥ मैं नहि कीनी त
 कसीर, चले क्यूं छूटै, च० ॥ मेरे घरमें कुटुंब परिवार चार दिस
 चूटे ॥ मैं रहूं जो घरके मांहि, जोवन जम लूटे, जो० ॥ मैं चलूं
 पियाके संग, प्रीत क्यूं तूटे ॥ मेरे नेम विना नहीं उर, जगतमें वर
 रे, ज० ॥ में० ३ ॥ तुम तारी राजकुल नार, मुगतमें मेली, मु० ॥
 पीछै नेम गधे निरवाण, करम सब ठेली ॥ मैं नित ऊठे परजात,
 नसुं पद पहेली, न० ॥ मेरे नेम विना नहीं उर जगतमें बेली ॥ यूं
 अरज करे जिनदास सुणो जिनवर रे, सु० ॥ में० ४ ॥ इति पदं ॥
 पुनः ॥ उपदेशकी ॥ आप समझका घर नहीं पाया, दूजेकुं क्या
 समझावै ॥ वंका फिरे जिनदास जगतमें, होयो हाथमें नहि आवै ॥
 वी लीया, दू चाहनकी चितमें, चानक अधिकी आय लगे, इंद्रिका
 पारस नजले ज्यो, ग्यानकला कहो केलें जगें ॥ तृष्णाने जग लूट
 सवाई ॥ टेककुं टांछरी परधनकुं ठगै ॥ खाय २ लोही मांस बधायो,
 गरवकुं गालो, गरवसेने पगे ॥ विषय विपतकी करै चूषणी, चरचासैं
 शुभ जाग्य उदय आया ही० आ० १ ॥ अपने अवगुणकुं नहो देखै,
 मगसी पाया, पापसे करत हिंसाहीमे हूओ हजुरी, दया दूर दिसैं
 दिल धरता, आवक नित सनेप मेरो मन, अवगुणके रसकुं चाखै ॥
 दशाकारे, म० ॥ मु० ३ ॥ चरणो जिनवर किम राखे ॥ उग फा-
 का ॥ नहि ऊपरी मेरी ॥ अंग इतकुं ध्यावे ॥ वं० ही० आ० ॥
 ॥ वर जाच्या ॥ नसी कर अंग इतकुं ध्यावे ॥ वं० ही० आ० ॥
 ॥ वर जाच्या ॥ नसी कर अंग इतकुं ध्यावे ॥ वं० ही० आ० ॥
 ॥ वर जाच्या ॥ नसी कर अंग इतकुं ध्यावे ॥ वं० ही० आ० ॥

नही गाममे रुख अंबको, एरुं अंब सरिखो सूजै ॥ पारख नही
 हे हीये ग्यानकी, गुण अवगुण कूं कुण बुजै, गामर देख कहै मुज
 धरमें, कामधेनु इतनी दूजै ॥ ऐसी मेरी अविनीते आतमा, अव-
 गुण किम गाया जावै ॥ वं ० ही० आप० ३ ॥ क्रोध मान मायामें
 भातो, लोभ मांहे जपटयो रहतो ॥ गरथ गुमानी गमको गरजी,
 पीर पारकी नहिं सहतो ॥ जगति नही गुरु देव धरमकी, कवन
 वचन मुखसे कहतो, अंतर आंट न खुलै हियाकी, पूठ परमपदकूं
 देतो ॥ स्वांग सजी जिनदास जैनको, माल मुलकको ठग खावै ॥
 वं ० ही० आप० ४ ॥ इति पदं ॥

अथ सुगुरुकी लावणी ॥ नमूं२ में गुरु निग्रंथकूं, वे जिन
 मुझधारी हे ॥ पुलक ऊपर प्रेम न करता, मनकी ममता मारी हे
 ॥ न० १ ॥ गरब गालकर गुपति गोपवे, गंत निग्रंथकी न्यारी हे ॥
 कनक कामनीके नही जोगी, वे पूरा ब्रह्मचारी हे ॥ न० २ ॥ ठ
 कायके जीव अनाथी, उनके वे हितकारी हे ॥ करम काटकर के-
 वल पावै, ज्ञानगरथ गुण जारी हे ॥ न० ३ ॥ शुद्ध अंशसे सुम-
 ती सेवी, निज आतमकूं तारी हे ॥ जिनवरकूं जिनदास वीनवै,
 उनके चरण बलिहारी हे ॥ न० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ करूं२ में ऐसे सदगुरु, धिवर कटप जिन धारी हे ॥
 सरधा शुद्ध सदा उपदेशी, जिविजनके उपगारी हे ॥ करूं२
 में० १ ॥ चार निक्षेपे सप्त जंग नय, देश काल आचारी हे ॥
 विरताविरती सर्व विरतके, धार धरावणहारी हे ॥ करूं२ में० २ ॥
 सत्य सनातन कुल अरु गणके, परंपराके धारी हे ॥ निन्नव अरु
 पाखंड खंनते, जैनधर्म जयकारी हे ॥ करूं२ में० ३ ॥ संवेगी
 अरु संवेगपही, मुनी जती गुणकारी हे ॥ ग्यान ध्यानसे शिवपद-
 साधै, कहे पाठक रुद्धसारी हे ॥ करूं२ में० ४ ॥ इति पदं ॥ आदि

॥ अथ कुंगुरूकी लावणी ॥ तजुं० में उन कुगुरूकुं, कनक का-
मनी धारी हे ॥ ज्ञान ध्यानकी बात न जाणे, अष्ट करमसें ज्ञारी
हे ॥ तजुं० १ ॥ करी कपाल वनूत लपेटी, शिर पर जटा बधा-
री हे ॥ कान फामकर मुद्रा पहरे, उसके घरमें नारी हे ॥ तजुं०
२ ॥ जोग लेइ जंग जीव विणसै, वे मद मांस आहारी हे ॥
कूना पंथ जगतकूं करतां, सुखसें कहे आचारी हे ॥ तजुं० ३ ॥
कहूं जगुण कुगुरूकां कव लग, साथ नही संसारी हे ॥ आप मुवै
नरनकूं सूवावै, दुर्गतिका अधिकारी हे ॥ तजुं० ४ ॥ समकित
श्रद्धा जैनधर्मकी, नहीं कुगुरूकूं प्यारीरे, जिनदरकूं जिनदास वीन-
वै, कुगुरू संग खुआरी हे ॥ तजुं० ५ ॥ इति ॥

आत्मलघुता लिख्यते ॥ यो जिनदास जूगो रे जूगो, येने
लेइ लाकनी कूटो ॥ यो० ॥ सुकृत सामो पग नहीं जरतो, ग्यान
हियाको खूटो ॥ सुधारयो सुधरे नही धमतां, जैसो लकरुको ठुंगो
॥ यो० १ ॥ जणवा गुणवाका गुण नहिं आया, कोरोही पक-
रुयो पूगो ॥ गपोना सुणकर लोक पूजता, ए अलग मालको ठुंगो
॥ यो० २ ॥ पंनित गुरुकी सोबत पाई, चेत्यो ना हीयाको फूटो,
साचा नरको संग न करतो, कूम कपट नहीं ठूटो ॥ यो० ३ ॥
जूगोही बोले जूगोही चालै, कपट करे एक मूगो ॥ साचो एह अ-
सार देखके, जिनदास सबसुं रूगो ॥ यो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ वैराग्य लावणी लि० ॥ जब तन दोस्ती है इह म-
स्ती, काया मंगलकी ॥ सासोस्वास समर ले साहिव, आज घटे
तनकी ॥ खबर नही हे जुगमें पलकी, सुकृत करणा होय सो क-
रले, कुण जाणे कलकी ॥ ख० १ ॥ तारामंरुल रवी चंडमा,
रुजी चलाचलकी ॥ दिवस च्यारका चमत्कारहे, बीजलियां
रुकी ॥ ख० ॥ सु० ॥ २ ॥ यो जग हे सपणेकी मया, उस

सुंद जलही ॥ विणस जावता वार न लागै, डुनिया जाय
 खलकी ॥ ख० ३ ॥ हंसा या देहीमें जब लग, खुसी हे मंगल-
 की ॥ हंसा ठाम चले जब देही, मिटिया जंगलकी ॥ ख० ४ ॥
 मनमावत तन चंचलदस्ती, मस्ती हे बलकी ॥ सदगुरु अंकुश
 दीया आनके, वार्ता जई थलकी ॥ ख० ५ ॥ मात पिता सुत बं-
 धव जाई, सब जन सुतलबकी ॥ काया माया सबे कारमी ॥ ए
 तेरे कवकी ॥ ख० ६ ॥ ऊठ कपट कर माया जोमी, कर वार्ता
 ठलकी ॥ बोजकी गांठ बंधी सिर तेरे, केसे होय इलकी ॥ ख०
 ७ ॥ देव धरम साहिबका समरण, ऐ वाता सलकी ॥ राग द्वेष छ
 पजै नही जिनकूं, वीनती अखैमलकी ॥ ख० ८ ॥ इति पदं ॥

पुनः। अरज हमारी सुणो, दीनपति, कोन जांत तिरणा ॥
 हम डुखी फिरत संसार चतुर गति, सो तुमसें निरणा, दीनपति
 को० ६० १ ॥ घोराघोर तरकके ज़ीतर, नानाडुख ज़रना ॥ मा-
 रन तामन वेदन जेदन, नर देह धरणा ॥ दीनप० २ ॥ कबहुक
 तिरयंच जोनि पायकै, गलै फास परना ॥ कृधा तृषा अरु शीत
 ज़ष्णाता, मार मार करना ॥ दी० ३ ॥ देव विज्ञूति पायके सुंदर,
 देखै जूरना ॥ जब माला मुरजावण जागी, सोच किये मरणा ॥
 दीनप० ४ ॥ मनुष्या जनम पायके ज़क्यो, कहूं नांही धिरता ॥
 साहिब तुम सरणागत राखो, जनम मरण हरना ॥ दीनप० ५ ॥

॥ मुक्ति जाणेकी दिगरी ॥

दूहा ॥ तीर्थकर महावीरने, कौशल गणधर साज ॥ कानून
 प्ररुप्पा हे दया, सब जीवन हित काज ॥ १ ॥ दान शील तप
 जावना, असल खुलासा सार, जिण पुरषां धारण किया, पोइच्या
 सुगति मजार ॥ २ ॥ चवदै सहस साधु दुआ, आर्या बत्तीस ह-
 जार, लाखा आवक आविका, पाया जवजल पार ॥ ३ ॥ (चा जागि

रंकेके ख्यालकी) मेरी अदालत प्रभुजी कीजीयै ॥ जिनसासन ना-
 थक, मुगती जाणेकी निगरी दीलियै ॥ जि० ॥ खुद चेतन मुद-
 ई बनादे, आठुं करम मुदाला ॥ दावा रसता मुगति मारगका,
 धोखा दे जाय टाला जी ॥ जि० १ ॥ तप कागद इष्टांम लिया, त-
 लवाणा कमा विचारी ॥ सिझाय ध्यान मजबून वणाकर, अरजी
 आन गुजारी जी ॥ जि० २ ॥ मैं जाता था मुक्तिमारगमें, करमोंने
 आघेरा ॥ धोखा देकर राह झुलाया, लूट लिया सब मेरा जी ॥ जि०
 ३ ॥ बहोत खराब किया करमोंने, चौरासीके मांही ॥ डस्क अ-
 नंता पाया मेने, अंत पार कठु नांही जी ॥ जि० ४ ॥ सच्चे मिले
 वकील कानूनी, पंच महाव्रतधारी ॥ सूत्र देख मसोदा कीना, तब
 मैं अरजी मारी जी ॥ जि० ५ ॥ पांचे सुमती तीन गुप्ति ए, आ-
 ठुं गवा बुलावो ॥ शील असेसर वरु चौधरी, उसकूं पूठ मंगावो
 जी ॥ जि० ६ ॥ अरजी गुजरी चेतन तेरी, हूआ सफीना जारी ॥
 हाजर आवो जुआव लिखावो, लावो साबूती सारी जी ॥
 जि० ७ ॥ आठुं मुदा लै हाजर आवे, मोह मुगत्यार
 बुलाये ॥ ज्यार कषायरु आठे मदकूं, साथ गवाहीमें लाये
 जी ॥ जि० ८ ॥ (टेर मुदायलेकी) ॥ जिनशासन ना-
 थक, पूरा दावा दे चेतन जीवका, जि० ॥ हमनें नही बहकाया
 इसकूं, ए हमरे घर आया ॥ करजा लेकर हमसे खाया, ऐसा फरेव
 नचाया जी ॥ जि० ९ ॥ विषयजोगमें रमिया चेतन, घाटा नफा
 न जगण ॥ करजदार जब लारे लागा, तब लागा पिस्ताना जी ॥
 जि० १० ॥ हाजर खरै गवाह हमारे, पूठियै हाल जु सारा ॥
 विना लियां करजा चेतनसें, कैसें करे किनारा जी ॥ जि० ११ ॥
 (टेरे मुदीकी) ॥ चेतन कहै सतावी मांही, सुण शास-
 की दार ॥ इमानदार हैं गवाह मारै जाणे सब संसार जी ॥

जि० मे० १२ ॥ मैं चेतन अनाथ ॥ (डहा-साखी) नयसेनजी
जीव अनंते राह चलतकूं, लूट चोराजीव करि एकठा, वानो ज-
१३ ॥ बनेर पंक्ति इन लूटे, एस त्यारी ॥ नेम० ३ ॥ नेमजी
नर पाप कराया, ऐसा करज चा कुरलाए ॥ नेमजी वचन फुर-
सल एन सरकारी सूत्रमें, मन्हा-साखी) याको जोजक होवसी,
हिंसा कहकर, उलटा जीव फ सुणी नेमजी, थरहर कांपे देह ॥
अर्थसें वेद पढाया, हिंसक यनेम० ४ ॥ पीठेसें राजुलदे आई, हाथ
खाकर, ऐसा मुझे सतायार्जकहां तूं जावै मेरी जाई, नर वर हेरू
बताया, तपस्या सेती निगामेरे तो वर एकही, हो गया नेमकुमार ॥
जाल फेलाया जी ॥ जि० टी करो विचार ॥ दीक्षा जद राजुलने
अपील होण न पावे ॥ द्यां सबही समजावै, हियै राजुलके न-
जावै जी ॥ जि० मे० १५ ॥ दो दरसावै, मेरे मन नेमकुमार जावै ॥
कों समजाया ॥ चेतनकीं कण दोरमा, तोम्या नवसर हार ॥ काजल
या जी ॥ जि० मे० १६ ॥ सब सिणगार ॥ सहेड्यां सबही विल-
सेती दिलाया, जि० ॥ सुधा सब शोले सिणगारा, आनूषण रत्न-
पाई ॥ फागुण सुदि दशम सबही सुख खारा, गोरुकर चाली निर
जि० मे० १७ ॥ इति ॥ पिता परवारकूं, तजतां न लागी वार ॥

॥ अथ अजाय चढि गिरनार ॥ जूरति गोरु मा

साहब अदालत पर जल पशुवनकि आई, त्याग जब किनो
लाए है ॥ शील हे सिद्ध गिरनारे जाई, पशुवनके बंधन बुरुवाई
वारण सत्त भावगण जुल गिरनारपें, दिनो संजमदान ॥ नवलराम
ग्यो हे मोहोसल ताकपन्यो केवलग्यान ॥ जिनोकि किरिया बुध
है ॥ रोसकी रसूम इति पद ॥

सत्यार लटकाये है नाथजीका चोमासा लिख्यते ॥

धी, तबके कुठ स्वादगनमें कारि, राजलकं निरुड डख जारि

॥ ठा० ॥ चौमासा लग्या रस जिना, अलि अपाढ़ रंग
 महिना ॥ व्याहं तरफसें वादल पिना, विजलिने चमकणा
 किना ॥ दिख होत धरकता सिना, में अवला सखी
 पति हीना ॥ (उम्माना) सररररर चंचल समीर, धररररर
 करत सरीर ॥ मररररर मरत समीर ॥ अलि केसी करुं तदबीर,
 बुरी तकदीर, पीया विन प्यारी ॥ राजुलकूं वि० १ ॥ आवषामें
 श्याम धनघोर, जरजोर बोलते मोर ॥ दाडुर मिल करते दोर,
 पिनु पपइया सोर ॥ ऊरु लग्यो वूंद ऊमऊोर, बिच चमके दा
 मनी कोर ॥ (उम्मावनी) खरुमरुमरु रवधनमाला, तरुमरुमरु
 जल परनाला, अरुमरुमरु नाला खाला, में डुखी हुई बेहाल, हीयेमें
 साल, हुई जलधारी ॥ राजु० २ ॥ जाद्रवमें पवन प्राचीना, वाद
 लमें धनुष रंगीना ॥ जंगलमें नदी स्वर ऊीणा, ज्युं बाजै मनोहर
 बीणा ॥ अब ऐसे कहो क्या जीना, प्रीतमनें मुझे डुख दीना ॥
 (उम्माना) युं विखपत मुख मुरझाई, सखियन मिल दौरु जगाई,
 युं विखखत वचन सुनाई ॥ सखी देखो पीयाकी रीत, तोमके प्री
 त, गये गिरनारी ॥ रा० ३ ॥ आश्विनमें जरा नही धीर, याडुचंद
 जये वे पीर ॥ ऊठ चली नेमके तीर, काटन कमे जंजीर ॥ प्रीतमसें
 लीयो अकसीर, व्रत संजम समकित हीर ॥ (उम्माना) शिव राजुल
 नेम सिधाए, इंद्रादिक जसु गुण गाये, जे वजन मिल शीश नमाए ॥
 मुनि कहे कपूराचंद, प्रेमसे उंद, जे किं बलिहारि ॥ राजु० ४ ॥

॥ सुमति कुमतिका विवाह रूप लावणी ॥

चिदानंद महाराज राज हे, प्रीतम दोनुं प्यारीका ॥ ऊगमा
 दिख धरकर सुण लेणा, सुमति कुमति दोनुं नारीका ॥ चि० ॥
 कहंति सुमता सुणारी शोकन मोह लिया ॥ प्रीतम प्यारा, अविरत न-
 कयाय इस्कमें जल गया सुधबुध सा ॥ तूं वैरण हे जनम२की

तेरा संग लगे खारा, तेरे वसमें हो गया प्रीतम पलक नहीं होती
 न्यारा ॥ कहुं खराबी कब लग तेरी तेरा खरत बंदगारीका ॥
 जगमा दि० १ ॥ कहती कुमता सुणरी सुमता मेरा संग
 अनादीका, वो मेरा प्रीतम इस्क जमर है, इंद्री पांच सवादीका
 ॥ कर सिणगार कसाय सोलके राग रंग उनमादीका, मेहुं मोहन
 रायकी ललनी वो प्रीतम सहजादीका ॥ तेरे पास नही आवेगा
 वालम वो हे फूल हजारीका ॥ ज० २ ॥ सुण रे वैरन बात हे
 मारी तेरे संग दुख पावेगा, तेरा महल पाताललोकमें जहां वो
 वास वसावेगा ॥ संगतके फल उसकुं लगेगा फिर पीठै पठतावेगा,
 आखिर बेह देवेगी वैरण केसें प्रीत निजावेगा ॥ में समजावंगी
 प्रीतम मेरा जो माने दिलदारीका ॥ ज० ३ ॥ कुमता बोली बात
 सुमतसें तेरे संग क्या होणा हे, नही जहां वस्ती सूना मंदिर सुख
 दुख दोज खोणा हे ॥ खाणा पीणा नही जहां पर राग रंग नही
 सोणा हे, नही ऊजावा नही अवेरा शिखा सहज विठोना हे ॥
 एसा मेरा जोग ठोमके सहे न दुख अणगारीका ॥ ज० ४ ॥
 कहती सुमता सुण मेरे प्रीत ॥ इसकी संगत नही करणा, हुक
 इक सोच करो दिल ज्ञीती बात अरज दिलमें धरना ॥ निगेद
 इसकी बात कठिन हे स कारण वनके नहि पटना, पहली सुखसें
 फिर दुख उपजे वो बनारीसुं मर मरणा ॥ रतन तीनका तू हे
 जोगी सुगति महल शिणगारो ॥ ज० ५ ॥ ऐसे बोल सुणे
 ताके चिदानंद ज, सुगतिमहल गोमें आंसु जर रोती प्रीतमका
 त्या पछा ॥ माणी) हे तूं चंपावो साजन सोकणकी सुणके
 गा, में अबलासें मुख चंद मधुरधुसें होय तुमरा जछा ॥ मेहुं
 नी जनमरकी, हे तूं लागे सबकीका ॥ ज० ६ ॥ तजके संग
 रतनारीका सुम २ ॥ कपटी साज, संजमसे सिणगार वणाकर

शील सुगंध लगाया है ॥ प्रीत रीतसे सदा मगन हुय सुगतिम-
 हल जब पाया है, सीख सुरंगी मानो जविजन अपणां दिल सम
 जाया है ॥ कहे रामरुद्धिस्तार प्यारसें तजो ख्याल संसारीका ॥
 ज० ७ ॥ इति पदं ॥ नेमप्रजूकी लावणी ॥ सज शोले
 सिणगार हुई दुस्तीयार सदेख्या सारी, चली राजुल गिरनारी रे० ॥
 कर केसरिया वेस ठिठक रह्या केश, अजब नखराली, खुली तो
 जेसे केसर क्यारी रे ॥ गल मोतियनको हार, वशी तो दिलदार
 हंस जेसी चाली, मधुर मुख वैण उच्चारी रे ॥ (उमावणी) नेण-
 नमे कजरा हृद नीका, सिर सोहै रतनोका टीका ॥ चंदवदन सा
 हुसन परीका, लगी पियासें लगन, मगन दिल सघन घटा जेसें
 कारी ॥ चलीतो रा० १ ॥ करे पियासें अरज गरज मेरी सुण
 वालम दिल वाते, गुने विन क्युं ठिठकाते रे ॥ में चरणनकी
 दाश रहो मेरे पाश जोवेने मदमाते, जोरु कर शीश नमाते रे ॥
 (उमावणी) आठ जवनकी प्रीत हमारी, आप पिया में प्रीतम
 प्यारी ॥ साजन प्रीत निजा इकताही, तेरे विना नहीं चैन, नींद
 नहीं रैन, सजी तो लगे खारी ॥ सजके खुब वरात साथ
 लियै राम कृष्णसे जाई, पहा केरटन लगे लगी रे ॥ अब
 क्या देखी खोट लगा दिल ॥ (जाई, कहो मुजकूं सम
 जाई रे ॥ (उमावणी) चतुर नवजन भिले शीश नमाए दिलमें
 अरज हमरी लाणा, सुरीका जिं वलिहारि ॥ राजु० ४ ॥
 मेह लग्या तुमसे नेह ॥ नेदिरूप लावणी ॥
 ज्ञान एक धर ध्यान सरे प्रीतम दोनुं प्यारीका ॥ जगमा
 विजली जेसी चमक ॥ प्रीतम दोनुं नारीका० ॥ चि० ॥
 खिर जावे रे ॥ (उमावणी) लिया प्रीतम प्यारा, अविरत न-
 प्रेम नसीसे करणा, ॥ तूं वैरण है जनमशकी

मान, ज्ञान धोखेकी समझले सारी ॥ च० ४ ॥ गुणवंतोंका संगे
 रहे नित रंग समझले स्थायी, जगत धोमी जिंदगानी रे ॥ चली
 जाय सब खलक पलकका नहीं ज़रोसा जाणी, करो सुकृतकी
 निसाणारे ॥ (जमावणी) इतना कहा जब दिल समझाया, अविचल
 राजुल नेह लगाया, सदा मुगतिमें वास वसाया, कहै राम रुद्धसार,
 करो तो ऐसा प्यार, नाम रहे जारी ॥ चली० ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ चंदावदनी मुखसे केती गिरनारीकूं जावोगे, रा-
 जुल ऊज्जी अरज करत हे प्रीतम कब धर आवोगे ॥ डूब ज़र ग-
 ती मनमें चिंता नेणामें आसुं ऊरते, हाथ जोरकै राजुल ऊज्जी
 वार वार विनती करते ॥ ज्ञान वणाई व्याहन आए घरमें
 आनंद वरते, किस विध ठान चलै गिरनारी भेरी दया नहीं दिल
 धरते ॥ में चरणाकी खासी जो दासी तुम विन मेरे नही सरते,
 जूं सागरमें जल विन मंजली प्राण धनी पलमें हरते ॥
 (जमावणी) हे तूं महिर निजर कर आव फेर रखला रे, तूं चं-
 दवदन दीदार मुजें दिखला रे ॥ हे तूं दिलकी धूमी खोल चुक
 चतला रे, हे तूं मोहनगारा प्यारे हे जी मुझकूं साथ निजावोगे
 ॥ रा० १ ॥ डूबसुं ज़री वातां मत वोखो राजुल मन धीरज धा-
 रो, एकर आंसु मिलणे कारण मुगतीमहलमें मन मारो ॥ ज़र नार
 डूब ज़र जे वनिवारीसुं मत प्यारो, पांच सखी ले साथ सि-
 जोगी मुगति महल शिणगारो ॥ कवल वचन आंसुमें कीनो रा-
 सुमताके चिदानंद ज, मुगतिमहलमें आसां हे सुंदर सोच फिकरकूं
 पकमया पछा ॥ मणी) हे तूं चंपकली सी नार जोवन मतवाली,
 गहना, में अबलासे मुख चंद मधुरधुनिवाली ॥ हे तूं शील सलूणी
 हासी जनमरकी, हे तूं लागे सबकों प्यारी हे जी मुझकूं कदि न
 कुमतनारीका सुम ॥ २ ॥ कपटी साजन हसकर बोले मनकी

नहि खोलें, या दुनिया सुतलवकी गरजी बिन सुतलव मुख नहि
 धोले ॥ सहज प्रीतकी रीत लगाणी फिर निजणी मुसकल दोले,
 धन मानव जो प्रीत निजावै तर अथकी रंगरोले ॥ अरज वीनतो
 करै राजुल वचन रमीला अणमोले, जलदी आयजो नेमकुमरजी
 सुगतिमहलमें रमजोले ॥ (बनावणी) हेवा चंदकपूर अपूरव
 ख्याल बनावै, हेवा तरनारी मन रंग रागसुं गावै ॥ हेवा जांज
 ताल रुफ दोल मृदंग बजावै, हेवा आनंद हर्य वधावै हे जो मन
 वंशितफल पाजोगे ॥ रा० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ कोइ
 देख्या रे हो सांवलिया साद्वि प्यारा लागे रे० ॥ अश्वमेध घर
 जन्म लियो अवतारी रे, वामानंदन नीलवरण सुखकारी रे, चंद
 वदन मनमोहन मूरति प्यारी रे ॥ हारै० सु० कोइ० ? ॥ बालपणे
 श्रु अदभुत ग्यान सवाई रे, कमठ सहा शठ मान हरयो डखदाई
 रे, मंत्र दियो हितकारी नाग सहाई रे ॥ हां० नाग० को० २ ॥ सिर पर
 सुगट श्रवण कुंजल हृद जारी रे, कर श्रीफल जुजवंत जलक विद
 न्यारी रे, गल मोतियनको हार बाण्यो गुलजारी रे ॥ हारै सु०
 को० ३ ॥ पतित न्यायण तारण विरुद बनाई रे, पारस नाम
 जपो बरदाई रे, चंद कपूरा प्रणमें प्रेम बवाई रे ॥ हारै प्रे० को० ४ ॥

॥ अथ केसरियानाय लावणी ॥

सुणजो वातां राव सदागिव, मत चढ जाणा धूलेवा ॥
 गढ़पति नूनका बना अरुंगा, मत ठेको तुम नून देवा ॥ सु० १ ॥
 सकतावत बनावत बोले, हमदी नौकर नूनहीका ॥ हींडपति बाकूं
 हाय जोमै, तीन नून शिर हे टीका ॥ सु० २ ॥ स्वर्ग मृत्यु
 पाताल सवेही, सुरनर बाकूं ध्यावत हैं ॥ इंद्र चंद्र मुनि दर्शन
 आवै, मनकी मोजां पावत हैं ॥ सु० ३ ॥ गया राज नूनहीसैं
 आवै, निर्यनियाकुं धन देव ॥ बांज गिलावै सुंदर लम्का, सदा

सुखी जो प्रभु सेवे ॥ सु० ४ ॥ तारे जिहाज समुद्रमें जाके, रोग
निवारे जवशका ॥ जूप जुजंग महार करि नदियां, चोरन बंधन
अरिदवका ॥ सु० ५ ॥ धौ धौ धौ धौ धौसा वाजै, दशो दिशामें
हे मंका ॥ जाउ तातिया नहीं जलाइ मत वतलाओ गढ़ वंका ॥
॥ सु० ६ ॥ राणाजीके कमरावकी, मानत नहिं हे ये वातां ॥
आंरा कीया थेहीज पावो, म्हे नहिं आंवां आं सांथां ॥ सु० ७ ॥
भूव भरोम चढ़ां अग्निमाने, जहर जरा हैं निजरूममें ॥ रुपजदेव
हे सादिव संजां, देख तमासां फजरूममें ॥ सु० ८ ॥ मयाराम सुत
अणे मूलचंद, वमे सितंबर तुम देवा ॥ फोज विखरगई घर २ घोमां,
खज्जा राखो तुम देवा ॥ सु० ९ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ केसरियानाथ महात्म लावणी ॥

॥ दूहा ॥ आदि करण आदिम जगत, आदि जिनंद जिन-
राज ॥ धुलेवनाथ जाचो धणी, वरुण श्रीमहाराज ॥ १ ॥ (चाल
लावणी) काश्यपगोत इक्ष्वाकु वंशमें, मरुदेवा जननी जायो ॥
नाजि नरेसर वंश उजालन, आदि धर्म जस प्रगटायो ॥ २ ॥
खोसव सुरपति देव देवी मिल, मंदिर गिरपे न्हंवरायो ॥ इसो
रुपज निधि प्रगट कटपतरु, सुरनर मुनिजन नित ध्यायो ॥ ३ ॥
खरुगदेशमें नगर धुलेवै, जास ददामा घुरता हे ॥ जाकी महिमा
अपरंपारा, कविजन कीर्त करता हैं ॥ ४ ॥ आदौ मुरत काल
असंख्यकी, पूजी सुरगण असुरिंदा ॥ सुरपति नरपति वंदित पद
थुग, बलि पूजत सूरज चंदा ॥ ५ ॥ लाख इग्यार हजार पंचासी,
वरस पांचसे पन्नासा ॥ इतने वरस पर लंकागढमें, पूजित रावण
गुणरासा ॥ ६ ॥ रामचंद्र शीता अरु लठमन, ए मुरत पूजन
लाए ॥ नयरी अयोध्या जाते अधविच, नयर उजेशी ठहराए
॥ ७ ॥ प्रजापाल नरपतिकी तनया, सुंदरि मयणा धरमनकी, वृक्ष

पकरम अरु आपकरमकी, जई लमाई मरमनकी ॥ ३ ॥ आपक-
 रमके ऊपर नृपनें कुष्टो वरपे परणार्ड ॥ मयणा चिंते कांई नवाई,
 करम लिखी सो बन आई ॥ ४ ॥ इक दिन जिनपूजन गुरुवंदन,
 आई श्रीजिनमंदिरपे ॥ वंदन पूजन करके इक चित, ध्यान धरै
 मनकंदरपे ॥ ५ ॥ (मोतीदाम ठंड) तूंहि अरिहंत तूंहि
 जगवंत, तूंहि जिनराज तूंहि जग संत ॥ तूंहि जगनाथ तूंहि
 प्रतिपाल, तूंहि मनमोहन तूंहि दयाल ॥ १ ॥ तूंहि जवजंजन
 ज्ञाव सरूप, तूंहि अरिगंजन रंजन जूप, तूंहि अविनाशी
 तूंहि बीतराग, तूंहि माहाराज तूंहि वरुजाग ॥ २ ॥ तूंहि गुण-
 धाम तूंहि विसराम, तूंहि नवनिद्ध तूंहि वरु नाम ॥ तूंहि अघ-
 नाश तूंहि अविनाश, तूंहि मतिवंत तूंहि मतिवास ॥ ३ ॥ तूंहि
 गुण केवलरूप अनंत, तूंहि जगतारन तारण संत ॥ तूंहि जग ध्येय
 तूंहि जग ध्यान, तूंहि चिदरूप तूंहि जगवान ॥ ४ ॥ तूंहि मम
 तात तूंहि मम मात, तूंहि मम आत तूंहि मम वात ॥ तूंहि
 सरणागत राखणहार, तूंहि दुख दोहग टाखणहार ॥ ५ ॥ (चाल
 लावणी) ॥ करुं अरज एक तोपे जिनपति, कंत कुष्टसें नही मरते
 ॥ पूरव करमके लिखत लेख जे, किसके टारे नहीं टरते ॥ १ ॥
 पण तुज शासन जगत हेलना, जगत ढंढेरा वाजत हे ॥ आपकर्म
 अरु जैनधर्मके, फल पाई यों लाजत हे ॥ २ ॥ यो दुख मोसें
 सह्यो जात नही, आदिनाथ जग रखपाला ॥ करुणाकरके रोग
 निवारण, गुण कीजै जग प्रतिपाला ॥ ३ ॥ यक प्रसन्न हुय फल
 बीजेरो, हाथतणो फल तव दीनो ॥ मयणा तव उल्लास जई
 मन, चिंते सब कारज सीनो ॥ ४ ॥ नौ दिन नमण नीर, तनु
 फरसें, कुष्टरोग सब नासत हे ॥ कामदेव अरु अमर समोवरु,
 श्रीपाल सोहावत हे ॥ ५ ॥ या कीर्त प्रजु तिहारी जूतल,

प्रगट प्रबल हे जस सेरो ॥ आसू चैत्र मासमें महिमा, देशरमें
 प्रज्जु तेरो ॥ ६ ॥ फिर वागमदेश वमोद नगरमें, जग पर प्रज्जु क-
 रुणा कीनी ॥ कितने वरस लग महीमें महिमा, अविचल जूतल
 रुद्धि दीनी ॥ ७ ॥ दिल्ली पर तुरकान जयो तब, पातस्याह ले-
 रुवा आयो ॥ दूत जूत पत्थरकी मूरत, जन्मुल्लासैं उखरायो ॥
 ॥ ८ ॥ बहुत दीनां लग की विलराइ, आको यों वाचा बोले ॥ देव
 हिंदको वमो जागतो, यूं बोलत फिर मोले ॥ ९ ॥ सुनो वात
 काजी मुल्लां तुम, एक वातसैं त्रासेगा ॥ गौ ब्राह्मण प्रतिपाल क-
 हाई, गो वधसैं ये नासेगा ॥ १० ॥ गो वध करण लगे जब निज
 रे, देख सके क्यों प्रतिपाला ॥ करण युद्ध जब जये महाबल,
 शस्त्र ऊमोऊम विकराला ॥ ११ ॥ (दूहा) महा युद्ध करणे लगे,
 घाव चोरासी अंग ॥ करी मलोखा गामली, आये धुलेव सुरंग ॥ १२ ॥
 (चाल लावणी ॥) गांव धुलेवा वंशजालमें, गुप्त रहे हैं प्रज्जु
 धरती ॥ गाय एक कोनी वनियनकी, आइ बाहां चरंती ॥ स्त्रै
 तिहां पयधारा शिर पर, सांज समैं फिर नही दूजै ॥ रीत करी
 तब गोपालन पर, गौपाल अरहर धूजै ॥ दूजे दिन गौ लारे आयो,
 लह्यो जेद कह्यो वनियनपैं ॥ शेठ आय जब नजरे देख्यो, चकित
 जयो हे तन मनपैं ॥ १३ ॥ मध्यरातमें सुपनो दीनो, रुषजनाथकी
 मूरत हे ॥ बहिर निकासो करो लापसी, जीतर मूरत पूरत हे ॥ १४ ॥
 ॥ नव दिनमें सब घाव मिलासी, मत काढे तूं नव दिनमें ॥ कियों
 सिठने हुकम प्रमाणे, आये संघ बहु ठ दिनमें ॥ १५ ॥ केश उपवासी
 केश व्रतधारी, केश अलुआणे पांव चलै ॥ केश लोककूं उ-
 ळार बाधा, कब प्रज्जुको दरशन मिले ॥ १६ ॥ यूं सब लोकां दरस
 तरसकी, कहे लोक मूरति काहो ॥ लाओ महाराजकी मूरत,
 संघ सबे लीनो आनो ॥ १७ ॥ आवरदस्तसैं दिवस सातमें, लापसी

बाहिर तब कीने, अंसर जर वरण रहाए, संघ लोक दर्शन दीने ॥
 ॥ ८ ॥ फिर सुपनेमें डूब दिखायो, संघे मिल देवल कीनो ॥
 मध्य विराजै रुषज तखतपर, कलियुगमें यो जस लीनो ॥ ९ ॥
 (दुहा) संवत अढ़ारे तेसठे, ज्ञानसदाशिव राय ॥ कियो धंगानो
 डुष्टने, ज्ञाखूं वरण बनाय ॥ १ ॥ (मोतीदाम छंद ॥) सदा-
 शिव राय चिते मन एह, लूटे बहु धाम जमी पर जेह ॥ जित्हां
 पति नाथ धुलेव कहाय, लखो लग डूब जंमर सुणाए ॥ २ ॥
 जावां अब लूटण गाम धुलेव, ग्रहं सब माल जई तखेव ॥ आयो
 निज फोज लेई दल गाज, तोषां दोय साथ लियां बहु साज ॥ ३ ॥
 कंपु दोय लार लिये फिरंगाण, जंठा जर साथ लिया कोकवाण ॥
 तवां बहु लोक कहे महाराज, तही इह कारण कृत्य अकाज ॥
 ॥ ४ ॥ एतो वह जाजल देव कहाय, रहे नहीं लाज ति
 हारिय काय ॥ तवां फिर बोले शदाशिव चूप, ग्रहां सब माल
 अवां चढी चूप ॥ ५ ॥ इसो कहि आवत डुष्ट कछर, कीयो नज
 राणह नाथ हजूर ॥ राख्यो नही नाथ तबे नजराण, जयो मन
 चकितमान गिलाण ॥ ६ ॥ तवां मन चित जंमारी बुलाय, मीठे
 वच बोले सबे ललचाय ॥ लई संग आय मुकाम मजार, कियो
 तब कूच लई सब लार ॥ ७ ॥ करे तब गाम पुकार, जंमारी सबे
 इ पुकार ॥ करो अब बाहर नाथ दयाल ॥ गयो किहां आज
 गरीब निवाज ॥ चढो अब बाहर राखण लाज ॥ ८ ॥ (दुहा)
 जण समें कोउ सेठको, बाहण तारण काज ॥ गये अक्षिषायक
 नाथजी, जेई गये वहागाज ॥ १ ॥ सुणो अरज पृथ्वीनाथजी
 सहेर धुलेव मजार ॥ कियो अकारज डुष्टने, शीघ्र चलो जन तार
 ॥ २ ॥ आए तुरत महाराजजी, करवा जन संजाल ॥ दो घोरे
 डोनुं चढे, जेरुं अरु प्रतिपाल ॥ ३ ॥ जित्हां कोष आपे कियो, द-

श दिशि फौज हजार ॥ मार २ चो तरफतें, नई लमाई त्यार ॥
 ४ ॥ (जुजंग प्रयात ठंद) कूंकू कूकू कूकू वहे कोकवाणं, सण-
 सण तीर तरकस्त वाणं ॥ धुवाके धमाके वहे नाख गोला,
 जिसा कर्कसा जम्मरा नयनमोला ॥ १ ॥ किते अंगपे शस्त्रा-
 धाव लागे, किते मारतें कंपते दूर जागे ॥ किते दंतपे तिरण लेवे
 वराकां, कितें थरथरे त्रास होवे तिराका ॥ २ ॥ किते रसुझाई-
 लछ्मा पुकारै, किते दीन होके खुदापे संजारे ॥ कितें नाथपे केस-
 रा खून माणै, किते नाथकूं जागती ज्योत जाणै ॥ ३ ॥ सदाशि-
 वनें धाव लागो अटारो, पुनी ज्ञाउ जसवंत दोनुं संहारो ॥ वमो
 कोप जाणी सबे फोज ज्ञाजी, हुई केशरीनाथकी जीत वाजी ॥ ४ ॥
 सदाशिवने आखनी अटक लीनो, सवापांचसें रकमरो खूद दीनो ॥
 इसो नाथ धूलेवरो मर्दगाजी, सदा केशरानाथरी जीत वाजी ॥ ५ ॥
 (दूहा) या विध कलियुग जग जणा, ताच्या केई जिनराज ॥
 दीपविजय कविराजकूं, महेर करो महाराज ॥ १ ॥ (मोतीदाम
 ठंद) तूंही नवनिद्ध तूंही अमसिद्ध, तूंही मनवंछित बैछित रुद्ध ॥
 तूंही सिरदार तूंही किरतार, तूंही सरणागत दीनदयाल ॥ २ ॥
 तूंही कामकुंज तूंही कामधेन, तूंही सुरवृद्ध तूंही मम शैल ॥
 तूंही दक्षिणावर्त्त दायक देव, तूंही विसराम तूंही वर सैव
 ॥ ३ ॥ तूंही मम प्राण आधार जरूर, तूंही मम इच्छित दायक
 नूर ॥ तूंही मम झूप तूंही पतसाह, तूंही मम रुद्ध जंमार अगाह
 ॥ ४ ॥ तूंही मम मंत्र तूंही मम यंत्र तूंही मम संत्य तूंही मम
 तंत्र ॥ तूंही गहनायक तूंही ॥ पूज्य तूंही जग-
 पूज्य ॥ ५ ॥ (लावणी चाल चदनबाल र ॥ ॥ राज ॥ ॥ ॥
 नृप आवत हे, केशरमें ॥ ॥ जिन मु० ४ ॥ ॥ मु ॥ ॥
 ॥ १ ॥ सहर परगणे देश ॥ ॥ व ॥ समवसरण देश देशान ॥ ॥

मूसल वरु राणा हाजर, पूरै इच्छित सब मनकी ॥ २ ॥ जलवट
 अलवट वाटघाटमें, रण रावल डुख दूर हरै, इक चित ध्याने जे
 नित समरे, अखय खजाना अजर जरे ॥ ३ ॥ धिधिमप धिधिमप
 धपमप धपमप, ताल पखावत राजत हे ॥ गरुगरु दौ गरुगरु दौ गरु-
 गरु, धों धों नोवत वाजत हे ॥ ४ ॥ हिंदूपति पतशाह छंदेपुर, जीम-
 लिहके राजनमें ॥ एह लावणी खूब वणाई, सकल संघके सागनमें
 ॥ ५ ॥ संवत अठार पञ्चोत्तर वरषै, फागुण सुदि तेरश दिवसै ॥
 मंगलके दिन दीपविजयकुं, दर्शन परशन दो जलसे ॥ ६ ॥ (क-
 लश-वप्पय ठंद) समवशरण जग शरन, तीन लोक कलिमल
 हरन ॥ धुनि वरसत जलधरन, जरण पौष पावन करन ॥ जुगलधर्म
 नीती हरन, सब करम जेध घनजरन ॥ मोहमल्ल अरि दरन, सु-
 कनु वरन शुद्ध चरन, इंड चंड पदजुगल सेवन, जगत विरुद तार-
 नंतरन ॥ दीपविजय कविराज बहाडुर, ऋषजनाथ असरनशरन
 ॥ १ ॥ ऋषजनाथ महाराज, सबे डुख दालिड जंजन ॥ ऋषजनाथ
 महाराज, सबे झूप मनरंजन ॥ ऋषजनाथ पृथ्वीनाथ, समरघो
 बाहर धाये, ऋषजनाथ पृथ्वीनाथ, मंगल नाम गवाये ॥ दीपविजय
 कविराज बहाडुर ॥ खलके मुलक हाजर रहै, कलिजुग जयो देव तुं,
 सुरनर सब कीरत कहै ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ आरती लावणी ॥

आरति करुं श्रीपार्श्वप्रभूकी, जन्म बनारशी हे जिनका, घ-
 ननं घननं बाजै घंटघण ॥ ध्यान धरुं जिनवरका ॥ आ० १ ॥
 जब कमठासय वेहागाज ॥ १ ॥ अघटा बिजुरी चमका ॥ गिरु
 धूलव मजार ॥ कियो अकारज रु काजन शंका ॥ आ० २ ॥
 ॥ ३ ॥ आए तुरत महाराजजी, करवा पीधर चित चमका ॥ फल
 दोनु जेदे, जेरुं अरु प्रतिपाल ॥ ३ ॥ जिह प्रभू तन ठंका ॥ आ० ३ ॥

जत्र पं पं सिणगारे, ताथेइ नाचत ले फिरका ॥ भ्रमक
धौं मा, घननं घुघरके घरका ॥ आ० ४ ॥ धी धी धी
कट नौ, धौं धौंकट डुंडुनि धौंका ॥ या विध गीत संगीत
वजन १ ॥ न करै जिनका ॥ आ० ५ ॥ तननं तररर तंत
ताल २ ॥ मौं मौं करते मंका, जेरण फेरणके जनकारे,
जागमदी जंका ॥ आ० ६ ॥ सुरनर इंड सब जै जै करते,
जीवत रा जिनका ॥ अमृत नदय तिण वेर जयो
सुख, को है तिनका ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥

आदि जिनेशर पारणो ॥

आदिकियो पारणो, आ रस सेलमी ॥ आ० ॥
घमा एकसेलमी, रस जरिया है नीका ॥ नलटजाव
श्रेयांश वहिदिवीआठूकारे ॥ आ० ॥ १ ॥ देव डुंडुनी
वाज रही है, वरखा ॥ वारे माससूं कियो पारणो,
गई भूष सब ॥ आ० २ ॥ रुद्धि सिद्धि कारज मनोका-
मना ॥ घर २ मंडुनिया हरख वधामणा सिरे, आखा
त्रीज तिवार रे ॥ श्रीसेतुंजा सिद्धक्षेत्र है, मोटो कहिये
धाम ॥ श्रीसंघव, पूरे मोटा स्वामि रे ॥ आ० ४ ॥
संकट काटो विघनखो मेरी लाज ॥ बे करजोमी
नानु कहता, रुषनरे ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्रीअजीतनाथ महादेव, नवाज, जरूर जिनवर
॥ ॥ सेवक शिरनामे, तने ॥ कर माफी मारा
न जलियो रांक, अन ॥ आ० ॥ ४ ॥ एवा
॥ ॥ बली दुख दवमें ॥ को ॥ जिन मु० ॥ ४ ॥ एवा
॥ ॥ मऊ केमे ॥ ल० ॥ व ॥ रामवसरण देइ देइ

स्था नरने नार ॥ जि० ५ ॥ चोवीशमा जिनेसरू रे, मुकतितणा
दातार रे ॥ करजोमी कवियण एम ज्ञणे, भारो जवनो फेरो टाळ
॥ जिन मु० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ रुषभदेव स्तवनं ॥

॥ पोढो२ जी रुषभ विहारी, निद्रा वश नयण तिहारे ॥
पो० ॥ प्रभु आलस अंग दुखसाई, पूठै मरूदेवा माई ॥ पो० १ ॥
प्रभु नंदा सुमंगला राणी, उन्न रुचर सेज विठाणी ॥ पो० २ ॥ प्र
भु नवलसु नेह सनेहा, प्रभु मनवंडित फल देहा ॥ पो० ३ ॥
प्यारे सेवक हितकर गावै, मनवंडित फल पावै ॥ पो० ४ ॥ अ
जर अमर पद पावै, करजोमी शीश नभावै ॥ पो० ५ ॥ इति ॥

॥ मंगल स्तवन ॥ राग सामेरी ॥

॥ कीजै मंगल च्यार, आज घरे नाथ पधार्या ॥ कीजै० ॥
पहिले मंगल प्रभुजीकूं पूजूं, यसी केसर घनसार ॥ आ० १ ॥
बीजुं मंगल अगर नखेबुं, कंठै ठबुं फूलहार ॥ आ० २ ॥ त्रीजे
मंगल आरती उतारूं, घंट वजाउं रणकार ॥ आ० ३ ॥ चौथे मं
गल प्रभुगुण गाउं, नाचू थै थैकार ॥ आ० ४ ॥ रूपचंद कदै ना
थ निरंजन, चरण कमल जाउं वार ॥ आ० ५ इति पदं ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ सिद्धाचल गिरि जेटो रे, जविजन सुखकारा ॥ सि० ॥
प्रथम जिनंदे ए गिरिना गुण, जाख्या विविध प्रकारा ॥ इण गिरि
पधु अनंता सीधा, एहनी हुं बलिहारा रे ॥ ज० सि० १ ॥ रु
जिनेश्वर पूर्व निनाणूं, समवसरया सुखकारा ॥ सि० २ ॥ एण तल
जव प्रभु जेव्या, पाप पंक मल हारा रे ॥ ज० सि० ३ ॥
अथेविम मनोहर अदभुत, दरशण अतही न ॥ सि० ४ ॥ मूलना
॥ २ ॥ एण जेव्या, पूजन दुख तहु वारा रे ॥ सि० ५ ॥ इति पदं ॥

मात चक्रेसरी गिरवर ऊपर, चक्र हस्त विच धारा ॥ उष्ट
निवारण सुमति वधारण, राजत संघ रखवाला रे ॥ ज० सि० ॥
४ ॥ खरतर गह्व नायक सुख दायक, कीरत जग विसतारा ॥ गु
ण आगर राजत अति सुंदर, हंस सूरि गुणधारा रे । ज० सि० ५
॥ संवत उगण वत्तीसे कार्तिक, शुक्ल पक्ष मनुहारा ॥ पंचमी दिन
मन हर्ष धरीने, जात्र करी जयकारा रे ॥ ज० सि० ६ ॥ धर्मशील प
दपंकज सेवक, कुशल निधान उदारा ॥ ताल पशाये गिरवरना
गुण, पन्नणे मुनि रुक्सार रे ॥ ज० सि० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपदजीकी लावणी ॥

जगतमें नवपद जयकारी, पूजतां रोग टले ज्ञारी ॥ प्रथम
पद तीर्थपती राजै, दोष अष्टादशकूं त्याजै ॥ आठ प्रातीहारज
गजै, जगत प्रभु गुण धारै साजै ॥ (दोहा-साखी) अष्ट करम-
दल जीतके, सकल सिद्ध ते आय ॥ सिद्ध अनंता जजो बीजे पद,
एक समय शिव जाय ॥ प्रगट जयो निज स्वरूप ज्ञारी ॥ ज०
१ ॥ सूरिपदमें गौतम केशी, उपमा चंड सूरज जेशी ॥ उमारयो
राजा परदेशी, एक नव मांहे शिव लेशी ॥ (दोहा-साखी)
चोथे पद पाठक नमूं, श्रुतधारी उवझाय ॥ सबे साहु पंचम पदे,
धन धनो मुनिराय ॥ वखाण्यो वीरजिणंद ज्ञारी ॥ ज० २ ॥ द्र
व्य षट्की श्रद्धा आवै, सम संवेगादिक पावै ॥ विना यह ग्यान
नही किरिय, नदरशनसें सब तिरिया ॥ (उहा-साखी) ज्ञा
न पदारथ सुख सम पदमें आतमराम ॥ रमता रम्य अध्यातमें,
निजपद सा रक्षाते ॥ देखता वस्तु जगत सारी ॥ ज० ३ ॥ जो
गकी महिमा द्वितीय जाणी, चक्रधर गोपी सब राणी ॥ अती दश
रम करी सोहेत्ये प श्रावक सब मन मोहे ॥ (उहा-सा ॥
करम निकाचिपुत्रमपवा, तप कुमार कर ध्याय ॥ हमा आ ॥

सुरंग घन वरसत होरी, पारसप्रभुजीके पाश रे ॥ आ० ॥ कीरत
 वाग गगन जिनमंदिर, सजल घटा सुविलास रे ॥ श्याम मनोहर
 तन ठवि दमकत, चमकत दामनी ज्ञास रे ॥ आ० १ ॥ प्रभु
 आनन अमृतरश धारा, ऊनी लगी इक राश रे ॥ चात्रक रटत
 वचन मन मेरो, प्राण प्रभूकी आश रे ॥ आ० २ ॥ खेंच कवाण
 इंधनुषनकी, हिलमिल जमर उजास रे ॥ अपठर गान करत
 सुर वनिता, कोयल वचन उछाश रे ॥ आ० ३ ॥ धिर चित्त
 लाल गुलाल कुमकुमा, प्रेम अविर सुवाश रे ॥ तन मन प्रीत
 जरी पिचकारी, बेलूं प्रभूसैं कर हास रे ॥ आ० ४ ॥ सहज गु-
 लाब फूल चुन चोसर, गुंथ मणी गुणवास रे ॥ कुशल निधान धरो
 ठतियनपें, रुद्धसार प्रभु दास रे ॥ आ० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ रुषभदेवका बारेमासो लिख्यते ॥

मरुदेवाजी सोच करत हे मनमें, मेरा रुषभ गया क्युं व-
 नमें, प्रथम महीना जी लग्या आशाढ चोमाशा, इंदर वरपणकी
 आशा ॥ मरुदेवाजी मनमें जई उदासा, प्रभु रुषभ गये वनवासा
 ॥ (दूहा-साखी) रुषभ प्रभु वनकूं गये, जगत सुधारण काज ॥
 जरतादिक सो पूत्रकूं, वांट दिया सब राज ॥ पूत्र तुम सबही जी
 सगन होय रहे धनमें ॥ मे० १ ॥ सावण महीना जी फिरमिर
 भेइला वरसे, मेरे पूत्र विना जी तरसे ॥ जरतादिक जी सौ पूत्र-
 नके रुसैं, मेरा नंद निकल गया घरसे ॥ (दूहा-साखी) नगर
 अयोध्या थुं फुरै, गये कहां महाराज ॥ दे उलंजा जरतकूं, मेरा
 पूत्र मिलावो आज ॥ अजीतो मेरे सुत विन जी प्राण निकलसी
 विनमें ॥ मे० २ ॥ जादू महीना जी तज धन दोलत माया, वो
 गया इकेली काया ॥ जरतादिक रे तुम मनमें हरखाया, राज ये
 विना कमाये पाया ॥ (दूहा-साखी) नित न नाटक होत हे,

कर रहै जोगविलास ॥ सब माया या रुषनकी, गोरु गया वन-
 वास ॥ हेजी जगतारण जी दुखी होयगा तनमें ॥ मे० ३ ॥ आ-
 सू महीने जी सूरतकी ठिव लागी, वो होयगया वैरागी ॥ धनके
 सब लोनी जी पूत्र जये नीरागी, कनी खबर न लो वरुजागी ॥
 (दूहा-साखी) जरत कहे सुण मात जी, मत कर वृथा विलाप
 ॥ तीन लोक तारण तरण, आवेगें प्रजु आप ॥ इंद पद सेवे जी
 नहीं दे रती विघनमें ॥ मे० ४ ॥ काती महिना जी कब वो रु-
 षन घर आवै, मोहे नेणा आण बतावै ॥ नही कागद जी मुऊकूं
 पूत्र पठावै, मेरा जीव बहोत दुख पावै ॥ (दूहा-साखी) फुरती
 निशदिन पूत्रकों, रो रो खोइ आंख ॥ नमकर मिलती रुषनसें,
 जो देत विधाता पांख ॥ मोर पपइया जी मगन ज्युं रहते धनमे ॥
 मे० ५ ॥ मिगसर महीना जी जरत बाहुबल जाई, आपसमें करे
 ललाई ॥ जरत यूं कहता जी मानो मेरी दुहाई, सब सैन्या चढ-
 कर आई ॥ (दूहा-साखी) बारा वरस लमते जये, इंद्र दिये सम
 जाय ॥ चक्रवर्ति वनता गये, जये चंद्रयश राय ॥ हे जी तो तप
 कारण जी खमे बाहुबल रनमें ॥ मे० ६ ॥ पोसका महीना जी
 पमे ठंरुका पाला, रुत आया कठिन सियाला ॥ कहां होगा
 जी रुषन जगत प्रतिपाला, में रटुं रुषनकी माला ॥ (दूहा-साखी)
 कोइ परवतकी बुदमें, होगा मेरा नंद ॥ ठंरु तापकी विपतमें, सहै
 बहोत दुख धंद ॥ जरत मेरे सुतका जी नहीं फिकर तेरे मनमें ॥
 मे० ७ ॥ माहका महीना जी किसें कहूं दुख मेरा, सब पूत्र विना
 अंधेरा ॥ पूत्र घर आवो जी देखूंगी मुख तेरा, कोइ देवे रुषनका
 बेरा ॥ (दूहा-साखी) इंद्रादिक जाकूं नमें, रहे सदा करजोर ॥
 राज रमणकी राहा, वो गया बिनकमें गोरु ॥ ऐसा निरमोही जी
 पटका विरह ॥ मे० ८ ॥ फागण महीना जी नीर नयणमें

झरती, सूने मन घरमें फिरती ॥ झरत यूँ केता जी सोच फिकर
 क्यूँ करती, रहे निशदिन मुऊँसें खरती ॥ (दूहा-साखी) झरत विविध
 तर ज्ञांतसों, कहता वात वनाय ॥ वनपालक उद्यानके, दीवी वधाइ
 आय ॥ प्रभू पनुवारै जी सेवित हे मुनिजनमें ॥ मे० ए ॥ चैतका
 महीना जी हय गय रथ सब त्यारी, सिणगारी सेन्या सारी ॥
 झरत कर जोमे जी मरुदेवा मनुहारी, चल देख पूत्र सुखकारी ॥
 (दोहा-साखी) इंद्रध्वज आगे चले, जामंरुल हे लार ॥ चोसठ
 चमर सुरपति करै, डुंडुनी गगन मजार ॥ एसो सुत तेरो जी
 विलसे सुख सुरगणमें ॥ मे० १० ॥ माश वैशाखां जी मरुदेवा
 मन हरखै, जब रूपप्रभू मुख निरखै ॥ नौणपट उधरुया जी वीत
 शम पद सरखै, चढ शुक्ल ध्यानकूं परखै ॥ (दूहा-साखी) गज ऊपर
 मुगती गई, श्रीमरुदेवी मात ॥ पहली शिव जननी दई, एसें रु-
 पप्रभू सुजात ॥ जगत सुख कारण जी विचरै प्रभू मगतमें ॥ मे०
 ११ ॥ जेठका महीना जी रुत गरमीकी आई, में रूपप्रभू चरण
 छई लाई, दरस नित तेरो जी मुऊंकूं हे सुखदाई ॥ शिवा प्रेम
 सदा मन ज्ञाई ॥ (दूहा-साखी) धरम शील आधारसें, कुशल
 सदा आनंद ॥ रुद्धसार जिन नामसें, हरे डुरित डुख धंद ॥ हे
 जी तो मन सुध कर जी राखौ जिन चरणनमें ॥ मे० १२ ॥

॥ अर्थ नेमनाथजीका बारे मासा ॥

(मोह लियो माहाराज कूवरी वोमथुरावाली एचाल) ॥ सावण
 महीने नेम पिया मोह व्याहनकूं आये, उग्रशेन घर वटत वधाई
 सब मंगल गाये ॥ संग हे राम कृष्ण ज्ञाई, तोरणसें रथ फेर सि-
 धाए, सरम नहीं आई ॥ जगतमें लोकं करे हासी-मोह लियो
 शिवरमणी शोकन प्रीतम अविनाशी ॥ १ ॥ मोह महीने गगन
 बीच पीया इंदर चढ़ आयो, बैरणा बीज गणेश ॥ मोह जेठ

गरणायो ॥ सखी मोकूं विरहा संतायो, मोर पपइया बोले पापी,
 मदन सदन गयो ॥ तीज विन प्रीतम यूं जासी ॥ मोह लि० २ ॥
 आसू महीने आश पीयाकी मिलणेकी लागी, तेल चढ़ी मोकूं ठि-
 टकाई दया नहीं जागी ॥ कंत तुम निरमोही सागी, विना गुने
 तकशीर कंत मोहे, कैसें तुम त्यागी ॥ प्रीतकी मारी गले फासी—
 मोह लि० ३ ॥ काती कंत गयो सहसावन खबर नहीं लीनी,
 उत्तम प्रीत रीत नही साजन ये तुम क्या कीनी ॥ पशुनकी दयार्पे
 चित दीनी, रूस चले माहाराज गुने विन, अंतरंग ज्ञानी ॥ स्याम
 तोकुं मति ये क्या ज्ञासी—मोह लि० ४ ॥ मिगसर मोहन तीन
 लोक पति नार और धारी, शिवरमणीके मिलणे वावत करी कंत
 त्यारी ॥ पिया तुम चढ़गये गिरनारी, अनंत लोग जोगी सो काम-
 ला, लगी तुमें प्यारी ॥ पीया में चरणनकी दासी—मोह लि० ५ ॥ पोश
 पीया जलंजा देती हिये नहीं धारो, नहीं गोमूंगी संग नाथ अब चाहे
 सो कर मारो ॥ वचन जो लगे तुमें खारो, एक बेर घर अंगण आवो
 फेर तजूं लारो ॥ शखी सब मिलकर समजासी—मो० ६ ॥ माह
 महीने रुत सरदीकी ठंरु बहोत वाजै, सेज लगे तांगण सी मु-
 ञ्को नेम नही लाजै ॥ मदनको कटक कोण ज्ञाजै, नहीं वरुन
 कूं गैरत किसकी, तुमकूं यह ठाजै ॥ पिया विन करुं में गति
 काशी—मो० ७ ॥ फागण फाग धरोघर खेले दंपति सुख माणै,
 में अबला तरसुं विन प्रीतम जियकी जिय जानै ॥ कौन संग में
 खेलूं होरी, एक विना यो सब जग सूनो, नहीं बाला जोरी ॥
 कंत में दरशनकी प्यासी—मो० ८ ॥ चेत मास फूली वनराई
 कोयल सोर करै, ऐसे निरमोहीसे करके कही कुण फंद पमै ॥
 प्रीत जिन नव चवकी तोरी, राजुल तज सिरगार हार कूं मदन
 मान मोमी ॥ नेम विन हो रही ऊदासी—मो० ९ ॥ माश

वैशाख आंख घूं उलजै प्रीतमकी मनमें, उग्रशेन महाराज डुला-
री गइ सहसावनमें ॥ देखण शिवादेवीके नंदा, इंड चंड शेवित्त
पदपंकज मुख पूनमचंदा ॥ आज शखी प्रीतम घर आसी-मो०
१० ॥ जेठ माश गरमी रुत लूआं वाजै कंत बुरी, नही रैण सुख
चैन शखीरी चल रही प्रेमवुरी ॥ पाप कोइ पूरव उदै आया,
ठोम चलै घनस्याम आज में दरशण सुख पाया ॥ तजी में सब
घरकी फासी-मो० ११ ॥ माश असाढ सखी संग राजुल नेम
चरण जेव्या, धर करणी जव तिरणी होकर धंद सज्जी मेव्या ॥
प्रीत तुम अजर अमर राखी, रुदसार आधार तुमारो प्रेम शिवा
शाखी ॥ जगत जन गुण तेरा गासी-मो० १२ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ छुटकर स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ अथ श्री शीतलजिन स्तोत्र ॥

सकल मंगल केलि निवेशिनं, सहृदयं हृदयं गम देशनं ॥ अग्नि
तोत्तम जक्ति सुरेश्वरं, नमत शीतलनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥ सहज
सुंदर सङ्गुणमंदिरं, विमल केवल बोध विकेश्वरं ॥ अति सुवर्ण
सुवर्ण समद्युतं, प्रवर बंधुर लक्षण संयुतं ॥ २ ॥ युग्मं ॥ यदिय
जक्तिर्नविनां जवेजवे, जवेदजीष्ठार्थ निदानमजुतं ॥ सएव नंदा-
त्म समुन्नवो जिनः, समर्चनीयः खलु शीतलः प्रभु ॥ ३ ॥ कर्मा
जितसान् जवितः सुशीतलान्, कुर्वन्मुदा वाक् सुधया दयापरः ॥
सदेव देवो जवतात् सदैवमे, सदिष्ट सिद्धयै जिनराज शीतलः ॥
४ ॥ अधिगत शिवशर्मा वीत मोहादि कर्मा, दृढरथ तनुं जन्मा
सर्वतः साध धर्मा ॥ त्रिदश महित मूर्तिः स्फुर्तिमत् पुण्यकीर्तिः,
जयतु गत जवार्तिः शीतलः सौम्यमूर्तिः ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ श्री पार्श्वजिन स्तोत्र ॥

॥ विगदगुण विचित्रं सच्चरित्रं दधानो, दलित डुरित राशि

विश्व विश्वाधदातः ॥ प्रकट महिमरम्यो दुर्मती नाम गम्यो, जय
 तु जिनपतिः श्रीपार्श्वचिंतामणीशः ॥ १ ॥ कमठ कुमतिवल्ली
 मूल मुन्मूल यन्ती, पदम कृत पदाब्जेयस्य चृंगीव पद्मा ॥ अवि
 कृतमात कायोत्सर्ग मुशान्वितोसौ, जगति बहुमतोस्मान् पातु
 वामांग जन्मा ॥ २ ॥ अविचल मणि विभ्रत् सत्फलानां सहस्रं,
 बहुल विमल ज्ञास्वद्रूपणोज्ञासि गात्रः ॥ गुरुतर वर ज्ञक्त्या सक्त
 चित्ताङ्गज्ञाजां, जवतु शिव समृद्धयै चाश्वसे निर्जिनेन्द्रः ॥ ३ ॥
 कुपित करि मृगेश व्याल दावानलाब्धि, प्रहरणगदगुह्यातंक शंका
 पदार्ता ॥ विकशित मुख पद्मः सत्पुरेसूरताख्ये, जयतु नृजग
 लक्ष्मी भ्राजमानो जिनेन्द्रः ॥ ४ ॥

॥ अथ समस्यामयी शंखेश्वर पार्श्व जिन स्तुतिः ॥

यस्य ज्ञान दया सिंधो, दर्शनं श्रेय से ध्रुवं ॥ सश्रीमान्या
 र्श्व तीर्थेशो, निपेय्यः सततं सतां ॥ १ ॥ वामा सूनोर्यशः पुंजै,
 रघाधस्या नघा गुणः ॥ स्मर्यते येन सस्मार्यो, जवेत् प्राचीन वह्नि
 पां ॥ २ ॥ विहाय विषयाशक्तान्, संसारिक सुरासुरान् ॥ सेव्यता
 मकृयो धीराः, पार्श्वदेवो परः प्रभुः ॥ ३ ॥ जिनाः सवार्थ दानेन,
 येन कल्पद्रुमा अपि ॥ जवेदच्यर्चितो लोके, स श्रिये चामृताय च
 ॥ ४ ॥ संस्तुतो मधुर श्लोकैः, जैन लाज प्रदायकः ॥ कल्याण
 कारको नूयात्, श्रीमान् शंखेश्वरः प्रभुः ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ विविध यमक युक्त श्रीपार्श्व जिन स्तुतिः ॥

लक्ष्मी निदानं गुरु कर्मदानं, सद्धर्म दानं जगते ददानं ॥
 यक्षेश पार्श्वो शित पाद पार्श्व ॥ नुवामी पार्श्वे जवजेद पार्श्व ॥ १ ॥
 स्मेरातसी सून सम प्रज्ञावा, सम प्रज्ञावा जवदीय मूर्तिः ॥ वि-
 ज्ञाति वामां प्रजव त्रिलोके, जव त्रिलोकेन समर्चनीयः ॥ २ ॥
 तवेश पस्पंकज मादरेण, हृद्यादधाना जनतादरेण ॥ मुक्ता जवेदेक

पदे पराया, निर्वेश वनसौख्य परंपरायाः ॥ ३ ॥ निःशेषं जूषितं
 दान वारि, येन्मानसेत्वं ध्रियसे सदैव ॥ स एव गव्युत्तमं दानवारो,
 प्रोच्चारितोदाम यशाः सदैवः ॥ ४ ॥ देवाधिदेवाधि हरस्त्वमेव,
 सुज्ञान सुज्ञानजिबुद्ध रूपः ॥ सारांग सारांगवितीर्णजूयः, कड्याण
 कड्याण कृदं गज्जाजां ॥ ५ ॥ यैरर्च्यसेत्वं वर वैद्यराज, मनोजिरा-
 मैः सुमनोजिरामै ॥ कर्माजिधै रुज्जित जूघनास्ते, विसारि लोकेश
 विसारि लोके ॥ ६ ॥ इत्थंते जिन पुंगवस्य जगवन् प्रोदाम धामा
 न्वितं, पादाब्जं परज्जाग जृत् त्रिज्जुवन स्तुत्यंस्तुवन्तोनिशं ॥ दक्षं
 कर्म विपक्ष पक्ष दलने ज्ञव्या ज्वंतु क्षमाः, कड्याणाभक्ष्य मुक्ति
 माप्नु मखिलंतीर्त्वा ज्ञवाज्जोनिधिं ॥ ७ ॥ इति

॥ अथ शंखेश्वर जिन स्तवन ॥

शालिनी उदः ॥ गौमीग्रामे स्तंजने चारु तीर्थे, जीराव-
 ह्या पत्तने लोङ्गारख्ये ॥ वाणारस्यां चापि विख्यात कीर्ति, श्रीपा-
 र्श्वेशं नौमि शंखेश्वरस्यं ॥ १ ॥ इष्टार्थानां स्पर्शने पारिजातं, वामा
 देव्या नंदनं देव वंद्यं ॥ स्वर्गे जूमौ नागलोके प्रशिद्धं ॥ श्री पा० ॥
 २ ॥ जित्वा जेद्यं कर्म जालं विशालं, प्राप्यानन्तं ज्ञान रत्नं
 चिरत्नं ॥ लब्धा मंदानंद निर्वाण शौख्यं ॥ श्रीपार्श्व० ३ ॥ विश्वाधी
 शं विश्वलोके पवित्रं, पापागम्यं मोक्ष लक्ष्मी कवत्रं ॥ अंजोजाहं
 सर्वदा सुप्रसन्नं ॥ श्रीपार्श्व० ४ ॥ वर्षे रम्यं खंङ्ग दोर्त्ताग चंड, संख्ये
 मासे माधवे कृष्ण पक्षे ॥ प्राप्तं पुण्यैर्दर्शनं यस्य तंच, श्रीपा०
 ५ ॥ इति

॥ अथ पार्श्व जिन सोत्रं ॥

विशद सद्गुण राजि विराजितं, घनवन्ता घननाद विज्ञा
 तं ॥ जजत जक्ति जेरेण रमेश्वरं, जगति पार्श्व जिनेश
 ॥ १ ॥ विविध वर्ण विचूपित विग्रहाः, विहित दुर्दम दुर्पक नि

वसु युगार्क मितः सुकृताकराः, जिनवराः प्रज्वतु शिवकरा ॥ २ ॥
 रुचरवर्ण निबद्ध मनिन्दितः, सुमनसा प्रकरै रज्जिवन्दित ॥ निखिल
 साधुजनाः खलुनिर्मिदं, जिनमतं नमतां चित्तशर्मदं ॥ ३ ॥ सकल
 ज्ञव्य सरोज विकाशिका, कुमति संतमसोच्चय नाशिका ॥ जिन-
 वरान्न पद्म गतोन्मुदा, ज्वतु वाग्जिनलाज शुजार्थदा ॥ ४ ॥

अथ श्री गोडीपार्श्व नाथ जिन स्तोत्रः ॥

श्रीमत्पार्श्व जिनेश्वरस्य विलसद्ज्ञानामृतांजौनिधेः, सद्भा-
 वेन परस्वरूप विरते मुक्त्यास्पदेतस्थुषः ॥ सज्जुत प्रतिबिंब तस्तु-
 सुतरां गोप्तीपुरोद्भासिनः, सोद्धासंप्रणिपत्य सत्यमनसां तत्रैवनिधेयं
 स्मरे ॥ १ ॥ यत्पादांबुज दर्शनोत्सुकधियो ज्ञव्याव्रजंतोर्ध्वनि,
 स्पृश्यंतेनहि छुष्टजंतुनिवहे र्वन्यैर्नवातस्करैः ॥ नैवोज्वालदवानलै
 र्जलचराकीर्णैर्जलैजातुनो, सःश्रीपार्श्वविभुर्व्यचिन्त्यमहिमा दृश्यो-
 नकैषांजवेत् ॥ २ ॥ हित्वान्तःकरणान्तं कुटिलतां मोहादिनोद्भा-
 वितां, धृत्वानिर्मलजावनांचविधिनायद्भक्तिमातन्विता ॥ लज्यन्ते
 नरराज निर्जरवरश्रेणीसुखानिक्रमा, न्मुक्तिश्रीरपिसैवशुद्धमनसा
 संसेव्यतांविश्वयाः ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्विंशती जिनस्तवनं ॥

॥ आद्यः श्रीरुषजस्ततो जितजिनः, श्रीशंजवस्तीर्थकृत् ॥
 सुश्रीमालजिनंदनश्चसुमतिः, शोसन्नपद्मप्रजः ॥ पृथ्वीकुक्षिजवसुपा-
 र्श्व, जिनपस्तीर्थेशचंद्रप्रजः ॥ सर्वज्ञःसुविधिर्जिनोमुनिमतः, श्री
 शीतलसौम्यदृक् ॥ १ ॥ श्रेयांशप्रभुवासुपूज्यविमलानंतेशधर्मेश्वराः,
 शांतिःकुंथुररस्ततो जितरिपुर्महर्जिनःसुव्रतः ॥ अर्द्धतोनमिनेमिशुद्ध
 मुनिपौविश्वत्रेयेविश्रुतौ, श्रीमत्पार्श्वजिनःप्रसिद्धमहिमा श्रीवर्द्धमान
 प्रभुः ॥ २ ॥ एतेश्रीजिनपुङ्गवाःपरमश्रद्धाश्चतुर्विंशति, निःशेषो-
 त्तमज्ञव्यजंतुहृदयांजौजप्रबोधोद्यताः ॥ विद्यन्तेसुरवंदयंविशदश्लो

कप्रजानिर्जय, श्रीसंपत्तिनिवासविक्रमपुरेसङ्गकितःप्रत्यहं ॥ ३ ॥

॥ अथ मंगलाष्टकलित्यते ॥

श्रीमन्नमसुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतिरत्नप्रज्ञा, ज्ञास्वत्पादनखेदव-
प्रवचनांज्ञोद्योव्यवस्थायिनः ॥ येसर्वेजिनसिद्धसूरिसुगतास्तेपाठका-
साधवः, स्तुत्यायोगिजनैश्चपंचगुरवःकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ १ ॥ सम्यग्द-
र्शन बोधवृत्तममलं रत्नत्रयंपावनं, मुक्तिश्रीनगरायनं जिनपते स्व-
र्गापवर्गप्रदः ॥ धर्मःसूक्तिसुधाश्चैत्यमखिलं जैनालयंश्रयालयं
प्रोक्तंतत्त्रिविधंचतुर्विधममीकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ २ ॥ नाज्ञेयादिजिना-
धिपा स्त्रिजुवनेख्याताश्चतुर्विंशतिः, श्रीमन्तोत्तरतेश्वरप्रभृतयोयेच
क्रिणो द्वादश ॥ येविष्णुप्रतिविष्णुलांगलधराः ससाधिकाविंशती,
त्रैलोक्येज्यदा त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ३ ॥ कैलाशेवृषभस्य
निर्वृतिमहीवीरस्यपावापुरी, चंपायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशे
लेहतां ॥ शेषाणामपिचोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्दतो, निर्वाणा
विनयःप्रसिद्धविज्जवाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ४ ॥ ज्योतिर्व्यंतरज्ञावनाम
रगृहे मेरौकुलाडौस्थिता, जंबुशाळमलिचैत्यशाखिषुतथावहाररूप्या
दिषु ॥ इक्ष्वाकारगिरौचक्रुंरुलनगेद्वीपेचनंदीश्वरे, जैलेयेमनुजोत्तरे
जिनगृहाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ५ ॥ योगज्ञवितरोजयत्यर्दतांजन्मान्नि-
षेकोत्सवे, योजातः परिनिक्रमेवचज्ञवो यःकेवलज्ञानज्ञाक् ॥ यःकै-
वल्यपुरप्रवेशमहिमा संज्ञावितः स्वर्गिनिः, कळ्याणानिचतानिपंच
सततंकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ६ ॥ येपंचोषधिरुद्धयः श्रुततपोरुद्धिगतापंचये,
येचाष्टांगमहानिमित्तकुशलायेष्टौविधाचारणा ॥ पंचज्ञानधराश्चयेपि
बलिनोयेबुद्धीरुद्धीश्वरा, ससैतेसकलाश्चतेगणभृताकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ७ ॥
देव्याश्चाष्टजयादिकादिगुणिताविद्यादिकोदेवत्प, श्रीतीर्थंकरमातृका-
भजनकायकाश्चयक्षीश्वराः द्वात्रिंशद्विदशाग्रहानिधिसुरा दिक्कन्यका
श्चाष्टधा, दिक्पालादशइत्यमीसुरगणाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ८ ॥ इत्थं

श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदंकव्याणकालेर्हतां, पूर्वाण्हेपिमहोत्सवेपिस-
ततं श्रीसौख्यसंपत्करं ॥ येऽगृण्वन्तिपठन्ति तैश्चमनुजैर्द्धर्मार्थकामा-
न्विता, लक्ष्मीराश्रयतेविपायरहिताः कुर्वन्तुमेमङ्गलं ॥ ए ॥ इति
मङ्गलाष्टकं संपूर्णं ॥

॥ अथ परमात्मा स्तोत्रः ॥

शिवं शुद्धं बुद्धं परं विश्वनाथं, नदेवं नबन्धु नैकर्म नकर्ता ॥

न भ्रमं नसंगं नशृङ्गा नकामं, चिदानन्दरूपं नमो वीतरागं ॥ १ ॥

नबन्धो नमोक्षो नरागादि लोकं, नजोगं नजोगं नव्याधि नजोकं ॥

नक्रोधं नमानं नमाया नलोभं ॥ चिदा० ॥ २ ॥ नहस्तौ नपादौ

नघ्राणं नजिह्वा, नचक्षुर्नकर्णं नवक्त्रं ननिद्रा, ॥ नस्वादं नखेदं नवर्णं

नमुद्रा, चि० ॥ ३ ॥ नजन्मं नमृत्यु नमोदं नचिन्ता, नकुतूह

नजोतं नकृष्यं नतुंदा ॥ नस्वामी नजृत्यं नदेवो नमर्त्या, चि० ४ ॥

त्रिदंमे त्रिखंमे हरे विश्वव्यापं, रुषीकेश विद्धंस कर्म्मरिजालं

॥ नपुण्यं नपापं नअहानप्राणं, चि० ॥ ५ ॥ नबाल्यं नवृद्धं

नविद्धि नमूढा, नवेद्यं नजेद्यं नमूर्तिर्नमीहा ॥ नकृष्णं नशुक्लं नमोदं

नतंज्ञा, चि० ॥ ६ ॥ नआद्यं नमध्यं नमंत्यं नमन्या, नद्वयं नक्षेत्रं

नदृष्टो नजगत् ॥ नगुर्वो नशिष्यो नआद्यो नदीनं, चि० ॥ ७ ॥

इदं ज्ञानरूपं स्वयं तत्त्ववेदी, नपूणां नशून्यं सचैतन्यरूपं ॥ अन्यो

जिज्जिह्वा नपरमार्थिकं, चि० ॥ ८ ॥ आत्मारामगुणाकरं गुणानि

विश्वैतन्यरत्नाकरं, सर्वज्ञतगतागते सुख दुःख ज्ञातात्वया सर्वगं ॥

त्रैलोक्याधिपति स्वयं स्वमनसा ध्यायन्ति योगेश्वराः, वंदेतं हरिवं-

श हर्ष हृदयं श्रीमान्मूढच्युतः ॥ ए ॥ इति श्रीपरमात्मा स्तोत्रं ॥

अथ नमस्कार स्तोत्रं ॥

दर्शनं देव देवस्य, दर्शनं पाप नाशनं ॥ दर्शनं स्वर्ग सोपानं,

दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वंदनेन च ॥

नृतिष्ठति चिरं पापं, छिद् हस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ दर्शनं जिनसूर्य
 स्य, संसार ध्वांतनाशनं ॥ बोधनं चित्त पद्मस्य, समस्तार्थ प्रकाश
 कं ॥ ३ ॥ दर्शनं जिनचंद्रस्य, सद्धर्माभृत वर्षणं ॥ जन्मदाय वि-
 नाशाय, वृंहणं सुखवारिधेः ॥ ४ ॥ जिनेज्जक्ति, जिनेज्जक्ति दिने २
 ॥ सदामेस्तु २, सदामेस्तु ज्ञवेश ॥ ५ ॥ नहित्राता १, नहित्रा
 ता जगत्रये ॥ वीतराग समोदेवो, नज्जुतो नज्जविष्यति ॥ ६ ॥
 अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्सर्व प्रयत्नेन,
 रक्ष २ जिनेश्वर ॥ ७ ॥ वीतराग मुखं दृष्ट्वा, पद्मराग सम प्रज्ञं ॥
 नैकजन्म कृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति ॥ ८ ॥ अर्हंतो मंगलं नि-
 त्यं, सिद्धा जगति मंगलं ॥ मंगलं साधवो मुक्तं, धर्मः सर्वत्र
 मंगलं ॥ ९ ॥ लोकोत्तमा इदार्हंतः, सिद्धालोकोत्तमाः सदा ॥ लो-
 कोत्तमो यतीशानां, धर्मो लोकोत्तमोर्हतां ॥ १० ॥ शरणं सर्वदार्हं
 तः, सिद्धा शरणं मंगलं ॥ साधवः शरणं लोके, धर्म शरणं मर्हं
 तां ॥ ११ ॥ इति नमस्कार स्तोत्र संपूर्णं ॥

॥ अथ तपगञ्ज समाचारी विशेष विधि संग्रह ॥

॥ तत्र पुन्यप्रकाश आलोचन वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सकल सिद्धिदायक सदा, चोवीशे जिनराय ॥ स
 कुरु सामिनी सरसती, प्रेमे प्रणमुं पाय ॥ १ ॥ त्रिभुवनपति त्रि
 सदातणो, नंदन गुण गंजरी ॥ शासननायक जगजयो, वर्द्धमान
 धर्मवीर ॥ २ ॥ इक दिन वीर जिनंदने, चरणे करी परिणाम ॥
 जविक जीवनाहित जणी, पूठै गोयमस्वामि ॥ ३ ॥ मुगति मा
 रग आराधियै, कहो किण पर अरिहंत ॥ सुभा सरस तब वचन
 रस, जाखे श्रीजगवंत ॥ ४ ॥ अतीचार अलोच्यै, व्रत धरीये गु
 रू साख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोरासी लाख ॥ ५ ॥
 विधिसुं वलि वोसराविये, पाप स्थानक अद
 ॥ ६ ॥ चार शरण नित

अनुसरै, निंदो डुरित आचार ॥ ६ ॥ शुभ करणी अनुमोदियै, जा
 व जलो मन आनि ॥ अणशण अवसर आदरी, नवपद जपो सु
 जाण ॥ ७ ॥ शुभगति आराधनतणा, ए ठै दश अधिकार ॥ चि
 त्त आणीने आदरो, जिम पामो जव पार ॥ ८ ॥ (दाल ॥ १ ॥
 ए ठिंमी किहां राखी ॥ इस चालमें) ज्ञान दरिशाण चारित्र तप
 वीरज, ए पांचे आचार ॥ एहतणा इह जव पर जवना, आलोइये
 अतीचार रे ॥ प्राणी ज्ञान जणो गुणखाणी, वीर वदे इम वाणी
 रे ॥ प्रा० ज्ञा० १॥ गुरु जलविये नही गुरु विनयें, कालै धरी बहु
 मान ॥ सूत्र अर्थ तडुजय करी सूधा, जणिये वही उपधान रे ॥
 प्रा० ज्ञा० २॥ ज्ञानोपगरण पाटी पोथी, ठवणी नोकरवाली ॥ एह
 तणी कीधी आशातना, ज्ञान जक्ति न संजाली रे ॥ प्रा० ज्ञा० ॥
 ३ ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ आ जव प
 र जव वलिय जवोजव, मिठाडुकर तेहरे ॥ प्रा० समकित
 द्यो शुद्ध जाणी ॥ ४ ॥ जिनवचने शंका नवि कीजै, नवि परमत
 अजिलाष ॥ साधुनणी निंदा परहरजो, फल संदेह म राखी रे ॥
 प्रा० स० ५ ॥ मूढपणुं ठंमो परसंसा, गुणवंतने आदरिये ॥ सा
 हमीने धर्म करि थिना जगति प्रज्ञावना करिये रे ॥ प्रा० स०
 ६ ॥ संघ चैत्य प्रख्यातते जे, अवर्णवाद मन लेख्यो ॥ द्रव्य दे
 वको जे विणसाह ॥ ३ ॥ विष्मंतां नवेख्यो रे ॥ प्रा० स० ७ ॥ इ-
 त्यादिक विपरीत ॥ ६ ॥ समकित खंम्युं जेह ॥ आ जव प०,
 मि० ॥ प्रा० इह साहेबजी चि आणी ॥ ८ ॥ पांच सुमति त्रिण
 गुप्ति विराधी ॥ १० ॥ नमा ॥ साधुतणे घरमे प्रमादे, अशुद्ध
 वचन मन, शरीर जे ० चा० ॥ १ ॥ आवकने धर्म सामायक, पो
 सहमां मन, शरीर ते ॥ आयणापूक जे आठे, प्रवचनभायन पाली
 रे ॥ प्रा० चा० ॥ ३ ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र रहोद्व्युं

जेह ॥ आज्ञव०, मित्रा० ॥ प्रा० चा० ११ ॥ वारे जेदे तप नवि
 कीधो, ठते योगे निज शकते ॥ धर्मे मन वच काया वीरज, नवि
 फोरविनं जगते रे ॥ प्रा० चा० १२ ॥ तप वीरज आचारे इण पर,
 विविध विराध्या जेह ॥ आज्ञव०, मित्रामि० ॥ प्रा० चा० १३ ॥
 वलिय विशेषे चारित्र केरा, अतीचार आलोश्ये ॥ वीरजिनेसर व
 चन सुणीने, पाप मैल सवि घोश्ये रे ॥ प्रा० चा० १४ ॥ (ढाल२)
 पृथ्वी पाणी तेज, वाज वनस्पती, ए पांचे आवर कहा ए ॥ करी.
 करसण आरंज, खेत्र जे खेमीया, कूआ तलाव खणाविया ए ॥ १ ॥
 घर आरंज अनेक, टांका ज्योरां, मेमी माल चिणाविया ए ॥
 लीपण गुंण काज, इण पर परपरे, पृथ्वीकाय विराधिया ए ॥
 २ ॥ धोयण नाहण पाणी, जीलण अप्पकाय, ठोती धोती कर दू
 हव्या ए ॥ ज्ञाठीगर कुंजार, लोह सोवनगरा, ज्ञामज्जूजा लिहालागरा
 ए ॥ ३ ॥ नापण सेकण काजे, वस्त्र निखारण, रंगण रांधण रसवती ए ॥ इ
 णि परे कर्मादान, परिपरे केलवी, तेज वाज विराधिया ए ॥ ४ ॥ वामी
 वन आराम, वावी वनस्पती, पान फूल फल चूटीया ए ॥ पौंदक
 पापनि शाक, सेक्या सूकव्या, ठेव्या वृंद आश्रिया ए ॥ ५ ॥ अल
 शीने एरंरु, घाणी घालीने, घणा तिलाकि शीया ए ॥ घाली कोलू
 मांदि, पीली सेलमी, कंद मूल फल ते शा ॥ ६ ॥ इमं एकै-
 डी जीव, हणया हणाविया, हणतां जो, एक जिया ए ॥ आज्ञव
 परजव जेह, वलिय जवोजव, ते जिय विरणे कर कर्म ए ॥ ७ ॥
 क्रमी सरमिया कीमा, गारुर गंमो, जिय ब्रह्मामि ॥ ८ ॥ लशीआ ए ॥
 वाला जलो चूमेल, विचलितरसत, प्रवच सुधा सरस मुखना ए ॥
 ९ ॥ इम वेइंडी जीव, जे में दुखी, प्रार आलोश्ये, व उदेही जू
 लीख, मांकम मंकोमा, चांचमर्क, जे जनि चोरासी ला, गहहिया
 घीवेल, कानखजुरमा, गीमोल, इत्य अदार ॥ व्या तेइंडी जीव,

जे में दूहव्या, ते मुऊ मिछा० ॥ १० ॥ माखी मछर मास, मसा
 पतंगिया, कंसारी कोलियावमा ए ॥ ढीकण विबु तीरु, जमरा
 जमरीय, कौता बग खरुमांकमी ए ॥ ११ ॥ इम चोरेंद्री जीव,
 जे में दूहव्या, ते मुऊ० ॥ जलमां नांखी जाल, जलचर दूहव्या,
 वनमां मृग संतापीया ए ॥ १२ ॥ पीरुया पंखी जीव, पामो पा-
 समां, पोपट घाड्या पांजरे ए ॥ इम पंचेंडी जीव, जे में दू०, ते
 मुऊ० ॥ १३ ॥ (दास ३ ॥ प्राणी वाणी हितकरी जी॥ ए
 चाल) क्रोध लोभ जय हासथी जी, बोला वचन असत्य ॥
 क्रूर करी धन पारका जी, लोधा जेह अदत्त रे ॥ जिनजी
 मिछामि दुक्कम आज, तुम्ह साखे सहाराज रे ॥ जिनजी मि० ॥
 देई सारू काज रे ॥ जिनजी मि० ॥ १ ॥ देव मनुज तिर्यचना जी,
 मैथुन सेव्या जेह ॥ विषयारस लंपटपणे जी, घणुं विटंब्यो देह
 रे ॥ जि० २ ॥ परिग्रहनी ममता करी जी, जव२ मेखी आधि ॥
 जेह जिहां ते तिहां रही जी, कोश्य न आवै साथ रे ॥ जि० ३
 ॥ रयणी जोजन जे कर्या जी, कीधा जक अजक ॥ रसना र-
 सनी लालचें जी, पाप कर्या परतक रे ॥ जि० ४ ॥ व्रत लेई
 बीसारीया जी, बलि जांग्या पञ्चस्काण ॥ कपट हेतु किरिया करी
 जी, कीधा आप वखाण रे ॥ जि० ५ ॥ त्रिण ढाले आठे दूहे जी,
 आलोया अतीचार ॥ शिवगति आराधनतणो जी, ए पहिलो अ-
 धिकार रे ॥ जि० ६ ॥ (ढाल ४ ॥ साहेलमीनी देशी ॥) पंच
 महाव्रत आम्रप्रद साहेलमी रे ॥ अथवा ढ्यो व्रत बार तो ॥ यथा
 शक्ति व्रत नःशंख ॥ १० ॥ पालो निरतीचार तो ॥ १ ॥ व्रत लिया
 संजारीयै, राशरां जो यमै धरिय विचार तो ॥ शिवगति आराधन-
 तणो, साक्षां शार ते अधिकार तो ॥ २ ॥ जीव सबै खमावियै
 सा० ॥ यो॥ शि० ॥ ३ ॥ लाख तो ॥ मनगुहै करो खामणा, सा० ॥

कोईसुं रोष न राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चिंतवो, सा० ॥
 कोइय न जाणो शत्रु तो ॥ राग द्वेष इम परिहरो, सा० ॥ कीजै
 जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ साहमी संघ खमावियै, सा० ॥ जे उप
 नी अप्रीत तो ॥ सज्जन कुटुंब करी खामणा, सा० ॥ ए जिनशा
 सन रीत तो ॥ ५ ॥ खमिये अने खमावियै, सा० ॥ एहीज धर्म
 नो सार तो ॥ शिवगति आराधनतणो, सा० ॥ ए त्रीजो अधि
 कार तो ॥ ६ ॥ मृषावाद हिंसा चोरी, सा० ॥ घन मुर्खा मैथुन
 तो ॥ क्रोध मान माया तूष्णा, सा० ॥ प्रेम द्वेष पैशून्य तो ॥ ७ ॥
 निंदा कलह न कीजीयै, सा० ॥ कूमा न दीजै आल तो ॥ रती
 अरती मिथ्या तजो, सा० ॥ माया मोस जंजाल तो ॥ ८ ॥ त्रि-
 विधर वोसरावियै, सा० ॥ पाप स्थान अछार तो ॥ शिवगति आ-
 राधनतणो, सा० ॥ ए चोखो अधिकार तो ॥ ९ ॥ (दाल ५ मी
 ॥ हवै निसुणो इहां आवीया ए ॥ ए चाल ॥) जनम जरा मर-
 णो करी ए, ए संसार असार तो ॥ कस्या कर्म सहु अनुजवे ए,
 कोइय न राखणहार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनु ए, शरण
 सिद्धजगवंत तो ॥ शरण धर्म श्रौजैननो ए, साधु शरण गुणवंत
 तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परिहरी ए ॥ चार शरण चित्त धार
 तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥
 आज्ञव परज्ञव जे कस्या ए, पाप कर्म केइ लाख तो ॥ आत्म
 साखे निंदिये ए, पंक्तिमिये गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मिथ्यामत
 वर्त्ताविया ए, जे जाख्या उत्सूत्र तो ॥ कुमति कदाबलजे वले ए,
 बलि उत्थाप्या सूत्र तो ॥ ५ ॥ घम्या घमाव्या जे ह्य मु ए, धरटी
 हल हथियार तो ॥ जवर मेदी मूकीया ए, करत, ब्र, संहार
 तो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोपीया ए, जनमर परिवाली ला ॥ जन-
 मांतर पोइतां पढी ए, कोइय न कीधी सार तो ७ ॥ आनक-

परजन्म जे कर्या ए, इम अधिकरण अनेक तो ॥ त्रिविध वैसि
 राविये ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ दुःकृत निंदा इम
 करी ए, पाप कर्या परिहार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए
 ठो अधिकार तो ॥ ९ ॥ (ढाल ठो ॥ आदि तुं जोइने आपणी
 ॥ ए चाल ॥) धन२ ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म ॥ दान
 शील तप आदरी, टाळ्या दुष्कर्म ॥ ध० १ ॥ शत्रुंजादिक तीर्थ
 नी, जे कीधी यात्र ॥ युगते जिनवर पूजिया, बलि पोष्या पात्र ॥
 ध० २ ॥ पुस्तक ज्ञान लिखाविया, जिणहर चिन चैत्य ॥ संघ चतु
 विध साचव्या, ए साते क्षेत्र ॥ ध० ३ ॥ पद्मिकमणा सुपैरे कर्या,
 अनुकंपा दान ॥ साधू सूरि उवझायनें, दीधा बहुमान ॥ ध० ४ ॥
 धर्मकारज अनुमोदिये, इम वारोवार ॥ शिवगति आराधनतणो,
 सातमो अधिकार ॥ ध० ५ ॥ जाव जलो मन आणीयै, चित्त अ
 णी ठाम ॥ समता जावे जाविये, ए आतमराम ॥ ध० ६ ॥ सुख
 दुख कारण जीवने, कोइ अवर न होइ ॥ कर्म आप जे आचर्या,
 जोगविये सोय ॥ ध० ७ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुन्य
 काम ॥ ठारि ऊपर ते लीपणू, जाखर चित्राम ॥ ध० ८ ॥ जाव
 जली परै जाविये, ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधनतणो,
 आठमो अधिकार ॥ ध० ९ ॥ (ढाल ७ मी ॥ रैवत गिरि ऊपर
 ॥ ए चाल) हवै अवसर जाणी करीय संलेखण सार, अणसण
 आदरिये पञ्चस्त्री च्यार आहार ॥ ललुता सवि मूकी ठांमी ममता
 अंग, ए आतन खेले समता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति च्यारे कीधा आ
 हार अनंत निःशंक, पण तृपति न पाभ्यो जीव लालचीन रंक ॥ उसहो
 ए वली२ अणशरणो परिणाम, एहथी पामीजै शिवपद सुरपद ठाम
 ॥ २ ॥ धन धन शक्ति जइ खंयो मेघकुमार, अणशण आराधी पाभ्या
 जवनो पार ॥ शिवांदिर जास्यै करी एक जगद्विधा आराधन केरो

ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ दशमें अधिकारै महा मंत्र नवकार,
 मनथी नवि मूँको शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपतां जायै दुर्ग
 ति दोष विकार, सुपरे ए समरो चन्द्र पूरबनो सार ॥ ४ ॥ ज-
 न्मांतरे जाता जो पामे नवकार, तो पातिक गाली पामे सुर अव-
 तार ॥ ए नवपद सरखो मंत्र न कोई सार, इह जव ने परजव सुख
 संपति दातार ॥ ५ ॥ जुन जील जीलणी राजा राणी थाय, नवपद म
 हिमाथी राजसिंह महाराय ॥ राणी रतनवती बेहुं पाम्या बै. सुर
 जोग, इक जवथी लेस्ये सिद्धवधू संजोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीने ए व
 ली मंत्र फढ्यो ततकाल, फणधर फीटीने प्रगट थई फूलमाल ॥
 शिवकुमरे योगी सोवनपुरसो कीध, इम एणे मंत्रे काज घणाना
 सिद्ध ॥ ए दश अधिकारे वीर जिनेसर जाख्यो, आराधनकेरो विधि
 जिणे चित्तमां राख्यो ॥ तिणे पाप पखाळी जवजय दूरे नांख्यो,
 जिन विनय करंता सुमति अमृतरस चाख्यो ॥ ७ ॥ (ढाल ७
 मी ॥ नमो जवि जावसुं ए ॥ ए चाल) सिद्धारथराय कुल तिलो
 ए, त्रिशला मात मळहार तो ॥ अवनी तलै तुमे अवतरया ए,
 करवा अम्ह उपगार ॥ जयो जिन वीरजी ए ॥ १ ॥ में
 अपराध करया घणा ए, कहता न लहुं पार तो ॥ तुम्ह चरणे आ
 व्या जणी ए, जो तारे तो तार ॥ ज० २ ॥ आज करीने आवियो
 ए, तुम चरणे महाराज तो ॥ आव्याने उमेखस्यो ए, तो किम
 रहस्ये लाज ॥ ज० ३ ॥ करम अलूण आकरा ए, जनम मरण
 जंजाल तो ॥ हुं हुं एदथी जग्यो ए, गोमव देवदयाल ॥ ज०
 ४ ॥ आज मनोरथ मुज फढ्या ए, नाग डख दंदोल तो, तूगे
 जिन चोवीशमो ए ॥ प्रगट्या पुन्य कळोल ॥ ज० ५ ॥ जव
 विनय तुम्हारमो ए, जाव जगत तुम्ह पाय तो ॥ देव दया करि
 दीजीये ए पंगी ए, सुपसाय ॥ ज० ॥ १ ॥ (कलश) इय

तरण तारण सुगति कारण, दुःख निवारण जंग जयो ॥ श्रीवीर
 जिणवर चरण शुणतां, अधिकमन उल्लट थयो ॥ १ ॥ श्रीविजयेदेव
 सूरिंद पटधर, तीरथ जंगम इण जगे ॥ तपगहपति श्रीविजयप्र
 न्नसूरि, सूरि तेजे जंगमगे ॥ २ ॥ श्रीहीरविजय सूरि शिष्य वा
 चक, कीर्तिविजय सुरगुरु शमो ॥ तश शिष्य वाचक विनय वि-
 जये, शुण्यो जिन चोवीशमो ॥ ३ ॥ सय सत्तर संवत जगणतीसे,
 रही रानेर चोमाश ए ॥ विजयदशमी विजय कारण, कियो गुण
 अन्यास ए ॥ ४ ॥ नरजव आराधन सिद्धिसाधन, सुकृत लील वि
 लास ए ॥ निर्जरा हेते स्तवन रचियुं, नामे पुण्य प्रकाश ए ॥ ५ ॥
 इति श्रीवीरजिन पुण्य प्रकाश आराधना स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ भरहेसरनी सिंहाय लिख्यते ॥

जरहेसर बाहुबली, अजयकुमारोअ ढंढणकुमारो ॥ सिरिज
 अणियाउत्तो ॥ अयमत्तो नागदत्तोअ ॥ १ ॥ मे अज्जयूलिज्जदो, वरथ
 रिसि नंदिसेण सीहगिरी ॥ कयवन्नोअ सुकोसल, पुंरुओ केसि
 करकंभू ॥ २ ॥ हल्ल विहल्ल सुदंसण, सालि महासालि सालिज्ज
 दोअ ॥ ज्जदोअ दसन्नज्जदो, पसन्नचंदोअ जसज्जदो ॥ ३ ॥ जंबूपह
 वंकचूलो, गयसुकमालो अवंतीसुकमालो ॥ धन्नो इलापुत्तौ, चि-
 लापुत्तोअ बाहुमुणी ॥ ४ ॥ अज्जगिरि अज्जरक्खिय, अज्जसुहत्थो
 ज्जदाय गोमणगो ॥ माल ॥ सूरि सँवो, पज्जुन्नो मूलदेवोय ॥ ५ ॥
 पज्जवो विन्दुकुम ॥ इति कुमारो दढपहारोअ ॥ सिज्जंस कूरगडुअ,
 सिज्जंजव मेहकु ॥ ६ ॥ एमाइ महासत्ता, दिंतु सुहं गुण
 णोहि संयुत्ता तिष्ठान्ता ॥ मग्गहणे, पावपबंधा विलयजंति ॥ ज-
 शासा चंदणवाणो कंतुमनरो मयणरेहा दमयंती ॥ नुमतं ॥ व-
 सज्जा, नंदा ज्जदोअत्ता का ॥ ७ ॥ राईमई रिमिद्धा नारीतहगं-
 पंपणा सिरीदेवी देवीअ वजिठ मिगावई जोईअ माहा-

॥ ए ॥ वंजनी सुंदरी रुपिणी, रेवई कुंती शिवा जयंतीय ॥ देवीई
 होवई धारणी, कलावई पुष्पचूलाय ॥ १० ॥ उदमावईय गोरी,
 गंधारी लखमणा सुसीमाय ॥ जंबुवई सच्चजामा, रुपिणी कन्हव
 महिसीन ॥ ११ ॥ जस्काय जस्कादिना, नूआतह चव नूअ दि-
 न्नाय ॥ सेणा वेणारेणा, नअणीओ भूलनदस्त ॥ १२ ॥ इच्चाई महा-
 सईओ, जयंती अकलंक शोल कलिआन ॥ अऊ विवऊई जासिं,
 जस परुहो तिहुअणे सयले ॥ १३ ॥ इति सत्तासतीननो सिझाय
 ॥ अथ मन्हजिणाणं सिझाय ॥

मन्हजिणाणंआणं, मिछंपरिहरहधरसम्मत्तं ॥ ठव्हिहआव-
 हसयंमि, ठजुत्तोहोइपयदिवसं ॥ १ ॥ पवेसुपोसहवयं, दाणंशोलं
 तवोअजावोअ ॥ सझायनमुक्कारो, परोवयारोअजयणाअ ॥
 २ ॥ जिणपूआजिणधुणिणं, गुरुधुअसाहम्मिआणवञ्चलं ॥
 धवहारस्तयसुद्धी, रहयत्तातिट्ठयत्ताय ॥ ३ ॥ उवशमविवेकसंवर,
 आसासमिईवज्जीवकरुणाय ॥ धम्मियजणसंसग्गो, करणदमोच
 हणपरिणामो ॥ ४ ॥ संघोवरिच्चहुमाणो, पुत्थयत्तिहणंपजावणा
 तित्थे ॥ सट्ठाणकिच्चमेअं, निच्चंसुगुरुवणसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सकल तीर्थवंदना ॥

सकल तीर्थ वंदू करजोमं, जिनवर नामे मंगल कोम ॥ पदेले
 ह्यगे लाख बत्तीस, जिनवर चैत्य नमुं उबेखस्थ ॥ १ ॥ बीजै लाख
 अष्टाबीश कहा, बीजै बार लाख सरस आकराथे स्वर्गे अरु लाख
 जशर, पांचमें वाडूं लाखज व्यार ॥ २ ॥ गेम्ब देगे सहस पचास,
 ४ ॥ चालीस सहस प्रागाद ॥ आठवा डुख वंहजार, नव द-
 जिन चोवें शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार लोक ॥ ते सार, नव २
 विनय तुम्हारमहार ॥ पांच अनुत्तर स पाय तें लाख चोरासी हरि
 दीजीये ए पढी ए, ते सुस्ताणु ने ॥ ४ ॥ जिनवर नुवईय

अधिकार ॥ लांबा सो योजन विस्तार, पचास उंचा बहोत्तर धार ॥ ५ ॥
 एकसो असो बिंब परिमाण, राजा सहित इक चैत्ये जाण ॥ सो कोम
 वावन कोम संजाल, लाख चोराणुं सहस चोआल ॥ ६ ॥ सातसे उपर
 साठ विसाल, सबी बिंब प्रणमुं त्रिण काल ॥ सात कोमने बहो-
 त्तर लाख, जुवनपतीमां देवल नारव ॥ ७ ॥ एकशो अशी बिंब
 प्रमाण, इकर चैत्ये संख्या जाण ॥ तेरसे कोमि निव्याशी कोमि,
 साठ लाख वंदू करजोम ॥ ८ ॥ बत्रीशे ने ओगणसाठ, तिर्ग-
 लोकमां चैत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणशौ वीश ते
 बिंब जुहार ॥ ९ ॥ व्यंतर ज्योतषीमां वलि जेह, शाश्वता जिनवर
 वंदू तेह ॥ रूपजा चंद्रानन वारिखेण, वर्द्धमान नामे गुण-
 शेण ॥ १० ॥ समेतशिखर वंदू जिन वीश, अष्टापद वंदू चोवीश ॥
 विमलाचल ने गढगिरनार, आवू ऊपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥
 शंखेश्वर केशरियो सार, तारंगे श्रीअजित जुहार ॥ अंतरीक वर-
 काणो पाश, जीरावलो ने थंजणपाश ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर
 पाटण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह ॥ विहरमान वंदू जिन
 वीश, सिद्ध अनंत नमुं निशदीश ॥ १३ ॥ अढी द्वीपमां जे अण-
 गार, सहस शीलांगना धार ॥ पंच महाव्रत सुमती सार,
 पाले पलातलो चाचार ॥ १४ ॥ बाह्य अज्यंतर तप उजमाल, ते
 मुनि वंदू गुणगण ॥ माल ॥ निह २ ऊठी कीर्तिकरुं, जीव कहे जव-
 सायर तरुं ॥ १ ॥ इति खंडोस

॥ इति ॥ इति स्तोत्र ॥

सकलार्हत्प्रतिष्ठाना ॥ गहदिगो गवश्रियः ॥ जनुवःस्वरुज-
 शान, माहृत्यप्रणिंकृतुममरोहिणी ॥ कतिद्रव्यजावैः, पुनत ॥ व-
 गज्जनं ॥ क्षेत्रेकालेच्छता काली म ॥ प्रमुपास्महे ॥ नारीतहगं-
 मंपयवीनाग्र, मादिषवीअ वरुद्धा ॥ प्रमुनीधु ॥ आ माहा ॥

मिनंस्तुमः ॥ ३ ॥ अर्हंतमजितंविश्व, कमलाकरजास्करं ॥ अम्लोन्न-
 केवलादर्श, संक्रांतजगतंस्तुवे ॥ ४ ॥ विश्वजग्यजनाराम्, कुड्या-
 तुड्याजयंतुताः ॥ देशनासमयेवाचः, श्रीशंज्ञवजगत्पतेः ॥ ५ ॥
 अनेकांतमतांज्ञोधि, समुद्धाशनचंद्रमाः ॥ दद्यादमंदमानंदं, जगवान
 जिनंदनः ॥ ६ ॥ द्युशत्कीरीटशाणाग्रो, तेजितांज्जिनखावलिः ॥
 जगवान्सुमतिस्वामी, तनोत्वज्जिमतानिवः ॥ ७ ॥ पद्मप्रज्ञप्रज्ञोर्देह,
 ज्ञासःपुष्पंतुवः श्रियं ॥ अंतरंगारिमशने, कोपाटोपादिवारुणाः ॥ ८ ॥
 श्रीसुपार्श्वजिनेंदाय, महेंद्रमहितांहये ॥ नमश्चतुर्वर्णसंघ, गगना-
 ज्ञोगज्ञास्वते ॥ ९ ॥ चंद्रप्रज्ञप्रज्ञोश्चंद्र, मरीचिनिचयोज्वला ॥ मुर्त्ति-
 मुर्त्ति सितध्यान, निर्मितेवश्रयेस्तुवः ॥ १० ॥ करामलकवद्विश्वं, कल-
 यनकेवलश्रियां ॥ अर्चित्यमहास्वनिधिः, सुविधिर्वोधयेस्तुवः ॥ ११ ॥
 सत्त्वानांपरमानंद, कंदोद्भेदनवांबुदः ॥ स्याद्वाडामृतनिस्यंदी, शीतलः
 प्रातुवोजिन ॥ १२ ॥ ज्वरोगार्त्तजंतूना, मगदंकारदर्शनः ॥ निः-
 श्रेयसश्रीरमण, श्रेयांसः श्रेयसेस्तुवः ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकीञ्चूत,
 तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः ॥ सुरासुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यःपुनातुवः ॥ १४ ॥
 विमलस्वामिनोवाचः, कृतककोदसोदराः ॥ जयंतित्रिजगच्चेतो,
 जलनैर्मल्यदेतवः ॥ १५ ॥ स्वयंभूरमणस्पदि, करुणारंभ-
 अनंतजिदनंताव, प्रयत्नतुसुखश्रियां ॥ १६ ॥ कल्पकोमलधर्माणा,
 मिष्टप्राप्तौशरीरिणां ॥ चातुर्ध्याधर्मदेष्टारं, धर्मनाहं ॥ १७ ॥ अहे ॥ १८ ॥
 सुधासोदरवाग्ज्योत्स्ना, निर्मलीकृतसरदारुणः ॥ करारंभ-
 ज्ञांतिनाश्रजिनोस्तुवः ॥ १९ ॥ श्रीकुण्ड १ ओम् १ ॥ मंगलकृतमःशांत्यै,
 ४ ॥ ॥ सुरासुरनृनाश्राना, मेकनाश्र आतंग दुःख ॥ १ ॥ अरनाश्रस्तुज
 जिन श्रुतुश्रारनज्ञोरविः ॥ श्रुतुश्रपुन्यार लोल ॥ १ ॥ अरनाश्रस्तुज
 विनय तुनश्रीश, मयूरनववारि, तर स्र पाय तं ॥ १ ॥ अरनाश्रस्तुज
 दीजीये ए पत्न्यमहामोदनिजाणु त्रे ॥ १ ॥ जि ॥ अरनाश्रस्तुज

देशनावचनेस्तुमः ॥२२॥ लुण्ठितोनमतांमूषि, निर्मलीकारकारिणं ॥
 वारिष्ठवाश्वनमेः, पातुंपादनखांशवः ॥ २३ ॥ यडुवंशसमुद्भूतः,
 कर्मककुहुताशनः ॥ अरिष्टनेमिर्जगवान्, जूयाद्योऽरिष्टनाशनः ॥
 ॥ २४ ॥ कसोठधरल्लेद्रेच, स्वोचितं कर्म कुर्वति ॥ प्रभुस्तुल्यमनो-
 वृत्तिः, पार्श्वनाथः श्रियेऽस्तुवः ॥ २५ ॥ श्रीमतेवीरनाथाय, सनाथा-
 यान्मुतश्रिया ॥ महानंदसरोराज, मराळायाद्वतेनमः ॥ २६ ॥ कृता-
 पराधेपिजने, कृपामंथरतारयोः ॥ ईषद्वाष्पार्दयोर्जद्र, श्रीवीरजिनने-
 त्रयोः ॥ २७ ॥ जयतिविजितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसेवितः श्री-
 मान् ॥ विमलस्त्रांसविरहित, स्त्रिभुवनचूरामणिर्जगवान् ॥ २८ ॥
 वीरः सर्वसुरासुरेण्महितो, वीरंबुधाः संभ्रिता ॥ वीरेणाग्निहतः स्वक-
 र्मनिचयो, वीराय नित्यं नमः ॥ वीराक्षीर्धमिदं प्रवृत्तमतुलं, वी-
 रस्यघोरंतपो ॥ वीरेश्रीधृतिकीर्तिं कांतिनिचयः, श्रीवीरभद्रं दिशः ॥
 ॥ २९ ॥ अवतितलगतानां कृत्रिमाकृत्रिमानां, वरभुवनगतानां दिव्यं
 चैमानिकानां ॥ इहमनुजकृतानां देवराजार्चितानां, जिनवरभुवनानां
 जगत्तोदैनमामि ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिकर स्तोत्रं लिख्यते ॥

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीशदायारं ॥ समरामिजत्त-
 पात्तग, निवाणीगरुक्कयसेवं ॥ १ ॥ नैसनमो विप्पोसहिपत्ताणं,
 संतितामि पायाणं ॥ जौस्वाहा मंतेणं, सत्ताशिवपुरिअहरणाणं
 ॥ २ ॥ नैसंतित्तमुक्कारो, खेवोसहि माइल्लहिपत्ताणं ॥ सौहैनिमो
 सहि, पत्ताणं चंदेसिरिं ॥ ३ ॥ वाणीतिहुअणसामिणी, सिरि-
 स्करायगणिपिरुगा ॥ गहदिंतिगालसुरिंदा, सयाविरक्कंतुजि-
 ने ॥ ४ ॥ रक्कंतुममरोहिणी, तान्नत्तीवज्जासिंखत्तासया ॥ व-
 सेचक्केसरी, नरदत्ता काली मत्तं त्री ॥ ५ ॥ गोरीतहगं-
 महजाला माणवीअ वड्ठुद्धा श्रीने ज चट्टे, आ माहा-

माणसिआन देवीन ॥ ६ ॥ जस्कागोमुहमहाजस्का, तिमुहजस्के
 सुतुंवरुकुसुमो ॥ मायंगविजयअजिन, वंनोमाणुनसुरकुमारो ॥ ७ ॥
 ठमुहपायालकिन्नर, गरुडोगंधवतहयजस्किंदो ॥ कुवेरवरुणोज्जिनी
 गोमेदोपासमायंगो ॥ ८ ॥ देवीनचक्केसरो, अजिआडुरिआरि
 कालीमहाकाली ॥ अञ्जुअसंताजाला, सुतारयासोअसिरिवञ्जा ॥ ९ ॥
 चंदाविजयंकुसिपन्नइत्ति, निदाणिअञ्जुआधरणी ॥ वइरुट्टु-
 तगंधारी, अंबपनुमावईसिध्वा ॥ १० ॥ इयत्तित्थरस्करणया,
 अन्नेविमुरासुरीचक्कहावि ॥ व्यंतरजोइसिपमुहा, कुणंतुरस्कंसयाअंजे
 म्हं ॥ ११ ॥ एवंसुदिदिसुरगण, सहिओसंघस्ससंतिजिणचंदो ॥
 मझविकरेउरस्कं, सुणिसुंदरसूरिपुअमहिमा ॥ १२ ॥ इअसंतिना
 इसम्मदिठी, रस्कंसरइतिकालंजो ॥ सवोवदवरहिओ, सलहइसुह
 संपयंपरमं ॥ १३ ॥ तवगण्ठगयणदिणयर, जुगवरसिरिसोमसुंदरगुरु
 णं ॥ सुपसायलद्धगणहर, विज्जासिद्धिंजणइसीसो ॥ १४ ॥ इति॥

॥ अथ श्रीसीमंधरजिन चैत्यवंदन लिख्यते ॥

सीमंधर परमात्मा, शिवसुखना दाता ॥ पुस्कलेवई वि-
 यें जयो, सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्वविदेह पुंरुरीगणी, नयरी
 यें सोहे ॥ श्रीश्रेयांश राजा तिहां, जवियणना मन मोहे ॥ २ ॥
 चउद सुपन निर्मल लही, सत्यकीराणी मात ॥ कुंधु अर जिन
 अंतरै, श्रीसीमंधर जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमें प्रजु जनमिया, वली
 योवन पावै ॥ मात पिता हरखे करी, रुकमणी परणावै ॥ ४ ॥
 जोगवी सुख संतारना, संजम मन लावै, मुनिसुव्रत नमी अंतरै;
 दीक्षा प्रजु पावै ॥ ५ ॥ घाती कर्मनो कय करी, पाम्या केवल
 नांण ॥ वृषभ लंठने शोजता, सर्व जावना जाण ॥ ६ ॥ चौराशी जस
 गणधरा, मुनिदेव एकसो जोगि ॥ त्रण जुवनमां जोप्रतां, नहि
 कोई एहनी जोगि ॥ निदुश लाख कह्या केवली प्रजुजीनो

परिवार ॥ एक सनय त्रण कालना, जाणै सर्व विचार ॥ ८ ॥
 छंदय पैढाल जिनांतरे ए, आशै जिनवर सिद्ध ॥ जशविजय गुरु
 प्रणमतां, शुभ वंछित फल लीध ॥ ९ ॥ इति चैत्यवंदनं ॥ पुनः
 ॥ आसामंधर जगधणी, आ जतरते आवो ॥ करुणावंत करुणा
 करी, अमने वंदावो ॥ १ ॥ सकल जक्त तुमे धणो ए, जो होवे
 अम नाथ ॥ जवोजव हूं हूं ताहरो, नहीं मेळूं हवे साथ ॥ २ ॥
 समयल संग ठंमी करी ए, चारित्र लेइशुं ॥ पाय तुमारा सेविने,
 शिवरमणी वरिसुं ॥ ३ ॥ ए अलजो मुऊनें धणो ए, पूरो सोमं-
 धरदेव ॥ इहांअकी हूं वीनवूं, अवधारो मुऊ सेव ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धगिरो चैत्यवंदन लिख्यते ॥

विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिजुवन दिनकरं ॥
 सुरराज संस्तुत चरण पंरुज, नमो आदि जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल
 गिरिवर शृंग मंरुण, प्रवर गुणगण जूधरं ॥ सुर असुर किन्नर
 कोमि सेवित; नमो ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरीगण, गाय जि-
 नगुण मनहरं ॥ निर्जरावलि नमै अहनिशि, नमो ॥ ३ ॥ पुंर-
 रीक गणपति सिद्धि साधी, कोमि पण मुनि मनहरं ॥ श्रीविमल
 गिरिवर शृंग सीधा, नमो ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुरिंद
 मुनिवर, कोमिनंत ए गिरिवरं ॥ मुक्तिरमणी वर्या रंगै, नमो ॥
 ॥ ५ ॥ पातालनर सुरलोक मांही, विमलगिरिवर ते परं ॥ नहि
 अधिक तीरथ तीर्थपति कहे, नमो ॥ ६ ॥ इम विमलगिरिवर
 शिखर मंरुण, दुःख विहंरुण ध्याईये ॥ निज शुद्ध सत्ता साध-
 नार्थ, परम ज्योतिनें पाइए ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विमोह निज,
 परम पद स्थिति जयकरं ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, अवि-
 जयसु हितकरं ॥ ८ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ श्री
 सिद्धक्षेत्र, दीवै दुर्गति वारै ॥ जाव धरीनें जे चढै, तेने ज

ऊतारै ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनो राय ॥
 पूर्व नवाणूं रुषभदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय ॥ २ ॥ सूरजकुंभ
 सोहामणो, कवचयह अजिराम ॥ नाजिराया कुलमंरणो, जिन-
 वर करुं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति द्वितिय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ श्रीपरमात्मा चैत्यवंदन लिख्यते ॥

परमेसर परमात्मा, पावन परमिठ ॥ जय जगगुरु देवाधि
 देव, नयणें में दिठ ॥ १ ॥ अचल अकल अधिकार सार, करुणा
 रश सिंधु ॥ जगती जन आधार एक, निःकारण बंधु ॥ २ ॥ गुण
 अनंत प्रभु ताहरा ए, किमही कळया न जाय ॥ राम प्रभु जिन
 ध्यानधी, चिदानंद सुख आय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसोमंधर जिन स्तवन ॥

सुणो चंदाजी, सीमंधर परमात्म पासे जावजो ॥ मुऊ
 चीनतम, प्रेम धरीनें इण पर तुमे संजलावजो ॥ जे त्राय जुवन
 ना नायक है, जस चोसठ इंदर पायक है, नाण दरशण जेहना
 कायक है ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचनवरणी काया है, जश धोरी
 लंठन पाया है, पुंरुरीगणी नगरीनो राया है ॥ सुणो० ॥ २ ॥
 बार पर्पदा मांहि विराजै है, जश चोत्रीश अतिशय ठाजै है,
 गुण पेत्रीस वाणीयें गाजै है ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ जविजनने ते पम्बोहे
 है, तुम अधिक शीतलगुण सोहे है, रूप देखी जविजन मोहे है ॥
 सुणो० ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसियो बूं, पण जरतमां दूरै वसि
 ओ बूं, महा मोहराय कर फसियो बूं ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण
 साहिब वित्तमां धरियो है, तुम आणा खरग कर ग्रहियो है, तब
 कांइक मुरी मरियो है ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पूठ हवे
 पूरो, पद्मविजय आज्ञं शूरो, तो बाधे मुऊ मन अति नूरो ॥
 ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धगिरी स्तवन लिख्यते ॥

आंखदिये रे में आज सेत्रुंजो दीगो रे, सवालाख टकानों
 दिहामो रे, लागे मुंनै मीगो रे ॥ सफल थयो म्हारा मननो ऊमा
 हो, वालामारा, जवनो संशय जाग्यो रे ॥ नरक तिर्यच गति दूर
 निवारी, चरणे प्रज्जुजीनै लाग्यो रे ॥ शेत्रुं० १ ॥ मानवजवनो
 लाहो लीथो, वाला० देहमो पावन कीथो रे ॥ सोना रूपाने फू-
 लमे वधावी, प्रेमें प्रदक्षणा कीथी रे ॥ शेत्रुं० २ ॥ दूधमे पखाळीनै
 केशर घोली, वा० श्रीआदीश्वर पूज्या रे ॥ श्रीसिद्धाचल नयणे
 जोतां, पापमेवासी धुज्या रे ॥ शेत्रुं० ३ ॥ स्वयमुख सुधर्मा सु-
 रपति आगे, वा० वीरजिनंद इम बोले रे ॥ त्रण जुवनमां तीरथ
 मोटुं, नहिं कोइ सेत्रुंजा तोले रे ॥ शेत्रुं० ४ ॥ इंद सरीखा ए
 तीरथनी, वा० चाकरी चित्तमां चाहे रे ॥ कायानी तो कासल
 टालै, सूरजकुंरुमां नाहे रे ॥ शेत्रुं० ५ ॥ कांकरे१ श्रीसिद्धक्षेत्रे,
 वा० साधु अनंता सीथा रे ॥ ते माटे ए तीरथ मोटुं, उद्धार अ-
 नंता कीथा रे ॥ शेत्रुं० ६ ॥ नाझिराया सुत नयणे जोतां, वा०
 मेह अमीरश वूठ्या रे ॥ उदयरतन कहै आज म्हारे पोते, श्री
 आदीश्वर तूठ्या रे ॥ शेत्रुं० ७ ॥ इति ॥

पुनः ॥ विमलाचल नित वंदियै, कीजै एहनी सेवा ॥ मानू
 हाथ ए धर्मनो, शिवतरु फल लेवा ॥ वि० १ ॥ उज्जाल जिन गृहमंरुली,
 तिहां दीपै उत्तंगा, मानुं हिमगिरि विभ्रमें ॥ आई अंबर गंगा ॥ वि०
 २ ॥ कोइ अनेरुं जग नही, ए तीरथ तोले ॥ इम श्रीमुख हरि
 आगलै, श्रीसीमंधर बोलै ॥ वि० ३ ॥ जे सगला तीरथ कर्या,
 जात्राफल लहियै, तेहथी ए गिरि जेटतां, शतगणुं फल लहियै ॥
 वि० ४ ॥ जनम सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे ॥ सुजश
 विजय संपद लहे, ते नर चिरनंदे ॥ वि० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीपंचतीर्थ स्तवन ॥

श्लोक ॥ श्रीशत्रुंजयमुख्यतीर्थतिलकं श्रीनाजिराजांगजं,
 वैदेरैवतशैलमौलिमुकुट श्रीनेमिनाथं यथा ॥ तारंगेश्रजितंजिनं नृगु
 पुरे श्रीसुव्रतंस्थंजने, श्रीपार्थ्वप्रणमामिसत्पनगरे श्रीवर्द्धमानं त्रिधा
 ॥ १ ॥ वंदेऽनुत्तरकल्पतल्प ज्जुवनेग्रैवैयकेग्रंतरे, ज्योतिष्कामरमंदरा
 द्विसतो स्तीर्थकरानादरात् ॥ जंबूपुष्करधातकीपुरुचके नंदीश्वरे
 कुंभले, येचान्येपिजिनानमामिसततं तान्कृत्रिमाऽकृत्रिमान् ॥ २ ॥
 श्रीमद्गीरजिनास्यपद्महृदतो निर्गम्यतेगौतम, गंगावर्त्तनमेत्ययाप्रवि-
 ष्मन्ने मिथ्यात्ववैताद्वयकं ॥ उत्पत्ति स्थितिसंहति त्रिपथगा ज्ञानां-
 बुधावृद्धिगा, सामेकर्ममलंहरत्त्वैकलं श्रीद्वादशांगीनदी ॥ ३ ॥ शक्र
 श्रंदरविग्रहाश्रयण ब्रह्मैन्द्रशांत्यंत्रिका, दिग्पालाः सकपर्दिगो मुख
 गण श्रकेश्वरीज्जारती ॥ येन्येज्ञानतपक्रियाव्रतविधिः श्रीतीर्थयात्रा
 दिपु, श्रीसंघस्यतुराचतुर्विधसुरा स्तेसंतुज्जद्रंकराः ॥ इति श्रीपंच
 तीर्थ स्तवनं ॥

॥ अथ नेम राजुल सिंहाय ॥

(नदी यमुनाके तीर नमे दोय पंखीया ॥ ए देशी) पिउजी
 पिउजी रे नाम जपुं दिन रातियां, पिउजी चढ्या परदेश तपे मो
 री गतियां, ॥ पगपग जोती वाट वालेसर कव मिले, नीर विठो
 ह्या मीन के ते जुं टलवलै ॥ १ ॥ सुंदर मंदिर सेज साहिव विण
 नवि गमे, जिहां रे वालेसर नेम तिहां मारुं मन नमै ॥ जो होव
 सज्जन दूर तोही पासै वसै, किहां सायर किहा चंद देखी मन न
 छसै ॥ २ ॥ निस्नेहीसुं प्रीत म करजो को सही, पतंग जलवि
 देह दीप्रक मनमें नही ॥ माणसतणो विजोग म होजो केहनै,
 साखे रे सख समान हियामां तेहने ॥ ३ ॥ विरह व्यग्रानी पीन
 जोवनय अति दहै, जेहनो पिउ परदेश ते माणस दुःख सहै ॥

जुरी२ पंजर कीध काया कमला जिसी, हजुअ न आब्यो नेम मि
ली नयणें हसी ॥ ४ ॥ जेहने जेहमु रंग टाढ्यो ते नवि टलै,
चकवा रयणी विजोग ते तो नयणे मिलै ॥ आंबा केरो स्वाद निंबू
ते नवि करै, जे नाह्या गंगा नीर ते ठीकर किम तरे ॥ ५ ॥ जे रम्या
मालतीफूल धतुरे किम रमे, जेहने घीसुं प्रेम ते तेले किम जमे ॥
जेहने चतुरसुं नेह ते अवरने सुं करै, नवजोवन तजी नेम वैरागी
थै फरै ॥ ६ ॥ राजुल रूपनिधान के पोहती सहसावने, जइ वां
द्या प्रभु नेम संजम लेई एक मनै ॥ पाम्या केवलज्ञान के पोहती
मनरखी, रूपविजय प्रभु नेम जेठे आशा फली ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ आउखा सिंहाय लिख्यते ॥

आउखो तूटाने सांधो को नही रे, तिण कारण म करो
जीव प्रमाद रे ॥ जरा आब्याने शरणुं को नहीं रे, हिंसा गोमनि
दया पाव रे ॥ आ० १ ॥ कुटुंब कबीला नारी कारणे रे, मूरख
संख्या बहुला पाप रे ॥ चोरतणी परे ठंमी जूरसे रे, सहीसे इह
लोक परलोक संताप रे ॥ आ० २ ॥ उंचा चिणाव्या मंदिर मालि
या रे, दे दे धरतीमें ऊंमी नीव रे ॥ एक दिन अणजाण्युं ऊंमी
चालवूं रे, सुख दुःख सहसे आपणो जाव रे ॥ आ० ३ ॥ चक्र
वर्त्ति हर बल राणो केशवो रे, जोजो बली इंद्र सुरानो नाथ रे ॥
ऊगी२ने उवेही आयम्या रे, जोजो कोइ अचरजवाली वात रे ॥
आ० ४ ॥ अशिर संसार तजी मुनि नीसरथा रे, करता मुनि
तेह विहार रे ॥ जारंरुपंखीनी दीधी उपमा रे, न धरे मम-
ह लगार रे ॥ आ० ५ ॥ चारित्र पावै रूमी रीतसुं रे, देवे
मुनि अपणो उपदेश रे, तिको मुनिवर सिधासी मोक्षने रे, जइ
लेई इहलोक परलोक रे ॥ आ० ६ ॥ शब्द रूप देखी समता
धरो रे, म करो मुनि ज्ञानसुं अजिमात रे, रुषी चौथमल सूत्र

देखीने रे, जोरु करी जालोर मजार रे ॥ आन० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचतोर्थी चैत्यवंदन लिख्यते ॥

आदिदेव अरिहंत नमूं, समरुं तारुं नाम ॥ ज्यां ज्यां प्रति
मा जिनतणी, त्यां त्यां करुं प्रणाम ॥ १ ॥ ओत्रुंजय ओआदिदेव,
नेम नमूं गिरनार ॥ तारंगे श्रीअजितनाथ ॥ आवू रुपज्ज जूहार
॥ २ ॥ अष्टापदगिरि ऊपरै, जिन चोवीशी जोय ॥ मणिमय
मूर्ति मानसुं, जरेते जरावी सोय ॥ ३ ॥ समेतशिखर तीरथ
वसूं, ज्यां वीजै जिन पाय ॥ वैज्जारकगिरि ऊपरै, श्रीवीर जिने
श्वरराय ॥ ४ ॥ मांमवगढनो राजियो, नामे देव सुपाश ॥ रुपज्ज
कहै जिन समरतां, पोहचै मननी आश ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दुज तिथीको चैत्यवंदन ॥

हु विध धर्म जिन उपदिस्थो, चोथा अजिनंदन ॥ वीजै
जन्म्या ते प्रभु, जवहुःख निकंदन ॥ १ ॥ हु विध ध्यान तुम्है
परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥ एम प्रकार्युं सुमतिजिन, ते चविया
बीज दिन ॥ २ ॥ दोय बंधन राग द्वेष, तेहने जवि तजिये ॥
मुऊ परे शीतल जिन कहै, बीज दिन शिव जजिये ॥ ३ ॥ जी
वाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ॥ बीज दिने वासुपूज्य परे,
लहो केवलनाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार दोय, एकांत न
अहिये ॥ अरजिन बीज दिने चवी, एम जिन आगलि कहिये ॥
॥ ५ ॥ वर्तमान चोवीशीये, एम जिनकड्याण ॥ बीज दिने केइ
पामिया, प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अतंत चोवीशीये, हुआ
बहुत कड्याण ॥ जिन उत्तम पद पढ़ने, नमतां होय सुख
खाण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ग्यानपंचमीको चैत्यवंदन ॥

त्रिगनै वैग वीरजिन, नाखै जविजव आगे ॥ त्रिकरणसुं त्रिहुं

लोक जन, निसुणो मनरागे ॥ १ ॥ आराहो जवि जावसें, पांचम
 अजुवाली ॥ ज्ञान आराधन कारणे, येहज तित्थि निहाली ॥ २ ॥
 ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो इण संसार ॥ ज्ञान आराधनथी
 लह्युं, शिवपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कहा,
 काशकुशम उपमान ॥ लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक पन्थान
 ॥ ४ ॥ ज्ञानी सासोसासमें, करै कर्मनो खेद ॥ पूर्व कामी वरसा
 खगै, अज्ञाने करे तेद ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही, सर्व
 आराधक ज्ञान ॥ ज्ञानतणो महिमा घणो, अंग पांचमे जगवान ॥ ६ ॥
 पंच मास लघु पंचमी, जावजीव उत्कृष्टी ॥ पंच वरस पंच
 माशनी, पंचमी करो शुभ दृष्टी ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए,
 काजसग लोणस्स केरो, ऊजमणूं करो जावशुं ए, टाले जव फेरो
 ॥ ८ ॥ इण परे पंचम आराहिये ए, आणी जाव अपार ॥ वरदत्त
 गुणमंजरी वरे, रंगविजय लहो सार ॥ ९ ॥ इति पंचमी चैत्य-
 वंदन संपूर्णम् ॥

॥ अथ अष्टमी चैत्यवंदन लिख्यते ॥

महा सुदि आठमने दिने, विजया सुत जायो, तेम फागुण
 वदि आठमें, सज्जव चव आयो ॥ १ ॥ चइतर वदनी आठमें,
 जनम्या रुषज्जिणंद ॥ दीक्षा पिण ए दिन लही, हुआ प्रथम
 सुनिचंद ॥ २ ॥ माधव सुदि आठम दिने, आठ कर्म करया दूर ॥
 अजिनंदन चोया प्रज्ज, पाम्या सुख जरपूर ॥ ३ ॥ एहीज आठम
 चली, जनम्या पुमतिज्जिणंद ॥ आठ जाति कलशे करी, न्हव-
 ववै सुर इंद ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठ वदि आठमें, सुनिसुव्रतस्वामी ॥
 नेम आषाढ सुदि आठमें, पंचमी गति पामी ॥ ५ ॥ श्रावण
 वदिनी आठमें, नमि जन्म्या जगन्नाण ॥ तिम श्रावण सुदि आठमें,
 पासजीनो निर्वादे ॥ ६ ॥ ज्ञाड्वा वदि आठम दिने, चविथा

स्वामी मुपास ॥ जिन उच्चम पद पद्मने, सेव्याथी शिववास ॥७॥

॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवन्दनं लिख्यते ॥

शासननायक वीरजी, प्रभुकेवल पायो, संव चतुर्विध आपवा,
महसेन वन आयो ॥ १ ॥ माधव सित एकादशी, सोमलद्विज
यज्ञ ॥ इन्द्रुति ओद मिट्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥ एकादशसे
चतु गुणौ, तेहनो परिवार ॥ वेद अर्थ अवलो करै, मन अजिमान
अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संसय हरी ए, एकादश गणधार ॥ वीरे
थाप्या वंदिये, जिनशासन जयकार ॥ ४ ॥ मल्लि जन्म अर
मल्लि पास, वर चरण विलागी ॥ रुषज्ञ अजित सुमती नमी, मल्लि
घनधाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रज्ञ शिव वांश पास, जवजवना
तोमी ॥ एकादशी दिन आपणी, रुद्रि सगली जोमी ॥ ६ ॥ दश
हेत्रे त्रिहु कालनां, देहसे कल्याण ॥ वरग अग्यार एकादशी, आराधो
वर नाण ॥ ७ ॥ अग्यार अंग लखाविये, एकादश पाठा ॥ पूंजणी
ठवणी विटणी ॥ मसी कागल काठा ॥ ८ ॥ अग्यार अव्रत ठाम्वा ए,
वहो पन्निमा अग्यार ॥ खिमाविजय जिनशासनै, सफल करो अव
तार ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमंधर जिन स्तुति लिख्यते ॥

॥ सीमंधर जिनवर सुखकर साहिव देव, अरिहंत सकलनी
जाव धरो करूं सेव ॥ सकलागम पारग गणधर ज्ञापित वाणी,
जयवंतो आणा ज्ञानविमल गुणखाणी ॥ १ ॥ (यह थुई च्यार
वखते पण कहवाय ठे)

श्रीसीमंधर देव सुहंकर, मुनि मन पंकज हंसाजी ॥ कुंभु
अरजिन अंतर जनम्या, तिहुअण जश परसंसा ॥ २ ॥ सुव्रत नमि
अंतर वर दीक्षा, शिक्षा जगतनि रासें जी ॥ उदय पेढाल जिनांत
रमां प्रभु, जासे शिवबहु पासे जी ॥ ३ ॥ वज्रीस चतुसदि

चनसठि मलिया, इगसथ सठि लुक्किठा जी ॥ चन अरु अरु मिली।
 मध्यम काले, वीश जिनेसर दिठा जी ॥ दो चन व्यार जधन्य
 दश जंबू, धायई पुरकर मजारे जी ॥ पूजो प्रणमो आचारांगे,
 प्रवचनसार उद्वारेजी ॥ १ ॥ सीमंधर वर केवल पामी, जिनपद
 खवण निमित्ते जी ॥ अर्थेनी देशन वस्तु निवेशन, देतां सुणत
 विनीतें जी ॥ द्वादश अंग पूरब युत रचिया, गणधर लब्धि विक-
 सिया जी ॥ अपज्जवसिय जिनागम वंदो, अक्षर पदना रसिया
 जी ॥ ३ ॥ आणा रंगी समकित संगो, विविध जंग व्रतधारी जी
 विह संघ तीरथ रखवाली, सहु उपपन्न हरनारीजी ॥ पंचां-
 गसनदेवी, देती तस जश रुद्धो जी ॥ श्रोशुन वीर
 कार्य सकलमां सिद्धी जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ बीजतिथीकी स्तुति ॥

सकल मनोहर बीज दिवस सुविशेष, राय राणा प्र-
 तणी जिहां रेख ॥ तिहां चंड विमानें शाश्वत जिनवर
 जे बीजतणे दिन प्रणमं आणी नेह ॥ १ ॥ अग्निनंदन
 चदन शीतल शीतलनाथ, अरनाथ सुमतिजिन वासुपूज्य शिव
 साथ ॥ इत्यादिक जिनवर जन्म ज्ञान निरवाण, हुं बीजतणें
 दिन प्रणमं ते सुविहाण ॥ २ ॥ परकाश्यो बीजै द्विविध धर्मजग-
 वंत, जेम विमला कमला विजल नयण विकसंत ॥ आगम अति
 अनुपम जिहां निश्चय व्यवहार, बीजे सवि कोअै पातिकनो परि-
 हार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी कमल सुकोमल चीर, चक्के-
 सरी केसरी सरस सुगंध सरीर ॥ करजोमीबीजे हुं प्रणमं तस पाय,
 इम लब्धिविजय कहे पूर मनोरथ माय ॥ ४ ॥ इति दूज थुई ॥

॥ अथ पंचमी स्तुति ॥

श्रावण सुदि दिन पंचमी ए, जनम्या नेमजिनंदतो ॥ इति ॥ शैल-

रण तनु शोभतो ए, मुख शारदको चंद तो ॥ सहस्र-वरस प्रभु
 आनखो ए, ब्रह्मचारी जगवंत तो ॥ अष्ट करम हेले हणी ए,
 पोहता मुक्ति मज्जार तो ॥ १ ॥ अष्टापद आदिजन ए, पहोत्या
 मुक्ति मज्जार तो ॥ वासुपूज्य चंपापुरी ए, नेम मुक्ति गिरनार
 तो ॥ पावापुरी नगरीमां वली ए, श्रीवीरतणुं निर्वाण तो ॥ समेत-
 शिखर वीश सिद्ध हुआ ए, शिरवहुं तेहनी आण तो ॥ २ ॥
 नेमनाथ झानी हुवा ए, जाखे सार वचन तो ॥ जीवदया गुण
 बेलनी ए, कीजै तास जतन तो ॥ मृषा न बोखो मानवी ए,
 चोरी चित्त निवार तो ॥ अनंत तीर्थकर इम कहे ए, परहरियै
 परनार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामे यक्ष जलो ए, देवी श्रीअंबिका
 नाम तो ॥ शाशन सानिद्ध जे करे ए, करै वलि धर्मना काम तो ॥
 तपगढ नायक गुण निलो ए, श्रीविजयशेन सूरिराय तो ॥ रिष-
 जदास पाय सेवतां ए, सफल करे अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमी स्तुति ॥

मंगल आठ करी जस आगल, जाव धरी सुरराजाजी ॥
 आठ जातिना कलश करीने, न्हवरावै जिनराजा जी ॥ वीरजिने
 श्वर जन्म महोत्वस, करतां शिवसुख साधे जी ॥ आठमनुं तप
 करतां अस घर, मंगलकमला बाधे जी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी
 गजगंजन, अष्टापद परें बलीया जी ॥ आठमें आठसुरूप विचारी
 मद आठे तस गलिया जी ॥ अष्टमी गति परे पहुंचता जिनवर,
 फरस आठ नहि अंग जी ॥ आठमनुं तप करतां अस घर, नित्य
 बाधै रंग जी ॥ २ ॥ प्रातीहारज आठ विराजै, समवसरण
 ३. जिन राजै जी ॥ आठमें आठ सो आगम जाखी, जवि मन ॥ २ ॥
 अंत जाजे जी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पावै निरतीचारो जी
 रमां प्रभुमने दिन अष्ट प्रकारै, जीव दया चित धारो जी ॥ ३ ॥

प्रकारी पूजा कराने, मानवज्ञव फल लीजे जी ॥ सिद्धाई देवी
जिनवर सेवी, अष्टमहासिद्धि दीजैजी ॥ आठमनुं तप करतां लीजे,
निर्मल केवलज्ञान जी ॥ धीरविमल कवि सेवक नय कहै, तपशी,
गोम कढयाण जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

एकादशी अति रूवनी, गोविंद पूवै नेम ॥ कोण कारण
पर्व मोटुं, कहो मुऊसुं तेम ॥ १ ॥ जिनवर कढयाणक अति-
घणा, एकशो ने पञ्चास ॥ तेणे कारणें ए पर्व मोहोटुं, करो मौन
उपवाश ॥ १ ॥ अगिआर श्रावकतणी प्रतिमा, कहै ते जिनवर
देव ॥ एकादशी एम अधिक सेवो, वनगजा जिम रेव ॥ चौवीश
जिनवर सयल सुखकर, जैसा सुरतरु चंग ॥ जेम गंग निर्मज
नीर जेहवुं, करो जिनसुं रंग ॥ २ ॥ अगियार अंग, लखाविये,
अगियार पाठां सार ॥ अगियार कवली विंटाणा, ठवणो पूंजशी
सार ॥ चावखी चंगी विविध रंगी, शास्त्रतणे अनुसार ॥ एकादशी
इम ऊजमो, जेम पामिये जव पार ॥ ३ ॥ वर कमल नयणी
कमल वयणी, कमल सुकोमल काय ॥ जुजरुं चंरु अखंरु
जेहनें, समरतां सुख आय ॥ एकादशी एम मन वशी, गणि
दर्ष पंक्ति शीश, शासनदेवो विघन निवारो, संघतणा निश
दीश ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ चवदशनी स्तुतिः ॥

स्नातस्याप्रतिमस्यमेरुशिखरे, शक्याविजोः शैशवै ॥ रूपा-
लोकनविस्मया, हृतरसप्राप्त्या भ्रमञ्चकुषा ॥ उन्मृष्टनयनप्रज्ञा
धवलितं, क्षीरोदकाशंकया ॥ वक्रंयस्यपुनःपुनःसजयति, श्रीवर्द्ध-
मानोजिनः ॥ १ ॥ हंसांसाहतपद्मेरेणुकपिश, क्षीरार्णवांजोऽनृतैः ॥
कुंजैरप्सरसांपथोधरजर, प्रस्पृधिंजिःकांचनैः ॥ येषांमंदररत्नशैल-

शिखरे जन्मान्निषकेःकृतः ॥ सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरगणै, स्तेषांनतोद्दं
क्रमान् ॥ २ ॥ अर्हद्वक्त्रप्रसूतंगणधररचितं, द्वादशांगविशालं ॥
चित्रंबद्धर्षयुक्तंमुनिगणवृषजै, धारितंबुद्धिमन्निः ॥ मोक्षाग्रद्वारज्ज-
तंत्रलचरणफलं, ज्ञेयज्ञावप्रदीपं ॥ ज्ञक्तयानित्यंप्रपद्येश्रुतमहमखिलं,
सर्वलोकैकसारं ॥ ३ ॥ निष्पंकव्योमनीलद्युतिमलसदृशं, बालचं-
क्षान्नदंष्ट्रं ॥ सत्तंघंटावेषप्रसूतमदजलं, पूरयंतंसमंतात् ॥ आरूढो-
दिव्यनागंविचरतिगगने, कामदःकामरूपी ॥ यद्वाःसर्वानुज्जृतिर्दिश-
तुममसदा, सर्वकार्येषुसिद्धिं ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ कल्याणकंद सर्वदिन स्तुति ॥

कल्याणकंदं पदमं जिणंदं, संतितञ्ज नेमजिणं मुणिंदं ॥ पासं
पयासं सुगणिक्रवाणं, जत्तीइवंदे सिरिवद्धमाणं ॥ १ ॥ अपारं
संसार समुद्रपारं, पत्ताशिवं दिंतु सुइक्कसारं ॥ सव्वे जिणंदा सुर-
विंदं विंदा, कल्याणवल्लीण विसालकंदा ॥ २ ॥ निव्वाणम्मग्गे वरजा-
ण कप्पं, पणासियासेस कुवाइदप्पं ॥ मयंजिणाणं सरणं दुहाणं
॥ नमामि निच्चंतिजगप्पहाणं ॥ ३ ॥ कुंदींहु गोखीर तुसारवन्ना,
सरोज हत्ठा कमलेनिसन्ना ॥ वाएसिरी पुण्णवग्ग हत्ठा ॥ सुहा
यसा अम्ह सयापसन्ना ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥ श्रीशत्रुंजयगिरि तीरथ सार, गिरवरमांहे जिम मेरु उदार,
ढाकुर राम अपार ॥ मंत्रमांहे नवकारज जाणूं, तारामांहे जिम
चंद्र वखाणूं, जलधर मांहे जल जाणूं ॥ पंखीमांहे जिम उत्तम
दंश, कुलमांहे जिम रुषज्जनो वंश, नाजितणो जे अंश ॥ कामा
वंतमांहे जेम अरिहंता, तपसूरा मुनिवरमहंता, शत्रुंजयगिरि गु-
णवंता ॥ १ ॥ रुषज्ज अजित संजव अजिनंदा, सुमतिनाथ मुख
पूनमचंदा, पद्मप्रज सखकंदा ॥ श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रज सुविधी. शीतल-

श्रेयास सेवो बहु बुद्धी, वासुपूज्य मति शुद्धी ॥ विमल अनंत
 जिन धर्म ए शांती, कुंशु अर मस्त्रि नमुं एकांती, सुनिसुव्रत सुद्ध
 पंथी ॥ नमी पास ने वीर चौवीश, नेम विना ए जिन त्रेवीश,
 सिद्धगिरि आख्या ईश ॥ १ ॥ ज़रतराय जिन साथै बोलै, स्वामी
 शत्रुंजयगिरि तोले, जिननुं वचन अमोले ॥ रुषज कहै सुणो ज़र
 तराय, बहरी पालंता जे नर जाय, पातक जूको थाय ॥ पशु पं
 खी जे इण गिरि आवै,, जवबीजे ते सिद्ध ज आवै, अजरामर
 पद पावै ॥ जिनमतमें सेत्रुंजो बखाण्यो, ते में आगम दिलमांहे
 आयो, सुणता सुख ज़र आयो ॥ ३ ॥ संघपति ज़रत नरेसर
 आवै, सोवनतणां प्रासाद करावै, मणिमय मूरति ठावै, नाग्निरा-
 य मरुदेवी माता, ब्राह्मी सुंदरो बहिन विख्याता, मूर्ति नवाणुं
 ब्राता ॥ गोमुख नैं चक्रेशरीदेवी, शत्रुंजय सार करै नित्यमेवी,
 तपगढ ऊपर देवी ॥ श्रीविजयसेन सूरेश्वरराया, श्रीविजयदेव
 सूरि प्रणामी पाया, रुषजदास गुण गाया ॥ ४ इति ॥

॥ अथ सीमंधरजिन स्तुतिः ॥

महाविदेह क्षेत्रे सीमंधरस्वामी, सोनाना सिंहासण जी,
 रूपाना कोशीला विराजै रत्नना दीवा दीपै जी ॥ कुंकुमवर्णी
 गहंली विराजै मोतीना अकृत सार जी, त्यां वैठा सीमंधरस्वामी
 बोलै मधुरी वाणी जी ॥ १ ॥ केसरचंदन ज़री रे कचोली क
 स्तूरी बराड़ा जी, पहली रे पूजा अमारी रे होजो ऊगमते परजात जी ॥

॥ अथ पंचिदिय संवरणो ॥

॥ पंचेदिय संवरणो, तह नव विह बंजचेर गुत्तिधरो ॥ च
 नविह कसाय मुक्को, इय अठारस गुणेहि संजुत्तो ॥ १ ॥ पंच म
 हवय जुत्तो, पंच विहायारपालण समत्प्रो ॥ पंच समईतिगुत्तो,
 बत्तीस गुणेहिं गुरुमज्ञ ॥ २ ॥

॥ अथ सामायक पारवानी गाथा ॥

॥ सामाश्यवयजुत्तो, जावमणेहोइनियमसंजुत्तो ॥ विन्नइअ सुहंकम्मं, सामाश्यजत्तियावारा ॥ १ ॥ सामाश्यंमिन्नकए, समणो इवसावन्नहवइजह्मा ॥ एएणकारणेणं, बहुसोसामाश्यंकुज्जा ॥ २ ॥ सामायक विधे लोधु विधे पारिजं विधि करतां जे अविधि दुओ होइ ते सबे हुं मन वचन कायार्थे करी मिञ्चामि डुक्कं ॥ दशं मनना-दश वचनना बरै कायाना एवं वत्तीस दूषणामांहे जे कोइ दूषण लागो होय ते सहू मन वचन कायार्थे करी मिञ्चामि डुक्कं ॥

॥ अथ पोसह पारवानी गाथा ॥

॥ सागरचंदोकामो, चंदवर्निसोसुदंसणोधन्नो ॥ जेसिंपोसह पणिमा, अखंमिआजीविअंतेवि ॥ १ ॥ धन्नासलाहशिज्जा, सुवसा आणंदकामदेवाय ॥ जेसिंपसंसइजयवं, दह्वयंतंमहावीरो ॥ २ ॥ पोसह विधे लोधुं विधे पारियुं विधि करतां जो कोइ अविधि हुन होय ते सबि हुं मन वचन कायार्थे करी मिञ्चामि डुक्कं ॥

॥ अथ जगचिंतामणि चैत्यंदन ॥

॥ इष्ठाकारेण संदिस्सइ जगवन् चैत्यंदन करूं, इत्तं ॥ जग चिंतामणि जगनाह जगगुरु जगरक्कण ॥ जगबंधव जगसत्थवाह, जगज्जाव वियक्कण ॥ अठावय संठविअरूव, कम्मठ विणासण ॥ चउवीसं पि जिणवर जयंतु, अप्पनिहय ज्ञाशण ॥ १ ॥ कम्मजू-मिहिं२ पढम संघयण ॥ उक्कोसउ सत्तरिसउ, जिणवराण बिहरं त लअई ॥ नवकोमिहिं केवल्लिण, कोमि सहस्स नव साहू गम्मई ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, विहुं कोमिहिं वरणाण ॥ समणहकोमी सहस दोअ, शुणि जअ निच्च विहाणि ॥ २ ॥ जयउसामी२ रिसइसंतुंजि उज्जित पडू नेमजिण ॥ जयउ वीर सच्च उरमंण, जरुअअहि मुणिसुवय ॥ महुरिपसा

छह डुरिय खंमण, अवर विदेहिं तित्थयरा ॥ चिहुं दिसि विदिसि
 जंकेवि, तीआणागय संपइअं, वंडु जिण सवेवि ॥ ३ ॥ सत्ताणवइ
 सहस्सा, लस्का उपन्न अठ कोमीउ, वत्तीसय वासीआइ, तिय
 लोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पन्नास कोमि सयाइं, कोमी बायाल लस्का
 अमवन्ना ॥ उत्तीस सहस असियाइं, सासय विंवाइ पणमा-
 मि ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ अतीचारनी ८ गाथा ॥

नाणंमि दंसणंमिअ, चरणंमि तवेअ तहय विरियंमि ॥
 आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा जणिउ ॥ १ ॥ काले विणए
 बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अत्थ तडुजय,
 अठविहो नाण मायारो ॥ २ ॥ निस्संकिअ निक्कंखिअ, निवि ति
 गिन्हा अमूढ दिठीअ ॥ उववूह थिरी करणे, वञ्जल पन्नावणे अठ
 ॥ ३ ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिंसमईहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस
 चरित्ता यारो, अठविहो होइनायवो ॥ ४ ॥ बारसविहंमिवि तवे, अ
 अंतिर बाहिरे कुजल दिठे ॥ अगिलाइ अणाजीवी, नायवा सो त
 वायारो ॥ ५ ॥ अणसण मुणो यरिआ, वित्ती संखेवणं रसज्जान
 काय किलेसो संली ए याय, वज्जो तवो होइ ॥ ६ ॥ पायच्चित्तं वि
 णउ, वेयावच्चं तदेव सज्जान ॥ जाणं उस्सग्गोविय, अंतिर उ न
 वो होइ ॥ ७ ॥ अणगूहिअ बल विरिओ, परिक्रमइ जो जंहुत्त मा
 क्तो ॥ जुंजइअ जहायामं, नायवो वीरियायारो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ विशाललोचन ॥

॥ विशाललोचनदलं, प्रोद्यदंतांशुकेशरं ॥ प्रातर्वीरजिनेन्द्रस्य,
 मुखपद्मपुनातुवः ॥ १ ॥ येषामग्निषेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षजरात्
 सुखं सुरेंद्राः ॥ तृणमपि गणयन्ति नैव नाकं, प्रातः संतु शिवाय ते
 जिनर्जोः ॥ २ ॥ कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सदोदयं ॥

अपूर्वचंद्रं जिनचंद्रनाथितं, दिनागमे नौमिबुवैर्नमस्कृतं ॥१॥ इति॥

॥ अथ सुयदेवतानां स्तुतिः ॥

सुअ देवयाए करेमि कानुसगंगं० सुअ देवया जगवई, ना
णावरणीअकम्म संघायं ॥ तेसिं खवेड सययं, जेसिं सुअसायरे जत्ती १

॥ अथ खेत्रदेवतानी स्तुति ॥

॥ जीसे खित्ते साहू, दंसण नाणेहिं चरण सइएहिं ॥ साहं-
ति मुक्कमगं, सा देवी हरज डुरियां ॥ १ ॥ इति

॥ अथ सामायकलेवानो विधि ॥

॥ प्रथम नुंचे आसणे पुस्तक प्रमुखनी थापना मूकीने आ-
वक आविका कटासणुं मुहपत्ती चरवलो लई शुद्ध वस्त्र पहरी ज-
ग्या पूंजी कटासण ऊपर बैशी मुहपत्ती नावा हाथमां मुख पाले
राखी, जमणो हाथ थापनाजी सन्मुख राखी एक नवकार गणी
(पंचिंदिअ) कही इच्छामि खमासमण देई इरियावहिया तस्सुत्तरी
अन्नञ्जसलिएणं कहै, १ लोगस्सको अथवा च्यार नवकारनो कानु-
सगंग करै (पारी) प्रगट लोगस्स कहै, खमासमण देई इच्छाका-
रेण संदिस्सह जगवन् सामायक मुहपत्ती पन्निहेहुं इत्तं । एम कही
मुहपत्ती तथा अंगनी पन्निहेहणना पच्चास बोल कही मुहपत्ती प-
न्निहेहीए पठी खमासमण देई इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् सामा-
यक संदिस्साजं इत्तं । वली खमासमण देई इच्छा० सामायकठानं
इत्तं । एम कही वे हाथ जोम्मी एक नवकार गणी इच्छाकार जग-
वन् पत्ताय करी सामायकदंरुक उच्चरावोजी, पठी गुरु प्रमुख व-
नेल करेमिज्जंते कहै, पठी खमासमण देई इच्छा० वैसणो संदिस्सा-
जं । खमा० इच्छा० वैसणोठानं, खमा० इच्छा० सिज्जाय, संदिस्साजं-
खमा० इच्छा० सिज्जाय कंरुं इत्तं, एम कही त्रण नवकार गणवा । पठी
वे घन्नी सज्जाय धर्मध्यान करवुं ॥ इति सामायक लेवानो विधि ॥

॥ अथ सामायकपारवानो विधिः ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पन्तिकम्याथो (यावत्) लौ
गस्स सूयी कहो खमा० इच्छा० मुंहपत्ती पन्तिकेहुं एम कहो मुंह
पत्ती पन्तिकेही खमासमण देई इच्छा० सामायकपारुं यथाशक्ति,
वली खमासमण देई इच्छा० सामायकपारुं तहत्ती कहो पढी ज
मणो हाथ चरवला ऊपर अथवा कटासणा ऊपर थापी एक नव
कार गणी सामाश्यवयजुत्तो० कहिए, पढी जमणो हाथ थापना
सामो सवलो राखीने एक नवकार गणिए ॥ इति सामायक पार
वानो विधि ॥

॥ अथ दैवशिकं प्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम सामायक लीजै, पढी पाणी वावरुं होय तो मुहपत्ती
पन्तिकेही अने आहार वावरुं होय तो वांदणा वे देवा, तिहाँ
बीजा वांदणामां आवस्सियाए ए पाठ नही कहियो. पढी यथाशक्ति
पञ्चस्काण करुं, पढी खमासमण देई इच्छा० कहो वमेरायें अथवा
पोते चैत्यवंदन कहुं, पढी जंकिंचि० नमोभुणं० कहो ऊना अईने
अरिहंतचेइयाणं० कहो एक नवकारनो कानसग्न करी नमोर्हत्तुं क
हीने प्रथम थुई कहवी, पढी लोगस्स० सवलोए अरिहंतचेइयाणं
कहो एक नवकारनो कानसग्न पारीने बीजी थुई कहवी, पढी
पुस्करवरदी० कहो सुअस्सज्जगवत्तं करेमिकानसग्नं वंदण० कहो
एक नवकारनो कानसग्न पारी त्रीजो थुई कहवी पढी सिद्धाणं बुद्धाणं०
कहो वेयावच्चगराणं० करेमि कानसग्नं अनत्तू० कहो एक नवका
रनो कानसग्न पारी नमोर्हत्तुं कहो चौथी थुई कहवी पढी वैसोने
नमोत्थुणं कहो, पढी चार खमासमण देवापूर्वक जगवान् आचार्य
उपाध्याय सर्वसाधुज्यः प्रते श्रीज्वंदनं करीयै. पढी इच्छाकारेण०
दैवशिक प्रतिक्रमणठानं एम कहो जमणो हाथ चवला अथवा कटा-

लणा ऊपर थापीने इहं सवस्सवि देवसियं कहेवुं, पढी ऊजा अई
 करेमिज्जंते इहामिठामिकानसगं जोमेदेवसिउं तस्सउत्तरीं कहीने
 अतीचारनी आठ गाथानो कानसग करवो, आठ गाथा न आवमे
 तो आठ नवकारनो कानसग करवो. ते कानसग पारीने लोगस्स
 कहेवुं, पढी बैसीनै त्रीजा आवश्यकनी मुंहपत्ती पमिलेहीने वांदणा
 बे देवा, पढी ऊजा अईने इह्याकारेणं देवसियं आलोउं इहं आलो
 एमि जोमेदेवसिउं कहीने सातलाख कहवा. पढी अठार पांप
 स्थानक आलोइये, सवस्सविदेवसिअ कहीने बेसवुं, बेसीने एक नव
 कार गणी करेमिज्जंते इह्यामिठामिपमिक्कमिउं कहीने वंदित्तु कहेवुं
 पढी वांदणा बे देवा, पढी अणुठिउमिअप्रितर देवसिअं खामीने
 वांदणा बे देवा, पढी ऊजा अई ओयरियउवच्चाए कहीने करेमि
 ज्जंते इह्यामिठामि जोमेदेवसिउं तस्सउत्तरीं कही बे
 लोगस्स अथवा आठ नवकारनो कानसग करवो, ते पारीने लोगस्स
 कही सवल्लोए अरिहंतचेइयाणं वंदणवत्तिं कही एक लोगस्स
 अथवा चार नवकारनो कानसग पारीने पुक्करवरदीं सुअस्सज्जं
 गवसं करेमिकानसगं वंदणं कहीने एक लोगस्स अथवा चार
 नवकारनो कानसग करवो, ते पारीने सिद्धाणं बुद्धाणं कही सुअं
 देवयाए करेमिकानसगं अनत्तुं कही एक नवकारनो कानसग
 करवो, ते पारी नमोऽर्हत्कही पुरुषे सुयदेवयानी पहली थुई कहवी
 अने स्त्रिये कमलदलनी पहली थुई कहवी. पढी खेत्रदेवतानीं
 वोजी थुई स्त्रिये तथा पुरुषे बन्नेए एकज कहवी. पढी १ नवकार
 प्रगट गुणी बैसीने ठा आवश्यकनी मुंहपत्ती पमिलेहीने बे
 वांदणा दीजै, पढी सामायक चउवीसठो वंदनक पमिक्कमणुं कान-
 सग अने प्रच्चक्काण कहुंवुंजी एम ए ठए आवश्यक संजारवा. पढी
 इत्तामो अणुत्तहिं नमोऽग्गमालमणाणं कही नमोऽर्हत् कही पुरुष

नमोस्तुवर्द्धमानाय कहे अने स्त्रिया संसारदावानी त्रण शुई कहे
 पढी नमोस्तुष्टुणं कही स्तवन कहवुं, पढी वरकनक कही जगवान
 आदे वांद्वा, पढै जमणो हाथ उपधी ऊपर थापी अद्वाइजेसु क-
 हेवुं, पढी देवसिअपायञ्चित्तनो कान्तसग च्यार लोगस्त अथवा
 शोलनवकारनो करवो, कान्तसग पारी प्रगट लोगस्त कही बेसीने
 खमासमण देई इच्चा० सिद्धायसंदिस्साउं, बीजुं खमासमण देई
 इच्चा० सिद्धायजणूं एम सिद्धायनो आदेश मांगी एक नवकार गणी
 सिद्धाय कहवी, पढी एक नवकार गणी खमासमण देई दुःखक-
 नकम्भस्कननो कान्तसग च्यार लोगस्तनो संपूर्ण अथवा शोल
 नवकारनो करवो, ते एक वमेरे अथवा पोत पारीने नमोईत्कही
 लघुशांति कहीने प्रगट लोगस्त कहै, पढी इरियावही० तस्तन-
 त्तरी० कही एक लोगस्त अथवा च्यार नवकारनो कान्तसग करी
 प्रगट लोगस्त कहवो, पढी चनकसाय० नमोत्तुष्टुणं० कही जावंति
 बे कहीने नवसगहरं० जयवीरराय कही मुंहपत्ती पमिलेहवो पढी
 इच्चा० इच्चाका० सामायक गारुं यथाशक्ति इच्चा० इच्चाका०
 सामायक गारुं तहत्ति कही पढी जमणो हाथ उपधी ऊपर थापी
 एक नवकार गणीने सामाश्यवयजुत्तो० कहेवुं, पढी आपेत्ती थान-
 पना होयतो एक नवकार गणी नठे. ए देवसि प्रतिक्रमण विधि
 केह्यो, बाकी अंतरविधि मोहटाथी समजवो ॥ इति देवशी प्रति-
 क्रमण विधिः ॥

॥ अथ राई प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम पूवली रीते सामायक लेवुं पढी इच्चा० इच्चाका०
 कही कुसमिणनो दुसमिणनो च्यार लोगस्तनो अथवा शोल
 नवकारनो कान्तसग करी पारी प्रगट लोगस्त कहवो, पढी खमास-
 मण देई जगचित्तमणीनुं चैत्यवंदन जयवीरराय सूधी कहेवुं, पढी

ચ્યાર સ્વમાસમણપૂર્વક જગવાન આચાર્યજીપાધ્યાય અને સર્વસાધુ પ્ર-
 ત્યેકે વાંદવા, પઠી સ્વમાસમણ વે દેઈ સચ્ચાનૌ આદેશ માંગી એક
 નવકાર જાણીને જરૂરેસરની સચ્ચાઈ કહીને પરી ? નવકાર ગણ-
 વો, પઠી શ્લોકારસુહારાઈનો પાઠ કહવો, પઠી શ્લોકાં રાઈપન્નિ-
 ક્કમણોઠાનું કહીને જમણો હાથ ઝપઘી ઝપર આપીને પઠો શ્લોક
 સવસ્તવિરાઈય ડુચ્છિંતિય૦ કહી નમોત્તુણં તથા કરેમિજ્જંતે કહી
 શ્લોકામિઠામિકાનસગં૦ તસ્સજ્જતરી૦ કહી એક લોગસ્સ અથવા
 ચ્યાર નવકારનો કાઠસગ્ગ પારીને પ્રગટ લોગસ્સ કહી સવલોએઅ-
 રિહંત૦ કહી એક લોગસ્સ અથવા ચ્યાર નવકારનો કાઠસગ્ગ કરવો,
 પઠી પુસ્કરવરદી૦ સુઅસ્સ૦ વંદણવ૦ કહી અતીચારની આઠ ગા-
 થાનો અથવા ન આવમે તો આઠ નવકારનો કાઠસગ્ગ પારી સિ-
 ક્કાણંબુદ્ધાણં કહીને ત્રીજા આવશ્યકની મુંદપત્તી પમિલેહી વાંદણા
 બે દેવા તિહાંથી લેને અપ્પુઠ્ઠિમિસ્વામી વાંદણા બે દીજે તિહાં સૂધી
 દેવશીની રીતે જાણવું, પણ જે ઠિકાણે દેવસિયં આવે તે ઠિકાણે
 રાઈયં કહેવું, પઠી આયરિયજ્જવચ્ચાએ૦ કરેમિજ્જંતે૦ શ્લોકામિઠામિ૦
 તસ્સજ્જતરી કહી તપવિંતામણી કરતાં ન આવમે તો ચ્યાર લોગસ્સ
 અથવા શોલ નવકારનો કાઠસગ્ગ કરવો, તે પારી પ્રગટ લોગસ્સ
 કહી ઠઠા આવશ્યકની મુંદપત્તી પમિલેહી વાંદણા બે દેવા, પઠી સ-
 કલ તીર્થવંદન કરીને યથાશક્તિયે પચ્ચરક્કાણ કરવું, પઠી શ્લોકા-
 કારેણ સંદિસ્સહ જગવન્ સામાયકચ્ચવીસત્થો વંદનક પમિલ્લમણ
 કાઠસગ્ગ પચ્ચરક્કાણ કર્યું ઠેજી, એમ ઠ આવશ્યક સંજ્ઞારવા, પઠી
 પચ્ચરક્કાણ કરવું હોયતો કરવું ઠેજી અને ધારવું હોયતો ધારવું ઠેજી,
 એમ કહેવું, પઠી શ્લોકામોઅણુસર્દિં૦ નમોસ્વમાસમણાણં૦ નમોર્હત્ત૦
 કહીને વિશાલલોચન૦ નમોત્તુણં૦ અરિહંતચેશ્યાણં૦ કહી એક
 નવકારનો કાઠસગ્ગ પારી નમોર્હત્તકહી કલ્યાણકંદની પ્રથમ થોય

कहवी, पढी लोगस्स० पुस्करवरदी० सिद्धाणंबुद्धाणं कही अनु-
क्रमे च्यार थोयो कहवी, पढी नमोबुद्धाणं कही जगवान् आदि चारने
च्यार खमासणे वांदवा, पढी जमणो हाथ ऊपधि ऊपर आपी अ-
च्छाड्जेसु कहेवुं पढी सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन स्तवन० जयवी-
राय० कान्तसग० थोय पर्यंत कहीये तिहांसुधी करवुं, पढी खमा-
सणपूर्वक श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन स्तवन जयवीराय कान्त-
सग० अने थोय कहवी, पढी सामायक पारवानी विधिथे सामा-
यक पारवुं इति ॥

॥ अथ परकी प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम दैवसिकं प्रतिक्रमणमां वंदितु कही रहिये तिहांसूधी
सर्व कहेवुं पण चैत्यवंदन सकलार्हतनुं कहेवुं अने थोयो स्नात-
स्थानी कहेवी, पढी खमासमण देईने इच्छाकारेण संदिस्सह जग-
वान् देवसियं आलोइयंपत्तिकुंता इच्छा० पस्सियमुंढपत्ती पमिलेहुं
एम कही मुंढपत्ती पमिलेहीये, पढी बांदणा बे दीजै, पढी इच्छा-
कारेण० संबुद्धाखामणेषां अप्पुठ्ठिहं अप्पिंतर पस्सियंखामेजं इच्छं
खामेमिपस्सियं पन्नरसदिवसाणं पन्नरसराइयाणं जंकिंचिअप्पत्तियं०
कही इच्छाकारेणसं० पस्सियंआलोएमि इच्छं आलोएमि जोमेपस्सि-
अइयारोकन कही इच्छा० परकी अतीचार आलोऊं. एम कही
बुद्ध अतीचार कहीये, पढी एवंकारे आवकतणें धर्मे श्रीसमकितमृ-
तवारव्रत एकसो चोवीस अतीचारमांहे जे कोई अतीचार पक्कदि-
वसमांहे सूक्ष्म वादर जाणतां अजाणतां हुन होय ते सबे हुं
मनकर वचनकर कायायेंकरी मिच्छामिडक्कं ॥ सबस्सविपस्सिअ
डुत्तिंतिअ डुप्पासिय डुत्तिठिय इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् तस्स
मिच्छामिडक्कं ॥ इच्छाकारिजगवन् पसान करी परकी तपप्रशाद
कराउ जी, एम उच्चार करीने आवी रीते कहीये, चउत्थेणं एकउ-

पचाश वेद्यां विल त्रणनीवि च्यारएकाशणां आठवेआसणा वेदजार
 सज्ञाय करी यथाशक्ति तप प्रवेश करयो होयतो पइठी कहीए,
 करवो होयतो तहन्ति कहीये, न करवो होयतो अणवोड्या रहीये
 पठी वांदणा बे दीजै, पठी इच्छाकारे० पत्तेयखामणेणं अष्टुठिनहं
 अग्निंतर पस्त्रिअं खामेउं इहं खामेमिपस्त्रियं पन्नरसदिवसाणं
 पन्नरसराइआणं जंकिंचिअप्पत्तियं० पठी वांदणा बे दीजै पठी देव-
 सियआलोइयपमिकंता इच्छाका० जगवन् पस्त्रियं पमिकमुं समपमि
 कमामि इहं एम कही करेमिजंतेसामाइयं० कही इच्छामिपमिक
 मिउं जोमेपस्त्रिउं० कहवो पठी खमासमण देई इच्छाका० प
 स्त्रीसूत्र पढुं, एम कही त्रण नवकार गणी सांधु न होयतो त्रण
 नवकार गणीने श्रावक वंदितुं कहै, पठी सुयदेवयानी श्रोय कहवी
 पठी देवा बैसी जमणोढींचण ऊजो राखो एक नवकार गणी क
 रेमिजंते० इच्छामिपमि० कही वंदितुं कहेवुं०, पठी करेमिजंते इ
 च्छामिपमिकानसग्गं जोमेपस्त्रिउं० तस्सउत्तरी० अन्नवू० कहोने
 (१२) अर लोगस्सनो कानसग्ग करवो, ते लोगस्स चंदेसुनिम्मल
 यरा सूधी कहवा अथवा अरुतालोस नवकारनो कानसग्ग करी
 पारवो, पारीने प्रगट लोगस्स कही सुंदपत्ती पमिलेहीने वांदणा
 बे दीजै, पठी इच्छाका० समाप्तिखामणेणं अष्टुठिनहं अग्निंतर०
 पस्त्रिअंखामेउं इहं खामेमिपस्त्रिअं पन्नरसदि० कही पठी खमा-
 सण देई इच्छाका० कही पस्कोखामणाखामूं एम कही खामणा
 च्यार खामवा पठी दैवसीप्रतिक्रमणामां वंदितुं कहा पठी बे वां-
 दणा देईने तिहांथी ते सामायक पारीये तिहांसूथी सर्व दैवसीनी
 पेवे जाणवु, पण सुयदेवयानी घुईने ठिकाणे जानादि श्रोयो कहवी
 स्तवन अजितशांतिनुं कहवुं, सज्ञायने ठिकाणे उवसग्गहरं तथह
 संसारदावानी घुई च्यार कहेवी अने लघुशांतिने ठिकाणे मोहटी

शांति कहेवी ॥ इति परकी प्रतिक्रमण विधी ॥

॥ अथ चउमासी प्रतिक्रमण विधि ॥

ये ऊपरने कहा प्रमाणे सर्व विधी करवी पण एटलो वि-
शेष, बार लोगस्सना काउसगने ठिकाणे बीस लोगस्सनो काउ-
सग्न करवो अने परकीना आगारने ठिकाणे चउमासीना कहवां,
यथांतपने ठेकाणे ठेकां वे उपवास च्यार आंविळ ठनीवी आठ ए-
काशणा शोल वेआसणा च्यारहजारसंजाय, ए रीते कहीये ॥ इति ॥

॥ अथ संवत्सरी प्रतिक्रमण विधिः ॥

ए पण ऊपर लेख्या मुजब एटलो विशेष पण परकीना
बार लोगस्सने ठिकाणे चालीश लोगस्सनो काउसग्न अथवा एक
शो शाठ नवकारनो काउसग्न करवो, अने तपने ठिकाणे अढमज्ज
एटले त्रणउपवाश ठआंविळ नवनीवी बारएकाशण चोवीश वेआ-
सणा अने ठहजार सिझाय ए रीते कहवुं अने परकीना आगारने
ठिकाणे संवत्सरीना आगार कहवा ॥ इति पंचप्रतिक्रमण विधिः सं०

॥ अथ पडिलेहण करवानो विधी ॥

नवकार पंचिंदिय कही इरियावही पन्तिक्रमवी. आपना हो-
य तो नवकार पंचिंदिय न कहवुं, पठी नस्सउत्तरी कही एक लो-
गस्स अथवा चार नवकारनो काउसग्न करी प्रगट लोगस्स कही
उत्ते पगे बैसी मुंहपत्ती चरवलो कटासणुं उत्तरासण धोतीनं कंदोरो
आदिनुं पन्तिकेहण करवुं, पठी काजो काढी जीव कलेवर सच्चित्त
आदि जोवुं, पठी काजो काढनार आपनाजी सन्मुख उत्तो रही
इरियावही पन्तिक्रमे पठी काजो परठववा जग्या सोधी त्रणवार
अणुजाणहजस्सुगो कही काजो परठवे, पठी त्रण बार वोसिरे
कहे ॥ इति पन्तिकेहण करवानो विधी ॥

॥ अथ पञ्चस्काण पारवानो विधि ॥

प्रथम इरियावही पम्किमिये, पठी जगचिंतामणीनुं चैत्य
वंदन जयवीधराय सूधी करवुं पठी मन्हजिणाएनी सिझाय कह
बी, मुहपत्ती पम्किमेही इच्चांमि० इच्चाका० पञ्चस्काणपारुं यथाश
क्ति० इच्चांमि० इच्चाका० पञ्चस्काणपारयुं तहति एम कही जमणो
हाथ चरवला अथवा कटासणा ऊपर आपी एक नवकार गणी प
ञ्चस्काण करयुं होय ते कहेवुं, ते लखियेठिये ॥ जग्गए सूरें नमोकां
रसहियं पोरसिं साढपोरसिं गंठिसहियं मुष्टिसहियं पञ्चस्काणकरयुं
चनद्विहार आंबिल नीवी एकासणुं बेआसणुं करयुं तिविहार पञ्च
स्काण फासियं पालियं सोहियं तोरिअं कीट्टिअं आराहिअं जंचन
आराहियं तस्समिञ्चामिडुकरुं ॥ एम कही १ नवकार गणवो ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सीमंधरजिन स्तवन ॥

पुस्कलवइ विजयें जयो रे, नयर पुंनरीगणी सार ॥ श्री
सीमंधर साहिवा रे, राय श्रेयांसकुमार ॥ जिणंदराय धरज्यो धर्म
सनेह ॥ (आंकणी) मोहोटा नाना अंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत ॥
शशि दरिशाण सायर वधै रे, कैरव वन विकसंत ॥ जि० २॥ ठाम
कुठाम न लेखवे रे, जग वरसत जलधार ॥ कर होय कुसुमें वा
सियो रे, गया सवि आधार ॥ जि० ॥ ३ ॥ रायने रंक सरिखा
गणो रे, ज्योते शशि सूर ॥ गंगाजल ते बिहुं तणा रे, ताप करे
सवि दूर ॥ जि० ॥ ४ ॥ सरिखा सहुने तारवा रे, तिम तुमे वो
माहाराज ॥ मुजसुं अंतर किम करो रे, बांह ग्रह्यांनी लाज ॥ जि०
॥ ५ ॥ मुख देखी टीलुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण ॥ मुजरो
माने सवितणो रे, साहिब तेह सुजाण ॥ जि० ॥ ६ ॥ वृषजलंबन
माता सत्यकी रे, नंदन रुकमणी कंत ॥ वांचक जश इम वीनके
रे, जयजंजण जगवंत ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ बीजनं स्तवन ॥

(॥ फतमल पाणीमाने जाय ए देगी ॥) ॥ प्रणमी

शारदमाय, शासन वीर सुहकरुं जी ॥ बीज तिथी गुणगेह, आ-
दरो जवियण सुंदरु जी ॥ १ ॥ एह जिन पंच कढ्याण, विवरीने
कहूं ते सुणो जी ॥ माहा सुदि बीजे जाण, जन्म अजिनंदनतणो
जी ॥ २ ॥ आवण सुदिनी हो बीज, सुमनि चढ्या सुरलोकथी
जी ॥ तारण जवोदधि तेह, तस पद सेवे सुर थोकथी जी ॥ ३ ॥
समेतशिखर शुभ्र ठाण, दशमा शीतल जिन गणुं जी ॥ चैत्र व-
दिनी हो बीज, वर्या मुक्ति तस सुख घणुं जी ॥ ४ ॥ फाटगुन
मासनी बीज, उत्तम उज्ज्वल मासनी जी ॥ अरनाथ तस ज्यवन,
कर्मकर्यें तब पासनी जी ॥ ५ ॥ उत्तम माघ ज मास, शुदि बीजे
वासुपूज्यनो जी ॥ एहिज दिन केवलनाण, शरण करो जिनराज
नो जी ॥ ६ ॥ करणीरूप करो खेत, समकित बीज रोपो तिहा
जो ॥ खातर किरिया हो जाण, खेन समता करी जिहां जी ॥ ७ ॥
उपशम तद्रूप नीर, समकित ठोरु प्रगट होवे जी ॥ संतोष करी
अहो वाम, पञ्चस्काण व्रत चोकी सोवे जी ॥ ८ ॥ नासे कर्म रिपु
चोर, समकित वृक्ष फळ्यो तिहां जी ॥ मांजर अनुजवरूप, उत्तरे
चारित्र फल जिहां जी ॥ ९ ॥ शांति सुधारश वारी, पान करी
सुख लीजीये जी ॥ तंबोल सम ढ्यो स्वाद, जीवने संतोष रस
किजीये जी ॥ १० ॥ बीज करो बावीश मास, उल्लूही बावीस
मासनी जी ॥ चोविहार उपवास, पालियें शील वसुधासती जी
॥ ११ ॥ आवश्यक दोय वार, पमिलेहण दोय लीजीये जी ॥ दे
ववंदन त्रिण काल, मन वच कायार्यें कीजीये जी ॥ १२ ॥ ऊज
मणुं शुभ्र चित्त, करी धरीयें संजोगथी जी ॥ जिनवाणी रस एम,
पीजीये श्रुत उपयोगथी जी ॥ १३ ॥ एणि विध करियें दो बीज,

राग ने द्वेष दूरे करे जी ॥ केवलपद लहि तास, वरे मुक्ति उल्लट
घरे जी ॥ १४ ॥ जिनपूजा गुरुजक्ति, विनय करी सेवो सदा जी
॥ पद्मविजयनो शिष्य, जक्ति पाये सुख संपदा जी ॥ १५ इति
बीजतिथीनुं स्तवनं ॥

॥ अथ पंचमीनुं वृद्ध स्तवन ॥

(॥ पुण्य प्रशंसीये ॥ ए वेशी ॥) सुत सिद्धारथ
चूपनो रे, सिद्धारथ जगवान ॥ बारह परखदा आगले रे, ज्ञाखे
श्रीवर्द्धमानो रे ॥ १ ॥ जिवियण चित्त धरो ॥ मन वच कोय
अमायो रे, ज्ञान जक्ति करो ॥ एआंकशी ॥ गुण अनंत आतमत-
णारे, मुख्यपणे तिहां दोय ॥ तेमां पण ज्ञानज वहुं रे, जिणायी
दंतण होय रे ॥ ज० २ ॥ ज्ञाने चारित्र गुण वधे रे, ज्ञाने
उद्योत सहाय ॥ ज्ञाने धिवरपणुं लहे रे, आचारज उवझाय रे
॥ ज० ३ ॥ ज्ञानी श्वासोवासां रे, कठिण करम करे नाश ॥
वह्नि जेम इंधन दहे रे, कणमां ज्योति प्रकाशो रे ॥ ज० ४ ॥
प्रथम ज्ञान पढे दया रे, संवर मोह विनाश ॥ गुणठाणांग
पगधालीये रे, जेम चढे मोह आवासीरे ॥ ज० ५ ॥ म५ सुअ
उहि मणपङ्कवा रे, पंचम केवलज्ञान ॥ चउ मुंगा श्रुत एक
वे रे, स्व पर प्रकाश निदान रे ॥ ज० ६ ॥ तेहना साधन जे
कह्या रे, पाटी पुस्तक आदि ॥ लखे लखावै साचवैरे, धर्मी वरी
अप्रमादो रे, ॥ ज० ७ ॥ त्रिविध आशातना जे करे रे, जणतां
करे अंतराय ॥ अंधा बदेरा बोवना रे, मुंगा पांगुल थाय रे
॥ ज० ८ ॥ जणतां गुणतां न आवने रे, न मले वल्लज चीज ॥
गुणमंजरी वरदत्त परे रे, ज्ञान विराधन बीज रे ॥ ज० ९ ॥ प्रेम
पूवै परखदा रे, प्रणमी जगगुरु पाय ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे,
करो अधिकार पसायो रे ॥ ज० १० ॥ इति ॥

(॥ ढाल २ ॥ कपूर होये अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥)-

जंबुद्वेपना जरतमां रे, नयर पदमपुर खास ॥ अजित-
सेन राजा तिहां रे, राणी यशोमती तास रे ॥ १ ॥ प्राणी आ-
राधो वर ज्ञान, एहिज मुक्ति निदान रे ॥ प्रा० आ० ॥ ए
आकणी ॥ वरदत्त कुंवर तेहनो रे, विनयादिक गुणवंत ॥ पितरें
जणवा मूँकिनु रे, आठ वरस जब हुंतरे ॥ प्रा० २ ॥ पंक्ति
यत्न करे घणो रे, मात्र जणावण हेत ॥ अक्षर एक न आवरे रे,
ग्रंथतणी शी चेत रे ॥ प्रा० ३ ॥ कोढें व्यापी देहमी रे, राजा
राणी संचित ॥ श्रेष्ठी तेहीज नयरमां रे, सिंददास धनवंत रे
॥ प्रा० ४ ॥ कपूरतिलका गेहनी रे, शीले शोजित अंग ॥ गुण
मंजरी तस बेटमी रे, मुंगी रोगे व्यंग रे ॥ प्रा० ५ ॥ शोल
वरसनी सा रई रे, पामो यौवनवेश ॥ दुर्जग पण परणे नही रे,
मात पिता धरे खेद रे ॥ प्रा० ६ ॥ तेणो अवसरे उद्यानमां रे,
विजयशेन गणधार ॥ ज्ञानरयण रयणायरू रे, चरण करण व्रत-
धार रे ॥ प्रा० ७ ॥ वनपालक जूपाळने रे, दीध वधाइ जाम ॥
चतुरंगी सेना सजी रे, वंदन जावे ताम रे ॥ प्रा० ८ ॥ धर्म-
देशना सांजले रे, पुरजन सहित नरेश ॥ विकशत नयन वदन
मुदा रे, नहिं प्रमाद प्रवेश रे ॥ प्रा० ९ ॥ ज्ञान विराधन परजवे रे,
मूरख पर आधीन ॥ रोगें पीछ्या टलवले रे, दीसै दुःखीया दीन
रे ॥ प्रा० १० ॥ ज्ञान सार संसारमे रे, ज्ञान परम सुख हेत ॥
ज्ञान विना जगजीवमा रे, न लहे तत्व संकेत रे ॥ प्रा० ११ ॥
श्रेष्ठी पूढे मुणिंदने रे, जाखो करुणावंत ॥ गुणमंजरी मुऊ अंग-
जा रे, कवण कर्म विरतंत रे ॥ प्रा० १२ ॥ इति ॥

(ढाल ३ ॥ सूरती महिनानी देशीमां)

धातकीखंनना जरतमां, खेटक नयर सुगम ॥ व्यवहारी

जिनदेव ठै, घरणी सुंदरी नाम ॥ १ ॥ अंगज पांच सोहामणा,
 पुत्री चतुरा चार ॥ पंक्तिपासे सीखवा, तातें मुंक्या कुंमार ॥ २ ॥
 बालस्वजावें रामतें, करतां दहामा जाय ॥ पंक्ति मारे जाहरे,
 मा आगल कहे आय ॥ ३ ॥ सुंदरी सुखिणी सीखवै, जणवानुं
 नही काम ॥ पांढ्यो आवे तेरवा, तो तस दणजो ताम ॥ ४ ॥
 पाटी खनिया लेखणा, वाली कीधा राख ॥ शठने विद्या नवि
 रुचै, जेम करहाने डाख ॥ ५ ॥ पामा परे मोहोटा थया, कन्या
 न दीये कोय ॥ सेठ कहे सुण सुंदरी, ए तुज करणी जोय ॥ ६ ॥
 तटकी जाखे जामिनी, बेटा बापना होय ॥ पुत्री होये मातनी,
 जाणे ठै सहू कोय ॥ ७ ॥ रे रे पापणि सापणी, सामा बोल म
 बोल ॥ रीसाली कहे ताहरो, पापी बाप निटोल ॥ ८ ॥ शेठें
 मारी सुंदरी, काल करी ततखेव ॥ ए तुज बेटा उपनी, ज्ञान
 विराधन हेव ॥ ९ ॥ मुर्झागत गुणमंजरी, जातीसमरण पामि ॥
 ज्ञान दिवाकर साचो, गुरुने कहे शिर नामि ॥ १० ॥ शेठ कहे
 सुणो स्वामी, केम जाये ए रोग, गुरु कहे ज्ञान आराधो, साथो
 वंछित योग ॥ ११ ॥ उज्ज्वल पंचमी सेवो, पंच वरस पंच मास ॥
 नमो नाणस्स गणणुं गुणो, चोविहार उपवास ॥ १२ ॥ पूरव
 उत्तर सन्मुख, जपिये दोय हजार ॥ पुस्तक आगल ढोइये, धान्य
 फलादि उदार ॥ १३ ॥ दीवो पंच दीवटणो, साधियो मंगल गेह ॥
 पोसदमान करी सके, तेण विधि पारण एह ॥ १४ ॥ अथवा
 सौजायपंचमी, उज्ज्वल कार्तिक मास ॥ जावज्जीव लगे सेविये,
 कजमणा विधि खास ॥ १५ इति ॥

(॥ ढाल चौथी ॥ एकवीसानी देशीमां ॥)

पांच पोथी रे, ठवणी पाठा विटांगणा ॥ चावखी दोरा रे,
 पाटी पाटला वर तणा ॥ मसी कागल रे, कांबी खनिया लेखणी ॥

कवली माबली रे, चंद्रुआ ऊरमा पूंजणी ॥ १ ॥ (त्रूटक) प्रा-
साद प्रतिमा तास जूषण, केसर चंदन माबली ॥ वासकूंपी वांला
कूंची, अंगलूहणा ठावनी ॥ कलश आली मंगलदीवो, आरती नें
धूपणा ॥ चरवला मुंहपत्ती साहमी वडल, नोकरवाली आपना ॥
॥ २ ॥ (ढाल) ज्ञान दरिसण रे, चरणना साधन जे कह्या, तप
संयुत रे, गुणमंजरीयें सह्या ॥ नृप पूछे रे, वरदत्त कुंवरनें अंग
रे ॥ रोग उपनो रे, कवण करमना जंग रे ॥ ३ ॥ (त्रूटक) मु-
निराज ज्ञासै जंबुद्वीपें, जगत सिंहापुर गाम ए ॥ व्यवहारी वसु-
तास नंदन, वसुसार वसुदेव नाम ए ॥ वन मांहे रमतां दोय
बांधव, पुण्य योगें गुरु मळ्या ॥ वैराग्य पामी जोग वामी, धर्म
धामी संवरया ॥ ४ ॥ (ढाल) लघु बांधव रे, गुणवंत गुरु पदवी
लहै, पणसय मुनिने रे, सारण वारण नितु दिये ॥ कर्म योगे रे,
अशुज्ज उदय थयो अन्यदा, संघारे रे, पोरसी जणी पौढ्यो यदा
॥ ५ ॥ (त्रूटक) सर्वधाति निंद व्यापी, साधु मांगे वायणा ॥
जंघमां अंतराय आतां, सूरि हूआ दूमणा ॥ ज्ञान ऊपर द्वेष जा-
ग्यो, लाग्यो मिथ्या जूतनो ॥ पुण्य अमृत ढोली नांख्यो, जेरयो
घापतणो घनो ॥ ६ (ढाल) मन चिंतवे रे, कां मुज लागुं पाप रे ॥
श्रुत अज्यासो रे, तो एवमो संताप रे ॥ मुज बांधव रे, जोयण
खायण सुखें करे ॥ मूरखना रे, आठ गुणो मुख उच्चरे ॥ ७ ॥
(त्रूटक) वार वासर कोई मुनिने, वायणा दीधी नही ॥ अशुज्ज
ध्याने आयु पूरी, जूप तुज नंदन सही ॥ ज्ञान विराधन मूढ जम
पणुं, कोढनी वेदन लही ॥ वृद्ध बांधव मानसरवर, हंसगति पाम्यो
सही ॥ ८ (ढाल) वरदत्तने रे, जातिस्मरण ऊपनो ॥ जव दीवो रे,
गुरु प्रणामी कहे शुज्ज मनो ॥ धन्य गुरुजी रे, ज्ञान जगत्रय दी-
बनो ॥ गुण अवगुण रे, ज्ञासन जे जग परवनो ॥ ९ ॥ (त्रूटक)

ज्ञान पावन सिद्धि साधन, ज्ञान कदो किम आवने ॥ गुरु कहे
तपशी पाप नासै, टाढ जेम घन तावने ॥ जूप पज्जणें पूत्रने प्रज्जु,
तपनी शक्ति न एवमी ॥ गुरु कहे पंचमी तप आराधा, संपदा
दियो बेवमी ॥ १० ॥ इति ॥

(ढाल पांचमी ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥)

सज्जु वयस सुधारसे रे, जेदी साते घात ॥ तपसुं रंग लागो,
गुणमंजरी वरदत्तनो रे, नागो रोग मिथ्यात्व ॥ त० १ ॥ पंचमी तप
महिमा घणो रे, पसरथो मद्रियल मांही ॥ त० ॥ कन्या सहस्र
सयंवरा रे, वरदत्त परणयो त्यांही ॥ त० ॥ २ ॥ जूपें कीधो पाट
वी रे, आप थयो मुनि जूप ॥ त० ॥ ज्ञीम कांत गुणें करी रे, वर
दत्त रवि शशिरूप ॥ त० ॥ ३ ॥ राज रमा रमणीतणा रे, जोगवै
जोग अखंरु ॥ त० ॥ वरसेंश ऊजवे रे, पंचमी तेज प्रचंरु ॥ त०
॥ ४ ॥ जुक्तजोगी थयो संजमी रे, पाले व्रत खटकाय ॥ त० ॥
गुणमंजरी जिनचंद्रने रे, परणावै निज ताय ॥ त० ॥ ५ ॥ सुख
विलसी थई साधवी रे, वैजयंते दोय देव ॥ त० ॥ वरदत्त पण
ऊग्रनो रे, जिहां सीमंधर देव ॥ त० ॥ ६ ॥ अमरसेन राजा घरे
रे, गुणवंत नारी पेट ॥ तप० ॥ लक्षण लक्षित रायने रे, पुण्यें
कीधो जेट ॥ तप० ॥ ७ ॥ शूरसेन राजा थयो रे, सो कन्या ज
रतार ॥ त० ॥ सीमंधर सामी कने रे, सुणि पंचमी अधिकार ॥
त० ॥ ८ ॥ तिहां पण ते तप आदरथुं रे, लोक सहित जूपाल ॥
त० ॥ दश हजार वरसां लगे रे, पालै राज्य ऊदार ॥ त० ॥ ९ ॥
चार महाव्रत जुंपसुं रे, श्रीजिनवरनी पास ॥ त० ॥ केवल धरि
मुक्ते गयो रे, सादिअनंत निवास ॥ त० ॥ १० ॥ रमणी विजय शु
जापुरी रे, जंबुविदेह मज्जार ॥ त० ॥ अमरसिंह महीपालने रे,
अमरावती धरनार ॥ त० ॥ ११ ॥ वैजयंत अक्की चवी रे, गुणमं-

जरीनो जीव ॥ त० ॥ मानससर जेम हंसलो रे, नाम धरथुं सु
 ग्रीव ॥ त० ॥ १२ ॥ बीसे वरसे राजवी रे, सहस चोरासी पूत्र ॥
 त० ॥ लाख पूरव समता धरे रे, केवलज्ञान पवित्र ॥ त० ॥ १३ ॥
 पंचमी तप महिमा विषे रे, जाषै निज अधिकार ॥ त० ॥ जेणे
 जेहथी शिवपद लह्युं रे, तेहनो तस उपकार ॥ त० ॥ १४ ॥ इति ॥

(ढाल छटो ॥ करकंडुने करुं वंदना ॥ ए देशी)

चोवीश दंरुक वारवा, हुं वारी ॥ चोवीशमो जिनचंद रे,
 हुं वारी लाल ॥ प्रगट्यो प्राणतस्वर्गथी, हुं० ॥ त्रिसळा नर
 सुखकंद रे ॥ हुं० १ ॥ माहावीरनें करुं वंदना, हुं० ॥ ए आं-
 कणी ॥ पंचमी गतिनें साधवा, हुं० ॥ पंचम नाण विलाश रे,
 हुं० ॥ माहाविशीष सिद्धांतमां, हुं० ॥ पंचमी तप प्रकाश रे,
 हुं० मा० २ ॥ अपराधी पण उधर्यो, हुं० ॥ चंमकोसियो साप रे,
 हुं० ॥ यज्ञ करंता बांजरा, हुं० ॥ सरखा कीधा आपरे हुं० मा०
 ॥ ३ ॥ देवानंदा ब्राह्मणी, हुं० ॥ रिषजदत्त वली विप्रे, हुं० ॥
 व्यासी दिवश संबंधथी, हुं० ॥ कामित पूरयो क्षिप्र रे ॥ हुं०
 मा० ४ ॥ कर्मरोगने ढालवा, हुं० ॥ सवि औषधनो जाण रे,
 हुं० ॥ आदर्यो में आसा धरा, हुं० ॥ मुऊ ऊपर हित आशि रे,
 ॥ हुं० मा ५ ॥ श्रीविजयसिंह सुरीसनो, हुं०, सत्यविजय पन्यास
 रे, हुं० ॥ शिष्य कपूरविजय कवि, हुं० ॥ चंद किरण जस जास
 रे, ॥ हुं० मा० ६ ॥ पास पंचासरा सान्निद्धे, हुं० ॥ खिर्माविजय
 गुरु नाम रे, हुं० ॥ जिनविजय कहे मुऊ हजो, हुं० ॥ पंचमी
 तप परिणाम रे ॥ हुं० मा० ७ ॥ (कलश) इय वीर लायक
 विश्व नायक सिद्धिदायक संस्तव्यो, पंचमी तप संस्तवन टोमर
 गुंथी निज कंठे ठव्यो ॥ पुन्य पाटण खेत्र मांहे सत्तर जाणुं संवत्सरे,
 श्रीपार्श्व जन्मकळ्याण दिवसें सकल जिवि मंगल करे ॥ ८ ॥ इति

॥ अथ अष्टमीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ हारे मारे गाम धरमना साढापचवीश देश जो, दोपे रे
 त्या देस मगध सहुमां शिरे रे लो ॥ हारे मारे नगरी तेहमां राज-
 गृही सुविशेष जो, राजे रे त्यां श्रेणिक गाजै गज परे रे लो ॥ १ ॥
 हारे मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो, विचरंता तिहां
 आवी वीर समोसरथा रे लो ॥ हां० चउदसहस मुनिवरना साथे साथ
 जो, सूधारे तप संयम शियले अलंकरथारे लो ॥ २ ॥ हां० फूड्या
 रसज्जर फूड्या अंव कदंब जो, जाणुं रे गुण शीलवन हसि
 रोमंचियो रे लो ॥ हां० वाया वाय सुवाय तिहां अविलंब जो,
 वासे रे परिमल चिहुं पासे संचियो रे लो ॥ ३ ॥ हां० देव चतु-
 र्विध आवै कोरुकोरु जो, त्रिगुं रे मणि हेम रजतनुं ते रवे रे
 लो ॥ हां० चोसठ सुरपति लेवे होरुहोरु जो, आगे रे रस लागे
 इंजणी नचे रे लो ॥ ४ ॥ हां० मणिमय हेम सिंहासन बेठा
 आप जो, ढाढे रे सुर चामर मणिरतनें जम्या रे लो ॥ हां०
 सुणतां डंडजि नाद टले सवि ताप जो, वरसे रे सुर फूल सरस
 जानू अम्या रे लो ॥ ५ ॥ हां० ताजे तेजे गाजे धन जेम लूंव
 जो, राजे रे जिनराज समाजे धर्मेने रे लो ॥ हां० निरखी
 हरखी आवै जन मन लूंव जो, पोषे रे रस न परे धोषे जर्ममां
 रे लो ॥ ६ ॥ हां० आगम जाणी जिननो श्रेणिक राय जो,
 आय्यो रे परवरियो ह्य गय रथ पायगे रे लो ॥ हां० दइ प्रद-
 क्षिणा बंदी बैगो ठाय जो, सुणवा रे जिनवाणी मोटे जायगे रे
 लो ॥ ७ ॥ हां० त्रिभूवननायक लायक तब जगवंत जो, आणी
 रजन करुणा धर्मकथा कहे रे लो ॥ हां० सहज विरोध विसारी
 जगना जंत जो, सुणतां रे जिनवाणी मनमां गहगहे रे लो ॥ ८ ॥
 इति ॥ (॥ दाल बीजी ॥ वालम वहेला रे आवजो ॥ ए देसी ॥)

वीर जिनवर एम उपदिसे, सांजलो चतुरस्रजाण रे ॥
 मोहनी नींदधां कां पमो, उलखो धर्मनां ठाण रे ॥ १ ॥ विरति
 ए सुमति धरी आदरो, (ए आंकणी) परिहरो विषय कषाय रे ॥
 वापना पंच परमादधी, कां पमो कुगतमां थाय रे ॥ वि० २ ॥
 करी सको धर्म करणी सदा, तो करो ए उपदेश रे ॥ सर्व काले
 करी नवि सको, तो करो पर्व सुविशेष रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ जूजूआ
 पर्व खटना कहा, फल घणा आगमें जोय रे ॥ वचन अनुसारे आ
 राधतां, सर्वथा सिद्धि फल होय रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ जीवने आयु
 परजवतणुं, तिथिदिनें बंध होय प्राय रे ॥ तेह जणी एह आराध
 तां, प्राणिन सद्गति जाय रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ तेहवे अष्टमी फल
 तिहां, पूठै गौतमस्वामि रे ॥ जविकं जीव जाणवा कारणे, कहे
 वीरप्रजु ताम रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ अष्ट महासिद्धि होय एहथी, सं-
 पदा आठनी वृद्धि रे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजै, एहथी आठ गुण
 सिद्धि रे ॥ वि० ७ ॥ लाज होय आठ पंढिहारनो, अठ पचयण
 फल होय रे ॥ नाश अठ कर्मनो मूलथी, अष्टमीनुं फल जोय रे
 ॥ वि० ॥ ८ ॥ आदि जिन जन्म दीक्षातणो, अजितनो जन्म कं-
 ढ्याण रे ॥ व्यवन संजवतणो एह तिथे, अजिनंदन निर्वाण रे ॥
 ॥ वि० ॥ ९ ॥ सुमति सुव्रत नमि जनमोया, नेमनो मुक्ति दिन
 जाण रे ॥ पासजिन एह तिथे सिद्धला, सांतमा जिन व्यवन माण
 रे ॥ वि० ॥ १० ॥ एह तिथि साधतो राजिन, दंभवीरज लह्यो
 मुक्ति रे ॥ कर्म हणवा जणी अष्टमी, कहे सूत्र निर्युक्त रे ॥ वि०
 ॥ ११ ॥ अतीत अनागत कालना, जिनतणा केइ केइ कड्याण
 रे ॥ एह तिथे बलि घणा संजमी, पामले पदं निर्वाण रे ॥ वि०
 ॥ १२ ॥ धर्म वाशित पशु पंखिआ, एह तिथे करे ऊपवास रे ॥
 व्रतधारी जीव पोसो करै, जेहने धर्म अज्यास रे ॥ वि० ॥ १३ ॥

प्राणियो वीरे आठमतणो, जविक हित एह अधिकार रे ॥ डि
 मुखे उच्चरी प्राणिया, पामसे जवतणो पार रे ॥ वि० ॥ १४
 एहथी संपदा सवि लहै, टले कष्टनी कोरु रे ॥ सेवजो शिष्य बु
 प्रेमनो, कहै कांति कर जोरु रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ (कलश) ए
 त्रिजग ज्ञासन अचल शासन वर्द्धमान जिनेश्वरु, बुध प्रेम गुरु सु
 पसाय पामी संशुणयो अलवेसरु ॥ जिन गुण प्रसंगे जणयो रंगे
 स्तवन ए आठमतणो, जे जविक ज्ञावे सुयो गावै कांति सुख पावे
 धणो ॥ १ ॥ इति अष्टमी वृद्ध स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ एकादशी स्तवन लिख्यते ॥

॥ जगपति नायक नेमजिनंद, द्वारिकानगरी समोसरथा ॥
 जगपति वंदवा कृष्णनरिंद, जादव कोमिसुं परिवरथा ॥ १ ॥ जग
 पति धीगुण फूल अमूल, जक्तिगुणें माला रची ॥ जगपति पूजी
 पूवै कृष्ण, क्षायिक समकित शिव रुचि ॥ २ ॥ जगपति चारित्र
 धर्म अशक्त, रक्त आरंज परिग्रहे ॥ जगपति मुऊ आतम उद्धार,
 कारण तुम विन कोण कहै ॥ ३ ॥ जगपति तुम सरिखो मुऊ
 नाथ, साथे गाजे गुणनिलो ॥ जगपति कोय उपाय बताय,
 जेम करे शिववधू कंतलो ॥ ४ ॥ नरपति उज्जल भागशिर मास,
 आराधो एकादशी ॥ नरपति एकशो ने पच्चाश, कल्याणक तिग्नि
 उल्लासी ॥ ५ ॥ नरपति दश क्षेत्रे त्रिण काल, चोवीशी त्रीशे म
 ली ॥ नरपति नेउ जिननां कल्याण, विवरी कहूं आगलि वली ॥
 ॥ ६ ॥ नरपति अर दीक्षा नमि नाण, मल्ली जन्म व्रत केवली ॥
 नरपति वर्तमान चोवीशी, माहे कल्याणक आवली ॥ ७ ॥ नरप
 ति मौनपणें उपवास, दोढसो जपमाला गणो ॥ नरपति मन वच
 काय पवित्र, चरित्र सुणो सुव्रततणो ॥ ८ ॥ नरपति दाहिण धां-
 तकीखंरु, पश्चिम दिशि शकुकारथी ॥ नरपति विजय पाटण अ-

जिधान, साचो नृप प्रजापालथी ॥ ए ॥ नरपति नारी चंडावती
 तास, चंडमुखी गजगामिनी ॥ नरपति श्रेष्ठी शुर विख्यात, शोयल
 सलीला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक परिवार, सारे नृपण
 चीवर धरी ॥ नरपति जाये नित्य जिनगेह, नमन स्तवन पूजा
 करै ॥ ११ ॥ नरपति पोषै पात्र सुपात्र, सामायक पोषध करै ॥
 नरपति देववंदन आवश्यक, काल बेलाये अणुसरे ॥ १२ ॥ इति
 (ढाल बीजी) एक दिन प्रणमी पाय, सुव्रत साधुतणा री ॥ वि
 नयें वीनवे सेठ, मुनिवर करि करुणारी ॥ १ ॥ दाखो मुऊ दिन
 एक, थोमो पुण्य क्रियो री ॥ वाधे जिम वरुबीज, शुभ अनुबंधी
 थयो री ॥ २ ॥ मुनि जणै महाजाग्य, पावन पर्व घणा री ॥ ए
 कादशी सुविशेष, तेहमां सुण सुमना री ॥ ३ ॥ सित एकादशी
 सेव, मास इग्यार लगे री ॥ अथवा वरस इग्यार, उजवी तप शु
 वगे री ॥ ४ ॥ सांजलि सज्जु वैण, आनंद अति उल्लस्यो री ॥
 तप सेवी उजवीय, आरणस्वर्ग वस्यो री ॥ ५ ॥ एकवीश सागर
 आय, पाली पुन्यवसे री ॥ सांजलि केशवराय, आगलि जेह थसे
 री ॥ ६ ॥ सोरीपुरमां सेठ, समृद्धत वमो री ॥ प्रीतिमती प्रिया
 तास, पुण्यें जोग जड्यो री ॥ ७ ॥ तस कूर्खें अवतार, सूचित
 शुभ स्वप्ने री ॥ जनम्यो पूत्र पवित्र, उत्तम ग्रह शुक्रने री ॥ ८ ॥
 नाल निक्षेप निधान, जूमिथी प्रगट हवो री ॥ गर्ज दोहद अनु
 ज्ञाव, सुव्रत नाम ठव्यो री ॥ ए ॥ बुद्धि उद्यम गुरु जोग, शास्त्र
 अनेक जण्यो री ॥ योवन वय अगियार, रूपवती परण्यो री ॥
 ॥ १० ॥ जिनपूजन मुनिदान, सुव्रत पंचस्काण धरे री ॥ अगियार
 कंचन कोरु, नायक पुण्य जरे री ॥ ११ ॥ धर्मघोष अणमार,
 तिथि अधिकार कहे री ॥ सांजलि सुव्रतसेव, जाती स्मरण लहे
 री ॥ १२ ॥ जिन प्रत्यय मुनि साख, जर्के तप उच्चरे री ॥ एक

दशी दिन आठ, पहरो पोसो धरे री ॥ १३ ॥ इति ॥ (ढाल त्री
 जी) पत्नी संयुते पोसह लीधो, सुव्रतशेठे अन्यदा जी ॥ अवसर
 जाणी तस्कर आया, घरमां धन लुंढै तदा जी ॥ १ ॥ शासनन
 के देवीशर्के, अंजाणा ते बापमा जी ॥ कोलादल सुणि कोटवाल
 आयो, नूप आगल धर्या रांकमा जी ॥ २ ॥ पोसहपारी देव जुहारी,
 दयावंत लेइ जेटणा जी ॥ रायने प्रणमी चोर मूकावी, शेठे की
 धा पारणा जी ॥ ३ ॥ अन्य दिवश विश्वानल लागो, सोरीपुरम
 आकरो जी ॥ सेठजी पोसह समरस बैठा ॥ लोक कहे हठ कां
 करो-जी ॥ ४ ॥ पुण्ये हाट वखारो शेठनी, नगरी सहू प्रशंसा
 करै जी ॥ हरखे सेठजी तप ऊजमणुं, प्रेमदा साथे आदरे जी ॥
 ॥ ५ ॥ पुत्रने घरनो नार जलावी, संवेगी शिर सेहरो जी ॥ च-
 न नाणी विजय शेखर सूरी, पासे तपव्रत आदरे जी ॥ ६ ॥ एक
 खटमासी ब्यार चोमाशी, दोसेय ठठ सो अठमकरे जी ॥ बीजा तप
 पिण बहुश्रुत सुव्रत, मौनएकादशी व्रत धरें जी ॥ ७ ॥ एक अध-
 म सुर मिथ्यादृष्टि, देवतासुव्रतसाधुने जी ॥ पूर्वोपार्जितकर्म उदेरी,
 अंगे वधारे व्याधिने जी ॥ ८ ॥ कर्म नमियो पापे जमियो, सुर क-
 है जात औषधजणी जी ॥ साधु न जाये रोप नराये, पाटु प्रहारें
 हणयो मुनि जी ॥ ९ ॥ मुनि मन वचन काय त्रियोगे, ध्यान अनल
 दहे कर्मने जी ॥ केवल पामी जितपदरामी, सुव्रत नेम कहे
 श्यामने जी ॥ १० ॥ (ढाल चौथी) कान पयंपै नेमने ए, धन्य
 थादव वंश, जिहां प्रभु अवतरया ए ॥ मुऊ मन मानस हंस, ज
 यो जिन नेमने ए ॥ १ ॥ धन्य शिवादेवी मावमी ए, समुद्रविज
 य धन्य तात, सुजात जगतगुरु ए ॥ रत्नत्रयी अवदात ॥
 ज० २ ॥ चरण विराधी ऊपनो ए, हुं नवमो वासुदेव ॥ जयो० ॥
 तिणे मन नवि उल्लसे ए, चरण धरमनी सेव ॥ जयो० ॥ ३ ॥

हाथी-जेम कावव गढयो ए, जाणुं उपादेय हेय ॥ ज० ॥ तोपण
हुं न करी सकुं ए, डुव कर्मना जेय ॥ ज० ॥ ४ ॥ पण सरणो
बलियातणो ए, कीजै सीजै काज ॥ ज० ॥ एहवा वचनने सांज
ली ए, बांह-ग्रह्यानी लाज ॥ जयो० ५ ॥ नेम कहे एकादशी ए,
समकित युत आराध ॥ ज० ॥ आईस जिनवर बारमो ए, ज्ञावी
चोवीशीयें लाध ॥ जयो० ६ ॥ (कलश) इय नेम जिनवर नित्य
पुरंदर रेवताचल मंरुणो, बाण नंद मुनि चंद वरसे रा
जनगरे संश्रुण्यो ॥ संवेग रंग तरंग जलनिधि सत्यविजय
गुरु अनुसरी, कपूरविजय कवि कृमाविजय गणि, जिनविजय ज
यसिरी वरी ॥ १ इति ॥

अथ माहावीरस्वामीनुं हालरिऊं प्रारंभ ॥

माता त्रिशला जुलावै पुत्र पालणें, गावे हालो हालो हाल
रुवानां गीत, सोना रूपानें वली रत्नें जमियुं पालणुं, रेसम दोरी
घूघरी वागे ठुमठुम रीत ॥ हालो हालो हालो हालो मारा नंदने
॥ १ ॥ जिनजी पार्श्वप्रज्जुषी वरस अढीशें अंतरे, होसे चोवीशमो
तीर्थकर जिन परमाण ॥ केशीस्वामी मुखथी एवी वाणी सांजली,
साची साची हुइ ते मारे अमृतवाण ॥ हा० ॥ २ ॥ चौदे स्वप्ने
होवै चक्री के जिनराज, बीता बारे चक्री नहि हुवै चक्रीराज ॥
जिनजी पास प्रज्जुना श्रीकेशी गणधार, तेहने वचनें जाण्या चो-
वीशमा जिनराज ॥ मारी कूखे आव्या तारण तरण जिहाज,
मारी कूखें आव्या त्रण्य जुवन सिरताज ॥ मारी कूखें आव्या
संघ तीरथनी लाज, हुंतो पुण्यपनोती इंद्राणी अई आज ॥ हा० ॥
॥ ३ ॥ मुऊनें मोहलो उपन्यो जे बेसुं गजअंबामीयें, सिंहासण पर
बेसुं चामर ठत्र धराय ॥ ए सहु लक्षण मुऊने नंदन ताहरा ते-
जनां, ते दिन संजारुनें आनंद अंग न माय ॥ हा० ॥ ४ ॥ कर-

तल पगतल लक्षण एक हजार नें आठ ठै, तेहथी निश्चय जाण्या
 जिनवर श्री जगदीश ॥ नंदन जमणो जंगें लंगन सिंह विराजसो,
 में पहले सुपनें दीठो विसवावीश ॥ हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला
 बंधव नंदीवर्द्धनना तमें, नंदन जोजाइयोना देवर ठो सुकमाल, ह
 ससैं जोजाइयो कही देवर माहरा लामका, हसशे रमशे नें वली
 चूटी खणशे गाल ॥ हसशे रमशे नें वली ठुंसा देसे गाल ॥ हा०
 ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेमाराजाना ज्ञाणेज ठो, नंदन नवला पां-
 चसैं मामीना ज्ञाणेज ठो, नंदन मामलिआना ज्ञाणेजा सुकमाल ॥
 दशशे हाथे उछाली कहीने नादना ज्ञाणेजा, आंख्युं आंजीनें
 वली टवकुं करसे गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे
 टोपी आंगलां, रतनें जमिया जालर मोती कशवीकोर ॥ नीला
 पीला नें वलि राता सरवे जातिना, पहेरावशे मामी मारा नंदकि
 शोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सुखमलो सहु लावशे
 नंदन गजुबे जरसे लाडू मोतीचूर ॥ नंदन सुखमा जोईने लेशे
 मामी जामणा, नंदन मामी कहेशे जीवो सुख जरपूर ॥ हा० ॥
 ॥ ९ ॥ नंदन नवला चेमा मामानी साते सती, मारी जत्रीजी ने
 बैन तमारी नंद ॥ ते पण गूंजे जरवा लाखणसाई लावशे, तुमनें
 जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजे
 लावशे लाखटकानो घूघरो, वली गूमा मेंना पोपट नें गजराज ॥
 सारस हंस कोयल तीतर नें वलि मोरजी, मामी लावशे रमवा
 नंद तमारे काज ॥ हा० ॥ ११ ॥ उप्पन कुमरी अमरी जलकलशें
 नवरावीआ, नंदन तुमनें अमनें केली घरनी मांहि ॥ फूलनी
 वृष्टि कीधी योजन एकने मंमले, बहु चिरंजीवो आशीष
 दीधी तुमने त्यांहि ॥ हा० ॥ १२ ॥ तमनें भेरुगिरिवर सुरपतिये नव-
 राविआ, निरखी हरखी सुकृत लाज कमाय ॥ सुखमा ऊपर वारुं

कोटी कोटी चंडमा, वली तन पर वारुं ग्रहगणनो समुदाय ॥
 हा० १३ ॥ नंदन नवला जणवा नीशाले पण मूकशुं, गज पर
 अंबामी बेसामी मोहोटे साज ॥ पसलो जरशुं श्रीफल फोफल
 नागरवेळशुं, सूखरुली लेशुं नीशालीआने काज ॥ हा० १४ ॥
 नंदन नवला मोहोटा आशोने परणावशुं, बहु वर सरखी जोमी
 लावशुं राजकुमार ॥ सरखा वेवाई वेवाणूने पधरावशुं, वर बहु
 पोंखी लेशुं जोइ जोईने दीदार ॥ हा० १५ ॥ पीयर सासर मा-
 रा बेजं पक्ष ऊजला, माहरी कूखे आव्या तात पनोता नंद, मा-
 हरे आंगण वूठा अमृत डुधे मेऊला ॥ माहरे आंगण फलिया
 सुरतरु सुखना कंद ॥ हा० १६ ॥ इणिपरे गायुं माता त्रिशला
 सुतनुं पालणुं, जे कोइ गाशे लेशे पूत्रतणा साम्राज ॥ बिलीमोरा
 नगरे वरणव्युं वीरनुं हावरुं, जय२ मंगल होजो दीपविजय
 कविराज ॥ हा० १७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निंदावारक सिंहाय ॥

निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदाना बोळ्या महा
 पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे
 मायवाप रे ॥ निं० १ ॥ डुर बलंती कां देखो तुम्हे रे, पगमां ब
 लती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलामें धोया लूगमां रे, कहो केम
 ऊजला होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संजालो सहुको आपणो रे,
 निंदानी मूको परी टेव रे, ॥ थोमे घणे अवगुणे सहु जरया रे, के-
 हना नलिया चूए केहना नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते
 आये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो कर-
 जो आपणी रे, जेम वूटकवारो आय रे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रह-
 जो सहुको तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्ण परे सुख
 पाशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ देववांदवानो विधिः ॥

प्रथम इरियावही पन्तिकमवाधी मांनिने यावत् लोगस्त
कही पठी उत्तरासण करी चैत्यवंदन नमोत्पुणं कही अरुधुं जयवी
राय आज्ञवमखंता सूधी हाथ जोनी कहै, वली चैत्यवंदन कहीने
नमोत्पुणं कही यावत् चार थोयो कहीये ठीये तिहां सूधी बधूं कं
हेवुं, पठी नमोत्पुणं कही वली चार थोयो कहीये त्यांसूधी बधूं
कहेवुं, पठी नमोत्पुणं तथा बे जावंती कही स्तवन कही अरुधुं ज
यवीअराय आज्ञवमखंता सूधी कही पठी चैत्यवंदन कही नमोत्पुणं
कही आखो जयवीअराय कहेवो. इहां सवारे देववांदवां तेमां मन्ह
जिणाणांनी सज्ञाय कहेवी, अने मध्यान्हें तथा सांजें देववांदवामां
सज्ञाय न कहेवी ॥ इति देववांदवानो विधिः ॥

॥ अथ ज्ञानविमलजी कृत चउमाशी देववंदन विधिः ॥

॥ प्रथम इरियावही पन्तिकमी कान्तसग करी लोगस्त० क
ही एक खमासमण देइ इच्छाका० श्रीरुषज्जजिन आराधनार्थं चैत्य
वंदन करुं, एम कही चैत्यवंदन करै ॥ (श्री आदिजिन चैत्यवंदन
लिख्यते) ॥ प्रथम जिनेसर रुषज्जदेव, सब्बथी चविया ॥ वदि
चउथें आषाढनी, शक्रे संस्तविया ॥ अठमी चैत्रह वदितणी, दि
वसे प्रजु जाया ॥ दीक्षा पिण तिणहिज दिनें, चउ नाणी आया
॥ फागुण वदि इग्यारसी ए, ज्ञान लहे शुज्ज ध्यान ॥ महा वदि ते
रजे शिव लह्या, परमानंद निधन ॥ १ ॥ इहां नमोत्पुणं० अरिहंत
चेइयाणं० वंदणवत्तिथा कही एक नवकारनो कान्तसग पारी शुइ
क्रमथी कहिये ते लखिये ठीये ॥ (॥ अथ थोय जोमो प्रारंभ ॥)
रुषज्जजिन सुहाया, श्री मरुदेवी माया, कनक वरण काया, मंगला
जास जाया ॥ वृषज्ज लंठन पाया देव नर नारी गाया, पणसय
धणु ठाया ते प्रजु ध्यान ध्याया ॥ १ ॥ ए तीरथ जाणी जिन

प्रेवीश उदार, एक नेम विना सवि समवसरया । निरधार ॥ गिरि
 कमणें आया पोहता गढ गिरनार, चैत्रीपूनम दिनें ते वंदू जयकार
 ॥ १ ॥ ज्ञाताधर्मकथांगे अंतगम सूत्र मजार, सिद्धाचले सीधा
 षोड्या बहु अणगार ॥ ते माटे ए गिरि सवि तीरथ सिरदार ।
 जिन जेठे आवे सुख संपत्ति विस्तार ॥ ३ ॥ गौमुख चक्रेसरी शा
 सननी रखवाल, ए तीरथ केरी सांनिध करै संजाल ॥ गिरुओ
 जस महिमा संप्रति कालै जास ॥ श्री ज्ञानविमल सूरि नामें
 लील विलास ॥ ४ ॥ इति ॥ इहां नमोत्पुणं जावंती वे कही
 नमोऽर्हत्कही स्तवन कहेवुं ॥

॥ अथ आदिजिन स्तवन प्रारंभ ॥ ललनानी देशी ॥

आदिकरन अरिहंत जी, उजगनी अवधार ललना ॥ प्रथम
 जिनेसर प्रणमीये, वंछित फल दातार ललना ॥ आदि करण अ०
 ॥ १ ॥ उपगारी अवनितले, गुण अनंत जगवान ललना ॥ अवि-
 नाशी अक्षय कला, वरते अतिशय धाम ललना ॥ आ० ॥ २ ॥
 गृहवासे पण जेहनें, अमृतफलनो आहार ललना ॥ ते अमृतफलनें
 लहे, ए जुगलुं निरधार ललना ॥ आ० ॥ ३ ॥ वंश इहाग छै जे
 हनो, चढतो रश सुविशेष ललना ॥ नरतादिक अया केवली, अ-
 नुन्नव फल रस देख ललना ॥ आ० ॥ ४ ॥ नाजिराय कुलसंरुणो,
 मस्देवी सर हंस ललना ॥ रुषजदेव नित वंदिछे, ज्ञानविमल
 अवतंस ललना ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति श्री रुषजजिन स्तवनं ॥
 पठो जयवीरराय अर्धो कहेवुं, एक खमासमण देई इहा० श्री
 अजितनाथजी आराधनार्थ पैत्यवंदन करुं ॥

॥ अथ श्री अजितनाथ पैत्यवंदन ॥

शुदि वैशाखनी तेरशें, चविया विजयंत ॥ माह सुदि आ-
 ठमें जनमिया, बीजा श्री अजित ॥ माह शुदि नवमें सुनि अया,

पोषी इग्यारस ॥ उज्ज्वल उज्ज्वल केवली, थया अक्षय कृपारस ॥
 वैशाख शुक्ल पंचमी दिने ए, पंचम गति लह्या जेह ॥ धीर विमल
 कविरायनो, नय प्रणामें धरी नेह ॥ २ ॥ इति ॥ प्रवी नमोत्पुणं
 अरिहंतचे ॥ कही एक नवकारको काजसंग करके थुईनी गाथा
 कहै, इसी तरै सर्वत्र विधि करवी ॥ ॥ अथ श्रीय प्रारब्ध-
 ते ॥ अजित जिनपत्नीनो, देह कंचन जरीनो ॥ जत्रिक जन
 नगीनो, जेहथी मोह लीनो ॥ हुं तुज पद लीनो, जेम जल मां-
 दे मीनो ॥ नवि होय ते दीनो, ताहरे ध्यान पीनो ॥ १ ॥ इति
 अजित श्रीय ॥ ॥ अथ श्री शंजवनाथ चैत्यवंदन ॥
 सत्तम ग्रैवेयक शकी, चविया श्री शंजव ॥ फागुण सुदि आठम
 दिने, शुदि चवदशी अजिनव ॥ १ ॥ मृगशिरसासैं जलमीया,
 तणी पूनम संजम ॥ कार्तिक वदी पंचमी दिने, लहे केवल निरू-
 पम ॥ २ ॥ पंचमी चैत्रनी जजली ए, शिव पोहता जिनराज ॥
 ज्ञानविमल प्रजु प्रणमतां, सीजै सगला काज ॥ ३ ॥ इति चैत्य-
 वंदन ॥ ॥ अथ श्रीय प्रारब्धते ॥ जिन शंजव वारू, लं-
 ठने अश्व धारू ॥ जवजलनिधि तारू, कामगद तीव्र दारू ॥ सुर
 तरुपरी वारू, इसमाकाल सारू ॥ शिवसुखकिरतारू, तेहना
 ध्यान सारू ॥ १ ॥ इति श्रीय समाप्त ॥ ॥ अथ श्री अजि-
 नंदन चैत्यवंदन ॥ जयंतविमानशकी, चव्या, अजिनंदनराया
 ॥ वैशाख सुदि चोथे माघ, सुदि बीजे जाया ॥ साहा शुदि वारशे
 अहिय दिसक, पोष सुदि चउदश ॥ केवल शुदि वैशाखनी, आठमें
 शिवसुख रा ॥ चउथा जिनवरनें नमी ए, चउगति भ्रमण निवार
 ॥ ज्ञानविमल गणप्रति कहै, जिनगुणनो नही पार ॥ ३ ॥
 ॥ अथ स्तुति प्रारब्धते ॥ ॥ अजिनंदन वंदो, साम्यमाकंद
 कंदो ॥ नृप संवरनंदो, धर्षितशेष हंदो ॥ तमतिमिरदिणंदो, लंठने

वानरिंदो ॥ जस आंगल मंदो, सौम्य गुण सारिंदो ॥ १ ॥ इति
 श्लोक ॥ ॥ अथ श्रीसुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ आवां
 सुदि बीज चव्या, मेहलीने जयंत ॥ पंचमीगति दायक नमु,
 पंचम जिन सुमति ॥ शुदि वैशाखनी आठमें, जनम्या तिम संजं
 म ॥ शुदि नवमी वैशाखनी, निरुपम जस शमदम ॥ चैत्र इग्या
 रश ऊजली ए, केवल पासे देव ॥ शिव पाम्या तिणें नवमियें,
 नय कहे करो तस सेव ॥ १ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ ॥ अथ
 श्लोक प्रारच्यते ॥ सुमति सुमति आपे, दुःखनी कोमि कापै
 ॥ सुमति सुजन व्यापे, बोधिनं बीज व्यापै ॥ अविचलपदे आपे,
 जाप दीप प्रतापे ॥ कुमति कदही नावे, जो प्रज्जुध्यान व्यापे ॥
 १ ॥ इति श्लोक ॥ ॥ अथ श्रीपद्मप्रज्जु चैत्यवंदन ॥ ॥
 नवम त्रैवेयकथी चव्या, माहा वदि ठठदिवसे ॥ कांति
 वदि बारसे जनम, सुरनर सवि हरखै ॥ वदि तेरस संजं-
 म ग्रहे, पद्मप्रज्जस्वामी ॥ चैत्रीपूजम केवली, वलि शिवगति पामी
 ॥ मृगशिर वदि इग्यारसे, रक्तकमल सम वान ॥ नयविमल जिन
 राजनुं, धरियै निरमल ध्यान ॥ १ ॥ ॥ अथ श्लोक प्रारच्य
 ते ॥ पद्मप्रज्जु सोहावे, चित्तमां नित्य आवे ॥ सुगति वधूं म
 नावे, रक्त तनुं कांति फावे ॥ दुःख निकट नावे, संतती सौख्य
 पावे ॥ प्रज्जु गुणगण ध्यावे, अष्ट महासिद्धि आवे ॥ १ ॥ ॥ अथ श्री
 सुपार्थजिन चैत्यवंदन ॥ ठठा त्रैवेयकथी चवी, जिनराज सुपास ॥
 जादरवा वदि आठमें, अवनरिया खास ॥ जेठ शुक्र बारसो जण्यो,
 तस तेरसे संजंम ॥ फागुण वदि ठठ केवली, शिव लहे तस स
 तमि ॥ सत्तम जिनवर नामथी ए, साते इति समंत ॥ इति नविम
 ल सूरि नितु लहे, तेज प्रताप महंत ॥ १ ॥ ॥ अथ श्लोक
 प्रारच्यते ॥ फले कामित आशी, नामथी दुःख नाशे ॥ म

हिम महि प्रकाशे, सतिमा श्रीसुपासे ॥ सुरनर जस दास, संप
दानो निवाश ॥ गाय जवि गुणरास, जेहना धरी उद्धास ॥ १ ॥
इति ॥ ॥ अथ श्रीचंद्रप्रज्ञजिनचैत्यवंदन ॥ चंद्रप्रज्ञ जिन आ

ठमा, चंद्रप्रज्ञ शम देह ॥ अवतरीया विजयंतथी, वदि पंचमी चै
त्रेह ॥ पोष वैदि वारसें जनमिया, तस तेरसे साध ॥ फागुण व
दिनी सातमें, केवल निराबाध ॥ जाद्रव सातम शिव लह्या ए, पूरी
धूरण ध्यान ॥ अठ महसिद्धि संपजै, नय कहै जिनअभिधान ॥ २

॥ अथ शोच प्रारच्यते ॥ ॥ शुभ नरगति पामी, लयमें
धर्म धामी ॥ जिन नमो शिरनामी, चंद्रप्रज्ञ नाम रुचामी ॥ मुज
अंतरजामी, जेहमां नहिय खामी ॥ शिवगति बरगामी, रेहन
पुण्ये पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ सुविधनाथचैत्यवंदन ॥

गोरा सुविधि जिखंद नाम, वीजुं पुष्पदंत ॥ फागुण वदि न
वमें चव्वा, महेली सुर आनंत ॥ मृगशिर वदि पंचमे जण्या, तस
ठेठ दिक्षा ॥ काती शुदि त्रीजें केवली, दिखे बहु परें शिक्षा ॥ शु
दि नवमी जाइवां तणी ए, अजर अमर पद दोय ॥ धीर विमल
सेवक कहे, ए नमतां सुख होय ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ शो

थ प्रारच्यते ॥ सुविधि जिन जदंत, नाम बलि पुष्प-
दंत ॥ सुमंति तरुणि कंत, संतथी जेह संत ॥ कीयो कर्म
डरंत, लखि लीला वरंत ॥ जव जलधि तरंत, ते नमीजे
महंत ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीशीतलनाथचैत्यवंदन ॥

प्राणतकल्पमकी चव्वा, शीतल जिन दशमा ॥ वदि वैशाखनी ठ
है, जाणि दाघ ज्वर प्रशम्या ॥ माझा वदि वारस जनम दिख्या,
तस वारसें लीध ॥ वदि पोष चवदश दिने, केवली परसिद्ध ॥ व
दि बीजै वैशाखनी ए, मोक्ष गया जिनराज ॥ ज्ञानविमल जिन
राजथी, सीजे सगला काज ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ शोच

प्रारज्यते ॥ ॥ सुण शीतल देवा, वालही तुझ सेवा ॥ जेम
गज मन रेवा, तूही देवाधिदेवा ॥ पर आणव देवा, शम ठै नित्य
मेवा ॥ सुख सुगति लहेवा, हेतु डःस्क खपेवा ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीश्रेयांग जिनचैत्यवंदन ॥ ॥ अच्युतकल्पथकी
चव्या, श्रेयांग जिनंद ॥ जेठ अंधारी दिवस ठेठे, करत बहु आ
नंद ॥ फागुण वदि बारसे, जनम दीक्षा तस तेरस ॥ केवली माह
अमावशि, देशन चंदनरस ॥ वदि श्रावण त्रीजै लह्या ए, शिवसु-
ख अक्षय अनंत ॥ सकल समीहित पूरणो, नय कहै एजगवंत ॥ १ ॥
इति ॥ ॥ अथ श्रेय प्रारज्यते ॥ ॥ सवि जिन अवतंस,

जास इहागवंश ॥ विजित मदन कंश, शुद्ध चारित्र हंश ॥ कृतज्ञ
विध्वंश, तीर्थनाथ श्रेयांग ॥ वृषज ककुद अंश, ते नमं पुण्य वंश
॥ १ ॥ अथ श्रीवासुपूज्य चैत्यवंदन ॥ प्राणतथी इहां आविया,
ज्येष्ठ सुदी नवम ॥ जनम्या फागुण चौदशी, अमावशी संजम ॥
माह शुदि बीजै केवली, चौदशि आषाढी ॥ शुदि शिव पाम्या क
र्म कष्ट, सवि दूरे काढी ॥ वासुपूज्य जिन बारमा ए, विद्रुमरंगे
काय ॥ श्रीनयविमल कहे इसुं, जिन नमतां सुख आय ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रेय प्रारज्यते ॥ ॥ वासुदेव नृप तात, श्रीज
यादेवी मात ॥ अरुणकमल गात, महिष लंठन विख्यात ॥ जस
गुण अवदात, शीत ज्ञाणें निवात ॥ होय नित सुख गात, ध्याव
तां दिवस रात ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ विमलनाथ चैत्यवं
दन ॥ ॥ अठम कल्पथकी चव्या, माधव सुदि बारस ॥ शु
दि महा त्रीजै जण्या, तस चोर्थे व्रत रस, शुदि पोष ठेठे लह्या,
वर निर्मल केवल ॥ वदि सातमि आषाढनी, पाम्या पद अविचल
॥ विमल जिणेंसर वंदियै ए, ज्ञानविमल करी चित्त ॥ तेरसमो
जिन नितु दिये, पुण्य परिषल वित्त ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ

शोय प्रारज्यते ॥ विमलश्री जावे, वंदतां डख जावै ॥ नव
 निधि घर आवै, जिश्वमां मान पावै ॥ मुंघर लंगन कावै, ज्योमि
 जरस्वेदथावै ॥ मनु विनति जणावै, स्वामिनुं ध्यान ध्यावै ॥ १ इति ॥
 ॥ अथ श्रीअनंतनाथ चैत्यवंदन ॥ प्राणतश्चकी चविया उहां,
 आवण वदि सातम ॥ वैशाख वदि तेरसी, जनम्या चंवदसें व्रत ॥
 वदि वैशाखे चवदसि, केवल पुण्य पास्या ॥ चैत्र शुदि पंचमी
 दिने, शिववनिता काम्या ॥ अनंत जिनेश्वर चंदमाएं, कीथा ड
 ष्मन अंत ॥ ज्ञानविमल कहे नामश्री, तेज प्रताप अनंत ॥ १४ ॥
 ॥ अथ शोय प्रारज्यते ॥ अनंत जिन नमीजै, कर्मनी कोटि ठीजै ॥
 शिवसुख फल लीजै, सिद्धि लीला वरीजै ॥ बोधिबीज मोह दाजै,
 एटवुं काज कीजै ॥ मुंऊ मन अति रीजै, स्वामिनुं कार्य सीऊ ॥
 ॥ १॥ ॥ अथ धर्मनाथ जितचैत्यवंदन ॥ ॥ वैशाख सुदि
 सातमें, चविया श्रीधर्म ॥ विजयथकी साहमाशनी, शुदि त्रोजें
 जनम ॥ तेरसमाही ऊजली, लिये संजमजार ॥ पोषिपूनमें के
 वली, गुणना जंमार ॥ जेठी पांचम ऊजलीए, शिवपद पास्या
 जेह ॥ नय कहे ए जिन प्रणमतां, वाधे धर्म सनेह ॥ १५ ॥
 ॥ अथ शोय प्रारज्यते ॥ धर्म जिनपतीनो, ध्यानरसमांड
 जीनो ॥ वररमण सचीनो, जेहने वर्ण लीनो ॥ त्रिभुवन सुख
 कीनो, लंगने वज्र दीनो, नवि दोय ने दीनो, जेहने तूं वसीनो ॥
 ॥ १ ॥ ॥ अथ श्री शांतिनाथ चैत्यवंदन ॥ ज्ञाद्रव
 वदि सातम दिने, सब्बथी चविया ॥ वदि तेरस जेठे जण्या, डुः
 खदोहग शमीया ॥ जेठि चवदस वदि दिने, लीये संजम वेम ॥
 केवल ऊजलपोसनी, नवमी दिन खेम ॥ पंचम चक्री परवका ए
 शोलमा श्री जिनराज ॥ जेठ वदि तेरशें शिव लह्या, नय कहे सारो
 काज ॥ १६ ॥ ॥ अथ शोय प्रारज्यते ॥ जिनपति

जयकारी, पंचमो चक्रधारी ॥ त्रिभुवन सुखकारी, सस्र जय ई
वारी ॥ सहस्र चतुस्रि नारी, चतुद रत्नाधिकारी ॥ जिन शां
जीतारी, मोहे हस्ति मृगारी ॥ १ ॥ शुभ्र केशर घोली, मांहे क
पूर चोली ॥ पेहरी शीत पटोली, वासियें गंध धूली ॥ जरी पुष्प
पटोली, टाळीयें दुःख होली ॥ सवि जिनवर टोली, पूजियें जाव
लोली ॥ २ ॥ शुभ्र अंग इग्यार, तेम नपांग बार ॥ बलि मूल
सूत्र चार, नंदी अनुयोगद्वार ॥ दश प्रयत्न उदार, वेद खट वृत्ति
सार ॥ प्रवचन विस्तार, ज्ञाप्य निर्युक्ति सार ॥ ३ ॥ जय जय
जय नंदा, जैन दृष्टी सूरिंदा ॥ करै परमानंदा, टाळता दुःख धंदा ॥
ज्ञानविमल सूरिंदा, साम्य माकंदकंदा ॥ वर विमल गिरिंदा, ध्या
नधी नित्य जहा ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥
मोतीमानी देशी ॥ सकल समीहित सुरतस्कंदा, शांतिकरण
श्री शांतिजिणंदा ॥ साहिवा जिनराज हमारा, मोहना जिनराज
हमारा ॥ सा० ॥ त्रिकरण शुद्ध चरण तुज विलगो, पलक मात्र
न रहुं हिव अलगो ॥ सा० ॥ १ ॥ विलगो ते अलगो केम जाशे,
ठंमयो पण तुम्हे नवि ठंमाशे ॥ सा० ॥ प्रभु तुम्हे कोइशुं नेह न
लावो, वीतराग कही सवि समजावो ॥ सा० ॥ २ ॥ बीजा अवर
कहो एम समजे, पण गौरु दीधायी रीजे ॥ सा० ॥ बालकना
हठथी नवि चालै, जे मागे ते मावित्र आले ॥ सा० ॥ ३ ॥ जक्ति
खांची मनमांहे आणयो, सहज स्वजावें पण में जाणयो ॥ सा० ॥
माहरे एक प्रतिज्ञा साची, तुम पद सेवा अंके जाची ॥ सा० ॥
॥ ४ ॥ कबजे आब्या तो वृटीजे, जेह सुंद मागे तेहिज दीजै ॥
सा० ॥ अजेदपणे जो मनमां मलशो, कबजेथी प्रभु तो नीकल-
शो ॥ सा० ॥ ५ ॥ अस्कयजाव निधी तुम पाश, आपी दासनें
पुरो आश ॥ ज्ञानविमल सनकित प्रभुताई, दीधी साहव एह व

माई ॥ सा० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ ॥ अथ श्रीकुंभुनाथ चैत्य-
 वंदनं ॥ ॥ आवण वदि नवमी दिने, सब्बथी चविया ॥ वदि
 चवदश वैशाखनी, जिन कुंभु जणिया ॥ वदि पंचमी वैशाखनी,
 लीये संजमजार ॥ शुदि त्राजे चैत्रहतणी, लहे केवल सार ॥ प
 निवा दिन वैशाखनी ए, पाम्या अविचल ठाण ॥ ठा चक्री जय
 करू, ज्ञानविमल सुखखाण ॥ १७ ॥ ॥ अथ श्रोय प्रारज्यते ॥
 जिन कुंभु दयाला, ठाग लंठन सुहाला ॥ जज्ञ गुण शुभमाला,
 कंठे पेहरो विशाला ॥ नमति नबि त्रिकाला, मंगल श्रेणी माला
 ॥ त्रिजुवन तेजाला, ताहरे तेज माला ॥ १७ ॥ इति श्रोय ॥

॥ अथ श्रीअरनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ सरवारथश्री अविद्या,
 फागुण शुदि बीजे ॥ मृगशिर शुदि दशमी जणया, अरदेव नमी
 जे ॥ मृगशिर सुदि एकादशी, संजम आदरियो ॥ काती उज्जल
 वारसें, केवलगुण बरिष्ठ ॥ शुदि दशमी मृगशिरतणी ए, शिवपद
 लहे जिननाथ ॥ सातमचक्रां नमूं, नय कहे जोमी हाथ ॥ १८
 ॥ ॥ अथ श्रोय प्रारज्यते ॥ ॥ अरजिन ए जुहारूं, क
 र्मनो केश वारूं ॥ अहनिश संजारूं, ताहरो नाम धारूं ॥ कत ज
 यजयकारूं, प्राप्त संसार सारूं ॥ नवि होय ते सारूं, आपणो आप
 तारूं ॥ १८ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीमल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥
 चव्या जयंतविमानश्री, फागुण शुदि चतुर्थे ॥ मृगशिर सुदि दशमी
 रसें, जनम्या निग्रंथे ॥ ज्ञान लह्या एकरुण दिनें, कळयाणक तीन ॥
 फागुण शुदि वारसें, लहे शिव सदन अदीन ॥ मल्लि जिनेसर
 नीलमा ए, उगणीशमा जिनराज ॥ अणपरण्या अणभूपपद, नव
 जल तरण जिहाज ॥ १९ ॥ ॥ अथ श्रोय प्रारज्यते ॥
 जिन मल्ली महिला, वान बै जेह नीला, ए अचरज लीला, स्त्री
 पणें नाम पीला ॥ दुस्मन सवि पीडया, स्वामि जो बै वसीला ॥

अविचल सुखलीला, दीनिये सुण रंगीला ॥ १९ ॥ इति महि
 स्तुति ॥ ॥ अथ मुनिसुव्रत जिनचैत्यवंदन ॥ अपरा
 जितथी आयिया, आवण सुदि पूनम ॥ आठम जेठ अंधारमी,
 थयो सुव्रत जनम ॥ फागुण सुदि वारसें व्रत, वदि बारसें ज्ञान ॥
 फागुणानी तेम जेठ नवमी, कृष्णै निर्वाण ॥ वर्षा श्याम गुण उ-
 जला, तिहुयण करे प्रकाश ॥ ज्ञानविमलजिनराजना, सुरनरन-
 यक दास ॥ २ ॥ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ मुनिसुव्र
 तस्वामी हुं नमूं शीश नामी, मुऊ अंतरजामी कामदाता अका-
 मी ॥ दुःखदोहग वामी पुण्यथी शेव पामी, शम्भा सर्वदारामी
 राज्यता पूर्ण पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीनमिनाथचै
 त्यवंदन ॥ आशो सुदि पूनम दिने, प्राणतथी आया ॥ आ
 वण वदि आठम दिने, नमीजिनवर जाया ॥ वदि नवमी आपाढ
 नी, थया तिहां अणगार ॥ मृगशिर सुदि इग्यारसें, वर केवल
 धार ॥ वदि दशमी वैशाखनी ए, अस्कय अनंता सुस्क ॥ नय कहे
 श्रीजिन नामथी, नाशो दोहग दुःस्क ॥ १ ॥ ॥ अथ थोय प्रा
 रज्यते ॥ नमी जिनवर मानो, जेहं नही विश्वगानो ॥ सुत वप्रा मानो,
 पुण्यकेरो खजानो ॥ कनककमल बानो, कुंज ठे जे कृपानो ॥ स
 वि जुवन प्रमानो, तेहथुं एक तानो ॥ २१ ॥ ॥ अथ श्रीने
 मीनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ अपराजितथी आविया, कांसी वदि
 वारस ॥ आवण शुदि पंचमी जणया, थांदव अवतंस ॥ आवण
 सुदि ठे संजमी, आसोज अमावस नाण ॥ शुदि आपाढनी आ
 ठमें, शिवसुख लहे प्रमाण ॥ अरिठनेमो अणपरणीया ए, राजी
 मंतीना कंत ॥ ज्ञानविमलगुण एहना, लोकोत्तरवृत्त ॥ २२ ॥ इति
 ॥ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ गया शस्त्रागारे, शंख
 निज हाथ धारे ॥ कियो शब्द प्रचारे, विश्व कण्ठो तिवारे ॥ २३ ॥

संशय धारे, एहनी कौड़ सारे ॥ जयो नेमकुमारे, बालग्री ब्रह्मचा
रे ॥ १ ॥ चार जंबुद्वीपे, विचरंता जिनदेव ॥ अरु धातकीखंमे,
सुरनर सारे सेव ॥ अरु पुष्करअरधे, इणि परे वीश जिनेश ॥ सं
प्रति ए सोहे, पंच विदेह निवेश ॥ २ ॥ प्रवचन प्रवहण शम, ज
वज्रनिधिने तारे ॥ कोहादिक मोटा, मञ्जतणा जय वारे ॥ जिहां
जीव दयारस, सरस सुधारस दाख्यो ॥ जवि जाव धरीने चित्त करीने
चाख्यो ॥ ३ ॥ जिनशाशन सानिध्य, कारी विघन विमारे ॥ समकित
दृष्टी सुर, महिमा जास वधारे ॥ शेत्रुंजगिरि सेवो, जिम पामो ज
व पार ॥ कवि धीरविमलनो, शिष्य कहे सुखकार ॥ ४ ॥ इति ॥
॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ॥ रहो रहो रे यादव दो घ

नीयां, दो घनीयां दो चार घनीयां ॥ रहो रहो० ॥ मोज मझिरा
ए शिवादेवी जाया, तुमें गो आधार अरुवनियां ॥ रहो० १ ॥ ना-
ह विवाह चाह करी आए, क्युं जावत फिर रथ चनियां ॥ रहो०
२ ॥ पशुय पुकार सुणीय कीय करुणा, ठोरुदीए पशुपंखी चनियां
॥ रहो० ३ ॥ गोद विठानं में बली जानं, करुं वीनती चरणे प
नियां ॥ रहो० ४ ॥ पीयुं विन दीहा ते वरिस समोवरु, न गमे
स्वपनमें सेजनियां ॥ रहो० ५ ॥ विरह दिवानी विलपति जोवन
वामी वन घर सेरनियां ॥ रहो० ६ ॥ अष्ट जवांतर नेह निजाव
त, नवमें जव ते वीठनीया ॥ रहो० ७ ॥ सहसावनमांहे स्वामी
सुणीने, राजुल रेवतगिर चनियां ॥ रहो० ८ ॥ पीयु करे निज
शिरे हाये देवा, व्रत चाखे चारित्र सेलनियां ॥ रहो० ९ ॥ जादव
वंश विजुपण नेमजी, राजुल मीठी वेलनियां ॥ रहो० १० ॥ ज्ञान
विमल गुणे दंपती निरखत, हरखत होत मेरी आंखनीयां ॥ रहो०
११ ॥ इति पदं ॥ ॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ कृष्ण धौध चैत्रहतणी, प्राणतथी आया ॥ पोय वदिदशमी ज-

नम, त्रिभुवन सुख पाया ॥ पोष यदि इंग्यारसें, लहै मुनिवर पंथ ॥
 कमठासुर उपसर्गनो, टाढयो पलीमंथ ॥ चैत्र कृष्ण चोग्रह दिनें
 ए, ज्ञानविमल गुण नूर ॥ आवण शुदि आठमें लेह्या, अविचल
 सुख नरपूर ॥ २३ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीय प्रारंभते ॥ जलधर
 अनुकारे, पुण्यवल्ली वधारे ॥ कृत सुकृत संचारे, विघनने जे विना
 रे ॥ नवनिधि आगारे, कष्टनी कोमि वारे ॥ मुळ प्राणाधारे, मान
 वामा मढ्हारे ॥ १ ॥ अरं जनम सुहावे, वीर चारित्र पावै ॥ अ
 तुजव लय लावै, केवलज्ञान पावै ॥ षट् जे कट्याण, संप्रति जे
 प्रमाणे ॥ सवि जिनवर ज्ञाण, श्रीनिवासाहि ठाण ॥ २ ॥ दशवि
 धि आचार, ज्ञानना जिहां विचार ॥ दश सप्त प्रकार, पञ्चस्का
 णादि विचार ॥ मुनि दश गुणधार, जे जथा जिहां उदार ॥ ते
 प्रवचन सार, ज्ञानना जे आगार ॥ ३ ॥ दश दिशी दिशिपाला,
 जे महा लोगपाला ॥ सुरनर महिमाळा, शुद्धदृष्टी कृपाला, नयवि
 मल विशाला, ज्ञान लक्ष्मी मयाला ॥ जय मंगलमाळा, पास नामे
 सुखाला ॥ ४ ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ॥ थारे मा
 थे पंचरंगी पांग सोनानो ठोगलो मारुजी ॥ प्रभु पास जिनेसर
 भुवन दिनेसर संकरो, साहिवजी ॥ लीला अलवेसर धीरममंदिर
 भूधरो ॥ साहिवजी ॥ तुं अगम अगोचर कृत शुचि सुंदर संवरो,
 सा० ॥ पद नमित पुरंदर तनुबवि निरमल जलधरो ॥ सा० १ ॥
 तूं अक्षय अरूपी ब्रह्म सरूपी ध्यानमां, सा० ॥ ध्याये जे जोगी
 तुम गुण जोगी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ व्यवहार प्रकाशी निश्चय वासी
 निजमते, सा० ॥ जिन आतम दर्सेसी अमल अजेसी नयमते ॥
 सा० २ ॥ षट् दर्शन ज्ञासे युक्ति निरासे शासने, सा० ॥ स्याद-
 वाद विशाले सहज समाजे जावने ॥ सा० ॥ तूं ज्ञानने ज्ञाने
 आतमध्याने आतमा, सा० ॥ परमाणम वेदी जेद अजेद नही त

मा ॥ सा० ३ ॥ एक अनेके बहुत विवेके देखिये, सा० ॥ आत
 म तत्कामी अगुण अकामी देखिये ॥ सा० ॥ तवि गुण आरा
 मी ठो बहुनामी ध्यानमां, सा० ॥ आपे गतनामी अंतरजामी ज्ञा
 नमा ॥ सा० ४ ॥ तूं अनियतचारी नियत विचारी योगमां, सा०
 ॥ अध्यांतम सेली ऐम बहु फेली आगमें ॥ सा० ॥ तूं धर्म सन्या
 सी सहज विलासी समगुणें, सा० मोहारि विनाशी तूं जितका
 शी कवि जणे ॥ सा० ५ ॥ ज्ञानदर्शनदायक गुणमणी लायक
 नाथ ठै, सा० ॥ दुर्गति दुःखघायक गुणनिधि दायक हाथ ठै ॥
 सा० ॥ जित मनमथ सायक त्रिजुवन नायक रंजणो, सा० ॥ अ
 नेकांती एकांती तूं वेदांती अगंजणो ॥ सा० ६ ॥ ध्यानानल योगें
 पुढगल जोगें ते दह्या, सा० ॥ अंतररिपु हणिया मूलथी खणिया न
 वि रह्या ॥ सा० ॥ तूं हेतू समीयो सुरवर नमीयो सहु
 कहे, सा० ॥ ए जगथी न्यारो चरित्र तुमारो कुण लहे ॥ सा०
 ७ ॥ इम तुम गुण शुणियें कर्मने हणिये पलकमां, सा० ॥
 पण नवि अवगणियें सेवक गणिये ललकमां ॥ सा० ॥ वामाचे
 नंदा त्रिजुवन इंदा संयुणे, सा० ॥ ज्ञानविमल सूरिंदा तुम पय
 वंदा गुण जणे ॥ सा० ॥ ८ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीवर्द्धमान
 जिनचैत्यवंदन ॥ शुदि आषाढ ढढ दिवसें, प्राणतथी चवि
 था ॥ तेरस चैत्रह शुदि दिने, त्रिसदार्थें जणिया ॥ मृगशिर वदि
 दशमी दिने, आपे संजम आराधै ॥ शुदि दशमी वैशाखनी, वर
 केवल साधै ॥ काती कृष्ण अमावशी ए, शिवगति करै ज्योत ॥
 ज्ञानविमल गौतम लहै, पर्व दीपोत्सव होत ॥ २४ ॥ इति ॥
 ॥ अथ श्रौच प्रारब्धते ॥ लह्यो जवजल तीर, धर्म कोटीर
 दीर ॥ दुरति रज समीर, मोह मूसार सीर ॥ दुरित दहन नीर,
 माण ॥ कर्पें सगं कर पणसय धणु माणुं. सासय असासय

मेरुषी अधिक धीर ॥ चरम श्रीजिनवीर, चरण कटपट्ट कीर ॥
 ॥ १ ॥ इम जिनवर माला, पुण्य नीर प्रवाला ॥ जगजंतु दयाला,
 धर्मनी शास्त्रशाला ॥ कृत सुकृत सुगाला, ज्ञानलीला विशाला ॥
 सुरनर महिपाला, वंदता है त्रिकाला ॥ २ ॥ श्रीजिनवर वाणी,
 द्वादशांगी रचाणी ॥ सुगुण रयणखाणी, पुण्य पीयूष पाणी ॥ न-
 वम रस रंगाणी, सिद्धि सुखनी नीसाणी ॥ डह पीलण घाणी,
 सांजलो ज्ञाव जाणी ॥ ३ ॥ जिनमत रखवाला, जे वली लोगपा-
 ला ॥ समकित गुणवाला, देव देवी कृपाला ॥ करो मंगलमाला,
 टालीने मोहहाला ॥ सहज सुख रसाला, बोध दीजै विशाला ॥
 ॥ ४ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ आज गइ श्री हुं समव-
 सरणमें ॥ ए चाल ॥ वंदो वीर जिनेसरराया, त्रिशलामाता
 जाया जी ॥ हरि लंगन कंचन सम काया, मुऊ मनमंदिर आया
 जी ॥ वंदो वी० ॥ १ ॥ दूषम समर्थे शासन जेहना, शीतल चं-
 दन ठाया जी ॥ जे सेवता जविजन मधुकर, दिन२ होत सवाया
 जी ॥ वंदो० २ ॥ ते धन्य प्राणी सदगति जाणी, जस मनमां-
 जिन आया जी ॥ वंदन पूजन सेवन कीघी, ते काजननी माया
 जी ॥ वंदो० ३ ॥ कर्म कठिन जेदन बलवत्तर, वीर विरुद्ध जिन
 पाया जी ॥ एकलमल अतुलीबल अरिहा, उत्तमन डुर गमाया
 जी ॥ वंदो० ४ ॥ वंछित पूरण, संकट चूरण, मातपिना तूं सहा-
 या जी ॥ सिंहपरे चारित्र आराधी, सुजस निशान वजाया जी ॥
 वंदो० ५ ॥ गुण अनंत जगवंत विराजै, वर्द्धमान जिनराया जी
 ॥ धीरविमल कवि सेवक नय कहै, शुद्ध समकित गुणदाया जी
 ॥ वंदो० ६ ॥ इति ॥ इहां पूरण जयवीरराय कहेवो ॥
 ॥ अथ श्री शाश्वता अशाश्वता जिन चैत्यवंदन ॥ सकल
 मंगलकार एही, सिद्ध सकल पय ठाण ॥ स्याद्वाद साधन पद एही,

अध्यात्म गुणघाण ॥ १ ॥ (सही ए नमो जिनाणं) २ (ए
 आकणी) विहंतरे लख सगकोमि जवणवई, सासय जिना
 हर माणं ॥ तेरशें नव्याशी कोमी, सगसठ बिंबह परिमाणं ॥
 सही ० ॥ ३ ॥ मेरु वैताळ्य वस्कारा कंचन, यमरु कुंम डह जाणुं ॥
 एकत्रीश ओगण्यासी जिनवर, मानवलोके वखाणुं ॥ स० ॥ ४ ॥
 त्रिलख इक्याशी सहस चारसो, ज्यासी अधिक बिंब जाणुं ॥ रुच
 क कुंमल नंदीसर प्रमुखें, सुंदर अशी चेइयाणुं ॥ स० ॥ ५ ॥ अरु
 शत सय सहस चालोसा, बिंबतणुं परिमाणं ॥ सरवाले वत्तीससैं
 गुणसठी, तिर्यक्लोके चेइयाणं ॥ स० ॥ ६ ॥ प्रतिमा त्रण लख
 सहस एकाणुं, चव सय तेवीस परिमाणं ॥ साठ चौवारा अवर
 त्रिवारा, रुचक कुंम नंदी ठाणं ॥ स० ॥ ७ ॥ बार देवलोके नव
 ग्रैवेयके, अनुत्तर पंच विमाणं ॥ लाख चोराशी सहस सत्ताणुं, त्रे
 वीश चेइ जाणुं ॥ स० ॥ ८ ॥ एकसो बावन कोमि लख चोराणुं,
 सहस चमालीस आणुं ॥ सातशें साठ ऊपर उर्दलोके, जिन प-
 मिमा मन आणुं ॥ स० ॥ ९ ॥ त्रिचुवनमांहे सासय जिनहर,
 सगवन्न लख बसैं व्यासी ॥ आठ कोमि अथ प्रतिमा संख्या, सु
 एजो समकितवासी ॥ स० ॥ १० ॥ पन्नरशें कोमी, बेतालीश
 कोमी, तेम अठावन्न लखा ॥ ठत्रीश सहस अशी वलि साधिक,
 सासयबिंबनी संख्या ॥ स० ॥ ११ ॥ एकसो वीश त्रिवारे प्रति
 मा, चोमुखें शत चौवीश ॥ पांच सत्ता तिहां, साठ वधारो, एकश
 त अशी जगीश ॥ स० ॥ १२ ॥ रुषज चंडानन नें वर्द्धमान, वा
 रिखेण चव नामे ॥ व्यंतर ज्योतिषी मांहे असंख्या, जिनघर पमि
 मा माने ॥ स० ॥ १३ ॥ सकल सुरासुर जावना जावै, समकि
 तगुण दीपावै ॥ परिच संसार करी शिव जावै ॥ कुमति ते मन
 जावै ॥ स० ॥ १४ ॥ पाताले ने तिर्यक्लोके, पणसय धणु परि

ज्ञाण ॥ सं० ॥ १५ ॥ तीर्थ विशेष वली शासय विष्णु; सेत्रुंजादि
 कं बहुला ॥ ते सविहूने त्रिविधे नमतां, पातक जाये संगला ॥
 सं० ॥ १६ ॥ ज्ञानविमल प्रभु नाम जपंता, लहिये कोनि कळ्या
 ण ॥ मनहं मनोरथ संगला सीऊ, जंनम सफल सुविदाण ॥ सं०
 ॥ १७ ॥ जयहरं जगवन्ताणं जयचतुर, नमो जिणाणं सही ए ॥
 नमो अविचल आदिगराणं, सही ए नमो अरिहंताणं ॥ सही० ॥
 ॥ १८ ॥ इति श्री सर्व जिन नमस्कारः ॥ इहां एक लोग
 स्सको कान्तसग चंदेसुनिम्मलयरा सूर्यी एक जण करे, ते कान्तस
 ग पारी पठी चार थोथो कहेवी ते लखिये ठिये ॥
 ॥ अथ थोथ प्रारज्यते ॥ रुषजदवे नमुं गुण निर्मला, डुध
 मांहे जिम जेखी सीतोपला ॥ विमल शीलतणा सिणगार ठे,
 जव२ मुज्जने चित्ते रुचै ॥ १ ॥ जेह अनंत थया जिन केवली,
 जेह हसे विचरंता जे वली ॥ जेह असासय सासय त्रिहुं जंगे,
 जिन पदिमा प्रणमुं नित जगमगे ॥ २ ॥ सरस आगम कीर
 महोदधी, त्रिपदी गंग तरंग करी वधी ॥ जविक देह सदा पावने
 करे, डुरित तापर जोमल अपहेरे ॥ ३ ॥ जिनपशासन आसन
 कारिकां, सुर सुरी जिनआणा धारिका ॥ ज्ञानविमल प्रभुताये
 दीपता, डुरित डुष्टतणा जय जीपता ॥ ४ ॥ इति शाश्वत अशा
 श्वत जिनस्तुति ॥ ॥ अथ विधिः ॥ इहां एक जण
 मोटो शांति कहे (अने) बीजां सर्व कान्तसगमां सांजलै ॥
 पठी सर्व जणा कान्तसग पारीने प्रगट एक लोगस्स पूरो कहे ॥
 पठी बैसीने एकवीश नवकार प्रगटपणें सर्व जण गणे, पठी सर्व
 जण मुखअंकी आवी राते कहे-श्रीशेत्रुंजायनमः १ श्री पुंरुरीका
 यनमः २ श्रीसिद्धकोत्रायनमः ३ श्रीविमलाचलायनमः ४ श्री
 सुरगिरयेनमः ५ श्रीमहागिरयेनमः ६ श्रीपुण्यराशयेनमः ७ श्री

पर्वतायनमः ८ श्रीपर्वतैश्वर्यायनमः ९ श्रीमहातीर्थायनमः १० श्री
 शाश्वतायनमः ११ श्रीदृढशक्तयेनमः १२ श्रीसुक्तिनिलायनमः १३
 श्रीपुष्पदंतायनमः १४ श्रीमहापद्मायनमः १५ श्रीपृथ्वीपीठाय
 नमः १६ श्रीसूरजगिरयेनमः १७ श्रीकेलाशगिरयेनमः १८ श्री
 पातालमूलायनमः १९ श्रीअकर्मकत्रेयनमः २० श्रीसर्वकामपूरणा
 यनमः २१ ॥ ए सिद्धगिरीनां २१ नाम सर्वने मुखे प्रगट कहीने
 पठे पांचतीर्थना पांच स्तवन कहवा ते लखिये ठिये ॥

॥ प्रथम सिद्धगिरी स्तवन ॥ ॥ साहेलडीयानी देशो ॥
 नीलनी रायणतरुतले, साहेलनियां ॥ पीलनी प्रभुजीनां
 पांथ, गुणमंजरीया ॥ ऊजले ध्याने ध्याइये, सा० ॥ एहीज मुग
 ति उपाय ॥ गु० ॥ १ ॥ शीतनी ठायीये बैसीये, सा० ॥ रातमो
 करी मनरंग ॥ गु० ॥ नाही धोई निर्मल अई, सा० ॥ पहरी व
 खादिक चंग ॥ गु० ॥ २ ॥ पूजीये सोवन फूलमे, सा० ॥ नेह
 धरीने एह ॥ गु० ॥ ते त्रीजे जवे गिव लहे, सा० ॥ घाथे निर्म
 ल देह ॥ गु० ॥ ३ ॥ प्रीति धरी प्रदक्षणा, सा० ॥ दीए एहने जे
 सार ॥ गु० ॥ अन्नंग प्रीति होए जेहने, सा० ॥ जवश तुम आ
 धार ॥ गु० ॥ ४ ॥ कुसुम पत्र फल मंजरे, सा० ॥ शाखा अम
 ने मूल ॥ गु० ॥ देवतणा वासाअछै, सा० ॥ तीरअने अनुकूल ॥
 ॥ गु० ॥ ५ ॥ तीरथ ध्यान धरी मने, सा० ॥ सेवो एहने उठाह
 ॥ गु० ॥ ज्ञानविमल गुरु ज्ञाखियो, सा० ॥ शत्रुंजा महातम
 मांहि ॥ गु० ॥ ६ ॥ इति श्रीशत्रुंजा स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीगिरिनारतीर्थ स्तवनं ॥

देखी कामनी दोय के कामे व्यापियो, होलाप कामें ॥ ए
 चाल ॥ नेम निरंजन देव के सेव सदा करूं, हो लाल के ॥ सेव ॥

अद्विज ताहं ध्यान के दिल मांहे धरू हो जावें, दि० ॥ शंख
 लंठन गुणखाण के अंजन वान वै हो लाल के अ० ॥ राजिम-
 हीना कंत के परया विणुअ वै हो० प० ॥ १ ॥ तूहीज जीवन-
 प्राण के आतमराम वै हो० आ० ॥ मांहे परम आधार के ताहं
 नाम वै हो० ता० ॥ समुद्रविजयना नंदन नितु नितु वंदता हो०
 नि० ॥ कीजाये करुणावंत के कर्मनिकंदना हो० क० ॥ २ ॥
 जोत्या मनमय राज रही गढ ऊपर हो० र० ॥ पहरी शील
 सनाइ उदास ऐसी धरै हो० ऊदा० ॥ सवि जिनवरमां स्वामि
 तुझे अधिकुं करयुं हो० तु० ॥ कुम्हरपणे धरी धोरु महाव्रत
 उचरयुं हो० मा० ॥ ३ ॥ आठ जवांतर नेह जे तेह लवेखीनें
 हो० ते० ॥ करुणा कीधी केवल पशुवां देखीने हो० पशु० ॥
 पूरण पाखी प्रीत वली निज नारने हो० व० ॥ आपी संजमनार
 पहोचामी पारमें हो० प्रो० ॥ ४ ॥ जण जणगुं जे प्रीत करे ते
 जन धणा हो० करे० ॥ निरवाहे धरी नेह के ते बिरला सुएया
 हो० ते वि० ॥ राजमतीनो कंत वखाणे कविजना हो० व० ॥
 तुझे तो दीधा ठेह के तेहना अिर मना हो० ते० ॥ ५ ॥ जाद-
 वनाअ सनाअ करो मुऊनें सदा हो० क० ॥ द्विज सुऊ शिर हाथ
 होवे जेम संपदा हो० हो० ॥ जलिर मरे पतंग दीवाने मन नंदी
 हो० दी० ॥ नाणे मन असवार घोरो दोने सही हो० घो० ॥ ६ ॥
 सबदा साथै प्रीत निबलनें नवि कही हो० नि० ॥ धिण लागी
 जे थोकी किहां जाये वही हो० कि० ॥ जे सज्जनसुं होय ते नीनि-
 न मंजीये हो० नी० ॥ तुमचा मुनि ज्यारे होए तो कर्मन
 मंजीये हो० क० ॥ ७ ॥ तो इसमन होय दूर कोणे नवि
 मंजीये हो० को० ॥ प्राणाधार प्रवित्र के दूरशन दीजीजे हो०
 द० ॥ ज्ञानविमल सुख पूर मलीनें कीजाये होला० म० ॥

॥ ८ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीआबूतीर्थ स्तवन ॥

॥ चालो चालोने राज गिरधर रमवा जइयै ॥ ए चाल ॥
 ॥ आवो आवोने राज श्रीअर्बुद गिरिवर जइयै ॥ श्रीजिनवरनी
 जक्ति करीने, आतम निर्मल थइये ॥ आवो० ॥ विमलवसीना
 प्रथम जिनेसर, मुख निरखे सुख पइयै ॥ चंपक केतकी प्रमुख
 कुसमवर, कंठे टोकर ठविये ॥ आ० ॥ १ ॥ जिमणें पासे लूणग
 वसही, श्रीनेमीसर नमिये ॥ राजीमतीवर नयणे निरखी, दुःख दो
 हग सवि गमिये ॥ आ० ॥ २ ॥ सिद्धाचल श्रीरूपज जिनेसर, रैवत
 नेम समरिये ॥ अरे दो वसीनी यात्रा करतां, बिहुं तीरथ चित्त धरिये ॥
 आ० ३ ॥ मंरुप मंरुप विविधि कोरणी, निरखी हियमै ठरियै ॥
 श्रीजिनवरना बिंब निहाली, नरजव सफलो करिये ॥ आ० ४ ॥
 अविचलगढ आदीश्वर प्रणमी, अशुज्जकरम सब हरिये ॥ पाश शां
 ति निरखी जब नयणें, मन मोह्यो मुंगरीयें ॥ आ० ५ ॥ पाजे
 चढतां उजम बाधै, जेम धोमे पाखरीयें ॥ सकल जिनेसर पूजी के
 शर, पापपरुल सवि हरियें ॥ आ० ६ ॥ एकल ध्यानें प्रभुनें ध्या
 तां, मनमांहे नवि रुखिये, ज्ञानविमल कहै प्रभु सुपशायें, सकल
 संघ सुख करियें ॥ आ० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअष्टापद गिरि स्तवनं ॥

॥ अष्टापदगिरि यात्रा करणकुं, रावण प्रतिहरी आया ॥ पु
 ष्पक नामें विमाने बैशी, मंदोदरी सुहाया ॥ १ ॥ श्रीजिन पूजियें
 लाल, समकित निर्मल कीजै ॥ नयणे निरखी हो लाल, नरजव
 सफलो कीजै ॥ हीयमै हरखी लाल, समता संग करीजै ॥ (आ
 कणी) चउमुख चउगति हरण प्रशार्दे, चउवीशैं जिन बैग ॥ च
 नुदिशि सिंहासन सम नाशा, पूरव दिशि दोग्य जिण ॥ श्री० २ ॥

॥ संजव आदे दक्षिण चारे, पश्चिमे आठ सुपासा ॥ धर्म आदि न
 तरदिशि जाणो, एवं जिन चववीशा ॥ श्री० ३ ॥ वैठा सिंदतणे
 आकारै, जिनहर जरते कीधा ॥ रयणविंव मूरत आपीनं, जग ज
 शवाद प्रमिद्धा ॥ श्री० ४ ॥ करे मंदोदरी राणो नाटक, रावण
 तांत वजावै ॥ मादल वीणा ताल तंबूरो, पगरव ठमठमकावै ॥
 श्री० ५ ॥ जक्तिजावें एम नाटक करतां, तूट तंत विचालै ॥
 सांधी आप नसा निजकरनी, लघुकलासुं ततकालें ॥ श्री० ६ ॥
 द्रव्य जावशुं जक्ति न खंसी, तो अक्षयपद साध्युं ॥ समकित सुर-
 तरु फल पामांनै, तर्थाकर पद लाध्युं ॥ श्री० ७ ॥ इणि परे ज
 विजन जे जिन आगें, बहुपरे जावनाजावें ॥ ज्ञानविमल गुण ते
 दना अदनिश, सुरनर नायक गावै ॥ श्री० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीसमेतशिखर स्तवनं ॥

॥ समेतशिखरगिरि जेटीये रे, मेटवा जवना पास ॥ आत्त
 मसुख वरवा जणी रे, ए तीरथ गुण निवास रे ॥ जवियां
 सेवो तीरथ एह, समेतशिखर गुणगेह रे ॥ जवि० से० १ ॥ (आंक
 णी) समेतशिखर कलपें कह्यो रे, वीश ठुंरु अधिकार ॥ वीश ती
 र्थाकर शिव वर्या रे, बहु मुनिने परिवार रे ॥ ज० से० २ ॥ सि
 ष्केत्र मांहे वस्या रे, जाखे नय व्यवहार ॥ निश्चय निज स्वरूप-
 मारे रे, दोय नय प्रज्जुजीना साररे ॥ ज० से० ३ ॥ आगमवचन वि
 चारतां रे, अति दुर्गम नय वाद ॥ वस्तु तत्व जिणे जाणिये रे, ते
 आगम स्याद्वाद रे ॥ ज० से० ४ ॥ जयरथरायनणी परे, जात्रा
 करो मनरंग ॥ जवडुःखने देइ अंजली रे, आर्ये सिद्धवधूनो संग रे
 ॥ ज० से० ५ ॥ समकितयुत यात्रा करे रे, तो शिव हेतु आय
 ॥ जवहेतु किरिया त्यागश्री रे, आतमगुण प्रगटाय रे ॥ ज० से०
 ६ ॥ जेह समें समकित अयो रे, तेह समये होय नाश ॥ ज्ञान

विमल गुरु ज्ञाखियो रे, आवश्यकज्ञाप्यनी वाण रे ॥ जठ मे०
॥ ७ ॥ इति चौमाशी देववन्दन विधि ॥

॥ अथ श्रीपर्युषणयर्व स्तुति ॥

॥ सत्तरजेदी जिन पूजा रचीनें, स्नात्र महोच्चव कीजै जी
॥ होख दमांमा जेरी नफेरी, ऊल्लरि नाद सुणीजैजी ॥ वीरजिन
आगल ज्ञावना ज्ञावी, मानवजव फल लीजै जी ॥ परव पजूसण
पूरव पुन्ये, आया इम जाणीजै जी ॥ १ ॥ आस पास वज्र द-
शम ड्वालश, चत्तारी अठ कीजै जी ॥ ऊपर वलि दश दोय क-
रीनें, जिन चौवीश पूजीजै जी ॥ वरुाकळनो ठठ करीनें, वीर-
वखाण सुणीजै जी ॥ परवानें दिन जन्म महोच्चव, धवल मंगल
वरतीजै जी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगे अमार पलावो, अठमनुं
तप कीजै जी ॥ नागकेतुनी परै कैवल लहियै, जो शुज ज्ञावै
रहेये जी ॥ तेलावर दिन त्राय कळयाणक, गणधरवाद वदीजै
जी ॥ पास नेमीसर अंतर त्रीजै, रुपज चरित्र सुणीजैजी ॥ ३ ॥
वारशें सूत्र नें समाचारी, संवत्सरी पम्किमियें जी ॥ चैत्यप्र-
वानी विधिसुं कीजै, सकल जंतुनें स्वामीजै-जी ॥ पारणानें दिन
मामीवन्नल, कीजै अयिक वरुाई जी ॥ मानवजय कहे सकल
मनोरथ, पूरो देवी सिद्धाई जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नेमनाथजीको बारामासो ॥

॥ सीयाले खाटू जली रे लाल ॥ ए चाल ॥ ॥ तोर-
णश्री रथ फेरीयो रे लाल, नीतुर नेमकुमार ॥ प्रेम विलूधी पद-
मणी रे लाल, वीनवै राजुलनार ॥ हो रंगीला नेम सुण माहरी
अरदाश ॥ १ ॥ सहीवांसुं राजुल कहे हो लाल, मगसिर नावो
पीठ ॥ प्रीतम तिन हिव माहरो हो लाल, धीरज न धरै जीव ॥
हो २ ॥ पोस महीनो आवियो हो लाल, आयो मो डुख-दैण ॥

नो सूरतने सांवला हो लाल, देखण तरसै नैण ॥ हो० ३ ॥
 माहमहीने सी पमे हो लाल, प्रीत संग पांढै नारी ॥ प्रीतम वि
 ण हूं एकली रे लाल, केम रहूं निरधार ॥ हो० ४ ॥ होली खेले
 हेतसुं हो लाल, फागुणमें नर नारी ॥ हुं किणसुं खेलूं हिवे हो
 लाल, पाश नही जरतार ॥ हो० ५ ॥ चेतमहाने चाढ़णी रे ला
 ल, संजोगण सुख दैण ॥ विरहणनै वालम विना रे लाल, रोवत
 जावै रैण ॥ हो० ६ ॥ वनहरिया वैशाखमें रे लाल, मांजर रही
 महकाय ॥ अरज सुणी अवला तणी हो लाल, तपत मिटावो
 आय ॥ हो० ७ ॥ जेठ तपे लू आकरो हो लाल, दाऊ कोम
 लगात ॥ ससनेही साहिब विना हो लाल, कुण पूवै सुऊ
 चात ॥ हो० ८ ॥ आसादे काली घटा हो लाल, ऊनमि आयो
 मेह ॥ कंत मिट्या निज नारसुं रे लाल, धरती मिलिया मेह ॥
 हो० ९ ॥ ए ॥ श्रावण चमके दामनी हो लाल, घन वरसे ऊमला-
 ॥ १० ॥ काली कालाहण मिलो हो लाल, जाइवमै वर खंत ॥
 अरज सुणीनै साहिवा हो लाल, पूरो सो मन खंत ॥ हो० ११ ॥
 आसोजै आंसू ऊरै हो लाल, नाह विना निसदीश ॥ सार न
 पूवो साहिबे हो लाल, राखि रह्यो मन रीश ॥ हो० १२ ॥
 काती दृढ गाली करी हो लाल, जाय मिली गिरनार ॥ देखी मुख
 निज नाहनो हो लाल, सफल गिणो अवतार ॥ हो० १३ ॥
 संयम ले पित्र सेंहथे हो लाल, पामे जवनो पार ॥ इण पर पाले
 प्रीतनी हो लाल, घन ९ ले नर नारि ॥ हो० १४ ॥ जे कीधी
 यशु ऊरै हो लाल, मो पर करज्यो देव ॥ चंद जणो द्यो करि
 दया हो लाल, प्रजु चरणारी सेव ॥ हो० १५ ॥ इति श्रीनेम
 राजुल वारेसासो संपूर्ण ॥

॥ अथ आदिजिन आरती ॥

अपठरा करतो आरती जिन आगै, हारे जिन आगे रे जिन
आगै, हारे ए तो अविचल सुखमा मागै, हारे नात्तीनंदन पाश ॥
॥ अप० ॥ १ ॥ ताथेई नाटक नाचती पाय ठमकै, हारे दोय च-
रणे जांजर जमकै ॥ हारे सोवनना घूघरो घमकै, हारे लेती फूड-
न। बाल ॥ अप० ॥ २ ॥ ताल मृदंग ने वांशल। रुफ वीणा, हारे
रूमा गावंती स्वर जोणा ॥ हारे मधुर सुरासुर नयणां, हारे जो-
ती मुखसुं निहाल ॥ अप० ॥ ३ ॥ धन्य मरुदेवी मातनें प्रभु जा-
या, हारे तोरी कंचनवरणी काया ॥ हारे मे तो पूरव पून्ये पाया,
हारे तोरो देख्यो दीदार ॥ अ० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन परमेश्वर प्रभु
प्यारो, हारे प्रभु सेवक हूं तुं तारो, हारे जवोजवना डुखमा
वारो, हारे तुमे दीनदयाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ सेवक जाणी आपणो
चिन्त घरजो, हारे मोरी आपदा सवली हरजो ॥ हारे सुनि मा-
णक सुखिल करजो, हारे जाणी पोतानुं बाल ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ नेम राजोमती सिंहाय ॥ देशो उमादे भट्टीयाणोरी ॥

पहली तो समरुं हो सिद्ध बुद्धी दाता सारदा, लागुं गुरां
रे पाय ॥ प्रभुगुण गास्यां हो नेमीसर साहिव जिनतणा, सुजमत
आपो मोरी माय ॥ १ ॥ सोरपुरहुंतो हो नेमीसर साहिव ये
चढ्या, जान करी याडाय ॥ हमतो तो सिणगारया हो नेम सर
साहिव ये जला, घोरलांरी गिणती न काय ॥ २ ॥ वाजा तो अ-
धिका हो नेमीसर साहिव वाजता, आया तोरण बार ॥ सहिल
चढीने हो राजुल जोवे हरखसुं, मनमांहे हरख अपार ॥ ३ ॥
आंख फरुके हो सहेली मारी जीमणी, फिरताइ दीसे वै जरता-
र ॥ वानो तो जरीयो हो नेमीसर साहिव जीवनो, पशुवाणी
पुर्णी रे पुकार ॥ ४ ॥ ऊत्तो तो रथनें हो नेमीसर साहिव राखी-

यो, ए पशु बांध्या है किण काज ॥ गोरो तौ होसी हो नेमीसर
 साहिब तुमतणो, सारथी कहे है महाराज ॥ ५ ॥ थोमा तो
 सुखनें हो इण राजुल नारीरे कारणें, होसी हो जीवानो संहार ॥
 जीव बंध्याने हो नेमीसर साहिब गोमियां, जीव सवे तिण वार
 ॥ ६ ॥ अणपरणो राजुल हो नेमीसर साहिब गोमने, जाय
 चढ्या गिरनार ॥ आवे तो करमांसुं हो नेमीसर साहिब जीतवा,
 लीधो संजमजार ॥ ७ ॥ राजुल तो जूरे हो नेमीसर साहिब
 एकली, जल विन मठली जेम ॥ नव जवारो हो नेमीसर साहि-
 ब गोमनें, नेम विन जीवुं केम ॥ ८ ॥ सहियां तो समजावै हो
 राजुल दुःख भत करो, एतो कालो है जरतार ॥ पावो तो राजुल
 जावै हो सहेली मारी थे सुणो, इण जव एं जरतार ॥ ९ ॥ रा-
 जुल तो चाली हो नेमीसर साहिब वांदवा, साथे तो घणुं रे परि-
 वार ॥ गिरनारे चढतां हो सब आगे पावै नीकड्या, एकली रही
 है राजुल नार ॥ १० ॥ मेहा तो वरस्या हो नेमीसर साहिब अ-
 तिथणा, ज्ञाज्या है सब सिणगार ॥ गुफा तो देखी हो राजुल
 नारी अति जली, चीर निचोवै राजुल नार ॥ ११ ॥ गहणा तो
 वाज्या हो राजुलनारीरे अंगना, घूघरना ऊणकार ॥ ऊणकां तो
 सुणिया हो रहनेमी वैठे ध्यानमें, खोली है पलक तिणवार ॥ १२ ॥
 रूपे तो मोह्यो हो रहनेमी वैठो ध्यानमें, कहै सुंदर करो मोसुं
 प्यार ॥ बोली तो सुणकर हो राजुल अंग ढांकियो, मानै गोम है
 नेमजरतार ॥ १३ ॥ जोजन तो जीम्यो हो रहनेमी खीरखांमनो,
 उलटी करै नांखे तेम ॥ वेनें तो साणस हो रहनेम पावो नही
 जखै, जखसी काग कुत्ता जेम ॥ १४ ॥ हूं तो माता हो रहनेम
 आरे सारखी, हुं वमा जार्झनी नार ॥ पाय तो धरस्यो हो रहनेम
 साहरे ऊपरां, तो प्रस्यो थे नरक मजार ॥ १५ ॥ एहवा तो व-

घने हो रहनेम राजुल पाए नम्यो, पाप खमावै वारंवार ॥ कपमा
तो पहर्या हो राजुलनारो आपणा, पुहती वै प्रज्जु दरबार ॥ १६ ॥
राजुल तो हरखे हो नेमीसर साहिब वादिया, बांदीनें लीधो सं-
जमजार ॥ केवल तो पाली हो नेमीसर साहिब निरमलो, पुहती
वै सुगति मजार ॥ १७ ॥ केवल पाली हो नेमीसर साहिब आग-
लै, मिलिया वै सुगति मजार ॥ माणिक्य रंगे हो नेमीसर साहिब
गाईयो, म्हारा आवागमण निवार ॥ १८ ॥ इति सिंज्ञाय संपूर्ण ॥

॥ अथ सिद्धपद वर्णन सिंज्ञाय ॥

श्रीगौतमस्वामी पूठा करे, विनय करी शीस नम्राय प्रज्जुजी ॥
अविचल आनक में सुएथो, कृपा करी सोय वताय प्रज्जुजी ॥ शिव-
पुरनगर लोढामणुं ॥ १ ॥ आठ करम अलगा करो, सास्या
आतम काज प्रज्जुजी ॥ बूटा संसारना दुख थकी, रहवानो
किहां ठाम प्रज्जुजी ॥ शि० ॥ २ ॥ वीर कहे उई लोकमां,
निद्वजिलातणो ठाम हो गोतम ॥ स्वरगपुरीने उपरे,
तेइना धरे नाम हो गोतम ॥ शि० ३ ॥ लाख पिस्तालीस
जोजना, लांघी पोहली जाण हो गोतम ॥ आठ जोजन जामी
विचै, वेरे भाखीयंख साण हो गोतम ॥ शि० ४ ॥ ऊजला द्वार
मोतीतणा, गोडुय संख प्रमाण हो गोतम ॥ ते थकी ऊजली
अधिणी, उदटो ठत्र संगण हो गोतम ॥ शि० ५ ॥ अरजन-
स्वर्ण शम दापती, बगारी मगारी जाण हो गोतम, फटकरतन
थकी निरमलो, सुंआली अतंत वखाण हो गोतम ॥ शि० ६ ॥
निद्वजिला उलंघी गया, अधर रह्या तिङ्गाज हो गोतम ॥
अवाकसुं जाई अमंथा, सास्या आतकाज हो गोतम ॥ शि०
॥ ७ ॥ जनम नही मरणा नही, नही जरा नही रोग हो गोतम ॥
धरि नही मित्रा नही, नही संजोग विजोग हो गोतम ॥ शि०

॥ ७ ॥ झूख नहीं तिरखा नहीं, हरख नहीं नहीं सोक हो, गो-
 तम ॥ करम नहीं कार्या नहीं, विषयारस नहीं योग हो गोतम ॥
 शि० ए ॥ शब्द रूप रस गंध नहीं, फरस नहीं नहीं वेद हो
 गोतम ॥ बोले नहीं चाले नहीं, मोनपयूं नहीं खेद हो गोतम ॥
 ॥ शि० १० ॥ गाम नगर ए को नहीं, वसती नहीं ऊज्जर हो गोतम ॥
 काल तिहां वरते नहीं, नहीं रात दिवस तिथि वार हो गोतम ॥ शि०
 ११ ॥ राजा नहीं परजा नहीं, नहीं ठाकुर नहीं दास हो गोतम
 ॥ मुक्तिमें गुरु चेखो नहीं, नहीं लघु वरुई वास हो गोतम ॥
 शि० १२ ॥ अनंता सुखमें जिलरह्या, अरूपी ज्योत प्रकाश हो
 गोतम ॥ सहुकोईनें सुख सारिखा, सगलानें अविचल राज हो
 गोतम ॥ शि० १३ ॥ अनंता सिद्ध मुगते गया, वली अनंता जाय
 हो गोतम ॥ अवर जग्या रूंधे नहो, जोतमां जोत सझाय हो गो-
 तम ॥ शि० १४ ॥ केवलज्ञाने सहित वै, केवलदर्शन खास हो
 गोतम, कायंकलमकित दीपता, कदय न होवै ऊदाश हो गोतम ॥
 शि० १५ ॥ सिद्धस्वरूप जे ललखे, आणी मन वैराग हो गोतम ॥
 शिवरमणी वेगे वली, नवि कहे सुख अथाग हो गोतम ॥ शि०
 १६ ॥ इति सिद्धिपद वर्णन सिंहाय संपूर्ण ॥

॥ अथ नेमनाथजीशे सिलोको ॥

समरुं सारदनें गुणपते राणी, विघन टालो द्यो अविखल
 वाणी ॥ कहुं सिलोको नेमिनाथकेसे, जाद्ववंस मांहे वरेरो ॥ १ ॥
 नगरी सोरीपुरपृथ्वीमें दीपे, रिद्धै सभृद्धै अलकारे जीपे ॥ राजा समुद्ध
 विजै शिवादे राणी ॥ सीलै रूपै कर अधिकी वखाणी ॥ २ ॥
 तेहनोजी अंगज नेमजीनाथो, मुगतरमण सुं घाले वै बाथो ॥ आलंङ्ग
 घणें वसंत आयो, कुली वृत्तीसैं फाग जगायो ॥ ३ ॥ रमवाज
 सारु चलिया गोपालो ॥ रुफ चंग वाजै रेमे गुलालो ॥ रुखमण

राणी राधा सतनामा, बीजाही गोपी मिलर रामा ॥ ४ ॥ नेम-
 नाथजीरो व्याह मंमायो, कुमरी राजुलनो सगपण करायो ॥
 राजानें परजा अति सुख पायो ॥ ५ ॥ उग्रसेनराजा घरे वधाई,
 जादवरायरी जानज आई ॥ ढोलनें वरघू सखरी सरणाई, जुंगलने
 जेरी सखरी सजाई ॥ ६ ॥ ताल कंसाळ कुहके करनाला, गोरी
 जी गावै गीत रसाला ॥ रथ वहलै वाजै घूघरमाला, मदऊरता
 मेंगल जाकजमाला ॥ ७ ॥ इण विधसुं कुंवरी परणन आयो, ला
 मी राजीमती वेस वणायो ॥ मसतक मोती मांग जराई ॥ सीस
 फूलांरी ज्योत सवाई ॥ ८ ॥ सुविशाले जालै टीकोजी सोहै, अ
 णियाली आंण्यां काजल मोहै ॥ काने हंकोटा जमावकेरा, नकवे-
 सर मोती जलके जलेरा ॥ ९ ॥ दामिमकुलियां दांत वत्तासे, वदनी
 बोले सार उत्तीसै ॥ डुलमी तिलमी गल मोत्यांरी माला, कुच ऊपर
 कसिया कुंच रसाला ॥ १० ॥ चूमे नें गहणें जाइ न वखाणी, रू
 पैकर गोरी जीपे इंझाणी ॥ जांऊरनें नेवर दूधर घमकंती, हंसा तो जीपै
 सुंदर हालंती ॥ ११ ॥ हाथेजी पगे पोथीजी दीधी, सुयामे देही गर
 काव कीधी ॥ फाबंते कपडै सखियां वणाई, राजूल राखी नार न
 काई ॥ १२ ॥ मृगानैणी सोहै जोवनवालो, सारीखी सखियां ति
 ण विचालो ॥ इण विधसुं पदमण परणन आयो, मदसिरी रूपें
 मदन हरायो ॥ १३ ॥ मदमाता राता करता गहगाटो, कोमेजी
 ग्यानें जादव थाटो ॥ घणुं मठराला महा अजिमाना ॥ केसरिये वागै
 मिलिया ठै जानी ॥ १४ ॥ डुरदंत कुंवर हरिवंस केरा, बीजाही
 जानी जूपति जलेरा ॥ धक्को मारे तो मेरु धूजामै, जातां कालनें
 जाल पठ मै ॥ १५ ॥ तिहां माहे नेमजी महाबलवंतो ॥ अनंता
 सुरपतिसुं नर अनंतो ॥ तारागणमांहे शोजे जु चंदो, तिण विध
 मांहे नेमजिणंदो ॥ १६ ॥ तिण वेला देखी पसुअ ठुमाया, अण-

परण्या नेमजी पाठाजी आया ॥ धिग् १ संसार मायाजंजालो,
जामणने मरण महा विकरालो ॥ १७ ॥ इण अनुक्रम नेमजी
चारत लीधो, आपरो नाम अविचल कीधो ॥ नेमजी राजुल बाल
ब्रह्मचारी, जिणरो शिलोको गावै नरनारी ॥ १८ ॥ इति श्रीनेम
नाथजीरो सिलोको संपूर्ण ॥

॥ अथ चोढालिया प्रारंभ ॥

॥ विजयसेठ विजयासेठाणीका चोढालिया लिख्यते ॥
प्रह ऊठी रे पंच परमेष्टि सदा नमूं, मनसूधे रे तेहने जरणे नित
नमूं ॥ धुरि तेहने रे अरिहंत सिद्ध वखाणियै, आचारज रे उपा-
ध्याय मन आणियै ॥ (उल्लाखो) आणियै निज मन जाव सुद्धे,
उपाध्याय नमूं वली ॥ जे पनरह करमजूमिमांहे, साधु प्रणसुं ते
वली ॥ जिम कृष्णपक्ष नें शुक्ल पक्ष वलि शील पाळ्यो ते
सुणो, जरतारने लो विन्हे तेहनो चरित जावेसुं जणो ॥ १ ॥
(ढाल) जरतहेतरे रे समुद्र तीर दक्षिणदिसै, कछदेसै रे विजय-
सेठ श्रावक वसै, शीलव्रत रे अंधारापक्षनो लियो, बालागणै रे ए-
हवो निश्चै मन कियो ॥ (उल्लाखो) मन कियो एहवो तेण निश्चै
पक्ष अंधारे पालस्युं, हुं शील निश्चै एह विरुद्ध विषय शेवा टाल-
स्युं ॥ इकअठै सुंदर रूप विजया नाम कन्या ते वली, पिण शुक्ल
पक्षनो शील लीधो सुगुरु जोगे मनरली ॥ २ ॥ (ढाल) कर्म-
जोगे रे मांहोमांहे बिहुंतणो, शुभ दिवसे रे हुन विवाह सुहाम-
णो ॥ तब विजया रे सोले गृंगारजला करी, पिउमंदररे पोहती मन
उल्लट धरी ॥ (उल्लाखो) मन धरी उल्लट अधिक पहुतो पिया
पासे सुंदरी, ते देखि हरखे सेठ बोले शील निश्चो संजरी ॥ मुज
शील निश्चो पखअंधारे तेहना दिन तीन बै, ते नेम पालो शुक्ल
पक्षे हुं जोग जोगविस्युं पढै ॥ ३ ॥ (चाल) इण सांजल रे वि-

जया मन विलखी अई, पिउ पूठै रे किम चिंता तुजने जई ॥
 तब विजया रे कहै शुक्लपद व्रतमें लियो, व्रत चोप्रे रे बालापण
 निश्चो कियो ॥ (उल्लाखो) बालपणमें कियो निश्चो शुक्लपद व्रत
 पालस्युं, तो उजय पद हिव शील पाली नियम दूषण टालस्युं ॥
 तुझे अवर नारी परणने हिव शुक्लपद सुख जोगवो, कृष्णपद
 अनज निमय पाली अजिग्रह इम जोगवो ॥ ४ ॥ (ढाल) तब
 बलतो रे तसु जरतार कहै इसो, विपचारस रे कालकुटविप
 ह्वे तिसो ॥ ते ठंमी रे शीलव्रत दोनुं पालस्यां, एह वार्त्तारे माता
 पिता न जणावस्यां ॥ (उल्लाखो) मानपिता जब जाणस्ये तब
 दख्य लेस्यां धर दया, इम अजिग्रह लेईने ते ज्ञावचारत्रिया
 अया ॥ एकत्र सख्या सयन करतां खरुगधारा व्रत धरे, मन वचन
 काया करी सूधो शील वेनं आचरै ॥ ५ ॥ (ढाल २) विमल
 केवली एक, चंपा नयरीए, ततखिण आवी समोसरया ए ॥
 आणी अधिक विवेक, आवक जिणदास, कहै विनयगुण परि-
 वरयो ए ॥ ६ ॥ सहस चोरासी सांधु, मुऊ घर पारणो, करै मनो-
 रथ तो फलै ए ॥ केवल ज्ञान अगाध, कहै आवक सुणो, एह
 वात तो नवि मिलै ए ॥ ७ ॥ किहा एतला अणगार, किहां बलि
 सूऊतो, जातपाणी नहिं एतलो ए ॥ तो हिव तेह विचार, करो
 तुम्हें जिय तिम, फल अम्ह हुवै तेतलो ए ॥ ८ ॥ अठै हिवे कछ-
 देश, सेठ विजय बली, विजया जार्था तसु धरै ए ॥ ज्ञावयती
 ग्रहवास, तेहनें जोजन, दीधां फल हुवे तेतलो ए ॥ ९ ॥ जिण
 दास कहै जगवंत, ते मांहे एतला, कुण गुण कुण व्रत ठै घणा
 ए ॥ केवली कहै अनंत, गुण तसु शीलना, कृष्ण शुक्लपद व्रतत
 णा ए ॥ १० ॥ ॥ ढाल ३ ॥ दान कहै जग हूं वमो ए ॥ देशी ॥
 केवलीनें सुख सांजली, आवक ते जिनदास रे ॥ कछदेसैं हिव

आवियो, पूरे निज मन आस रे ॥ ११ ॥ धन२ शील सुहामणो,
 शील शमो नही कोय रे ॥ शीलै देव सानिध करै, शीलथो शिव
 सुख होई रे ॥ ध० ॥ १२ ॥ सेठ विजय विजयाज्ञाणो, जगतसुं ज्ञो-
 जन देई रे ॥ सहस चोरासी साधुना, पारणानो फल लेई रे ॥
 ॥ ध० ॥ १३ ॥ मातपिता पूरै तेहनें, एहनो शील वखाण रे ॥
 केवलीने मुख जिम सुण्यो, तिम कहै तेह गुणजाण रे ॥ ध० ॥
 ॥ १४ ॥ सहस चोरासी साधुनें, पारणो दीये कोइ जाय रे ॥
 कृष्ण शुक्लपद्म दंपती, ज्ञोजननो फल आय रे ॥ ध० ॥ १५ ॥
 मातपिता जब जाणियो, प्रगट हूळ संबंध रे ॥ सेठ विजय विज-
 या लियो, चारित्र अप्रतिबंधो रे ॥ ध० ॥ १६ ॥ ॥ ढाल ४ ॥
 केवलीनें पासे, चारित्र लेइ उदार ॥ मनममता मूंकी, पालै निर-
 तीचार ॥ १७ ॥ आठ करम खपावी, पाम्यो केवल ज्ञान ॥ ते सु-
 गते पहुंचा, दंपती सुगुण सुजाण ॥ १८ ॥ तेहना गुण गावै,
 जावै जे नर नार ॥ ते वंठित सुख लहै, पहुंचै जवनें पार ॥ १९ ॥
 ॥ कलश ॥ इम कृष्णपद्म नें शुक्लपद्म शील पाढ्यो निरमलो,
 ते दंपतीना जाव शुद्ध सदा शुभगुण सांजलो ॥ जिम डुरिय दो-
 हग दूर जायै सुख आयै बहु परै, दलि सरल संगल मनह वंठत
 कुशल नित घर अवतरै ॥ २० ॥ इति शील चोढालिया संपूर्ण ॥

॥ अथ इखुकारराजा भृगुप्रोहित चोढालिया लिख्यते ॥

महिलांमे बैठी राणी कमलावती, जीणी तो उरै मारग
 खेह ॥ जोवै तमासो इखुकार नगरमें, कौतुक उपनो मनमें एह ॥
 सांजल रे दासी आज नगरमें वहदो किम घणो ॥ १ ॥ कांतो
 परधान सखी मंकीया, कां केइ लूट्या राजा गांव ॥ कां कोइ गा-
 र्यो धन नीसख्यो, गारु रह्या ठै ठामो ठाम ॥ सां० ॥ आ० ॥
 ॥ २ ॥ नातो परधान वार्जजी मंकीया, ना कोई राजा लूट्या

गांव ॥ जगूपुरोहित धनं तज नीसरयो, राजारै धन लेवा
 चाव ॥ सांजल हे राणी हुकम करो तो कोइ गामो इहां धरां ॥
 ३ ॥ घेटां तो तिणरा संजम लियो, वरज्यो घएयोही पितामात ॥
 ते पिण चारित्र लेवा ऊनह्या, जगू जसा तिशें मोह ललचात ॥
 सांजल हे रा० ॥ ४ ॥ इन सुण कमलावतीराणी डम कहै, इहां
 तो कमी नहीं काय ॥ सांजलनें राणी माथो धूणीयो, राजारी म
 मता नही ठाय ॥ सा० दासी राजानें ए वाता जुगती नही ॥ ५
 ॥ महिलांसूं राणी कमलावती, आई वै राजारे हजूर ॥ वचन कहै
 राजानें आकरा, जाणे पोरस चढियो बोले सूर ॥ सां० हो राजा
 ब्राह्मण ठोमी रुद्धि क्यूं आदरो ॥ ६ ॥ करजोमी कमला कहै, सां
 जल कंत सुजान ॥ ब्राह्मण जे रुद्धि परिहरि, ते तो घर खाहे म
 त आण ॥ सांजल हो राजा० ७ ॥ ए रुद्धिसुं अणणे कांड घणो हुसी,
 राजारा मोटा वै जाग ॥ वमियें आहाररी वांछा कुण करै, कै कुतरा
 कै काग ॥ सांजल हो रा० ८ ॥ वमियो आहार पीठो नर जखै,
 नही परसंसवा जोग ॥ जगूपुरोहित रुद्धि तज नीसरयो, थे
 जाणयो वै असी म्दरे जोग ॥ सां० राजा० ॥ ९ ॥ संक-
 लपियोमो पाठो किम लियै, सांजल हो महाराज ॥ दान दि-
 यो थे पहिलां हाथसुं, ते पूठो लेतां नावै थाने लाज ॥ सांजल
 रा० १० ॥ निहचे तो मरणो राजाडक दिने, ठोमीनें काम विशेष
 ॥ बीजो तो जगमें सरणो को नही, तारै जिनजीरो धर्म एक ॥
 सांजलहो रा० ११ ॥ सगलै जगतरो धन जैलो करी, थे धाळो
 जंमारारे मांदि ॥ तोपिण ब्रसना राजा पापणी, त्रिपत न मनमो
 थाय ॥ सांजल हो राजा० १२ ॥ सांजलनें इखुकारराजा बोलीयो,
 तूं जापैनी वचन संजाल ॥ का तनें राणी जोलो वाजियो, का
 काई कीधी मतवाल ॥ सांजल हो राणी राजानें, करना वचन

न बोलियै ॥ १३ ॥ नातो राजाजी जोलो वाजीयो, ना कोइ
 कीधी मतवाल ॥ ब्रह्मणरो वमियो धन थे आदरो, वरजण
 आई हो जूपाळ ॥ सांजल हो रा० १४ ॥ वलतो राजा राणीने
 इम कहै, इसमी वैरागण आय ॥ अजू तो निजरां आवै नही, तूं
 बैठी ठै घर मांय ॥ सांजल है राणी० १५ ॥ उत्तरवाली तो दीसे
 नही, इसमी आई ठै मतवाल ॥ हुंतो घर ठोमने नीसरी, थे
 पिण ठोमो हो जूपाळ ॥ सांजल हो राजा आग्या देवो तो संजम
 आदरुं ॥ १६ ॥ रतन जस्तरो राजा पिंजरो, तिणमें सुवटियो पमियो
 फंद ॥ इण रीतै हूं आरे राजमें, रहिने पांमु आणंद ॥ सांजल
 हो राजा आग्या० १७ ॥ सनेहरूपीया तांतण तोमने, आरंज
 धनसुं रहस्यां दूर ॥ विरकत आई मौनपणें रह्या, थे पिण होयज्यो
 सूर ॥ सां० रा० आ० १८ ॥ दव तो लागी हो राजा वन मऊ,
 हिरण ससा बले मांय ॥ गिरधपंखी ज्युं आमिष देखनें, मनमां-
 हे हरखित आय ॥ सां० रा० राण द्वेषरा ज्ञांगा लग रह्या १९ ॥
 मांहोमांहि खेधोईसको, दश प्राण रहित कीधो काल ॥ दुस्मन
 तो मनमें हरख पाम्यो घणो, जाणे ते माहरो मिटियो साल ॥
 सां० राजा राग द्वे० २० ॥ इण दृष्टांते लोन्नी मूरख थका, मुरऊ
 रह्या जोगमांहि ॥ पहिलाने दुखियो देखी चेतै नही, लागी राग
 द्वेषरी लाय ॥ सांजल हो राजा रा० २१ ॥ सांसरी वोटी
 पंखीरी चांचमें, नर पासै पंखी पमियो आय ॥ आमिष सम
 जोग ठोमनें, चारित्र लेस्यां चित लाय ॥ सांजल रे प्राणी संय
 मथी सुख पामियै २२ ॥ महल पिलंगादिक अशिर ठै, ते पाम्याठे
 आपणे हाथ ॥ कामजोगमें रकत होयरह्या, ते तजहोय सांनाथ ॥
 सांजलरे प्रा० २३ ॥ पांचे इंद्रियारा जोग ठोमने, इय ज्ञावै
 हलक आय ॥ सहज वायु पंखीनी परें, विचरस्यां आपणी दाय ॥

सांजल रे प्रा० २४ ॥ गिरधपंखी ज्युं जोग जाणज्यो, ए काम
 बंधरै संसार ॥ साण ज्युं मोर प्रकी मरतो रहै, ज्युं पापसुं संक-
 स्यां इण वारंगे ॥ सांजल रे प्रा० २५ ॥ शोक तजी संतोषसुं, लेस्यां
 संयमज्जार ॥ ममता तजी समता ग्रहो, करस्यां जेग्र विहार ॥ सांजल
 रे प्रा० २६ ॥ तन धन जोवन करमो, चंचल बीज समान ॥ खिण रे
 खूटै आनखो, मूरख करे रे गुमान ॥ सांजल रे प्रा० २७ ॥
 हस्ती ज्युं बंधण तोरने, आपे वन सुखे जाय ॥ करमबंध तूटै संयम
 लियां, सुणो कहुं तुं महारांय ॥ सांजल हो रा० सं० २८ ॥ इम
 सुणने इखुकारराजा चेतियो, ठोरीने मोटको राज ॥ कायरने तो
 ए तंजतां दोहिलो, विप्र सहित सारयां काज ॥ सांजल हो राणी
 सं० ॥ २९ ॥ मोह न राख्यो परिग्रह ठोरकै, पायो जिनध-
 रम सुजाण ॥ तपस्या सगलांही आदरी, उत्कृष्टो पराक्रम आण ॥
 ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ३० ॥ सुध संयम पालै सदा, सुमति गुपति
 दयाल ॥ जमरानी परै करै गोचरी, रिषि टालै दोष बयाल ॥ सां०
 प्रा० सं० ॥ ३१ ॥ तारण तरण जिहाज वै, जव्यजीवने उतारै
 पार ॥ केवलज्ञान उपायने, सुख पाम्या श्रीकार ॥ सां० प्रा० सं०
 ॥ ३२ ॥ मोह निवारी प्राणी संमजने, निरमल जावना जाव ॥
 वैए जणा ओका कालमें, सुगति विराज्या जाय ॥ सां० प्रा० सं० ॥
 ॥ ३३ ॥ राजा सहित राणी कमलोवती, जृगुपुरोहित जसा नारणी
 जृगुप्रोहितना दोष दीकरा, शिवसुख पाम्यो सार ॥ सां० प्रा० सं०
 ॥ ३४ ॥ इति इखुकार राजा जृगुप्रोहित अधिकार संपूर्ण ॥ ३५ ॥
 ॥ अथ दान शील तप भाव चोढालियो लिख्यते ॥ ३६ ॥
 ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ प्रथम जिनैल पाय नमी, पामी सुगुरु प्रसाद ॥ दान
 शील तप जावना, बोलिस बहु संवाद ॥ १ ॥ वीरजिनंद समोसस्या
 राजगृही जेयाने ॥ समवेसरण देवै रंज्यो, बैठा श्रीवर्द्धमान ॥ २ ॥

बैठी बारै परखदा, सुणवा जिणवर वाण, दान कहै प्रभु हुं वमो,
 मुऊने प्रथम वखाण ॥ ६ ॥ सांजलजो सहुको तुमै, कुण ठै मुऊ
 समान ॥ अरिहंत दीक्षा अवसरे, आपे पहिलुं दान ॥ ४ ॥
 प्रथम पहुर दातारनो, ले सहु कोई नाम ॥ दीवारी देवल चढै,
 सीधै वंछित काम ॥ ५ ॥ तीर्थकरने पारणे, कुण करस्यै मुऊ
 होम ॥ वृष्टि करुं सोनातणी, साढीबारै कोमि ॥ ६ ॥ हुं जग
 सगलो वस करुं, मुऊ मोटी ठै वांत ॥ कुण दानथकी तिरथा,
 ते सुणज्यो अवदात ॥ ७ ॥ ॥ ढाल ॥ १ ॥ ललनाकी देशी ॥
 धनसारथवाह साधुनें, दीधं धृतनो दान ललना ॥ तीर्थकर पद में
 दियो, तिरें मुऊने अजिमान ललना ॥ १ ॥ दान कहै जग हुं
 वमो, मुऊ सरिखुं नहि कोय ललना ॥ ऋद्धि समृद्धि सुख संपदा,
 दाने दोलत होय ललना ॥ दा० ॥ २ ॥ सुमुख नाम गाथापती,
 पमिलाज्यो अणगार ललना ॥ कुमार सुबाहु सुख लहै, ते तो मुऊ
 उपगार ललना ॥ दा० ॥ ३ ॥ मासखमणने पारणे, पमिलाज्यो
 रुषिराय ललना ॥ शालिजइ सुख जोगवै, दानतणै सुपसाय ल-
 लना ॥ दा० ॥ ४ ॥ पांचसें मुनिने पारणो, देतो वोहरा आण
 ललना ॥ नरत थयो चक्रवर्त्ति जलो, ते पण मुऊ फल जाण ल-
 लना ॥ दा० ॥ ५ ॥ आप्या उमदना बाकला, उत्तम पात्र विशेष
 ललना ॥ मूलदेव राजा थयो, दानतणा फल देख ललना ॥ दा० ॥
 ॥ ६ ॥ प्रथम जिनेश्वर पारणै, श्रीश्रियांशकुमार ललना ॥ सेलमी-
 रस बहरावियो, पाम्यो जवनो पार ललना ॥ दा० ॥ ७ ॥ चंद-
 नबाला बाकुला, पमिलाज्या महावीर ललना ॥ पंचदिव्य परगट
 थया, सुंदर रूप शरीर ललना ॥ दा० ॥ ८ ॥ पूरव जव
 पारेवहुं, शरणें राख्यूं सूर ललना ॥ तीर्थकर चक्रव-
 र्त्तिपणै, प्रगट्यो पुन्य परूर ललना ॥ दा० ॥ ९ ॥ गजजव शिशलो

राखीयो, करुणा कीधी सार ललना ॥ श्रेणिकने घर अ
 चतरयो, अंगज मेघकुमार ललना ॥ दा० १० ॥ ५० अनेक में
 ऊधर्या, कहतां नावे पार ललना ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी, मुऊ
 पहिलो अधिकार ललना ॥ ॥ दोहा ॥ शील कहै सुण दा-
 न तुं, कियो करै अहंकार ॥ आरुंवर आठै पदुर, याचकसुं विव-
 हार ॥ १ ॥ अंतराय बलि ताहरै, जोगकरम संसार ॥ जिनवर
 कर नीचो करै, तुऊने पमो धिकार ॥ २ ॥ गर्व म कर रे दान
 तूं, मुऊ शूठै सऊ कोय ॥ चाकर चालै आगले, तो स्युं राजा
 होय ॥ ३ ॥ जिनमंदिर सोनातणो, नवो निपावे कोय ॥ सोवन कोटी
 दानदिये, शीयल समो नहि कोय ॥ ४ ॥ शीले संकट सऊ टले,
 शीले जश शोजाग ॥ शीले सुर सानिध छरै, शील बमो देराग ॥ ५ ॥
 शीलै सर्प न आज्ञमै, शीले शीतल आग ॥ शीलै अरिकरी केसरी,
 जय जावै सब जाग ॥ ६ ॥ जनम भरणना जय अकी, में डोर
 व्या अनेक ॥ नाम कहूं हिव तेहना, सांजलजो सुविवेक ॥ ७ ॥
 ॥ दोहा २ ॥ पासजिनंद जुहारिये ॥ ए देशी ॥ शील कहै
 जग हूं बमो, मुऊ वात सुणो अति मीठी रे ॥ लालच लावै लो-
 कने, में दानतणी वात दीठी रे ॥ शी० १ ॥ कलह कारण जग
 जाणीये, बलि विरती नही पण काई रे ॥ ते नारद में सीऊव्या,
 मुऊ जुल ए अधिकार रे ॥ शी० २ ॥ बांहे पहिर्या वैरखा, शं-
 खराजा दूषण दीधो रे ॥ काप्यो हाथ कलावती, ते में नवपल्लव
 कीधो रे ॥ शी० ३ ॥ रावणघर शीता रही, तो रामचंदै घर आणो
 रे ॥ शीतानो कलंक उतारीयो, में पावक कीधूं पाणी रे ॥ शी०
 ४ ॥ चंपावार उधामिया, बली चलणिये काढ्युं नीरो रे ॥ सतीय
 सुजद्रा जस अयो, में तसु कीधी जीरो रे ॥ शी० ५ ॥ राजा मं-
 रण मांसीयो, राणी अजयति दूषण दाख्या रे ॥ शूलो सिंहासण

में कियो, में श्रेष्ठ सुदर्शन रखयो रे ॥ शी० ६ ॥ शील सन्नाहि
 मंत्रीसरें, अवतां अरिदल अंज्यो रे ॥ तिहां पिण सानिय में करी,
 वला धरम काज आरंज्यो रे ॥ शी० ७ ॥ पहिरण चोर प्रगट
 किया, में अगेत्तरसो वारो रे ॥ पांमवनारी डौपदी, में राखी मा-
 म नारो रे ॥ शी० ८ ॥ ब्राह्मी चंदनवालिका, वलि शीलवती
 दवदंती रे ॥ चेम्पानी साते सुत, राजीमंती सुंदर कुंती रे ॥ शी०
 ९ ॥ इत्यादिक में ऊंधरया, नर नारीना वृंदो रे ॥ समयसुंदर प्र-
 नु वीरजी, पहिले मुज आनंदो रे ॥ शी० १० ॥ ॥ दूहा ॥
 तप बोडियो त्रटकी करी, दानने तूं अवहील, पिण मुज आगल तुं
 कितुं, सांजल रे तूं शील ॥ १ ॥ सरसा जोजन ते तज्या, जगमें
 मीठा नाद ॥ देहतणी शोभा तजी, तुजसो कियो सवाद ॥ २ ॥
 नारी थकी मरतो रहे, कायर कियुं बखान, कूरु कपट बहु के
 लवी, जिह्व तिह्व राखै प्राण ॥ ३ ॥ को विरलो तुज आदरै, ठंकी
 सहु संसार ॥ आप एक तूं जांजतो, बाजा जांजै चार ॥ ४ ॥ क-
 रम निकाचित तोरवा, जांजु जवजय जीम ॥ अरिहत मुजने
 आदरै, वरस ठम्मासी सीम ॥ ५ ॥ रुचक नंदोसर ऊपरै, मुज
 खबधै मुनि जाय ॥ चैत्य जुहारै शाश्वता, आनंद अंग न माय ॥
 ६ ॥ मोटा जोयण लाखना, लघु कुंशु आकार ॥ हय गय रथ पा-
 यकतणा, रूप करै अणगार ॥ ७ ॥ मुज कर फरसै उपशमे, कु-
 षादिकना रोग ॥ लब्धि अठ्ठावीस ऊपजै, उत्तम तप संजोग ॥ ८ ॥
 जे में तारया ते कहूं, सुणजो मन उल्लास ॥ चमत्कार चित पाम
 सो, देशो मुज साबास ॥ ९ ॥ ॥ ढाल ३ ॥ नणदलेरी दे
 शी ॥ दृढप्रहार अति पापीयो, हत्या कोधी चार हो सुंदर ॥ ते
 पिण तिण जव ऊंधरयो, मूक्यो मुगति मजार हो सुंदर ॥ १ ॥
 तप सरखो जग को नही, तप करै कर्मनूं सूरु हो सुंदर ॥ तप

करवुं अति दोहिलूं, तपमां नही को कूरु हो सुंदर ॥ त० २ ॥
 सात माणस नित मारतो, करतो पाप अघोर हो सुंदर ॥ अर्जुन
 माली में ऊपरयो, ठेका कर्म कठोर हो सुंदर ॥ त० ३ ॥ नंदिषे
 एने में कियो, स्त्रीवस्त्रजवसुदेव हो सुंदर ॥ बहुतर सहस अतेउरी,
 सुख जोगवे नित्यमेव हो सुंदर ॥ त० ४ ॥ रूप कुरूप कालो घ
 णो, हरिकेशी चंदाव हो सुंदर ॥ सुरनर कोनी सेवा करै, ते में
 कीधी चाल हो सुंदर ॥ तप० ५ ॥ विष्णुकुमर लवधे कियुं, ला
 ख योजननो रूप हो सुंदर ॥ श्रीसंघ केरे कारणे, ए मुज शक्ति
 अनूप हो सुंदर ॥ त० ६ ॥ अष्टापद गौतम चढ्या, बांधा जिन
 चोवीस हो सुंदर ॥ तापस पिण प्रतिवूज्यो, तिण मुज अधिक
 जगीस हो सुंदर ॥ त० ७ ॥ चौद सहस अणगारमां, श्रीधनो अ
 णगार हो सुंदर ॥ वीर जिणंद बखाणीयो, ए पण मुज अधिकार
 हो सुंदर ॥ त० ८ ॥ कृष्ण नरेसर आगलै, उकरकारक एह हो सुं
 दर ॥ ढंढण नेम प्रसंसीयो, मुज महिम। सवि तेह हो सुंदर ॥ त०
 ९ ॥ नंदिषेण विहरण गयो, गणिका कीती हास हो सुंदर ॥ वृष्टिकरी सोव
 नतणी, में तसु पूरी आस हो सुंदर ॥ त० १० ॥ इम बलज्जद्र प्रमुख
 बहू, तारया तपसी जीव हो सुंदर ॥ समय सुंदर प्रभु वीरजी,
 पहिलो मुज प्रस्ताव हो सुंदर ॥ त० ११ ॥ दूहा ॥ जाव कहै
 तप तूं कियुं, ठेमथुं करै कषाय ॥ पूर्वकोनी जो तप तपै, कणमां
 खैरूं आय ॥ १ ॥ खंयक आचारज प्रते, तें बाढ्यो सवि देश ॥
 अशुज नियाणो तूं करै, कमा नही लवजेश ॥ २ ॥ द्वीपायन
 रुषि दूहव्या, सांव प्रद्युम्न सनाह ॥ तें तब क्रोध करी तिहां, कियो
 छारिका दाह ॥ ३ ॥ दान शील तप सांजलो, म करो जूठ गुमान ॥
 लोक सहूको साख दे, धर्म जाव प्रधान ॥ ४ ॥ आप नपुंसक ठो
 त्रिणदे, ये व्याकरणे साख ॥ काम सैर नहि कोइनुं, जाव अणे में

पाख ॥५॥ रस विन कनक न नीपजै, जल विन तरुअर वृद्ध ॥ रस-
 वति रस नही लवण विण, तिम मुज विण नही सिद्ध ॥६॥ मंत्र यंत्र
 मणि औषधी, देवधर्मगुरु सेव ॥ जाव विना ते सवि वृथा, जाव फलै
 नितमेव ॥७॥ दान शिल तप जे तुमें, विधर कह्या वृत्तांत ॥ तिहां जो
 जाव न हुंततो, कोई सिद्धी नव हुंत ॥ ८ ॥ जाव कहे में एकले,
 तारया बहु नर नार ॥ सावधान अइ सांजलो, नाम कहूं निरधार ॥९॥
 (ढाल चौथी ॥ कपूर हुवै अति उजलो रे, एदेशी) ॥ काजनमें का
 उसग रह्यो रे, प्रश्नचंद रुबिराय ॥ ते में कीधो केवली रे, तत-
 खिण करम खपाय ॥ १ ॥ सोजागी सुंदर, जाव वर्यो संसार ॥
 एतो बीजो मुज परिवार, सो० ॥ दानादिक विण एकलो रे,
 ओहचाहूं जवपार ॥ सो० २ ॥ वंश ऊपर चढ खेलतो रे, एला-
 पूत्र अपार ॥ केवलज्ञानी में कियो रे, प्रतिबोध्यो परिवार ॥ सो०
 ३ ॥ जूख तृषा खमें अतिघणी रे, करतो कूर आहार ॥ केवल
 महिमा सुर कैरे रे, कूरगडू अणगार ॥ सो० ४ ॥ लाजथी लोज
 बाधे घणो रे, आयो मन वैराग ॥ कपिल अयो मुनि केवली रे,
 ते मुजनें सोजाग ॥ सो० ५ ॥ अणिकासुत गह्वनो धणी रे,
 खीणजंघा बलि जाण, कीधो अंतगम केवली रे, गंगाजल गुण
 खाण ॥ सो० ६ ॥ पनरेसें तापसजणी रे, दीधी भौतम दिस्क ॥
 ततखिण कीधा केवली रे, जो मुज मांनि सीख ॥ सो० ७ ॥
 पालक पापीये पीलीया रे, खंधकसूरीना शिष ॥ जनममरणथी
 ठोरया रे, आपे मुज आशीष ॥ सो० ८ ॥ चंरुइने चालतारे,
 दीधो दंरु प्रहार ॥ नवदीक्षित अयो केवली रे, ते गुरु पिण तेणी
 वार ॥ सो० ९ ॥ अनरथकारक साधुनें रे, पमिलाज्यो उलास ॥
 मृगलो जावना जावतो रे, प्रोहतो स्वर्ग आवास ॥ सो० १० ॥
 निज अपराध खमावती रे, मूक्यो मनथी मान ॥ मृगावतीने

में दिखुं रे, निर्मल केवलज्ञान ॥ सो० ११ ॥ मरुदेवी गज ऊपर
 रे, देखी पूत्रनी रुद्धि ॥ मुजने मनमांहे धर्यो रे, ततखिण पामी
 सिद्ध ॥ सो० १२ ॥ वीर वंदन चाढ्यो मारगे रे, चांप्यो चपल
 तुरंग ॥ दर्डुर नामे देवता रे, तेह थ्यो मुज संग ॥ सो० ॥ १३ ॥
 प्रभु पाय पूजन नीसरी रे, दुर्गला नामे नाश ॥ कालधर्म विचमां
 करी रे, पोहती स्वर्ग मजार ॥ सो० ॥ १४ ॥ छायांनी शोभा
 कारमी रे, रूप किसुं अजिमान ॥ जरत आरीसाजुवनमां रे ॥
 पाम्यो केवलज्ञान ॥ सो० ॥ १५ ॥ आषाढजूति फलानियो रे, प्र
 गथ्यो जरतसरूप ॥ नाटक करतां पामियो रे, केवल ज्ञान अनूप
 ॥ सो० ॥ १६ ॥ दीक्षादिन छाजलग रह्यो रे, अजलुकमाल स-
 साण ॥ सोमल शीस प्रजादीयो रे, लिहि गथो शुज जाण ॥ सो०
 ॥ १७ ॥ गुणसागर थ्यो केवली रे, सांजल पृथ्वीचंद ॥ पोते
 केवल पामियो रे, सेव करै सुर इंद ॥ सो० ॥ १८ ॥ इम अनेक
 में ऊथर्या रे, मूक्या शिवपुरवास ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी रे,
 मुजने प्रथम प्रकास ॥ सो० ॥ १९ ॥ ॥ दूहा ॥ वीर
 कहै तुमें सांजलो, दान शील तप जाण ॥ निंदा ठै अति पापणी,
 धर्म कर्म प्रस्ताव ॥ १ ॥ पशनिंदा करतां थकां, पापे पिंन जरा-
 य ॥ वेढ राम बाधै घणी, दुर्गति प्राणी जाय ॥ २ ॥ निंदक स-
 रिखो पापीयो, जूनो कोइय न दिठ ॥ बलि चंजाल समो कह्यो,
 निंदक वदन अदिठ ॥ ३ ॥ आदि प्रशंसा आपणी, करतो इंद
 नरिंद ॥ लघुता पामे लोकमां, नासै निजगुण वंद ॥ ४ ॥ को
 केहनी म करो तुम्हे, निंदाने अहंकार ॥ आप आपणें ठामे रहो,
 सहुको जलो संसार ॥ ५ ॥ तोपण अधको जाव ठै, एकाकी
 समरत्य ॥ दान शील तप त्रिणें जला, पण जाव विना अकयछ
 ॥ ६ ॥ अंजन आंखै आंजता, अधिको आपो रेख ॥ रजमांहे

तज काढतां, अधिको ज्ञाव विशेष ॥ ७ ॥ जगवंत हठ जंजण
 जणी, चारे सभ्यान गणंत ॥ चार करी मुख आपणा, चउ विध
 धर्म जणंत ॥ ८ ॥ ॥ ढाल ए सी ॥ बीर जिणेसर
 इम जणे रे, बैठी परखदा बार, धर्म करो तुमें प्राणिया रे, जिमे
 पामो जव पार रे ॥ धर्म हीये धरो ॥ १ ॥ धर्मना चार प्रकारों रे,
 जवियण सांजलो ॥ धर्म मुक्ति सुखकारो रे ॥ धर्म ० ॥ धर्मयकी
 धन संपजै रे, धर्मयकी सुख होय, धर्मयकी आरति टले रे, धर्म
 समो नहि कोय रे ॥ ध० ॥ २ ॥ दुर्गति परतां प्राणिया रे, राखै
 श्रीजिनधर्म ॥ कुटंब सहको कारमो रे, मति जूलो जवि जर्म रे ॥
 ॥ ध० ॥ ३ ॥ जीव जिके सुखिआ हूआ रे, बलि होसे वै जेह ॥
 ते जिनवरना धर्मयी रे, छत कोई करो संदेह रे ॥ धर्म ० ॥ ४ ॥
 सोखेसे ठासठ सखे रे, सांगाने मजार, प्रद्यप्रजु सुपसाजले रे,
 एह जणयो अधिकारो रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ सोहमसामी परंपरा रे,
 खरतरं गढ कुलचंद ॥ युगप्रधान जग परगमो रे, श्रीजिनचंद मु-
 नींद रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ तास शिष्य अति दीपतो रे, विनयवंत ज-
 सवंत ॥ आचारज चढती कला रे, जिनसिंह सूरि महंत रे ॥ ध० ॥
 ॥ ७ ॥ प्रथम शिष्य श्रीपूज्यना रे, सकलचंद तस शीस ॥ स-
 मयसुंदर वाचक जणे रे, संघ सदा सुजगीस रे ॥ ध० ॥ ८ ॥
 दान शीयल तप ज्ञावना रे, सरस रच्यो संवाद ॥ जणतां गुणतां
 ज्ञावसुं रे, रुद्र समृद्धि सुप्रसाद रे ॥ ध० ॥ ९ ॥ इति दान शील
 तप ज्ञाव चोढालिया संपूर्ण ॥

॥ अथ महावीरस्वामीको छंद लिख्यते ॥

सेवो वीरने चित्तमां नित्य धारो, अरि क्रोधने मन्त्रयीको
 वारो ॥ संतोषवृत्ती धरो चित्तमांही, राग द्वेषयी दूर थाउ उछासी
 ॥ १ ॥ पड्या मोहना पासमां जेह प्राणी, शुद्धतेवनी वात विदलते

जाणी ॥ मनुजन्म पामी वृथा कां गमो वो, जैनमार्ग वंदी जुलां
 कां जमो वो ॥ २ ॥ अलोत्ती अमानी निरागी तजो वो, सलोत्ती
 समानी सरागी जजो वो ॥ हरि हरादि अन्यथी सुंरमो वो, नदीगंग
 मुकी गलीमां पमो वो ॥ ३ ॥ केइ देव हाथे अस्ति चक्रधारा, केइ
 देव घाले गले रुंममाला ॥ केइ देव उत्संगे राखेठे वामा, केइ
 देव साथे रमे वृंद रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे लेइ जपमाला, केइ
 मांस जंही माहा विकराला, केइ योगणी जोगिणी जोग मांगे,
 केइ रुद्रणी ठागनो जोग मांगे ॥ ५ ॥ इसा देव देवी तणी आश रा
 खे, सदा मुक्तिने सुखने केम चाखे ॥ ६ ॥ जदा लोजना थोकनो पार
 नाव्यो, तदा मथनो विंडुत मन जाव्यो ॥ ६ ॥ जे देवलां आपणी
 आस राखे, तेह पिंमने मन्नसुं लेअ चाखे ॥ दीन हीननी चीम
 ते केम जाजे, फूटो टोल होवे कहो केम वाजै ॥ ७ ॥ अरे मूढ
 आता जजो मोहदाता, अलोत्ती प्रजुने जजो विश्वख्याता ॥ ८-
 त्रविंतामणी सारिखो एह साचो, कलंकी काचना पिंमसुं मत
 राचो ॥ ९ ॥ मंदबुद्धि जेह प्राणी कहेठै, सवि धर्म एकत्व जूलो
 जमेठै ॥ किहां सर्षवाने किहां मेरुधीरं, किहां कायराने किहां नू-
 रीरं ॥ १० ॥ किहां स्वर्णधालं किहां कुंजखंमं ॥ किहां कोइवान
 कीरमंमं ॥ किहां कीरसिंधु किहां क्षारनीरं, किहां कामधेनु
 गगखीरं ॥ १० ॥ किहां सत्यवाचा किहां कून्वाणी, किह
 किहां रायराणी ॥ किहां नारकीने किहां देवजोगी, किहां
 कुष्ठरोगी ॥ ११ ॥ किहां कर्म घाती किहां कर्म
 स्वामी जजो अन्य वारी ॥ जिती सेजमां स्वप्न-
 चे मंदबुद्धी धरी जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अग्रि-
 राचे, जना मूढमां श्रेष्ठसुं इष्ट ठाजै ॥ तजो
 रातो, तजो पुण्य घोसी जजो ते अरोतो

॥ १३ ॥ गति चार संसार अपार पामी, आव्या आस धारी प्रजु
पाय स्वामी ॥ तूही २ तुंही प्रजु परमरागी, जवफेरनी शंखला मोह
जागी ॥ १४ ॥ मानीये वीरजी है एक अर्ज मोरी, दीजै दासकुं
सेवना चरण तोरी ॥ पुन्य उदय हुआ गुरु आज मेरो, विवेकें
लह्यो में प्रजु दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ नवकारका छंद लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ बंठित पूरे विविधपर, श्रीजिनसासन सार ॥
निश्चे श्रीनवकार नित, जपतां जैजैकार ॥ १ ॥ अमृत अक्षर
अधिक फल, नवपद नवेनिधान ॥ बीतराग सेंमुख वंदे, पंच
परमेष्टि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समरथां संपत्ति
आय ॥ संचित सागर सातनां, पातक दूर पुलाय ॥ ३ ॥ सकल
मंत्र सिर मुकटमणि, सदगुरु ज्ञापित सार, सोनवियां मन शुद्धसें,
नित जपिये नवकार ॥ ४ ॥ (छंद हाटकी) नवकार अकी
श्रीपाल नरेसर पाम्यो राज्य प्रसिद्ध, समसान विषे शिव नाम कु
मरने सोवनपुरुषो सिद्ध ॥ नवलाख जपतां नरक निवारै, पामे ज
वनो पार ॥ सो ज्ञवियां ज्ञते चोखे चित्ते नित जपियै नवकार ॥ ५ ॥
॥ बांधी वनसाखा ठीके बैसी हेठल कुंमुहुं ताश, तस्करने बलि मं
त्र समर्थो श्रावक उज्यो तेह आकाश ॥ विधि रीते जप्यां विष
धर विष टालेढाले अमृतधार ॥ सो ० ६ ॥ बीजोरा कारण राय महा
बल अंतर छुष्ट विरोध, जेणें नवकारें हत्या टाली पाम्यो यक्ष प्र
तिबोध ॥ नवलाख जपता आयै जिनवर एहवो है अधिकार ॥
सो ० ७ ॥ पल्लीपति सीख्यो मुनिवर पासें महामंत्र मन शुद्ध
परजव ते राजसिंह पृथ्वीपति पाम्यो परधल रिद्ध ॥ ए मंत्रथको
अमरपुर पुहुतो चारुदत्त सुविचार ॥ सो ० ८ ॥ सन्यासी कासी
तप साधंतो पंचाग्नि परजाले, दीगो श्रीपासकुमार पन्नग अभवलतो

ते टाले ॥ संजलाव्यो श्रीनवकार स्वयंमुख इन्द्रनुवन अवतार ॥
 सो० ए ॥ मनशुद्धे जपतां मयणासुंदरि पामी प्रिय संजोग, ऽण
 ध्याने कुष्ट टड्युं नंबरनुं रगतपित्तनो रोग ॥ निश्चेसुं जपतां नव-
 निधि आयै धर्मतणो आधार ॥ सो० १० ॥ घटमांहे कृष्णानुजंगम
 घाढ्यो घरणी करवा घात, परमेष्टि प्रज्ञावे हारफूलनो, वसुधा-
 मांहि विज्ञात ॥ कमलावतियें पिंगल कीधो पापतणो परिहार ॥
 सो० ११ ॥ गयणांगण जाती राखी गिहणी पामी वाण प्रहार,
 पंद पंच सुणांता पांमुपतघर ते अइ कुंता नार ॥ ए मंत्र अमोलख
 महिमा मंदिर नवडुख नंजणहार ॥ सो० १२ ॥ कंबल ने संवल
 कादव काढ्या सकट पांचसें माल, दीधे नवकारे गया देवलोके
 विलसे अमरविमान ॥ ए मंत्रथकी संपत्ति वसुधामां लही विलसै
 जैनविहार, सो० १३ ॥ आगे चोवीसी हुइ अनंती होसे वार
 अनंत, नवकारतणी कोई आद न जाणै, इम ज्ञाखै जगवंत ॥
 पूरवदिसि चारै आदि प्रपंचे समरयां संपत्ति सार ॥ सो० १४ ॥
 परमेष्टी सुरपद ते पिण पामे जे कृत कर्म कठोर, पुंरुरगिरि ऊपर
 प्रत्यक्ष पेख्यो मणिघर नें इक मोर ॥ सहगुरु सन्मुख विधियें
 समरंता सफल जनम संसार ॥ सो० १५ ॥ सूली आशोपण तस्कर
 कीधो लोहखरो परसिद्ध, तिहां सेठे नवकार सुणाव्यो पाम्यो अ-
 मरनी रुद्धि ॥ सेठने घर आवी विघ्न निवारयो सुरें करी मनुहार
 ॥ सो० १६ ॥ पंच परमेष्टी ज्ञानज पंचह पंच दान चारित्र, पंच
 सिज्ञाय महाव्रत पंचहुं पंचसमति समकित्त, पंच प्रमाद विषय तजो
 पंचह पालो पंचाचार ॥ सो० १७ ॥ (कलश ॥ ठप्पय) नित्य
 जपियै नवकार सार संपत्ति सुखदायक ॥ सिद्ध मंत्र ए शाश्वतो
 एम जंपै जगनायक ॥ श्रीअरिइंत सुसिद्ध सुद आचार्य जणीजै,
 श्रीनवज्ञाय सुसाधु पंच परमेष्टि गुणीजै ॥ नवकार सार संसार

वै कुशल लाज वाचक कहै, एक चितै आराधता रुद्रिसिद्धि वंछित
लहै ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ घग्घर नीसाणी लिख्यते ॥

सुख संपति दायक सुरनरनायक, परतिख पासजिनंदा हे ॥

जाकी ठवि कांति अनोपम उपित, दीपत जाण दिनंदा हे ॥ मुख-
ज्योति जिगामिग जिगमगर, पूरण पूनमचंदा हे ॥ सब रूप सरूप
वखाणाहि नूपत, तूही त्रिभुवन नंदा हे ॥ १ ॥ करुणासागर
लोक सबे मिल, जाका जस्स शुणंदा हे ॥ तेरी खिजमत करे
इकचित्तसुं तो सेवक धरणिंदा हे ॥ तें जलता आग निकाळ्या तांग,
किया वरुजाग सुरिंदा हे ॥ तो चरणां आय रहा लपटाय, कला
अति केलि करंदा हे ॥ २ ॥ इक दिन्न महा रन वन पंचागनि,
ताप सताप तपंदा हे ॥ फल फूल आहारी दुद्धाधारी, अळप अहार
लियंदा हे ॥ सब जेष सन्यासी रहे नदासी, अविनासी ध्यावंदा
हे ॥ दिसि च्यारां दिठी बले अंगीठी, सूरज ताप तपंदा हे ॥ ३ ॥
महिमा बद्धारी सब नर नारी, जाकूं आय नमंदा हे ॥ एसी सुण
वत्तां धरिय नकत्तां, पुत्तां पास जिनंदा हे ॥ वामादे अस्कै कुण तो
परकै, मेरा हूंस पूरंदा हे ॥ तिहां चालो पुत्तां जिहां अवधुत्तां, जो
गारंज जगंदा हे ॥ ४ ॥ जननी मन आसा पूरण पासा, औरापत्ति
सजंदा हे ॥ गल घग्घरमाला जाण हेमाला, दंताला उपंदा हे ॥
वर वीर घंटाळा मद मतवाला, जोलाळी जलकंदा हे ॥ ५ ॥
पंचरंगी परकर सजी सरकर, ढालांसुढलकंदा हे ॥ धतकारे धत्ता मत्ता
अंकुस, मावत शीस दियंदा हे ॥ गंगातट आये खमे रहाए, प्रभु
ज्ञानी आस्कंदा हे ॥ ६ ॥ रे रे अजिंमानी तप अज्ञानी, पावक
जीव जलंदा हे ॥ तिहां फाम डुफाम दिखाले लक्रम, वरु फलधर
नागंदा हे ॥ नवकार सुणायां सुरपद पायां, तापस जस घटंदा हे ॥

तिल किया नियाणा तप खजाणा, कोमी सट्टे वेचिंदा हे ॥ ३ ॥
 हुयके क्रोधातुर आतुर सो कमगासुर धुर उपजंदा हे ॥ अश्वसेन
 सुतन महाराज विषय डुख, जाणत आप तजंदा हे ॥ पंचमुठी
 लोच किया आलोच, मनासुं सोच अफंदा हे ॥ प्रजु अप्रतिबंध वि-
 हार कियो तव, रत्नवन वास वसंदा हे ॥ ४ ॥ उपशम अणगारे
 कानसग मऊरे, कमगासुर दाव लहंदा हे ॥ वना असुराणा बली
 हेराणा, पिंठाण विलोक धुखंदा हे ॥ करि आतस क्रोध विचार
 विरोध, महा अजिमान धरंदा हे ॥ बाजल मतवाली नीली काली,
 वायु महा वाजिंदा हे ॥ ५ ॥ रवि किरणा कोट रही रज ओट,
 दिवाकर तेज ठिपंदा हे ॥ कर घोर घटा चिकटा उमटी, अरु बाजू
 गाजंदा हे ॥ गरमाटा वाटा सुणिया आटा, ऐरापति लाजंदा हे ॥
 हुआ अकाला धुर वरसाला, बीजलिया षीवंदा हे ॥ १० ॥ मोटी
 धारासुं आरावांसुं, यों अंबू वरसंदा हे ॥ चह्ले जल खाला नदियां
 नाला, हेमाला हालंदा हे ॥ दरियाव उलट्टां केतो फुट्टां, पाणी नहि
 मावंदा हे ॥ दिगपाल दहल्लां धरिय उत्थल्लां, खोणीपत्ति खिसंदा
 हे ॥ ११ ॥ बने पाहामां जंगी जामां, सजामां ढाहंदा हे ॥ सम
 दाहंदी रेल वहंदी, जाणक जग रेलंदा हे ॥ बहु वासर बूठा जाण
 किरुठा, जूठा मन असुरेंदा हे ॥ तेवीशम राया वनमें पाया, कान
 लग कहा करंदा हे ॥ १२ ॥ उवसगगाहंदी केल करंदी, पाठा
 नांदि मुहंदा हे ॥ धरि मनमें ध्याना क्रोध न माना, निश्चल ध्यान
 धरंदा हे ॥ प्रजु नासा तांड नदी आई, तोही नांदि खुजंदा हे ॥
 देवारज जेसा धीर पएसा, पावस पीम सहंदा हे ॥ १३ ॥ तिल
 अवसर वरदां धरणी धरदां, आसण वेग चलंदा हे ॥ तिल अवधि
 प्रयुंजी दीठे प्रजुजी, तन मन अति उलसंदा हे ॥ तिहां पदमा-
 वनी देव सकती, सुं मिल वेग वहंदा हे ॥ हुयके हेराना वैठ वि

माना, पांवां अंय लगंदा हे ॥ १४ ॥ फलनाग हजारों कर-विस-
 तारा, उत्तर जंठावंदा हे ॥ ले आपण खंधे-प्रेम निबंधे, पूरब
 प्रीत सुखंदा हे ॥ इंडाणीनारी सब सिणगारी, जोवन अंग जिल
 कंदा हे ॥ १५ ॥ राकापति वयणी मिरगानयणी, सुंदर रूप सो
 हंदा हे ॥ आयाला कज्जल जलके विज्जल, खूब वणाव वणंदा
 हे ॥ नकवेस नत्थां लाल सुकत्थां, विच मोती जलकंदा हे ॥ नढण
 पाटंवर जीरो अंवर, आन्नूषण जलकंदा हे ॥ १६ ॥ जर कंचु क
 सिया तन छसिया, कामघटा गहरंदा हे ॥ पहिरण तन खूवा
 हरिया दूव, सोलेही सोहंदा हे ॥ कटिमेखल कमियां सोने जमि
 यां, हीरा पीच हलकंदा हे ॥ १७ ॥ घमके धूरियां पाए धरियां,
 पग नेवर एणकंदा हे ॥ ले जांजर ताला ताल कंसाला, पस्कावज
 वाजंदा हे ॥ कुहके करनाला बीच रसाला, जंगी ढोल घुरंदा हे ॥
 वाजे सरगई सखरी घाई, नगारा रोमंदा हे ॥ १८ ॥ पञ्चमा बै
 रुद्धा आण जलट्टां, नाटिक मिल नाचंदा हे ॥ तत्तायेइर तान त
 रुंमा, रत जेद रमंदा हे ॥ दिन तीन वितीता तोहि न वीता, पा
 वस जल पसरंदा हे ॥ १९ ॥ धरणीधर जाण्या ग्यान पिठाण्या,
 कमठासुर कोपंदा हे ॥ नागादी पत्ती आख्या रत्ती, किच्ची रीस
 आवंदा हे ॥ रे मुठा धिठा चित्त विणठा, क्यूं नांही समजंदा हे ॥
 साहिव बलवंता जोर अनंता, तूं तो नहि जाणंदा हे ॥ २० ॥ ए
 कमासागर गुणके आगर, तीनूं लोक नमंदा हे ॥ असमान खमाई
 रीस जराई, हिकाइ वजरंदा हे ॥ किच्ची बहु गल्लां पमै दहल्लां,
 धमहम देह धूजंदा हे ॥ धरणेंद्र मराया तब ते आया, पावां आय
 लगंदा हे ॥ २१ ॥ कर जोमि खमाया सीस नमाया, जगनायक
 जिनचंदा हे ॥ तूं साहिव-सच्चा तो गुण रच्चा, मेस दिल खुलंदा
 हे ॥ तें रीस न धरियां क्षिणही विरियां, तूंही अचल गिरंदा हे ॥

कमठासुर किर्ती बहु विनती, निज अपराध खमा दे ॥ २२ ॥
 सुरपती सिधाये निजघर आये, प्रभुके गुण समरंदा हे ॥ सुध सं
 जम पाले दोष निहाले, तब केवल उपजंदा हे ॥ सधनशिखर पर
 चढकै ऊपर, सिद्धपुरी पोहचंदा हे ॥ तेरी कीर्ती ज ऊपती, पार
 न को पावंदा हे ॥ २३ ॥ तूं सच्चा रखे जेद पररके गुमानी मो
 रंदा हे ॥ तूं अंतरजामी तूं बहुनामी, सुरनर सेव कदा हे ॥ तूं
 दीवाणा तूं खूमाणा, तूं मोजी मकरंदा हे ॥ तूं अल्लापीर फकीर
 मुसाफर, तूं जोगी तूं जिंदा हे ॥ २४ ॥ तूं काजी मुगं मरद अ
 टछां, तूंही शेष फरींदा हे ॥ तेंही ऊपाया धंदे लाया, मायामें मु
 लकंदा हे ॥ तूं बूढ़ा बाला मद मतवाला, तूं पक्का वाजंदा हे ॥ तूं
 कच्चा कवला सबतें सबला, सच्चा मऊ रहंदा हे ॥ २५ ॥ बाबागो-
 साई जेद न पाई, जीम पड्यां आवंदा हे ॥ तूं नारायण जोगपरा-
 यण, माधव तूंही मुकंदा हे ॥ तूं कवलाधारी तूं अवतार, तूं देवा
 देवंदा हे ॥ तूं एकां अण्ये एक उण्ये, अति निज सुध प्रापंदा हे
 ॥ २६ ॥ तो देवल मझां लोकति संज्ञा, सीरणिय वाटंदा
 हो ॥ गुण गीत पयासे कीरत ज्ञाते, जीणे सुर गवंदा हे
 ॥ कालागरु अगरसुं मलयागर, धूपेना धुखंदा हे ॥ कुंकुम कसतूरी
 केसर पूरी, चंदनसुं चरचंदा हे ॥ २७ ॥ मरुआ मचकुंदा फूला
 हंदा, टोमर कंठ ठवंदा हे ॥ चंपा गुलाबां जरीया ठावां, परमल
 तिहां वासंदा हे ॥ कसावोई चंगी रचियै अंगी, फूलां बीच फावें
 दा हे ॥ आजूपण धरियां तन ऊपरियां, कुंमल कान जिगंदा हे ॥
 २८ ॥ सूरत सोहंदा मूरत हंदा, दीठां नैण ठरंदा हे ॥ तेरी बलि
 जान मोजां पाजं, वीनती तूंहि सुणंदा हे ॥ २९ ॥ क्या कल्युं ग
 ह्नां हुकम अदछां, समकित मनबलसंदा हे ॥ सिद्धांदा वासा तिहा
 रदासा, तुज सेवक बिलसंदा हे ॥ घग्घर नीसांणी पास बखाणी

गुण जिनहर्षकहंदा हे ॥ ३० ॥ इति श्रीधर नीलाणी संपूर्ण ॥

॥ अथ दादा गुरुदेव स्तवन प्रारंभ ॥

॥ विशेषे रुद्धि समृद्धि मिली, शुभ योगै पुण्यदशा सफली

॥ जिन कुश सूरि गुरु अतुलबली, मनवन्तित आपै दादो रंग
रली ॥ १ ॥ गल लील समें विपुला, नवनवा महोन्नव राजेला ॥ सुप-

सायै गुरु नृती कला, सुकलीणी पूत्रवती महिला ॥ २ ॥ सबही

दिन आयै नवला, सद वासकपूरतणा कुरला ॥ हय गय रथ

पायक बला, किछोल करै मंदिर कमला ॥ ३ ॥ वीजै चमर नि

साण धुरै नर बै दरवार खरा पुहरै ॥ जय २ करजोनी उचरै, सा

निद्ध गुर सब काज सरै ॥ ४ ॥ सरसा जोजन पान सदा, डुख

रोग डुकल न होय कदा ॥ अविचल कुलट अंग मुदा, गुरु कूरम

दृष्टि प्रदन्न सदा ॥ ५ ॥ धमधम मादल नाद धुमें, बत्तीसे नाटक

रङ्गरमै । प्रगट्यो पुण्य प्रताप हमें, सबला अरियण ते आय नमें

॥ ६ ॥ तनसुख मनसुख चीरतणें, पहिरें वेलानल होयरनैं ॥ ध्या

विो कुशल गुरु एक मनैं, जुंनक सुर मंदिर जरै धनैं ॥ ७ ॥ तत

खरा दण खंच्यो आवै, करि स्यामघटा मेह बरसावै ॥ तिसीयां

तोय दुरत पावै, जलदाना त्रिजग सुजश गावै ॥ ८ ॥ लहिरयां

जल कछोल करै, प्रवहण नवसायर मझ सरै ॥ वूरुता वाहण जे

समरै, ते आपद निश्वेसुं उवरै ॥ ९ ॥ खरुखरु खरुग प्रहार वहै,

सो दामनि जिम समसेल सहै ॥ कुशल २ गुरु नाम कहै, ते खे-

मकुशल रिण मझ लहै ॥ १० ॥ शुंन सकल परचा पूरै, श्रीनाग

पूरै संकट चूरै ॥ मंगलोर अधिके नूरै, देरावर जय टालै दूरै ॥ ११ ॥

वीरमपुर वानै सुधरै, खंजायतपुर विक्रमनधरै ॥ जिणचंद सूर पा

टै पवरै, जसु कीरति महीमरुल पसरै ॥ १२ ॥ पूरव पश्चिम द

रुण आगै, नत्तर गुरु दीपै शोभागै ॥ दहदिशि जन सेवा मागै;

श्रीखरतरगच्छनी महिमा जागै ॥ १३ ॥ पुर पट्टण जनः ठाम, ॥
 ईजै कुशल नयर गामै ॥ पूजै जे नर हितकामे, ते कवर्त्ति पद
 दी पामे ॥ १ ॥ श्रीजिनकुशल सूरि साखै, सेवकजनें सुखिया
 राखै ॥ समरचां गुरु दरशण दाखै, श्रीसाधुकीरति पाक ज्ञाखै
 ॥ १५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीजिनदत्त सूरि सङ्गुरु उत्पत्ति स्तवन

॥ वर लाठ विलाश सुवाश मिलै, गुरु नामें मनी आश
 फलै ॥ दोषी दुस्मन दूर टलै, सहसा बहु संपति आश फलै ॥ १ ॥
 ॥ जय२ जिनदत्त सूरिंद यती, श्रुतधार कृपालक शीलवती ॥ ज-
 सु नामे न रहै पाप रती, जेहनी महिमा जगमांहे अती ॥ २ ॥
 शुभ्र मंगल लील विलाश सदा, दुख रोर दुकाल न होय कदा ॥
 आराध्यां आवै सुगुरु मुदा, सुप्रशान हाजर होय जदा तदा ॥ ३ ॥
 जिण जीती चोसठ जोगणियां, वरा वावन खेतलबोर कियां ॥
 जसु नामे न परे वीजलियां, झूत प्रेत न कर सके उल्लसियां
 ॥ ४ ॥ जिण सिंध सवालख दिस साधी, पंच पीर नदी जिण
 पुल बांधी ॥ उपगार कीयां कीरत लाधी, वरसात लीयां गुरु
 सिद्ध बांधी ॥ ५ ॥ सुत सुगल कियो सरजीत बहु, पाये लागी
 नर नार सहू ॥ जिण साधी विद्या वेशलहू ॥ प्रतिबोधी श्रावक
 कीध सहू ॥ ६ ॥ वरुनगरे ब्राह्मण द्वेब धरी, मृत गाय लड़ जिण
 चैत्य धरी ॥ गुरु मंत्रबलें जीवत उधरी, विप्रवेप सहू गुरु पाय
 परी ॥ ७ ॥ वज्रमय थंजो दोय खंरु कियो, पोथी परगट परज
 व थियो ॥ विद्या सोवनवरणे सजियो, वर नयर उज्जेशी सुजश
 लियो ॥ ८ ॥ गुरु हुंवरु वंसे जीवदया, मंत्री वाठग परलिद्ध
 थया ॥ बाहुदे कूखै जनम जणूं, ते चवदे विद्या जाण वणूं
 ॥ ९ ॥ इग्यार वत्तीसै जनम जणूं, इग्यार इगतालै दिह्युं ॥

युगवर ऽग्यारै बुलहरै, स्वर्गे वारैलै ऽग्यारै ॥ १० ॥ जिनवेछ्छन्नी
 सूनी पटोहरां, परचाव लदेसर जयहरां ॥ नवनिधि लठनी
 संपति करणं, बलि विकट संकट आरती हरणं ॥ ११ ॥ थुंन
 सकल श्रीअजमेरे, गढमंगो वर वीकानेरे ॥ सुखदायक श्रीजेशल
 मेरे, दीपे गुरु गाजीखान मेरे ॥ १२ ॥ सुलतान नगर महिमा
 सांगे, ज्ञानवठ दालिदू दूरे जागै ॥ मेरे असमालखानके सोजागे,
 गुरु पुररने कोरति जागै ॥ १३ ॥ धनर जे सद्गुरु ध्यान धरे,
 तेरनवन पूजा जेह करै ॥ गढ खरनरनी महिमा पसरै, कवि
 सूरि उदय जिनकीरति करै ॥ १४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ सद्गुरु श्रीजिनकुशल सूरजी उत्पत्ती स्तवन ॥

रिसद जिनसर सो जयो, मंगल केलि निवास ॥ वासुव
 वंदिय पायकमल, जग सहू पूरै आस ॥ १ ॥ (चोपाई) चंद
 कुलावर पूनमचंद, वंदो श्रीजिनकुशल मुखिंद ॥ नाम मंत्र जसु
 महिम निवास, जो समरै तसु पूरै आस ॥ २ ॥ मरुमंजल सवि-
 याणो गाम, धण कण कंचन अति अजिराम ॥ जिहां वसै जि-
 द्वागन मंत्र, जैतसिरा जसु घरणी कलत्र ॥ ३ ॥ जसु तेरेसे
 रीले जग्य, सेतालें सिरिसंजम रंज्य ॥ पाटण संतइतरे जसु पाट,
 निव्यासियै तसु सुरगे वाट ॥ ४ ॥ जूमंजल सरंगे पायाल, अचि-
 रादिर युग इण कलिकाल ॥ प्रभु प्रताप नवि आने लोय, में नवि
 नयलें दांगे जोय ॥ ५ ॥ निरधन लहे धन धन सुवन्न, पुत्रहीण
 पामें बहु पुत्र ॥ असुखी पामे सुख संतान, एक मनां करतां गुरु
 ध्यान ॥ ६ ॥ गुरु समरण आपद सवि टलै, सेयल संति सुख संप-
 ति मिलै ॥ आधी व्याधी चिंता संताप, ते वंकि नवि मंझै व्याप ॥
 ॥ ७ ॥ पाप दोष नवि लागै तिहां, गुरु समरण उक्कंठा जिहां ॥
 भेवंता सुरतरुनी वांछ, निशै दालिदू मेटे वांछि ॥ ८ ॥ रिसद

विसनरै विस नरनाह, जूत प्रेत ग्रह व्यंतर राह ॥ प्रभु नामें ते न
 बैर पीर, जाजै जावठ जवजय जीर ॥ ए ॥ गेग सोग सवि
 नासै दूर, अंधकार जिम ऊगै सूर ॥ मूरख फीटी पंथित थाय,
 प्रभु पसाय दुख डुरिष पुलाय ॥ १० ॥ दिन २ जिनतासन उ-
 द्योत, जिहांअठै जवसायर पोत ॥ सो सदगुरु में जेव्यो आज,
 गलियरंग सब सीधा काज ॥ ११ ॥ - ॥ दाख ॥ आज घरअ-
 गण सुरतरु फलियो, चिंतामणि करकमलै मिलियो, उंदयो पर-
 मानंद घरै ॥ १२ ॥ आज दीह में धनै गिलियो, जुगपदरागम जो
 में थुणियो, चंद्रयन्त्र महिषा निलो ए ॥ १३ ॥ कांइ करो पृथ्वी
 पति सेवा, कांइ मनावो देवी देवा, चिंता आणो कांइ मने ॥ १४ ॥
 चार ९ एक चित्त जणीजै, श्रीजिनकुशल सूरि समरीजै, सारै काज
 आयास विन ॥ १५ ॥ संबत चंवद इक्यासी वरसै, मुलक वाहण
 पुरमें मन हरसै, अजिय जिणोसर पर जुवणै ॥ १६ ॥ कीयो क
 विन ए मंगल कारण, विधन हरण बहु पाप निवारण, कोइ मत
 संसो धरो मनै ॥ १७ ॥ जिय ९ सेवे सुरनरराया, श्रीजिनकुशल
 मुनीसर पाया, जयसागर उवझाय धुणै ॥ १८ ॥ इम जो सदगुरु
 गुण अजिनंदै, रुद्धि समृद्धै सो चिरनंदै, मनवंठित फल मुऊ हुवो
 ए ॥ १९ ॥ इति पदं ॥ . . . पुनः ॥ आयो सहु श्रीसंघ
 आश घरे, गुरु मोन ग्रहां कहो केम सरे ॥ दरशन वहिखो सद
 गुरु दाखो, निज सेवक जाण महिर राखो ॥ १ ॥ इय विश्वमी
 विरियां आयवणी, केहवी करिये तुऊ अरज घणी ॥ हिव अलगा
 जो तो वेगा आवो, हिव हील धनीजर म करावो ॥ २ ॥ तूं सद
 गुरु खरतर गव साचो, कोइय न जाणो तुऊने काचो ॥ इण संक
 टमें आलश म करो, दादा दुसमननें दूर करो ॥ ३ ॥ कोइ चूक
 पनी सदगुरु दमसुं, तो ह्युं कहसो तिण पर खमसुं ॥ हिवणा दूह

थे मंत ताणो, निथे पोतानो कर जाणो ॥ ४ ॥ आये स्व
 श्रीमंथ अठा लगै, पाठा किम जावा इणे पगे ॥ इण पर कश्चि
 गुरुं अरज इसी, हिव सगला भेलो करो खुसी ॥ ५ ॥ जिनकुश
 ल सूरीसर जंग चावो, अपणायत वेगा आवो ॥ अगला विरुद ले
 जंजंवालो, परघल निज गेलु प्रतिपालो ॥ ६ ॥ गुणगाम गंगा
 ए गायो, सुणतां सदगुरु वेगो आयो ॥ राजी हुयं सगला रंगरली,
 जिनचंदनी आस्या सफल फली ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥
 सदगुरुजी थे सांजलो, श्रीजिनदत्त सूरीस हो ॥ सेवकने सांनिध
 करो, पूरो मनह जगीस हो ॥ १ ॥ दोलति दो दो दादाजी संफ
 ति दो ॥ आंकणी ॥ दोलत दो गुरु माहरा, आंहरा विरुद अने
 क हो ॥ थां समरथां संकट टलै, एहीज दादाजी ताहरी टेक हो
 ॥ दो० २ ॥ जीती चौसठ जोगणी, वस कियां बावन वीर हो ॥
 सिंधमांहे तें साधीया, पंचनदी पंच पीर हो ॥ दो० ॥ ३ ॥
 पदिकमणामांहे बीजली, बली २ ऊबकाय हो ॥ थे मंत्रा
 राखी तिका, तूठी वर दे जाय हो ॥ दो० ॥ ४ ॥ उच्चव क
 रतां उच्चमें, मूंड सुगलरो पूत हो ॥ जाप करीनें जीवाभियो, संव
 मांहे राख्यो दादै सूत हो ॥ दो० ५ ॥ वरुनगररे ब्राह्मणें, देदरे
 धरी मृनगाय हो ॥ परप्रवेश विद्या बलै, पिशुन लगाया दादै पा
 ॥ दो० ६ ॥ विक्रमपुर व्यापी मरी, दूरकोया तें सडू डस्क
 ॥ परवार पिण पोतें कीयो, सहुनें दियो दादै सुस्क हो ॥ दो०
 ॥ अंबर हाथे अकरै, थे प्रगट्या ततखेवं हो ॥ जुगप्रधान जग
 जयो, आखै अंविकादेव हो ॥ दो० ॥ ७ ॥ थांजो वज्र विदारनें,
 थी परगट कीध हो ॥ विद्या सोवनअकरे, उंजेलीमांहे लीध
 ॥ दो० ॥ ८ ॥ इम विरुद घणा वै तादरा, कहतां नावै पार
 ॥ जागसंजोगे दादो जेदियो, अरुदभिया आधार हो ॥ दो० ॥

॥ १० ॥ हुं ठूं सेवक ताहरो, थे आपो धन रुद्ध हो ॥ कनककीरत
 सुपसानलै, लाज्जनदय सुख सिद्ध हो ॥ दा० ११ ॥ इति पदं ॥
 ॥ पुनः ॥ दादा चिरंजीवो, सेवकजन सुखदाई, दरशणसदा देवो ॥
 दादो दीनदयाल सदा दाता, दादो ममरचां आपे सुखंशाता, दादो
 जगबंधव जंगगुरु आता ॥ दा० ॥ १ ॥ दादो परचा जगसगले पूरै,
 दादो सेवकनां संकट चूरै, दादो डुरित हरै सद्गुनी दूरै ॥ दा० ॥ २ ॥
 दादो अलगंधी जात्री आवै, दादो देखीने ते सुख पावै, म्हारा
 दादाजीनी जोरु कोइ नावै ॥ दा० ॥ ३ ॥ दादो राजनगरमांहे
 राजै, जिहां सुजशनगरा नित वजै, दादो गोगाळां सेहर ठाजै,
 दा० ॥ ४ ॥ दादा घस केसर सूकरु घोली, हाथे लेइ सोवन क
 चोली, पूजो दादाजीनें मिलै टोली ॥ दा० ॥ ५ ॥ दादो आरति-
 यां आरति टालै, दादो सेवगजनने प्रतिपालै, दादो जिन
 सासन नित उजवाळै ॥ दा० ॥ ६ ॥ दादो महिमावंत
 माहाराजा, दादो राजै खरतर गढ राजा, दादो समरचां सफल
 करै काजा ॥ दा० ॥ ७ ॥ दादो कुशलसूरिंद बहु गुणधारी,
 दादो परतिख सुरतरु अवतारी, जाजं दादाजीनी हूं बलिहारी ॥
 दा० ॥ ८ ॥ दादो श्रीजिनचंदसूरिंद पाटै, दादो गाजै गुणियन गो
 हगाटै, जसु थांन सोहे जग थिरआटै ॥ दा० ॥ ९ ॥ दादा महिर
 निजर मुऊ पर करियै, दादा आरति पोसा डुख हरियै, दादा जिय
 जग जयकमला वरियै ॥ दा० १० ॥ दादा सेवगनें सानिध कर
 ज्यो, दादा दुस्मणनें दूरे हरज्यो, जिनचंदना मनबंधित फलज्यो ॥
 दा० ॥ ११ ॥ इति पदं ॥ पुनः गाजै जिनकुशल गमालै,
 सेवकनां संकट टाले हो ॥ गा० ॥ १ ॥ परतिख गुरु परचा पूरै
 सेवकनी चिंता चूरै हो ॥ गा० ॥ २ ॥ ठतरीनितरी ठनि ठावे
 विष्णें थिर थुन थिराजै हो ॥ गा० ॥ ३ ॥ ऊलरे यात्री मि-

आवै, दादोजी दीठां सुख पावै हो ॥ गा० ॥ ७ ॥ केशर घल
 जारिय कचोली, मांहे वलि मृगमद घोली हो ॥ गा० ॥ ५ ॥ पूजो
 पग नीर पखाली, गावो गुण गीत रसाली हो ॥ गा० ॥ ६ ॥
 दादोजी छुखियां सुख देवै, निरधनियां नित धन देवे हो ॥ गा०
 ॥ ७ ॥ हय हाथी रघुपति बहुला, गुरु नामे पामे कमलां हो ॥
 ॥ गा० ॥ ८ ॥ सकजा सुत सुंदर नारी, पामे परिकर सुखकारी
 हो ॥ गा० ॥ ९ ॥ अलगांथी रोग गमावै, गुरु पूज्यां वंछित पावै
 हो ॥ गा० ॥ १० ॥ पावै गुरु तिसियां पाणी, तिण
 बेला जलधर आणी हो ॥ गा० ॥ ११ ॥ ग्रह गोचर चोर
 जंजालै, पीसा हुवै आलेमालै हो ॥ गा० ॥ १२ ॥ बाजै
 जग जशना बाजा, राजै खरतर गढ राजा हो ॥ गा० ॥ १३ ॥
 जसु जैतसिरी वर माता, जिह्वा गरमंत्र विख्याता हो ॥
 गा० ॥ १४ ॥ संवत सतरेसे इक्यासी, कातीपूनम परकासी हो ॥
 गा० ॥ १५ ॥ सहु संघ सहित सुविलासै, अधिके हर हेत उल्लासे
 हो ॥ गा० ॥ १६ ॥ सम यात्रा करी आणंदे, जिनजक्ति जतीसर
 वंदे हो ॥ गा० ॥ १७ ॥ इति पदं ॥ पुनः सदाइ मेरे श्रीजि-
 नकुशल गुरु ॥ कुशल करण कलिमाहे प्रगटयो, खरतर गढ वरू
 ॥ स० ॥ वावनेचंदन मृगमद मेलो, पूजो प्रेम जरू ॥ स० ॥ १ ॥
 चिंता चूरण विघ्न विस्मरण, दालिइ दूरहरू ॥ स० ॥ २ ॥ दिन १
 साहिव चढते वाने, ध्यावो ध्यानधरू ॥ स० ॥ वाजै जेहना
 जशना बाजा, ठावी ठामे जरू ॥ स० ॥ ३ ॥ संवत अद्वारसमें
 अरुसठै, मिगसरमाश शिरू ॥ स० ॥ संघ सहित श्रीसदगुरु जेठे,
 श्रीजितहर्ष सरू ॥ स० ॥ ४ ॥ गाय गजालै, तरण नमंता, तूठो
 कटपतरू ॥ स० ॥ पाठक श्रीविद्याहेम गणिने, उदयरत्न करू ॥
 स० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः आयो आयो जी, समरंता दादोजी

आशा ॥ संकट देख सेवककूं लदगुरु, देराजुर्ते ध्यायेजो ॥ १ ॥
 ॥ १ ॥ दादा बरसे मेहनै रात झंयेरी, वाय पिया सबलो वायो ॥
 पंचनदी हम वैगे वेरी, दर्शये चित नरायो जी ॥ स० ॥ २ ॥
 दादा नञ्जणी, पोहचावण आयो, खरतर संय सवायो ॥
 समयसुंदर कहे कुशल कुशलगुरु, परमानंद सुख पायो जी ॥ स०
 ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ राग लहुरी ॥ ज्ञाया ज्ञातिसुं पूर स्तो रे,
 इरिजन संव डुर हरो रे ॥ ज्ञा० ॥ मेरे मनमें ज्ञाति वैरागी, चित
 परणित लगनसुं लागी ॥ मेरी ज्ञान्यदशा अब जागी, जीया हो
 ज्ञा० ॥ १ ॥ सब सज्जन मिलकर आयो, गुरुचरणे चोक पूरावो ॥
 बलि अकत आल बधावो, जीहा हो ज्ञा० ॥ २ ॥ गुरु महिमावंत,
 सवाई, गुरुनाम सदा सुखदाई ॥ गुरु सेव्यां पाप पुलाई, जीया
 हो ज्ञा० ॥ ३ ॥ घत केसर जरके कर्बोली, मांहे मृगमद कुंकुम
 बोली ॥ गुरु पूज रचो जर जोड़ी, जीया हो ज्ञा० ॥ ४ ॥ श्री
 जिनदर्प सूरिस्तरराजा, वाजै जग जशना वाजा ॥ सत्यरत्न करै
 सुज काजा, जीया हो ज्ञा० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः
 ॥ राग कैरवो ॥ ॥ कुशल सूरिंद गुरु पूजो जवि हितसुं, कु० ॥
 कशर चंदन कपूर अरगजा, जाव धरी करो पूजा चितसुं ॥ कु०
 १ ॥ मोगरा लाल गुलाब आलती, मन सुख माल करै जवि रुच-
 सुं ॥ कु० २ ॥ अशरण शरण परम गुरु सबो, धरम ध्यान धरौ
 आत्म रुचिसुं ॥ कु० ३ ॥ सेवक जन प्रतिपाल जगतगुरु, आला
 पूरै गुरु धणुं दत्तसुं ॥ कु० ४ ॥ ध्यान सुधारै ज्ञान बधारै, रूप रंग
 देव वित हित मत्तिसुं ॥ कु० ५ ॥ कुशल सूरिंद गुरु सानिधका
 री, परतिख परचा पूरै सतसुं ॥ कु० ६ ॥ श्रीजिनदर्प सदा
 सुबिलाशी, सत्यरत्न सुख एही उत्तसुं ॥ कु० ७ ॥ इति पदं ॥
 ॥ राग दे० रीचलत ॥ गगन करो रे उगाह, श्रीजिनकुशल

